आधुनिक विधि से कुण्डली की विवेचना

(परिशोधित और परिवर्धित संस्करण)

लेखकः

एम. एस. मेहता

पवन बल्लभ थपलियाल

सम्पादक तथा मार्गदर्शक :

श्री के. एन. राव

सागर पब्लिकेशन्स

आधुनिक विधि से कुण्डली की विवेचना

(परिशोधित और परिवर्धित संस्करण)

प्रियंकर मिश्र (गौड़

आधुनिक विधि से कुण्डली की विवेचना

(परिशोधित और परिवर्धित संस्करण)

लेखक:

एम. एस. मेहता

पवन बल्लभ थपलियाल

सम्पादन और मार्गदर्शन

श्री के. एन. राव

सागर पब्लिकेशन्स

72 जनपथ, वेद मेन्शन

नई दिल्ली-110 001

दूरभाष: 23320648, 23328245

प्रकाशक:
सागर पब्लिकेशन्स
72 जनपथ, वेद मेन्शन
नई दिल्ली-110 001
दूरभाष: 23320648, 23328245

द्वितीय संस्करण, 2008; पुनः प्रकाशित 2012
प्रकाशनधिकार: सागर पब्लिकेशन्स
सागर पब्लिकेशन्स के लिए श्री सौरभ सागर, 72 जनपथ, वेद मेन्शन, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23320648, 23328245 द्वारा प्रकाशित।

मुद्रांकित:
द आर्टवेव्स, ए-487, डबल स्टोरी, कालका जी, नई दिल्ली-110019
दूरभाष: 41609709, 40532909

विषय-सूची

अध्याय संख्या		पृष्ठ संख्या
	पुस्तक के विषय में	v
	भूमिका	vii
	आभार	ix
	सहलेखक की ओर से आभार	xi
1	**परिचयः कुण्डली का अध्ययन कैसे करें ?** ग्रहों का कारकत्व, कुण्डली में ग्रहों की शुभ स्थितियां और उनका जातक के चरित्र पर प्रभाव	1
2	**प्रथम भाव** लग्न एवं लग्नेश का महत्व, विभिन्न भावों में स्थित लग्नेश का परिणाम; लग्न में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम, प्रथम भाव सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण योग	24
3	**द्वितीय भाव** विभिन्न भाव में स्थित द्वितीयेश के परिणाम, द्वितीय भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम, इन्दु लग्न और आर्थिक समृद्धि, इन्दु लग्न की व्याख्या, सर्वाष्टकवर्ग के द्वारा आर्थिक समृद्धि का आंकलन करने की विधि	40
4	**तृतीय भाव** तृतीयेश की विभिन्न भावों में स्थित होने के परिणाम, तृतीय भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम, तृतीय भाव में चन्द्रमा और शुक्र की युति	65

अध्याय संख्या		पृष्ठ संख्या
5	**चतुर्थ भाव** विभिन्न भावों में स्थित चतुर्थेश के परिणाम, चतुर्थ भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम, घर और भू-सम्पति सम्बन्धित योग, महलों जैसे विशाल घरों का स्वामित्व	82
6	**पंचम भाव** विभिन्न भावों में स्थित पंचमेश के परिणाम, पंचम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम, बीज स्फुट एवं क्षेत्रस्फुट और इनकी गणना	102
7	**षष्टम भाव** विभिन्न भावों में स्थिति षष्टेश के परिणाम, षष्टम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम	136
8	**सप्तम भाव** विभिन्न भावों में स्थित सप्तमेश के परिणाम, सप्तम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम, विभिन्न राशियों में स्थित शुक्र के परिणाम, विवाह के संदर्भ में शुक्र की विभिन्न भावों की स्थिति के परिणाम, मंगल अथवा कुजा दोष	148
9	**अष्टम भाव** विभिन्न भावों में स्थित अष्टमेश के परिणाम, अष्टम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम	202
10	**नवम भाव** नवमेश के विभिन्न भावों में स्थित होने के परिणाम, नवम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम	211
11	**दशम भाव** दशमेश के विभिन्न भावों में स्थित होने के परिणाम, दशम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम, दशम भाव की राशियों के अनुसार व्यवसाय, इंजीनियर, संगीतकार होने के योग, सिनेमा अभिनेता होने	222

अध्याय संख्या		पृष्ठ संख्या
	के योग, आजीविका – व्यापार, उच्च स्तर की आत्मायें – महात्माओं की कुण्डलियां, जीवन में एक उद्देश्य वाले स्त्री/पुरुष, सत्ताच्युत होना (जीवनवृत्ति में संकट), राजनीतिज्ञ	
12	**एकादश भाव** विभिन्न भावों में स्थित एकादशेश के परिणाम, एकादश भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम	337
13	**द्वादश भाव** विभिन्न भावों में स्थित द्वादशेश के परिणाम, द्वादश भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम, विदेश यात्रा के योग	346
14	**राहु-केतु** विभिन्न भावों में स्थित राहु के परिणाम, विभिन्न भावों में स्थित केतु के परिणाम	361
15	**गोचर और अष्टकवर्ग** मूर्तिनिर्णय	371
16	**दशा-विंशोत्तरी दशा** विभिन्न ग्रहों की दशाओं के परिणाम	402
17	**योगिनी दशा**	443
18	**नक्षत्र** नक्षत्रों का स्वरुप और उनका जातकों पर प्रभाव, नक्षत्रों का लिंग, नक्षत्रों का वर्गीकरण	455
19	**वर्ग-कुण्डलियां** वर्गों का महत्व, होरा कुण्डली	478
20	**योग** केन्द्र-त्रिकोण का सम्बन्ध, उच्च पद देने वाले प्रमुख जैमिनी योग, चन्द्र योग, सूर्य योग, नाभस योग, कारक, ग्रहों की विभिन्न युतियों के परिणाम, दो ग्रहों की युति, तीन ग्रहों की युति, चतुर्ग्रही योग	515

अध्याय संख्या		पृष्ठ संख्या
	भाग 'ब' मेदिनी ज्योतिष	577
1	मेदिनी ज्योतिष में ग्रहों के कारकत्व	579
2	मेदिनी ज्योतिष में भावों के कारकत्व	593
3	विभिन्न देशों की राशियां	602
4	कूर्म चक्र	606
5	महत्वपूर्ण कुण्डलियां और सिद्धान्त	609
6	भारत की कुण्डलियां	613
7	शुक्र का गोचर और भारत की घटनायें	618
8	रोहिणी नक्षत्र में शनि/राहु का गोचर	623
9	वर्ष का स्वामी और मंत्रिपरिषद	627
10	वर्ष कुण्डली के आधार पर फलकथन -भारत 2002	631
11	राशि संघटा चक्र और नक्षत्र संघटा चक्र	644
12	ग्रहों की युति-दुष्टि भारत के लिए काला वर्ष 1018-1019 ए.डी.	649
13	सूर्य और चन्द्र ग्रहण विभिन्न राशियों में होने वाले ग्रहण के प्रभाव	657
14	ज्योतिषशास्त्र में मौसम विज्ञान के सिद्धान्त	667
15	भूकम्प	699

पुस्तक के विषय में

भारतीय विद्या भवन में अध्यापन के दौरान मेरा यह अनुभव रहा है कि यहां पढ़ने वाले छात्रों को ज्योतिषशास्त्र के गूढ़ सिद्धान्तों को सही ढंग से समझने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और इसके परिणाम स्वरुप सही फलकथन नहीं कर पाते हैं। इससे वह निराशा हो जाते हैं और धीरे-धीरे इस दैविक विषय के प्रति अपना उत्साह खो देते हैं। इसके अतिरिक्त बाजार में उपलब्ध ज्योतिषशास्त्र की पुस्तकों में से यद्यपि कुछ पुस्तकें उच्च स्तर की हैं लेकिन बदलते परिवेश के साथ वह ताल मिलाकर चलने में असमर्थ हैं। उदाहरण के लिए विज्ञान के विषय से सम्बन्धित अनेक नई शाखायें और नये व्यवसाय प्रारम्भ हो चुके हैं लेकिन ज्योतिष की प्रमुख पुस्तकों में से किसी भी पुस्तक में इन नये विषयों एवं व्यवसायों के बारे में वर्णन मुश्किल से ही मिलता है। भारतीय विद्या भवन में श्री के. एन. राव के दिशा निर्देशन में ज्योतिष के विभिन्न विषयों के उपर शोध किये गये हैं और अभी भी शोधों की यह श्रृखंला चल रही है। इस पुस्तक में इन सभी शोधों का विचार किया गया है और उन शोधों में प्रयोग की गई नवीनतम विधियों एवं उनके परिणामों को शामिल किया गया है।

यह पुस्तक छात्रों को ज्योतिषशास्त्र के गूढ़ नियमों को भली-भान्ति समझने और उनका प्रयोग करके कम से कम समय में सटीक भविष्यकथन कहने की आवश्यकता हो ध्यान में रखकर विशेषरूप से लिखी गई है। हमने चरणबद्ध तरीके से ज्योतिष के दुर्बोध सिद्धान्तों को समझाने का प्रयास किया है और मुझे यह उम्मीद है कि छात्रों द्वारा ज्योतिष के दुर्बोध सिद्धान्तों को समझने में यह पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

इससे पूर्व भी इस पुस्तक का एक संस्करण बाजार में आ चुका है जिसे सभी के द्वारा सराहा गया है। छात्रों की अत्याधिक मांग के कारण वह संस्करण शीघ्रता से छापना पड़ा जिसके परिणाम स्वरुप उसकी छपाई में कुछ कमियां रह गयीं थी और कई विषय छूट गये थे। उन कमियों को दूर करने, नये लेखों और शोधों को शामिल करने तथा इसको नये रुप-रंग में प्रस्तुत करने के लिए मैंने भारतीय विद्या भवन के एक भूतपूर्व छात्र **श्री पवन बल्लभ थपलियाल** को अपने साथ इस कार्य में शामिल किया। यह हिन्दी का संस्करण उनकी कठिन मेहनत और लगन का ही परिणाम है।

इस पुस्तक में मेदिनी ज्योतिष के नये लेखों, विदेश यात्रा के नियम, बुद्धिमता एवं धन-सम्पति के आंकलन, जीवनवृत्ति से सम्बन्धित आंकलन, विवाह में विघ्न-बाधा आदि कई नये विषयों के साथ-साथ जातक के व्यक्तित्व और चरित्र के आंकलन की विधि को शामिल किया है। यह पुस्तक कई वर्षों के कठिन परिश्रम का परिणाम है। ज्योतिषशास्त्र की मेरी दो पुस्तकों "प्लेनेट एण्ड ट्रैवल अब्रार्ड" और "अष्टकवर्ग-फलित की आधुनिक विधियां" की सफलता ने मुझमें इस पुस्तक को लिखने का उत्साह उत्पन्न किया।

इस पुस्तक में अधिक सुधार हेतु आपके बहुमूल्य विचार और आपकी टिप्पणी मुझे सहर्ष स्वीकार होगी।

एम. एस. मेहता
आई. एफ. एस.(सेवानिवृत)
सी-160, ग्रैटर कैलाश भाग-1,
नई दिल्ली-110 048

भूमिका

श्री एम. एस. मेहता की इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता ज्योतिषाचार्यों द्वारा सटीक फलकथन हेतु ज्योतिष के योगों का सुन्दर समन्वय, उनके बल के आंकलन की विधि और दशा का प्रयोग है। आज से अस्सी वर्ष अथवा उससे भी पहले लिखी गयीं फलित ज्योतिष की पुस्तकों में इस प्रकार का समन्वय सदैव ही अनुपस्थित रहा था। यहां तक कि पिछले कुछ दशकों में फलित ज्योतिषशास्त्र की जो सुव्यवस्थित पुस्तकें लिखी भी गयीं हैं उनमें भी प्रभावशाली संकलन होने के उपरान्त भी स्पष्टता और संयोजन की कमी रही है।

आधुनिक समय में बहुत सारे व्यक्ति ज्योतिष शास्त्र को भली-भान्ति जानते और समझते हैं। ऐसे समय में लिखी जाने वाली पुस्तक को उन्नत होने के साथ-साथ तीन मुख्य विशेषताओं, योग, दशा और ग्रहों के गोचर से युक्त होना चाहिए जिसके द्वारा यह बताया जा सके कि कोई घटना या दुर्घटना क्यों घटित हुई अथवा जो हुआ वह होना सुनिश्चित था। एक पुस्तक में ही सभी द्वादश भावों का विस्तृत वर्णन करना कोई सरल कार्य नहीं है, लेकिन श्री मेहता और उनके सहयोगियों का यह कार्य अत्याधिक सराहनीय है।

श्री मेहता के वर्षों के अध्ययन, अध्यापन और लेखन के फलस्वरुप ही यह कठिन कार्य कार्यान्वित हो पाया है जो इनकी परिपक्व ज्ञानशक्ति और किसी भी विषय को सरलता से समझने एवं समझाने को इंगित करता है।

यह पुस्तक कुण्डली के प्रत्येक भाव की सन्तुलित विधि से विश्लेषण करने और उसके आधार पर सटीक भविष्यकथन करने के लिए फलित ज्योतिष के सिद्धान्तों की उपलब्ध श्रेष्ठ पुस्तकों में से एक है। लेकिन यह हमेशा याद रखना चाहिए कि पुस्तकों से ज्योतिष सीखने के कुछ लाभ अवश्य होते हैं लेकिन उनकी अपनी सीमायें भी होती हैं। हिन्दू ज्योतिषशास्त्र की इन विधियों को अधिक सराहनीय बनाने के लिए इस प्रकार से प्राप्त शिक्षा में अपने व्यक्तिगत अनुभवों का समिश्रण भी करना चाहिए।

के.एन.राव

आभार

इस पुस्तक को लिखने का कार्य, श्री के.एन. राव, जो स्वयं न केवल एक श्रेष्ठ प्राध्यापक है अपितु बहुत बड़े दार्शनिक और सन्त भी हैं के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन की अनुपस्थिति में संभव नहीं था। ज्योतिषशास्त्र के उन लाखों छात्रों के लिए श्री के. एन. राव रोशनी के पुंज हैं जिन्हें श्री राव ने ज्योतिषशास्त्र के प्रति प्रोत्साहित करके उनका मार्गदर्शन करते हुए ज्योतिष के सही अर्थ 'ज्योति' को चरितार्थ किया है। ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान का यह दीपक इन जातकों के जीवन में सदा ही प्रकाशमान रहते हुए मार्गदर्शक का कार्य करेगा। अपने नम्र व्यवहार, साधारण जीवन शैली और ज्योतिषशास्त्र के प्रति पूर्ण समर्पण के कारण श्री राव न केवल आदरणीय हैं अपितु उन्होंने हमारी गुरुओं और सन्तों की महान परम्परा का उदाहरण भी पेश किया है जो सम्पूर्ण विश्व को भारत की एक बहुत बड़ी देन है।

श्री राव ने ज्योतिषशास्त्र के विभिन्न गूढ़ विषयों पर 29 पुस्तकें लिखीं हैं और ज्योतिषशास्त्र के शोधों को पूर्णरुप से समर्पित ज्योतिषशास्त्र की सम्मानीय पत्रिका "जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी" के संस्थापक एवं सम्पादक हैं। साथ ही साथ इन्होने ज्योतिषशास्त्र के विभिन्न विषयों पर सैकड़ों लेख लिखें हैं जो पूरे विश्व की अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इन्होंने न केवल शास्त्रीय ग्रन्थों में छुपे सटीक फलकथन के सूत्रों को पुनः उजागर किया है अपितु अपने शोध कार्यो के द्वारा उन्हें पुनर्स्थापित भी किया है। इनके द्वारा खोजे गये कई सूत्र जैसे कि शनि–बृहस्पति का दोहरे गोचर का सिद्धान्त आज एक प्रमुख नियम बन चुका है और सभी ज्योतिषाचार्यो के द्वारा अपनाया जा रहा है। इनके द्वारा राहु/शनि के द्वारा रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश के कारण होने वाले पूरे विश्व में हमारे चारों ओर होने वाले विप्लव एवं विनाश का फलकथन ज्योतिषशास्त्र की सच्चाई और सत्यता को सहज प्रमाणित करता है। जिन व्यक्तियों को श्री राव की एक वर्ष पूर्व कहे गए फलकथन का भान था उनके लिए गुजरात में हुआ साम्प्रदायिक दंगा कोई आश्चर्य का विषय नहीं था। सन् 2002 में भारत मौसम विज्ञान विभाग के सामान्य मानसून के पूर्वानुमान के उपरान्त भी मानसून की वर्षा में हुई कमी, अद्वितीय विज्ञान ज्योतिषशास्त्र के सत्य होने की परीक्षा का साक्ष्य था जिसके विषय में श्री राव ने ज्योतिष की कक्षाओं में और अपने लेखों में पहले ही बता दिया था। श्री राव भारतीय विद्या भवन में ज्योतिषशास्त्र के विद्यालय

के संस्थापक और प्रमुख हैं जो आज हजारों शिक्षार्थियों के साथ पूरे विश्व में ज्योतिषशास्त्र का सबसे बड़ा विद्यालय बन गया है। मैंने भी अपनी इस पुस्तक में ज्योतिष को अधिक विस्तार से समझाने एवं प्रेरक बनाने के लिए उनके शोधों, लेखों एवं पुस्तकों में उल्लेखित नियमों और कुण्डलियों का उदारतापूर्वक प्रयोग किया है।

इन सबसे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने ज्योतिषशास्त्र की नई रोशनी को प्रज्वलित करने और जीवन के आनन्द एवं आन्तरिक शान्ति प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन में योगदान किया है। उनके इस सबसे बड़े योगदान के लिए हम उनके सदैव ऋणी रहेंगे और अपनी ओर से पूर्ण सम्मान के साथ मैं यह पुस्तक श्री के.एन. राव जी को समर्पित करता हूं। यदि ज्योतिषशास्त्र के कुछ छात्र भी मेरी इस पुस्तक के माध्यम से लाभान्वित होते हैं और ज्योतिषशास्त्र का सही अर्थ समझ पाते हैं तो इसे मैं अपनी सौभाग्य एवं पारितोषित मानूगां।

यहां मैं ज्योतिष के अपने पूर्व छात्र **पवन बल्लभ थपलियाल** का उल्लेख आवश्यक रुप से करना चाहता हूं जिनके अथक प्रयास और मेहनत के फलस्वरुप यह पुस्तक आप लोगों के हाथों में है। **श्री पवन बल्लभ थपलियाल** न केवल ज्योतिषशास्त्र के एक प्रतिभाशाली छात्र हैं अपितु हिन्दी, अंग्रजी के अतिरिक्त संस्कृत का भी ज्ञान रखते हैं। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करने, नये विषयों को लिखने, सम्बन्धित लेखों, सामग्री आदि को एकत्रित करने और त्रुटियों को दूर करने में उनकी प्रमुख भूमिका है। मैं श्री नरेन्द्र सागर और उनके पुत्र श्री सौरभ सागर का धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होने इस पुस्तक के प्रकाशन हेतु मुझे पूर्ण सहयोग दिया है। मैं ज्योतिष के अपने एक अन्य छात्र **श्री रमेश खन्ना** का भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होने कम्प्यूटर सम्बन्धित तकनीकी सहायता प्रदान करके मेरे इस कार्य को सरल बनाने में सहायता करी।

एम. एस. मेहता
आई. एफ. एस.(सेवानिवृत)
सी–160, ग्रैटर कैलाश भाग–1
नई दिल्ली–110 048

सहलेखक की ओर से आभार

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे भारतीय विद्या भवन से ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने का और इस पावन विषय पर परम आदरणीय श्री के.एन. राव जी और श्री एम. एस. मेहता जी जैसे ज्योतिषमर्मज्ञों के अद्वितीय विचारों को सुनने एवं जानने का अवसर प्राप्त हुआ। यह भी मेरे पूर्व पुण्यों का ही प्रताप है कि आदरणीय श्री मेहता जी ने इस पुस्तक को लिखने के लिए मुझे न केवल अपना सहायक चुना अपितु सहलेखक बनने का सम्मान भी प्रदान किया जो शास्त्र में वर्णित गुरु के गुणों का यथार्थ रुप है। इस पुस्तक का अनुवाद करने, लिखने और संशोधित करने में श्री मेहता जी की ओर से मुझे पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की गई थी जिसका मैंने आपने सामार्थ्य के अनुसार उपयोग करने का प्रयास भी किया है। इसी कारणवश अंग्रेजी की पुस्तक और इस पुस्तक में कुछ विषयों के विस्तार में अन्तर आ गया है। मुझे आशा है कि यह विस्तार नये छात्रों के लिए ज्ञानवर्द्धक होगा और सिद्धान्तों को पूर्णरुप से समझने में सहायक सिद्ध होगा। मैं अपने मित्र **श्री रमेश खन्ना** का यहां विशेष उल्लेख करना चाहूंगा जिन्होंने घण्टों मेरे साथ बैठकर विभिन्न विषयों पर चर्चा करी और उसे उचित ढंग से लिखने में मेरी सहायता करी। साथ ही मैं संस्कृत के आचार्य **श्री जन प्रकाश शर्मा** और अपने सहपाठी एवं मित्र **श्री सुधीर महरोत्रा** का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न विषयों के मूल शास्त्रीय ग्रन्थों को समझने में सहयोग दिया।

अन्त में मैं श्री मेहता जी को निम्नलिखित शास्त्रीय श्लोक के द्वारा उनके प्रति अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करना चाहूंगा,

ध्यानमूलं गुरोः मूर्ति पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोः वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥

पवन बल्लभ थपलियाल
खातस्यूं सिमतोली, पौडी गढ़वाल
उत्तराखण्ड

सी-70, पूर्वी किदवई नगर,
नई दिल्ली-110 023

अध्याय 1

परिचयः कुण्डली का अध्ययन कैसे करें ?
(महत्वपूर्ण अव्यय)

भविष्य में होने वाली घटनाओं के सटीक पूर्वानुमान के लिए किसी भी जातक को ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तों से भली-भान्ति परिचय होना तथा ज्योतिषशास्त्र, अपने गुरु एवं भगवान में पूर्ण विश्वास होना अतिआवश्यक है। परब्रह्म की दैवीय शक्ति को पूर्ण समर्पण, धर्म में विश्वास और आध्यात्मिक स्वभाव, भविष्यकथन की क्षमता को बल प्रदान करते हैं।

किसी भी कुण्डली की विवेचना करने के लिए अत्याधिक दक्षता की आवश्यकता होती है। अपने वर्षों के अध्यापन के अनुभव से हमने यह पाया है कि प्रारम्भ में ही विद्यार्थी भविष्यकथन के असत्य सिद्ध होने पर व्याकुल हो जाते हैं क्योंकि भविष्यकथन, उनकी गणितीय गणना के अनुसार घटित नहीं होता है। जिसके परिणाम स्वरुप इस विषय में वर्षों अध्ययन के पर्यन्त भी विद्यार्थी लग्नेश की तृतीय भाव अथवा सूर्य की पंचम भाव की स्थिति जैसी ग्रहों की सामान्य स्थितियों के परिणामों के विषय में भी भ्रमित हो जाते हैं और शीघ्र ही उत्साहहीन हो जाते हैं तथा उनकी, इस परम दैवीय एवं आध्यात्मिक विषय के प्रति रुचि कम होनी शुरु हो जाती है। यह चिन्तनीय स्थित है जिसमें शीघ्र ही व्याकुल होने वाले छात्रों की ही बात विशेष विचारणीय नहीं है अपितु, उनकी हताशा से ज्योतिषशास्त्र की सत्यता में भी प्रश्न चिन्ह लग जाता है। यहां एक बात सदैव याद रखनी आवश्यक है कि भविष्य के पूर्वानुमान में असत्य होने की पूर्ण प्रवृति होती हैं।

इन्हीं उलझन भरी स्थितियों को समझते हुए हमने एक ऐसे पाठ्यक्रम की रचना की है जिसके द्वारा ज्योतिषशास्त्र का कोई भी विद्यार्थी बहुत ही सीमित समय में, क्रमबद्ध तरीके एवं सरलता से कुण्डली की सटीक विवेचना करने में दक्षता प्राप्त कर सकता है।

किसी भी कुण्डली के द्वारा भविष्यकथन कहने से पहले निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातों का क्रमबद्ध अध्ययन आवश्यक है।

चरण 1:

किसी भी कुण्डली की विवेचना करने के लिए आपके पास शुद्ध गणितीय गणनाओं पर आधारित निम्नलिखित चक्रों का होना आवश्यक है:

अ. **जन्म कुण्डली अथवा राशिचक्र:** यह लग्न कुण्डली भी कहलाती है।

ब. **चन्द्र कुण्डली:** यह एक महत्वपूर्ण कुण्डली है। महर्षि पराशर के अनुसार किसी भी कुण्डली का अध्ययन केवल लग्न कुण्डली से ही नहीं अपितु चन्द्रमा को लग्न मानकर भी करना चाहिए। उदाहरणतः यदि किसी कुण्डली में हमें जातक की सम्पति का अनुमान लगाना है तो हमें लग्न के साथ-साथ चन्द्रमा से द्वितीय भाव की भी विवेचना करनी चाहिए। यदि लग्न एवं चन्द्रमा, दोनों के द्वितीय भावों की स्थिति अच्छी है तो जातक के पास अत्याधिक धन-सम्पदा होगी। यदि लग्न से द्वितीय भाव, धन-सम्पदा की अच्छी स्थिति को इंगित कर रहा है लेकिन चन्द्रमा से द्वितीय भाव विपरीत स्थिति को इंगित कर रहा है तो धन-सम्पदा की स्थिति सामान्य स्तर की ही होगी। इसी प्रकार से अन्य भावों का भी विश्लेषण किया जाता है। इसके उपरान्त, अधिक सटीक परिणाम ज्ञात करने के लिए हमें सूर्य कुण्डली अर्थात सूर्य को लग्न मानकर सम्बन्धित भाव का अध्ययन करना चाहिए।

स. **नवांश एवं सम्बन्धित वर्ग कुण्डलियां:** नवांश कुण्डली, एक महत्वपूर्ण वर्ग कुण्डली है और शास्त्रानुसार इसका विचार किए बिना कोई भी भविष्यकथन कदापि नहीं करना चाहिए। इसकी उपयोगिता और अन्य सम्बन्धित विषयों का वर्णन अलग से वर्गों से सम्बन्धित अध्याय में किया गया है।

सामान्य नियम: *यदि कोई ग्रह राशी कुण्डली में अनुकूल है लेकिन नवांश कुण्डली में नीच अथवा शत्रु भाव अथवा अशुभ भाव में होने के कारण निर्बली हो जाता है तो राशि कुण्डली के शुभ परिणामों में कमी करता है। इसके विपरीत यदि नवांश कुण्डली में ग्रह की स्थिति में सुधार होता है तो वह राशि कुण्डली के शुभ परिणामों को देता है। यदि ग्रह राशि एवं नवांश कुण्डली दोनों में ही बली होता है तो उसमें सर्वोत्तम परिणाम देने की पूर्ण क्षमता होती है।*

द. **दशा चक्र:** यदि आपके पास दशा चक्र नहीं है तो भविष्यकथन कहने का कोई अर्थ नहीं होता है। एक कुण्डली में सभी प्रकार के राजयोग हो सकते हैं लेकिन यदि उचित दशा न हो तो इन योगों में फल देने की क्षमता नहीं होती है अथवा कभी-कभी ही इनसे सम्बन्धित फल प्राप्त होते हैं।

इस संदर्भ में एक अन्य सिद्धान्त यह है कि दशानाथ को लग्न के रुप में लेकर अन्य सभी भावों का अध्ययन करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि उस दशा में कौन से भाव शुभाशुभ फल देंगे। उदाहरणतः दशानाथ से द्वितीय भाव धन, तृतीय भाव भाइयों, चतुर्थ भाव भू-सम्पति आदि इसी प्रकार सभी भाव अपने-अपने भाव से सम्बन्धित विषयों को इंगित करेंगे। यह फलदीपिका में दिया गया एक महत्वपूर्ण नियम है।

चरण 2: लग्न कुण्डली का सामान्य आंकलन:

अ. आप में कुण्डली को समझने और उसको महसूस करने की इतनी क्षमता होनी चाहिए कि कुण्डली स्वयं ही अपनी कहानी कह सके। सर्वप्रथम यह देखें कि कुण्डली में कितने ग्रह उच्च के हैं अथवा अपने भाव को दृष्ट कर रहे हैं। इन स्थितियों में ये भाव बली हो जाते हैं और अपने कारकत्व के अनुरुप पूर्ण परिणाम देते हैं।

इसके पश्चात आपको लग्न में उदित राशि एवं चन्द्रमा द्वारा गृहीत राशि पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। कुण्डली में लग्न भाव जीवन एवं जीवनारम्भ को इंगित करता है, अतः सबसे महत्वपूर्ण भाव होता है। यदि जीवन होगा तभी शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इस भाव के महत्व को इस बात से जाना जा सकता है कि कुण्डली के सभी भाव और उनसे प्राप्त होने वाले सभी शुभाशुभ फल इस भाव पर निर्भर हैं। उदाहरणतः कन्या राशि, एक बुद्धिमान राशि है, लेकिन इसमें रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता की कमी होती है। कन्या लग्न का जातक हल्के जुकाम के लक्षण होने पर ही बिस्तर में पड़ जाएगा, जबकि मेष राशि का जातक 100 डिग्री ताप होने पर भी चुस्त और घूमता-फिरता दिखाई देगा। अर्थात मेष लग्न का जातक सामान्य व्याधियों से चिन्तित नहीं होता है अपितु इनमें संघर्ष करने की अदभुत क्षमता होती है। यहां यह याद रखना भी आवश्यक है कि जीवन से सम्बन्धित सभी विषयों में प्रत्येक राशि की अपनी विशेष प्रकृति और एक अलग कहानी होती है।

ब. **कुण्डली में ग्रहों की स्थिति और ग्रहों द्वारा गृहीत राशियों की प्रकृति का विश्लेषण:** यदि कुण्डली में अधिकतर ग्रह चर राशियों में स्थित हों तो जातक यात्रा करने का शौकीन होगा, कालान्तर में वह अत्याधिक यात्रायें करेगा और ऐसे जातकों के विचार में समयानुसार परिवर्तन होता रहता है। यदि कुण्डली में अधिकतर ग्रह स्थिर राशियों में स्थित हों तो जातक के विचार रुढ़ीवादी और कार्यशैली निश्चित प्रकृति की होगी। ऐसे जातक सामान्यत: एक ही स्थान में रहना पसन्द करते हैं एवं रहते भी हैं, समयबद्ध होकर लगातार कार्य करते हैं और कल-कारखाने स्थापित करने में दक्ष होते हैं। जिन जातकों की कुण्डली में अधिकतर ग्रह द्विस्वभाव राशियों में होते हैं उनको मिश्रित परिणाम प्राप्त होते हैं। सामान्यत: ऐसे जातकों के विचार स्थिर नहीं होते हैं और पल-पल में बदलते रहते हैं।

पुन: राशियों की प्रकृति के आधार पर उनमें स्थिति ग्रहों को देखें। यदि कुण्डली में अधिकतर ग्रह अग्नि तत्व राशियों में स्थित हैं तो जातक साहसी होगा, उसमें अत्याधिक उत्साह होगा, उसके विचार उच्च होंगे और उसे जीवन में उपलब्धियां प्राप्त करने की प्रबल इच्छा होगी। पृथ्वी तत्व राशियों में स्थित अधिकतर ग्रह जातक को प्रयोगात्मक सोच वाला अर्थात व्यवहारिक और उद्योगी बनाते हैं, वायु तत्व में स्थित ग्रह जातक को बुद्धिमान एवं पठन-पाठन के प्रति आसक्त और जल तत्व में स्थित ग्रह जातक को भावुक, सम्मानित, बुद्धिमान लेकिन अस्थिर मानसिक स्थित का बनाते हैं।

चरण 3: केन्द्र और त्रिकोण में स्थित ग्रह:

अ. कुण्डली में ग्रहों की भाव स्थिति को देखें। शुभ ग्रहों के लिए सर्वोत्तम स्थान केन्द्र एवं त्रिकोण है। इन स्थानों में स्थित शुभ ग्रह बहुत बली होते हैं और जीवन में अधिकतम सुख-सुविधा प्राप्त करने के लिए शुभ ग्रहों का बली होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि केन्द्र में स्थित ग्रह, स्वग्रही या उच्च के हों तो यह समृद्धि के सूचक, महापुरुष योग बनाते हैं।

आ. यदि केन्द्रों में स्थित अशुभ ग्रह उच्च के या स्वग्रही न हों तो जीवन में समस्यायें देने के लिए अत्याधिक शक्तिशाली हो जाते हैं। उदाहरणत: चतुर्थ भाव में स्थित अशुभ ग्रह जातक की मानसिक शान्ति को ध्वंस करता है, भू-सम्पति को जोड़ने में रुकावटें खड़ी करता है और जातक की माता के लिए

भी शुभ नहीं होता है। इसी प्रकार सप्तम भाव में स्थित अशुभ ग्रह, वैवाहिक जीवन को बिगाड़ता है।

इ. अशुभ ग्रहों के लिए सर्वोतम स्थान तृतीय, षष्टम एवं एकादश भाव है (इन भावों का स्वामित्व नहीं क्योंकि इन भावों का स्वामित्व इन्हें अधिक दुष्ट बना देता है)। इन भावों में स्थित होकर अशुभ ग्रह अत्याधिक शुभ परिणाम देते हैं।

जिस कुण्डली में शुभ ग्रह केन्द्रों में और अशुभ ग्रह 3, 6 एवं 11वें भाव में स्थित होते हैं वह कुण्डली अत्याधिक बली कुण्डली मानी जाती है और ऐसी कुण्डली का जातक अपने जीवन में अत्याधिक उन्नति एवं प्रगति करता है।

चरण 4: कुण्डली में स्थित राजयोग:

इसके पश्चात कुण्डली में ग्रहों की स्थिति और स्थितिवश बनने वाले योगों को देखें। कुण्डली में जितने अधिक राजयोग होंगे, जातक उतना ही समृद्ध होगा और जीवन में उच्च स्तर प्राप्त करेगा। अपने अनुभव में हमने यह देखा है कि केन्द्र एवं त्रिकोण के संयोग से अत्यन्त शक्तिशाली राजयोगों का निर्माण होता है जो जातक के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन योगों के अभाव में कोई भी जातक अपने जीवन में उन्नति प्राप्त नहीं कर सकता है। ज्योतिषशास्त्र में योग अत्याधिक महत्वपूर्ण विषय है और इनके महत्व को समझते हुए इस पुस्तक के एक अलग अध्याय में इनकी विस्तृत चर्चा की गई है।

चरण 5: ग्रहों के बल का आंकलन:

ज्योतिषशास्त्र अन्य कुछ नहीं अपितु बली एवं निर्बली ग्रहों द्वारा प्राप्त होने वाले गूढ़ परिणामों का अध्ययन है। उदाहरणत: कुण्डली का बली सूर्य जीवन में उच्च स्तर सम्मान, कीर्ति, एवं धन-समृद्धि के साथ-साथ जातक को नेतृत्व करने की अदभुत क्षमता प्रदान करता है, जबकि निर्बली सूर्य निर्धनता, तनाव, सम्मान एवं धन की हानि आदि कई प्रकार के नकारात्मक परिणाम देता है। इसी प्रकार बली मंगल जहां जातक को तेजस्वी, शूरवीर, अपने व्यवसाय में अग्रणी एवं भू-सम्पति वाला बनाता है, वहीं क्षीण मंगल दुर्घटनाओं, झगड़ों, अनेक रोगों, क्रूर हत्याओं एवं नरसंहारों का कारण होता है।

ज्योतिषशास्त्र के विद्यार्थियों को प्रत्येक ग्रह की विशेषताओं एवं कारकत्वों को भली-भान्ति समझना और याद रखना अतिआवश्यक है। हमने इस विषय पर एक अलग अध्याय में चर्चा की है। प्रत्येक ग्रह के सामान्य कारकत्वों को आगे दिया गया है लेकिन इससे पहले यह समझना भी अत्यन्त आवश्यक है कि कोई भी ग्रह कब बली अथवा निर्बली होता है।

सामान्यतः ग्रहों के बल का सटीक आंकलन षडबल और अष्टकवर्ग का प्रयोग करके किया जाता है लेकिन जब यह तुरन्त उपलब्ध नहीं हो और इसको निकालने के लिए समय की भी कमी हो तो ऐसी स्थिति में ग्रहों के बल के आंकलन के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों का प्रयोग किया जा सकता है।

कुण्डली में ग्रह बली होगा यदि वह

1. उच्च का हो,
2. अपनी मूलत्रिकोण राशि में हो अथवा स्वग्रही हो अथवा मित्र ग्रह की राशि में हो,
3. शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट हो,
4. केन्द्र या त्रिकोण में हो अथवा शुभ कर्तरी योग में हो,
5. वर्गों में शुभ हो (इसका वर्णन वर्गों पर आधारित अलग अध्याय में किया गया है),
6. नीच राशि या अस्त अथवा राशि के प्रारंभिक एवं अन्तिम 5 अंशों में न हो,
7. मृत्यु भाग में न हो

पराशर के अनुसार विषम राशि के अन्तिम 6 अंश अथवा सम राशि के प्रारंभिक 6 अंश ग्रह के बल को कम करते हैं। अर्थात इन अंशों में स्थित ग्रह अपना स्वाभाविक बल खो देता है। यहां स्थित ग्रह मृत्यु भाग में स्थित माने जाते हैं।

8. अष्टकवर्ग में चार से अधिक बिन्दुओं के साथ हो,
9. षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भावों में स्थित न हो।

महत्वपूर्णः *शुभ ग्रहों के लिए सबसे श्रेष्ठ स्थिति केन्द्र एवं त्रिकोण भावों की है और अशुभ ग्रहों के लिए 3, 6 एवं 11वें भाव की है।*

कुण्डली में ग्रह निर्बली होगा यदि वह

1. अपनी नीच राशि में स्थित हो,
2. अस्त हो,
3. राशि के प्रारंभिक 6 अथवा अन्तिम 6 अंश में हो
4. मृत्यु भाग में हो,
5. शत्रु राशि में हो,
6. 6, 8 या 12वें भाव में हो,
7. वर्गों में क्षीण हो, उदाहरणतः शत्रु की राशि, नीच राशि आदि में हो,
8. अष्टकवर्ग में 3 से कम शुभ बिन्दुओं के साथ हो,
9. अशुभ ग्रहों के साथ हो अथवा उनसे दृष्ट हो अथवा पाप कर्तरी में हो।

ग्रहों का कारकत्व

सूर्यः यदि कुण्डली में सूर्य बली होकर स्थित हो तो निम्नलिखित विशेषताएं देता है:

1. दृढ़ शक्ति एवं उच्च चरित्र,
2. साहस, आरोग्यता, चुस्त-दुरस्त शरीर, सहनशीलता, जीवनशक्ति एवं आत्मविश्वास,
3. स्पष्ट वक्ता और नेतृत्व करने की क्षमता,
4. सूर्य आत्मा का कारक है, अतः प्रबुद्धता एवं अन्तिम सत्य अर्थात मोक्ष की ओर अग्रसर रहने में सहायक होता है।
5. प्रतिष्ठा, उच्च पद, शासन एवं स्वामी के साथ मधुर सम्बन्ध। राजनीतिज्ञों, शासन में उच्च पदाधिकारियों, राजनायिकों, शल्यचिकित्सकों, चिकित्सकों और वैज्ञानिकों के लिए बली सूर्य अतिआवश्यक होता है जो उन्हें जीवन में सर्वश्रेष्ठ बनाने में सहायता करता है।
6. ऐसे जातक का पिता भी जीवन मे अच्छे स्वास्थ्य एवं सामाजिक स्थिति का आनन्द लेता है क्योंकि सूर्य पिता का कारक होता है।

7. बली किन्तु अशुभ ग्रहों से पीड़ित सूर्य जातक को निरंकुश, निर्दयी, क्रोधी और अधीर बनाता है।

निर्बली सूर्यः

1. नीचतम स्थिति अर्थात तुला राशि में 10 अंश का सूर्य जातक को निर्धन, अस्वस्थ और अल्पआयु का बनाता है। पराशर के अनुसार ऐसा सूर्य कुण्डली के सभी राजयोगों को भंग कर देता है।

2. आत्मविश्वास में कमी, डरपोक, कमजोर दृष्टि आदि। यदि सूर्य निर्बली हो तो जातक का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं होता है, वह समाज से पृथक रहता है और द्वादश भाव में स्थित निर्बली सूर्य जातक को बहिष्कृत व्यक्ति बनाता है।

3. धन-सम्पति की हानि। यदि 6, 8 या 12वें भाव का स्वामी होकर मंगल से पीड़ित हो तो बड़ी दुर्घटनायें देगा। शनि से पीड़ित होने पर कई प्रकार की हानि, दयनीय स्थिति, पिता एवं वरिष्ठ अधिकारियों से तालमेल में कमी, बदनामी, व्यवसाय में हानि, झूठा स्वाभिमान, अहंकार, स्वार्थ, अभिमान आदि।

4. शासन एवं वरिष्ठ अधिकारियों से विवाद, आयकर विभाग से परेशानियां, आदि।

6. बुध एवं बृहस्पति की राशियों में स्थित पीड़ित सूर्य, फेफड़ों और पाचन से सम्बन्धित रोग देता है। चन्द्रमा से 6वें भाव में पीड़ित होने का अर्थ है कि आंतों और पाचन अंगों से सम्बन्धित परेशानियां तथा 4थे या 5वें भाव में पीड़ित सूर्य हृदय से सम्बन्धित रोग का कारण हो सकता है। कर्क राशि में पीड़ित होने पर जातक को छाती सम्बन्धित रोगों से पीड़ित करता है और दृष्टि दोष देता है। मंगल एवं शनि से पीड़ित होने का अर्थ है कि "अपेन्डिसाइटिस" अर्थात आंतो में एक प्रकार का फोड़ा देता है जो शल्यचिकित्सा से ही ठीक होता है।

7. पिता को परेशानियां, विशेषकर यदि सूर्य पाप कर्त्तरी में हो अथवा सूर्य से सप्तम भाव में अशुभ ग्रह हो।

चन्द्रमा

1. बली चन्द्रमा वाले जातक सौम्य देह, सदा युवा दिखने वाले, छोटे कद एवं बलिष्ठ या स्थूल शरीर के, सुन्दर, नम्र दिल, मानवतावादी, दूसरे पर दया करने वाले, परिष्कृत सोच, विश्वस्त और मित्रों के प्रति ईमानदार होते हैं।
2. ऐसे जातक यात्राओं के इच्छुक, प्रेमी, समाज में चर्चित एवं सामाजिक जीवन यापन करने वाले, रहस्यों के प्रति रुझान रखने वाले, स्वप्नवादी और प्रत्येक स्थिति के अनुरुप स्वयं को ढालने वाले होते हैं।
3. ऐसे जातक कल्पनाशक्ति सम्पन्न होने के कारण अच्छे लेखक, संगीतकार, कलाकार आदि होते हैं।
4. यदि चन्द्रमा लग्नेश द्वारा अनुकूल दृष्ट हो तो कुण्डली के सभी अरिष्ट योग भंग हो जाते हैं।

निर्बली चन्द्रमा:

1. जातक दुर्भाग्यशाली, अपशयी अर्थात कीर्तिहीन, अविश्वासपात्र, व्यर्थ में घूमने वाला, कपटी आदि होता है। वृश्चिक राशि में 3 अंश का, नीचतम स्थिति में होकर कुण्डली के सभी राजयोगों को भंग करते हुए राजभंग योग बनाता है, जिसके परिणाम स्वरुप जातक शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर निर्बल होता है। यह बालारिष्ट का भी सूचक होता है।
2. चतुर्थ भाव में पीड़ित चन्द्रमा अथवा चतुर्थेश षष्टम भाव में हो और चन्द्रमा अशुभ ग्रहों से घिरा हो तो यह माता की मृत्यु का कारण होता है।
3. जातक अस्पष्ट सोच, अस्थिर स्वभाव एवं सहनशक्तिहीन होता है। भावनाओं में अस्थिरता के कारण वह लोगों से मिलने में असहज महसूस करता है जिसके परिणाम स्वरुप वह मानसिक तनाव एवं मित्रता के अभाव से पीड़ित रहता है।
4. चन्द्रमा से सम्बन्धित रोगों से ग्रस्त रहता है।
5. यदि चन्द्रमा निर्बली हो और कुण्डली में मेष राशि एवं बुध भी पीड़ित हों तो जातक में दिमागी असन्तुलन की संभावनायें प्रबल होती हैं।

6. यदि चन्द्रमा मेष अथवा वृश्चिक राशि का होकर अशुभ ग्रहों से घिरा हो तो यह हथियारों अथवा अग्नि से मृत्यु का कारण होता है।

मंगल

1. बली मंगल जातक को निर्भय, साहसी, नेता, निर्णय लेने में सक्षम और संगठित करने में दक्ष बनाता है। ऐसा जातक मृत्यु से भी भयभीत नहीं होता है।
2. सत्यनिष्ठता, गर्म स्वभाव, शारीरिक एवं चारित्रिक दृढ़ता प्रदान करता है।
3. जातक को तर्क एवं वैज्ञानिक पद्धति से यंत्र सलाहकार, यंत्रकार, इंजीनियर, शल्यचिकित्सक, सेना प्रमुख, पुलिस प्रमुख, अन्वेक्षक आदि बनाता है और भू-सम्पति का कारक होने के कारण जातक को भूमि और स्थिर संपदा देता है।
4. मंगल-शुक्र यदि बली होकर स्थित हों तो जातक को कला के क्षेत्र में सफलता प्रदान करते हैं। निर्बली होने पर यह जातक को चरित्रहीन बनाते हैं।

निर्बली मंगल:

1. झगड़े, तनाव, हिंसा और विनाशकारी स्वभाव।
2. चोर, कानून विरोधी और लापरवाह।
3. उर्जा शक्ति की कमी और कार्य करने में अक्षम।
4. ड़रपोक और दूसरे के द्वारा संचालित।
5. प्रतिरोधक शक्ति की कमी, घावों के भरने में अधिक समय।
6. कामशक्ति की कमी।
7. दुर्घटनायें, निर्मम हत्या, असावधानी से चोट खाने वाला, कुतर्क करने वाला एवं विवाद करने वाला।

बुध

1. ज्ञानशील, सामान्य ज्ञान रखने वाला, चुस्त, चपल, चौकन्ना एवं शीघ्रता करने वाला, तीक्ष्ण बुद्धि एवं वाचाल और पुष्ट देहवाला बनाता है।
2. भाषाओं में प्रवीण बनाता है और वाणिज्य, विज्ञान, कला एवं संचार में दक्षता देता है।
3. शब्दकोष में दक्षता देता है और जातक विद्वान, लेखक एवं कुशल वक्ता होता है।
4. अच्छी वार्ता, प्रवचन पसन्द, सम्मोहित करने वाला, राजनीतिक कौशल, दोहरा व्यवहार और विपरीत लिंग के जातकों में प्रसिद्ध।
7. अच्छी स्मरणशक्ति।
8. बृहत् जातक के मतानुसार, धनु में स्थित बुध राजा से सम्मान दिलाता है और शिक्षित एवं समयानुसार वार्तालाप करने वाला बनाता है। जातक को धर्मात्मा बनाता है और शिक्षा, धार्मिक व्यक्ति से भेंट करने में एवं धार्मिक कार्य-कलापों में सफलता देता है।

निर्बली बुधः

1. दुर्बल, छोटी सोचवाला अर्थात संकीर्ण प्रवृति, इच्छाशक्ति की कमी।
2. बुध बच्चा है अतः निर्बली बुध बचपन में अस्वस्थ बनाता है, घर में समस्यायें देता है और प्रारम्भिक शिक्षा में रुकावटें पैदा करता है।
3. अपरिपक्व, बेइमान, चोर, मूर्ख एवं जड़बुद्धि बनाता है।
4. वाकशक्ति में त्रुटि और नाड़ी तन्तु सम्बन्धित रोग देता है।

बृहस्पति

1. उदारचरित्र, दयालु, दार्शनिक, सामाजिक उत्थान और जन्म से भाग्यवान।
2. प्रसन्न रहने वाला, दूसरों के विरुद्ध द्वेष रखने में असमर्थ, सामाजिक एवं दूसरों के प्रति दया का भाव रखने वाला और अच्छा साथ निभाने वाला।

3. उत्कृष्ट आकांक्षा अथवा उच्च अभिलाषा वाली बड़ी योजनायें बनाने वाला।

4. सरलता से प्रसन्न होने वाला, अच्छा मित्र और अच्छा नेता।

7. धार्मिक, कानून का सम्मान करने वाला, नैतिक। बुध के विपरीत बृहस्पति हमेशा ही निष्ठावान बनोता है।

8. सहानुभूतिपूर्वक कार्य करने वाला और दूसरों से अत्याधिक स्नेह रखने वाला।

निर्बली बृहस्पतिः

1. बड़ा-चढ़ाकर बातें बनाना, आडम्बर युक्त जीवन, वृथा स्तुति करनेवाला।

2. उर्जा शक्ति एवं उत्साह की कमी, निर्बल इच्छा शक्ति एवं विश्वास।

3. भौतिक एवं आर्थिक समस्यायें।

4. दुर्बल चेतनत्व शक्ति, जिगर एवं पित्ती सम्बन्धित रोग।

शुक्र

1. आकर्षक व्यक्तित्व, सुन्दर, मित्रों का प्रेमी, वार्तालाप में दक्ष, सामाजिक एवं शिष्टाचार युक्त, सहज कार्य करने वाला, निस्वार्थ और मृदु भाषी।

2. कलात्मक, कला, संगीत, चित्रकारी, गायन, नृत्य एवं कविता के प्रति रुझान।

3. सौम्य, सहज, परिष्कृत, शिष्टाचार युक्त।

4. स्त्रियों का कृपापात्र, प्रसन्न, स्वस्थ, दुःख एवं क्रोध से कोसों दूर।

निर्बली शुक्रः

1. आलसी, मलीन, अल्पमति, कला के प्रति प्रेम विहीन।

2. प्रतिकूल सोचवाला, पारिवारिक उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन।

3. सुन्दरता, आकर्षण, कृपा, प्रेम और लगाव में कमी।

4. कमजोर गुर्दे और प्रजनन तन्त्र में निर्बलता अर्थात नपुंसकता आदि।

5. प्रेम में धोखा, भार्या की मृत्यु।

6. शुक्र कालपुरुष की कुण्डली में काम-सुख का सूचक है। राहु से युति होने पर काम इच्छाओं को दूषित करता है। मंगल के साथ युति होने पर चरित्रहीन अथवा कामइच्छाओं में विकृति देता है।

शनि

1. दार्शनिक, चिन्ताकुल, मितव्ययी, सावधान और सतर्कतापूर्वक लेकिन धीमी गति से कार्य करने वाला।
2. धैर्यवान, सहन शक्ति वाला, परिश्रमी, निष्कपट, ईमानदार।
3. भू-सम्पति एवं कई प्रकार की स्थिर सम्पतियां।
4. आध्यात्मिक जीवन, एकाग्रता, नियमबद्ध जीवन।
5. भगवान शिव, शनि के द्वारा कार्य करते हैं अत: ऐसा जातक सभी सीमाओं पर विजय प्राप्त कर सकता है।

निर्बली शनि:

1. निरंकुश, धूर्त, स्वार्थी एवं कुरुप, काम विकृति, दुर्बुद्धि।
2. चोर, धोखेबाज, अपराधी।
3. मृत्यु, बिमारी, दरिद्रता एवं अलगाव का कारक होने के कारण परेशानियां।
4. प्रियजनों से दूरी या अलगाव और दासता एवं गुलामी।
5. वृद्धावस्था से सम्बन्धित एवं लम्बी चलने वाली बिमारियां की पुनरावृत्ति, गठिया, कैन्सर आदि।

कुण्डली में ग्रहों की शुभ स्थितियां और उनका जातक के चरित्र पर प्रभाव

कुण्डली के बली एवं शुभ स्थित ग्रहों का जातक के चरित्र पर अपना विशेष प्रभाव होता है। इस संदर्भ में लग्नेश, लग्न में स्थित ग्रहों, दशमेश और दशम भाव में स्थित ग्रहों का प्राथमिक योगदान होता है।

सूर्यः बली सूर्य नेतृत्व के गुण, दया प्रवृत्ति, उर्जा एवं धन-सम्पदा, विचारों की पवित्रता, निष्ठा, सत्यता, भयहीनता, चमक, सफलता एवं विजय प्रदान करता है और रोगों से दूर रखता है। फलदीपिका के अनुसार सूर्य, यश, साहस और सम्मोहन करने की क्षमता अर्थात आकर्षण देता है। यदि बली सूर्य केन्द्र अथवा त्रिकोण का स्वामी होकर लग्न में स्थित हो तो यह शक्ति का बहुत बड़ा स्रोत होता है। कालपुरुष की कुण्डली में सूर्य सबसे पवित्र भाव, पंचम का स्वामी होकर पूर्व पुण्य अर्थात पिछले जन्मों के कर्मों का द्योतक होता है। अतः कुण्डली में बली सूर्य जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण अव्यय होता है।

निर्बली अथवा दुर्स्थित सूर्य जातक को अहंकारी, अभिमानी, चाटुकारिता पसन्द, झूठी शान वाला और बड़ा-चढ़ाकर बातें बनाने वाला बनाता है।

चन्द्रमाः बली चन्द्रमा जातक को दयालु व्यक्ति, मानवतावादी, भावुक, यात्राओं का प्रेमी, सबसे प्रेम करने वाला, कल्पनाशील और अच्छी छवि के सामाजिक जीवन वाला बनाता है। ऐसे जातक अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए नहीं अपितु प्रेम के उद्देश्य के लिए ही सच्चा प्रेम करते हैं इसलिए अच्छे लेखक, कवि या साहित्यकार होते हैं। चन्द्रमा मस्तिष्क का कारक होता है अतः बली होकर जातक को मानसिक दृढ़ता एवं सोच में सम्पन्नता देता है।

निर्बली अथवा दुर्स्थित चन्द्रमा जातक को अस्थिर प्रवृति, अविश्वसनीय, व्यर्थ में घूमने वाला, चिड़चिड़ा और उद्देश्यहीन बनाता है।

मंगलः बली मंगल साहस, कठिन से कठिन कार्य को भी प्रारम्भ करने की क्षमता, साहस और सत्यता प्रदान करता है। बली मंगल वाले जातक, विशेषकर ऐसे जातक जिनके लग्न अथवा चन्द्र राशि में मंगल स्थित हो, भय के नाम से भी परिचित नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए महात्मा गान्धी की जन्मकुण्डली का अवलोकन करें। गान्धी जी का जन्म नक्षत्र चित्रा था और लग्नेश शुक्र, मंगल के साथ युति करके लग्न में ही स्थित था। इनमें उर्जा एवं नैतिक शक्ति कूट-कूटकर भरी थी जिसके कारण वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में कभी भी पराजित नहीं हुए।

निर्बली अथवा दुर्स्थित मंगल में झगड़े, कलह एवं हिंसात्मक विनाश को बढ़ाने की प्रवृति होती है और यह जातक को दुर्घटनाओं की ओर अग्रसर करता है। यह जातक को कानूनविरोधी, चोर, व्यभिचारी, बलात्कार एवं हत्या करने वाला बनाता है।

बुधः बली बुध जातक को विद्वान, विनोद प्रिय और चपल बनाता है। यह नवीन ज्ञान, खेलों में सम्मान और आजीविका से सम्बन्धित व्यवसाय में लाभ देता है।

शुक्र के साथ सम्बन्ध होने पर यह संगीत के लिए आवश्यक विशेष गुण प्रदान करता है।

निर्बली अथवा दुर्स्थित बुध जातक को शीघ्र हताश होने वाला, अस्थिर सोच-विचार वाला, मानसिक अस्थिरता और त्वचा सम्बन्धित रोगों से पीड़ित बनाता है। यह परिणाम विशेषकर तब अधिक प्राप्त होते हैं जब निर्बली बुध, राहु के से सम्बन्धित होता है।

बृहस्पतिः बली बृहस्पति जातक को आनन्दित, आशावादी, उदार, सहनशील, बड़ी-बड़ी योजनाओं पर कार्य करने वाला, सामाजिक, सहजता से कार्य करने वाला एवं दयालु बनाता है तथा जातक को अपने ज्ञान, शील एवं स्वभाव से दूसरों को सम्मोहित करने वाले व्यक्तित्व का स्वामित्व देता है। यह प्रत्येक विषय में श्रेष्ठता देता है और विद्वता एवं सद्गति प्रदान करता है। जातक पारिजात के मतानुसार चतुर्थ भाव में स्थित बृहस्पति केवल खुशियां ही प्रदान करता है।

बृहस्पति धर्म, आध्यात्मिकता, आन्तरिक ज्ञान, सत्यता, न्याय और दया की भावना का कारक है, अतः यदि बृहस्पति कुण्डली में अच्छी स्थिति में हो तो इसे भगवान की कृपा एवं आर्शीवाद ही जानना चाहिए। लग्न, जहां यह दिग्बली होता है, में स्थित होने पर यह पंचम भाव अर्थात पूर्व-पुण्य एवं नवम भाव अर्थात इस जन्म का भाग्य, को देखता है, जिसके परिणाम स्वरुप कुण्डली के हजारों पापों को धो डालता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रानुसार केन्द्र में स्थित बृहस्पति, बहुत बड़ा रक्षक होता है।

निर्बली अथवा दुर्स्थित बृहस्पति जातक को आडम्बर युक्त, अतिव्ययी और बड़ा-चढ़ाकर बात करने वाला बनाता है। कुण्डली के लग्न में स्थित निर्बली बृहस्पति जातक को भोजनप्रिय, स्वार्थी और स्थूलकाय भी बनाता है।

शुक्रः बली शुक्र जातक को सौम्य, कला में निपुण, सुसंस्कृत और सामाजिक बनाता है। ऐसे जातक स्वयं भी मोहक होते हैं और दूसरों की सुन्दरता की प्रशंसा करने वाले भी होते हैं जो उनके लिए जीवनभर आनन्द का स्रोत बना रहता है। बली शुक्र जातक को आकर्षक एवं विपरीत लिंगी को शारीरिक मिलन के प्रति आकर्षित और सम्मोहित करने वाला बनाता है तथा संगीत, कला, नृत्य एवं कलाकृतियों के प्रति रुचि देता है।

निर्बली अथवा दुर्स्थित शुक्र जातक को विकृत, अस्वच्छ एवं क्रमबद्धहीन बनाता है। यह विवाह में विलम्ब करता है और वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न

करता है।

शनि: बली शनि जातक को दार्शनिक, उदासीन, मितव्ययी, सतर्क एवं धीमी गति से कार्य करने वाला बनाता है। ऐसे जातक अपनी धुन के पक्के, धैर्यवान, गहरी आस्था रखने वाले, पसन्द-नापसन्द के प्रति दृढ़ और दूसरों के रीति-रिवाजों की नकल करने वाले होते हैं।

निर्बली अथवा दुर्स्थित शनि जातक को अस्वस्थ, धूर्त, निरंकुश, अत्याधिक स्वार्थी, भाग्यहीन और नकारात्मक बनाता है।

राहु: मेष, वृषभ, कर्क, कन्या और कुंभ राशियों का राहु अच्छा होता है। विशेषकर यदि केन्द्र, त्रिकोण या उपचय भावों में बैठा हो तो जातक को सर्वोच्च सम्मान का पद, यश-कीर्ति और विदेशी भूमि में धन-समृद्धि देता है।

चरण 6: दुष्ट स्थानों की भूमिका:

बृहत्पराशर होराशास्त्र में 6वें, 8वें और 12वें भाव को दुष्टस्थान कहा गया है। ये भाव नकारात्मक भूमिका के साथ दुष्ट स्वभाव वाले होते हैं और कुण्डली में विपरीत प्रभाव डालते हैं। षष्टम भाव उपचय भाव होने के पर्यन्त भी ऋण, रोग एवं शत्रु भाव है, अष्टम भाव दुर्घटनाओं, गंभीर रोगों, चोरी, रुकावटों, क्षति एवं मृत्यु का भाव है तथा द्वादश भाव व्यय, विनाश, हानि एवं पतन का भाव है। ये भाव ही दुष्ट नहीं होते हैं अपितु इनके स्वामियों में भी अशुभता प्रदान करने की क्षमता होती है।

जिस भाव का स्वामी, 6वें, 8वें एवं 12वें भाव में स्थित होता है और जिन भावों में इनके स्वामी स्थिति होते हैं, उन भावों के नैसर्गिक कारकत्व स्वत: ही नष्ट हो जाते हैं। उदाहरणत: यदि लग्नेश इन भावों में से किसी भी भाव में स्थित हो और अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो स्वास्थ्य ही हानि होगी। इसी प्रकार यदि द्वितीयेश अर्थात धनेश की 6, 8 अथवा 12वें भाव में स्थिति धन के दृष्टिकोण से शुभ नहीं होगी। ऐसी ही स्थिति तब होगी जब 6, 8 या 12वें भाव का स्वामी, द्वितीय भाव में स्थित होगा और इसी प्रकार अन्य भावों के संदर्भ में परिणाम प्राप्त होंगे।

विशेष: किसी भी भाव को बुरा या दुष्ट भाव नहीं मानना चाहिए क्योंकि सभी भाव दैवीय सिद्धान्तों के एक भाग होते हैं जिनके कुछ कार्य विशेष होते हैं। षष्टम भाव विजय प्राप्त करने के लिए शुभ है, अष्टम भाव मोक्ष त्रिकोण का एक महत्वपूर्ण भाग है जो शरीर में कुण्डलनी जागरण के

लिए अच्छा एवं गहन खोजों के लिए आवश्यक है तथा द्वादश भाव मोक्ष प्राप्त अर्थात अन्तिम सत्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

चरण 7: नक्षत्रः

फलित ज्योतिष में नक्षत्र बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नक्षत्रों के नाम, उनके स्वामियों के नाम एवं उनके क्रम को याद रखना अतिआवश्यक है। नक्षत्रों एवं उनके स्वामियों के नामों को सरलता से याद रखने के लिए हमने इस पुस्तक में एक अलग अध्याय दिया है। सामान्य नियमानुसार यदि ग्रह, शुभ ग्रह के नक्षत्र अथवा अपने नक्षत्र में स्थित हो तो अतिरिक्त नैसर्गिक बल प्राप्त करता है।

इसके अतिरिक्त भी नक्षत्र अन्य कई प्रकार से महत्वपूर्ण होते हैं। उदाहरणतः भरणी नक्षत्र को अच्छा नहीं माना जाता है। वाजपेयी एवं मुशर्रफ की आगरा वार्ता भरण नक्षत्र में ही हुई जो असफल होने के लिए प्रतिबद्ध थी। इसी प्रकार श्री के.एन. राव की प्रसिद्ध भविष्यवाणी कि शनि का रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश, विश्व को युद्ध की ओर अग्रसर करता है और संसार में प्राकृतिक आपदायें घटित होती है, कई बार सत्य सिद्ध हुई है। 11 सितम्बर, 2001 को जब शनि रोहिणी नक्षत्र में था, आंतकवादियों द्वारा वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर को ध्वंस किया गया। इस घटना के फलस्वरुप अफगानिस्तान में युद्ध, तालिबान का सत्ताच्युत होना, विश्व के विभिन्न भागों में आग, बाढ़, अकाल की घटनाएं, भारत-पाक सीमा विवाद आदि घटनायें हिन्दू ज्योतिषशास्त्र एवं विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित सिद्धान्तों के सत्य को प्रमाणित करती हैं।

चरण 8: दशा चक्रः

जन्म के समय प्राप्त होने वाली दशा, जातक के अपने पूर्व जन्मों के कर्मों का ही परिणाम होती है। यदि कोई जातक जीवन की प्रारंभिक अवस्था में अच्छे ग्रहों की दशा, जैसे कि शुभ ग्रह या लग्नेश या नवमेश की दशा प्राप्त करता है तो उस जातक को जीवन के शुरुआत में ही अतिरिक्त लाभ प्राप्त हो जाता है। ऐसा जातक अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है जिसके परिणाम स्वरुप उसकी धनोर्पाजन की अच्छी संभावनायें प्रबल हो जाती हैं। चूंकि पंचम भाव पूर्व जन्मों के कर्मों को दर्शाता है, अतः इस संदर्भ में पंचमेश की दशा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यदि पंचमेश पीड़ित है और इसकी दशा आती है तो यह दशाकाल विशेष कष्टदायक होगा क्योंकि इस समय जातक को पिछले जन्मों के पाप कर्मों के फल प्रकाश में आ जाएगें।

उच्च के ग्रह, लग्नेश एवं दशमेश की दशायें जीवन की सबसे अधिक श्रेष्ठ दशायें होती हैं। उदाहरणतः भारत के स्वर्गीय प्रधानमंत्री, जवाहर लाल नेहरु को जीवन के सही समय पर सही दशा प्राप्त हुई जिसके परिणाम स्वरुप वह भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुए। 1947 में उनकी बली लग्नेश, चन्द्रमा की दशा चल रही थी और उसके बाद 1948 से उन्हें बली दशमेश मंगल की दशा प्राप्त हुई जो दशम भाव को दृष्ट कर रहा है। 1947 में ही सरदार पटेल को पीछे छोड़ते हुए उन्हें भारत के प्रथम प्रधानमंत्री होने का गौरव प्राप्त हुआ जिससे उनकी यश एवं कीर्ति सारे विश्व में फैल गई। उनका दशम भाव अपने स्वामी मंगल के साथ-साथ बुध, शुक्र एवं बृहस्पति, तीन-तीन शुभ ग्रहों से दृष्ट होने के कारण अत्याधिक बली था।

चरण 9: शुभाशुभ भावों के समूहः

यह सदैव याद रखें कि जन्मकुण्डली में दो प्रकार के भाव होते हैं:

समूह 1: शुभ भावों का समूह है। इसमें 1, 4, 7 एवं 10 भाव (अर्थात सभी केन्द्र भाव), पंचम एवं नवम भाव (अर्थात त्रिकाण भाव) और 2रा (धन भाव) एवं 11वां भाव (प्राप्ति का भाव) शामिल होते हैं।

समूह 2: भावों के इस समूह में 3रा, 6वां, 8वां और 12वां भाव शामिल होते हैं।

समूह 1 के भावों के स्वामियों का एक-दूसरे से सम्बन्ध धनयोग बनाता है जो धनादि शुभ परिणाम देता है। उदाहरण के लिए लग्नेश का चतुर्थेश या सप्तमेश या दशमेश से सम्बन्ध शुभ माना जाता है और यह धनदायक सम्बन्ध होता है। इसी प्रकार पंचमेश का लग्नेश, चतुर्थेश, सप्तमेश अथवा एकादशेश से सम्बन्ध होना भी शुभ माना जाता है।

इसी प्रकार समूह 2 के भावों के स्वामियों का आपसी सम्बन्ध भी धन-सम्पति दायक होने के कारण शुभ माना जाता है। इनका आपसी सम्बन्ध ***विपरीत राजयोग*** बनाता है।

लेकिन समूह 1 के भावों के किसी भी स्वामी का समूह 2 के किसी भी भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध अशुभ परिणाम दायक ***दरिद्र योग*** बनाता है, अतः शुभ नहीं माना जाता है।

चरण 10: स्वगृही अथवा अपने भाव को दृष्ट करने वाले ग्रहः

फलदीपिका के मतानुसार जिन भावों में उनका स्वामी स्थित होता है अथवा जो भाव अपने स्वामी द्वारा दृष्ट होते हैं तथा अशुभ ग्रहों से युति या दृष्ट द्वारा प्रभावित नहीं होते उन भावों में अतिरिक्त नैसर्गिक बल होता है और चाहे भावेश अस्त अथवा नीच का होकर ही क्यों न यह सम्बन्ध बनाये, जातक को उन भावों से सम्बन्धित अच्छे परिणाम निश्चित रुप से प्राप्त होते हैं। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि कोई भी ग्रह कुण्डली के किसी भी भाव में यदि स्वराशि का होकर स्थित हो अथवा स्वराशि के भाव को दृष्ट करता है तो उस भाव विशेष के फलों में वृद्धि करता है और अनिष्ट फलों को नगण्य करता है। उदाहरण के लिए नैसर्गिक अशुभ एवं विनाशकारी प्रवृति रखने वाला ग्रह शनि, मकर राशि का होकर अष्टम भाव में स्थित होने पर भी अष्टम भाव सम्बन्धित शुभ परिणाम देता है क्योंकि मकर इसकी स्वराशि होती है। ऐसा शनि जातक को दीर्घायु बनाता है, अचानक धन लाभ कराता है, पैतृक धन-सम्पति दिलाता है और जातक को दुर्घटनाओं से बचाता है। यद्यपि नवमेश होकर अष्टम में होने से वह नवम भाव के कारकत्वों को नष्ट कर देता है। उदाहरणतः जातक भाग्यवान नहीं होता है, उसकी सफलता की राह में अड़चने अधिक होती हैं और शनि, अपनी दशा में जातक के पिता को अरिष्ट दे सकता है आदि।

अब दूसरा उदाहरण लेते हैं। कन्या लग्न के लिए शनि पंचमेश एवं षष्टेश होता है अर्थात एक शुभ भाव और दूसरा अशुभ भाव। यदि यह पंचम भाव में स्थित हो तो यद्यपि यह नैसर्गिक अशुभ ग्रह है लेकिन यह यहां अपनी राशि में स्थित है अतः पंचम भाव सम्बन्धित शुभ परिणाम जैसे कि अच्छी सन्तान, अच्छी शिक्षा, लाटरी आदि अचानक लाभ प्राप्ति में भाग्य, प्रेम आदि देगा, लेकिन क्योंकि यह षष्टेश भी है तो इन परिणामों में कुछ रुकावटें एवं अवरोध भी होंगे जैसे कि जातक की शिक्षा तो होगी लेकिन उच्च स्तर की नहीं, सन्तान तो होगी लेकिन अधिक नहीं आदि।

चरण 11: ग्रहों का शुभाशुभ भावों का स्वामित्वः

यदि कोई ग्रह शुभाशुभ दोनों प्रकार के भावों का स्वामी हो तो सामान्य विश्लेषण में यह देखें कि ग्रह की मूलत्रिकोण राशि किस भाव में है। यदि ग्रह की मूलत्रिकोण राशि शुभ भाव में होती है तो इससे प्राप्त होने वाले अधिकतर परिणाम सुखद होंगें। उदाहरणतः मिथुन लग्न के लिए शनि अष्टमेश एवं नवमेश होता है। चूंकि शनि की मूलत्रिकोण राशि नवम भाव अर्थात शुभ भाव में पड़ती है अतः मिथुन

लग्न के लिए शनि के अधिकतर परिणाम शुभ ही होंगे। कन्या लग्न के लिए शनि, पंचमेश एवं षष्टेश होता है और इसकी मूलत्रिकोण राशि षष्टम भाव में पड़ती है अतः शनि के परिणाम अधिक शुभ नहीं होंगे यद्यपि इनमें पंचमेश के शुभत्व का मिश्रण भी होगा।

चरण12: भाव की विवेचना:

किसी भी भाव का विश्लेषण करते समय निम्नलिखित तीन अव्ययों को ध्यान में रखना चाहिए:

1. **भाव:** यदि भाव, भावेश या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो अथवा भावेश या शुभ ग्रहों द्वारा गृहीत हो अथवा शुभ कर्त्तरी योग में हो तो बली माना जाता है। इसके विपरीत यदि किसी भी भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो या भाव अशुभ ग्रह से दृष्ट हो एवं भावेश से अदृष्ट हो तो भाव क्षीण या निर्बली माना जाता है। उदाहरणत: यदि द्वितीय भाव द्वितीयेश या शुभ ग्रहों से गृहीत हो अथवा दृष्ट हो तो जातक के पास धन-सम्पति होगी, जातक वाक्पटु और पारवारिक संस्कारों से सुसंस्कृत होगा, यह निश्चित है। जातक की इन विशेषताओं की मात्रा कुण्डली में स्थित अन्य शुभ योगों पर भी निर्भर होगी। इसी प्रकार अशुभ ग्रहों का प्रभाव द्वितीय भाव के शुभ फलों को नष्ट कर देगा।

2. **भाव का स्वामी ग्रह अर्थात भावेश:** जिस भाव में जो राशि स्थित हो, उस राशि का स्वामी उस भाव का स्वामी अर्थात भावेश कहलाता है। जिस राशि में ग्रह होता है, उस राशि का स्वामी, उस ग्रह का प्रबन्धक या स्वामी भी कहलाता है। उदाहरणत: यदि कुण्डली में चन्द्रमा, वृश्चिक राशि का होकर चतुर्थ भाव में बैठा है तो वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल, चतुर्थेश भी कहलाएगा और चन्द्रमा का स्वामी भी कहलाएगा। कुण्डली में ग्रह के साथ-साथ इसके स्वामी का भी बली होना आवश्यक है अर्थात स्वामी ग्रह को कुण्डली के 6, 8 या 12 भाव में नहीं होना चाहिए। भाव के साथ-साथ, भावेश का भी बली होना, भाव के कारकत्वों में वृद्धि करता है।

3. **कारक:** जैसे प्रत्येक भाव के कारकत्व निश्चित हैं उसी प्रकार प्रत्येक भाव के कारक ग्रह भी निश्चित हैं। कुण्डली में कारक की स्थिति की विवेचना किए बिना ही कोई भी पूर्वानुमान करना, किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं होता है। उदाहरणत: यदि हमें चतुर्थ भाव का विश्लेषण करना है तो हमें चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश के साथ-साथ इसके कारक का भी विश्लेषण करना होगा। यदि

भाव एवं भावेश के साथ-साथ, कारक भी बली होगा तो भाव के कारकत्वों में अधिक वृद्धि होगी। चतुर्थ भाव भू-सम्पति, वाहन, माता, सुख आदि का भाव है।

भू-सम्पति के लिए मंगल, वाहन के लिए शुक्र एवं माता के लिए चन्द्रमा कारक होता है। यदि भू-सम्पति का कारक मंगल कुण्डली में बली हो तो उच्च का चतुर्थेश अत्याधिक भू-सम्पति देगा। इसी प्रकार विवाह के संदर्भ में सप्तम भाव, सप्तमेश के साथ-साथ विवाह के कारक शुक्र की स्थिति का विश्लेषण करना अतिआवश्यक है। बली एवं शुभ स्थित शुक्र आनन्ददायक एवं सफल वैवाहिक जीवन के लिए अतिआवश्यक है।

अब उपरोक्त सिद्धान्तों को आगे दी गई प्रसिद्ध संगीतकार डा. बालकृष्णन मुरली की जन्मकुण्डली से समझते हैं।

उदाहरणः

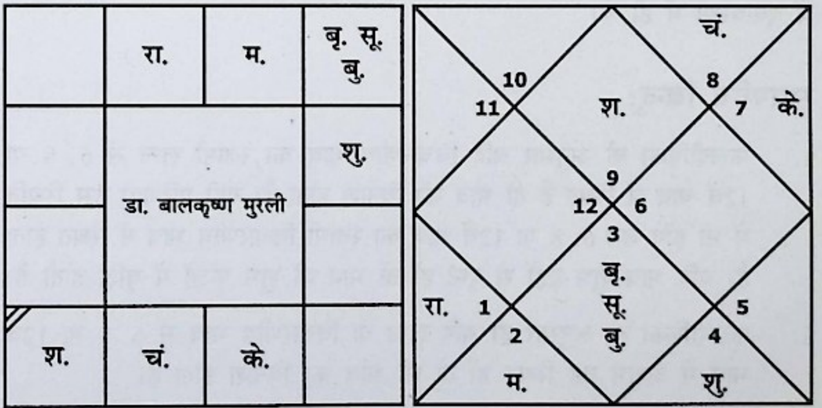

नियमानुसार माता सम्बन्धित भविष्यकथन कहते समय हम चतुर्थ भाव, चतुर्थेश एवं माता के कारक चन्द्रमा की स्थिति के साथ-साथ एक अन्य महत्वपूर्ण अव्यय, चन्द्रमा से चतुर्थ भाव का भी अध्ययन करेंगे। इसी प्रकार हम पिता के लिए सूर्य से नवम, सन्तान के लिए बृहस्पति से पंचम, भाई-बहनों के लिए मंगल से तृतीय, भार्या के लिए शुक्र से सप्तम तथा इसी प्रकार अन्य सभी के लिए भी कारक ग्रह से सम्बन्धित भाव को देखेंगे।

चतुर्थ भावः उपरोक्त कुण्डली में चतुर्थ भाव रिक्त है और ग्रहों की दृष्टि के शुभाशुभ प्रभाव से भी मुक्त है।

चतुर्थेश: चतुर्थेश बृहस्पति, लग्न से सप्तम भाव में क्रूर ग्रह सूर्य से युति कर रहा है और पापी ग्रह शनि से दृष्ट है, अतः अत्याधिक पीड़ित है।

कारक: माता का कारक चन्द्रमा, नीच का होकर, लग्न से द्वादश भाव में पापकर्तरी योग में लिप्त है और मंगल से दृष्ट है। अष्टकवर्ग में भी यह 3 बिन्दुओं के साथ स्थित है। इस प्रकार कारक चन्द्रमा पूर्णरुप से पीड़ित है और निर्बली होकर माता को बचाने में असमर्थ है। नवांश में भी चन्द्रमा, मंगल एवं अष्टमेश बुध से पीड़ित है।

कारक से चतुर्थ भाव: चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि है जो अपने स्वामी शनि से दृष्ट है लेकिन चन्द्रमा से चतुर्थेश शनि, सूर्य एवं मंगल से दृष्ट होकर स्वयं भी पीड़ित है। अतः इस प्रकार हम देखते हैं कि कारक से चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश भी बली स्थिति में नहीं हैं।

परिणाम: डा. बालकृष्णन मुरली ने अपनी माता को तब ही खो दिया था जब वे युवावस्था में ही थे।

स्मरणीय बिन्दु:

1. फलदीपिका के अनुसार यदि विचारणीय भाव का स्वामी लग्न से 6, 8 या 12वें भाव में स्थित है तो भाव का विनाश होता है। यही परिणाम उस स्थिति में भी होंगे जब 6, 8 या 12वें भाव का स्वामी विचारणीय भाव में स्थित होता है। यदि भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो भाव के शुभ फलों में वृद्धि होती है।

2. फलदीपिका के अनुसार ही यदि लग्न या विचारणीय भाव से 6, 8 या 12वें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो भी भाव का विनाश होता है।

3. कुण्डली का लग्नेश सदैव ही शुभ होता है। जिस भाव में लग्नेश स्थित होता है उस भाव से सम्बन्धित परिणामों में उन्नति होती है और शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि उस भाव का स्वामी भी लग्नेश की युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो प्राप्त होने वाले शुभ परिणामों में अधिक शुभता आ जाती है।

4. फलदीपिका के अनुसार एक-एक राशि का स्वामी होने के कारण सूर्य एवं चन्द्रमा को अष्टमेश होने का दोष नहीं लगता है। अर्थात यदि सूर्य या चन्द्रमा अष्टम भाव के स्वामी भी हों तो वह अशुभ नहीं कहलाते हैं। उदाहरणतः मकर लग्न के लिए अष्टमेश सूर्य, आयुष्य कारक होने के कारण और धनु लग्न के

जातकों के लिए, लग्नेश की उच्च राशि का स्वामी होने के कारण अष्टमेश चन्द्रमा अशुभ नहीं होता है।

5. विचारणीय भाव का स्वामी, जन्म नक्षत्र से 3रे, 5वें या 7वें नक्षत्र में नहीं होना चाहिए क्योंकि जन्म नक्षत्र से 3रा नक्षत्र ***विपत तारा***, 5वां नक्षत्र ***प्रतिहारी तारा*** और 7वां नक्षत्र ***वध तारा*** कहलाता है। फलदीपिका के अनुसार इन नक्षत्रों का स्वामी अशुभ होता है।

अध्याय 2

प्रथम भाव या लग्न भाव
(शरीर और व्यक्तित्व)

कुण्डली का प्रथम भाव, तनु भाव के नाम से भी जाना जाता है। इस भाव से विचारणीय मुख्य विषय निम्नलिखित है:

1. शरीर, इसका स्वरुप, वर्ण, रंग आदि,
2. व्यक्तित्व,
3. सामान्य समृद्धि,
4. बाल्यावस्था, प्रारम्भिक जीवन,
5. स्वास्थ्य और चरित्र।

सत्याचार्य के अनुसार प्रथम भाव शुभाशुभ क्रिया-कलापों, बालारिष्ट या बाल्यावस्था में मृत्यु, प्रसन्नता या अप्रसन्नता, निवास स्थान और विदेश में निवास को दर्शाता है।

उत्तरकालामृत प्रथम भाव के 33 कारकत्वों को बताता है जिनमें से शरीर के अंग, केश, खुशियां, प्रसिद्धि और रोगों से मुक्त शरीर, मुख्य हैं।

जातक पारिजात के अनुसार कुण्डली के प्रथम भाव से जातक के शरीर, वर्ण, विशेषताएं, गुण, प्रसिद्धि, प्रसन्नता या अप्रसन्नता, विदेश में निवास, तेज-प्रताप, शक्ति एवं निर्बलता आदि के विषय का ज्ञान किया जाता है। लग्न में उदित राशि जितनी अधिक पवित्र एवं बली होगी जातक उतना ही दीर्घायु होगा, जीवन में सुख प्राप्त करेगा और शासकों का प्रिय होगा। श्री के. एन. राव के मतानुसार लग्न, सूर्य एवं चन्द्रमा, कुण्डली के तीन मुख्य आधार स्तम्भ हैं जिन पर कुण्डली पूर्ण रुप से निर्भर करती है। यदि तीनों ही बली हों तो कुण्डली बहुत बली हो जाती है और ऐसा जातक अपने जीवन में यश-कीर्ति एवं सम्मान प्राप्त करता है, समाज में अपनी विशेष

पहचान बनाता है और यहां तक कि अपने विशेष गुणों के कारण पूरे विश्व में भी पहचाना जाता है। फलदीपिका भी लग्न, सूर्य एवं चन्द्रमा को अधिक महत्वपूर्ण मानती है।

लग्न एवं लग्नेश का महत्व

कुण्डली में लग्न भाव जीवन एवं जीवनारम्भ को इंगित करता है अतः सबसे महत्वपूर्ण भाव होता है। यदि जीवन होगा तभी शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इस भाव के महत्व को इस बात से जाना जा सकता है कि कुण्डली के सभी भाव और उनसे प्राप्त होने वाले सभी शुभाशुभ फल इस भाव पर निर्भर हैं। जातक पारिजात के अनुसार यदि लग्न में उदित राशि अपने स्वामी से दृष्ट हो तो जातक धनवान, कुशाग्र एवं प्रसिद्धि होगा और अपना एवं अपने परिवार का नाम रोशन करेगा। लग्न में शुभ ग्रहों की स्थिति अथवा दृष्टि, जातक के अच्छे भाग्य को दर्शाती है। यदि लग्न में शुभ ग्रह हों अथवा लग्न, तत्कालिक शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यह भाग्य में अधिक बढ़ोतरी करते हैं और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता दिलाते हैं। लग्न का वर्गोतम होना, लग्न के नैसर्गिक बल में अतिरिक्त उर्जा प्रदान करता है।

लग्न भाव के साथ-साथ लग्नेश के महत्व को भी नकारा नहीं जा सकता है क्योंकि बली लग्नेश जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता निश्चित करता है। लग्नेश को इस जीवन में प्राप्त होने वाले परिणामों के इंजन के रुप में भी समझा जा सकता है। इंजन रुपी लग्नेश जितना शक्तिशाली होगा, जीवन रुपी यात्रा उतनी ही अच्छी होगी और सुचारु रुप से चलेगी।

शास्त्रानुसार लग्नेश के बल के अनुरुप ही जातक अपने जीवन में उंचाईयों को प्राप्त करता है। यदि लग्नेश, केन्द्र में त्रिकोणेश के साथ अथवा दशमेश के साथ स्थित हो तो जातक जीवन पर्यन्त समृद्धी का भोग करता है और दीर्घायु होता है। लग्नेश और अष्टमेश दोनों ही बली हों और शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो भी जातक दीर्घायु होता है। फलदीपिका के अनुसार यदि लग्नेश बली हो तो जातक प्रसिद्ध, सम्पन्न और समृद्ध होगा। यदि लग्नेश उच्च का हो और 6वें, 8वें या 12वें भाव में न हो तो जातक राजा होगा अथवा राजा के समान जीवन यापन करने वाला होगा।

यदि लग्नेश, 6, 8 या 12वें भाव में हो अथवा नीच का हो अथवा अशुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक का जीवन समस्याओं से घिरा होगा और उसका निवास अवांछनीय स्थान पर होगा। यदि लग्नेश पीड़ित होगा तो जातक को रोगों से ग्रस्त जीवन की ओर अग्रसर करेगा।

नवांश की भूमिकाः जातक की प्रकृति एवं व्यक्तित्व सम्बन्धित विशेषताओं को नवांश कुण्डली में उदित होने वाली राशि के स्वामी अथवा लग्न में स्थित बली ग्रह से ज्ञात किया जा सकता है। जातक पारिजात के अनुसार जीवन में जो भी शुभाशुभ घटनाएं होती हैं उनका निर्णय नवांश के लग्न से किया जा सकता है! चन्द्रमा द्वारा गृहीत नवांश से जातक के रंग-रुप का ज्ञान किया जा सकता है। फलदीपिका के अनुसार यदि सूर्य अपने नवांश में हो और चंद्रमा स्वराशि में हो तो जातक राजा बनता है।

स्वास्थ्यः

पराशर के अनुसार यदि लग्नेश शुभ स्थिति का होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो जातक अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द उठाता है। इसके विपरीत निम्नलिखित स्थितियों में जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता है:

(1) लग्नेश 6, 8 या 12वें भाव में हो। यदि लग्नेश इन भावों में अशुभ ग्रहों की युति में होकर, शुभ ग्रहों से प्रभावित न हो तो जातक अल्पायु होता है अथवा उसकी सन्तान नहीं होती हैं,

(2) अस्त हो,

(3) नीच का हो,

(4) शत्रु की राशि में हो,

(5) ग्रह युद्ध में हारा हुआ हो,

(6) केन्द्र में कोई शुभ ग्रह न हो,

(7) 3, 6 एवं 11वें भाव में अशुभ ग्रह न हो,

(8) चन्द्रमा पक्षबल से हीन होकर षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में हो और अशुभ ग्रहों से अत्याधिक पीड़ित हो।

(9) यदि कुण्डली का प्रथम भाव, अशुभ ग्रहों द्वारा गृहीत हो अथवा दृष्ट हो अथवा प्रथम भाव पाप कर्तरी में हो तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा।

सामान्यतः अष्टम भाव में अशुभ ग्रहों का स्थित होना अच्छा नहीं माना जाता है लेकिन आयुष्य कारक होने के कारण अष्टम में स्थित शनि दीर्घायु प्रदान करता

है। अच्छे स्वास्थ्य और लम्बी आयु के लिए लग्नेश को, अष्टमेश से अधिक बली होना चाहिए।

अशुभ दशा:

1. अशुभ ग्रहों अथवा षष्टेश, अष्टमेश अथवा द्वादशेश की दशा स्वास्थ्य के लिए अनुकूल दशा नहीं होती है।

   विशेष: मात्र एक अव्यय ही जातक को खराब स्वास्थ्य नहीं दे सकता है। यदि लग्नेश 6, 8 या 12वें भाव में हो और अशुभ ग्रहों से युति या दृष्टि द्वारा प्रभावित हो तो जातक का स्वास्थ्य खराब होता है।

2. लग्नेश पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि, स्वास्थ्य सम्बन्धित परेशानियां देती है जबकि शुभ ग्रहों की दृष्टि या युति स्वास्थ्य के लिए हितकारी होती है। पराशर के अनुसार यदि प्रथम भाव अशुभ ग्रहों द्वारा गृहीत हो तो जातक की बालावस्था या युवावस्था रोगों से पीड़ित होती है और उसका शरीर रोगग्रस्त एवं विकृत होता है।

आकर्षक व्यक्तित्व: लग्न में स्थित शुभ ग्रह जातक को सम्मोहित करने वाले व्यक्तित्व का स्वामी बनाते हैं जबकि अशुभ ग्रह आकर्षक व्यक्तित्व के लिए शुभ नहीं होते हैं। स्त्रीजातकम् के मतानुसार यदि द्वितीयेश एवं द्वादशेश शुभ ग्रह होकर लग्नेश से युति करते हैं और यह युति अशुभ प्रभाव से मुक्त होती है तो जातक शारीरिक रुप से बहुत सुन्दर होता है। प्रथम भाव पर चन्द्रमा या शुक्र की दृष्टि अथवा कुण्डली के केन्द्रों में इनकी बली स्थिति जातक को सुन्दर व्यक्तित्व प्रदान करती है।

सामान्य समृद्धिः बृहत्पाराशर होराशास्त्र के अनुसार केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थित लग्नेश, बृहस्पति, शुक्र एवं बुध जातक को स्वस्थ, धनवान और सफल बनाते हैं। शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट, चर राशिगत लग्नेश जातक को प्रसिद्धि, धन और सुख देता है। द्वादश भावगत स्वनवांश का लग्नेश, **विमल योग** बनाता है जो सौभाग्य, सम्पन्नता और तेज का कारण होता है।

प्रश्नशास्त्रानुसार यदि लग्नेश, षष्टेश भी हो और द्वादश भाव में स्थित हो तो जातक को धनवान बनाता है।

लग्नेश से युत अथवा दृष्ट लग्न भी एक महत्वपूर्ण राजयोग है क्योंकि यह जातक को जीवन के प्रारम्भ से ही अतिरिक्त लाभ देना शुरु कर देता है।

जवाहर लाल नेहरु:

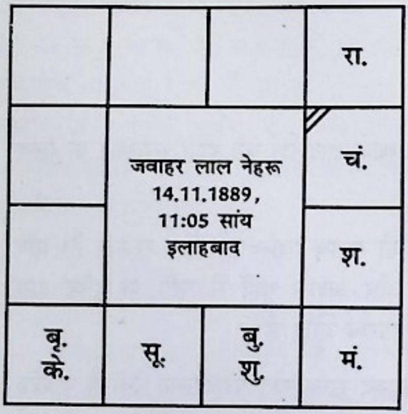

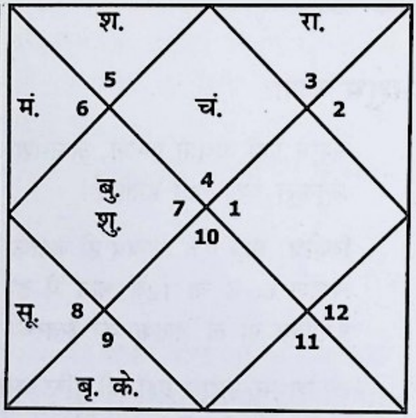

इनकी जन्मकुण्डली में कर्क लग्न उदय हो रहा है और लग्नेश चन्द्रमा, अशुभ ग्रहों के प्रभाव से मुक्त होकर लग्न में ही स्थित है। यह सर्वविदित है कि नेहरु एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे।

श्रीमति इन्दिरा गान्धी

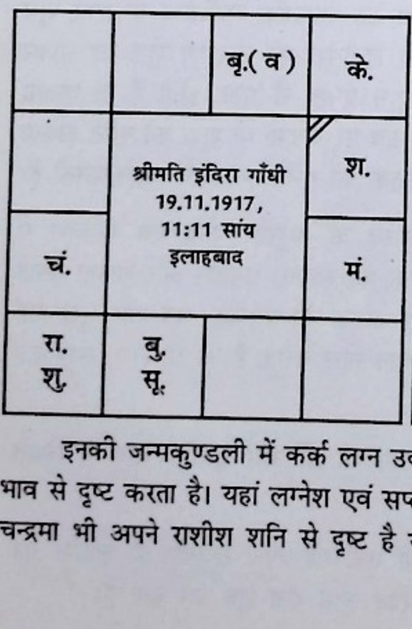

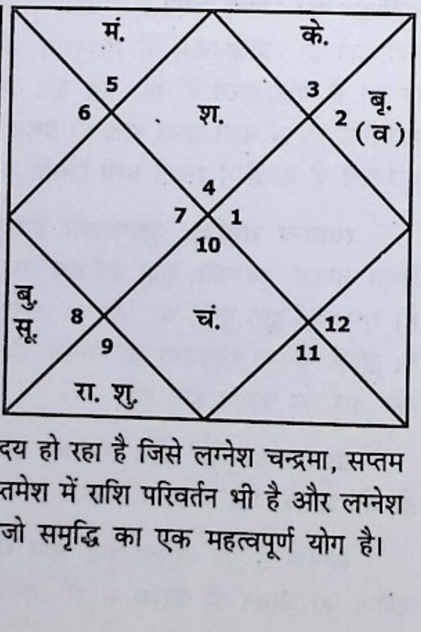

इनकी जन्मकुण्डली में कर्क लग्न उदय हो रहा है जिसे लग्नेश चन्द्रमा, सप्तम भाव से दृष्ट करता है। यहां लग्नेश एवं सप्तमेश में राशि परिवर्तन भी है और लग्नेश चन्द्रमा भी अपने राशीश शनि से दृष्ट है जो समृद्धि का एक महत्वपूर्ण योग है।

राजीव गान्धी

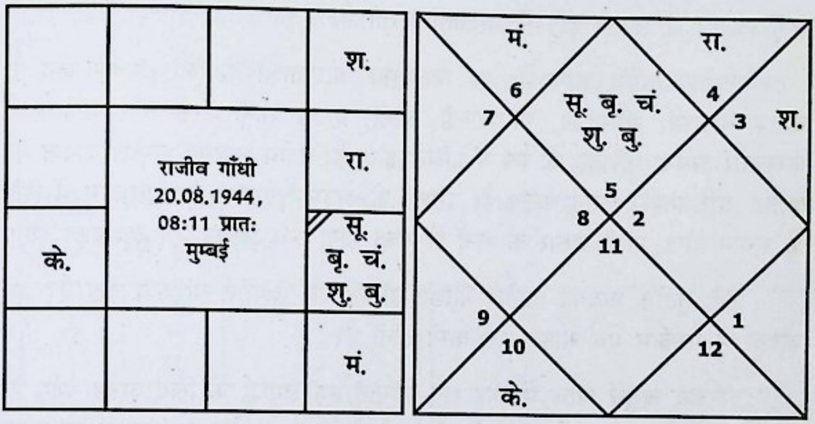

राजीव गान्धी की जन्मकुण्डली का सिंह लग्न है और लग्नेश सूर्य, पंचमेश बृहस्पति एवं दशमेश शुक्र के साथ युति करके लग्न में ही स्थित होकर महत्वपूर्ण राजयोग बना रहा है। **"नेहरु डायनेस्टी"** में श्री के. एन. राव लिखते हैं कि लग्नेश की दशमेश शुक्र से युति, विश्व में प्रसिद्धि होने का योग है क्योंकि यह युति लग्न में ही तीनों ही शुभ ग्रहों बृहस्पति, बुध एवं चन्द्रमा के साथ हो रही है। इस कुण्डली में **महाभाग्य योग** भी है।

विभिन्न भावों में स्थित लग्नेश का परिणाम

लग्नेश प्रथम भाव में: यह धन एवं प्रसिद्धि के लिए अच्छा योग है। ऐसा जातक दीर्घायु, सोच-विचार करके निर्णय लेने में सक्षम एवं विद्वान होता है और अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द उठाता है तथा सामान्यत: जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

यदि लग्नेश अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो तो यह अस्वस्थता का कारण होता है। पराशर के अनुसार ऐसा जातक अस्थिर दिमाग वाला होगा, उसकी दो भार्यायें होंगी और वह अनैतिक कार्यों में लिप्त होगा।

लग्नेश द्वितीय भाव में: यह स्वप्रयास द्वारा धन अर्जित करने का योग है। जातक विद्वान, सम्पन्न, अच्छे स्वभाव का, धार्मिक विचार वाला एवं सम्मानित व्यक्ति होगा जो अपने निकट सम्बन्धियों एवं मित्रों की देखभाल करने में तत्पर और

उदारचित्त होगा। ऐसे जातकों के पास विश्लेषण करने की अद्‌भुत क्षमता होती है जो उन्हें व्यापार में सफल होने में सहायता करती है।

लग्नेश तृतीय भाव में: यह कलात्मक योग्यताओं के लिए अच्छा योग है। जातक साहसी, सम्मानित, भाग्यशाली, ज्ञानी, प्रसन्न रहने वाला और संगीतकार, कलाकार अथवा गणितज्ञ के रुप में प्रसिद्ध होता है। तृतीय भावगत लग्नेश जातक को कान्ति और साहस प्रदान करता है। पराशर के अनुसार ऐसा जातक पराक्रम में सिंह के समान होगा, सभी प्रकार के धनों से युक्त होगा और विद्वान एवं खुशहाल होगा।

यदि तृतीय भावगत लग्नेश पीड़ित हो तो वह विपरीत परिणाम देता है। ऐसे जातक में पराक्रम एवं साहस की कमी होती है।

लग्नेश चतुर्थ भाव में: यह धन-सम्पति एवं समृद्धि के लिए अच्छा योग है। चूंकि लग्न केन्द्र के साथ-साथ त्रिकोण भी है, अतः लग्नेश एवं चतुर्थ भाव का सम्बन्ध, केन्द्र-त्रिकोण के सम्बन्ध से बनने वाला महत्वपूर्ण राजयोग बनाता है। यह सम्बन्ध प्रसिद्धि, धन एवं अच्छी शिक्षा के लिए शुभ योग है। यह योग माता की समृद्धि के लिए भी शुभ है और ऐसे जातक का स्वास्थ्य भी अच्छा होता है।

पराशर के अनुसार ऐसा जातक माता-पिता से सम्बन्धित सुख को पूर्ण रुप से प्राप्त करता है, उसके कई भाई-बहन होते हैं और वह आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होकर सभी सुख-सुविधाओं से युक्त होता है। चतुर्थ भाव, बुद्धि और लग्नेश, शरीर को दर्शाता है, अतः इनके सम्बन्ध वाला जातक अपनी बुद्धि की सहायता से अपने व्यक्तित्व को निखारता है और आकर्षक एवं सुन्दर बनने का प्रयास करता है।

भावार्थ कुतुहलम् के मतानुसार यदि लग्नेश, चतुर्थेश से युति करके चतुर्थ भाव में स्थित हो तो जातक एक विशाल घर प्राप्त करता है।

लग्नेश पंचम भाव में: लग्नेश का पंचम भाव में होना सदैव ही पवित्र माना जाता है। यह सम्बन्ध भी केन्द्र-त्रिकोण का सम्बन्ध है जो जातक को प्रसिद्ध, शासक का प्रिय और अति विद्वतायुक्त बनाता है तथा अतिरिक्त कलात्मक क्षमता देता है। भावार्थ रत्नाकर के अनुसार, मेष लग्न में पंचम भाव में स्थित लग्नेश मंगल अपनी दशा में जातक को प्रसिद्धि देता है। जातक पारिजात के अनुसार यदि लग्नेश 5वें या 9वें भाव में हो अथवा इनके स्वामियों के साथ स्थित हो अथवा लग्न में ही स्थित हो तो जातक का पिता एक प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। यद्यपि सभी शास्त्रीय ग्रन्थ पंचम भाव में स्थित लग्नेश को पवित्र मानते हुए सराहना करते हैं लेकिन पराशर के

मतानुसार लग्नेश की यह स्थिति जातक को सन्तान का अधिक सुख नहीं देती है। विशेषकर, जातक की प्रथम सन्तान दीर्घायु नहीं होती है।*

श्री रविन्द्र नाथ टैगोर की कुण्डली में लग्नेश उच्च का होकर पंचम भाव में स्थित है।

रविन्द्र नाथ टैगोर की कुण्डली - सुप्रसिद्ध कवि और नोबल पुरस्कार से सम्मानित

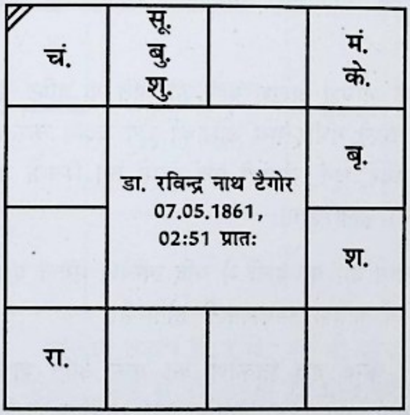

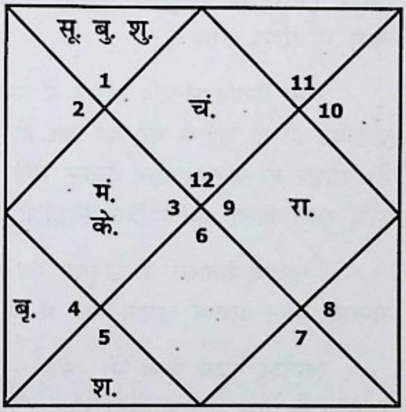

लग्नेश षष्टम भाव में: यदि लग्नेश बली होकर षष्टम भाव में स्थित हो तो यह जातक को सेना में उच्च पद देता है अथवा चिकित्सा के क्षेत्र में ले जा सकता है जहां वह समृद्धि को प्राप्त करता है। सामान्यतः ऐसा जातक शारीरिक रुप से स्वस्थ होगा और उसमें खेलों के प्रति अत्याधिक रुचि होगी। यद्यपि षष्टम भावगत लग्नेश अशुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो यह स्थिति स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से शुभ नहीं होती है और ऐसा जातक शत्रुओं द्वारा भी कष्ट पाता है। भावार्थ रत्नाकर के अनुसार यदि मेष लग्न का जन्म हो और बुध एवं मंगल, षष्टम भाव में स्थित हो तो इनकी दशा में जातक को घाव, चेचक अथवा त्वचा सम्बन्धित रोग होते हैं।

यहां यह बात समझना आवश्यक है कि बुध, त्वचा का कारक होने के साथ-साथ मेष लग्न के लिए तृतीयेश एवं षष्टेश होता है और मंगल लग्नेश के साथ-साथ अष्टमेश भी होता है। यह ग्रन्थ यह भी कहता है कि ऐसा जातक ऋणी भी अवश्य होगा लेकिन मंगल की दशा में मुक्ति प्राप्त हो जाएगी।

---

* *ऐसा परिणाम प्राप्त होने की संभावनायें तब अधिक होंगी जब लग्नेश नीच का होकर पंचम भाव में स्थित हो अथवा अशुभ ग्रहों द्वारा अत्याधिक पीड़ित हो।*

लग्नेश सप्तम भाव में: सप्तम भावगत लग्नेश अपने भाव को दृष्ट करता है अतः लग्नेश की यह स्थिति सामान्यतः स्वास्थ्य एवं समृद्धि के अच्छी है लेकिन कभी-कभी यह दो विवाह भी देती है। सप्तम भाव में चर राशि में स्थित लग्नेश अत्याधिक यात्रायें भी देता है।

लग्नेश अष्टम भाव में: कुण्डली का अष्टम भाव, मोक्ष त्रिकोण का एक महत्वपूर्ण भाव है। यदि लग्नेश बली होकर इस भाव में स्थित हो तो यह जातक को विद्वान, प्रसिद्ध और धार्मिक विचारों से युक्त बनाता है। ऐसा जातक लाटरी, सट्टे अथवा किसी की मृत्यु जैसे किन्हीं अचानक घटने वाले कारणों से आकस्मिक धन लाभ भी प्राप्त करता है।

अन्य स्थिति में यदि अष्टम में स्थित लग्नेश अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो जातक को बार-बार होने वाले गंभीर एवं असाध्य रोग प्रदान करता है। पराशर के अनुसार ऐसा जातक रोगी, चोर, धूर्त, जुआरी एवं दूसरों की स्त्रियों में रुचि रखने वाला और तांत्रिक विद्याओं का ज्ञाता होगा।

भावार्थ रत्नाकर के अनुसार मेष लग्न की कुण्डली में यदि लग्नेश मंगल एवं चन्द्रमा, लग्न अथवा अष्टम भाव में हों तो जातक भाग्यशाली होता है।

लग्नेश नवम भाव में: यह पुनः केन्द्र एवं त्रिकोण का एक अति शुभ सम्बन्ध है। ऐसा जातक अत्याधिक बुद्धिमान, भाग्यवान, धनवान एवं धार्मिक प्रवृति वाला होता है और अपने पिता से, पैतृक धन-सम्पति प्राप्त करता है। पराशर के अनुसार ऐसा जातक भाग्यशाली, लोगों का प्रिय, भगवान विष्णु के प्रति आस्थावान (अर्थात धार्मिक प्रवृति का), कार्य करने में दक्ष एवं प्रखर वक्ता होता है और वह भार्या, सन्तान एवं धन से युक्त होगा। लग्नेश की यह स्थिति पिता के लिए भी शुभ है। जातक का पिता समृद्ध, सत्यवादी और उदार हृदय का व्यक्ति होता है।

यदि नवम भावगत लग्नेश नीच का हो अथवा पीड़ित हो जो यह अत्याधिक अशुभ परिणाम दायक होता है। ऐसा जातक भाग्यहीन एवं लोगों द्वारा निन्दित होगा, उसका धर्म में विश्वास नहीं होगा और वह निराशावादी एवं दुःखी होगा।

प्रसिद्ध सन्त रामाकृष्ण परमहंस की जन्म कुण्डली में लग्नेश शनि उच्च का होकर नवम भाव में स्थित है। वह एक महान गुरु थे जिनका स्वामी विवेकानन्द जैसा शिष्य था। स्वामी विवेकानन्द वह व्यक्ति थे जिन्होंने पूरे विश्व को भारत की पवित्र

आध्यात्मिकता एवं हिन्दू धर्म की विशेषताओं से परिचय कराकर भारत का नाम रोशन किया था।

रामाकृष्ण परमहंस की कुण्डली - महान सन्त और रामकृष्ण मिशन के संस्थापक

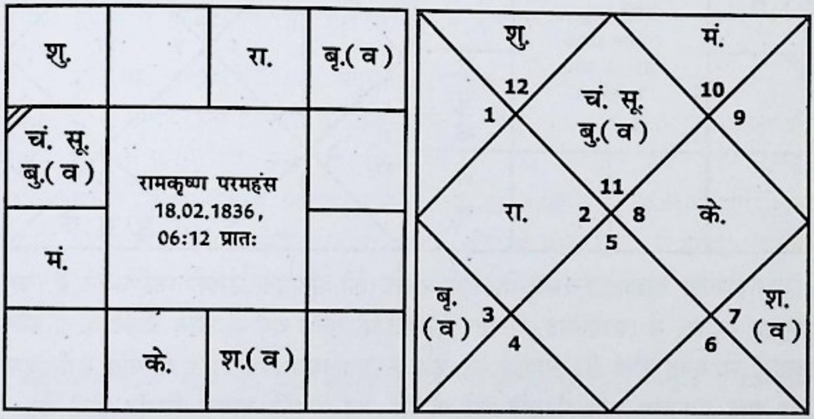

लग्नेश दशम भाव में: यह भी केन्द्र-त्रिकोण का शुभ सम्बन्ध है। ऐसे जातक की आत्मा, कर्म में ही बसती है। ऐसा जातक कीर्तिवान होता है, अपने परिश्रम से समाज में अपनी पहचान बनाता है और उसको व्यवसायिक रुप से पूर्ण सफलता भी मिलती है। लग्नेश की यह स्थिति जातक को एक सफल शोधकर्त्ता भी बना सकती है। जातक अपने धर्म में अडिग, भगवान से डरने वाला अर्थात आस्तिक, दान-धर्म करने वाला, दयालु एवं प्रसिद्ध धनाढय व्यक्ति होता है और अपने जीवन में उच्चतम पद प्राप्त करता है।

पराशर के अनुसार ऐसा जातक पैतृक सुख से सम्पन्न होगा, शासक की अनुकम्पा प्राप्त करेगा, समाज में प्रसिद्ध होगा और उसके पास स्वअर्जित धन-सम्पति भी होगी।

भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद की जन्म कुण्डली में लग्नेश शनि उच्च का होकर दशम भाव में स्थित है। यह "इस्कॉन" के संस्थापक थे और इन्होंने पूरे विश्व में भगवत भक्ति का प्रचार किया।

भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद - "इस्कॉन" के संस्थापक

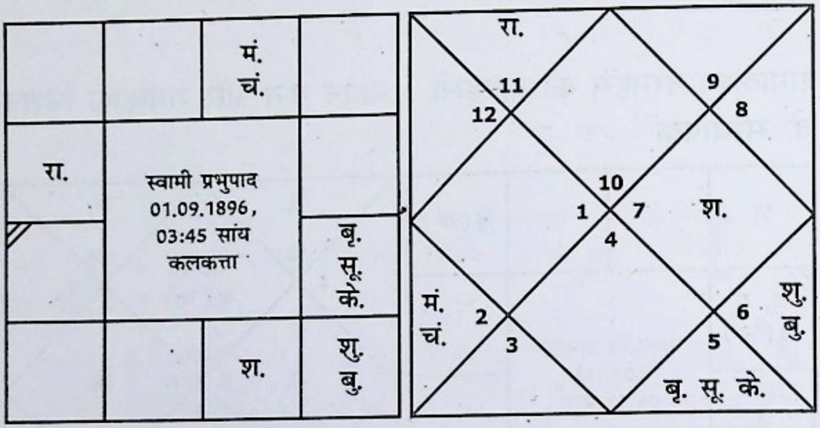

लग्नेश एकादश भाव में: ऐसे जातक की सहायता उसके भाई करते हैं, वह समृद्ध, व्यापार से लाभान्वित, धनवान, समाज के उच्च वर्ग में उठने-बैठने वाला और वाहनों से युक्त होता है। भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार मेष लग्न में यदि सूर्य, बुध एवं शुक्र एकादश भाव में युति करें तो यह धन-सम्पति दायक स्थिति होती है।

लग्नेश द्वादश भाव में: द्वादश भाव व्यय भाव है, अत: यहां लग्नेश का स्थित होना सामान्यत: शुभ नहीं माना जाता है। यद्यपि ऐसे जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा लेकिन चूंकि यह मोक्ष स्थान भी है, अत: ऐसा जातक धार्मिक प्रवृति का होगा, तीर्थस्थानों की यात्रा करेगा और दान-धर्म करने वाला होगा। ऐसा जातक विदेश में निवास करके समृद्धि प्राप्त करता है अथवा वह चिकित्सा के व्यवसाय से जुड़ा हो सकता है या स्वयं भी चिकित्सक हो सकता है।

लग्न में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम

यहां भी हमें सामान्य नियमों का ही अनुकरण करना चाहिए। नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति, शुक्र, बुध और शुक्लपक्ष का चन्द्रमा केन्द्र एवं त्रिकोण में अच्छा परिणाम देते हैं।

सूर्य: यदि बली सूर्य, केन्द्र अथवा त्रिकोण का स्वामी होकर लग्न में स्थित हो तो यह उर्जा का बहुत बड़ा स्रोत होता है। प्रथम भाव में स्थित ऐसा सूर्य जातक को

उच्च आन्तरिक बल, प्रबल इच्छाशक्ति, सत्ता के प्रति प्रेम और अच्छा स्वास्थ्य देता है। चमत्कार चिन्तामणि के अनुसार, शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित लग्न में स्थित उच्च का सूर्य जातक की प्रगति एवं अच्छे भाग्य का सूचक है।

निर्बली सूर्य जातक को अहंकारी, झूठी प्रशंसा का प्रेमी, घमण्डी, झूठी शान वाला और बड़ा-चढ़ाकर बातें करने वाला बनाता है। अशुभ ग्रहों जैसे कि शनि और मंगल के साथ यह जातक को खून सम्बन्धित परेशानियां देता है।

चन्द्रमा: फलदीपिका के अनुसार यदि पूर्ण चन्द्रमा वर्गोत्तम होकर लग्न में स्थित हो तो जातक को शक्तिशाली राजा बनाता है। ऐसा जातक दयावान, मानवतावादी, कार्य सम्पूर्ण करने की उर्जा का स्रोत, यात्राओं का शौकीन, प्रेम करने वाला, कल्पनाशील, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने वाला और सामाजिक जीवन में पारदर्शिता रखने वाला होता है। चन्द्रमा मन का कारक होता है और लग्न में स्थित चन्द्रमा मानसिक शक्ति और समृद्धि देता है। ऐसा जातक प्रेम करने वाला, सिद्धान्तवादी, यात्री, शोधकर्त्ता और अच्छा लेखक होता है।

चन्द्रमा से शनि की युति भ्रामकता देती है, मंगल की युति स्त्रियों में मासिक धर्म सम्बन्धित व्याधि के साथ-साथ जातक को निर्भयता भी देती है, राहु की युति वातोन्माद बनाती है और बृहस्पति की युति समृद्धि, धन-सम्पति एवं उच्च विचारों के लिए शुभ होती है।

निर्बली चन्द्रमा जातक को अस्थिर, अविश्वासी, बार-बार विचार बदलने वाला, व्यर्थ में घूमने वाला, चिड़चिड़ा और लक्ष्यविहीन बनाता है।

मंगल: यदि मंगल उच्च अथवा स्वराशि का होकर लग्न में स्थित हो तो रुचक नाम का महापुरुष योग बनाता है और साहस, उत्तरदायित्व की भावना, दूसरों के प्रति शुभ भावनायें और सत्यता देता है। ऐसा जातक भय के नाम से भी परिचित नहीं होता और आकर्षक एवं तेजस्वी होता है। ऐसे जातक के चेहरे पर घाव का निशान हो सकता है और इसमें आगे बढ़ने का अद्वितीय साहस होता है। उदाहरणत: गान्धी जी का लग्न, चित्रा नक्षत्र में और लग्नेश शुक्र, लग्न में ही मंगल से युति करके स्थित था। यह सर्वविदित है कि गान्धी जी एक ऐसे भयहीन एवं अत्याधिक उर्जावान व्यक्ति थे जो अपने जीवन में कभी भी पराजित नहीं हुए।

महात्मा गान्धी की कुण्डली

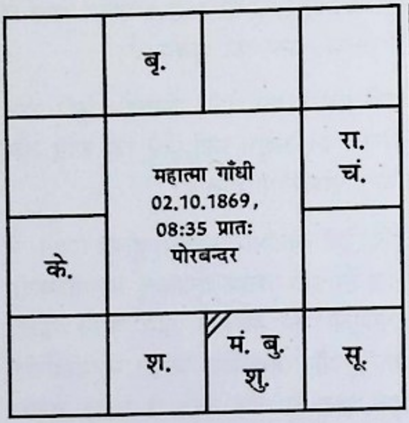

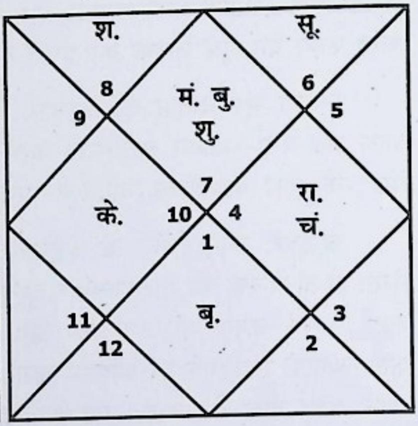

लग्न में स्थित पीड़ित मंगल जातक को अस्वस्थता देता है, दुर्घटनाओं के प्रति उन्मुख बनाता है, पारवारिक अशान्ति देता है और चूंकि यहां स्थित मंगल सप्तम भाव को दृष्ट करता है अतः वैवाहिक जीवन में भी परेशानियां उत्पन्न करता है।

बुधः यदि बुध उच्च अथवा स्वराशि का होकर लग्न में स्थित हो तो भद्र नाम का महापुरुष योग बनाता है। ऐसा बुध जातक को बुद्धिमान बनाता है, नवीन ज्ञान, खेलों में सम्मान, व्यवसाय में लाभ और तत्परता देता है। ऐसा जातक हंसी-मजाक का शौकीन भी होता है। शुक्र से युति होने पर संगीत एवं कला में दक्षता देता है और जातक को इन विषयों में भी विद्वान बनाता है।

निर्बली बुध जातक को शीघ्र घबराने वाला, विशेषकर राहु के साथ होने पर मानसिक अवसाद देता है, त्वचा एवं नाड़ी सम्बन्धित परेशानियां देता है और बार-बार विचार बदलने वाला बनाता है।

बृहस्पतिः यदि बृहस्पति उच्च अथवा स्वराशि का होकर लग्न में स्थित हो तो हंस नाम का महापुरुष योग बनाता है। ऐसा बृहस्पति जातक को सौभाग्यशाली, आशावादी, उर्जावान, कभी न हार मानने वाला, बड़े-बड़े कार्यों को करने वाला, सामाजिक, सहजता से कार्य करने वाला, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार वाला और सम्मोहित करने वाले व्यक्तित्व का स्वामी बनाता है। ऐसा बृहस्पति प्रत्येक वस्तु को प्रचुरता में देता है और ज्ञान एवं सद्गति प्रदान करता है। बृहस्पति धर्म, आध्यात्मिकता, आत्मानुभूति, सत्यता, नैतिकता का कारक है अतः यदि कुण्डली में अच्छी स्थिति में बैठा हो तो यह भगवान का आर्शीवाद ही होता है। लग्न में स्थित बृहस्पति दिशाबली

होकर पंचम एवं नवम भाव अर्थात पूर्व पुण्य एवं भाग्य के भाव को दृष्ट करता है जिसके कारण वह कुण्डली के हजारों दोषों को धो डालता है। पराशर के अनुसार केन्द्र में स्थित बृहस्पति बहुत बड़ा रक्षक होता है।

निर्बली बृहस्पति जातक को बड़ा-चढ़ाकर बातें करने वाला, आडम्बर युक्त जीवन जीने वाला, वृथा स्तुति करनेवाला, उर्जा शक्ति एवं उत्साह की कमी से ग्रस्त और निर्बल इच्छा शक्ति एवं विश्वास वाला बनाता है।

शुक्रः यदि शुक्र उच्च अथवा स्वराशि का होकर लग्न में स्थित हो तो मालव्य नाम का महापुरुष योग बनाता है। ऐसा शुक्र जातक को सुन्दर, सौम्य, दयावान, सज्जन, कलात्मक रुचिवाला, सुसंस्कृत, परिष्कृत, मित्रों का प्रेमी, वार्तालाप में दक्ष, सामाजिक एवं शिष्टाचार युक्त, सहज कार्य करने वाला, निस्वार्थ और मृदु भाषी बनता है। ऐसा जातक संगीत कला, नाटक एवं नृत्य में रुचि रखने वाला होता है, जातक के जीवन आनन्दपूर्ण होता है और वह चुम्बकीय व्यक्तित्व का स्वामी होकर विपरीत लिंगियों में प्रसिद्ध होता है। ऐसे जातक के व्यक्तित्व में काम-आकर्षण कूट-कूटकर भरा होता है। यदि शुक्र पीड़ित न हो तो जातक का विवाह कम आयु में ही सम्पन्न हो जाता है।

निर्बली एवं पीड़ित शुक्र जातक को विकृत मानसिकता वाला, पंथभ्रष्ट, म्लेच्छ और अरुचिपूर्ण जीवन जीने वाला बनाता है।

शनिः यदि शनि लग्न में अपनी उच्च राशि या स्वराशि का होकर स्थित हो तो शश नाम का महापुरुष योग बनाता है जो समृद्धि दायक योगों में से एक महत्वपूर्ण योग है। ऐसा जातक गंभीर, निष्कपट, विचारक एवे विवेचक व्यक्ति होता है और अपने जीवन में सफलता धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रुप से प्राप्त करता है। जातक सौम्य एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है।

अन्य राशियों में स्थित शनि के परिणाम शुभ नहीं होते हैं। जातक भ्रामक मानसिकता वाला, दुर्बल, असन्तोषी और रहस्यपूर्ण प्रवृति का होता है, भाग्यहीनता, शिथिलता या देरी के कारण हानि उठाता है, शीघ्र घबराने वाला और डरपोक होता है लेकिन मध्यआयु के बाद भयहीन हो जाता है। यदि शनि पीड़ित हो तो जातक नाक एवं सांस सम्बन्धित रोगों से ग्रसित रहता है, भार्या के अधिक आयु का होने से कष्ट पाता है, और अपने कुकर्मो, बुरी आत्माओं, दरिद्रता एवं चोरों से परेशान रहता है। वह दिखने में कुरुप होता है, बुरे विचार वाला या षडयन्त्र रचने वाला होता है, दूसरों के प्रति द्वेष भावना रखता है और कई प्रकार के रोगों से पीड़ित रहता है।

मिथुन लग्न में मंगल-शनि की युति, लकवा या संज्ञाहीन होने का कारण होती है। कन्या लग्न में शनि-मंगल की युति गुर्दे एवं उदर सम्बन्धित और गठिया का रोग देती है। बृहस्पति की राशियों धनु एवं मीन में स्थित शनि अच्छा होता है तथा वृषभ एवं तुला लग्न के लिए योगकारक होता है।

राहुः यदि शुभ स्थित लग्नस्थ राहु उच्च का हो अथवा स्वराशि का हो तो जातक को शत्रुओं पर विजय करने वाला बनाता है और प्रभावशाली व्यक्तित्व देता है। यह सम्मान की प्राप्ति, धार्मिक क्रिया-कलापों के द्वारा धन प्राप्ति, शिक्षा एवं वैज्ञानिक उपलब्धियां और दूसरों की सहायता से सफलता प्राप्त करवाता है। मेष, कर्क एवं सिंह राशियों का लग्नस्थ राहु, स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है।

यदि लग्नस्थ राहु पीड़ित या दुर्स्थित हो तो अत्याधिक कामेच्छा एवं व्यभिचार के प्रति झुकाव के कारण अत्याधिक पीड़ा देता है और जातक को कुरुप, मूर्ख, क्रूर, रोगी, अल्पायु, अधार्मिक एवं अनैतिक बनाता है। सिर सम्बन्धित रोग से पीड़ित करता है, स्वास्थ्य बिगाड़ता है, रहस्यमय विद्याओं के प्रति प्रेम देता है और भार्या एवं सन्तान के सुख से भी वंचित करता है।

केतुः लग्नस्थ केतु जातक को कमजोर एवं दुर्बल शरीर, अस्थिरता, आत्मा विषयक, व्यर्थ भटकने वाला और असन्तुलित वैवाहिक जीवन वाला बनाता है।

प्रथम भाव सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण योग

1. **चामर योगः** लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश अस्त न हो और उच्च अथवा स्वराशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो।

   परिणामः जातक धनवान, कीर्तिवान, दीर्घायु और शासक।

2. **पर्वत योगः** फलदीपिका के अनुसार यदि लग्नेश का राशीश अर्थात लग्नेश जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी, उच्च अथवा स्वराशि का होकर कुण्डली के केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग होता है।

जातक पारिजात के मतानुसार यह योग निम्नलिखित दो प्रकार से निर्मित होता है:

सौम्येषु केन्द्रगृहगेषु सपत्लरन्ध्रौ,
शुद्धेऽथवा शुभयुते यदि पर्वतः स्यात्।
लग्नान्त्यपौ यदि परस्परकेन्द्रयातौद्व,
मित्रेक्षितौ भवति पर्वतनाम योगः॥

अर्थात (अ) यदि शुभ ग्रह केन्द्रों में हो, अष्टम एवं द्वादश भावों में कोई ग्रह न हो अथवा शुभ ग्रह हों और (आ) यदि लग्नेश एवं द्वादशेश एक-दूसरे से केन्द्र में हों और मित्र ग्रह या ग्रहों से दृष्ट हों तो पर्वत योग होता है।

परिणामः जातक भाग्यशाली, वक्ता, शास्त्रज्ञ, यशस्वी, तेजस्वी, शासक, विद्या विनोद में संलग्न और दानी होता है।

3. **पारिजात योगः** लग्नेश का राशीश जिस राशि में हो उसका स्वामी अथवा लग्नेश का नवांशेश अपनी उच्च राशि अथवा लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पारिजात योग होता है।

   परिणामः जातक प्रसिद्ध और यदि संत हो तो संपूर्ण विश्व द्वारा स्वीकृत एवं सम्मानित होगा। अधिकतर विश्वप्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डलियों में यह योग होता है। उदाहरणतः अलक्जेन्डर, लिंकन, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, लाल बहादुर शास्त्री, वी. पी. सिंह, लता मंगेशकर आदि।

4. एक अन्य श्लोकानुसार यदि जातक का सिंह लग्न हो और शुक्र के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह का नवांश हो तथा सूर्य लग्न में एवं बुध द्वितीय भाव में हो तो यदि जातक सामान्य परिवार में भी जन्मा हो तो भी अत्याधिक समृद्ध होता है।

अध्याय 3

द्वितीय भाव
(कुटुम्ब, धन, वाणी)

कुण्डली का द्वितीय भाव, कुटुम्ब भाव एवं धन भाव के नाम से भी जाना जाता है। इस भाव के विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. निकट परिवार,
2. चेहरा,
3. दांई आंख,
4. भोजन,
5. धन-सम्पति,
6. साहित्य सम्बन्धित उपहार,
7. वाकशक्ति,
8. मृत्यु।

उत्तरकालामृत के मतानुसार अन्य विषयों के साथ-साथ द्वितीय भाव से नाखून, सत्य-असत्य, जिह्वा, हीरा, सोना, तांबा एवं बहुमूल्य रत्न, दूसरों की सहायता की प्रवृति, मित्र, सत्ता, समृद्धशाली जीवन जैसे अन्य विषय भी विचारणीय होते हैं।

द्वितीय भाव का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए कुण्डली में द्वितीय भाव से सम्बन्धित निम्नलिखित की परीक्षा करनी आवश्यक है:

1. **भावः** द्वितीय भाव में स्थित ग्रह और द्वितीय भाव पर पड़ने वाली दृष्टियां।
2. **भावेशः** द्वितीयेश की स्थिति और द्वितीयेश पर अन्य ग्रहों की युति एवं दृष्टि से पड़ने वाला प्रभाव।

3. **कारकः** बृहस्पति, द्वितीय भाव का कारक है। बृहस्पति पर अन्य ग्रहों की युति एवं दृष्टि से पड़ने वाला प्रभाव।
4. धन-सम्पति से सम्बन्धित विशेष धनयोग।
5. इन्दु लग्न।
6. जैमिनी के सिद्धान्तों से भाव का आंकलन।
7. अष्टकवर्ग द्वारा धन-सम्पति का आंकलन।

आइए, अब उपरोक्त क्रम से ही द्वितीय भाव का अध्ययन करते हैं।

भावः द्वितीय भाव में द्वितीयेश, उच्च के ग्रहों एवं शुभ ग्रहों की दृष्टि या स्थिति, धन-सम्पति के लिए अति शुभ है। यदि द्वितीय भाव में स्थित अशुभ ग्रह, उच्च अथवा स्वराशि के न हों तो धन नाश करते हैं। यहां स्थित शनि, मंगल, सूर्य और राहु-केतु धन के लिए शुभ नहीं हैं। षष्टेश, अष्टमेश एवं द्वादशेश का भी यही प्रभाव होता है।

भावेशः संत सत्याचार्य के अनुसार यदि द्वितीयेश, निम्नलिखित स्थितियों में से किसी भी स्थिति में हो तो जातक अत्याधिक धन अर्जित करता है:

1. शुभ राशि, शुभ नवांश या शुभ नक्षत्र में स्थित हो।
2. शुभ कर्तरी योग में हो अर्थात शुभ ग्रहों के मध्य हो।
3. शुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
4. लग्न अथवा लग्नेश से केन्द्र (1, 4, 7 एवं 10वां भाव) अथवा त्रिकोण (5वां एवं 9वां भाव) में स्थित हो।
5. स्वग्रही हो अथवा उच्च राशि में हो।

कुण्डली में द्वितीयेश की स्थिति आय के स्रोत का भान कराती है। उपरोक्त स्थितियों को संक्षिप्त में कहें तो यदि द्वितीयेश, उच्च का, स्वगृही, मित्र की राशि में, केन्द्र में अथवा त्रिकोण में हो तथा वर्गों में भी बली हो तो यह धन के लिए शुभ संकेत होता है।

पराशर के मतानुसार बृहस्पति से दृष्ट द्वितीयेश, जातक को एक प्रसिद्ध व्यक्ति बनाता है क्योंकि बृहस्पति प्रसिद्धि का कारक है। बृहत्पाराशर होराशास्त्र के अनुसार द्वितीय भाव अथवा केन्द्र या त्रिकोण में स्थित द्वितीयेश धन में वृद्धि करता है जबकि

षष्टम, अष्टम या द्वादश में स्थित द्वितीयेश धन के लिए शुभ नहीं होता है। यदि द्वितीयेश शुभ ग्रहों के साथ हो और ***पारावतांश*** (6 श्लाघ्य वर्गों में उच्च, मूलत्रिकोण, स्वग्रही आदि) में हो तो जातक बिना अधिक परिश्रम के ही धनवान होता है।

एकादश भावगत द्वितीयेश अथवा द्वितीय भावगत एकादशेश धन के लिए शुभ होता है। द्वितीयेश का पीड़ित होना धन के लिए शुभ नहीं होता है, विशेषकर यदि द्वितीयेश,

1. पापकर्तरी योग अर्थात अशुभ ग्रहों के मध्य हो।
2. अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
3. इसका राशीश निर्बली हो।
4. यह षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में हो।
5. अस्त हो।
6. नीच का हो।
7. जन्म नक्षत्र से तीसरे, पांचवे अथवा सातवें नक्षत्र में हो।

विभिन्न भाव में स्थित द्वितीयेश के परिणाम

द्वितीयेश, प्रथम भाव में: यदि द्वितीयेश बली होकर कुण्डली के प्रथम भाव में स्थित हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक स्वप्रयास से धन अर्जित करता है। फलदीपिका के अनुसार यदि द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों ओर द्वितीयेश लग्न में हो तो जातक सुन्दर चेहरे वाला धनी व्यक्ति होगा। उसमें कई अच्छे गुण होंगे और वह एक समृद्ध परिवार से सम्बन्धित होगा।

यदि लग्नस्थ द्वितीयेश निर्बली हो और अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो धन का व्यय होगा।

द्वितीयेश, द्वितीय भाव में: यदि पीड़ित न हो तो द्वितीयेश की यह स्थिति धन-सम्पति के लिए अच्छी स्थिति है। अशुभ ग्रहों की दृष्टि वैवाहिक जीवन में अलगाव की स्थिति उत्पन्न करती है और परिवार में भार्या से, माता या पिता से परेशानियां एवं समस्यायें देती है। अक्सर यह देखा गया है कि द्वितीय भाव में पापी

ग्रह होने पर जातक को विज्ञान के विषयों की शिक्षा प्राप्त करता है और यदि अच्छी स्थिति में हो तो विद्योपार्जन में विशिष्टता भी प्राप्त करता है। इसका मुख्य कारण यह है कि कुण्डली में 2/8 अक्ष, गहन शोध से सम्बन्धित होता है।

द्वितीयेश, तृतीय भाव में: यदि अच्छी स्थिति में हो तो जातक कला, नाटक, संगीत अथवा भाइयों की सहायता से धन अर्जित करता है। लेकिन इस पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव धन की हानि करेगा और भाइयों द्वारा धन हानि होना भी एक कारण होगा। ऐसा जातक व्यापारी, झगड़ालू और घमण्डी हो सकता है। यदि वह अशुभ ग्रह सूर्य होता है तो जातक के अपने भाइयों से सम्बन्ध अच्छे नहीं होंगे, यदि मंगल होता है तो जातक का नैतिक स्तर अच्छा नहीं होगा और यदि शनि होता है तो जातक का कोई भाई नहीं होगा।

द्वितीयेश, चतुर्थ भाव में: यदि कुण्डली में अन्य शुभ योग भी हों और द्वितीयेश चतुर्थ भाव में हो तो जातक पैतृक सम्पति, माता, कृषि, वाहन, भूमि एवं शिक्षा द्वारा धन अर्जित करेगा। ऐसा जातक अपने पूर्वजों की सम्पति का भोग करता है और स्वयं, सत्य वचन बोलने वाला एवं दूसरों पर दया करने वाला होता है।

अशुभ योग, उपरोक्त स्रोतों द्वारा धन प्राप्ति की संभावनाओं का नाश करते हैं। यदि चतुर्थ भावगत द्वितीयेश नीच का हो तो इसका अर्थ, सम्पति की हानि भी हो सकता है। यदि शनि इसमें शामिल हो तो इसका अर्थ चोरी से धन हानि होता है।

द्वितीयेश, पंचम भाव में: शुभ स्थित हो एवं शुभ ग्रहों के साथ हो तो लाटरी, सट्टे, शेयर बाजार, मन्दिरों एवं मठों, सरकार और सन्तान के द्वारा धन अर्जित होता है। यदि अशुभ ग्रहों से युत हो तो इन स्रोतों द्वारा ही जातक के धन की हानि होगी।

द्वितीयेश, षष्टम भाव में: यदि शुभ स्थित हो तो इसका अर्थ होता है कि चिकित्सा के क्षेत्र, शत्रुओं एवं विरोधियों (इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि खेलों एवं प्रतियोगिताओं के द्वारा), कानून, चोरी और रेस आदि से धन अर्जन होना। इसका अर्थ चोरी से वस्तुओं को बेचने, धोखेबाजी और छल-कपट के द्वारा धन अर्जन भी हो सकता है।

दुर्स्थित एवं अशुभ ग्रहों के साथ होने पर इसका अर्थ विश्वासघात, धोखेबाजी और इसी प्रकार के अन्य अनैतिक तरीकों से धन अर्जन हो सकता है।

यहां यह बात याद रखना आवश्यक है कि षष्टम भाव उपचय भाव अर्थात वृद्धि करने वाला भाव भी है और जिस भाव का स्वामी उपचय भाव में होता है उस

भाव के कारकत्वों की वृद्धि होती है। अतः इस दृष्टिकोण से द्वितीयेश का यहां होना शुभ भी माना जाता है।

द्वितीयेश, सप्तम भाव में: विदेशी स्रोतों से आय, विदेश में व्यापार आदि। यदि लग्न एवं नवांश कुण्डली में सप्तमेश का स्वामी स्त्री ग्रह होता है तो सहयोगियों, भार्या एवं स्त्रियों से आय होती है।

यदि यह पीड़ित हो तो इसका अर्थ कामसुख के सन्तोष हेतु धन का अपव्यय हो सकता है। यह स्थिति भार्या से असन्तुष्टी को भी दर्शाती है।

द्वितीयेश, अष्टम भाव में: द्वितीयेश की इस स्थिति का अर्थ होता है कि पैतृक धन-सम्पति, लेकिन यदि पीड़ित हो तो इसका अर्थ पैतृक सम्पति का समाप्त होना भी हो सकता है। चूंकि अष्टम भावगत द्वितीयेश, अपने भाव को भी दृष्ट करता है अतः सामान्य नियमानुसार यह धन के लिए शुभ होता है, लेकिन अष्टम भाव के शामिल होने के कारण यह हानि भी देता है।

द्वितीयेश, नवम भाव में: इस स्थिति में धन और भाग्य का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है इसलिए सामान्यतः इसे शुभ ही विचारा जाता है, यद्यपि अपने भाव से अष्टम भाव में स्थित होने पर द्वितीयेश के नैसर्गिक बल में कोई वृद्धि नहीं होती है। यह पिता के द्वारा धन प्राप्ति भी दर्शाता है।

द्वितीयेश, दशम भाव में: विद्वान, धनवान, अच्छे मार्ग से धनार्जन तथा नौकरी, क्रय-विक्रय, व्यापार, धार्मिक क्रिया-कलापों, उपदेश आदि से आय। यदि अत्याधिक पीड़ित हो तो धन हानि हो सकती है।

द्वितीयेश, एकादश भाव में: द्वितीयेश का एकादश भाव से सम्बन्ध होना धन-सम्पति के लिए बहुत ही शुभ फलदायक होता है। ऐसा जातक धन उधार देकर उस पर ब्याज लेने से, वित्तीय संस्थाओं के द्वारा, व्यापार के द्वारा और बड़े भाइयों के द्वारा धनोपार्जन करता है।

द्वितीयेश, द्वादश भाव में: धार्मिक क्रिया-कलापों के द्वारा धन एकत्रित, सम्मानित, सरकारी सेवक, विदेशी स्रोतों से धनागमन आदि। यदि पीड़ित हो तो अपव्यय, धनहीनता आदि।

उपरोक्त वर्णित परिणाम, सामान्य नियमानुसार प्राप्त होने वाले परिणाम हैं जिनका उपयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

सत्यजातकम् के अनुसार यदि कुण्डली में चतुर्थ एवं एकादश भाव निर्बली होकर अशुभ ग्रहों से सम्बन्धित हों तो ऐसा जातक व्यर्थ में ही अपना धन लुटाता है।

द्वितीय भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम

सूर्यः यदि उच्च अथवा स्वराशि का हो तो यह आध्यात्मिक मूल्यों, नैतिक उन्नति और विश्वास प्राप्त करने के लिए अच्छी स्थिति होती है। यदि पीड़ित न हो तो धर्मार्थ कार्य करने और धन के लिए भी अशुभ नहीं होता है।

यदि पीड़ित हो तो दृष्टिदोष, विवाह में बिलम्ब, वैवाहिक जीवन में परेशानियां और शासन से विवाद देता है। चूंकि शुक्र, सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होता है अतः द्वितीय भाव में सूर्य-शुक्र की युति वैवाहिक जीवन के लिए सुखद नहीं होती है।

चन्द्रमाः जातक धनी, आकर्षक, प्रेम करने वाला, स्त्रियों पर मुग्ध और कलात्मक गुण सम्पन्न होता है। यदि शुभ ग्रहों से भी दृष्ट हो तो संगीत का विशेष गुण देता है और विदेशी भाषाओं में पारंगत बनाता है।

पीड़ित और अमावस्या के आस-पास का चन्द्रमा धन की हानि, दरिद्रता एवं पैतृक सम्पति की विलुप्तता का कारण होता है।

चन्द्रमा-मंगल की युति औषधियों सम्बन्धित शिक्षा एवं व्यवसाय को दर्शाती है।

मंगलः यदि द्वितीय भावगत मंगल स्वराशि में हो, उच्च अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो अथवा शुभ भावों का स्वामी होकर स्थित हो तो साहसिक कार्यों एवं तत्परता, उत्तराधिकार तथा पैतृक सम्पति से सफलता दिलाता है।

अन्य स्थितियों में जातक को क्रूरता, क्रोध, पारिवारिक झगड़े, मितव्ययिता, स्वादहीन भोजन के प्रति प्रेम, दान्तों एवं आंखों के रोग, दुर्घटनायें, हानि और शासन का असन्तोष देता है। द्वितीय भावगत मंगल कुण्डली में मंगल दोष भी बनाता है जो वैवाहिक जीवन के आनन्द एवं आयु के लिए अच्छा नहीं होता है और भार्या की मृत्यु अथवा अन्य किसी प्रकार से अलगाव एवं दूसरा विवाह देता है।

बुधः जातक को धनवान, विशाल हृदय, अत्याधिक बुद्धिमान, अच्छी वाणी बोलनेवाला, परिहासजनक, कलाकार, आकर्षक और सुन्दर लिखावट वाला बनाता है। यदि कुण्डली का शुभ ग्रह होकर स्थित हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को

अच्छी शिक्षा लेने में सहायता करता है, लखपति बनाता है तथा शयन सुख प्रदान करता है।

यदि बुध, अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि के प्रभाव में हो या इनकी राशि में हो अथवा नीच का हो तो यह शिक्षा में रुकावट उत्पन्न करता है।

बुध-चन्द्रमाः आम लोगों एवं स्वप्रयास से लाभ।

बुध-शुक्रः आधुनिक कला से लाभ।

बुध-बृहस्पतिः गणित, अच्छे निर्णय, आन्तरिक ज्ञान एवं नैतिक सिद्धान्तों के द्वारा लाभ।

बुध-शनिः यदि शुभ दृष्ट हो तो राजनीति एवं कठोर परिश्रम से लाभ।

बृहस्पतिः द्वितीय भावगत बृहस्पति जातक को काव्य रचने के कौशल से युक्त और न्यायाध्यक्ष या जिलाधीश (मैजिस्ट्रेट या कलेक्टर), कम एवं मीठी बात बोलने वाला, धनवान, दूसरों का आभार मानने वाला, सुन्दर व्यक्तित्व और बुद्धिमान बनाता है। ऐसा जातक उर्जावान, दूसरों के प्रति दया भाव रखने वाला एवं प्रसिद्ध होता है और दूसरों की कोमल अनुरक्ति का आनन्द प्राप्त करता है। उसकी भार्या भी एक सुन्दर स्त्री होती है और जातक कई स्रोतों से धन अर्जित करता है।

शुक्रः जातक को कवि, कथाकार, कलाकार, सौम्य, मृदुभाषी, धनवान, प्रतिष्ठित, दयावान और खान-पान का शौकीन बनाता है। चमत्कार चिन्तामणी के मतानुसार द्वितीय भाव में शुक्र होने से जातक सुशील स्वभाव का होता है और दूसरों को प्रसन्न करने वाली मधुर वाणी बोलता है। वह आकर्षक, रंगीन वस्त्रों का शौकीन, तीक्ष्ण बुद्धि एवं धार्मिक विचारों वाला होता है और अपने परिवार के संस्कारों एवं रिवाजों का प्रतिपादन एवं संरक्षण करता है। ऐसा जातक विलासी स्त्रियों का आसक्त भी होता है।

शुक्र-चन्द्रमाः सामाज में उठने-बैठने एवं यात्राओं से लाभ।

शुक्र-बृहस्पतिः मित्रों एवं प्रभावशाली व्यक्तियों से लाभ।

शुक्र-शनिः यदि शनि लग्न, पंचम या नवम भाव का स्वामी हो तो धन संग्रहित करने के लिए अच्छा होता है। यदि पीड़ित हो तो दृष्टिदोष एवं धन हानि देता है और परिवार के लिए भय सूचक भी होता है। ऐसा जातक दरिद्रता से जूझता है, हानियां उठाता है लेकिन भगवान एवं गुरु के प्रति निष्ठावान होता है।

शुक्र, मंगल से युत या पीड़ितः असावधान, बिना सोचे समझे कार्य करने वाला और अतिव्ययी।

शनिः चमत्कार चिन्तामणि के मतानुसार शनि के द्वितीय भाव में होने से जातक दरिद्र होता है लेकिन विदेशी भूमि में सभी सुख एवं खुशियां प्राप्त करता है। ऐसा जातक अपने मित्रों से अप्रसन्न होता है और उनसे झगड़ता रहता है। वह झूठा होता है, उसकी वाणी में दोष होता है और उसका परिवार उसको छोड़ देता है। उसका चेहरा कठोर एवं विकृत होता है और उसका छोटा भाई नहीं होता है। जीवन के अन्तिम पड़ाव में वह विदेशी भूमि में वास करता है और समृद्धी प्राप्त करता है।

राहुः सभी प्रकार की सम्पति होने के पर्यन्त भी ऐसा जातक दरिद्रता में जीवन यापन करता है और मित्रों एवं सम्बन्धियों के कटु सम्बन्ध रखता है। ऐसे जातकों को जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है और वे वाणी-दोष एवं नाक-गले की समस्याओं से पीड़ित रहते हैं।

यदि पीड़ित हो तो परिवार की हानि एवं विरोधियों की संख्या अधिक होती है। जातक विदेशी भूमि में धनवान होता है, विज्ञान, अध्ययन, उत्तराधिकार एवं पैतृक सम्पति से लाभ और भूमि एवं व्यापार में सफलता प्राप्त करता है। कन्या एवं कुभं राशि में स्थित द्वितीय भाव का राहु अच्छा होता है।

केतुः यदि केतु मेष, मिथुन, कन्या राशि अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो अपार धन-सम्पदा, लाभ, खुशियां, मृदुभाषा और सफलता प्रदान करता है। अन्य स्थितियों में मानसिक उग्रता, शासन द्वारा दण्डित होने से धनहानि, कठोरता एवं कटु भाषा देता है।

द्वितीयेश का विभिन्न ग्रहों से सम्बन्धः

फलदीपिका के अनुसार द्वितीयेश का विभिन्न ग्रहों से युति-दृष्टि का सम्बन्ध निम्नलिखित परिणाम देता हैः

सूर्यः धनवान और समाज सेवा के प्रति रुझान।

चन्द्रमाः कला के किसी क्षेत्र में दक्षता।

मंगलः क्रूर क्रिया-कलापों में निपुणता, चुगलखोर।

बुधः अर्थशास्त्र अथवा इससे सम्बन्धित विषयों में विद्वान।

बृहस्पतिः वेद ओर धर्मशास्त्र में विद्वान।

शुक्रः साहित्य, श्रृंगारशास्त्र, कामशास्त्र में प्रवीणता।

शनिः सीखने का लाभ।

राहुः अस्पष्ट उच्चारण।

केतुः हकलाना, असत्य बोलना और झूठीशान।

धन-सम्पतिः

कुण्डली में द्वितीय, पंचम, नवम एवं एकादश भाव धन से सम्बन्धित भाव होते हैं और बृहस्पति, धन का कारक ग्रह होता है। कुण्डली में शुभ शुक्र, देवी लक्ष्मी का अवतार होता है और यदि अच्छी स्थिति में हो तो अपनी दशा में प्रचुर मात्रा में धन-सम्पति की वृद्धि करता है। इस संदर्भ में लग्न एवं लग्नेश भी अत्याधिक महत्वपूर्ण होते हैं। बली लग्न एवं लग्नेश, कुण्डली के कई दोषों को नगण्य कर देते हैं। लग्नेश की विभिन्न भावों में स्थिति इस बात को इंगित करती है कि किस प्रकार के प्रयास से जातक को सर्वाधिक उपयोगी परिणाम प्राप्त होंगे और किस दिशा में जातक के धनार्जन के प्रयास सफल होंगे।

धन-सम्पति के लिए द्वितीय भाव की विवेचना करते समय द्वादश भाव का भी विचार, आवश्यक रुप से करना चाहिए। एक जातक अत्याधिक धनवान हो सकता है लेकिन वह साथ ही साथ कंजूस भी हो सकता है। जातक धन का किस प्रकार से व्यय करता है अथवा करता भी है या नहीं करता, यह जानने के लिए द्वादशेश का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। द्वादश भाव का पीड़ित होने का अर्थ है जातक का मानसिक रुप से चिड़चिड़ा एवं क्रूर होना है।

किसी भी जातक की कुण्डली में धन-सम्पति के संदर्भ में चतुर्थ भाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह भूमि, सम्पति एवं वाहनों की स्थिति को इंगित करता है । पीड़ित चतुर्थ भाव जातक को क्रोधी, पाषाण हृदय एवं विषयासक्त बनाता है। चतुर्थ भाव नादिर अथवा छुपा हुआ संसार भी है जिसका अर्थ है गुप्त लक्ष्य, गुप्त सुरक्षित धन अथवा गुप्त संरक्षित धन। यदि चतुर्थ भाव बली है तो जातक के पास सदैव संरक्षित धन उपलब्ध होगा और जातक अधिक प्राप्ति की इच्छा से पूर्ण होगा। कई धनवान व्यक्तियों की कुण्डली में लग्न एवं चतुर्थ भाव अथवा इनके स्वामियों में सम्बन्ध देखा जा सकता है।

महर्षि पराशर ने धन सम्बन्धित कुछ विशेष योगों को वर्णित किया है जो कुण्डली में होने पर जातक को अत्याधिक धन-सम्पति देते हैं। ये योग और अन्य ग्रन्थों में वर्णित मुख्य धनयोग इस प्रकार से हैं:

1. शुक्र, पंचमेश होकर पंचम में और स्वग्रही मंगल एकादश भाव में। यह योग मकर एवं मिथुन लग्न पर लागू होता है।*

2. मंगल, पंचमेश होकर पंचम में और स्वग्रही शुक्र एकादश भाव में। यह योग कर्क एवं धनु लग्न पर लागू होता है।

3. पंचमेश होकर बुध, पंचम भाव में और बृहस्पति, मंगल एवं चन्द्रमा, एकादश भाव में। ऐसी स्थिति में चन्द्रमा-बृहस्पति गजकेसरी योग बनाते हैं और बृहस्पति स्वगृही होता है। यह योग वृषभ एवं कुंभ लग्न पर लागू होता है।

4. पंचमेश होकर चन्द्रमा पंचम में और स्वग्रही होकर शनि एकादश भाव में। यह योग मीन लग्न पर लागू होता है।

5. पंचमेश होकर सूर्य, पंचम भाव में और शनि, बृहस्पति एवं चन्द्रमा एकादश भाव में। यहां भी शनि स्वग्रही होता है जबकि चन्द्रमा-बृहस्पति गजकेसरी योग बनाते हैं। यह योग मेष लग्न पर लागू होता है।

6. पंचमेश होकर शनि, पंचम भाव में और सूर्य एवं चन्द्रमा, एकादश भाव में। यह योग कन्या एवं तुला लग्न पर लागू होता है जिनके लिए इस स्थिति में क्रमशः चन्द्रमा एवं सूर्य स्वग्रही होंगे।

7. पराशर के अनुसार यदि चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र एवं बुध में से कोई भी ग्रह द्वितीय भाव में उच्च का हो तो जातक के पास प्रचुर मात्रा में धन होगा।

8. सिंह राशि का सूर्य लग्न में मंगल एवं बृहस्पति से युत अथवा दृष्ट हो। ऐसी स्थिति में बृहस्पति एवं मंगल, पंचमेश और नवमेश होते हैं।

9. यदि अधिकतर ग्रह 1, 2, 6, 8 एवं 12वें अथवा 1, 2 एवं 7वें भाव में हों जो जातक भाग्य की दस्तक से जीवन में उपर उठता है। ऐसा जातक आकस्मिक पैतृक सम्पति भी प्राप्त करता है।

---

* *पंचमेश पंचम में और एकादशेश एकादश भाव में प्रचुर मात्रा में धनदायक होता है।*

10. षष्टेश एवं एकादशेश की एकादश भाव में युति जातक को जुंआ, लाटरी आदि में भाग्यशाली बनाती है। यदि यह युति द्वादश भाव में होती है तो इन्हीं स्रोतों के द्वारा ही धन हानि होती है।

11. यदि बुध एवं चन्द्रमा, एकादश भाव में षष्टेश के साथ युति में हो और पीड़ित न हों तो जातक शेयर बाजार से धन प्राप्त करता है। पंचमेश होकर षष्टम भाव में स्थित बुध जातक को शेयर बाजार में हानि देता है।

12. पंचम एवं एकादश भाव का राहु-केतु से सम्बन्ध अचानक और आश्चर्यजनक प्राप्तियां देता है।

13. "यदि आत्मकारक*, शुभ ग्रह की राशि या नवांश में हो तो जातक धनवान होगा। यदि कारकांश लग्न** में भी शुभ ग्रह हों तो जातक राजा होगा"-पराशरहोराशास्त्र।

14. लग्नाधिपति और धनाधिपति अर्थात लग्नेश एवं द्वितीयेश का आपसी सम्बन्ध चार प्रकार के धनयोगों का निर्माण करता है।

15. होरासार के अनुसार शनि-मंगल की उपचय भाव (3, 6, 10, 11 भाव) अथवा पंचम भाव में युति प्रचुर मात्रा में धन उत्पन्न करने वाली होती है।

16. 2, 6, 9 एवं 11वें भाव में सूर्य-शनि की युति, धन के लिए शुभ है।

17. भावार्थ रत्नाकर के अनुसार यदि लग्नेश एवं चतुर्थेश में राशि परिवर्तन होता है तो जातक बहुत धनवान व्यक्ति होता है।

18. सारावली के मतानुसार बुध द्वारा दृष्ट द्वितीय भाव में स्थित शनि जातक को धन देता है।

19. होरासार के अनुसार यदि 1, 5 अथवा 9वें भाव में बुध और शुक्र हो तो जातक धनवान बनता है।

20. मिथुन लग्न में चन्द्रमा, बुध एवं शुक्र की द्वितीय भाव में युति अत्याधिक धनदायक होती है। यहां द्वितीय भाव धन का भाव है जहां धनेश होकर चन्द्रमा स्वग्रही होता है और बुध लग्नेश एवं शुक्र पंचमेश होता है।

---

* *ज्योतिषशास्त्र की जैमिनी पद्धति में अधिकतम भोगांश वाला ग्रह आत्मकारक कहलाता है। भोगांशों को देखते समय इसमें राशि की संख्या को शामिल नहीं किया जाता है।*

** *आत्मकारक, नवांश कुण्डली में जिस राशि में स्थित होता है, उस राशि का भाव, लग्न कुण्डली में कारकांश लग्न कहलाता है।*

भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार धनयोग तब बनते हैं जब:

1. द्वितीयेश एवं पंचमेश अथवा द्वितीयेश एवं एकादशेश में राशि परिवर्तन होता है।
2. पंचमेश और नवमेश अपने-अपने भावों में हों।
3. द्वितीयेश एवं एकादशेश की युति पंचमेश एवं नवमेश से हो।
4. बृहस्पति की युति द्वितीयेश एवं बुध से हो।

कुण्डली में भावेशों द्वारा निर्मित होने वाले धन-सम्पति से सम्बन्धित अन्य योग:

1. एकादशेश केन्द्र या त्रिकोण में शुभ स्थिति में हो।
2. एकादश भाव में स्थित बली एकादशेश अत्याधिक धन देता है।
3. लग्नेश, द्वितीयेश और एकादशेश बली हों।
4. लग्नेश केन्द्र में, दशमेश चतुर्थ में और नवमेश, एकादश भाव में हों तो राजयोग देते हैं।
5. लग्नेश एवं एकादशेश अथवा द्वितीयेश एवं एकादशेश में राशि परिवर्तन हो।
6. लग्नेश, द्वितीयेश, नवमेश और एकादशेश, नवांश एवं अन्य वर्गों में बली हों।
7. एकादशेश, द्वितीय भाव में द्वितीयेश के साथ।
8. द्वितीयेश, नवमेश एवं एकादशेश की युति भी प्रचुर मात्रा में धन देने वाली होती है।
9. एकादश भाव अथवा एकादशेश शुभ कर्तरी योग में हो -सर्वार्थ चिन्तामणी।
10. एकादशेश का राशीश, शुभ कर्तरी योग में अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो -सर्वार्थ चिन्तामणी।
11. नवांश का स्वामी एकादशेश द्वारा गृहीत हो अथवा द्वितीयेश से शुभ दृष्ट हो -सर्वार्थ चिन्तामणी।
12. एकादशेश के द्रेष्कोण का स्वामी शुभ ग्रह हो और दशमेश से दृष्ट हो।

ग्रहों द्वारा निर्मित होने वाले धनदायक योगः

योगों की विस्तृत रुप से चर्चा अलग अध्याय में की गई है। उनमें से कुछ प्रमुख धनदायक योग इस प्रकार से हैंः

1. सभी राजयोग अपनी दशा में धन प्रदान करेगें। इस संदर्भ में केन्द्र एवं त्रिकोण के सम्बन्ध से बनने वाला राजयोग विशेष फलदायक होता है।
2. पंचमहापुरुष योग बनाने वाले ग्रह अपनी दशा में धन देते हैं।
3. लग्नाधियोग और चन्द्राधियोग।
4. वसुमती योग।
5. लक्ष्मी योग।
6. गज-केसरी योग।
7. मुद्रिका योग (चन्द्रमा, बृहस्पति एवं शुक्र एक-दूसरे से केन्द्र में)।
8. सुनफा, अनफा, दुरुधरा, शुभवेशी एवं शुभवोसी योग।

सत्कर्मों द्वारा धन प्राप्तिः

1. शुभ ग्रह नैतिक एवं सत्कार्यों द्वारा धन देते हैं।
2. अशुभ ग्रह अनैतिक एवं दुष्कर्मों से धन देते हैं।
3. मिश्रित ग्रह, मिश्रित फल देते हैं।

लग्नेश, धनेश और एकादशेश का सम्बन्धः

1. यदि एक-दूसरे के प्रति मित्र हों तो जातक का धन, धार्मिक एवं सत्कार्यों पर व्यय होता है।
2. यदि द्वितीयेश एवं एकादशेश, लग्नेश के शत्रु हों तो जातक का धन कुकर्मों, स्त्रियों एवं मदिरा आदि व्यसनों की पूर्ति पर व्यय होता है।

धन प्राप्ति की दिशा:

दशमेश द्वारा इंगित दिशा से आय प्राप्त होती है। दिशाओं को एकादश भाव की राशि अथवा एकादश भाव को प्रभावित करने वाले ग्रह बली ग्रह से देखा जा सकता है-सर्वाथ चिन्तामणी।

धन-सम्पति की हानि अथवा दरिद्रता के योग:

1. पराशर के मतानुसार यदि सूर्य नीचतम अंशों में हो अर्थात तुला राशि में 10 अंश का हो तो कुण्डली के सभी राजयोगों को भंग कर देता है।
2. जब चन्द्रमा से द्वितीय एवं द्वादश भाव अथवा केन्द्र में कोई ग्रह नहीं होता है तो केमद्रुम योग का निर्माण होता है। समृद्धशाली होने के लिए यह योग शुभ नहीं है।
3. धन का कारक बृहस्पति और सूर्य यदि कुण्डली में नीचस्थ हों और निर्बली लग्नेश, अष्टमेश से पीड़ित हो।
4. लग्नेश निर्बली हो और द्वितीयेश एवं द्वादशेश में राशि परिवर्तन हो।
5. द्वितीयेश एवं एकादशेश निर्बली हो और एकादशेश अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो।
6. केन्द्र में अशुभ ग्रह हों।
7. केन्द्र रिक्त हों।
8. शुभ ग्रह अस्त हो अथवा दुर्स्थित हों।
9. *"पुण्य सहम"* एवं चन्द्रमा दुर्स्थित हो, *"पुण्य सहम"* का स्वामी द्वादश भाव में स्थित होकर चन्द्रमा को अशुभ दृष्टि से दृष्ट करता हो।
10. मंगल एवं शनि दशम में हों और चन्द्रमा अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
11. द्वादश भावगत मंगल, अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि के प्रभाव में हो।
12. चन्द्रमा अशुभ ग्रहों के मध्य हो अर्थात पापकर्तरी में हो अथवा अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
13. चन्द्रमा एवं शनि, मंगल से दृष्ट हों।

14. द्वादश भाव में स्थित कई अशुभ ग्रह, शेयर बाजार में हानि देते हैं।

15. लग्नेश, द्वादश भाव में मारक से दृष्ट हो।

16. अशुभ ग्रहों से युत बुध द्वितीय भाव में हो। धन के दृष्टिकोण से द्वितीय भाव में चन्द्रमा शुभ नहीं होता है। यह जातक को अतिव्ययी बनाता है।

17. लग्नेश, षष्टेश से राशि परिवर्तन करे और मारक से दृष्ट हो।

18. शनि, लग्न में स्थित होकर पापकर्तरी में हो।

19. द्वितीयेश, अष्टम भाव में अशुभ या नीच ग्रह के साथ स्थित होकर सूर्य से दृष्ट हो तो जातक सरकारी दण्ड द्वारा धन हानि पाता है।

20. द्वितीय भाव में पापी ग्रह हों और लग्नेश, द्वादश भाव में दशमेश या एकादशेश से युति करे या दृष्ट हो तो जातक हमेशा ऋण में डूबा रहेगा।

21. द्वितीयेश, द्वितीय भाव में पापी ग्रहों के साथ हो।

भावार्थ रत्नाकर में दरिद्रता से सम्बन्धित कुछ नियम दिये गए हैं जिन्हें इसमें ***"निर्धन योग"*** कहा गया है। ये इस प्रकार से हैं:

1. लग्नेश, चतुर्थेश एवं नवमेश, अष्टम भाव में हों तो जातक जन्म से ही दरिद्रता से पीड़ित होता है।

2. द्वितीयेश एवं द्वादशेश के मध्य राशि परिवर्तन हो।

3. द्वितीयेश, द्वादश भाव में और द्वादशेश लग्न में मारक से दृष्ट।

4. पंचमेश, षष्टम भाव में और नवमेश, अष्टम भाव में मारक से दृष्ट।

जैमिनी पद्धिति और धन अथवा दरिद्रता:

ज्योतिषशास्त्र की जैमिनी पद्धिति में धन का आंकलन आरुढ़ लग्न और आत्मकारक से किया जाता है। जन्म लग्न के समान ही आरुढ़ लग्न भी महत्वपूर्ण होता है।

आरुढ़ लग्न की गणना: लग्न से लग्नेश जितने भाव आगे स्थित होता है लग्नेश से उतने ही भाव आगे गिनने पर जो भाव आता है वह आरुढ़ लग्न अथवा पद लग्न कहलाता है।

जैमिनी पद्धिति के अनुसार निम्नलिखित स्थितियों में जातक धनवान होता है:

1. यदि आत्मकारक शुभ ग्रह के नवांश में हो अथवा नवांश में आत्मकारक से केन्द्र में शुभ ग्रह हो।

2. यदि नवांश में पूर्ण चन्द्रमा एवं शुक्र, आत्मकारक के साथ युति में हों।

3. यदि पदलग्न से एकादश भाव, किसी भी ग्रह की युति या दृष्टि से प्रभावित हो। यदि शुभ ग्रहों की स्थिति अथवा दृष्टि से प्रभावित होता है तो सम्माननीय एवं नैतिक तरीकों से धनार्जन होगा। विपरीत स्थिति होने पर अर्थात यदि आरुढ़ लग्न से एकादश भाव, पापी ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो अनैतिक एवं असम्माननीय कार्यों से धनार्जन होगा।

4. आरुढ़ लग्न से एकादश भाव में नीच का शनि या मंगल जातक को धनवान बनाता है।

5. लग्न से 4, 5, 7 अथवा 11वें भाव का आरुढ़ लग्न बनना, धन के दृष्टिकोण से शुभ है।

दरिद्रताः

1. यदि लग्न अथवा पद लग्न से द्वादश भाव में ग्रह हों तो जातक अपनी आय से अधिक व्यय करता है।

2. यदि लग्न से 6, 8 या 12वें भाव में आरुढ़ लग्न आता है तो जातक दरिद्र होता है।

इन्दु लग्न और आर्थिक समृद्धि

ज्योतिषशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में बार-बार ***इन्दु लग्न*** अथवा ***धन लग्न*** शब्द का प्रयोग किया गया है। पराशर ने इसको ***विशेष चन्द्र योग*** के नाम से कहा गया है। इन्दु का अर्थ चन्द्रमा होता है और इस विशेष लग्न का प्रयोग जातक के ऐश्वर्य एवं धन-सम्पति के स्तर का आंकलन करने में किया है। अपने अनुभव में हमने यह देखा है कि इस लग्न का प्रयोग जीवन की सभी शुभ घटनाओं और धन-सम्पति के संग्रह आदि के लिए भी किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि लग्न, सूर्य लग्न एवं चन्द्र लग्न के अतिरिक्त, इन्दु लग्न एक ऐसा लग्न है जो जातक

के ऐश्वर्य एवं सम्पन्नता के साथ-साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के विषय में चमत्कारी जानकारियां देता है।

इन्दु लग्न की गणना कैसे करें:

छाया ग्रह होने के कारण इन्दु लग्न की गणना में राहू-केतु को शामिल नहीं किया जाता है। शेष सात ग्रहों को निम्नलिखित कला/इकाई दी गई हैं:

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
कला	30	16	6	8	10	12	1

1. सर्वप्रथम चन्द्रमा से नवमेश और लग्न से नवमेश की कलाओं का योग करें।

2. चूंकि जन्मपत्रिका में केवल 12 भाव ही होते हैं, अतः यदि यह योग 12 से अधिक है तो इसमें से 12 के गुणक को इस प्रकार से कम करें कि शेष संख्या 12 अथवा 12 से कम रह जाए। लेकिन किसी ही स्थिति में यह 0 नहीं होती है। यदि 12 के गुणक घटाने पर 0 शेष बचता है तो 0 के स्थान पर 12 को लिया जाता है।

3. यदि योगफल 12 से कम है तो उपरोक्त प्रक्रिया करने की आवश्यकता नहीं है।

4. इस प्रकार प्राप्त संख्या के बराबर, जन्मपत्रिका में चन्द्रमा द्वारा गृहीत भाव से आगे के भावों को गिनें (चन्द्रमा से गिनने के कारण भी यह इन्दु लग्न कहलाता है)। इस प्रकार गिनने पर जो भाव आता है, वह ***इन्दु लग्न*** कहलाता है।

आइये, इन नियमों को उदाहरणों द्वारा समझते हैं।

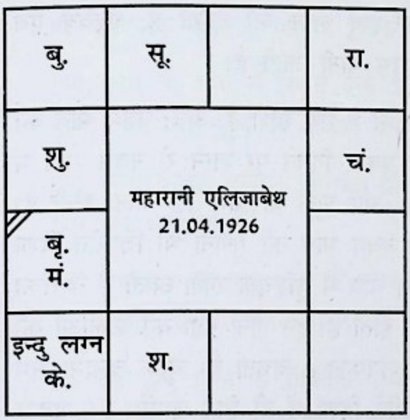

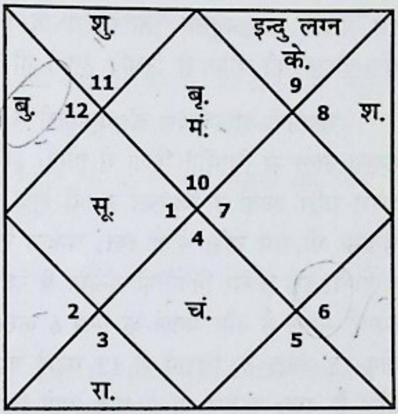

1. महारानी एलिजाबेथ की कुण्डली में लग्न से नवमेश बुध है जिसके पास 8 कलायें हैं और चन्द्रमा से नवमेश बृहस्पति है जिसके पास 10 कलायें हैं। इन 8 एवं 10 कलाओं को जोड़ने पर हमारे पास 18 योग आता है।

2. चूंकि प्राप्तांक 12 से अधिक है, अतः इसको 12 से भाग करने पर शेष 6 बचता है।

3. कुण्डली में चन्द्रमा, कर्क राशिगत होकर सप्तम भाव में स्थित है। यहां से 6 भाव आगे गिनने पर धनु राशि द्वारा गृहीत द्वादश भाव आता है, जो इस कुण्डली का इन्दु लग्न बनता है।

कुछ ज्योतिषाचार्य इन्दु लग्न की गणना करने के लिए जैमिनी पद्धति* एंव जैमिनी दृष्टियों** का प्रयोग करते हैं। इस पद्धति में ग्रहों की कलायें तो यही होती हैं लेकिन सम एवं विषम राशियों से नवम भाव की गणना की विधि अलग होती है। यदि लग्न अथवा चन्द्रमा विषम राशि में हों तो गणना सीधी होती है और यदि सम राशि में हो तो गणना विपरीत दिशा में होती है। इन्दु लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों के प्रभाव की विवेचना भी पराशरी दृष्टियों के स्थान पर जैमिनी दृष्टियों से की जाती है।

---

* *जैमिनी पद्धति जन्मपत्रिका विशलेषण की एक अलग लेकिन अद्‌भुत पद्धति है जिसमें राशियों को उनके चर, स्थिर एंव द्विस्वभाव के अनुसार विचारा जाता है।*

** *जैमिनी दृष्टि में चर राशि (1, 4, 7, 10) अपनी निकटम स्थिर राशि को छोडकर अन्य स्थिर राशियों को दृष्ट करती है और इसी प्रकार स्थिर राशि (2, 5, 8, 11) अपनी निकटम चर राशि को छोड़कर अन्य चर राशियों को दृष्ट करती है। द्विस्वभाव राशि अन्य द्विस्वभाव राशियों (3, 6, 9, 12)को ही दृष्ट करती है। इसी प्रकार इन राशियों में बैठे ग्रह भी राशियों के स्वभाव के अनुसार अन्य ग्रहों एंव राशियों को दृष्ट करते हैं।*

इस पद्धति के अनुसार जितने अधिक ग्रह इन्दु लग्न को देखते हैं, ऐश्वर्य एवं धन-दौलत की दृष्टि से स्थिति उतनी ही शुभ मानी जाती है।

महारानी एलिजाबेथ की कुण्डली में लग्न में सम राशि है, अतः नवम भाव की गणना लग्न से विपरीत दिशा में होगी। इस प्रकार गिनने पर लग्न से नवम भाव में वृषभ राशि आती है जिसका स्वामी शुक्र है और शुक्र के पास 12 कला होती हैं। चन्द्रमा भी सम राशि में है अतः चन्द्रमा से नवम भाव की गणना भी विपरीत दिशा में होगी। इस प्रकार गिनने से चन्द्रमा से नवम भाव में वृश्चिक राशि आती है जिसका स्वामी मंगल है और मंगल के पास 6 कला होती हैं। इन दोनों ग्रहों की कलाओं का योग 18 आता है, जिसमें से 12 घटाने पर शेषफल 6 बचता है। चूंकि चन्द्रमा सम राशि है अतः चन्द्रमा से 6 भाव आगे विपरीत दिशा में ही गिने जाएंगे। इस प्रकार गिनने से चन्द्रमा से षष्टम भाव, लग्न से द्वितीय भाव में आता है जहां कुम्भ राशि है। जैमिनी पद्धति के अनुसार इस जन्मपत्रिका में यह भाव इन्दु लग्न बनता है।

कुम्भ राशि स्थिर राशि है जो उच्च के सूर्य द्वारा गृहीत मेष राशि और चन्द्रमा द्वारा गृहीत राशि कर्क से दृष्ट है। यह तुला राशि द्वारा भी दृष्ट है जिसका स्वामी शुक्र ही इसमें स्थित है लेकिन निकतम चर राशि होने के कारण मकर राशि इसको दृष्ट नहीं करती है। इस प्रकार इन्दुं लग्न पर दो बली ग्रहों की दृष्टि है।

इन्दु लग्न की व्याख्या

अतुल्य धन-सम्पति के योगः

1. इन्दु लग्न का अधिकतम शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट होना समृद्धि के लिए एक अतिशुभ योग है। यह योग इन ग्रहों की दशा में प्रचुर मात्रा में धनदायक होता है। यद्यपि एक शुभ ग्रह की दृष्टि ही इस योग के उद्देश्य के लिए पर्याप्त है लेकिन इस योग में जितने अधिक ग्रह शामिल होते हैं, जीवन में उतना ही अधिक समय जातक को इसकी शुभता को भोगने के लिए मिलता है। यह योग ***कोटेश्वर योग*** के नाम से जाना जाता है।

2. इन्दु लग्न में उच्च के क्रूर ग्रहों (शनि, सूर्य एवं मंगल)* का स्थित होना भी कोटेश्वर योग बनाता है जो अन्त नें प्रचुर मात्रा में धन-समृद्धि दायक होता है। यद्यपि किसी भी क्रूर अथवा अशुभ ग्रह का इन्दु लग्न के भाव में स्थित होना

* *सामान्यतः सूर्य, मंगल, शनि, राहू-केतु और कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा नैसर्गिक क्रूर ग्रहों की श्रैणी में आते हैं जबकि इनके साथ युत होने पर बुध भी कूर ग्रह बन जाता है।*

ही धनदायक होता है लेकिन इसकी मात्रा अधिक नहीं होती है।

3. इन्दु लग्न के भाव में स्थित एक भी शुभ ग्रह पर किसी भी अन्य ग्रह की दृष्टि, चाहे वह शुभ हो अथवा अशुभ, पर्याप्त मात्रा में धनदायक होती है।

4. इन्दु लग्न केवल अशुभ ग्रह/ग्रहों द्वारा गृहीत भी हो तो यह जातक को मध्य स्तर का धन देते हैं।

5. वह सभी ग्रह जो इन्दु लग्न के भाव में स्थित होते हैं अथवा इसको दृष्ट करते हैं, अपनी दशा में धन-सम्पति देते हैं।

6. जो ग्रह इन्दु लग्न से त्रिकोण अथवा केन्द्र में स्थित होते हैं वह ग्रह भी अपनी-अपनी दशा/अन्तर्दशा में धन-सम्पति देते हैं।

7. अनुभव में यह भी देखा गया है कि जब-जब गोचरवश बृहस्पति, इस लग्न से केन्द्र में गोचर करता है तो जातक को भू-सम्पति, धन एवं खुशियां देता है।

8. जो ग्रह इन्दु लग्न से तृतीय, षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भावों में स्थित होते हैं वह अपनी दशा-अन्तर्दशा में धन-सम्पति का नाश करते हैं।

9. इन्दु लग्न पर नीच के अशुभ ग्रह की दृष्टि आर्थिक सम्पन्नता के लिए शुभ नहीं होती है। इसी तरह इन्दु लग्न के भाव को ग्रहविहीन होना अथवा किसी भी ग्रह द्वारा दृष्ट नहीं होना आर्थिक सम्पन्नता के लिए शुभ स्थिति नहीं होती है।

10. जन्मपत्रिका में आर्थिक सम्पन्नता के लिए इन्दु लग्न से विवेचना करते समय, इस लग्न से द्वितीय एवं एकादश भाव और भावेशों की स्थिति भी देखनी चाहिए। इनकी स्थिति, सम्पन्नता के स्तर का अनुमान लगाने में सहायक होती है।

11. इन्दु लग्न को प्रथम भाव मानने पर धन-समृद्धि के लिए, इसका द्वितीय, पंचम, नवम, एकादश एवं दशम भाव/भावेश का सम्बन्ध, धन योग बनाता है।

12. इन्दु लग्न के सभी संम्बन्धित भाव एवं भावेश के बल की आंकलन के लिए सर्वाष्टकवर्ग का उपयोग सार्थक सिद्ध होता है।

उदाहरण: बिल गेट्स

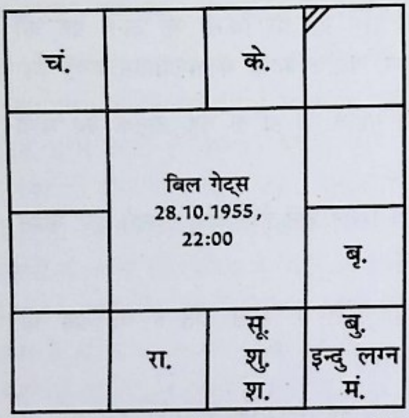

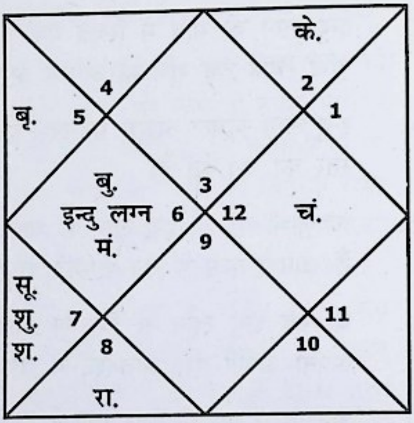

संसार के सबसे धनवान व्यक्तियों में से एक, बिल गेट्स की मिथुन लग्न की कुण्डली है। लग्न से नवम भाव में कुम्भ राशि है जिसके स्वामी शनि के पास 1 कला है और चन्द्रमा से नवम भाव में वृश्चिक राशि है जिसके स्वामी मंगल के पास 6 कला हैं। इन दोनों की कलाओं का योग 7 आता है, जो स्वयं ही 12 से कम है अतः चन्द्रमा से सप्तम भाव, कन्या राशि में इन्दु लग्न आता है।

इन्दु लग्न के भाव में दो ग्रह, उच्च का लग्नेश एवं चतुर्थेश बुध और षष्टेश एवं एकादशेश मंगल स्थित हैं, जिससे जन्मपत्रिका में **कोटेश्वर योग** बन रहा है। इन्दु लग्न से द्वितीय भाव बहुत बली है जिसमें तीन ग्रह, उच्च का शनि, स्वग्रही पंचमेश शुक्र एवं **नीचभंग राजयोग** बनाता हुआ सूर्य स्थित है। इन्दु लग्न से एकादश भाव यद्यपि रिक्त है लेकिन उच्च के शनि से दृष्ट है और इसका स्वामी चन्द्रमा सबसे अधिक बली केन्द्र, दशम में स्थित होकर पूर्ण दृष्टि से इन्दु लग्न को दृष्ट करता है।

के. के. बिड़ला

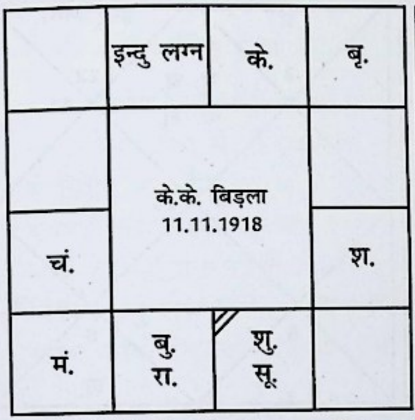

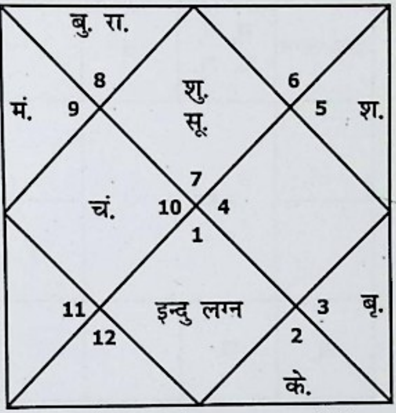

के. के. बिड़ला की कुण्डली, तुला लग्न की है। लग्न से नवम भाव में मिथुन राशि आती है जिसके स्वामी बुध के पास 8 कला है और चन्द्रमा से नवम भाव में कन्या राशि है जिसका स्वामी भी 8 कला वाला बुध ही है। अत: 8 + 8 = 16 और 12 से भाग देने के बाद शेषफल 4 बचता है। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव, मेष राशि में इन्दु लग्न आता है।

इन्दु लग्न को लग्नेश शुक्र अपनी मूलत्रिकोण राशि से और नीचभंग राजयोग बनाता हुआ एकादशेश सूर्य, पंचम भाव से दृष्ट करता है। इन्दु लग्न से चन्द्रमा केन्द्र में स्थित है और दो ग्रह, योगकारक शनि एवं मंगल इस लग्न से त्रिकोण में हैं। सर्वाष्टकवर्ग में धन-सम्पति से सम्बन्धित सभी भाव, लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, नवम, दशम एवं एकादश क्रमश: 30, 29, 30, 28, 27 एवं 35 बिन्दुओं के साथ बली हैं।

मुकेश अम्बानी

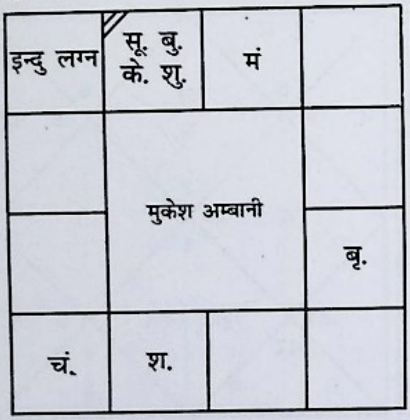

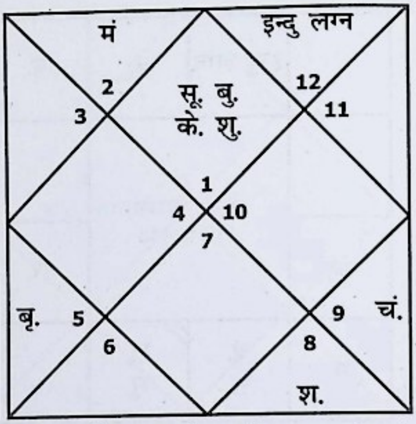

मुकेश अम्बानी की कुण्डली मेष लग्न की है। लग्न से नवमेश बृहस्पति के पास 10 कला और चन्द्रमा से नवमेश सूर्य के पास 30 कला हैं। इनका योग 40 आता है जिसको 12 से भाग देने पर शेषफल 4 बचता है। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव, मीन राशि में इन्दु लग्न आता है।

इन्दु लग्न से द्वितीय भाव बहुत बली है जिसमें पंचमेश सूर्य उच्च राशि का होकर, द्वितीयेश शुक्र, तृतीयेश एवं षष्टेश बुध और केतु के साथ स्थित हैं। इन्दु लग्न का स्वामी बली त्रिकोण में स्थित होकर लग्नेश मंगल से दृष्ट है।

मुकेश अम्बानी - सर्वाष्टक वर्ग

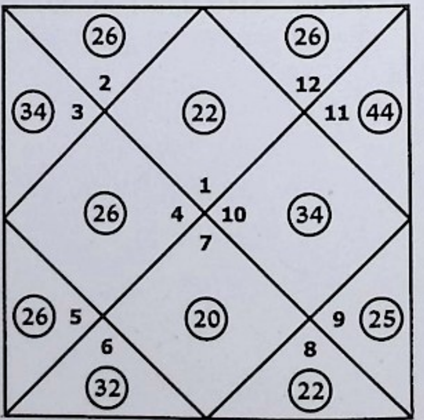

सर्वाष्टक वर्ग में दशम एवं एकादश भाव क्रमशः 34, 35 बिन्दु लेकर बहुत बली हैं। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि एकादश भाव में दशम एवं द्वादश दोनों से ही अधिक बिन्दु हैं जो कि समृद्धि का बहुत ही श्रेष्ठ योग है।

विशेष: कई ज्योतिषाचार्य धन-सम्पति का अनुमान लगाने के लिए द्वितीय भाव एवं एकादश भाव से भी इन्दु लग्न की गणना करते हैं। इस तरह की गणना में लग्न से द्वितीय भाव और चन्द्रमा से द्वितीय भाव से नवमेशों अर्थात लग्न एवं चन्द्रमा के दशमेशों की कलाओं को योग करके उपरोक्त प्रकार से शोधन करके संख्या प्राप्त की जाती है और प्राप्त संख्या के समान चन्द्रमा के द्वितीय भाव से आगे के भावों को गिनकर इन्दु लग्न द्वितीय निश्चित किया जाता है। इसी प्रकार से एकादश भावों से गणना करके इन्दु लग्न एकादश प्राप्त करते हैं।

सर्वाष्टकवर्ग के द्वारा आर्थिक समृद्धि का आंकलन करने की विधि

सर्वाष्टक वर्ग का उपयोग सम्बन्धित भाव/भावेशों के बल निर्धारण करने के लिए प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। सामान्यतः जन्मपत्रिका में लग्न को प्रथम भाव मानते हुए द्वितीय, पंचम, नवम, दशम एवं एकादश भाव/भावेशों के सम्बन्ध से बनने वाले धन योगों को देखा जाता है। जबकि इन्दु लग्न से धन-सम्पति एवं समृद्धि का निर्णय करने के लिए इससे द्वितीय एवं एकादश भाव/भावेशों की जन्मपत्रिका में स्थिति देखी जाती है। यदि सर्वाष्टक वर्ग में इन भावों में प्राप्त बिन्दुओं को भी इसमें शामिल करके देखेंगे तो यह धन-समृद्धि के स्तर की सही स्थित का ज्ञान करने में सहायक होता है।

1. यदि लग्न, नवम, दशम और एकादश भावों में 30 अथवा अधिक बिन्दु हों तो ऐसे जातक की पास धन-सम्पति निश्चित रुप से होती है। इसके विपरीत यदि इन भावों में 25 से कम बिन्दु होते हैं तो जातक निश्चित रुप से दरिद्र होता है।
2. यदि लग्न एवं चतुर्थ भाव में 33 बिन्दु हों और इनके स्वामी भाव परिवर्तन करके स्थित हों तो जातक धनवान होता है।
3. लग्न से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, नवम, दशम और एकादश भाव के बिन्दुओं का योग करें। यदि योग 164 से अधिक होता है तो जातक समृद्ध होगा।

4. सभी द्वादश भावों को निम्नलिखित चार समूहों में बांटा गया है:

   अ. बन्धु: 1, 5 एवं 9वां भाव

   आ. सेवक: 2, 6 एवं 10वां भाव

   इ. पोषक: 3, 7 एवं 11वां भाव

   ई. घातक: 4, 8 एवं 12वां भाव।

   प्रत्येक समूह के भावों के बिन्दुओं की संख्या का योग करें। यदि पोषक समूह के बिन्दुओं की संख्या, घातक समूह के बिन्दुओं की संख्या से अधिक होती है तो जातक धनवान होता है।

   यदि सेवक समूह के बिन्दुओं की संख्या, बन्धु समूह के बिन्दुओं से अधिक होती है तो जातक दूसरों के अधीन कार्य करके, उनके कार्यों को आगे बढ़ाने वाला होता है।

5. यदि लग्नेश चतुर्थेश से राशि परिवर्तन करता है अथवा लग्नेश का सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होता है तो जातक धनवान और राजा के समान होता है।

6. यदि सभी सातों ग्रह अपने-अपने अष्टकवर्ग में 6 से 8 बिन्दुओं के साथ हों तो वह जातक की धन-सम्पति की वृद्धि में सहायक होते हैं। यदि ग्रह अपनी उच्च राशियों में भी हों तो परिणाम अधिक शुभ फलकारी सिद्ध होते हैं।

7. यदि बृहस्पति का राशीश शुभ स्थिति में केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो और बृहस्पति अपने अष्टकवर्ग में 4 से अधिक बिन्दुओं के साथ हो तो यह जातक की धन-सम्पति में वृद्धिकारक होता है।

8. यदि बृहस्पति अपने अष्टकवर्ग में 4 से अधिक बिन्दुओं के साथ हो और शुक्र से युति करे तो जातक उच्चस्तरीय समृद्धि प्राप्त करता है।

9. यदि मेष या वृश्चिक राशि में स्थित शुक्र 5 बिन्दुओं के साथ हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यह धन-सम्पति, समृद्धि और वाहन सुख देने वाला होता है। यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो परिणाम अधिक सुखद होते हैं।

अध्याय 4

तृतीय भाव
(पराक्रम, अनुज एवं छोटी यात्रायें)

कुण्डली के तृतीय भाव से निम्नलिखित विषयों का विचार किया जाता है:

1. अनुज अर्थात छोटे भाई-बहन,
2. पराक्रम, साहस, शौर्य,
3. सगे-सम्बन्धी,
4. कण्ठ, वाक्शक्ति,
5. कान,
6. नवम से सप्तम होने के कारण पिता की मृत्यु।

सत्याचार्य के अनुसार तृतीय भाव से मानसिक स्थिरता, दृढ़ता और वाणी जैसे विषय भी विचारणीय होते हैं।

सर्वाथ चिन्तामणी के अनुसार तृतीय भाव से औषधी, मित्र, शिक्षा और छोटी यात्राओं कां विचार किया जाता है। कालिदास कृत उत्तरकालामृत युद्ध, व्यर्थ भटकना, निकट सम्बन्धी, भोजन की स्वच्छता, शौक, अच्छे परिवार का उत्तराधिकार आदि विषयों की विवेचना तृतीय भाव से करने की प्रस्तावना करता है।

मेदनी ज्योतिष में तृतीय भाव से डाक-सेवा, संचार व्यवस्था और पड़ोसी देशों को देखा जाता है।

नाड़ी सिद्धान्त के अनुसार तृतीय भाव में अत्याधिक ग्रहों की युति, माता-पिता के पुनर्विवाह की संभावना को इंगित करती है।

पराशर ने तृतीय भाव को पराक्रम या प्रयास का भाव कहा है। यदि तृतीय भाव, तृतीयेश और इसका कारक मंगल, पूर्ण बली होकर सुस्थित हों तो जातक अपने स्वप्रयासों के कारण जीवन में सफलताओं की सीढ़ियां चढ़ता है।

तृतीयेश की त्रिकोण भाव में स्थिति सामान्यतः जातक के कलात्मक गुणों में वृद्धि करती है लेकिन यदि पीड़ित हो तो जातक को अनपढ़ और अज्ञानी भी बनाती है।

जिन सन्तों ने भगवान की भक्ति का संगीत एवं भजनों के माध्यम से प्रचार-प्रसार करना है, उनके लिए कलात्मक गुणों एवं सुरीली आवाज के लिए कण्ठ की मधुरता के दृष्टिकोण से तृतीय भाव, अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं।

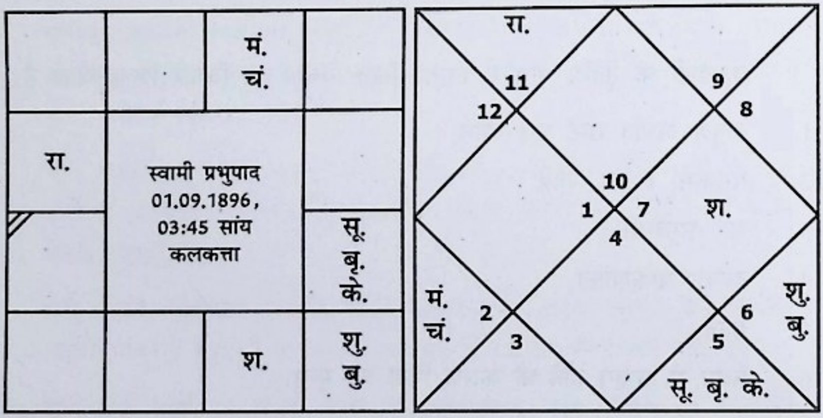

"इस्कॉन" और *"हरे कृष्ण हरे राम"* आन्दोलन की नींव रखने वाले स्वामी प्रभुपाद की कुण्डली में दो कलात्मक गुण प्रदान करने वाले ग्रह, नवमेश बुध एवं पंचमेश-दशमेश शुक्र, नवम भाव में स्थित हैं। नवम भाव, धर्म भाव भी है। धर्म भाव का स्वामी बुध उच्च का है और पंचमेश शुक्र नीचभंग रोजयोग बना रहा है। ये दोनों ग्रह, धर्म भाव अर्थात नवम भाव से तृतीय अर्थात कला के भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। तृतीयेश बृहस्पति, सूर्य के साथ राहु-केतु अक्ष में स्थित होकर अष्टम भाव में है। (यह विदेशी भूमि में मन्दिर निर्माण करने की शास्त्रीय युति है -सूर्य एवं ब्रहस्पति मन्दिर को इंगित करते हैं, राहु एवं द्वादशेश भी होने के कारण बृहस्पति विदेशी भूमि को इंगित करता है)। बुध एवं शुक्र की युति नवम भाव में बली धर्माधिपति-कर्माधिपति राजयोग बना रही है।

श्री के. एन. राव के अनुसार पंचमेश शुक्र की तृतीय भाव पर दृष्टि के साथ-साथ चन्द्रमा की पंचम भाव में स्थिति जातक की भक्ति संगीत के प्रति रुझान को इंगित करती है।

तृतीय भाव के बल का आंकलनः

1. भाव।

2. भाव का स्वामी।

3. कारक। मंगल, तृतीय भाव का कारक ग्रह है।

4. तृतीयेश का राशीश।

तृतीयेश की विभिन्न भावों में स्थित होने के परिणाम

तृतीयेश, प्रथम भाव में: स्वप्रयास से धनार्जन, पतला-दुबला शरीर, धनी और शूरवीर। इस सम्बन्ध वाला जातक अभिनेता, संगीतकार और नर्तक भी होता है।

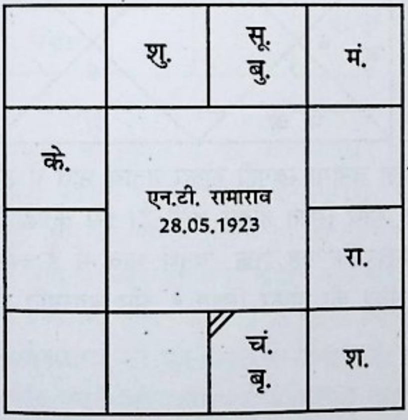

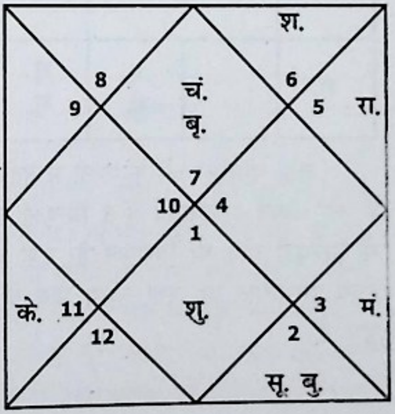

श्री एन. टी. रामाराव की कुण्डली में तृतीयेश बृहस्पति, दशमेश चन्द्रमा से युति करके लग्न में गज-केसरी योग बना रहा है और अन्य कलात्मक ग्रह शुक्र से दृष्ट है।

तृतीयेश, द्वितीय भाव में: जातक बिना किसी संदेह के नैतिक रुप से कलुषित, अधम और दुःखी होता है।

तृतीयेश, तृतीय भाव में: तृतीय भाव में स्थिति तृतीयेश जातक को वीरता और अत्याधिक सहनशक्ति प्रदान करता है। ऐसा जातक चरित्रवान, धनवान, सम्पन्न एवं खुशहाल होता है और यह स्थिति जातक के भाई-बहनों के लिए भी शुभ होती है। यह जातक को विश्वसनीय मित्र, अच्छी रुचियों और खेलों में वरीयता देती है।

तृतीय भाव कलात्मक गुणों का भाव भी है। यदि इसका स्वामी चन्द्रमा, शुक्र, बुध या बृहस्पति में से कोई भी कलात्मक गुणों वाला ग्रह हो तो यह जातक के कला एवं संगीत के गुणों के विकास के लिए अतिशुभ होता है। यह स्थिति विशेषकर संगीत एवं गायन के लिए अधिक शुभ होती है क्योंकि तृतीय भाव वाणी (आवाज) को भी इंगित करता है।

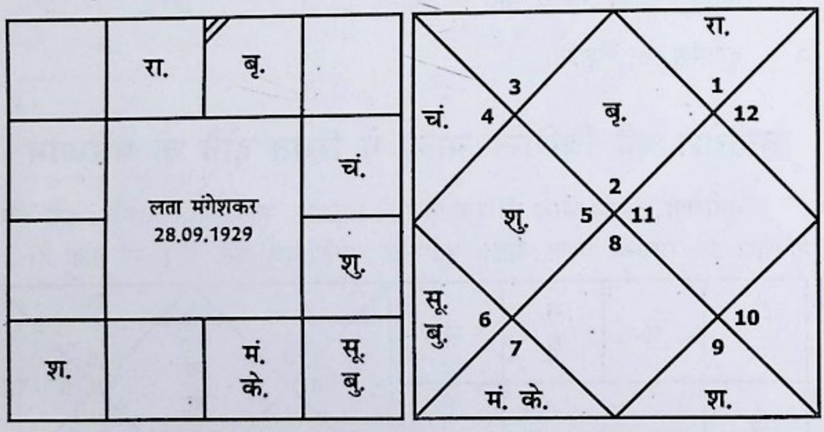

लता मंगेशकर की कुण्डली में तृतीयेश चन्द्रमा स्वगृही होकर तृतीय भाव में ही है और अपने अष्टकवर्ग में 5 बिन्दुओं के साथ स्थित होकर बली है। इस कुण्डली में सरस्वती योग भी विद्यमान है। एक कलात्मक ग्रह शुक्र, चतुर्थ भाव में है और अन्य कलात्मक ग्रह बुध, पंचम भाव में उच्च का होकर स्थित है और बृहस्पति से दृष्ट है।

शिराज शाहिद की कुण्डली:

यह कुण्डली श्री के. एन. राव की पुस्तक **"अप्स एण्ड डाउन इन कैरियर"** से उद्धृत है।

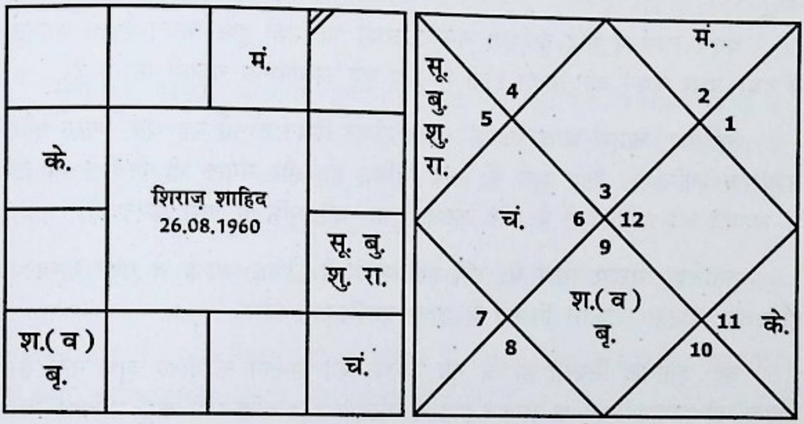

यह भारत की सबसे कम आयु की गोल्फ विजेता महिला की कुण्डली है। इस कुण्डली के विषय में यह भविष्यकथन किया गया था कि 17 मई 1984 में यह विदेश जाएगी और राष्ट्रीय चैम्पियनशिप जीतेगी। यह दोनों ही भविष्यकथन सत्य सिद्ध हुए। इन भविष्यकथनों का आधार कुण्डली का बलिष्ठ तृतीय भाव था। श्री के. एन. राव के अनुसार अपने उद्देश्य पूर्ति हेतु कडी प्रतिस्पर्धा करने और उसको जीतने की इच्छा के लिए, कुण्डली के तृतीय एवं षष्टम भाव में स्थित अशुभ ग्रहों का होना ज्योतिषशास्त्र का एक अनमोल उपहार होता है। ये भाव जातक की खेल एवं शौर्य प्रदर्शन करने और प्रतिस्पर्धा में सटीक वार करने तथा जातक की जुझारु प्रवृति को इंगित करते हैं। इस कुण्डली में तृतीय भाव में दो अशुभ ग्रह, लग्नेश बुध एवं योगकारक शुक्र के साथ स्थित होकर, बृहस्पति एवं मंगल से दृष्ट हैं। ग्रहों की यह स्थिति कुण्डली में छुपे पराक्रम को इंगित कर रही है।

पद लग्न* से तृतीय भाव भी बली है। जैमिनी पद्धति के अनुसार पद लग्न, सूर्य, शुक्र, बुध, राहु, केतु एवं मंगल द्वारा दृष्ट है**। कारकांश लग्न*** (धनु) से तृतीय भाव में केतु है, षष्टम भाव में मंगल है और नवम भाव अतिरिक्त विशेषता युक्त है।

वृषभ लग्न में यदि तृतीयेश चन्द्रमा अपने भाव को दृष्ट करता है तो जातक में इधर-उधर घूमने की आदत होती है और वह अत्याधिक यात्रायें करता है।

तृतीयेश, चतुर्थ भाव में: यदि बली होकर स्थित हो तो यह धन, शिक्षा और मानसिक शान्ति के लिए शुभ है। यदि पीड़ित हो और मंगल भी निर्बली हो तो भू-सम्पति की हानि होती है और जातक दूसरों की भूमि में वास करता है।

तृतीयेश, पंचम भाव में: यदि तृतीयेश बली हो तो भाइयों से मधुर सम्बन्ध होंगे और जातक सरकारी विभाग में उच्च पदाधिकारी होगा।

यदि तृतीयेश निर्बली हो तो यह जातक की सन्तान के लिए शुभ नहीं है। जातक को सन्तानहीनता या सन्तान होने में बिलम्ब और सन्तान से कटु सम्बन्ध जैसे कटु परिणाम प्राप्त होते हैं।

तृतीयेश, षष्टम भाव में: षष्टम भाव में स्थित तृतीयेश, समृद्धि दायक विपरीत राजयोग का निर्माण करता है। यदि षष्टेश बली हो तो जातक के भाई सफल होंगे, जातक स्वयं चिकित्सक या सेना में अधिकारी होगा। तृतीयेश, षष्टम भाव में षष्टेश के साथ स्थित हो तो यह खेल एवं खेलों से सम्बन्धित अन्य स्पर्धाओं के लिए अच्छी युति होती है।

तृतीयेश निर्बली हो तो जातक रोगों एवं विरोधियों से पीड़ित रहेगा और उसके अपने मामा से भी सम्बन्ध मधुर नहीं होंगे।

---

* *लग्न से लग्नेश जितने भाव आगे स्थित होता है, लग्नेश से उतने ही भाव आगे गिनने पर जो भाव आता है वह पद लग्न कहलाता है। इस कुण्डली में लग्नेश बुध, लग्न से तीसरे भाव में स्थित है, अत: तीसरे भाव से तीन भाव आगे, पंचम भाव में पद लग्न होगा।*

** *जैमिनी पद्धति में चर राशि एवं उसमें स्थित ग्रह अपनी निकटतम स्थिर राशि को छोडकर अन्य सभी स्थिर राशियों एवं उनमें स्थित ग्रहों को देखती है, इसी प्रकार स्थिर राशि एवं उसमें स्थित ग्रह भी अपनी निकटतम चर राशि को छोड़कर अन्य सभी चर राशियों एवं उनमें स्थित ग्रहों को देखती है जबकि एक द्विस्वभाव राशियां अन्य सभी द्विस्वभाव राशियों एवं उनमें स्थित ग्रहों को देखती हैं।*

*** *आत्मकारक, नवांश कुण्डली में जिस राशि मे स्थित होता है, उस राशि का भाव, लग्न कुण्डली में कारकांश लग्न कहलाता है।*

तृतीयेश, सप्तम भाव में: यदि बली हो तो जातक का एक भाई विदेश में वास करता है और वहां अच्छी समृद्धि प्राप्त करता है।

यदि तृतीयेश निर्बली हो और लग्नेश एवं नवमेश भी बली न हों तो जातक में नैतिक दृढ़ता नहीं होती है। उसके परस्त्रियों से अनैतिक सम्बन्ध होते हैं और वह शासन द्वारा हानि एवं दण्ड भी पाता है।

तृतीयेश, अष्टम भाव में: अष्टम भावगत बली तृतीयेश शोध एवं कला के विकास के लिए शुभ होता है। निर्बली तृतीयेश स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं होता है अर्थात जातक घातक एवं गंभीर रोगों से ग्रस्त होता है, अपराधिक कार्यों में लिप्त हो सकता है और वैवाहिक जीवन के सुख के लिए भी शुभ नहीं होता है।

तृतीयेश, नवम भाव में: यदि तृतीयेश बली हो तो भाइयों के लिए शुभ होता है, जातक अपने भाइयों से सहायता प्राप्त करता है और विवाह के उपरान्त अच्छा भाग्योदय होता है। यदि निर्बली हो तो जातक के अपने पिता से सम्बन्ध मधुर नहीं होते और जातक लम्बी यात्रायें कर सकता है।

तृतीयेश, दशम भाव में: यदि बली एवं सुस्थित हो तो जातक अपने स्वप्रयास से जीवन में अच्छी उन्नति करता है, जातक के भाई अच्छी स्थिति में होते हैं और उनसे जातक का सम्बन्ध भी अच्छा होता है। सत्याचार्य के अनुसार यदि तृतीयेश दशम भाव में बुध या शुक्र की राशि में हो तो जातक को गायक, अभिनेता, नर्तक अथवा संगीत के वाद्ययंत्रों का आसक्त बनाता है।

यदि निर्बली हो तो जातक की भार्या पाषाण हृदय और विश्वासघाती होती है।

तृतीयेश, एकादश भाव में: यदि बली हो तो जातक अपने प्रयासों से धनवान बनता है और एक समृद्धशाली जीवन यापन करता है।

यदि निर्बली हो तो जातक दुराचारी होता है और दूसरों के आधीन रहकर जीवन यापन करता है।

तृतीयेश, द्वादश भाव में: यदि बली हो तो जातक भार्या के द्वारा धनवान बनता है। यदि निर्बली हो तो भाइयों एवं पिता के द्वारा भारी हानि उठाता है और स्वयं भी क्रूर हृदय होता है।

तृतीय भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम

सूर्यः चमत्कार चिन्तामणी के अनुसार तृतीय भाव में स्थित सूर्य वाला जातक स्वस्थ, धनवान और बुद्धिमान होता है। वह प्रसिद्ध, मौलिक, दयालु एवं राजा के समान होता है। पुरुष राशि का सूर्य जातक को शान्त, दार्शनिक, विद्धान, सामाजिक, शिक्षा एवं समाज सेवा में अग्रणीय, प्रतिष्ठित संस्थानों का मुखिया और राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति अथवा नगरपालिका का चुनाव लड़ने वाला बनाता है।

मिथुन, तुला अथवा धनु राशि में स्थित सूर्य जातक को लेखक, प्रकाशक, प्राध्यापक या वकील बनाता है। ऐसा जातक बौधिक रुप से प्रखर और अपने घर एवं सन्तान के प्रति आसक्त होता है। स्त्री राशियों में स्थित होने पर यह भाई-बहन देता है, जातक के पास धन-सम्पति, मानसिक शान्ति एवं वाहन होता है और यह स्थिति सन्तति के लिए भी शुभ होती है। डा. रमण के अनुसार सूर्य के लिए कुण्डली में सर्वोत्तम स्थान, तृतीय भाव ही होता है।

चन्द्रमाः बली चन्द्रमा ज्ञान के प्रति प्रेम, बौधिक व्यवसायों में सफलता और परिवर्तनशील परिस्थतियां देता है। यदि उच्च का हो तो जातक भाई-बहनों की देखभाल करता है, साहसी, सदा प्रसन्न रहने वाला और शिक्षा, वस्त्रों एवं भोजन के प्रति आसक्त होता है। शुभ ग्रहों की राशियों में होने पर जातक चिन्तामुक्त, धनवान, धैर्यवान, भगवान से डरने वाली भार्या का दयालु पति, छोटी-बड़ी यात्राओं में अनुरक्त एवं वास्तुशिल्पी होता है और यह जातक के भाइयों की समृद्धि के लिए भी शुभ होता है।

भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार तृतीय भाव में स्थित चन्द्रमा जातक को अस्थिर मानसिकता वाला बनाता है।

यदि पीड़ित हो तो परिवार में कलह और सुन्दर स्त्रियों से अनुचित सम्बन्ध देता है। ऐसा जातक श्वास सम्बन्धित दोषों से पीड़ित होता है और कंजूस, क्रूर, निष्क्रिय एवं असावधान होता है। यदि अशुभ ग्रहों की राशि में हो तो जातक अधिक बातें करने वाला, भाइयों की हानि करने वाला, पित्त रोगों से परेशान, चिड़चिड़ा, भोजन के स्वाद से अभिग्न, भाग्यहीन एवं यात्राओं में दुर्घटनायें झेलने वाला होता है और उसकी बहन विधवा होती है।

मंगलः ऐसा जातक भाइयों में सबसे बड़ा या सबसे छोटा होता है। अधिकतर मामलों में, विशेषकर यदि अष्टकवर्ग में तृतीय भाव पांच या अधिक बिन्दुओं के साथ हो तो जातक के छोटे भाई नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए जवाहर लाल नेहरु की

कुण्डली का अवलोकन करें। इनकी कुण्डली में मंगल, तृतीय भाव में 6 बिन्दुओं के साथ स्थित है। इनका कोई छोटा भाई नहीं था।

तृतीय भावगत मंगल जातक को साहस, आगे बढ़ने की हिम्मत और विपरीत परिस्थितियों से उबर कर निकलने की क्षमता प्रदान करता है। यद्यपि ऐसा मंगल छोटे भाई-बहनों होने की आशा को हानि पहुंचायेगा लेकिन तृतीयेश के साथ तृतीय भाव में स्थित होने पर यह छोटे भाई-बहनों की मृत्यु का कारण नहीं बनता है।

यह बाजुओं में ताकत, परिश्रम द्वारा धन-सम्पति संग्रहित करने की क्षमता, धार्मिक रिवाजों का निभाने एवं आध्यात्मिकता का आचरण भी देता है। ऐसा जातक सुन्दर एवं स्वस्थ देह का स्वामी लेकिन पतला-दुबला, विवेकशील, शौर्यवान एवं उद्योगी और शासक से अनुग्रहीत होता है।

यदि उच्च का हो तो जातक को भाग्यशाली और श्रृगांररस का प्रेमी बनाता है। यदि उच्च का हो अथवा स्वगृही हो तो जातक संयमी, शूरवीर और युद्ध में साहस का परिचय देने वाला होता है। यदि मित्र की राशि में अशुभ ग्रह के साथ हो तो जातक संयमी होता है।

वृश्चिक राशिगत मंगल कम धनदायक होता है क्योंकि कालपुरुष की कुण्डली में अष्टम भाव की राशि में होने के कारण यह अष्टम भाव से सम्बन्धित दरिद्रता की वृद्धि करता है। चूंकि तृतीय भाव, अष्टम से अष्टम भाव होता है अतः आयुर्दाय को भी इंगित करता है। यदि मंगल, बुध के साथ पीड़ित हो तो अल्पायु देता है।

यदि नीच का हो तो जातक प्रचुर मात्र में समृद्ध होने के उपरान्त भी प्रत्येक चीज के लिए तरसता रहता है और मित्रविहीन, परिवार विहीन एवं असन्तोषी होता है।

यदि मंगल पीड़ित हो तो जातक में आत्महत्या की प्रवृति का विकास करता है। ऐसा जातक हड्डियों के टूटने और रक्त सम्बन्धित विकारों से पीड़ित रहता है। यदि राहु से सम्बन्धित हो तो भार्या से अलग, दूसरी स्त्रियों से संभोग करने वाला, वेश्यावृति को अपनाने वाला एवं भाइयों से जालसाजी करने वाला होता है और जातक के भाई भी मृत्यु को प्राप्त होते हैं। यह यात्राओं में दुर्घटनाओं से भय और पड़ोसियों से परेशानियां भी इंगित करता है।

बुधः यदि बुध बली हो तो अच्छी शिक्षा, तीक्ष्ण स्मरणशक्ति, लेखन-छपाई या प्रकाशन से लाभ, विज्ञान के विभिन्न विषयों एवं साहित्यों का ज्ञान, बोलने एवं लिखने के प्रति अनुरक्ति और चुस्त-दुरस्त एवं प्रसन्न रहने वाला स्वभाव देता है। यदि

तृतीय भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम

सूर्यः चमत्कार चिन्तामणी के अनुसार तृतीय भाव में स्थित सूर्य वाला जातक स्वस्थ, धनवान और बुद्धिमान होता है। वह प्रसिद्ध, मौलिक, दयालु एवं राजा के समान होता है। पुरुष राशि का सूर्य जातक को शान्त, दार्शनिक, विद्धान, सामाजिक, शिक्षा एवं समाज सेवा में अग्रणीय, प्रतिष्ठित संस्थानों का मुखिया और राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति अथवा नगरपालिका का चुनाव लड़ने वाला बनाता है।

मिथुन, तुला अथवा धनु राशि में स्थित सूर्य जातक को लेखक, प्रकाशक, प्राध्यापक या वकील बनाता है। ऐसा जातक बौधिक रुप से प्रखर और अपने घर एवं सन्तान के प्रति आसक्त होता है। स्त्री राशियों में स्थित होने पर यह भाई-बहन देता है, जातक के पास धन-सम्पति, मानसिक शान्ति एवं वाहन होता है और यह स्थिति सन्तति के लिए भी शुभ होती है। डा. रमण के अनुसार सूर्य के लिए कुण्डली में सर्वोत्तम स्थान, तृतीय भाव ही होता है।

चन्द्रमाः बली चन्द्रमा ज्ञान के प्रति प्रेम, बौधिक व्यवसायों में सफलता और परिवर्तनशील परिस्थतियां देता है। यदि उच्च का हो तो जातक भाई-बहनों की देखभाल करता है, साहसी, सदा प्रसन्न रहने वाला और शिक्षा, वस्त्रों एवं भोजन के प्रति आसक्त होता है। शुभ ग्रहों की राशियों में होने पर जातक चिन्तामुक्त, धनवान, धैर्यवान, भगवान से डरने वाली भार्या का दयालु पति, छोटी-बड़ी यात्राओं में अनुरक्त एवं वास्तुशिल्पी होता है और यह जातक के भाइयों की समृद्धि के लिए भी शुभ होता है।

भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार तृतीय भाव में स्थित चन्द्रमा जातक को अस्थिर मानसिकता वाला बनाता है।

यदि पीड़ित हो तो परिवार में कलह और सुन्दर स्त्रियों से अनुचित सम्बन्ध देता है। ऐसा जातक श्वास सम्बन्धित दोषों से पीड़ित होता है और कंजूस, क्रूर, निष्क्रिय एवं असावधान होता है। यदि अशुभ ग्रहों की राशि में हो तो जातक अधिक बातें करने वाला, भाइयों की हानि करने वाला, पित्त रोगों से परेशान, चिड़चिड़ा, भोजन के स्वाद से अभिग्न, भाग्यहीन एवं यात्राओं में दुर्घटनायें झेलने वाला होता है और उसकी बहन विधवा होती है।

मंगलः ऐसा जातक भाइयों में सबसे बड़ा या सबसे छोटा होता है। अधिकतर मामलों में, विशेषकर यदि अष्टकवर्ग में तृतीय भाव पांच या अधिक बिन्दुओं के साथ हो तो जातक के छोटे भाई नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए जवाहर लाल नेहरु की

कुण्डली का अवलोकन करें। इनकी कुण्डली में मंगल, तृतीय भाव में 6 बिन्दुओं के साथ स्थित है। इनका कोई छोटा भाई नहीं था।

तृतीय भावगत मंगल जातक को साहस, आगे बढ़ने की हिम्मत और विपरीत परिस्थितियों से उबर कर निकलने की क्षमता प्रदान करता है। यद्यपि ऐसा मंगल छोटे भाई-बहनों होने की आशा को हानि पहुंचायेगा लेकिन तृतीयेश के साथ तृतीय भाव में स्थित होने पर यह छोटे भाई-बहनों की मृत्यु का कारण नहीं बनता है।

यह बाजुओं में ताकत, परिश्रम द्वारा धन-सम्पति संग्रहित करने की क्षमता, धार्मिक रिवाजों का निभाने एवं आध्यात्मिकता का आचरण भी देता है। ऐसा जातक सुन्दर एवं स्वस्थ देह का स्वामी लेकिन पतला-दुबला, विवेकशील, शौर्यवान एवं उद्योगी और शासक से अनुग्रहीत होता है।

यदि उच्च का हो तो जातक को भाग्यशाली और श्रृगांररस का प्रेमी बनाता है। यदि उच्च का हो अथवा स्वगृही हो तो जातक संयमी, शूरवीर और युद्ध में साहस का परिचय देने वाला होता है। यदि मित्र की राशि में अशुभ ग्रह के साथ हो तो जातक संयमी होता है।

वृश्चिक राशिगत मंगल कम धनदायक होता है क्योंकि कालपुरुष की कुण्डली में अष्टम भाव की राशि में होने के कारण यह अष्टम भाव से सम्बन्धित दरिद्रता की वृद्धि करता है। चूंकि तृतीय भाव, अष्टम से अष्टम भाव होता है अतः आयुर्दाय को भी इंगित करता है। यदि मंगल, बुध के साथ पीड़ित हो तो अल्पायु देता है।

यदि नीच का हो तो जातक प्रचुर मात्र में समृद्ध होने के उपरान्त भी प्रत्येक चीज के लिए तरसता रहता है और मित्रविहीन, परिवार विहीन एवं असन्तोषी होता है।

यदि मंगल पीड़ित हो तो जातक में आत्महत्या की प्रवृति का विकास करता है। ऐसा जातक हड्डियों के टूटने और रक्त सम्बन्धित विकारों से पीड़ित रहता है। यदि राहु से सम्बन्धित हो तो भार्या से अलग, दूसरी स्त्रियों से संभोग करने वाला, वेश्यावृति को अपनाने वाला एवं भाइयों से जालसाजी करने वाला होता है और जातक के भाई भी मृत्यु को प्राप्त होते हैं। यह यात्राओं में दुर्घटनाओं से भय और पड़ोसियों से परेशानियां भी इंगित करता है।

बुधः यदि बुध बली हो तो अच्छी शिक्षा, तीक्ष्ण स्मरणशक्ति, लेखन-छपाई या प्रकाशन से लाभ, विज्ञान के विभिन्न विषयों एवं साहित्यों का ज्ञान, बोलने एवं लिखने के प्रति अनुरक्ति और चुस्त-दुरस्त एवं प्रसन्न रहने वाला स्वभाव देता है। यदि

शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक कल्पनाशील, हंसी-मजाक पसन्द करने वाला, कविता एवं रहस्य से सम्बन्धित, उच्च शिक्षा के प्रति अनुरक्त, विचारयुक्त, गुणदोष विवेचक और गणितज्ञ एवं वैज्ञानिक गुणों से युक्त होता है।

यदि बुध निर्बली होकर तृतीय भाव में स्थित हो तो जातक को मितव्ययी, विचारशून्य, रहस्यमय, उद्विग्न एवं चिन्तामय, हानिकारक प्रयासों का मूर्खता पूर्ण अनुशरण करने वाला, शीघ्रता करने वाला, छल करने वाला, बेईमान और भ्रमित चित्त वाला बनाता है तथा मानसिक पीड़ा देता है। समझौते और व्यापार के संदर्भ में यात्राओं में समस्यायें उत्पन्न करता है तथा आनन्द एवं सूचना विहीन बनाता है।

बृहस्पतिः यदि बृहस्पति अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि अथवा स्वराशि में हो तो जातक धनवान होता है। अन्य राशियों का बृहस्पति, जातक को मितव्ययी और दरिद्र बनाता है। यह स्थिति शिक्षण अथवा अध्यापन के व्यवसाय के लिए शुभ होती है। जातक का बड़ा भाई होता है लेकिन बहन नहीं होती है।

बृहस्पति के बली होने से प्रत्येक प्रयास में सफलता मिलती है और जातक आशावादी, सुसंस्कृत, दयालु, धार्मिक, दार्शनिक, अच्छे मित्रों वाला, निष्कपट, और लिखने एवं बोलने में विनम्र शैली का प्रयोग करने वाला होता है। ऐसा जातक शिक्षा, साहित्य, प्रकाशन, मित्रों और बन्धु-बान्धवों से लाभान्वित होता है। सूर्य, चन्द्रमा अथवा बुध का प्रभाव इन गुणों में वृद्धि करता है यद्यपि बृहस्पति अकेला ही दिमागी आन्तरिक शक्ति के लिए शुभ होता है। यदि अग्नि तत्व राशियों में हो तो सामाजिक कार्यों में सफलता मिलती है, पृथ्वी तत्व राशियों में व्यापार, वाणिज्य एवं शेयर बाजार से लाभ देता है, वायु तत्व राशियों में बौधिक अनुशरण द्वारा और जल तत्व राशियों में समुद्री यात्राओं द्वारा लाभ देता है।

यदि निर्बली हो तो जातक कृतघ्न मित्रों वाला, स्वयं भी कृतघ्न, कम लाभ पाने वाला, मितव्ययी, अपशय पाने वाला, नीच कृपण, व्यसनी, धूर्त, भार्या एवं सन्तान से प्रेम न करने वाला, इच्छाविहीन, अस्थिर, विषादपूर्ण, आलसी और दुर्बल होता है। ऐसा जातक समुद्री यात्रायें और अत्याधिक स्थल यात्रायें करने वाला भी होता है।

शुक्रः तृतीय भावस्थ शुक्र विवाह के लिए शुभ नहीं होता है। यह विवाह में विलम्ब, तनाव, एक से अधिक विवाह, अन्तर्जातीय विवाह और वियोग को इंगित करता है। यदि पीड़ित हो तो जातक धूर्त एवं स्वादहीन होता है, व्यवसाय में हानि उठाता है और उसकी कई बहनें होती हैं।

यदि बली हो तो जातक को उच्च विकसित सौन्दर्य का पारखी, कलाकृतियों,

संगीत एवं साहित्य के प्रति आसक्त और परिपक्व, उत्तम एवं शान्त दिमाग वाला बनाता है। चन्द्रमा एवं बुध का सम्बन्ध जातक को दोषमुक्त बनाने की ओर अग्रसर करता है। ऐसा जातक आनन्द के लिए की गई यात्राओं से लाभ पाता है और मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों से हमेशा घिरा रहता है।

शनिः जातक की छोटी बहन होती है। यदि बली हो तो उत्तरदायित्व, व्यवहार कुशल, राजनीतिक चतुराई, चिन्तन-मनन एवं मन को एकाग्रचित्त करने की शक्ति, दर्शनशास्त्र में रुचि, लेखन और अध्ययन देता है। यदि उच्च अथवा स्वराशि का हो तो भाइयां को लाभ देता है।

यदि निर्बली अथवा दुर्स्थित हो तो गहरा वर्ण, भाइयों की हानि और मानसिक उत्पीडन देता है। अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो तो भाइयों के मध्य कलह देता है और जातक को धूर्त, असन्तोषी, निर्दयी एवं कृतघ्न बनाता है तथा किसी भी सफलता को प्राप्त करने में अत्याधिक रुकावटें उत्पन्न करता है। ऐसा जातक आलसी, कामचोर और नास्तिक भी होता है।

राहुः परिवार में सबसे बड़ा या सबसे छोटा अथवा अपने लिंग में सबसे बड़ा या सबसे छोटा। शेर के समान बली, साहसी, वीर, भाग्यशाली एवं धनवान व्यक्ति, जो मित्रों से युक्त होता है और यात्रायें करता है। उच्च राशि अथवा स्वगृही राहु अनुकूल परिणाम देता है और तृतीय भाव में सिंहस्थ राहु प्रभावशाली व्यक्तित्व को इंगित करता है। अच्छा भाग्य और पड़ोसियों के साथ अच्छे समझोतों, यात्राओं, लेखन अथवा प्रकाशन में सफलता।

केतुः स्वगृही अथवा उच्च का अत्याधिक खुशियां प्रदान करता है और जातक धनवान, विषयासक्त एवं तीक्ष्ण होता है। अपने शत्रुओं का नाश करता है और कार्यदक्ष, दीर्घायु, प्रसिद्ध, भाग्यशाली साथी एवं स्वादिष्ट भोजन करने वाला होता है।

निर्बली केतु खुशियों को हानि पहुंचाता है, भय देता है और मित्रों एवं दूसरी स्त्रियों के प्रति आसक्ति द्वारा हानि देता है। नीच का केतु मानसिक अवसाद, भाइयों एवे पड़ोसियों से परेशानियां, लाभविहीन यात्रायें आदि देता है।

तृतीय भाव में चन्द्रमा और शुक्र की युति

यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक आलीशान सुख-सुविधा युक्त घरों में कीमती बर्तनों में भोजन का सुख प्राप्त करता है। यह युति कलात्मक गुणों की वृद्धि के लिए भी अत्यन्त अनुकूल है।

कारकः

छोटे भाई-बहनों एवं तृतीय भाव का कारक ग्रह, मंगल है। यदि मंगल जन्म कुण्डली या नवांश में नीच राशि का होता है अथवा षष्टियांश में अशुभ ग्रह की राशि में स्थित हो या अशुभ ग्रहों से युति में हो तो यह छोटे भाई-बहनों के लिए शुभ नहीं होता है।

सर्वाथ चिन्तामणी के मतानुसार यदि मंगल अशुभ ग्रहों से युति करे तो जातक के मृत भाई-बहनों का जन्म होता है। यद्यपि यदि मंगल शुभ ग्रहों से भी दृष्ट हो तो यह भविष्यकथन नहीं कहना चाहिए।

भाई-बहनों की अल्पायु में मृत्यु के योगः

1. तृतीय भाव पापकर्तरी योग में हो।
2. तृतीयेश, नवांश में नीच का हो और तृतीय भाव एवं भावेश पर कोई शुभ दृष्टि न हो।
3. तृतीयेश के नवांश का स्वामी अस्त हो, अष्टम में नीच का हो।
4. तृतीयेश, तृतीय भाव, अशुभ ग्रहों से दृष्ट और अशुभ षष्टियांश में हो।
5. तृतीयेश अथवा कारक मंगल चाहे उच्च के ही क्यों न हो लेकिन इनका अशुभ स्थान में अशुभ ग्रहों से पीड़ित होना भाई-बहनों के दीर्घायु होने के लिए शुभ नहीं है।

तृतीयेश की दशा के परिणामः

यदि तृतीयेश अशुभ ग्रह होकर, अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो तृतीयेश की महादशा एवं अशुभ ग्रहों की अन्तरदशा में आग, चोरों एवं शासन से भय होता है और दिमागी जड़ता, भाइयों की हानि एवं उनके साथ सम्बन्धों में दरार पैदा होती है।

यदि तृतीयेश सुस्थित हो तो जीवन उच्चता की ओर बढ़ता है, शासन से सम्मान मिलता है और कलात्मक क्षेत्रों, खेलों आदि में प्राप्तियां होती हैं।

शूरवीरः

1. यदि तृतीयेश उच्च का हो और बली होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातकं सहनशील, शूरवीर और समझदार होगा।
2. शुभ ग्रह के नवांश और शुभ ग्रहों की युति में स्थित तृतीयेश, जातक को पराक्रमी एवं साहसी बनाता है।
3. तृतीय भाव का कारक मंगल यदि शुभ राशी में बैठा हो तो जातक को पराक्रम एवं साहस देता है।
4. तृतीयेश गोपुरांश, सिंहासनांश, पारावतांश अथवा मृदुआंश में शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो।

भाइयों का जन्मः

चूंकि छोटे भाई-बहनों के जन्म का मुख्यरुप से तृतीय भाव से सम्बन्ध है, अतः उन योगों की चर्चा करते हैं जो छोटे भाई-बहनों का जन्म होने के लिए अनुकूल अथवा प्रतिकूल होते हैं:

छोटे भाई-बहनों के जन्म के लिए अनुकूल योगः

1. तृतीय भाव में शुभ ग्रह, शुभ ग्रहों से दृष्ट और बली तृतीयेश।
2. तृतीयेश एवं कारक मंगल शुभ ग्रहों की युति और दृष्टि से प्रभावित।
3. तृतीयेश एवं मंगल उच्च राशि, मित्रराशि एवं स्ववर्गों का होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो कई भाई-बहनों का जन्म होता है।
4. मंगल तृतीय भाव में शुभ ग्रहों के साथ।
5. तृतीय भाव एवं तृतीयेश सुस्थित अथवा शुभ ग्रहों की युति में। सुस्थित का अर्थ है कि कुण्डली के शुभ भाव में एवं शुभ ग्रहों के साथ।

यदि तृतीयेश, तृतीय भाव और कारक मंगल शुभ ग्रहों के प्रभाव में होकर बली हों तो जातक के भाई-बहन अपने जीवन में अच्छी उन्नति एवं समृद्धि प्राप्त करते हैं।

छोटे भाई-बहनों के जन्म के लिए प्रतिकूल योगः

1. तृतीयेश एवं कारक मंगल, अष्टम भाव में अशुभ ग्रहों से दृष्ट।
2. तृतीयेश एवं कारक मंगल नवांश में अपनी नीच राशियों में अशुभ ग्रहों से युत और अशुभ ग्रहों के षष्टियांश में। छोटे भाई-बहनों का जन्म तो होता है लेकिन वे अल्पायु होते हैं।
3. तृतीय भाव अशुभ ग्रहों के मध्य अर्थात पापकर्तरी योग में, अशुभ ग्रहों से दृष्ट अथवा नीच के ग्रहों से युत और शुभ ग्रहों के प्रभाव से रिक्त।
4. तृतीय भाव में अशुभ ग्रह अथवा तृतीय भाव अशुभ ग्रहों से दृष्ट और तृतीयेश पापकर्तरी योग में।
5. तृतीय भाव अशुभ ग्रहों से दृष्ट, तृतीयेश अशुभ षष्टियांश में होकर तृतीय भाव में।
6. तृतीयेश के नवांश का स्वामी नीच राशि में, ग्रहण से पीड़ित अथवा शत्रु राशि में।
7. तृतीयेश एवं कारक मंगल 6, 8 या 12वें भाव में अशुभ ग्रहों से दृष्ट। यदि तृतीयेश उच्च का भी हो तो भी भाइयों का नाश होता है।
8. तृतीय भाव, तृतीयेश एवं मंगल अशुभ ग्रहों के साथ। यदि अशुभ प्रभाव अधिक न हो तो लम्बे अन्तराल के पश्चात भाई-बहन का जन्म होता है।
9. अष्टकवर्ग के नियमानुसार यदि मंगल 3, 6, 8, 11 या 12वें भाव में 6 या 6 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो जातक के छोटे भाई-बहन को नहीं होने देता। यदि यह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यह भविष्यकथन नहीं कहना चाहिए।

भाइयों की संख्याः

1. सर्वाथ चिन्तामणी के मतानुसार भाइयों की संख्या को तृतीय भाव की राशि एवं तृतीय भाव के नवांश के साथ-साथ तृतीयेश की स्थिति के अनुसार ज्ञात किया जा सकता है।
2. अधिक सटीक परिणामों प्राप्त करने के लिए तृतीय भाव एवं तृतीयेश का द्रेष्कोण में अध्ययन करना चाहिए।

3. तृतीयेश अथवा मंगल की नवांश संख्या द्वारा भी भाइयों की संख्या ज्ञात की जा सकती है।

4. तृतीयेश एवं मंगल में से जो अधिक बली हो वह ही अधिक सटीक परिणाम देता है।

अष्टकवर्ग के अनुसार भाइयों की संख्याः

मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में, मंगल से तृतीय भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या से जातक के भाई-बहनों की संख्या का ज्ञान होता है लेकिन इस संख्या में शत्रु ग्रहों एवं नीच ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं को नहीं गिना जाता है। बिन्दुओं की शेष संख्या जातक के भाई-बहनों की संख्या को इंगित करेगी। पुरुष ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु भाईयों की संख्या को और स्त्री ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु बहनों की संख्या को बताते हैं।

मतान्तर से मंगल से तृतीय भाव में तृतीयेश से सम्बन्धित ग्रहों के द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं की संख्या के बराबर जातक के भाइयों की संख्या होगी।

अनुजों के लिंग का ज्ञानः

1. यदि तृतीय भाव, तृतीयेश और मंगल, विषम राशियों के नवांश में हों और पुरुष ग्रहों (सूर्य, मंगल एवं बृहस्पति) के द्वारा दृष्ट हों तो जातक के भाई का जन्म होता है।

2. यदि तृतीय भाव, तृतीयेश और मंगल, सम राशियों के नवांश में हों और स्त्री ग्रहों (चन्द्रमा, शुक्र, बुध एवं शनि) के द्वारा दृष्ट हों तो जातक की बहन का जन्म होता है।

भाइयों से सम्बन्धः यदि लग्नेश एवं तृतीयेश एक-दूसरे के मित्र हों तो जातक के अपने भाइयों से मित्रता वाले सम्बन्ध होते हैं। अन्य स्थितियों में विपरीत परिणाम प्राप्त होते हैं।

अष्टकवर्गानुसार भाइयों का समृद्धि कालः

मंगल के अष्टकवर्ग में, मंगल से तृतीय भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को मंगल के शोध्य पिण्ड से गुना करें। प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग

देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, राशि विशेष की संख्या को दर्शाती है। उस राशि विशेष पर जब-जब बृहस्पति गोचरवश भ्रमण करता है तो वह समय विशेष जातक के भाइयों की समृद्धि एवं उन्नति के लिए शुभ समय होता है।

इस समय विशेष में जातक के किस भाई की समृद्धि एवं उन्नति होगी, इस बारे में कहना कठिन है, अतः इसका निर्णय करने के लिए जातक के भाइयों की जन्मपत्रिकाओं की विवेचना करनी चाहिए।

अष्टकवर्गानुसार भाइयों का मृत्यु अथवा रोग का समय:

1. मंगल के अष्टकवर्ग में, मंगल से तृतीय भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को मंगल के शोध्य पिण्ड से गुना करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। (कभी-कभी शनि के नक्षत्र से आगे, संख्या के बराबर नक्षत्र गिना जाता है) उस नक्षत्र अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर जब-जब शनि गोचर में भ्रमण करता है तो वह समय विशेष जातक के भाइयों के लिए शुभ समय नहीं होता है।

2. मंगल के अष्टकवर्ग में, बृहस्पति से सप्तम भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को मंगल के शोध्य पिण्ड से गुना करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। उस नक्षत्र पर अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर जब-जब बृहस्पति गोचरवश भ्रमण करता है तो वह समय विशेष जातक के भाइयों के लिए शुभ समय नहीं होता है। मतान्तर से, जन्मपत्रिका में बृहस्पति की स्थिति से, शेषफल की संख्या के समान भाव में स्थित राशि एवं उस राशि से त्रिकोण की राशि में बृहस्पति का गोचर भाइयों के लिए शुभ नहीं माना जाता है।

3. यदि उपरोक्त विधि से प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग देकर शेषफल प्राप्त करते हैं तो शेषफल की संख्या राशि की संख्या को इंगित करेगी। इस राशि और इससे त्रिकोण की राशियों में बृहस्पति एवं सूर्य का गोचर भाइयों के लिए शुभ नहीं होता है।

मानसिक स्थिति की विवेचना:

यदि तृतीयेश कुण्डली में सूर्य से युति करे तो - जातक को शूरवीर बनाता है।

यदि तृतीयेश कुण्डली में चन्द्रमा से युति करे तो - जातक को धैर्यवान एवं सहनशील बनाता है।

यदि तृतीयेश कुण्डली में मंगल से युति करे तो - जातक को गहरे रंग का, मूढ़ और रोषपूर्ण बनाता है।

यदि तृतीयेश कुण्डली में बुध से युति करे तो - जातक को सात्विक विचारधारा वाला एवं चिन्तनशील बनाता है।

यदि तृतीयेश कुण्डली में बृहस्पति से युति करे तो - जातक को अच्छी समझ युक्त वीर बनाता है।

यदि तृतीयेश कुण्डली में शुक्र से युति करे तो - जातक को कामासक्त बनाता है।

यदि तृतीयेश कुण्डली में शनि से युति करे तो - जातक को मूढ़मति बनाता' है।

यदि तृतीयेश कुण्डली में राहु-केतु अथवा मांदी से युति करे तो - जातक को कागजी शेर अर्थात दिखावटी वीर बनाता है।

भय के स्रोत:

1. बृहस्पति और तृतीयेश लग्न में - पशुओं से भय। यदि जल तत्व राशि में हो तो पानी से भय।
2. राहु, राहु का राशीश और तृतीयेश लग्न में -सांप द्वारा काटे जाने का भय। आधुनिक संदर्भ में इसके लिए यह कहा जा सकता है कि जहर अथवा अनुचित औषधी खाने से भय।
3. तृतीयेश की बुध के साथ युति - गले से सम्बन्धित बिमारी से भय।
4. तृतीय भाव में नीच अथवा शत्रु राशि अथवा ग्रहण में ग्रह - सांप द्वारा काटे जाने का भय। आधुनिक संदर्भ में इसके लिए यह कहा जा सकता है कि जहर अथवा अनुचित औषधी खाने से भय।

अध्याय 5

चतुर्थ भाव
(विद्या, सुख, माता, चल-अचल सम्पति, वाहन)

कुण्डली में चतुर्थ भाव से विचारणीय विषय निम्नलिखित हैं:

1. माता,
2. भवन, मकान, भू-सम्पति और पैतृक सम्पति,
3. विद्या,
4. वाहन,
5. सामान्य खुशहाली -मानसिक शान्ति, सुखस्थान,
6. मित्र, संगति आदि, यदि चतुर्थेश पाप कर्तरी योग में हो तो कुसंगति,
7. छाती, श्वसन प्रक्रिया,
8. सम्बन्धी,
9. सुख-सुविधायें,
10. गुप्त अथवा संरक्षित धन और वस्त्र,
11. प्रारंभिक जीवन और वातावरण।
12. श्री के. एन. राव की पुस्तक "अप्स एण्ड डाउन" के अनुसार, चतुर्थ भाव राजनीतिक जीवनवृत्ति का भाव भी है।

भाव का सामान्य विश्लेषण करने के स्रोतः

1. भाव।
2. भावेश अर्थात चतुर्थेश।
3. कारक।
4. भाव में स्थित अथवा भाव को दृष्ट करने वाले ग्रह।

भावः कुण्डली के दशम भाव की भान्ति चतुर्थ भाव भी बहुत महत्वपूर्ण भाव है। यह कुण्डली का वह आधार स्तम्भ है जिस पर जीवन में प्राप्त होने वाली शान्ति एवं खुशहाली, विद्या और चरित्र निर्भर है। यह प्रारंभिक बाल्यावस्था और सुखी वैवाहिक जीवन को भी दर्शाता है।

पीड़ित चतुर्थ भाव जातक को क्रोधी, शीघ्र विवेक खोने वाला, पाषाण हृदय और कामासक्त बनाता है।

जातक पारिजात के मतानुसार यदि चतुर्थ भाव में स्थित ग्रह पीड़ित हों अथवा ग्रहण के द्वारा ग्रसित हों तो जातक कुएं अथवा जलाशय में गिर सकता है। चतुर्थ भाव में स्थित अशुभ ग्रह भाग्यहीनता देते हैं।

भावेशः केन्द्र में स्थित चतुर्थेश और नवमेश, बृहस्पति से दृष्ट होने पर शासन की अनुकम्पा प्रदान करता है। भावार्थ कुतुहलम् के मतानुसार यदि लग्नेश, चतुर्थेश से युति करके चतुर्थ भाव में स्थित हो तो जातक एक विशाल घर प्राप्त करता है।

विभिन्न भावों में स्थित चतुर्थेश के परिणाम

चतुर्थेश, प्रथम भाव में: यदि चतुर्थेश लग्न में हो तो जातक सभी प्रकार के सुख पाता है। जातक अपनी माता से भू-सम्पति, वाहन, धन एवं खुशियां प्राप्त करेगा और सुशिक्षित एवं बुद्धिमान होगा। प्राप्त होने वाली खुशियों की सीमा चतुर्थेश कि बलानुसार होती है।

यदि चतुर्थेश बली हो तो जातक का जन्म धनाढय परिवार में होता है, यदि मध्यम बली हो तो मध्यवर्ग के परिवार में जन्म होता है और यदि निर्बली हो तो जातक का जन्म दरिद्र परिवार में होता है अथवा उसकी प्रारंभिक बाल्यावस्था में व्याकुलता होगी।

चतुर्थेश, द्वितीय भाव में: जातक धनवान होता है और अपनी माता एवं सगे-सम्बन्धियों से अत्याधिक आनन्द प्राप्त करता है। यदि निर्बली या दुर्स्थित हो तो विपरीत परिणाम होते हैं।

चतुर्थेश, तृतीय भाव में: यदि चतुर्थेश बली हो तो जातक स्वप्रयासों से ऐश्वर्य एवं धन-सम्पन्नता प्राप्त करता है और ऐसा व्यक्ति चरित्रवान भी होता है। लेकिन तृतीय भाव, चतुर्थ से द्वादश भाव भी होता है, अतः चतुर्थेश की अपने से द्वादश भाव की स्थिति अधिक शुभ नहीं होती है। ऐसा जातक चिन्ताकुल दिमाग वाला होता है और उसके व्यवसाय में अस्थिरता बनी रहती है। उसकी प्राप्तियां अधिक नहीं होती हैं अतः उसके पास संरक्षित धन नहीं होता है।

चतुर्थेश, चतुर्थ भाव में: यह चतुर्थेश की एक शुभ स्थिति है। ऐसा जातक सभी प्रकार के आनन्द प्राप्त करता है। वह बुद्धिमान, भाग्यवान, चतुर, शिक्षित और अच्छे चरित्र वाला होता है। वह खुशहाल होगा, सम्मानित जीवन यापन करेगा और माता, भू-सम्पति एवं वाहन का सुख प्राप्त करेगा। ऐसा जातक एक कृषक के रुप में भी अत्याधिक सफल होता है।

फलदीपिका के अनुसार यदि चतुर्थ भावस्थ चतुर्थेश, अस्त या नीच का न हो तो जातक एक राजा के समान जीवन जीता है और उसके पास सभी प्रकार की सम्पति एवं सुख-सुविधाओं के साधन होते हैं। यदि चतुर्थ भाव में स्थित चतुर्थेश, शनि एवं राहु के साथ युति में हो तो जातक प्राचीन और जीण-क्षीण घर में वास करता है।

चतुर्थेश, पंचम भाव में: यह पुनः केन्द्र एवं त्रिकोण का एक शुभ सम्बन्ध है। ऐसा जातक उच्च शिक्षा प्राप्त एक तीक्ष्ण बुद्धिवाला व्यक्ति होता है। वह कई मकानों एवं भूमि का स्वामी होकर एक धनवान, दीर्घायु और पारिवारिक संस्कारों से सुसंस्कृत सन्तान वाला व्यक्ति होता है।

चतुर्थेश एवं पंचमेश के मध्य राशि परिवर्तन एक प्रमुख राजयोग है जो जातक को राजनीतिक प्रसिद्धि, उच्च पद, धन, भू-सम्पति और शासकों की अनुकम्पा प्रदान करता है।

चतुर्थेश, षष्टम भाव में: चतुर्थेश के लिए यह स्थिति शुभ नहीं हैं। ऐसा जातक जमीन-जायदाद से सम्बन्धित कलह एवं कानूनी विवाद से पीड़ित होता है। उसकी माता की स्थिति भी अच्छी नहीं होती है। जातक की वाहन, दुर्घटना होने की संभावनायें होती हैं, उसकी शिक्षा में विघ्न उत्पन्न होता है और उसे सदैव मानसिक

पीड़ा बनी रहती है। भावार्थ कौतुहलम् के मतानुसार यदि चतुर्थेश एवं लग्नेश षष्टम भाव में युति करे तो जातक भूमि सम्बन्धित विवाद को निपटाने के लिए न्यायालय का सहारा लेता है।

फलदीपिका के अनुसार यदि चतुर्थेश अशुभ स्थान अर्थात 6, 8 या 12वें भाव में हो अथवा सूर्य एवं मंगल से दृष्ट हो अथवा सूर्य एवं मंगल चतुर्थ भाव में हो तो जातक का घर अग्नि में स्वाह हो जाता है। इस फलितकथन का कारण यह हो सकता है कि सूर्य एवं मंगल, दोनों ही अग्नि तत्व ग्रह हैं।

चतुर्थेश, सप्तम भाव में: जातक आकर्षक और सुन्दर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। जातक का कम आयु में विवाह हो जाता है, भार्या से भू-सम्पति एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है और वह व्यापार में सफल होता है।

चतुर्थेश, अष्टम भाव में: चतुर्थेश की यह स्थिति भी शुभ नहीं होती है। ऐसे जातक को माता एवं सगे-सम्बन्धियों से कोई सुख प्राप्त नहीं होता है। यद्यपि जातक की आर्थिक स्थिति सामान्य स्तर की होती हैं लेकिन उसे कोई गुप्त खजाना भी प्राप्त हो सकता है। सामान्यतः उसकी भू-सम्पति में कानूनी अड़चनें होती हैं और उसके दिमाग में शान्ति का अभाव होता है। यदि चतुर्थेश के साथ लग्नेश भी अष्टम भाव में युति करता है तो भू-सम्पति के विवाद के कारण उसकी शारीरिक क्षति भी हो सकती है।

चतुर्थेश, नवम भाव में: यह पुनः केन्द्र एवं त्रिकोण का पवित्र सम्बन्ध है अतः यह सम्बन्ध राजयोग बनाता है जो जातक के ऐश्वर्य, खुशियों और समृद्धि के लिए अतिशुभ योग है। ऐसा जातक अपने पिता से लाभान्वित होता है।

चतुर्थेश, दशम भाव में: चतुर्थेश की यह एक अन्य शुभ स्थिति है। इस स्थिति में चतुर्थेश, चतुर्थ भाव को दृष्ट करता है जिससे चतुर्थ भाव के नैसर्गिक बल में वृद्धि होती है जो जातक के ऐश्वर्य, खुशियों और समृद्धि के लिए अतिशुभ योग है। जातक की माता दीर्घायु होती है, वह शासन में उच्च पद प्राप्त करता है और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। ऐसा जातक व्यापार में अत्याधिक धन अर्जित करता है।

यदि दशम भाव में स्थित चतुर्थेश सूर्य से पीडित हो तो शासक के रोष के कारण भू-सम्पति की हानि होती है। जातक तत्वम् के मतानुसार यदि दशम भाव में चतुर्थेश, शनि एवं चन्द्रमा से युत हो तो जातक अत्याधिक सुन्दर भवन प्राप्त करता है।

चतुर्थेश, एकादश भाव में: एकादश भाव, चतुर्थ भाव से अष्टम भाव है। अतः यदि चतुर्थेश बली होकर एकादश में स्थित हो तो शुभ होता है, अन्यथा यह स्थिति शुभ नहीं होती है। ऐसा जातक व्यापार में सफल नहीं होता है। यद्यपि ऐसा जातक निराशावादी होता है लेकिन वह अच्छे मित्रों का साथ पाता है।

चतुर्थेश, द्वादश भाव में: द्वादश भाव में चतुर्थेश की स्थिति पुनः एक अशुभ स्थिति होती है। ऐसा जातक अप्रसन्न, अस्वस्थ और असफल व्यक्ति होता है। वह व्यापार में धन की हानि उठाता है और माता-पिता से भी कोई सुख प्राप्त नहीं करता है। जातक पारिजात के अनुसार ऐसी स्थिति में जातक अपनी जन्मभूमि से दूर जाता है। इसका यह अर्थ भी होता है कि जातक विदेशी भूमि में वास करेगा, जो आधुनिक परिवेश में अशुभ नहीं माना जाता है।

चतुर्थ भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम

सूर्यः घुमक्कड़ प्रवृति, मानसिक अशान्ति, चिन्ताजनक, गूढ़ विषय और दार्शनिक। यदि सूर्य एवं मंगल चतुर्थ भाव को दृष्ट करते हैं तो जातक के जीवन में रुकावटें अधिक होती हैं। यदि चतुर्थ भाव में स्थित मंगल एवं सूर्य पीड़ित हों अथवा शत्रु राशि में हो तो जातक के पास अपना घर होने की कोई आशा नहीं होती है।

चन्द्रमाः यदि चतुर्थ भावस्थ चन्द्रमा, बृहस्पति से दृष्ट न हो तो जातक कामासक्त और जीवन का आनन्द उठाने वाला होता है। ऐसा चन्द्रमा जातक को नेता बनाता है और शासन से खुशियां एवं घर दिलाता है। ऐसा जातक विदेशी यात्रायें भी करता है विशेषकर तब, जब चन्द्रमा चर राशि में स्थित होता है। पीड़ित चन्द्रमा माता से अलगाव देता है।

मंगलः यदि राहु-केतु अक्ष में हो तो मानसिक शान्ति नहीं होती है तथा माता, सम्बन्धियों एवं मित्रों से झगड़ा होता है। यद्यपि जातक का अपना घर होता है लेकिन वह मानसिक रुप से खुश नहीं रहता है।

यदि पीड़ित हो तो उसके जीवन में चोरी, कानूनी विवाद, झगड़े, छल-कपट एवं दुखान्त घटनायें होती रहती हैं जिनके द्वारा उसे हानि होती है और वह निराशा से जूझता रहता है।

बुधः जातक विद्वान, शिक्षित, वाहन, संगीत एवं आधुनिक कला सम्पन्न, वाक्पटु, परिहास प्रेमी, मित्रवान, धन-धान्य का भोग प्राप्त करने वाला, सुखी और विदेश की यात्रा करने वाला होता है।

बृहस्पतिः जातक शिक्षित, सुखी, शासक वर्ग की अनुकम्पा प्राप्त करने वाला, धार्मिकता से भाग्योदय वाला, सम्पन्न और सुखी पारिवारिक जीवन वाला होता है। चतुर्थ भाव के बृहस्पति का अर्थ होता है कि जातक की बाल्यावस्था अच्छी थी और उसके चारों ओर खुशियों भरा वातावरण था।

यदि बृहस्पति, चतुर्थेश के साथ युति में होता है तो जातक पशुधन का संग्रह करता है। भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार चतुर्थ भाव में स्थित बृहस्पति दशम को दृष्ट करके जातक को तीर्थयात्रा करता है, अष्टम को दृष्ट करके जातक की सामाजिक निन्दा होने के अवसरों को समाप्त करता है और द्वादश अर्थात मोक्षस्थान को दृष्ट करके मोक्ष को सुनिश्चित करता है।

शुक्रः चतुर्थ भाव में स्थित शुक्र जातक को संगीत, मित्रों, घरों, कला, पारिवारिक शान्ति और खुशियों का स्वाद चखाता है। शुक्र की यह स्थिति कलाकारों के लिए एक अनमोल निधि के समान होती है।

शनिः यदि लग्नेश बली न हो तो यह स्थिति माता के लिए शुभ नहीं होती है। चतुर्थस्थ शनि दुःख का कारण होता है और अकेलेपन की ओर अग्रसर करता है।

मंगल द्वारा पीड़ित होने पर आकस्मिक पतन और अस्वस्थता देता है। राहु-केतु एवं मंगल का सम्बन्ध जातक को, दुखान्त और हिंसा देता है।

राहुः मूर्ख, अल्प मित्र, धोखा और छल-कपट। चतुर्थ भाव का राहु जातक की प्रारम्भिक शिक्षा में भी विघ्न उत्पन्न करता है। स्त्रियों की कुण्डली में वैवाहिक जीवन में असन्तोष देता है और संसारिक भोग-विलास की इच्छायें जाग्रत करता है।

केतुः विदेश से सम्बन्ध देता है, माता, भू-सम्पति एवं खुशियों से वंचित करता है और भाग्यहीन बनाता है। केतु-शनि की युति मानसिक अवसाद और पागलपन देता है।

घर और भू-सम्पति सम्बन्धित योग

द्वितीयेश, चतुर्थेश एवं द्वादशेश की केन्द्र या त्रिकोण की स्थिति घर और भू-सम्पति सम्बन्धित मामलों में सुविधाजनक स्थिति को सुनिश्चित करती है।

लग्न अथवा सप्तम में स्थिति चतुर्थेश, जातक को बिना किसी परेशानी के घर देता है।

चतुर्थेश एवं दशमेश के मध्य राशि परिवर्तन योग भूमि दायक होता है। यदि ये ग्रह अधिक बली हों तो जातक को किसी देश की राजधानी भी दे सकते हैं अर्थात जातक राजा या राजा के समान हो सकता है।

चतुर्थेश एवं षष्टेश के मध्य राशि परिवर्तन योग जातक को शत्रुओं से अपनी भूमि को पुनः प्राप्त कराता है।

यदि बृहस्पति निर्बली हो और चतुर्थ भाव में पापी ग्रह हों तो ऐसा जातक अपने ऐश्वर्य से अप्रसन्नता ही प्राप्त करता है अर्थात वह अपनी धन-सम्पन्नता का आनन्द नहीं ले पाता है।

भू-सम्पति की हानिः

अष्टम भाव में स्थित नीच अथवा पीड़ित चतुर्थेश जातक को भूमि एवं घर से वंचित करता है।

यदि चतुर्थेश, नीच का होकर सूर्य के साथ युति करे तो जातक को शासक अथवा सरकार के आदेशों के कारण भूमि की हानि होती है।

कुण्डली में चतुर्थ भावः

कुण्डली में चतुर्थ भाव बाल्यावस्था में माता, घर, भू-सम्पति और शिक्षा को इंगित करते हुए जातक की परवरिश के तरीके और उसके ऐश्वर्य की चित्रित करता है। एक अच्छा चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश, समृद्धशाली बाल्यावस्था को दर्शाता है। युवावस्था में चतुर्थ एवं सप्तम भाव और इनके भावेशों की स्थिति से वैवाहिक जीवन के सुख का अनुमान लगाया जा सकता है। विवाह के समय और विवाह की गुणवत्ता के विषय को समझाने के लिए श्री के. एन. राव ने अपनी पुस्तक *"एस्ट्रोलॉजी, डेस्टिनी एण्ड द व्हील आफ टाइम"* में एक विशिष्ट उदाहरण दिया है, जिसकी चर्चा हम यहाँ कर रहे हैं।

जब आगे दी गई कुण्डली की जातिका के माता-पिता उसके विवाह की आशा ही छोड़ चुके थे और यह मान चुके थे कि किसी भी स्थिति में उसका विवाह होना संभव नहीं है क्योंकि यह लड़की एक तो अधिक आयु की और मोटी थी, दूसरा यह उच्च शिक्षित भी नहीं थी और तीसरा इसके माता-पिता के पास इतना धन नहीं था कि दहेज देकर कोई रिश्ता कर सकें। जब इसके विवाह एवं विवाहित जीवन के

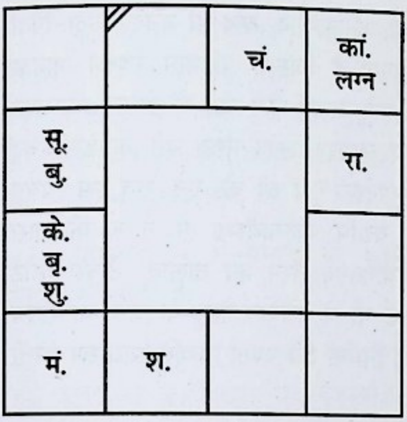

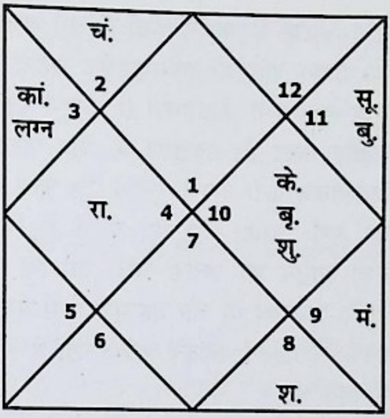

संदर्भ में श्री के. एन. राव से पूछा गया तो श्री राव ने किसी धनाढय व्यक्ति के साथ इसका अतिशीघ्र विवाह होने की भविष्यवाणी करी तो बिल्कुल सटीक सिद्ध हुई।

आइए, अब कुण्डली की विवेचना करते हैं। उस समय इस कन्या की वर्गोत्तम चन्द्रमा की महादशा और लग्नेश मंगल की अन्तर्दशा चल रही थी। अन्तर्दशा नाथ मंगल चतुर्थ भाव में स्थित होकर दशम भाव को दृष्ट करता है। चन्द्रमा, पंचमेश सूर्य और दशमेश एवं एकादशेश शनि से दृष्ट है। बली गज-केसरी योग और बली चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश के कारण इस कन्या का खुशियां एवं भू-सम्पति को प्राप्त करना सुनिश्चित था। इन खुशियों एवं भू-सम्पति को यह अपने माता-पिता के घर में प्राप्त करने में असमर्थ थी और केवल अपने पति के द्वारा ही प्राप्त कर सकती थी। यह भाग्य की ही बात है कि उसी समय उत्तर प्रदेश का धनाढ्य जमीदार परिवार अपने मध्यम आयु के पुत्र हेतु कन्या की तलाश कर रहे था। उनके पुत्र को आधुनिकता में रची-बसी कन्याएं पसन्द नहीं आ रहीं थी। वह साधारण दिखने वाली ऐसी कन्या से विवाह करना चाहता था जो अधिक पढ़ी-लिखी भी न हो। भाग्य ने उन दोनों परिवारों को मिलाया और इस कन्या को सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न उस धनाढ्य जमीदार परिवार में बहु के रुप में जा बिठाया। वर्गोत्तम चतुर्थेश का बल, ऐसा ही अविश्वसनीय शुभ होता है।

महलों जैसे विशाल घरों का स्वामित्व

जैसा कि कहावत है कि *"मुंह में चांदी की चम्मच लेकर पैदा होना"*, कुछ लोग जन्म से ही भाग्यवान होते हैं, और अपने माता-पिता के लिए भी अच्छा भाग्य लेकर आते हैं। प्रकृति भी उन पर सारी खुशियां उढ़ेलती है और वे पूरा जीवन

ऐशो-आराम से व्यतीत करते हैं। ऐसे जातकों के जन्म के बाद ही उनके माता-पिता के जीवन स्तर में अविश्वसनीय उछाल आता है जिसके परिणाम स्वरुप जातक सुख-सुविधाओं के साधनों से परिपूर्ण बड़े-बड़े महलों जैसे घरों में अपना बाल्यपन व्यतीत करते हैं। उदाहरण के लिए पण्डित जवाहर लाल नेहरु की कुण्डली का अवलोकन करें। अपनी पुस्तक *"द नेहरु डायनेस्टी"* में श्री के. एन. राव इस विषय को पूर्ण विस्तार देते हुए कहते हैं कि यद्यपि बाल्यावस्था में नेहरु के पास ऐशो-आराम की प्रत्येक चीज जैसे कि, व्यक्तिगत तैरने का तालाब, टेनिस कोर्ट आदि, उपलब्ध थी और वह पूर्णरुप से सन्तुष्ट भी थे, लेकिन नेहरु के जन्म के समय इनके पिता इतने धनाढ्य व्यक्ति नहीं थे और निर्धनों की बस्ती अर्थात साधारण बस्ती में रहते थे।

श्री राव इसका ज्योतिषीय कारण बताते हुए कहते हैं कि चतुर्थ भाव में तुला राशि में बुध एवं शुक्र होने के कारण, नेहरु का आलीशान महलनुमा बंगलों में रहना उनके भाग्य द्वारा पहले ही सुनिश्चित हो चुका था। जब नेहरु की बुध में शुक्र की दशा चल रही थी तो उनके पिता एक अच्छी बस्ती में रहने चले गए और जब उनकी बुध में राहु (1897-1900) की दशा चल रही थी तो उनका परिवार सुप्रसिद्ध आनन्द भवन में रहने के लिए चला गया। चतुर्थ भाव में स्थित बुध से इस परिवर्तन को आसानी से समझा जा सकता है क्योंकि द्वादशेश का चतुर्थ भाव में होना निवास स्थान के परिवर्तन का योग है। यह राहु की अन्तर्दशा में ही क्यों हुआ, इसको कुण्डली में राहु की स्थित द्वारा आसानी से समझा जा सकता है। कुण्डली में राहु द्वादश भाव में है जो नवम से चतुर्थ भाव है। नवम भाव पिता का भाव है और नवम से चतुर्थ भाव में राहु है जो बृहस्पति से दृष्ट है अतः इसे नेहरु के पिता को आलीशान घर देना ही था जो उसने आनन्द भवन के रुप में दिया।

यह भी ध्यान देने वाली बात है कि अष्टकवर्ग में चतुर्थ भाव 30 शुभ बिन्दु के साथ बली है और चतुर्थेश शुक्र, अपनी मूलत्रिकोण राशि में 6 बिन्दुओं के साथ स्थित होकर अत्याधिक बली है। भू-सम्पति का कारक ग्रह मंगल यद्यपि शत्रु राशि में बैठा है लेकिन यह 6 बिन्दुओं के साथ बली होकर स्थित है। शायद यही कारण था कि आधुनिक राजनीतिज्ञों की तरह नेहरु ने कभी भी अत्याधिक भू-सम्पति संग्रहित करने का प्रयास नहीं किया।

जैमिनी सिद्धान्तों के अनुसार कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव, धनु राशि एवं उसमें बैठा मंगल, बली बृहस्पति और उच्च के राहु से दृष्ट है जो आलीशान महल जैसे घर को इंगित करने वाला, एक अच्छा योग है।

बृहत्पाराशर होराशास्त्र में महर्षि पराशर ने चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश के बल और चतुर्थेश की केन्द्र एवं त्रिकोण की स्थिति को विशिष्ट महत्व दिया है। सर्वार्थ चिन्तामणी इसमें, नवम भाव और तृतीय भाव में शुभ ग्रह की स्थिति को भी जोडती है। इसका दशमेश से सम्बन्ध, बहुमंजिले भवनों को देता है। यह चतुर्थेश के नवांशेश का केन्द्र में स्थित होने को भी विशिष्ट महत्व देती है।

कुण्डली में भू-सम्पति के कारक ग्रह मंगल की स्थिति भी अत्याधिक महत्वपूर्ण होती है।

संकेत निधि के मतानुसार यदि चतुर्थ भाव में बुध हो तो जातक को कलात्मक घर, शुक्लपक्ष का चन्द्रमा एवं बृहस्पति हो तो मजबूत और लम्बे समय तक चलने वाला घर, सूर्य एवं केतु कमजोर घर, शनि एवं राहु पुराना घर, शुक्र सुन्दर घर और मंगल अग्नि के प्रति उन्मुख घर देता है।

जातक तत्वम् के मतानुसार :

1. चतुर्थ भाव में स्थिति चन्द्रमा एवं शुक्र बहुमंजिला घर देते हैं।
2. चतुर्थ भाव मे उच्च का ग्रह बहुमंजिला घर देता है।
3. केतु और मंगल, ईटों का घर देता है।
4. बृहस्पति, लकड़ी का घर देता है।
5. सूर्य, घास-फूंस की झोपड़ी देता है।
6. नवमेश केन्द्र में, चतुर्थेश स्वगृही, उच्च या मित्र की राशि में अथवा चतुर्थ में उच्च का ग्रह, बहुत सुन्दर घर देता है।
7. तृतीय भाव में शुभ ग्रह हों और चतुर्थेश एवं चतुर्थेश का नवांशेश बली हो तो खुले आंगन वाला बहुमंजिला घर देता है।
8. चतुर्थेश, चन्द्रमा एवं शनि के साथ दशम भाव में हो तो मनमोहक घर देता है।
9. लग्नेश और चतुर्थेश, चतुर्थ भाव में - अचानक घर की प्राप्ति होती है
10. बली चतुर्थेश, दशम भाव में और बली दशमेश, मंगल के साथ चतुर्थ भाव में -अत्याधिक भू-सम्पति।
11. चतुर्थेश एवं दशमेश मित्र ग्रह होकर बली हों तो अत्याधिक भू-सम्पति देते हैं।
12. बली चतुर्थेश स्वगृही अथवा 3रे, 6वें, 10वें या 11वें (उपचय भाव) भाव में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो भू-सम्पति का अत्याधिक लाभ देता है।

घर का स्वामित्व प्राप्त करने के शास्त्रीय योगः

1. **विचित्र सुधा प्रखर योगः** चतुर्थेश एवं दशमेश की शनि एवं मंगल से युति -जातक अनगिनत महलों का स्वामित्व प्राप्त करता है। यद्यपि चारों ग्रहों की यह युति बहुत कठिनाई से मिलती है।
2. **उत्तम गृह योगः** केन्द्र या त्रिकोण में चतुर्थेश की युति, शुभ ग्रहों से होनी चाहिए। यदि लग्नेश निर्बली हो तो यह योग चन्द्रमा से दृष्ट होना चाहिए।
3. **जैमिनी पद्धति के अनुसार घरः** यदि कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव चन्द्रमा एवं शुक्र से सम्बन्धित हो तो ऐसा जातक महल जैसे घर में रहता है। यदि कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव में सूर्य हो तो जातक का घर घास-फूंस से बना होता है। कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव में बुध एक व्यापारिक भवन में घर देता है। चतुर्थ भाव पर बुध की दृष्टि अच्छी सजावट वाले घर को इंगित करती है। यदि यहां शनि एवं राहु हों तो घर, ईट अथवा पहाड़ी पत्थर से बना होता है। मंगल अथवा केतु भी पत्थर का घर देते हैं। यदि कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव में बृहस्पति हो तो लकड़ी से बना घर होता है।
4. सभी राजयोग, महापुरुष योग, धनयोग और चन्द्रमा से बनने वाले सुनफा, अनफा, गज-केसरी, चन्द्र-मंगल एवं चन्द्राधियोग, महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
5. कुण्डली में वर्गोत्तम लग्न, वर्गोत्तम ग्रहों और उच्च एवं मूलत्रिकोण में स्थित ग्रहों की भूमिका महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट होती है।
6. चतुर्थ भाव, चतुर्थेश, कारक मंगल और केन्द्र-त्रिकोण में स्थित बृहस्पति बिना किसी संशय के जातक को घर प्रदान करते हैं। सर्वाधिक शुभ ग्रह शुक्र इसमें विशेष भूमिका निभाता है।

घर के संदर्भ में कुण्डली की सूक्ष्म परीक्षाः

1. कुण्डली में बृहस्पति, शुक्र एवं मंगल की स्थिति को देखें और सुनिश्चित करें कि ये सुस्थित हों अर्थात केन्द्र या त्रिकोण में बैठे हों।
2. सामान्यतः बृहस्पति, शुक्र अथवा मंगल की महादशा में घर बनता है।
3. गोचर में बृहस्पति की 1, 4, 8 या 12वें भाव में स्थिति, घर बनाने के समय को निश्चित करती है।

4. घर होने की खुशी का आंकलन 4, 8 एवं 11वें भाव से किया जाता है। शुभ नक्षत्र भी खुशियां सुनिश्चित करता है।

5. घर होने के लिए बृहस्पति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और घर की आशा को इंगित करता है। यदि यह उच्च, मूलत्रिकोण अथवा स्वगृही होकर कुण्डली के 1, 4, 8 या 10 वें भाव में बैठा हो तो जातक का अपना एक अच्छा घर होगा।

6. यद्यपि बृहस्पति घर का कारक है लेकिन यदि यह राहु या शनि से सम्बन्धित होता है तो बृहस्पति द्वारा इंगित घर की आशा तो पूर्ण होती है लेकिन घर पुराना और जीर्ण-क्षीर्ण होता है।

7. यदि बृहस्पति एवं शुक्र एक साथ 1, 4, 8 एवं 10वें भाव से सम्बन्धित होते हैं तो एक अच्छे घर की आशा सुनिश्चित करते हैं।

8. चतुर्थ भाव में शनि और सूर्य की युति जातक को जीवनभर घर सम्बन्धित चिन्तायें देती है।

9. चतुर्थ भाव में शनि और सूर्य की युति का अर्थ किराये का सुन्दर घर भी हो सकता है।

10. चतुर्थ भाव में चन्द्रमा, खेती अथवा कृषित भूमि के मध्य घर को इंगित करता है।

11. चतुर्थ भाव में शुक्र, बगीचे वाले घर को इंगित करता है।

12. चतुर्थ भाव में उच्च का शनि, अच्छा घर अथवा कई घरों का होना इंगित करता है।

13. चतुर्थ भाव में राहु अथवा अपने नक्षत्र में बैठा राहु जातक को गृहविहीन बनाता है।

14. चतुर्थ भाव में केतु, भूमि के क्रय-विक्रय से लाभ कमाने को इंगित करता है।

वास करने के लिए घर पूर्व दिशा में, अस्पताल पश्चिम दिशा में और बगीचा एवं मंनोरंजन का स्थान दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

ज्योतिषशास्त्र में आधुनिक शोध करने में अग्रणीय, श्री के. एन. राव, चतुर्थांश का मुख्य कुण्डली की भान्ति ही अध्ययन करने पर विशेष बल देते हैं। इस अध्ययन ने बहुत चमत्कारी परिणाम दिये हैं। इसमें भी लग्न, लग्नेश, चतुर्थ भाव, चतुर्थेश और मंगल, बृहस्पति एवं शुक्र की स्थित देखी जाती है।

उदाहरण 1:

इस कुण्डली का जातक करोड़ों की भू-सम्पति का स्वामी है।

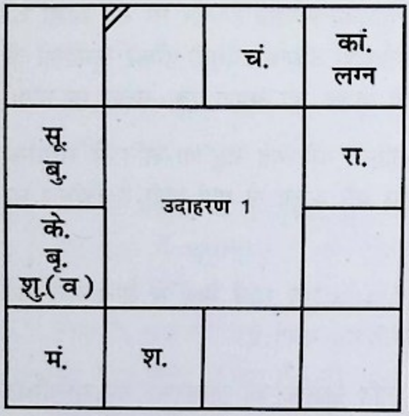

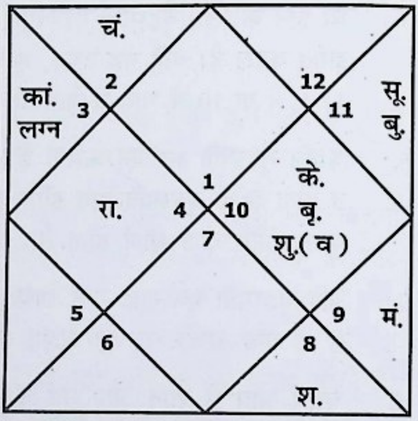

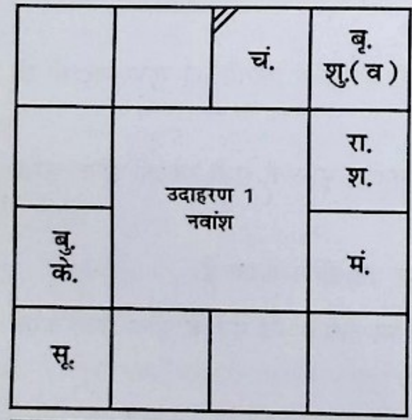

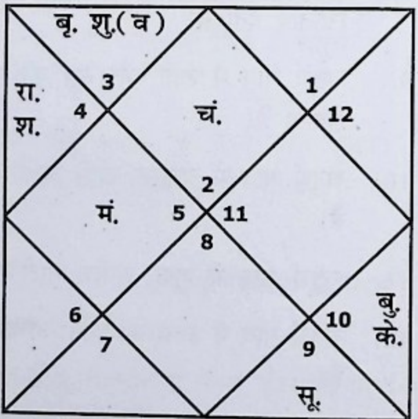

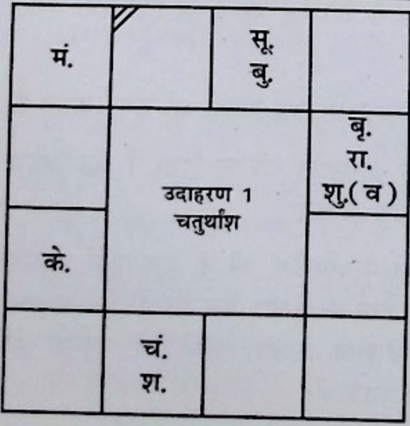

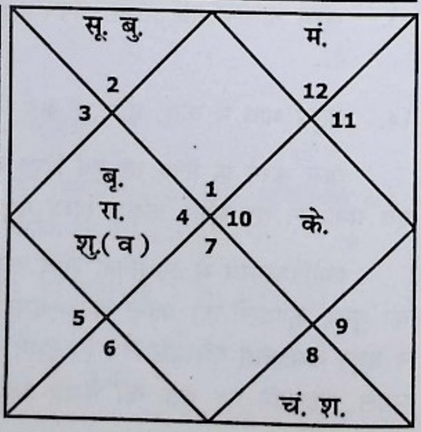

आओ देखते हैं कि इस कुण्डली के चतुर्थ भाव में क्या हो रहा है:

1. चतुर्थेश चन्द्रमा उच्च का होकर धन भाव में बैठा है और वर्गोत्तम भी है। यह नवमेश बृहस्पति द्वारा दशम भाव से दृष्ट है। बृहस्पति नीचभंग राजयोग में लिप्त है और द्वितीयेश शुक्र के साथ स्थित है। अतः इस कुण्डली में भू-सम्पति, धन, कर्मस्थान और पिता के भाव में सम्बन्ध बनता है।

2. कारक मंगल, नवम भाव से चतुर्थ भाव को दृष्ट करता है। पुनः पिता की सम्पति के साथ सम्बन्ध आता है।

3. आय भाव का स्वामी शनि, पैतृक सम्पति के भाव, अष्टम से दशम भाव में अपनी राशि को देखता है और पंचमेश सूर्य, पराक्रमेश बुध के साथ आय भाव में स्थित होकर अपने भाव को देखता है। बुध षष्टेश भी है अतः जातक को अपनी योजनाओं में कार्य करते हुए विरोध का भी सामना करना पड़ेगा।

4. यह जातक भवन निर्माता है और अपने जीवनवृत्ति के शिखर पर उस समय पहुंचा जब गोचर के बृहस्पति ने मकर राशि में प्रवेश किया, जहां से वह चतुर्थ भाव को दृष्ट करता है। इस समय गोचर का शनि, कुण्डली में उच्च स्थित चन्द्रमा को दृष्ट कर रहा था जिससे दोहरे गोचर का सिद्धान्त पूर्ण हो रहा था।

5. कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव में कन्या राशि है जिसका स्वामी बुध, पंचमेश सूर्य के साथ आय के भाव में बैठा है। पंचमेश सूर्य की अपने भाव पर पड़ने वाली दृष्टि जातक के सन्तान की उसके व्यवसाय में सक्रिय रुप से शामिल होने को दिखा रही है।

6. कारकांश लग्न और कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव, कारकांश लग्न से नवम भाव में स्थित भू-सम्पति के कारक मंगल से दृष्ट है। मंगल कारक होने के साथ-साथ इस कुण्डली का लग्नेश एवं अष्टमेश भी है। अष्टमेश पैतृक सम्पति को इंगित करता है।

7. यहां सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि इस जातक ने बुध की महादशा में अत्याधिक सम्पति अर्जित की थी। बुध की स्थिति से बात स्पष्ट हो जाती है। इस समय इसकी वृषभ राशि की चर दशा चल रही थी जहां उच्च का चन्द्रमा बैठा है और आत्मकारक एवं अमात्यकारक से दृष्ट होकर शक्तिशाली राजयोग बना रहा है। यह इसी योग का प्रताप था कि इस जातक के नीचे सैकड़ों व्यक्ति कार्य कर रहे थे।

8. बुध-केतु और बुध-शुक्र की दशा में इसने अधिकतम धन कमाया। चतुर्थांश का चतुर्थ भाव केतु-शुक्र से दृष्ट है।

उदाहरण 2:

कुण्डली का जातक किस प्रकार की भू-सम्पति एवं धन-सम्पदा होगी और उसका सामाजिक स्तर कैसा होगा, इसको कुण्डली का सूक्ष्म परीक्षण करके ज्ञात किया जा सकता है।

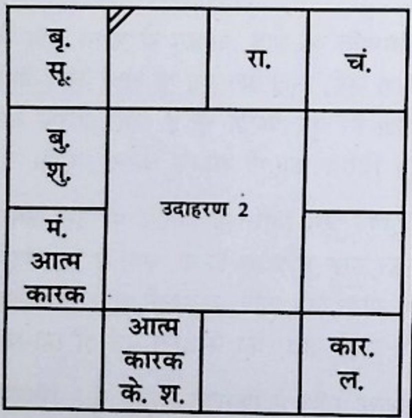

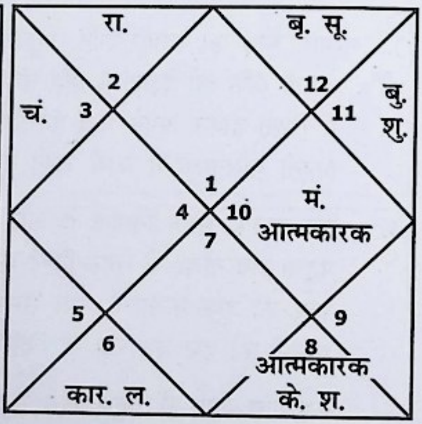

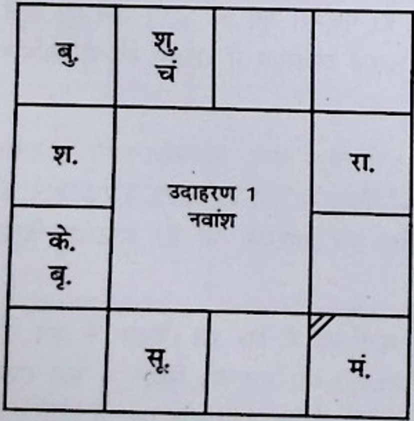

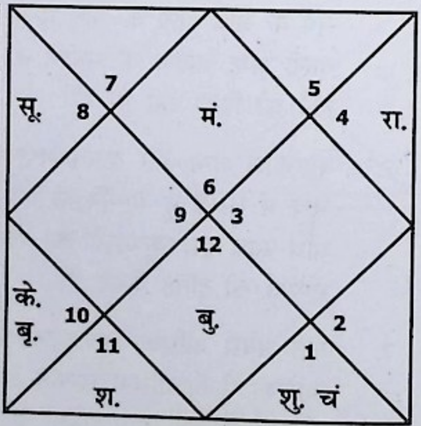

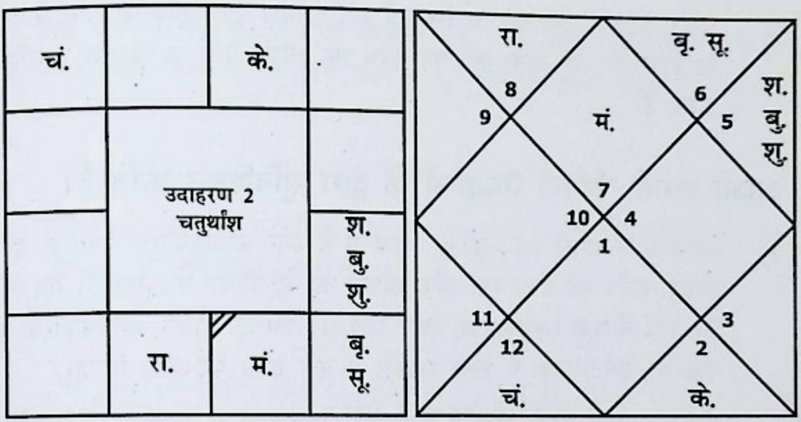

चतुर्थ भावः सर्वार्थ चिन्तामणी के सिद्धान्तों को लगाकर देखिये।

1. तृतीय भाव में एक शुभ ग्रह बैठा है।

2. चतुर्थेश चन्द्रमा बली गज-केसरी योग में स्थित है।

3. चतुर्थेश का राशीश बुध, दूसरे शुभ ग्रह एवं धनेश शुक्र के साथ एकादश भाव में बैठा है।

4. इस कुण्डली में तृतीयेश, चतुर्थेश एवं एकादशेश में सम्बन्ध है जिसमें दशम भाव से उच्च के मंगल की दृष्टि वृद्धि कर रही है और मंगल को उसका राशीश शनि अष्टम भाव से दृष्ट कर रहा है। यहां विशेष बात यह है कि शनि, दशमेश होने के साथ-साथ एकादशेश भी है और अष्टम भाव में स्थित होकर नवमेश (भाग्य एवं पिता के भाव के स्वामी) बृहस्पति से दृष्ट है।

5. भू-सम्पति का कारक मंगल, उच्च का है, दिग्बली है और चतुर्थ भाव का दृष्ट करता है।

6. धनेश शुक्र कुण्डली के आय भाव में है और पंचम भाव को दृष्ट करता है। शुक्र का राशीश सूर्य द्वादश भाव में नवमेश बृहस्पति के साथ है। बृहस्पति और सूर्य की इस युति ने जातक को सुन्दर मन्दिर बनाने के लिए अग्रसर किया।

7. द्वितीय भाव में उच्च का राहु स्थित है और दशमेश एवं एकादशेश शनि से दृष्ट है। उच्च का राहु, कुबेर की तरह सदैव धन अर्जित करने के अवसर उत्सर्जित करता है।

आओ इसको जैमिनी सिद्धान्तों के द्वारा सुनिश्चित करते हैं।

1. आत्मकारक मंगल उच्च का है, केन्द्र में है और अमात्यकारक शनि से दृष्ट होकर जातक के उच्च स्तर और प्रतिष्ठा का सुनिश्चित कर रहा है। मेष की चर दशा में जब आत्मकारक, दशम भाव में उच्च का होकर अमात्यकारक से दृष्ट था, इस जातक ने भारत सरकार में एक उच्च पद प्राप्त किया।
2. कारकांश लग्न कन्या राशि में है जिससे चतुर्थ भाव में पंचमेश, चतुर्थेश एवं बृहस्पति की दृष्टि है। बृहस्पति मातृकारक होने के साथ-साथ नवमेश भी है।
3. तुला राशि में आरुढ़ लग्न है और इससे एकादश भाव, सिंह राशि पर अमात्यकारक एवं उच्च के मंगल से दृष्ट होकर अतुल्य धन को सुनिश्चित कर रहा है।

चतुर्थांशः

1. चतुर्थांश में चतुर्थ भाव पर कारक मंगल और बृहस्पति से दृष्ट है।
2. योगकारक चतुर्थेश एवं पंचमेश शनि, एकादश भाव में लग्नेश और नवमेश के साथ बैठ कर उपरोक्त परिणामों को सुनिश्चित कर रहा है।

कारक का प्रयोगः

चतुर्थ भाव से भू-सम्पति, वाहन, माता आदि कई चीजों की विवेचना की जाती है। माता के संदर्भ में जानने के लिए चतुर्थ भाव, चतुर्थेश के साथ माता के कारक चन्द्रमा की विवेचना की जाती है, भू-सम्पति के लिए मंगल कारक होता है और वाहन आदि के लिए शुक्र कारक होता है।

माताः सन्तान के लालन-पालन और उनको संस्कारित करने में माता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। यहूदियों में एक कहावत प्रचलित है कि **"भगवान *सभी स्थानों में उपस्थित नहीं रह सकता है इसलिए उसने मां को बनाया है"।***

कुण्डली में माता के संदर्भ में अध्ययन करने और जातक के उसकी माता से सम्बन्धों को ज्ञात करने के लिए हमें चतुर्थ भाव, चतुर्थेश, कारक चन्द्रमा और चन्द्रमा से चतुर्थ भाव का अध्ययन करना चाहिए।

चतुर्थ भावः चतुर्थ भाव अच्छी स्थिति में होता है यदि,

- इसमें शुभ ग्रह बैठे हो अथवा यह भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। अशुभ ग्रहों का प्रभाव भाव की हानि करता है।
- यह शुभ ग्रहों के मध्य हो अर्थात चतुर्थ भाव शुभकर्तरी योग में हो।
- यह चतुर्थेश से दृष्ट हो।

यदि चतुर्थ भाव में अशुभ ग्रह बैठे हों तो यह माता के संदर्भ में समस्याओं को इंगित करता है।

चतुर्थेशः चतुर्थेश बली होगा यदि,

- केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो।
- षडवर्गो में अच्छी स्थिति में हो।
- उच्च का हो अथवा स्वगृही हो।
- शुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
- अष्टकवर्ग में 5 या अधिक बिन्दुओं के साथ हो।
- शुभ कर्तरी योग में हो।

अन्य स्थितियों में अर्थात 6, 8, 12 भाव में, नीच राशि, शत्रु राशि, पापकर्तरी योग एवं अस्त होने और अशुभ ग्रहों से दृष्ट होने, मृत्युभाग में होने एवं अष्टकवर्ग में 4 से कम बिन्दुओं के साथ स्थित होने में चतुर्थेश निर्बली होगा।

कारक चन्द्रमाः

कारक का विश्लेषण में भी उपरोक्त नियम लागू होंगे। इसके अतिरिक्त यदि चन्द्रमा शुक्लपक्ष का हो अथवा सूर्य से तीन भाव आगे या पीछे हो तो शुभ होता है।

माता से अच्छे सम्बन्ध इंगित करने वाले योगः

1. यदि लग्नेश और चतुर्थेश एक-दूसरे के मित्र हों तो जातक के अपनी माता से मधुर सम्बन्ध होते हैं।
2. यदि कुण्डली में लग्नेश और चतुर्थेश एक-दूसरे से 6-8 की स्थिति में न हों तो जातक के अपनी माता से मधुर सम्बन्ध होते हैं।
3. चतुर्थेश, शुभ ग्रह एवं बली होकर केन्द्र में स्थिति हो और शुभ ग्रहों से या लग्नेश से दृष्ट हो तो यह दानों के बीच मधुर सम्बन्ध होने के लिए अच्छा होता है।
4. चतुर्थ भाव में बली शुभ ग्रह स्थित हो तो यह जातक के अपनी माता से अच्छे सम्बन्धों के लिए शुभ होता है और ऐसा जातक अपनी माता का प्रिय होता है।

माता से शत्रुताः

1. चतुर्थेश लग्न या लग्नेश से 6, 8 या 12वें भाव में हो। 2/12 की स्थिति भी अच्छी नहीं होती है लेकिनं 6/8 जैसी अशुभ नहीं होती है।
2. चतुर्थ भाव में अशुभ ग्रह, चन्द्रमा से दृष्ट हों अर्थात चन्द्रमा दशम भाव में हो।
3. यदि चन्द्रमा से सप्तम भाव में अशुभ ग्रह हों तो जातक माता से प्राप्त होने वाले सुख से वंचित होता है।
4. इसी प्रकार अशुभ ग्रहों से दृष्ट शनि चतुर्थ भाव में शुभ नहीं होता है।
5. यदि लग्नेश एवं चतुर्थेश एक-दूसरे के शत्रु हों और अशुभ ग्रहों के प्रभाव में हों।
6. लग्न में शनि एवं मंगल स्थित हों।
7. चतुर्थेश की एकादश भाव की स्थिति भी शुभ नहीं होती है क्योंकि एकादश भाव चतुर्थ से अष्टम भाव है। यदि एकादशेश भी पीड़ित हो तो यह स्थिति अधिक अशुभ हो जाती है।
8. यदि चतुर्थेश एवं एकादशेश, लग्नेश के शत्रु हों और अशुभ प्रभाव में हों।

सौतेली मां होने के योग:

1. पराशर के मतानुसार चतुर्थेश, षष्टम भाव में हो अथवा षष्टेश के साथ हो तो जातक की सौतेली मां होती है और वह अपने पिता से शत्रुवत सम्बन्ध रखता है।
2. चतुर्थ भाव में अशुभ ग्रहों का प्रभाव और चतुर्थेश अशुभ ग्रहों के साथ 6, 8 या 12वें भाव में।

माता के दीर्घायु के योग:

1. कुण्डली में चन्द्रमा और शुक्र का बली होना।
2. लग्न से चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह।
3. बलिष्ठ चन्द्रमा केन्द्र अथवा त्रिकोण में शुभ ग्रहों से दृष्ट।
4. कुण्डली में चतुर्थेश के राशीश का बली होना।

माता की अल्पायु के योग:

1. निर्बली चन्द्रमा और चन्द्रमा से पंचम एवं नवम भाव अशुभ ग्रहों से गृहीत।
2. चन्द्रमा तीन अशुभ ग्रहों से दृष्ट और चन्द्रमा से सप्तम भाव में बैठा शुक्र अशुभ ग्रहों से दृष्ट।
3. चतुर्थ भाव में शनि, अशुभ ग्रहों से दृष्ट।
4. चन्द्रमा एवं तृतीयेश, 6वें, 8वें और 12वें भाव में।
5. केन्द्र में कोई शुभ ग्रह नहीं और चन्द्रमा से चतुर्थ में एक अशुभ ग्रह।
6. चतुर्थ भाव, चतुर्थेश और चन्द्रमा, तीनों पीड़ित और पापकर्तरी योग में।

इसके अतिरिक्त माता-पिता की स्थिति के आंकलन के लिए द्वादशांश का भी निरीक्षण करना चाहिए। द्वादशांश का चतुर्थ भाव माता के लिए और नवम भाव पिता के लिए देखना चाहिए। कुण्डली में पिता का कारक सूर्य होता है अतः पिता की स्थिति का अनुमान सूर्य से भी लगाया जा सकता है।

अध्याय 6

पंचम भाव
(सन्तति, उच्च शिक्षा, पूर्वपुण्य)

कुण्डली के पंचम भाव के विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. विद्या। पराशर ने इस भाव को सीखने का भाव कहा है।
2. बौद्धिक क्षमता। पराशर के अनुसार शीघ्र समझने की बौद्धिक क्षमता।
3. ज्ञान, कार्य करने की मौलिक योग्यता, पूर्वपुण्य। वैदिक ज्योतिष में कार्य करने की मौलिक योग्यता को पंचम भाव में स्थित ग्रहों से आंकते हैं।
4. भाग्य। भाग्य वह है जो पूर्वजन्मों के कर्म के आधार पर सुनिश्चित है।
5. मंत्र।
6. सन्तति।
7. भावनायें, कीर्ति, दादा।
8. महर्षि पराशर के अनुसार पंचम भाव राज्याधिकार के साथ-साथ जातक के उच्च स्तर से पतन को भी इंगित करता है क्योंकि यह दशम से अष्टम भाव है।
9. उत्तरकालामृत के मतानुसार यह भाव शासक का प्रतिनिधित्व करता है।
10. शासक का मंत्री।
11. काव्य और प्रबन्धों की रचना करना।
12. उपासना अथवा प्रायश्चित के साथ अराधना।
13. साहित्य में प्रवीणता।

14. कल्पित साहसिक कार्य और प्रेम सम्बन्ध।
15. लाटरी अर्थात आकस्मिक धन लाभ।

पंचम भाव को पूर्वपुण्य स्थान भी कहा जाता है अर्थात वह भाव जो जातक द्वारा उसके पिछले जन्मों में किए गए कर्मों में से सत्कर्मों के संग्रह को दर्शाता है। यदि कुण्डली का पंचम भाव बली नहीं होता है तो कुण्डली को बलहीन विचारा जाता है। जिस जातक का पंचम भाव पीड़ित होता है वह उद्देश्यहीन जीवन की ओर अग्रसर होता है।

विभिन्न भावों में स्थित पंचमेश के परिणाम

पंचमेश, प्रथम भाव में: पंचमेश अपने भाव से नवम भाव में, अतः अनुकूल परिणाम। कई सेवकों का स्वामी, सही-गलत का निर्णय करने वाला, न्यायाधीश अथवा मंत्री, भगवान से डरने वाला अर्थात आस्तिक, अल्प सन्तान वाला। यदि दुर्स्थित या निर्बली हो तो कुटिल बुद्धिवाला, कंजूस। यदि पीड़ित हो तो धोखेबाज, ठगों का नेता।

पंचमेश, द्वितीय भाव में: पंचमेश अपने भाव से दशम भाव में, अतः अनुकूल परिणाम। शिक्षित, अच्छी भार्या और सुसंस्कृत सन्तान। यदि दुर्स्थित या निर्बली हो तो अस्थमा, दरिद्रता और पारवारिक जीवन में तनाव।

पंचमेश, तृतीय भाव में: पंचमेश अपने भाव से एकादश भाव में, अतः सामान्यतः अधिक सन्तान और भाइयों का होना जैसे अनुकूल परिणाम। यदि दुर्स्थित या निर्बली हो तो छल-कपट करने वाला, सन्तान के साथ परेशानियां आदि, प्रतिकूल परिणाम।

पंचमेश, चतुर्थ भाव में: पंचमेश अपने भाव से द्वादश भाव में, अतः यदि सुस्थित हो तो माता दीर्घायु, मंत्री अथवा शासक का सलाहकार होना जैसे अनुकूल परिणाम। यदि दुर्स्थित या निर्बली हो तो यह सन्तान के लिए शुभ स्थिति नहीं होती है।

पंचमेश, पंचम भाव में: पंचमेश स्वगृही, अतः सन्तान, शिक्षा एवं व्यवसाय के लिए शुभ। जातक गणितज्ञ, किसी धार्मिक संस्थान का प्रमुख और शासक का प्रिय होता है। यदि पीड़ित हो तो सन्तान की आयु के लिए अरिष्ट, व्यवहार में कठोर और भ्रमित दिमाग का होता है।

पंचमेश, षष्टम भाव में: पंचमेश अपने भाव से द्वितीय भाव में, अतः मामाओं की समृद्धि के लिए शुभ होता है लेकिन सन्तानहीनता अथवा सन्तान के जन्म में विलम्ब, सन्तान के साथ शत्रुवत व्यवहार, पिता-पुत्र के सम्बन्धों में विरोध, विद्या में विघ्न आदि अशुभ परिणाम देता है।

पंचमेश, सप्तम भाव में: पंचमेश अपने भाव से तृतीय भाव में, अतः जातक शिक्षित, सुप्रतिष्ठित और समृद्ध। जातक का एक पुत्र विदेश में निवास करे और वहां धन-समृद्धि प्राप्त करे। यदि अशुभ प्रभाव में हो अथवा या निर्बली हो तो सन्तान की हानि भी देता है।

पंचमेश, अष्टम भाव में: पंचमेश अपने भाव से चतुर्थ भाव में, अतः पैतृक सम्पति, आध्यात्मिक उत्थान, मंत्रसिद्धि एवं कुण्डलनी जागरण जैसे शुभ परिणाम प्रदान करता है। यदि पीड़ित हो तो फेफड़ों एवं आन्तों से सम्बन्धित रोग, शिक्षा में रुकावट और बुरी आर्थिक स्थिति जैसे अशुभ परिणाम देता है।

पंचमेश, नवम भाव में: पंचमेश अपने भाव से पंचम भाव में, अतः अनुकूल परिणाम। जातक धार्मिक, किसी संस्थान का प्रमुख, सुशिक्षित, विद्वान और बुद्धिमान होता है। यह सम्बन्ध जातक के लेखक होने के लिए अतिशुभ है और उसका एक पुत्र भी प्रसिद्ध लेखक होता है क्योंकि पंचम भाव भी लिखने से सम्बन्धित होता है। श्री के. एन. राव के अनुसार यह सम्बन्ध कुण्डली में आध्यात्मिकता की आशा को उद्धृत करता है। यदि पीड़ित हो तो जातक भाग्यहीन होता है।

कुण्डली में पंचमेश, नवमेश और अष्टमेश का सम्बन्ध ***"महाविज्ञान योग"*** को उदय करता है।

पंचमेश, दशम भाव में: यद्यपि पंचमेश अपने भाव से षष्टम भाव में होता है लेकिन त्रिकोणेश होकर केन्द्र में होने से राजयोग उदय करता है। ऐसा जातक उच्च व्यवसायिक, अच्छी शिक्षा प्राप्त, सुप्रसिद्ध, भू-सम्पति वाला, कीर्तिवान और धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति होता है। यदि पीड़ित हो तो शिक्षा के लिए प्रतिकूल होता है और जातक के व्यवसाय में भी परेशानियां उत्पन्न होती हैं।

पंचमेश, एकादश भाव में: इस स्थिति में पंचमेश अपने भाव से सप्तम भाव में होता है अतः पंचम को दृष्ट करके उसे बली बनाता है। परिणामस्वरुप अच्छी सन्तान, शिक्षित, सुप्रसिद्ध लेखक, धनवान आदि अनुकूल परिणाम देता है। लेकिन यदि पीड़ित हो तो अल्पज्ञान और कठिनाइयों से धनार्जन जैसे प्रतिकूल परिणाम देता है।

पंचमेश, द्वादश भाव में: पंचमेश का अपने भाव से अष्टम भाव में होना सामान्यत: अधिक शुभ नहीं माना जाता है। यदि पीड़ित भी हो तो व्यर्थ भटकना, आर्थिक परेशानियां एवं सन्तान से दूरी जैसे अशुभ परिणाम देता है। यदि सुस्थित एवं बली हो आध्यात्मिक उत्थान, मोक्ष के प्रति रुझान, तीर्थयात्रायें और साधुओं की संगति जैसे शुभ परिणाम देता है।

पंचम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम

सूर्य: पंचम भाव में मेष, सिंह या धनु राशि में स्थित सूर्य प्रतिष्ठा, सम्मान, सफलता, आनन्द, प्रेमपूर्ण व्यवहार, विद्वत्ता और अच्छी शिक्षा देता है। मेष का सूर्य छोटा परिवार देता है। सूर्य की यह स्थिति मंत्री पद जैसा उच्च पद भी प्रदान करती है लेकिन कभी-कभी सन्तानहीनता या सन्तान के जन्म में परेशानियां या गर्भपात होना जैसी स्थितियां भी उत्पन्न करती है। एक बंजर या शुष्क राशि का सूर्य इन परेशानियों में अधिक वृद्धि करता है। मिथुन, तुला या कुंभ राशियों का सूर्य जातक को प्राध्यापक, लेखक, प्रकाशक या सामाजिक व्यक्ति बनाता है।

पंचम भाव में पीड़ित, दुर्स्थित और अशुभ ग्रहों से दृष्ट सूर्य जातक के हठी स्वभाव, अस्थिर बुद्धि, अहंकारी, चिड़चिड़ा, अतिइच्छावाला होने और दूसरों पर शासन करने की इच्छा वाला होना इंगित करता है। यह शेयर बाजार एवं सट्टे के द्वारा हानि पहुंचाता है और जातक को प्रेम, आनन्द एवं घमण्ड के द्वारा दु:ख देता है।

पंचम भाव में पीड़ित सूर्य, जातक की अच्छी शिक्षा और सन्तान के लिए भी शुभ नहीं होता है। अधिकतर ज्योतिषाचार्यों का मत है कि पंचम भाव में पुरुष राशियों का सूर्य हो तो जातक सन्तानहीन होगा अथवा उसकी सन्तान अल्पायु होगी।

सूर्य, दिल की इच्छाएं अथवा कामसुख के प्रति उत्कण्ठा बढ़ाता है। बृहस्पति की कोणीय दृष्टि अथवा युति इन इच्छाओं की पूर्ति करती है। शनि द्वारा पीड़ित सूर्य, प्रेम एवं विवाह के लिए विनाशकारी होता है। मंगल द्वारा पीड़ित सूर्य प्रेम सम्बन्धों एवं खुशियों के लिए अशुभकारी होता है और भाग्यहीनता की ओर अग्रसर होने के लिए प्रवर्तक कर्मों को उदय करता है। स्त्रियों की कुण्डली में भी ऐसा सूर्य भाग्यहीनता इंगित करता है।

चन्द्रमा: जातक सहनशील, सौम्य, धनवान, आकर्षक, स्वस्थ, आश्चर्यजनक कार्य करने वाला, बुद्धिमान, सुशिक्षित, अत्याधिक समृद्धशाली, सुप्रतिष्ठित, सत्पुत्रों

वाला और अच्छे माता-पिता की सन्तान होता है तथा संगीत सहित अनेक कलाओं में दक्ष होता है।

सामान्यतः जातक की प्रथम सन्तात कन्या होती है और पुत्रों की अपेक्षा कन्यायें अधिक होती हैं। ऐसा जातक शेयर बाजार और ताश या लाटरी आदि से लाभ कमाता है और चूंकि यह सप्तम से एकादश भाव है अतः भार्या द्वारा भी लाभ प्राप्त करता है। यदि चन्द्रमा मिथुन या मीन राशि में हो तो जुड़वाँ सन्तान देता है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसा पुत्र देता है जिसके कारण जातक प्रसिद्धि पाता है। शुभ फलदायक राशियों में होने पर जातक की कई सन्तान होती हैं।

पंचम भाव में वृषभ, मकर या कन्या राशि का चन्द्रमा जातक को कई कन्याओं का पिता बनाता है लेकिन उसकी अन्तिम सन्तान पुत्र होती है। मिथुन, तुला या कुंभ राशि का चन्द्रमा सामान्यतः जातक को पुत्र सन्तान नहीं देता है और उसकी केवल कन्या सन्तान ही होती हैं। कर्क, वृश्चिक, मेष, मीन, धनु या सिंह राशि का चन्द्रमा क्रमशः पुत्र एवं पुत्री सन्तान देता है। जल तत्व राशियों का चन्द्रमा जातक को चिकित्सक या वकील बनाता है और तीन पुत्र सन्तान की संभावनायें इंगित करता है।

पीड़ित चन्द्रमा पागलपन, क्षीण स्मरणशक्ति एवं अस्थिर दिमाग देता है। यदि यह शनि से पीड़ित हो तो जातक धोखेबाज होता है।

मंगलः पंचम भाव का बली मंगल जीवन में सफलता और उच्च पद प्राप्त करने के लिए अच्छा होता है। ऐसा जातक अच्छी अभिलाषा वाला और अच्छी पाचनशक्ति युक्त, अधिक खाने वाला व्यक्ति होता है।

पीड़ित मंगल गर्भपात, सन्तान के साथ सम्बन्धों में परेशानियां, अल्पायु सन्तान, दरिद्रता, धूर्तता, कुटिल मानसिकता, अनैतिक कार्यो में रुझान, क्रोधी स्वभाव और परस्त्रियों के प्रति आकर्षण देता है।

बुधः सुशिक्षित, विद्वान, लेखक, साहित्यकार, कवि या पुरुष राशियों में हो तो उपन्यासकार बनाता है। मेष, सिंह एवं धनु राशियों का बुध जातक को गणित की आसक्ति, आत्मतत्वज्ञान से सम्बन्धित ज्योतिष और नृत्य देता है। वृषभ, कन्या या मकर राशि का बुध भौतिक विज्ञान, हस्तशास्त्र, व्याकरण आदि देता है और जल तत्व राशियों का लिपिक एवं बहुभाषाविद्व बनाता है।

बुध की पीड़ित होना सन्तान के लिए शुभ नहीं होता है और जातक अल्प शिक्षित, क्रूर एवं झगड़ालू होता है।

बृहस्पतिः बुद्धिमान, भगवान से डरने वाला अर्थात आस्तिक, समृद्धिशाली, सुशिक्षित। यदि पीड़ित हो तो सन्तान के साथ सम्बन्धों में मधुरता नहीं होती है।

शुक्रः सुशिक्षित, लेखक, कलाकार, धनवान। पीड़ित हो तो भार्या के साथ शारीरिक सम्बन्धों में परेशानियां देता है। शुक्र-राहु की युति विदेशी अथवा दूसरी जाति के जातक से प्रेम सम्बन्ध को इंगित करता है।

शनिः यदि सुस्थित हो तो परिश्रमी एवं निष्कपट और यदि पीड़ित हो तो क्षीण बुद्धि एवं सन्तान के साथ सम्बन्धों में कटुता देता है।

राहुः जातक यंत्रकार होता है और यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो सन्तानहीनता देता है।

केतुः मंत्रसिद्धि। यदि दुर्स्थित हो तो सन्तान के लिए अरिष्टकारी होता है।

पराशर के मतानुसार यदि लग्नेश और पंचमेश, स्वराशि में हों या केन्द्र में हो या त्रिकोण में हों तो जातक सत्पुत्रों वाला होता है और सन्तान से सुख एवं खुशियां प्राप्त करता है। यदि लग्नेश एवं पंचमेश की युति हो तो जातक, कम आयु में ही सन्तानवान होता है।

यदि पंचम भाव में तीन या तीन से अधिक अशुभ ग्रह बैठे हों और पंचमेश नीच का हो तो जातक की सन्तान बुरे कर्मों में लिप्त होंगी।

प्रथम सन्तान की मृत्युः

यदि पंचमेश, षष्टम भाव में हो और लग्नेश, मंगल से युत हो तो जातक की प्रथम सन्तान की मृत्यु होती है और उसकी भार्या पुनः सन्तान उत्पति करने में असमर्थ होती है।

कुण्डली से बौधिक एवं ज्ञान की क्षमता और शिक्षा की प्रवृति का आंकलनः

जो ग्रह जातक को बौधिक एवं ज्ञान की क्षमता और शिक्षा प्रदान करते हैं उनमें अच्छे स्वास्थ्य के लिए लग्नेश, बुद्धि एवं बौधिक क्षमता के लिए बुध, विद्वत्ता एवं ज्ञान के लिए बृहस्पति और कला के लिए शुक्र शामिल होता है। चन्द्रमा बुद्धि का कारक होता है और सूर्य आत्मा के कारक के रुप में उच्च विचारों, आध्यात्मिक मूल्यों और अन्त में प्राप्त होने वाली सफलता को इंगित करता है। कालपुरुष की

कुण्डली में लग्न या प्रथम भाव का स्वामी होने के कारण मंगल स्वास्थ्य, कुटुम्बस्थान या द्वितीय भाव का स्वामी होने के कारण शुक्र बाल्यावस्था में परिवार से प्राप्त शिक्षा और तृतीयेश होने के कारण बुध शिक्षा का रुझान इंगित करता है। चतुर्थ भाव मस्तिष्क को दर्शाता है अतः इसका स्वामी चन्द्रमा मस्तिष्क की क्षमता और सूर्य, पंचमेश होने के कारण शिक्षा एवं ज्ञान प्राप्त होने में पूर्वपुण्यों की कृपा को दर्शाता है। बृहस्पति नवमेश और ज्ञान या विद्वत्ता का कारक होता है।

सम्बन्धित भावः

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम और नवम भाव मुख्यरुप से महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन आधुनिक परिवेश में व्यवसायिक या उच्चशिक्षा के लिए पंचम भाव अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। पराशर ने पंचम भाव को बौधिक क्षमता के साथ-साथ विद्या सीखने का भाव भी कहा है और महर्षि जैमिनी तो शिक्षा के लिए पंचम भाव को ही मुख्य महत्व देते हैं। पंचम भाव योग्यता, भगवान के प्रति आस्था, सीखने की क्षमता और ज्ञान की क्षमता को भी इंगित करता है।

बृहस्पतिः

बृहस्पति योग्यता, बुद्धिमता, सीखने की कला, ज्ञान और सन्तान का शासक ग्रह है। जैमिनी सूत्रों के अनुसार यदि बृहस्पतिं, कारकांश लग्न या कारकांश लग्न के पंचम से सम्बन्धित होता है तो ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में दक्ष, ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का ज्ञाता, विज्ञान को भली-भान्ति जानने वाला कई विषयों की पुस्तकों का लेखक और अद्भुत बुद्धिवाला व्यक्ति होता है।

पंचम भाव का शुभ कर्तरी योग में और बृहस्पति का केन्द्र या त्रिकोण में होना शिक्षा के लिए वरदान सिद्ध होता है।

बुध एवं शुक्र की युति भी बुद्धिमता, शिक्षा और ज्ञान के लिए अच्छी होती है। बुध एवं शुक्र पंचम भाव में स्थित होकर सफल शैक्षिक जीवन देते हैं। शुक्र, प्रायश्चित करने हेतु की जाने वाली तपस्या, धार्मिक कठोरता, भगवान के प्रति आस्था और आध्यात्मिक कठोरता या आत्मसंयमता को इंगित करता है। शुक्र देवीय गुणों पर भी शासन करता है। यदि शुक्र पंचम में हो अथवा पंचमेश होकर नवम भाव में हो तो दैविक प्रेरणायें देता है। यदि पंचम में शुक्र के साथ शनि सम्बन्धित होता है तो

जातक को भगवान के प्रति सैद्धान्तिक रुप से अटल आस्था देता है अर्थात जातक का भगवान के प्रति अटल विश्वास होता है।

चन्द्रमा का लग्न भाव अथवा पंचम भाव में होना संगीत और काव्य की प्रवृति देता है। जैमिनी सिद्धान्तों के अनुसार यदि चन्द्रमा, कारकांश लग्न अथवा कारकांश लग्न के पंचम भाव से सम्बन्धित होता है तो जातक ***सांख्यशास्त्र*** में प्रवीण, बहुत भाषाओं में शिक्षित, काव्य, नाटक और संगीत में दक्ष होता है।

लेखक होने के योगः

1. कारकांश नवांश में चन्द्रमा अथवा बृहस्पति।
2. कारकांश से पंचम अथवा नवम में चन्द्रमा या बृहस्पति।
3. लग्न से पंचम या नवम भाव में चन्द्रमा अथवा बृहस्पति।
4. शुक्र एवं बुध के साथ चन्द्रमा। यह जातक को प्रख्यात ग्रन्थकार, कवि, नाटककार, इतिहासकार, कहानी लेखक या कल्पित कहानी लेखक बनाता है।
5. चन्द्रमा एवं बृहस्पति की बुध या शुक्र से युति जातक को दर्शनशास्त्र, और गंभीर विषय की पुस्तकों का लेखक बनाती है।
6. यदि बुध, बृहस्पति और शुक्र, चन्द्रमा से सम्बन्धित होते हैं तो जातक ज्योतिषशास्त्र, औषधीशास्त्र, दर्शनशास्त्र, कला और क्रय-विक्रय से सम्बन्धित पुस्तकों का लेखक होता है।
7. यदि राहु-केतु एवं चन्द्रमा की युति से बुध, बृहस्पति एवं शुक्र में से कोई दो ग्रह सम्बन्धित होते हैं तो जातक को गणित और ज्योतिष देते हैं और वह इनसे सम्बन्धित पुस्तकें, लेखादि भी लिखता है।

तीक्ष्ण बुद्धिः

किसी भी कुण्डली में तीक्ष्ण बुद्धि को मुख्यरुप से बुध और पंचम भाव इंगित करते हैं। अतः निम्नलिखित स्थितियों में जातक तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

1. बुध और पंचम भाव बली हों।
2. उच्च का पंचमेश, पंचम भाव को दृष्ट करे।

3. पंचमेश का नवांशेश शुभ ग्रहों से प्रभावित हो।
4. बुध का नवांशेश केन्द्र या त्रिकोण में होकर पंचमेश से दृष्ट हो।
5. नवम भाव में स्थित पंचमेश, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
6. पंचम भाव शुभकर्तरी योग में और बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण में हो।
7. चतुर्थ भाव में पुथ्वी तत्व राशि शक्तिशाली स्मरणशक्ति, कल्पनाशक्ति और गहरी भावनायें देती है।

क्षीण बुद्धिः

1. शनि पंचम में हो और अन्य अशुभ ग्रहों के साथ लग्नेश एवं पंचमेश को दृष्ट करे।
2. शनि, राहु या गुलिक पंचम भाव में हों और पंचमेश अशुभ ग्रहों के साथ हो। यद्यपि ऐसी स्थिति में भी यदि बुध सुस्थित होता है तो जातक स्मरणशक्ति की पुनः प्राप्ति करता है।
3. पंचमेश अशुभ ग्रहों के साथ हो और अशुभ षष्टियांश में हो।

शिक्षा के विषय अथवा प्रवृतिः

शिक्षा से सम्बन्धित क्षेत्रों के विषय में ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित को देखिएः

1. पंचम भाव, पंचमेश और वह ग्रह जो पंचमेश एवं पंचमेश की राशि को प्रभावित करता है। पंचमेश की राशि और उसको प्रभावित करने वाला ग्रह शिक्षा के सम्बन्ध में बहुत कुछ बताता है।
2. पंचमेश का नक्षत्र।
3. बुध से पंचम भाव पर प्रभाव।
4. दशाचक्र।

ग्रह और शिक्षाः

सूर्यः यदि शुभ राशियों में हो और अशुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो राजनीतिशास्त्र। सूर्य शिष्ट शासक है जबकि मंगल तानाशाह है। अशुभ राशियों में एवं अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को गणितज्ञ, चिकित्सक, औषधिशास्त्री और प्रशासक बनाता है।

सूर्य-मंगलः यदि तृतीय या एकादश भाव भी शामिल हों तो दन्तचिकित्सक अथवा नाक-कान-गला चिकित्सक।

सूर्य-बुधः वकील, लेखाकार।

चन्द्रमाः आधुनिक कला, संगीत, चित्रकारी और रसायन विज्ञान/औषधी विज्ञान।*

चन्द्रमा-बृहस्पतिः शासक का मंत्री, शिक्षाविद्, राजनीतिज्ञ, शासकीय अधिकारी।

चन्द्रमा-बुध-शुक्रः कलाकार, कवि।

चन्द्रमा-शुक्रः कलाकार, नाटककार और सिनेमा का निर्देशक। भाषायें, कृषि से सम्बन्धित विज्ञान, वास्तुशास्त्र।

मंगलः तकनीकी शिक्षा, यंन्त्रकार और भूगोल। आक्रमण, युद्धशास्त्र जैसे कि जूडो आदि, विस्फोटक, चिकित्सक, शल्यचिकित्सक, सेना, पुलिस, अग्निशमक और युद्ध से सम्बन्धित विज्ञान।

मंगल-बुधः गणितज्ञ।

मंगल-बृहस्पतिः पुलिस अथवा सेना।

बुधः वाणिज्य, अर्थशास्त्र, प्रबन्धन, लेखाकार और वित्तीय विषय।

बुध-राहुः यन्त्रकार।

बुध-शनिः उद्योग।

बुध-बृहस्पतिः ज्योतिषशास्त्र।

---

* *चिकित्सकों की कुण्डली में चन्द्रमा पीड़ित होता है। इस संदर्भ में श्री के. एन. राव का लेख "डाक्टरस ड्रग्ड मून" का अवलोकन करें जिसे व्यवसास के अध्याय में विस्तार से दिया गया है।*

बुध-शनिः रसायन शास्त्र।

बृहस्पतिः साहित्य, कानून, इतिहास, वित्तीय विषय, प्रबन्धन, शास्त्रीय विषय जैसे कि वेद पाठ, पुरोहित, पुजारी, मन्दिर और धार्मिक विषय।

शुक्रः दूरदर्शन, आधुनिक कला, वस्त्र, आन्तरिक साज-सज्जा, घर प्रबन्धन, चित्रकार, अश्लील चलचित्रण, सेक्स के नकारात्मक पहलू।

शुक्र-चन्द्रमाः लेखाकार, वाणिज्य, अर्थशास्त्र।

शुक्र-बृहस्पति-शनि-मंगलः कानून।

शुक्र-बुधः यंन्त्रकार, छायाचित्रकार, ठेकेदार।

शनिः श्रम कानून, लोकतंत्र, नेता के रुप में लोकतंत्र की शक्ति, शिष्ट नहीं। तकनीकी विषय, इतिहास, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र।

राहुः गणित पर आधारित शिक्षा, कम्पूटर विज्ञान, तकनीकी शिक्षा, यंत्रशास्त्र, वायुसेवा, छायाचित्रकारी, इलक्ट्रोनिक्स, विदेशी भाषायें, शोध।

राहु-चन्द्रमाः चिकित्सक, मनोविज्ञान।

केतुः भाषायें, सूक्ष्म यंत्र, अत्याधिक नाजुक चीजें, इलक्ट्रोनिक्स, अपराधियों को पकड़ने में सहायक वैज्ञानिक विषय, जादू, मोक्ष। (केतु की अन्तर या प्रत्यन्तर दशा में संसारिक सम्बन्धों से मोह भंग हाने के लिए अधिकतर व्यक्ति इन सम्बन्धों से वंचित होते हैं।)

ग्रह और सन्तानः नियम और बीज स्फुट एवं क्षेत्रस्फुट का विचार।

किसी भी कुण्डली में सन्तान के विषय में ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित का सूक्ष्म परीक्षण एवं अध्ययन करना चाहिए।

1. राशिचक्र।
2. नवांशचक्र।
3. सप्तांश चक्र।
4. चन्द्र कुण्डली।
5. बीज स्फुट एवं क्षेत्रस्फुट की गणना।

6. लग्न, लग्नेश, पंचम, पंचमेश और नवम, नवमेश।
7. दूसरी भार्या से सन्तान के विषय में सप्तम भाव।
8. एकादश भाव क्योंकि यह सप्तम भाव से पंचम भाव है।
9. कारक बृहस्पति।
10. उचित दशा।
11. ग्रहों का गोचर।

बीज स्फुट एवं क्षेत्रस्फुट और इनकी गणना

किसी भी युगल के सन्तान जनने की योग्यता और क्षमता को ज्ञात करने के लिए यह वैदिक ज्योतिषशास्त्र का अनुपम सिद्धान्त है। पुरुष की वीर्यशक्ति को बीज स्फुट और स्त्री की प्रजनन शक्ति को क्षेत्रस्फुट द्वारा ज्ञात किया जाता है। यदि बीज निर्बली हो और क्षेत्र बली हो तो सन्तान का जन्म विलम्ब से ही सही लेकिन उपचार करने के बाद हो सकता है। विपरीति स्थितियों में सन्तान का जन्म होना मुश्किल होता है।

बीज स्फुट की गणनाः

राशि की संख्या सहित सूर्य, शुक्र और बृहस्पति के भोगांशों का योग करें। यदि राशियों का योग 12 से अधिक हो तो उसमें से 12 अथवा 12 के गुणक कम करें। इस प्रकार से जो राशि संख्या प्राप्त होगी वह बीजस्फुट कहलायेगी।

उदाहरणः

	राशि	अंश	मिनट	
सूर्य का भोगांश	03	04	35	
शुक्र का भोगांश	04	15	12	
बृहस्पति का भोगांश	08	19	18	
	16	09	05	या 4 राशि 9 अंश 05 मिनट।

8. लग्नेश और पंचमेश की केन्द्र में स्थित और द्वितीयेश का बल।

9. पंचमेश के नवांशेश को राशि कुण्डली में देखें। यदि सुस्थित हो अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो सन्तान का जन्म निश्चित रुप से होता है।

10. यदि लग्नेश और नवमेश की सप्तम भाव में युति हो और द्वितीयेश लग्न में हो तो सन्तान का जन्म निश्चित रुप से होता है।

11. सप्तमेश का नवांशेश, लग्नेश, नवमेश या द्वितीयेश से दृष्ट होता है तो सन्तान का जन्म अवश्य होता है।

उदाहरण कुण्डली:

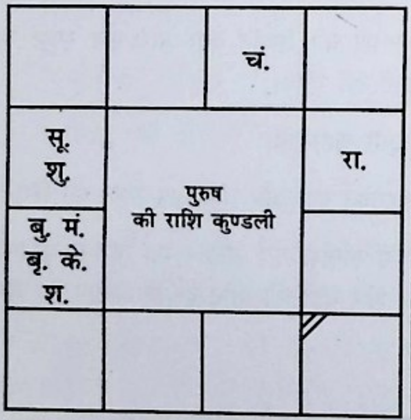

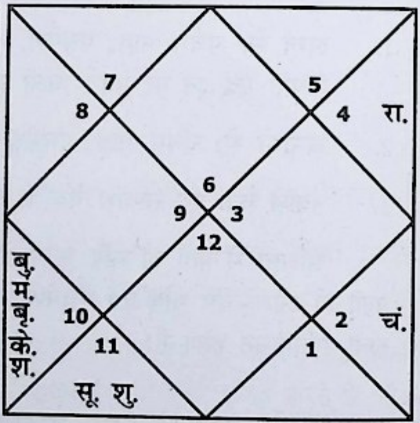

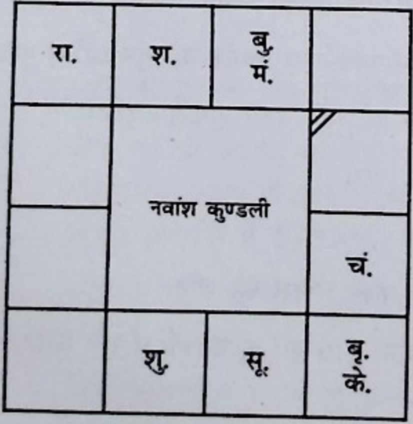

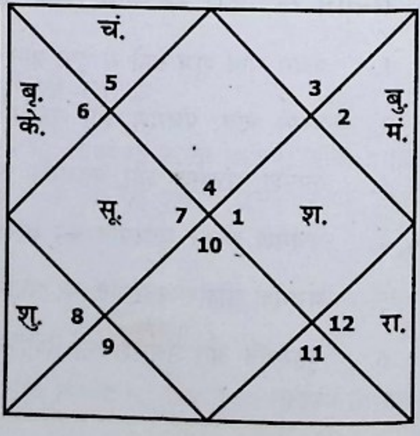

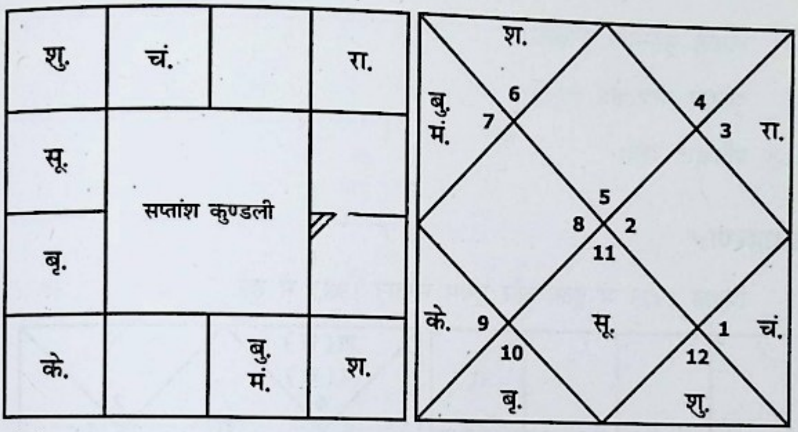

विवेचना:

1. पंचमेश पंचम में, अतः सन्तान निश्चित रुप से है।
2. पंचम भाव में लग्नेश भी है जो सन्तान को सुनिश्चित कर रहा है।
3. नवम भाव में उच्च का एकादशेश, चन्द्रमा है।
4. चन्द्रमा से पंचम भाव पर कोई अशुभ दृष्टि नहीं है।
5. बृहस्पति से पंचम में उच्च का चन्द्रमा है जो सन्तान के जन्म के लिए शुभ है।
6. नवांश में पंचम भाव, अपने स्वामी से दृष्ट है।
7. सप्तांश में पंचम भाव, उच्च के राहु-केतु के अक्ष में है और पंचम में शुभ राशि है।
8. पंचमेश बृहस्पति, नीचभंग राजयोग में लिप्त है और योग कारक मंगल से दृष्ट है।

सन्तान के जन्म में देरी करने वाले घटक:

1. निर्बली लग्नेश।
2. निर्बली पंचमेश और पीड़ित पंचम भाव।
3. निर्बली सप्तम भाव और सप्तमेश।

4. कारक बृहस्पति, निर्बली।

5. दुर्स्थित बीज/क्षेत्र स्फुट।

6. प्रतिकूल दशा।

उदाहरणः

विवाह 1973 में हुआ और प्रथम सन्तान 1983 में हुई

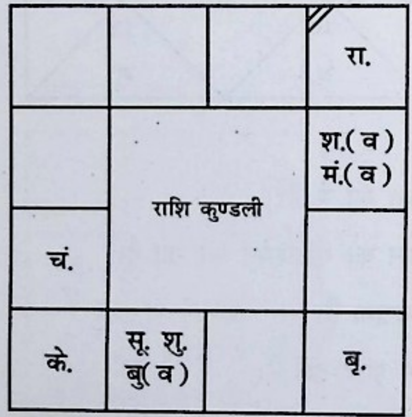

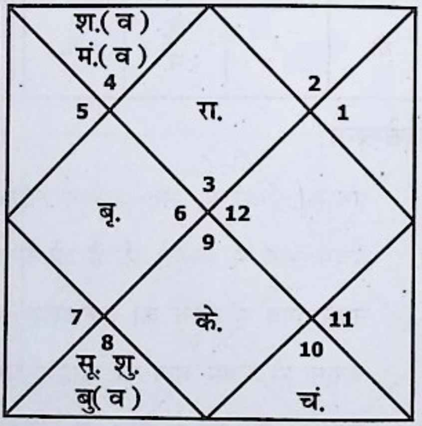

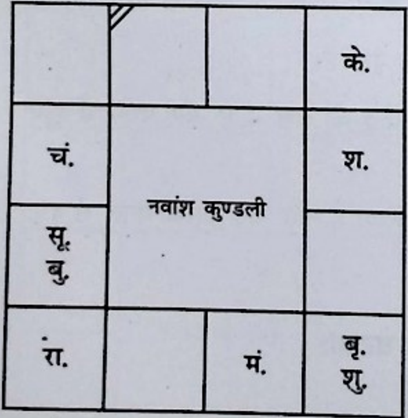

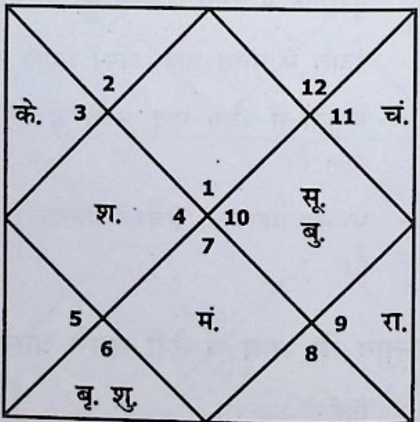

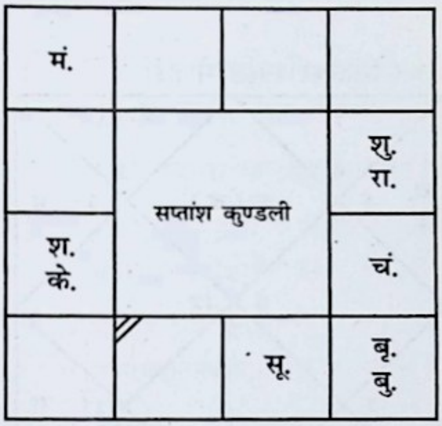

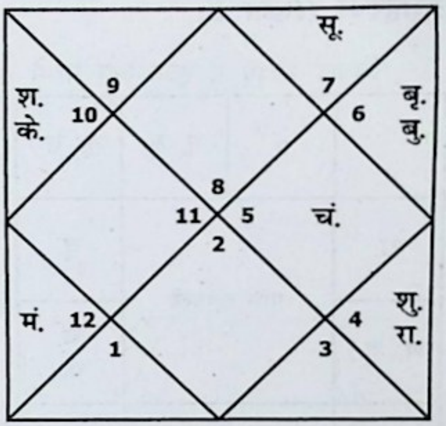

विवेचना:

1. पंचमेश शुक्र, षष्टम भाव में बैठा है।
2. पंचमेश शुक्र, षष्टम भाव में सूर्य और वक्री बुध के साथ युति में है। यह स्थिति विलम्ब के साथ-साथ सन्तानहीनता को भी इंगित करती है।
3. पंचम भाव, षष्टेश मंगल से दृष्ट है।
4. सप्तांश में षष्टेश मंगल, पंचम भाव में बैठकर शनि से दृष्ट है। यह स्थिति अत्याधिक परेशानियां उत्पन्न कर रही है। लेकिन पंचमेश बृहस्पति, उच्च के बुध के साथ स्थित होकर पंचम भाव को दृष्ट कर रहा है।
5. यद्यपि सप्तांश कुण्डली का पंचमेश बृहस्पति, उच्च के बुध के साथ स्थित है लेकिन षष्टेश मंगल से दृष्ट है। मंगल षष्टेश होने के साथ-साथ लग्नेश होने के कारण शुभ ग्रह है।
6. विवाह राहु की महादशा में हुआ जो सन्तान देने वाला नहीं है। सितंम्बर 1982 से बृहस्पति की दशा प्रारम्भ हुई जो सन्तान देने में सक्षम है।
7. 1983 में बृहस्पति की ही अन्तरदशा, सबसे अधिक अनुकूल समय था।
8. 1983 में शनि, पंचम भाव की राशि तुला में और बृहस्पति, वृश्चिक राशि में था जहां पंचमेश बैठा है।

विवाह के 10 वर्षों के पश्चात 1983 में इस जातक की प्रथम सन्तान ने जन्म लिया।

उदाहरण संख्या 2:

विवाह 1959 में हुआ और प्रथम सन्तान सितम्बर 1968 में हुई।

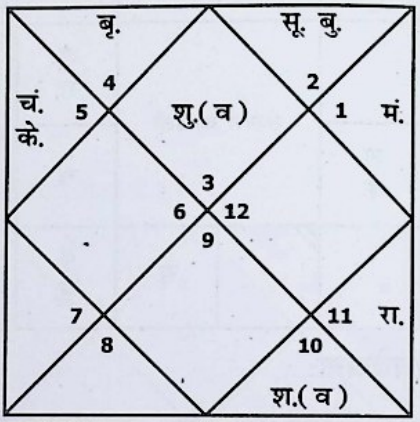

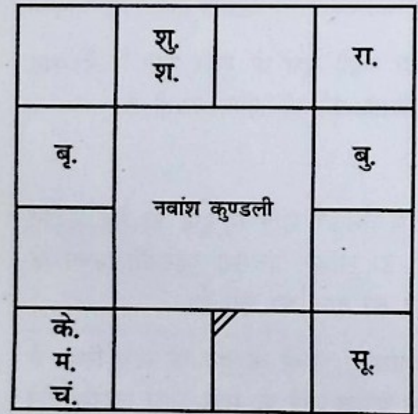

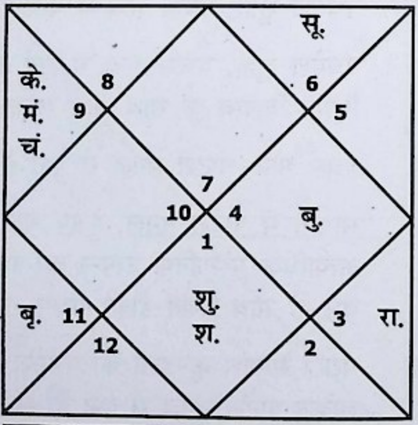

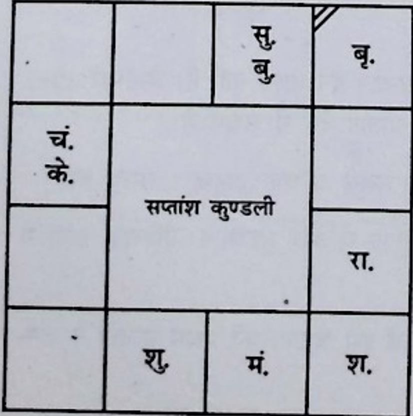

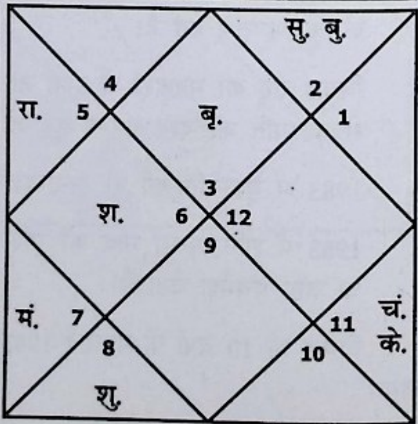

विवेचनाः

1. पंचम भाव वक्री शनि से दृष्ट है जो सन्तान के जन्म में विलम्ब को इंगित कर रहा है जबकि, बृहस्पति की दृष्टि, कुछ राहत दे रही है।
2. वक्री पंचमेश कष्टदायक परिणामों को इंगित कर रहा है।
3. सप्तांश कुण्डली में षष्टेश मंगल, पंचम भाव में है और बृहस्पति से दृष्ट है। बृहस्पति की दृष्टि पीड़ा को कम कर रही है।
4. सप्तांश का पंचमेश शुक्र षष्टम भाव में है और तृतीयेश सूर्य, लग्नेश बुध एवं अष्टमेश-नवमेश शनि से दृष्ट है।

विशेषः *लग्न कुण्डली और सप्तांश कुण्डली में नवमेश होने के कारण शनि सन्तान देने वाले ग्रह की योग्यता पा रहा है।*

5. 1965 के बाद राहु-शुक्र की दशा प्रारम्भ हुई। लग्न कुण्डली के नवम भाव में होने के कारण राहु सन्तान देने की योग्यता रखता है और शुक्र, कुण्डली का पंचमेश है।

गोचरः 1967 के उत्तरार्ध में शनि, मीन राशि में था लेकिन वक्री था और बृहस्पति सिंह राशि में बैठकर नवम भाव को दृष्ट कर रहा था। मंगल वृश्चिक एवं धनु में गोचर करके पंचमेश शुक्र को दृष्ट कर रहा था। सितम्बर 1968 में जब शनि मेष राशि से पंचम भाव एवं पंचमेश को और बृहस्पति एवं मंगल सिंह राशि से नवम भाव को दृष्ट कर रहे थे, इस जातक की भार्या ने सन्तान को जन्म दिया।

सन्तानहीनता के योगः

इन योगों की चर्चा श्री के. एन. राव ने अपनी पुस्तक "प्लेनेट एण्ड चिल्ड्रन" के अध्याय 14 में विस्तार से की है। संक्षिप्त में सन्तानहीनता देने वाले योग इस प्रकार से हैं:

1. बीज/क्षेत्र स्फुट का अष्टमेश, बुध, शनि या राहु से सम्बन्ध। यदि ये संवेदनशील बिन्दु राशि एवं नवांश कुण्डली दोनों में ही पीड़ित हों तो सन्तान के जन्म में विघ्न उत्पन्न करता है।
2. पंचम भाव में राहु-मंगल की राशि में अथवा मंगल से दृष्ट।
3. पंचमेश की राहु से युति।

4. राहु लग्न में और बृहस्पति एवं मंगल, पंचम भाव में।

5. राहु और बुध पंचम भाव में।

6. मंत्रेश्वर के मतानुसार पंचमेश और सप्तमेश की युति अथवा राशि परिवर्तन, सन्तानहीनता देता है।

7. ***अनपत्य योग*** अर्थात बृहस्पति, लग्नेश, पंचमेश एवं सप्तमेश का निर्बली होना।

8. लग्नेश एवं पंचमेश, 6, 8 या 12वें भाव में नीच के बृहस्पति के साथ और बुध एवं शनि पंचम भाव में।

9. पंचम भाव में स्थित शनि, चन्द्रमा से दृष्ट।

10. द्वितीयेश, पंचमेश एवं सप्तमेश की एक भाव में युति और इनके नवांशेश अशुभ ग्रह होकर अशुभ राशियों में स्थित। शास्त्रीय ग्रन्थों में इन योगों को सर्प, पिता, माता, भाई आदि के श्राप के अन्तर्गत विचारा गया है।

यह देखा गया है कि यदि राहु, पंचम भाव, पंचमेश एवं लग्न पीड़ित हों तो यह सर्प दोष के कारण होता है। यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव पीड़ित हों तो माता के और यदि तृतीय भाव, तृतीयेश एवं मंगल पीड़ित हों तो भाई के श्राप के कारण सन्तानहीनता होती है।

उदाहरण कुण्डली:

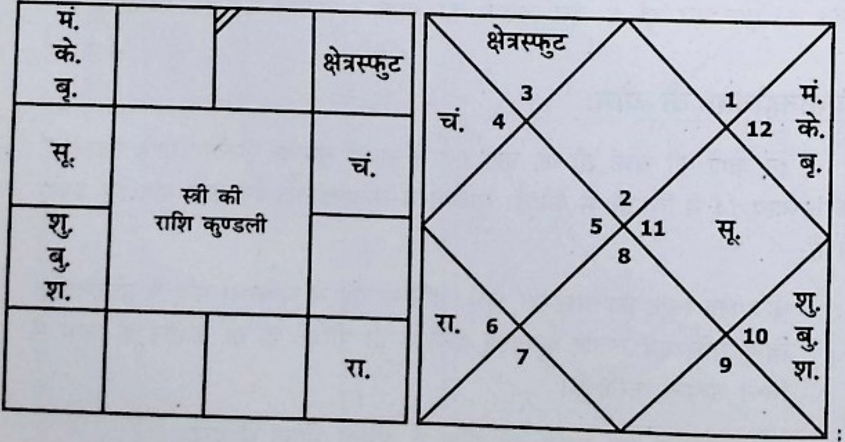

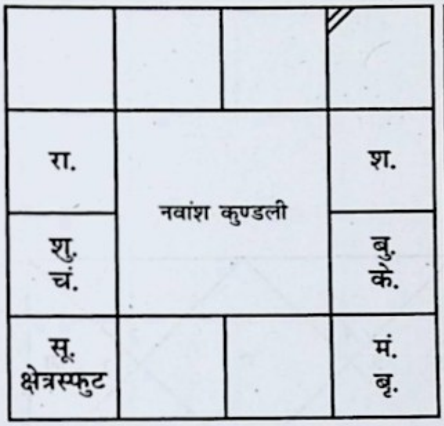

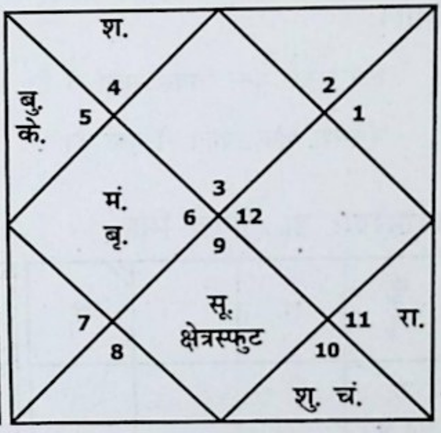

क्षेत्र स्फुटः

	राशि	अंश	मिनट	
चन्द्रमा का भोगांश	03	20	40	
मंगल का भोगांश	11	09	08	
बृहस्पति का भोगांश	11	07	17	
कुल	26	07	05	अर्थात 2 राशि 7 अंश व 5 मिनट

विवेचनाः

1. पंचम भाव में राहु है जो मंगल से दृष्ट है।
2. पंचमेश बुध एवं नवमेश शनि, नवम भाव में हैं। दोनों ही नपुसंक ग्रह है और लग्नेश एवं षष्टेश शुक्र के साथ हैं।
3. षष्टेश और नवमेश पैतृक श्राप हैं।
4. क्षेत्र स्फुट विषम राशि में है।

नवांशः

1. क्षेत्र स्फुट पुनः विषम राशि में है।
2. पंचमेश शुक्र, शनि से दृष्ट है।

उदाहरणः डा. नागेन्द्र सिंह

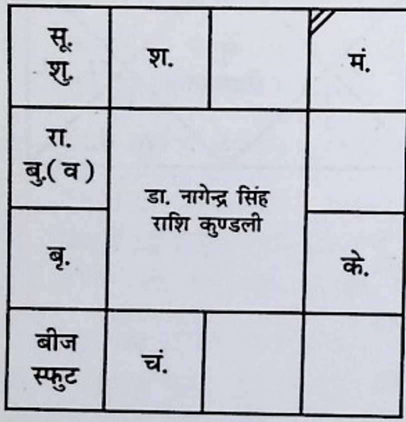

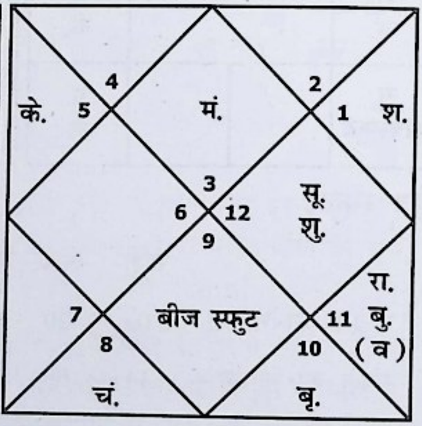

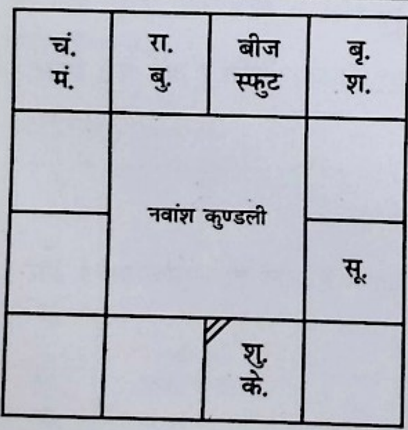

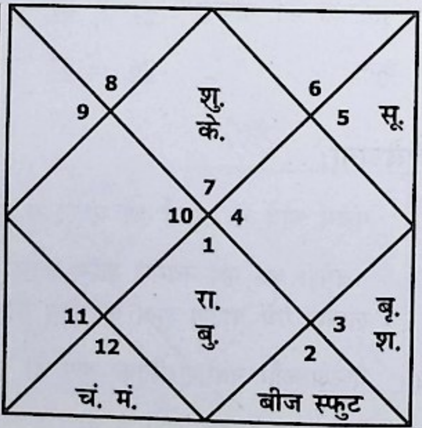

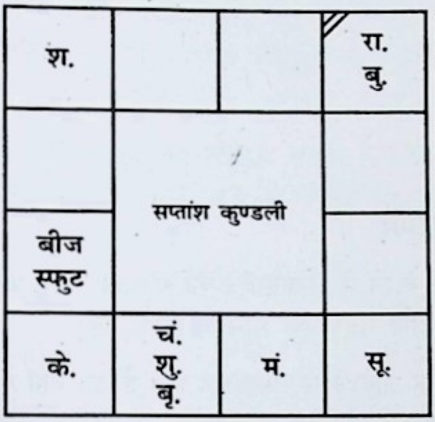

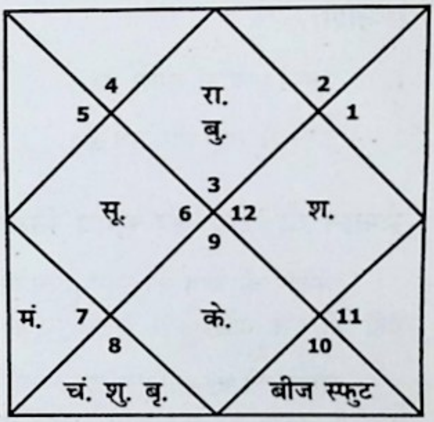

विवेचना: लग्न कुण्डली

1. बीज स्फुट, मंगल से दृष्ट है।
2. बीज स्फुट, कारक बृहस्पति से द्वादश भाव में है।
3. बीज स्फुट से पंचम में शनि है।
4. पंचम भाव पर शनि की दृष्टि है।
5. बृहस्पति से पंचम भाव पापकर्तरी योग में है।
6. सन्तान का कारक बृहस्पति नीच का है।

नवांश कुण्डली:

1. पंचमेश शनि, मंगल से दृष्ट है।
2. बृहस्पति, शनि एवं मंगल से पीड़ित है।
3. बीज स्फुट अष्टम भाव में सम राशि में है।
4. बृहस्पति से पंचम में केतु है जो मंगल से दृष्ट है। इसने अन्तिम अवसर भी समाप्त कर दिया।

सप्तांशः

1. पंचम भाव में मंगल है।
2. लग्न में राहु और बुध हैं।

सन्तान के जन्म का समय निर्धारणः

सन्तान के जन्म का समय निर्धारण करने में सन्तान देने की योग्यता रखने वाले ग्रहों की दशा और गोचर का अनुकूल होना महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दशाः जो ग्रह निम्नलिखित भावों या भावेशों से सम्बन्धित होते हैं उन ग्रहों की दशा में सन्तान देने की योग्यता होती है।

1. पंचम भाव अथवा पंचमेश।
2. नवम भाव अथवा नवमेश।
3. लग्न या लग्नेश।
4. बृहस्पति।

श्री के. एन. राव के मतानुसार एक महत्वपूर्ण नियम यह है कि लग्न कुण्डली एवं सप्तांश कुण्डली के पंचमेश की महादशा और पंचम में स्थित ग्रहों की दशा बिना अवरोध के सन्तान के जन्म को इंगित करती है।

गोचरः

सैकड़ों कुण्डलियों का अध्ययन करने के बाद श्री राव का यह मौलिक शोध है कि अनुकूल दशा होने के पर्यन्त भी सन्तान के जन्म के समय का निर्धारण, शनि एवं बृहस्पति का दोहरा गोचर ही करता है।

शनि का गोचरः जन्म के नौ मास के बीच में गोचर का शनि का, चाहे सीधी गति में अथवा चाहे वक्री गति में पिछले भाव से, पंचम भाव या पंचमेश को अथवा नवम भाव या नवमेश को दृष्ट करना आवश्यक है।

बृहस्पति का गोचरः बच्चे के जन्म के नौ माह के बीच गोचर के बृहस्पति को उपरोक्त वर्णित चार संवेदनशील बिन्दुओं में से किसी भी एक बिन्दु से सम्बन्ध बनाना आवश्यक होता है।

मंगल का गोचर: सामान्यत: बच्चे के जन्म के 75 दिनों के अन्दर उपरोक्त वर्णित चार संवेदनशील बिन्दुओं में से किसी भी एक बिन्दु से दृष्टि सम्बन्ध बनाता है।

चन्द्रमा का गोचर: चन्द्रमा को उपरोक्त वर्णित चार संवेदनशील बिन्दुओं में से किसी भी एक बिन्दु से सम्बन्ध बनाना आवश्यक है।

उदाहरण कुण्डलियां:

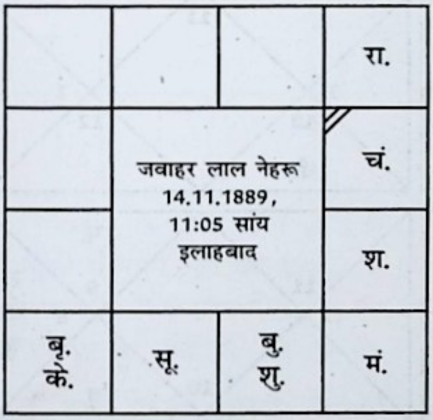

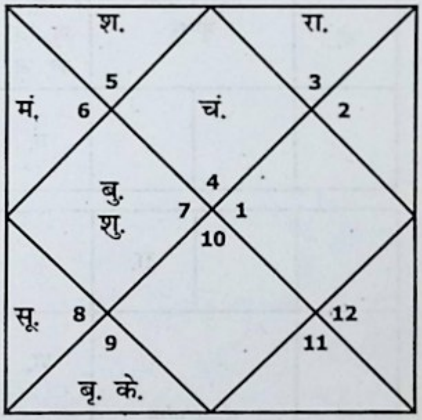

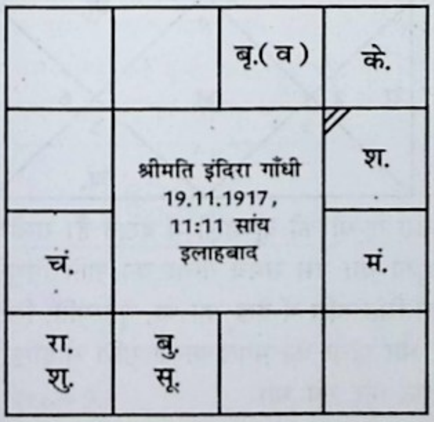

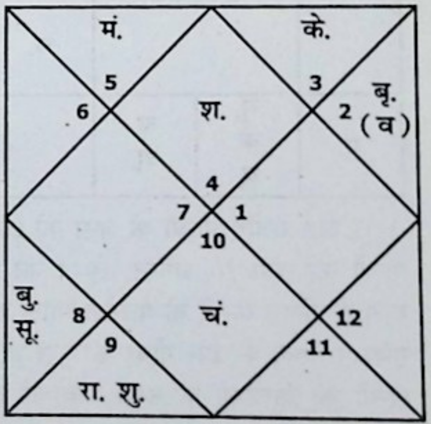

इन्दिरा गान्धी की कुण्डली के ग्रहों की स्थिति, नेहरू की कुण्डली में गोचर को इंगित करती हैं। जब 19 नवम्बर 1917 को इन्दिरा गान्धी का जन्म हुआ था उस समय शनि कर्क राशि में गोचर कर रहा था जहां से वह नेहरू के पंचमेश मंगल को कन्या राशि में दृष्ट कर रहा था। बृहस्पति वृषभ राशि में गोचर करते हुए नेहरू की कुण्डली में पंचम भाव एवं पंचमेश मंगल को दृष्ट कर रहा था। मंगल सिंह राशि में

गोचर करते हुए पंचम भाव को और चन्द्रमा मकर राशि से नेहरू के लग्न को दृष्ट कर रहा था।

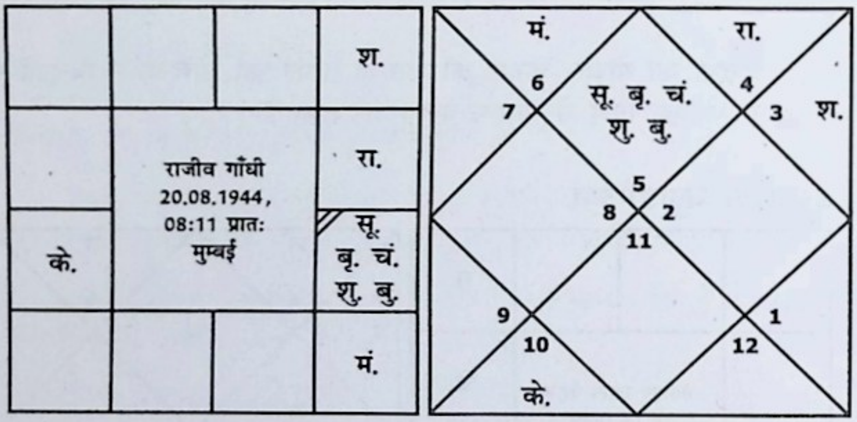

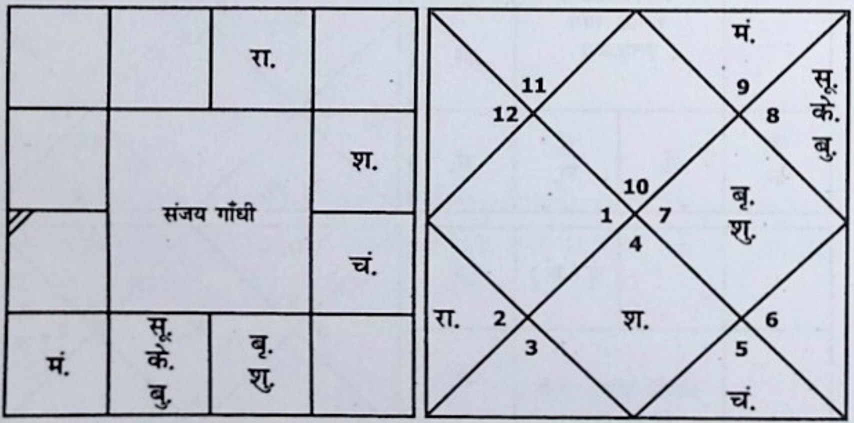

अब राजीव गान्धी के जन्म को इन्दिरा गान्धी की कुण्डली में देखते हैं। राजीव गान्धी का जन्म 20 अगस्त, 1944 को हुआ था। उस समय गोचर का शनि मिथुन राशि से इन्दिरा गान्धी के पंचमेश मंगल को सिंह राशि में देख रहा था, बृहस्पति, सिंह राशि में मंगल के उपर गोचर कर रहा था और गोचर का मंगल कन्या राशि से इन्दिरा गान्धी की कुण्डली के नवम भाव को दृष्ट कर रहा था।

संजय गान्धी के जन्म के समय गोचर का शनि यद्यपि कर्क राशि में था लेकिन उस वर्ष अर्थात 8 जून 1946 तक शनि मिथुन राशि में था जहां से वह इन्दिरा गान्धी के पंचमेश मंगल को सिंह राशि में देख रहा था। 17 अगस्त 1946 तक बृहस्पति कन्या राशि में था जहां से वह इन्दिरा गान्धी की कुण्डली के नवम भाव,

मीन राशि और नवमेश बृहस्पति को देख रहा था। गोचर का मंगल धनु राशि से पुनः नवम भाव में मीन राशि को दृष्ट कर रहा था।

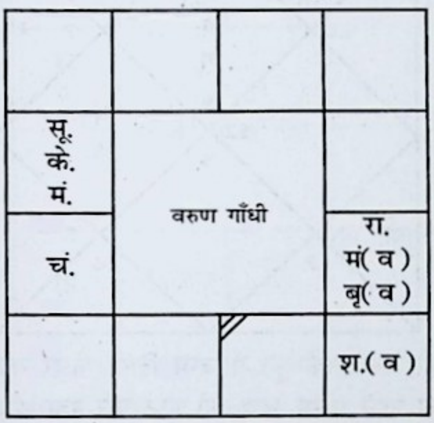

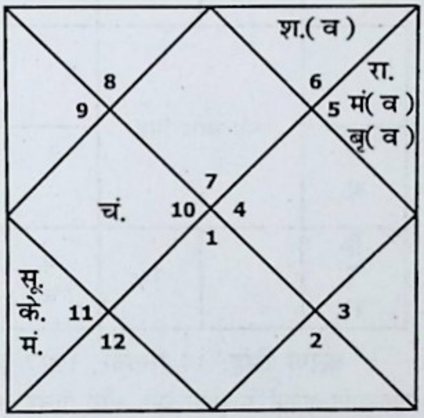

वरूण गान्धी के जन्म के समय शनि कन्या राशि में था जो उनके पिता की कुण्डली में नवम भाव की राशि है। यहां से शनि नवमेश बुध को भी दृष्ट कर रहा था। बृहस्पति सिंह राशि में वक्री होकर एक भाव पीछे से संजय गान्धी की कुण्डली के नवमेश बुध को दृष्ट कर रहा था।

लाल बहादुर शास्त्रीः 9 अप्रैल 1936 को जब इनके पुत्र ने जन्म लिया तो उस समय गोचर का शनि इनके पंचमेश मंगल को और गोचर का बृहस्पति इनके पंचम भाव को दृष्ट कर रहा था तथा गोचर का मंगल, मेष राशि में अर्थात इनके पंचम भाव में ही स्थित था।

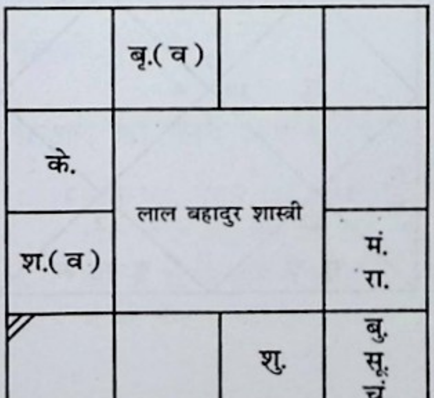

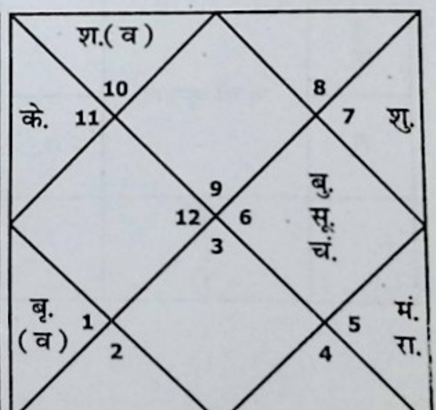

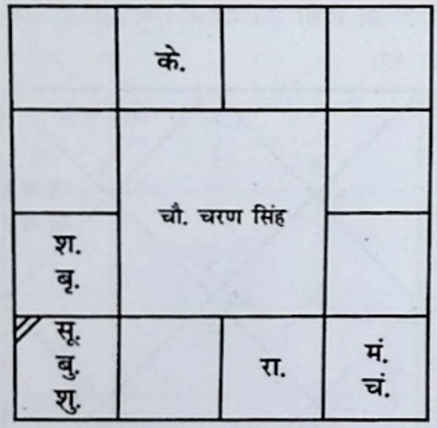

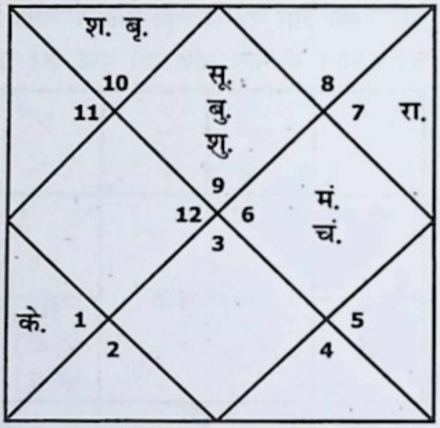

चरण सिंहः 14 सितंबर, 1927 को जब इनके पुत्र ने जन्म लिया गोचर का बृहस्पति इनके पंचमेश को और गोचर का शनि पंचम भाव को दृष्ट कर रहा था। गोचर का मंगल, इनके जन्म के मंगल के उपर गोचर करते हुए इनके पंचम भाव को दृष्ट कर रहा था।

विंशोत्तरी दशा से सन्तान के जन्म का समय निर्धारण:

आगे दी गई मां और उसकी प्रथम पुत्री की कुण्डलियों का अवलोकन करें।

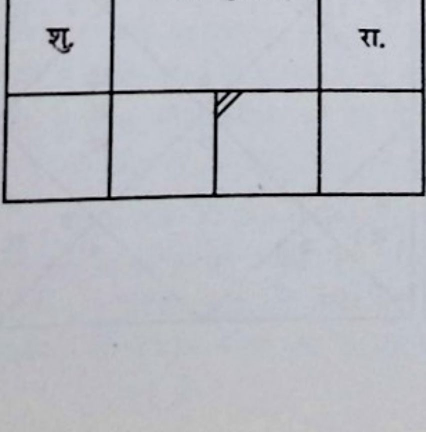

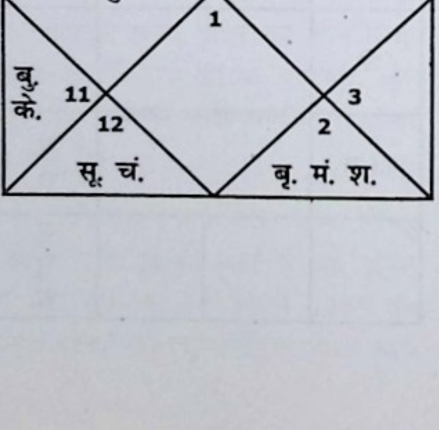

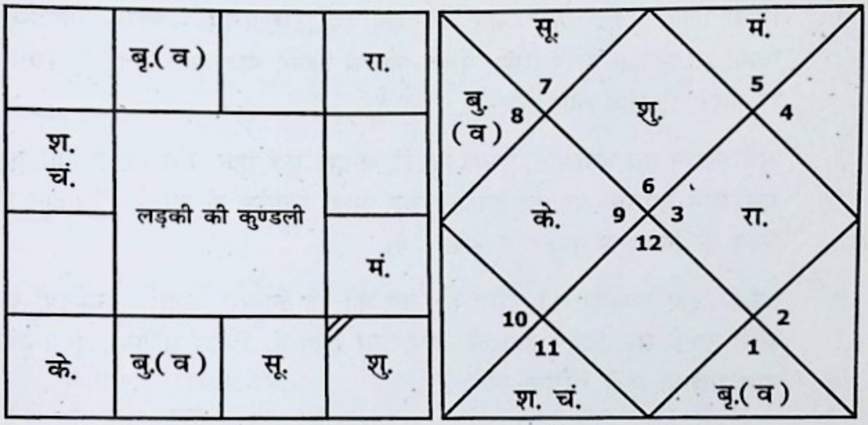

मां का जन्म 18 मार्च, 1942 को हुआ था और शेष भोग्य दशा बुध की 7 साल 3 माह एवं 16 दिन की थी।

इस जातिका का विवाह 1961 में हुआ और प्रथम कन्या सन्तान का जन्म 13 नवम्बर, 1964 हुआ। उस समय इस जातिका की शुक्र में राहु की दशा चल रही थी।

महादशा नाथ शुक्र के पास लग्नेश एवं शुभ ग्रह होने के कारण सन्तान देने की योग्यता है। राहु, पंचम भाव को दृष्ट कर रहा है जिसके कारण उसके पास भी योग्यता है।

गोचरः गोचर का शनि कुंभ राशि में पंचम भाव के उपर गोचर कर रहा था। बृहस्पति वक्री होकर मेष राशि में आया था अर्थात कुछ माह पूर्व वह वृषभ राशि पर गोचर कर चुका था जहां मां की कुण्डली का पंचमेश शनि और सन्तान कारक बृहस्पति बैठा है।

सन्तान का लिंग अर्थात पुत्र या पुत्रीः

1. सामान्यतः पंचम भाव, पंचमेश एवं इनको स्थिति, युति या दृष्टि द्वारा प्रभावित करने वाले ग्रह और बृहस्पति, होने वाली सन्तान के लिंग के विषय में संकेत देते हैं। इनको राशि कुण्डली के साथ-साथ नवांश, सप्तांश और चन्द्र कुण्डली में भी देखना चाहिए।

2. इसके लिए, **"पुत्र पद"** और बीज/क्षेत्र स्फुट से पंचम भाव का भी प्रयोग किया जा सकता है। पंचमेश, पंचम भाव से जितने भाव आगे होता है, पंचमेश से उतने ही भाव आगे पुत्र पद होता है।

3. सूर्य, मंगल एवं बृहस्पति, पुरूष ग्रह हैं, चन्द्रमा एवं शुक्र, स्त्री ग्रह हैं और बुध एवं शनि नपुंसक ग्रह हैं। इनका पंचम भाव, पंचमेश से सम्बन्ध, सन्तान के लिंग के विषय में संकेत दे सकता है।

4. इसके लिए पंचमेश की राशि के लिंग को भी विचारा जाता है। राशियों का लिंग उनके सम-विषम होने के आधार पर होता है। विषम राशियां, पुरुष और सम राशियां, स्त्री राशियां होती हैं।

5. वक्री ग्रह, अनुमानित न किये जाने वाला परिणाम देते हैं।

6. दशा भी सन्तान के लिंग की ओर इशारा करती है। उच्च के पुरुष ग्रह की दशा में सामान्यतः पुत्र का जन्म होता है।

7. पंचम भाव में सुस्थित पंचमेश कई पुत्रों के जन्म को इंगित करता है।

8. उच्च का पंचमेश, केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो कई पुत्रों की ओर इशारा करता है।

9. सूर्य से युत, पुरुष राशि में स्थित बुध एवं केतु, पुरुष ग्रहों के समान ही परिणाम देते हैं और पुरुष राशियों में पुरुष ग्रहों की युति में स्थित ग्रह, पुत्र को जन्म देते हैं।

10. पंचम भाव में स्थित चन्द्रमा सामान्यतः प्रथम सन्तान के रुप में पुत्री को जन्म देता है।

11. सर्वार्थ चिन्तामणी के मतानुसार सन्तान का विचार पंचम, सप्तम और नवम भावों से करना चाहिए।

12. जातक पारिजात के मतानुसार पंचम भाव से षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भाव में स्थित अशुभ ग्रह पुत्र के जन्म के लिए शुभ नहीं होते हैं।

13. प्रथम सन्तान का लिंग पंचम भाव से, द्वितीय का सप्तम भाव से और तृतीय का नवम भाव से विचार करना चाहिए।

सुयोग्य सन्तान का जन्मः

किसी भी जातक की सन्तान योग्य होगी अथवा नहीं यह बताने के लिए कुण्डली में पंचम भाव, पंचमेश, कारक बृहस्पति और सूर्य की स्थिति निर्णायक सिद्ध होती है।

1. बृहस्पति पंचमेश हो और सूर्य सुस्थित हो तो सन्तान योग्य होती है।
2. पंचमेश का बल और उसकी केन्द्र या त्रिकोण की स्थिति सन्तान से प्राप्त होने वाली खुशियों की ओर इशारा करती है।
3. पंचम भाव अथवा पंचमेश पर बृहस्पति की दृष्टि और पंचम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि ऐसी सन्तान को जन्म देती है जो माता-पिता का नाम रोशन करते हैं। चन्द्रमा से पंचम भाव का आंकलन भी अवश्य करना चाहिए।
4. षष्टेश से युत पंचमेश ऐसे पुत्र को जन्म देता है जो पिता का विराधी होता है। इसी प्रकार के परिणाम तब भी प्राप्त होते हैं जब पंचमेश, अष्टमेश या द्वादशेश से युति करता है। लेकिन यह भविष्यकथन कहने से पहले इस दुष्प्रभाव को कम करने वाले अन्य योगों जैसे कि शुभ ग्रहों की दृष्टि, लग्नेश का बली होना, राजयोग होना आदि का भी आंकलन अवश्य करना चाहिए।
5. यदि पंचम भाव अथवा पंचमेश पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो तो ऐसी सन्तान का जन्म होता है जो माता-पिता को मानसिक तनाव और सन्ताप देते हैं। इस विषय को श्री के. एन. राव ने अपनी स्मरणार्थ कार्य "कर्मा एण्ड रिबर्थ" में उजागर किया है।

आगे दी गई माता-पिता की कुण्डलियों का अवलोकन करें।

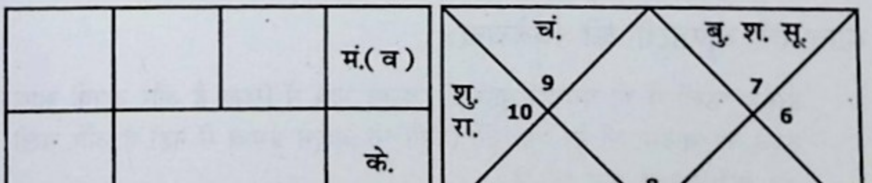

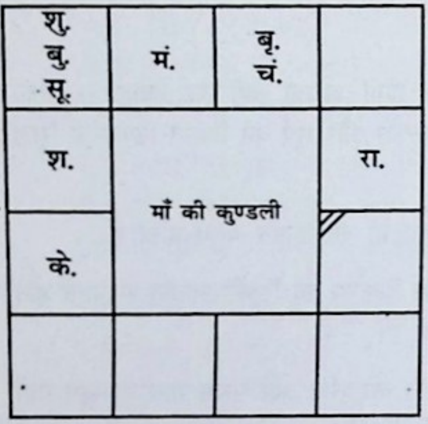

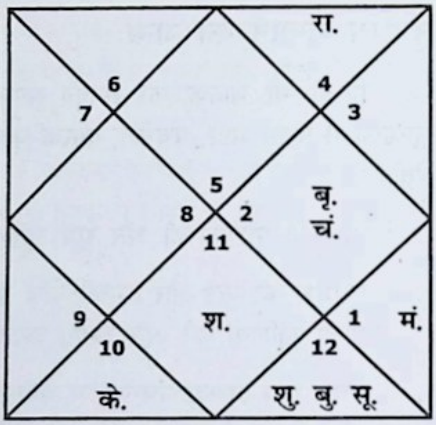

पिता की कुण्डली की विवेचनाः

1. पंचमेश बृहस्पति की स्थिति को देखें। यह सबसे बली केन्द्र, दशम में स्थित है।
2. पंचम भाव एवं पंचमेश बृहस्पति पर कोई भी अशुभ प्रभाव नहीं है।
3. पंचमेश बृहस्पति, नवमेश चन्द्रमा को कुटुम्ब भाव अर्थात द्वितीय भाव में दृष्ट कर रहा है।
4. नवमेश चन्द्रमा लग्नेश मंगल और उच्च के चतुर्थेश, शनि से दृष्ट होकर राजयोग और खुशियां सुनिश्चित कर रहा है।
5. चन्द्रमा से पंचम भाव, चन्द्रमा से नवमेश सूर्य और दशमेश बुध से दृष्ट होकर पूर्व जन्मों के पुण्यों, भाग्य और कर्म में सम्बन्ध स्थापित कर रहा है।

माता की कुण्डली की विवेचनाः

1. इस कुण्डली में भी पंचमेश बृहस्पति, दशम भाव में स्थित है और उसके साथ उच्च का चन्द्रमा भी है। यह युति किसी भी अशुभ प्रभाव में नहीं है और बली गज-केसरी योग बना रही है।
2. पंचम भाव अशुभ ग्रहों के प्रभाव में नहीं है।
3. चन्द्रमा से पंचम भाव, अपने स्वामी बुध से दृष्ट है जो उच्च के शुक्र के साथ बैठकर, नीचभंग राजयोग बना रहा है। शुक्र, चन्द्रमा का राशीश है और लग्न से दशम भाव का स्वामी है।

उपरोक्त विवेचना से बिना किसी संशय के यह स्पष्ट हो जाता है कि इस दम्पति की सन्तान सुयोग्य होगी। इस दम्पति की सन्तान ने जीवन के उच्च स्तर को प्राप्त किया, जीवन पर्यन्त अपने माता-पिता को सुख पहुंचाया और उनके किये कार्य कई लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत सिद्ध हुए।

सन्तान की संख्याः

आधुनिक परिवेश में सन्तान की संख्या का अनुमान लगाना उचित्त नहीं है क्योंकि अधिकतर दम्पति एक या दो से अधिक सन्तान नहीं चाहते हैं। आगे शास्त्रीय ग्रन्थों में इस विषय के लिए वर्णित नियमों को दिया गया है जो कुछ विशेष मामलों में ही सही परिणाम देते हैं।

1. पंचमेश के नवांश की संख्या से सन्तान की संख्या अनुमानित की जा सकती है।
2. बृहस्पति के अष्टकवर्ग में बृहस्पति से पंचम भाव के शुभ बिन्दुओं की संख्या से सन्तान की संख्या को ज्ञात किया जा सकता है।
3. नक्षत्रों पर आधारित गणना कुछ अधिक सटीक परिणाम दे सकती है लेकिन उसका यहां उल्लेख नहीं किया जा रहा है।

अध्याय 7

षष्टम भाव
(ऋण, रोग और शत्रु)

कुण्डली के षष्टम भाव से विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. रोग।
2. शत्रुओं से परेशानियां।
3. चोट और घाव।
4. कानूनी मुकदमेबाजी।
5. दु:ख और चिन्तायें।
6. मामा और ममेरे भाई-बहन।
7. सेनायें।
8. ऋण।
9. दुर्घटनायें।
10. नौकर या सेवक।
11. दुर्गति और दुर्भाग्य।
12. चरित्रहनन।
13. वस्त्र।
14. अपमान।

15. पराशर के मतानुसार यह भाव सौतेली माता को भी सूचित करता है। यह भाव इन्द्रियों से भी सम्बन्धित होता है और स्त्री की कुण्डली में चरित्रहीनता, गर्भपात, अकाल प्रसव आदि इस भाव से सम्बन्धित होते हैं।

षष्टम भाव उपचय भाव अर्थात वृद्धि करने वाला भाव भी है। उपचय भाव में स्थित ग्रह के कारकत्वों और ग्रह के स्वामित्व वाले भावों के कारकत्वों में स्वतः ही वृद्धि होती है। अतः उपचय भाव होने के कारण षष्टम भाव शुभ परिणाम देता है लेकिन इसके दुर्स्थान होने परिणामों को भी नकारा नहीं जा सकता है।

कोई भी मनुष्य तब तक ही जीवत रह पाता है जब तक वह प्रकृति के द्वारा दिये जाने वाले संताप और विघटनकारी ताकतों से अपनी आन्तरिक शक्ति के बल पर लड़ने में सक्षम होता है। आन्तरिक शक्ति ही वह ताकत है जिससे बाहरी तनाव देने वाली स्थितियों का सामना किया जा सकता है। यदि आन्तरिक शक्ति बलवान नहीं होती है तो जातक शीघ्र ही परास्त जाता है जिसके कारण उसका शारीरिक और मानसिक उत्पीडन होता है। षष्टम भाव और षष्टम भाव से सम्बन्धित ग्रह, जातक की उसी आन्तरिक शक्ति की निर्बलता को, उसकी भाग्यहीनता की सीमा को और शत्रुओं को परास्त करने की शक्ति को दर्शाते हैं।

आधुनिक परिवेश में, जहां जीवित रहने के लिए अत्याधिक संघर्ष करना पड़ता है, वहां सभी भौतिक सुखों को प्राप्त करने और विरोधियों को परास्त करने के लिए कुण्डली के षष्टम भाव और षष्टेश को बली होना अतिआवश्यक है, लेकिन यह लग्न-लग्नेश से कम बली होने चाहिए। यदि षष्टेश, लग्नेश से बली हो तो जातक प्रतिस्पर्धाओं में असफल होता है।

षष्टम भाव में अशुभ ग्रहः

षष्टम भाव में अशुभ ग्रहों का बैठना अच्छा माना जाता है और षष्टम भाव में स्थित अशुभ ग्रह, कुण्डली का बली होना दर्शाता है, लेकिन इनको पीड़ित नहीं होना चाहिए। यदि तीन पीड़ित अशुभ ग्रह षष्टम या अष्टम भाव में बैठे हों या इन भावों को दृष्ट करते हैं तो जातक जन्म से ही रोगों से ग्रस्त रहता है, शत्रुओं के षडयन्त्रों से पीड़ित होता है तथा आर्थिक हानि उठाता है।

षष्टम भाव में उच्च का शनि, मंगल, राहु और सूर्य, रोगों एवं शत्रुओं से लड़ने के लिए अधिक अनुकूल माने जाते हैं। इनमें से किसी का भी प्रथम भाव से सम्बन्ध

जातक का खेलों अथवा ऐसे ही अन्य प्रतिस्पर्धाओं अथवा आत्मसंयम के विशेष गुणों को उजागर करता है।

षष्टम भाव में शनि, मंगल, राहु या सूर्य का नीच का होना जातक का शारीरिक और मानसिक रुप से पीड़ित होना इंगित करता है।

षष्टम भाव में शुभ ग्रहः

सामान्यतः षष्टम भाव में शुभ ग्रहों का बैठना अच्छा नहीं माना जाता है क्योंकि इनका सबसे श्रेष्ठ स्थान केन्द्र एवं त्रिकोण भाव होता है जहां ये नैसर्गिक बल पाकर कुण्डली के जातक को भौतिक और आर्थिक लाभ देते हैं। यद्यपि षष्टम भाव में स्थित शुभ ग्रहों का शुभत्व बेकार हो जाता है लेकिन वे जातक को रोग, ऋण और न्यायालय सम्बन्धित परेशानियों से बचाते हैं। षष्टम भाव में स्थित बली चन्द्रमा यदि अपने अष्टकवर्ग में 5 से अधिक शुभ बिन्दुओं के साथ हो तो जातक को अत्याधिक धनवान बनाता है। भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार षष्टम भाव का चन्द्रमा जातक को बुद्धिमान बनाता है जबकि तृतीय भाव का चन्द्रमा भ्रमित बुद्धि देता है।

इस भाव में बृहस्पति, शुक्र या बुध भी अच्छे होते हैं। यद्यपि ये शत्रुओं या रोगों से लम्बे समय तक चलने वाला भय देते हैं लेकिन यदि पीड़ित न हों तो अन्त में जातक की ही विजय होती है अर्थात केवल अनुकूल स्थितियों में ही विजय प्राप्त करने की शक्ति देते हैं। अन्य स्थितियों में, विशेषकर यदि नीच के हों तो कामासक्त जीवन देते हैं।

षष्टम भाव कुण्डली के सबसे बली केन्द्र दशम भाव का भाग्य स्थान अर्थात नवम भाव है। यदि शुभ ग्रह, सुस्थित, अपीड़ित और शुभ राशि का होकर षष्टेश दशम में बैठता है तो शुभ परिणाम देता है। उदाहरणतः जवाहर लाल नेहरू की कुण्डली में बृहस्पति स्वराशि का होकर षष्टम भाव में बैठा है और वहां से दशम भाव को दृष्ट कर रहा है। नेहरू अपने जीवन में सर्वोच्च स्थित तक पहुंचे, यद्यपि यह बात भी सत्य है कि कुण्डली में इसके अतिरिक्त, अन्य शुभ बली योग भी थे। षष्टम एवं द्वादश भाव में बैठा शुक्र भी धनदायक होता है।

षष्टेश के साथ स्थित सूर्य और चन्द्रमा, जातक का पतन करते हैं। मंगल के साथ युत षष्टेश यदि लग्न में हो तो जातक को हथियारों से घाव देता है। यदि बुध के साथ लग्न में हो तो पित्त से सम्बन्धित रोग, यदि शनि के साथ हो तो निम्न स्तर के व्यक्तियों से परेशानियां और राहु-केतु के साथ हो तो सर्पदंश का भय देता है।

मीन लग्न की कुण्डली में यदि षष्टेश सूर्य, शुक्र एवं बुध के साथ युति करके अष्टम भाव में बैठता है तो जातक को अस्थमा, टी.बी., पार्श्वशूल जैसे रोग देता है।

यदि षष्टेश कुण्डली में उच्च का हो तो ऐसा जातक शत्रुओं द्वारा पीड़ित नहीं होता है और बिना किसी परेशानियों के उन्नति प्राप्त करता है।

विभिन्न भावों में स्थिति षष्टेश के परिणाम

षष्टेश प्रथम भाव में: सत्याचार्य के अनुसार लग्न में स्थित षष्टेश जातक को अधिकार और सत्ता देता है।

महर्षि पराशर के अनुसार ऐसा जातक धनवान, प्रसिद्ध, उच्च शिक्षित और साहसी होता है लेकिन उसका पुत्र नहीं होगा। यह जातक को उच्च प्रशासनिक अधिकारी और युद्ध एवं कारागार से सम्बन्धित मंत्री या अधिकारी बनाता है।

जातक अलंकार के अनुसार लग्न में स्थित षष्टेश शुत्रुओं का नाश करता है।

यदि निर्बली और पीड़ित हो तो जातक को चोर, डाकू अथवा अपराधियों का सरदार बनाता है।

महर्षि पराशर के मतानुसार ***"तुला लग्न, गुरू खल"*** अर्थात तुला लग्न में यदि षष्टेश बृहस्पति, लग्न में स्थित होता है तो जातक का स्वास्थ्य कभी भी अच्छा नहीं होता है और जातक अपने प्रत्येक प्रयास में असफल रहता है।

षष्टेश की लग्नेश के साथ युति रोग का कारण होती है।

षष्टेश का बुध और मंगल को पीड़ित करना, जातक के मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए शुभ नहीं होता है।

षष्टेश द्वितीय भाव में: साहसी, प्रखर वक्ता, प्रसन्न लेकिन पारिवारिक जीवन में न कह सकने वाला कष्ट, निकट सम्बन्धियों द्वारा अपमानित और विदेश में निवास।

यदि अशुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक का पारिवारिक जीवन कष्टपूर्ण होता है, आंखों में विकृति होती है, दान्त टेडे होते हैं, हकलाता है और दरिद्रता से ग्रस्त होता है। यदि कुण्डली में शुक्र भी निर्बली हो तो विवाह ही नहीं होता। उसके परिवार में कलह बना रहता है और चोरी द्वारा धन हानि उठाता है। उसे समय पर भोजन नहीं मिलता और उसके छोटे भाई नहीं होते हैं।

षष्टेश तृतीय भाव में: सामान्यत: ऐसा जातक धनवान होता है।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो भाइयों से शत्रुता, हिंसक स्वभाव, झगड़ालू, समझोता न करने वाला, पापात्मा, द्रोही और असहनीय होता है तथा मामा के द्वारा धन हानि पाता है।

षष्टेश चतुर्थ भाव में: शिक्षा एवं माता, रोग के कारण पीड़ित होते हैं। जातक का घर भी पुराना और जीर्ण-क्षीण हो सकता है। शिक्षा में बाधायें उत्पन्न करता है।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो समस्याओं से ग्रस्त जीवन, कारावास, दरिद्र एवं सेवक, माता से झगड़ा, माता चरित्रहीन और भूमि या घर के कारण परेशानियां।

षष्टेश पंचम भाव में: मामा का दत्तक पुत्र या मामा द्वारा लालन-पालन, धन-समृद्धि और प्रसिद्ध।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो उच्च शिक्षा और सन्तान में परेशानियां।

षष्टेश षष्टम भाव में: षष्टेश का षष्टम भाव में ही स्थित होने के कारण जातक शारीरिक एवं मानसिक कष्ट देने वाली स्थितियों लड़ने में समर्थ होता है। जातक के मामा धनवान और भाग्यशाली होते हैं। यदि षष्टम भाव के कारक के रूप में शनि लग्न में होता है तो जातक भाग्यवान होता है और सेनाध्यक्ष या सेना में अधिकारी हो सकता है।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो जातक शत्रुओं से परेशानियां पाता है।

षष्टेश सप्तम भाव में: जातक के मामा समृद्ध होगें, विदेश में वास कर सकते हैं और जातक अपनी मामा की लड़की से विवाह भी कर सकता है।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो भार्या के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होता है, भार्या से सम्बन्ध अच्छे नहीं होते हैं और षष्टेश की दशा में जातक की भार्या की मृत्यु भी हो सकती है। यदि लग्नेश नपुंसक राशि में हो जातक भी नपुंसक हो सकता है।

षष्टेश अष्टम भाव में: मध्यम आयु। अष्टम भाव में स्थित षष्टेश यदि किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो विपरीत राजयोग बनाता है और जातक को धन-समृद्धि देता है।

सत्याचार्य के मतानुसार ऐसा षष्टेश जातक को दाव लगाने वाले खेलों का शौक, जुआं खेलने की आदत, परेशानियों भरा समय और उपदंश रोग देता है। ऐसा जातक जीवनभर रोगी और ऋणी होता है।

षष्टेश नवम भाव में: यद्यपि जातक का पिता जज या न्यायाधीश हो सकता है लेकिन यदि अशुभ ग्रहों से प्रभावित हो जातक से शत्रुवत व्यवहार होता है। यदि निर्बली या दुस्थित हो तो जातक घृणास्पद या बुरा समय झेलता है और भाग्यहीन होता है।

षष्टेश एवं अष्टमेश की नवमेश से युति हो तो जातक के जन्म से पहले ही, पिता की मृत्यु हो सकती है और यदि इस युति में सप्तमेश भी शामिल हो जाता है तो पिता की मृत्यु विदेशी भूमि में होती है। यदि षष्टेश की नवमेश से युति हो तो पिता के साथ शत्रुता देता है।

षष्टेश दशम भाव में: ऐसा जातक बुरे या क्रूर कार्य करता है। वह दिखने में धार्मिक हो सकता है लेकिन पापकर्मों में लिप्त रहता है। नौकरी में स्थानांतरण या परिवर्तन होता रहता है अर्थात जातक लम्बे समय तक एक स्थान में नौकरी नहीं कर पाता है। यदि दुस्थित या निर्बली हो तो नौकरी से निकाला जाता है।

षष्टेश एकादश भाव में: जातक का बड़ा भाई अधिकार सम्पन्न उच्च पदाधिकारी होता है जो जुर्माना करने या कारावास देने का अधिकार रखता है। जातक स्वयं उच्च शिक्षित और सक्षम होता है। उदाहरणतः नीचे दी गई श्री आई. के. गुजराल की कुण्डली का अवलोकन करें।

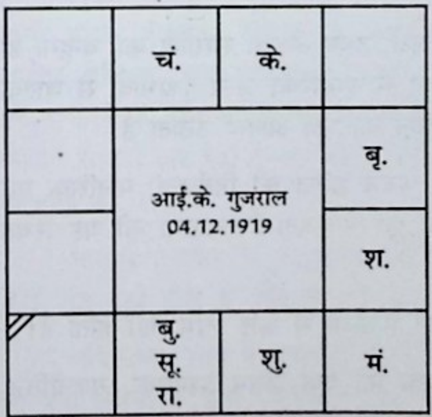

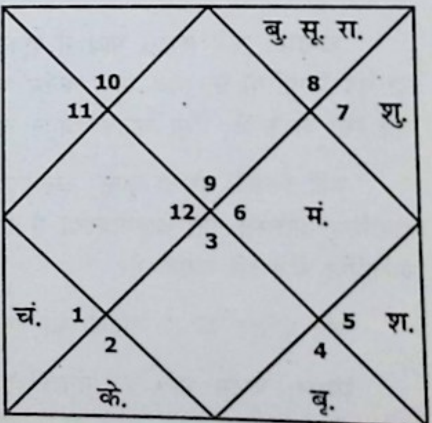

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो घृणास्पद एवं परेशानियों से भरा जीवन तथा सत्याऋषि के अनुसार जुआं खेलने की आदत, और उपदंश रोग देता है।

षष्टेश द्वादश भाव में: जातक का बड़ा भाई समृद्धशाली और न्यायाधीश होगा। यदि पीड़ित या निर्बली हो तो दयनीय जीवन, दूसरों को परेशानियां देने वाला और व्यर्थ में अनैतिक कार्यों पर धन व्यय करने वाला होता है।

षष्टम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम

सूर्यः सुप्रसिद्ध और साझेदारी में किये गये सभी प्रकार के कार्यों में सफल व्यक्ति। राजनीतिज्ञ भी हो सकता है। सत्याचार्य के मतानुसार षष्टम भाव में स्थित सूर्य जातक को हार, विफलता, दु:ख, रोग और ऋण से मुक्त रखता है।

पाश्चात्य ज्योतिषशास्त्र, षष्टम भाव में स्थित सूर्य को अच्छा नहीं मानता है। उनके मतानुसार आत्मा का कारक होकर लग्न के शत्रु भाव में होने के कारण ऐसा सूर्य कुण्डली के नैसर्गिक बल को कम कर देता है। यदि षष्टम भावगत सूर्य, शनि से पीड़ित हो तो जातक को बिमारियों से ठीक होने में अधिक समय लगता है। ऐसे जातक की प्रतिरोधक क्षमता कम और रोग की चपेट में शीघ्र आने की प्रवृति अधिक होती है।

यदि षष्टम भाव में स्थित सूर्य पीड़ित हो तो आंखों के रोग, हड्डियों के रोग, हृदय रोग, अस्थमा, नाड़ी-मण्डल की दुर्बलता से होने वाले रोग और कण्ठ के संक्रामक रोग देता है।

चन्द्रमाः यदि षष्टम भाव में शुक्लपक्ष, उच्च अथवा स्वराशि का चन्द्रमा हो तो यह बिमारियों के साथ-साथ षष्टम भाव से सम्बन्धित अन्य दुष्प्रभावों से जातक की रक्षा करता है। ऐसा जातक अपने जीवन का पूर्ण आनन्द उठाता है।

यदि निर्बली हो तो कष्ट, अल्पायु, पाचन शक्ति की निर्बलता, मानसिक एवं शारीरिक आलस्य और बाल्यावस्था में रोग एवं भय देता है। चन्द्रमा की यह स्थित बालारिष्ट योग भी बनाती है।

यदि पीड़ित हो तो जातक को अपने मामाओं से कोई लाभ नहीं होता है।

मंगलः षष्टम भाव का मंगल जातक को एक सक्षम प्रशासक, राजनीतिज्ञ, विरोधियों पर विजय प्राप्त करने वाला, खेलों और कानूनी लड़ाइयों में विजयी बनाता है।

यदि पीड़ित हो तो मंगल से सम्बन्धित रोग एवं कष्ट जैसे कि छाले, स्थिर घाव, कमजोर छाती एवं मांसपेशियां, चेचक, दुर्घटनायें और नौकरों द्वारा पीड़ा होती है। यदि षष्टम भाव में स्थित मंगल, शनि से पीड़ित हो तो जातक को शल्यचिकित्सा, हथियारों, अग्नि और विष से मृत्यु भय होता है। जातक पारिजात के मतानुसार यदि षष्टम भाव में स्थित मंगल, शनि से दृष्ट हो तो जातक, शत्रु की स्त्री की प्राप्ति करता है।

बुधः यदि बुध बली हो तो तीक्ष्ण बुद्धि और प्रसिद्धि के साथ-साथ झगड़ालू प्रवृति भी देता है। ऐसा जातक सन्तों से दैवीय ज्ञान प्राप्त करता है।

पीड़ित बुध क्षीण बुद्धि, मानसिक अवसाद, चर्म रोग, पाचन शक्ति की निर्बलता, जननांगों के रोग और शिक्षा में बाधा देता है।

बृहस्पतिः षष्टम भाव में स्थित बली बृहस्पति जीवनवृत्ति के लिए अतिशुभ होता है क्योंकि वह यहां से दशम भाव को दृष्ट करता है। ऐसा जातक धनवान और अपने विरोधियों पर नियंत्रण रखने वाला व्यक्ति होता है। समाज में पीड़ित लोगों तक अपनी सहायता का हाथ बढ़ाकर लोगों के कष्ट को दूर करता है। उसकी संगीत और नृत्य में अनुरक्ति होती है।

निर्बली बृहस्पति मधुमेह, जिगर, खून और पाचन तन्त्र से सम्बन्धित रोगों की ओर अग्रसर करता है। सन्तान एवं धन का कारक होने के कारण इनसे कष्ट और परेशानियां तथा मदिरा, परस्त्रियों और लाटरी आदि की आसक्ति देता है।

शुक्रः जातक के कई शत्रु होते हैं और वे इतने सशक्त और बलिष्ठ होते है मानो उन्होंने देवताओं की भान्ति अमृतपान किया हो। अतिव्ययी होने के कारण जातक, दरिद्रता, ऋण और मानसिक अवसाद पाता है। षष्टम भावगत शुक्र, भरपूर प्रयत्न करने के उपरान्त भी व्यवसाय में हानि ही देता है और यहां तक कि व्यवसाय को ही समाप्त कर देता है तथा गलत मंत्रों के उच्चारण के द्वारा भी जातक को हानि पहुंचाता है।

भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार यदि षष्टम भाव में शुक्र हो तो ऐसे जातक को कोई शत्रु नहीं होता है और वह समृद्ध एवं धनवान होता है।

यदि षष्टम भाव में स्थित शुक्र, पीड़ित हो तो वैवाहिक जीवन में गिरावट लाता है, युवा स्त्रियों के द्वारा पथभ्रष्ट कराता है और गुरदे एवं अण्डकोश सम्बन्धित रोग देता है। यदि स्वराशि का हो तो अत्याधिक सफलता और उच्च का हो तो जीवनभर प्रसन्नता देता है।

शनिः यदि शनि, षष्टम भाव में हो तो ऐसा जातक शत्रुओं, राजा या चोरों से भयभीत नहीं होता है और वह अद्वितीय सैनिक होता है। पशुधन से अनुग्रहीत, परिश्रमी और कठिन से कठिन कार्यों को पूर्ण करने में सक्षम होता है।

पीड़ित शनि दुर्घटनायें, रोग विशेषकर दांई आंख का रोग और झगड़ालू प्रवृति देता है।

राहुः षष्टम भाव का राहु सभी शत्रुओं का नाश कर देता है। जातक का बल, विद्वता, साहस और सद्विवेक स्थिर होते हैं तथा वह स्वयं भी अद्वितीय होता है। ऐसा जातक अपने कार्यों से दूसरों को प्रेरणा देने वाला, आकर्षक, बुद्धिमान, सम्मानित एवं शासक की तरह अपनी पहचान बनाने वाला होता है और विदेश गमन भी करता है।

यह धन, सन्तति, सौभाग्य और हर प्रकार के सुख को इंगित करता है। यदि उच्च का हो तो जातक परेशानियों से मुक्त, बलशाली और शूरवीर होता है। यदि शुभ ग्रहों के साथ हो तो सरकार की अनुकम्पा, रोगों से दूरी, धन-सम्पति, सहनशीलता, समृद्धि, दीर्घायु और पारिवारिक खुशियां देता है।

यदि चन्द्रमा के साथ हो तो राजकन्या से आनन्द की प्राप्ति देता है लेकिन यदि पीड़ित हो तो मलाशय एवं गुदा, दान्तों या ओंठों सम्बन्धित रोग और सेना या नौसेना की नौकरी से भय देता है।

केतुः षष्टम भाव की स्थिति केतु के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थिति होती है और ऐसा जातक अपने जीवन कभी न समाप्त होने वाले यश एवं कीर्ति अर्जित करता है। जातक बिमारियों एवं चिन्ताओं से मुक्त, सर्वाधिक उत्तेजक वाद-विवाद एवं चर्चा में सफल, सगे-सम्बन्धियों का प्यारा, उदार हृदय, कार्यदक्ष, सम्मानित, प्रतिष्ठित, आर्थिक लाभ प्राप्त करने वाला, उच्च अधिकारी और ज्ञान के द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है, लेकिन जातक को कीड़े-मकोडों, जानवरों और कृतघ्न सेवकों से भय होता है।

षष्टेश की दशाः यद्यपि प्रत्येक ग्रह की दशा की अपनी एक विशेष भूमिका होती है लेकिन कुण्डली के षष्टेश की दशा जातक के पतन या उत्थान में विशेष महत्व रखती है। चूंकि विभिन्न भावों में स्थित षष्टेश, अपनी दशा में अलग-अलग परिणाम देता है, अतः षष्टेश की दशा की विवेचना विभिन्न भावों में उसकी स्थिति के अनुसार आगे की गई है।

प्रथम भाव में स्थित षष्टेश की दशाः यदि लग्नेश के साथ स्थित हो तो अपनी दशा में जातक को रोगों और घावों वे पीड़ित करता है। जातक को कोढ़ जैसा

भयंकर रोग भी हो सकता है और शासन से भी परेशानियां हो सकती हैं। यदि इसमें राहु भी शामिल होता है तो चोरों का भय होता है। यदि सूर्य और चन्द्रमा निर्बली हों तो षष्टेश की दशा में जातक दरिद्रता से पीड़ित होता है।

यदि कुण्डली का लग्नेश, लग्न या नवांश लग्न के निकट स्थित हो तो षष्टेश की दशा में रोग, शत्रुओं के द्वारा पीड़ित दयनीय जीवन और दरिद्रता प्रारम्भ होती है और उसकी मुश्किलें लगातार बढ़ती रहती हैं। पूरे दशाकाल में जातक को इन समस्याओं से मुक्ति नहीं मिलती है।

यदि षष्टेश, नवांश में 6, 8 या 12 वें भाव में होता है और लग्नेश वर्गोत्तम होता है तो अशुभ प्रभाव कम हो जाता है।

द्वितीय भाव में स्थित षष्टेश की दशाः यदि षष्टेश द्वितीय भाव में द्वितीयेश के साथ स्थित हो तो अपनी दशा में द्वितीय भाव के कारकत्वों को पीड़ित करता है। जातक को पारिवारिक कलह, धन-सम्पति की हानि, भाषण में विघ्न, समयानुसार भोजन न करना, आंखों का रोग, दान्तों का दर्द आदि अशुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। शुभ ग्रहों की दृष्टि इनमें राहत पहुंचाती है।

यदि लग्नेश भी इस युति में शामिल हो तो युवावस्था में अशुभ परिणाम प्राप्त होते हैं और परिणाम मृत्यु भी हो सकता है।

तृतीय भाव में स्थित षष्टेश की दशाः यदि षष्टेश, तृतीय भाव में तृतीयेश के साथ युति करे तो इसकी दशा में भाइयों से शत्रुता होती है, कानों के रोग और शत्रु द्वारा पीड़ा होती है। यदि तृतीय भाव का कारक मंगल, निर्बली हो तो जातक के भाई रोग से ग्रस्त हो सकते हैं।

चतुर्थ भाव में स्थित षष्टेश की दशाः यदि चतुर्थ भाव में स्थित षष्टेश के साथ राहु एवं चन्द्रमा युति करते हैं तो जातक की माता वृद्धावस्था में रोगग्रस्त हो जाती है। यदि भूमि का कारक मंगल निर्बली होता है तो षष्टेश की दशा में शत्रुओं के हाथों से भूमि एवं सम्पति की हानि होती है। यदि बुध निर्बली हो तो शिक्षा में विघ्न उत्पन्न होता है और यदि शुक्र निर्बली हो तो वाहन सम्बन्धित परेशानियां होती हैं।

यदि लग्नेश के साथ षष्टेश 6/8 की स्थित में हो तो षष्टेश की दशा में जातक अपनी माता को त्याग देता है। अशुभ ग्रहों से प्रभावित षष्टेश की दशा में पशुधन, फसलों और खेती की हानि होती है।

पंचम भाव में स्थित षष्टेश की दशाः यदि पंचमेश के साथ हो तो इसकी दशा में एक पुत्र से अथवा पिता से शत्रुवत सम्बन्ध बनते हैं, सन्तान के लिए परेशानियां अथवा सन्तान रोगग्रस्त हो सकती है और उपासना एवं तीर्थयात्रों में विघ्न उत्पन्न होता है। शुभ ग्रहों का प्रभाव अशुभ परिणामों में कमी करता है।

षष्टम भाव में स्थित षष्टेश की दशाः यदि शुभ ग्रहों से प्रभावित हो तो शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। दशा के प्रारम्भ में षष्टेश से युति करने वाले ग्रहों के अनुसार परिणाम होत हैं। सुख-सुविधा एवं प्रसन्नता, हाथ में लिये गए कार्यों में सफलता, शत्रुओं पर विजय और भू-सम्पति से प्राप्त होने वाली आय में बढ़ोतरी होगी। यदि षष्टेश 6, 8 या 12वें भाव में हो तो अपनी दशा में समृद्धिदायक विपरीत राजयोग के परिणाम देता है लेकिन यदि नवांश कुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो शत्रु परेशानियां उत्पन्न करते हैं। षष्टेश के साथ युति करने वाले ग्रहों की अन्तरदशा में प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

सप्तम भाव में स्थित षष्टेश की दशाः यदि सप्तमेश के साथ हो तो षष्टेश की दशा में तलाक, भार्या के साथ मिथ्याबोध, भार्या या स्वयं का रोगी होना आदि अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यदि लग्नेश भी अशुभ ग्रहों के साथ हो तो बिमारी, ऋण, शत्रु, भार्या की हानि जैसे अशुभ परिणाम प्राप्त होते हैं।

यदि सप्तमेश से 6, 8 या 12वें भाव में हो तो अधिक परेशानियां नहीं होती हैं। यदि द्वितीयेश के साथ हो तो जातक की मृत्यु भी हो सकती है। यदि शुक्र और राहु केन्द्र या त्रिकोण में हो तो भार्या अपशय एवं अपमान की शिकार हो सकती है।

शनि या मंगल की राशि में स्थित और अशुभ ग्रहों से दृष्ट शुक्र, कई स्त्रियों का सूचक है।

अष्टम भाव में स्थित षष्टेश की दशाः शुभ ग्रहों से सम्बन्ध अच्छे परिणाम देती है। यदि षष्टेश, राशि कुण्डली अथवा नवांश में लग्नेश के साथ हो तो बिमारी और शत्रुओं से पराजय होती है। यदि षष्टेश अशुभ नवांश में हो तो अपनी दशा में शत्रुओं से अत्याधिक परेशानियां और गंभीर रोग देता है। षष्टेश के साथ अष्टम भाव में स्थित ग्रह मारक हो जाते हैं।

नवम भाव में स्थित षष्टेश की दशाः यदि अशुभ ग्रहों के साथ हो और कारक भी पीड़ित हो तो इसकी दशा में पिता को परेशानियां झेलनी पड़ती हैं तथा पिता से प्राप्त भू-सम्पति की हानि होती है। यदि षष्टेश, नवम भाव के कारक के साथ सम्बन्धित हो तो पिता की मृत्यु भी हो सकती है।

दशम भाव में स्थित षष्टेश की दशाः बाहर से देखने में जातक एक सन्त आदमी होता है लेकिन धार्मिक मामलों में अविश्वसनीय होता है जो इस दशा में उजागर होता है। आजीविका में विघ्न और रूकावटें उत्पन्न होती हैं। यदि दशमेश भी निर्बली हो तो जीवनवृत्ति के क्षेत्र में गिरावट आती है, जीवन निम्न स्तर का हो जाता है और व्यवसाय अपंग हो जाता है।

एकादश भाव में स्थित षष्टेश की दशाः जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है और उसकी कार्यदक्षता में बढ़ोतरी होती है। बड़ा भाई न्यायाधीश अथवा अधिकार सम्पन्न उच्च पद की प्राप्ति कर सकता है। यदि पीड़ित हो तो साझेदारी के कार्यों में हानि और दयनीय जीवन होता है।

द्वादश भाव में स्थित षष्टेश की दशाः शत्रु जड़ से समाप्त हो जाएंगे। दशा के प्रारम्भ में कुछ बुरे कार्य हो सकते हैं। षष्टेश बिमारी दे सकता है और जो ग्रह षष्टेश के साथ द्वादश भाव में युति कर रहे हों, उनकी अन्तर्दशा में अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यदि शुभ ग्रहों के साथ हो तो शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि षष्टेश नवांश में 6, 8 या 12वें भाव में हो तो परिणाम शुभ नहीं हो सकते हैं यद्यपि केन्द्र या त्रिकोण में होने पर परिणाम शुभ होंगे।

अध्याय 8

सप्तम भाव
(विवाह, भार्या, साझेदारी, विदेश गमन)

कुण्डली के सप्तम भाव से विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. विवाह, भार्या, वैवाहिक खुशियां।
2. व्यापार, साझेदारी।
3. विदेश क्योंकि सप्तम भाव लग्न से अधिकतम दूर स्थित भाव है। पराशर के मतानुसार यदि लग्नेश, सप्तम भाव में स्थित होता है तो जातक की भू-सम्पति, उसके जन्म स्थान से दूर के स्थान में होगी।
4. पेट का निचला भाग, जननांगों के रोग।
5. पथ या रास्ता।
6. जातक का पथभ्रष्ट होना।
7. सत्याचार्य के मतानुसार यह घर के परिवर्तन और विदेश यात्रा को भी इंगित करता है।
8. राजनैतिक सम्बन्ध।
9. प्रतिभा, उर्जा।
10 मृत्यु।
11. दशम भाव से दशम होने के कारण सप्तम भाव, स्वामी का अनुग्रह और चतुर्थ से चतुर्थ होने के कारण जीवन में प्राप्त होने वाली खुशियों को भी इंगित करता है।

विभिन्न भावों में स्थित सप्तमेश के परिणाम

सप्तमेश, प्रथम भाव में:

1. सप्तमेश की लग्न में अथवा लग्नेश की सप्तम में स्थिति जातक की अपनी भार्या के प्रति अत्याधिक आसक्ति को इंगित करती है क्योंकि ये दोनों भाव एक-दूसरे की परछाई होते हैं।
2. यह स्थिति, ऐसे जातक/जातिका से विवाह को इंगित करती है जो बचपन से ही जाना-पहचाना हो।
3. इसका यह अर्थ भी होता है कि ऐसा जातक लगातार यात्रायें करता है।
4. यह सम्बन्ध विवाह तभी देगा जब यदि कुण्डली में अन्य योग भी उपस्थित हों।
5. ऐसा जातक कई स्त्रियों से सम्बन्ध रख सकता है।
6. यदि लग्नेश निर्बली हो, सप्तम भाव अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो एक से अधिक विवाह भी देता है।
7. सप्तमेश की दशा/अन्तर्दशा में भार्या की मृत्यु।
8. यदि लग्न में स्थित सप्तमेश के साथ षष्टेश की युति हो तो भी यह स्थित एक से अधिक भार्या देती है - यह सिद्धान्त बुध पर अधिक लागू होता है।

सप्तमेश, द्वितीय भाव में:

1. विवाह से धन-सम्पति की प्राप्ति।
2. यदि पीड़ित हो तो इसका अर्थ देह व्यापार भी हो सकता है।
3. यदि सप्तमेश द्विस्वभाव राशियों में होकर पीड़ित हो तो एक से अधिक विवाह संभव होते हैं।
4. कामासक्त और अस्थिर बुद्धि।
5. मारक की दशा में जातक की मृत्यु हो सकती है।

सप्तमेश, तृतीय भाव में:

1. भाई विदेश में वास कर सकते हैं और वहां भाग्यवान हो सकते हैं।
2. भाई की भार्या के साथ अनैतिक सम्बन्ध।
3. भाई-बहनों की भाग्यहीनता।

सप्तमेश, चतुर्थ भाव में:

1. सुख देने वाली भार्या, कई सन्तान।
2. उच्च शैक्षिक योग्यता।
3. कई वाहन।

   यदि पीड़ित हो तो भार्या, वाहनादि से परेशानियां, घरेलु खुशियां नहीं।

सप्तमेश, पंचम भाव में:

1. कम आयु में विवाह।
2. जीवनसाथी धनवान।
3. यदि पंचमेश पीड़ित हो तो सन्तानहीनता अथवा केवल कन्या सन्तान।
4. कुछ ज्योतिषाचार्य सप्तमेश की इस स्थिति को शुभ नहीं मानते हैं। फलदीपिका के मतानुसार ऐसा जातक अपनी भार्या को खो देगा अथवा उसके पुत्र नहीं होगें।
5. पंचम भाव जातक के प्रेम सम्बन्धों के प्रति झुकाव का भाव है और सप्तम भाव विवाह का भाव है। अत: सप्तमेश की यह स्थिति जातक को प्रेम विवाह दे सकती है।

सप्तमेश, षष्टम भाव में:

सप्तमेश के लिए यह स्थिति शुभ नहीं है क्योंकि षष्टम भाव दुष्ट स्थान है। अत: यह स्थित निम्नलिखित परिणाम दे सकती है:

1. दो विवाह।
2. चचेरी या ममेरी बहन से विवाह।
3. यदि कारक शुक्र भी पीड़ित हो तो यह स्थिति नपुसंकता को इंगित करती है।
4. भार्या रोगणी होती है।
5. मृत्यु, तलाक आदि से भार्या की हानि।
6. स्त्रियों की कुण्डलियों में सप्तमेश की षष्टम भाव में स्थिति विवाह में देरी का कारण होती है। बृहस्पति की दृष्टि इस दोष को कम करती है लेकिन पूर्णतः समाप्त नहीं करती है।

सप्तमेश, सप्तम भाव में:

1. सम्मोहित और आकर्षित करने वाला व्यक्तित्व।
2. स्त्रियाँ ऐसे जातकों के पीछे भागती हैं।
3. भार्या, अच्छे परिवार से होगी। फलदीपिका के मतानुसार अशुभ ग्रह होने पर भी, सप्तम में स्थित सप्तमेश जातक को अच्छी भार्या प्रदान करता है।
4. यदि पीड़ित हो तो भार्या एवं मित्रों से हीन, अकेलापन। विवाह के प्रस्ताव टूट जाते हैं।

सप्तमेश, अष्टम भाव में:

1. जातक की भार्या अथवा साझेदार धनवान हो सकते हैं।
2. जीवनसाथी की कम आयु में मृत्यु, जातक की मृत्यु दूरस्थ क्षेत्र में।
3. बिमार, बुरे स्वभाव की भार्या।
4. वियोग। *"किसी भी विवाह के अन्त में अष्टम भाव अथवा अष्टम भाव में स्थित ग्रहों की भूमिका चिर-परिचित है"* - ***के. एन. राव।***

स्त्रियों की कुण्डलियों में सप्तमेश की अष्टम भाव में स्थिति उनके वैवाहिक जीवन को गंभीर रूप से दुष्प्रभावित करती है अथवा बिगाड़ती है। बृहस्पति की दृष्टि दुष्प्रभावों को कम अवश्य करती है लेकिन पूर्णतः समाप्त नहीं करती है।

सप्तमेश, नवम भाव में:

1. पिता विदेश में।
2. विदेशी भूमि में भाग्योदय।
3. निपुण भार्या।
4. भार्या धर्म से दूर रहती है और धन का निष्प्रयोजन करती है।

स्त्रियों की कुण्डलियों में नवम भाव में स्थित पीड़ित एवं निर्बली सप्तमेश विवाह बिगाड़ता है और वियोग, कानूनी प्रक्रिया द्वारा तलाक, सगाई टूटना, अन्तिम क्षणों में वर को बदलना आदि परिणाम देता है।

सप्तमेश, दशम भाव में:

1. विदेश के व्यापार में सफलता।
2. निष्ठावान और व्यापार में सहायता करने वाली भार्या।

सप्तमेश, एकादश भाव में:

1. धनवान भार्या।
2. कानूनी अथवा गैर कानूनी रुप में, एक से अधिक विवाह।

सप्तमेश, द्वादश भाव में:

1. एक से अधिक भार्या।
2. भार्या की मृत्यु अथवा भार्या से अलगाव।
3. विवाह में विलम्ब।
4. यदि कारक भी पीड़ित हो तो केवल स्त्रियों के सपने। विवाह नहीं भी हो सकता है। कंजूस और दरिद्र।

सप्तम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम

सूर्यः सप्तम भाव का सूर्य चाहे उच्च का ही क्यों न हो, अत्याधिक अशुभ माना जाता है।

वैदिक ज्योतिष में सूर्य एक क्रूर ग्रह माना जाता है। यह भार्या के साथ सम्बन्धों में तनाव, मानसिक अवसाद, व्यापार में अल्पलाभ और अनिद्रा का रोग देता है। यह व्यापार के लिए भी शुभ नहीं होता है और विवाह में विलम्ब देता है। जातक को वैवाहिक जीवन से खुशियां और आनन्द प्राप्त नहीं होता है। जातक की दो भार्यायें हो सकती हैं, वह विदेश यात्रा करता है, भ्रमित बुद्धि और कुरुप एवं पाप कर्म करने वाला होता है।

यदि सूर्य स्वग्रही हो या बली हो तो जातक अपनी भार्या के प्रति निष्ठावान होता है। यदि सूर्य, शत्रु राशि में या नीच का या अशुभ दृष्ट होता है तो जातक एक से अधिक भार्या वाला होता है।

सप्तम भाव में मेष, सिंह एवं मकर राशि का सूर्य अनुकूल नहीं होता है। यह बहुत कठिनाई से विवाह, विवाह में विलम्ब और दो विवाह भी इंगित करता है तथा स्त्रियों की कुण्डलियों में पति का अपमानित होना दर्शाता है।

मिथुन, तुला या कुंभ राशि का सूर्य हो तो जातक अच्छी शिक्षा पाता है, कानून एवं प्रशासन में दक्ष और संगीत, कानून, एवं साहित्य को बढ़ावा देने वाला होता है। ऐसा जातक सन्तानहीन अथवा अल्पसन्तान वाला होता है। यदि सूर्य स्त्री राशियों, वृषभ, कन्या या मकर में हो तो व्यापार में लाभ देता है और ऐसा जातक चुनाव लड़ता है।

कर्क, वृश्चिक या मीन राशि का सूर्य जातक को चिकित्सक या इंजीनियर बनाता है। जातक की भार्या प्रभावशाली, सुन्दर, व्यवहार कुशल, अच्छी मेजबान, सहायता करने और सोच-समझकर खर्च करने वाली होती है।

सप्तम भाव का सूर्य जीवनसाथी को अत्याधिक घमण्डी, आत्मसम्मान के प्रति अतिसजग लेकिन जीवनसाथी को प्रसन्न रखने में चतुराई युक्त बनाता है।

पाश्चात्य ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सप्तम भाव में स्थित सूर्य अत्याधिक इच्छाओं वाली भार्या देता है और सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा होता है। यदि शुभ दृष्ट हो तो विवाह में अनुरुपता और खुशहाली देता है।

चन्द्रमाः उच्च और शुक्लपक्ष का चन्द्रमा सुन्दर और मनभावन भार्या, क्रय-विक्रय एवं सड़कों के निर्माण से लाभ तथा विदेशियों से व्यापार देता है। जातक स्वयं भी आकर्षक और धनवान होता है। ऐसा जातक दयालु एवं यात्रायें करने वाला होता है और भार्या अथवा अन्य स्त्रियों के प्रभाव में रहता है।

जातक को समुद्री यात्रा, व्यापार, शेयर बाजार, जलीय पदार्थ, साझेदारी, भूमि, पन्सारी की दुकान, होटल उद्योग, कमीशन और बीमा आदि से लाभ होता है।

यदि चन्द्रमा नीच का हो, अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो जातक की भार्या बिमार रहती है और उसके वैवाहिक जीवन में शान्ति एवं खुशियां नहीं होती हैं। जातक के जीवन, व्यवसाय एवं व्यापार में अस्थिरता होती है और उसे न्यायालय के द्वारा हानि प्राप्त होती है।

शुक्र-चन्द्रमाः यह युति एक से अधिक भार्याओं को इंगित करती है। जातक की भार्या झूठी, कामुक, दुर्बल, अविश्वसनीय और ईर्ष्यालु होती है।

मंगल से पीड़ित होने पर शत्रुता, विवेकरहित व्यवहार, आक्रमण और असन्तुष्टता देती है। शनि की अशुभ दृष्टि साझेदारी में हानि और निराशा देती है जबकि शुभ दृष्टि व्यापार एवं साझेदारी में सफलता देती है।

मंगलः सप्तम भाव में स्थित मंगल ***"कुजा दोष"*** अथवा भार्या की मृत्यु देता है। यह कष्टदायक विरोधियों और विदेश में निवास को भी इंगित करता है। यह जातक को धूर्त, छल-कपट में दक्ष, स्वभाव में तत्परता और अत्याधिक प्रेम से निराशा देता है।

पीड़ित मंगल अप्रसन्न और झगड़ों वाला वैवाहिक जीवन दर्शाता है। ऐसा जातक भार्या से बहुत कम शारीरिक सुख तथा यात्रा, घर एवं भार्या से अल्पलाभ प्राप्त करता है।

पुरुष कुण्डलियों में यह उत्तेजक भार्या देता है। जातक स्वयं रोगी, नाखुश, धूर्त और दरिद्र होता है। वह शीघ्र ही आत्मसंयम खोने वाला और भार्या से अपमानित होता है।

स्त्री कुण्डलियों में यह मांसल और उन्नत स्तनों को इंगित करता है। यदि नीच अथवा शत्रु राशि में हो तो हिंसक मृत्यु द्वारा पति का विनाश इंगित करता है। यदि मंगल उच्च का, स्वराशि अथवा योगकारक होकर सप्तम में स्थित हो तो अशुभ परिणामों में स्थित अनुसार शुभ परिवर्तन होता है।

मकर लग्न के लिए सप्तम भाव में स्थित मंगल नीच का होता है। लग्न से शनि की दृष्टि जातक को अनैतिक सम्बन्ध, समान लिंग से संभोग की प्रवृति और खराब स्वास्थ्य देती है तथा न्यायालय एवं साझेदारी के द्वारा हानि होती है।

बुधः यद्यपि बुध शुभ ग्रह है और बुद्धिमता के कारक होने के कारण इसकी केन्द्र भाव में स्थिति शुभ होती है लेकिन चाहे बुध उच्च का ही क्यों न हो, इसकी सप्तम भाव में स्थिति शुभ नहीं माना जाती है। बुध एक नपुंसक ग्रह है और सप्तम भाव से इसका कोई भी सम्बन्ध, जातक के वैवाहिक जीवन में विघ्न उत्पन्न करता है।

जातक की भार्या सुन्दर होती है और यदि यह सूर्य के साथ युति में न हो तो अत्याधिक आकर्षक होती है। जातक उसकी कामाग्नि के अनुरुप शारीरिक सुख देने में असमर्थ होता है, अतः पराजित और शर्मिन्दा होता है।

ऐसा जातक सन्त, अच्छे स्वभाव का, सत्यवादी, आज्ञाकारी, सुख-सुविधाओं के प्रति आकर्षित, तीक्ष्ण बुद्धिवाला, आकर्षक, प्रतिष्ठित, सज्जन, स्त्रियों से सम्मान पाने वाला तथा भार्या, सन्तान एवं धन से अनुग्रहीत होता है। जातक की भार्या रुपवान, लावण्यवान, आदर्श गृहणी, पुत्रवती और प्रभावशाली परिवार से होती है। जातक को विवाह के पश्चात चिन्तायें और आतुरता होती है।

यदि बुध पीड़ित हो तो वैवाहिक जीवन में कलह एवं झगड़ा, और यदि अधिक पीड़ित हो तो कानूनी परेशानियां होती हैं। मतान्तर से जातक का विवाह ही नहीं होता है अथवा उसकी भार्या अल्पायु होती है। यदि सप्तमेश निर्बली हो अथवा पीड़ित हो अथवा शत्रु राशि में मंगल के साथ हो तो जातक की भार्या कुरुप और चर्म रोगी होती है।

यदि पीड़ित न हो और शुभ बली ग्रहों से युत हो तो जातक की एक भार्या होती है और वह सर्वश्रेष्ठ वाहनों का स्वामी होता है।

बृहस्पतिः जीवन में उच्च स्तर, अत्याधिक कामुक, स्त्रियों से अत्याधिक आनन्द की प्राप्ति, आकर्षक, सुसंस्कृत, उदार हृदय, प्रखर वक्ता, कवि, साहित्य प्रेमी, बुद्धिमान, धनवान और उर्जावान। स्नेह रखने वाली सुन्दर एवं अच्छी भार्या और पुत्रों से अनुग्रहीत।

ऐसा जातक एक अच्छा और निष्ठावान जीवनसाथी प्राप्त करता है जो जातक के जीवन को प्रसन्नतायुक्त और समृद्धशाली बनाता है। विवाह के पश्चात जातक के जीवन में आर्थिक और सामाजिक उत्थान होता है। यदि सुस्थित हो तो जातक मित्रों

और व्यापारी लोगों की सहायता की साझेदारी में सफल होता है। यदि द्वितीयेश अथवा पंचमेश से दृष्ट हो तो जातक भाग्यशाली होता है।

यदि नीच का हो तो भार्या की मृत्यु होती है। यदि पीड़ित हो तो अधिक आयु की भार्या, तलाक या जीवनसाथी की मृत्यु देता है। यदि राहु-केतु से पीड़ित हो तो परस्त्रियों के साथ आनन्द, मंगल से पीड़ित हो तो मुकद्दमा एवं कानूनी विवाद तथा मंगल/शनि अथवा सूर्य-चन्द्रमा से पीड़ित हो तो विवाह न होना अथवा विलम्ब से विवाह देता है। बृहस्पति कन्या और मकर राशियों में निर्बली होता है। यदि बृहस्पति शुष्क राशियों में हो तो सन्तान तो होती है लेकिन पुत्र का अभाव होता है।

विशेष: *सामान्यत: सप्तम भाव में स्थित बृहस्पति विवाह की रक्षा करता है।*

शुक्र: सुपुत्रों को जन्म देनेवाली रुपवान और निष्ठावान भार्या। जातक अपनी भार्या से अत्याधिक आनन्द की प्राप्ति करता है। जातक सुन्दर स्त्रियों का भोग करता है और स्वयं ऐसा प्रतिष्ठित कलाकार होता है जिसके कई प्रशंसक होते हैं।

जातक कामासक्त एवं श्रृंगारप्रिय होता है और विदेश में वास करता है। वह आकर्षक, समृद्ध, सबका प्यारा, भाग्यशाली तथा निष्ठावान भार्या वाला होता है। ऐसा जातक अपनी भार्या से खुशियां, सामाजिक एवं आर्थिक लाभ भी प्राप्त करता है।

बली शुक्र, एक से अधिक भार्या और स्त्रियों की कुण्डलियों में भाग्यशाली और धनवान पति को इंगित करता है। यह जातक को शीघ्र विवाह, सामाजिक सम्बन्धों और साझेदारी में सफलता देता है। स्त्री राशियों में बली शुक्र का अर्थ निर्दोष या पवित्र भार्या होना भी होता है।

यदि शुक्र मेष, मिथुन, तुला या धनु राशि में हो तो संगीत, गायन, लेखन, पठन और कला की आसक्ति देता है। मेष, वृश्चिक, मकर और कुंभ राशि का शुक्र आयु में बड़ी या भिन्न जाति की भार्या देता है। यदि पीड़ित हो तो विवाह में विघ्न या विलम्ब देता है।

शनि: सप्तम भाव में स्थित शनि जातक को आकर्षक भार्या से वंचित करता है, विवाह में विघ्न उत्पन्न करता है और जीवन के उत्तरार्ध में ही विवाह देता है। जातक छल-कपट वाला होता है, धूर्त मित्रों से घिरा रहता है और धोखेबाजी एवं विश्वासघात से सम्पति अर्जित करता है। जातक की भार्या रोगणी होती है और जातक न शक्तिशाली होता है और न धनवान होता है। वह बेरोजगार तथा भार्या, घर एवं धन के सम्बन्ध में भाग्यहीन होता है। ऐसा जातक का द्वितीय विवाह पंगु स्त्री या मित्र की लड़की से होता है।

यद्यपि जातक का विवाह विलम्ब से होता है लेकिन उसकी भार्या स्थिर एवं कार्यशील प्रवृति की अथवा अच्छे स्वभाव की, आयु में अधिक और धनवान होती है।

लग्न अथवा सप्तम भाव में स्थित शनि यदि पापकर्तरी योग में हो तो सामाजिक रीति के विरुद्ध, दबाब अथवा सुविधा हेतु किये जाने वाले विवाह को इंगित करता है। सामान्यतः शनि, केतु और शुक्र अन्तर्जातीय विवाह देते हैं।

पीड़ित शनि, वैवाहिक जीवन के अधिक कष्ट और दुःख, जैस कि भार्या की मृत्यु या मतभेद को सूचित करेगा। समझोते, साझेदारी, कानूनी अड्चनों और छल-कपट आदि से धन-सम्पति की हानि होती है।

शनि-मंगलः कामासक्त भार्या।

शनि-शुक्रः जातक कामासक्त और अन्य स्त्रियों के प्रति अनुरक्ति रखने वाला।

विशेषः *सिंह और धनु राशियों का शनि हो तो जातक की भार्या मोहित कर देने वाले व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है।*

राहुः भार्या के प्रजनन अंगों में दोष होता है, जातक का सगे-सम्बन्धियों से वियोग होता है तथा जातक क्रोधी, आलसी, अस्त-व्यस्त रहने और व्यर्थ में भटकने वाला होता है। ऐसा जातक, जीवनसाथी का बैरी, जीवनसाथी से कष्ट पानेवाला, कुरुप, निरंन्तर पापकर्म में रत, निराशावादी, विरोध एवं रुकावट पाने वाला, काम-सम्बन्ध के आनन्द से वंचित, कामासक्त, अंहकारी, रोगी और दूसरों की स्त्रियों में आसक्ति रखने वाला होता है। स्त्रियों की कुण्डली में सप्तम का राहु मासिकधर्म सम्बन्धित परेशानियां देता है।

चन्द्रमा और राहु, सभी प्रकार के आनन्द और निष्ठावान जीवनसाथी देते हैं। अन्य ग्रहों के साथं सप्तम भाव में स्थित राहु, हठी, चिडचिडी, निष्ठाहीन और चरित्रहीन भार्या देता है। स्त्रियों की कुण्डली में सप्तम भाव का राहु, पुरुषों के प्रति अधिकतम इच्छा की प्रवृति देता है जबकि केतु निम्नतम प्रवृति देता है।

भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार यदि राहु सप्तम में और शनि द्वितीय में हो तो यह स्थिति जातक को दो विवाह देती है। यहां, यह समझना आवश्यक है कि यह तभी होगा जब राहु अशुभ ग्रहों से प्रभावित हो। राहु स्वयं अकेला अथवा शुभ ग्रहों के साथ स्थित होने पर हानिकारक नहीं होता है और शुभ परिणाम भी दे सकता है।

नीचे दी गई दो कुण्डलियों का अवलोकन करें।

कुण्डली संख्या 1: राहु ने कोई हानि नहीं की।

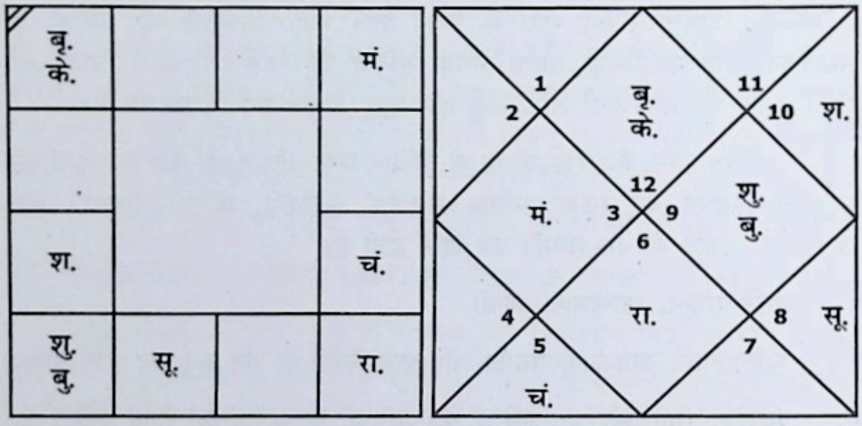

इस कुण्डली में यद्यपि राहु लग्न से सप्तम और चन्द्रमा से द्वितीय भाव में है लेकिन यह विवाह में कोई भी हानि नहीं कर सका क्योंकि इस पर बृहस्पति की दृष्टि है। बृहस्पति, लग्नेश होकर अपने ही भाव, लग्न में बैठकर कुण्डली को बल प्रदान कर रहा है।

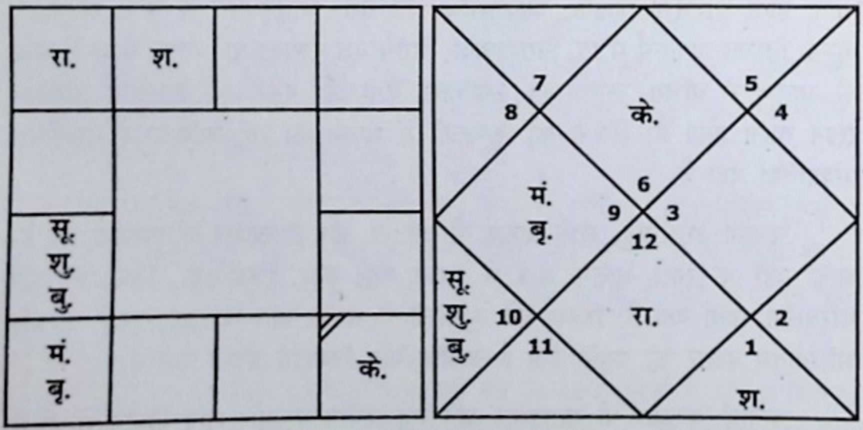

इस कुण्डली में सप्तम का राहु किसी अन्य शुभ ग्रह से प्रभावित नहीं है और मंगल से दृष्ट है। जातिका के पति की मृत्यु कम आयु में ही हो गई थी।

केतु: यात्राओं और जल से भय। जीवनसाथी से खुशियों की अभिलाषा अथवा वह धूर्त होगा। जातक स्वयं भी अनैतिक होता है और उसे शत्रुओं अथवा चोरों से धनहानि का भय होगा। जीवनसाथी से तिरस्कृत, व्यभिचार, आन्तों का रोग और वीर्य सम्बन्धित परेशानियां।

वृश्चिक राशि का केतु लाभदायक होता है।

फलदीपिका के मतानुसार जातक का अपमान होता है, वह व्यभिचारिणी स्त्रियों से रति करता है लेकिन अपनी भार्या से उसका वियोग होता है। ऐसा जातक अंतडियों और धातु (वीर्य) रोग से भी पीड़ित होता है।

सुखी वैवाहिक जीवन देने वाले घटक:

सम्बन्धित ग्रह और भाव (स्रोत):

1. लनग्न से सप्तम भाव, जो पारम्परिक रुप से विवाह से सम्बन्धित भाव है और सप्तम भाव में बैठे ग्रह। चन्द्रमा और शुक्र से सप्तम भावों का आंकलन भी करना चाहिए।
2. पंचम भाव - प्रेम, पूर्वपुण्यों और सन्तति का भाव।
3. लग्न और लग्नेश।
4. द्वादश भाव। शयनसुख और रतिसुख का भाव। अशुभ ग्रहों का द्वादश भाव को पीड़ित करना और विशेषकर षष्टेश से पीड़ित होना शुभ नहीं होता है। षष्टम भाव रोग, ऋण, चोरों और शत्रुओं को इंगित करता है। पीड़ित शनि गंभीरता और शारीरिक सम्बन्धों में ठण्डापन देता है।
5. चतुर्थ भाव - सुख का भाव।
6. द्वितीय भाव - कुटुम्ब भाव।
7. चन्द्रमा - बुद्धि का कारक।
8. शुक्र - सप्तम भाव, विवाह और शुक्राणुओं का कारक।
9. मंगल - पुरुषत्व का कारक।
10. तुला और वृश्चिक राशियां। ये राशियां कालपुरुष की कुण्डली में सप्तम एवं अष्टम भावों की राशियां हैं।

कारक ग्रहः

शुक्र, विवाह और शुक्राणुओं का कारक होता है। स्त्रियों की कुण्डलियों में मंगल का भी आंकलन करना चाहिए क्योंकि यह रति की इच्छा का कारक होता है।

कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि स्त्रियों की कुण्डलियों में बृहस्पति, पति का कारक होता है अतः इसका भी आंकलन करना आवश्यक है।

द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम और द्वादश भावों की विवेचनाः

सामान्य नियमों के अनुसार कोई भी भाव निम्नलिखित परिस्थितियों में अच्छा होगाः

1. यदि भाव स्वामी एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और अशुभ ग्रहों से अदृष्ट।
2. शुभ कर्तरी योग में हो अर्थात शुभ ग्रहों के मध्य हो।
3. भाव के पास नैसर्गिक भाव बल हो।
4. भाव अष्टकवर्ग में बली हो और सर्वाष्टकवर्ग में 30 से अधिक बिन्दुओं के साथ हो।
5. शुभ ग्रहों से अथवा स्वामी से युत हो।

कारक शुक्रः

शुक्र विवाह का कारक ग्रह है। फलदीपिका के मतानुसार यदि शुक्र पापकर्तरी योग में हो अथवा शुक्र से 4, 8 एवं 12वें भाव में अशुभ ग्रह हों अथवा शुक्र अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो जातक की भार्या की मृत्यु होती है।

अतः शुभ परिणाम प्राप्त करने के लिए शुक्र का बली होना आवश्यक है। बली होने के लिए शुक्र को कुण्डली में उच्च अथवा स्वराशि या मूलत्रिकोण राशि अथवा केन्द्र या त्रिकोण में होना चाहिए।

केन्द्र और त्रिकोण में स्थित ग्रह, स्वतः ही बली हो जाते हैं। यदि शुक्र, लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में अपनी उच्च राशि में अथवा स्वराशि में हो तो ***मालव्य नाम*** का महापुरुष योग बनाता है जो जातक को सभी प्रकार की खुशियां और समृद्धि देता है। प्रथम भाव में स्थित शुक्र जातक को रोमान्टिक जीवन और आकर्षक व्यक्तित्व देता है। चूंकि वह प्रथम भाव से सप्तम भाव को दृष्ट करता है, अतः जातक अपनी

भार्या से असीम प्रेम करने वाला होता है। द्वितीय भाव का शुक्र जातक को अच्छा परिवार और निष्ठावान भार्या देता है। साथ ही साथ यह मीठी वाणी भी देता है जो वैवाहिक खुशियों के लिए एक महत्वपूर्ण अव्यय सिद्ध होती है।

चतुर्थ भाव का शुक्र जातक को मानसिक प्रसन्नता और पंचम भाव का रोमान्टिक प्रवृति देता है। सप्तम भाव का शुक्र, वैवाहिक जीवन की खुशियां देता है। नवम भाव का अच्छा भाग्य एवं खुशियां और दशम एवं एकादश का अच्छा वैवाहिक जीवन देता है। द्वादश भाव का शुक्रं जातक को रतिसुख दायक होता है।

शुक्र का शुभ ग्रहों से दृष्ट होना, भावबल के साथ होना, अपने अष्टकवर्ग में पांच से अधिक बिन्दुओं के साथ होना, अस्त न होना, शुभकर्तरी योग में होना, अशुभ भाव में न होना, मृत्युभाग में न होना और वर्गोत्तम होना, इसके बल में वृद्धि करता है।

यदि नीच का शुक्र, केन्द्र या त्रिकोण में हो तो इसकी नीच स्थिति को नकारा जा सकता है। विवाह के संदर्भ में सूर्य, शुक्र का अतिशत्रु है। यदि मेष या वृश्चिक राशियों में इनकी युति होती है तो इनकी दशा में विवाह भंग भी हो सकता है।

यदि शुक्र नवांश में उच्च का हो तो यह प्रतिष्ठित भार्या और यदि वर्गोत्तम हो तो सुसंस्कृत भार्या देता है।

इसी प्रकार मंगल की स्थिति का आंकलन भी करना चाहिए। वक्री मंगल और नीच अथवा अशुभ ग्रहों से प्रभावित मंगल विवाह में परेशानियां देता है।

शुक्र की स्थितिः

शुक्र, जातक के शारीरिक सम्बन्धों और जीवनसाथी की प्रवृति को इंगित करता है। सुस्थित शुक्र, जातक के सुखी वैवाहिक जीवन को सुनिश्चित करता है। अतः कुण्डली में शुक्र की स्थिति का अच्छा होना आवश्यक है।

1. शुक्र का पापकर्तरी में होना भार्या की मृत्यु देता है।
2. शुक्र से 4, 8 एवं 12वें भाव में अशुभ ग्रहों का होना, शुभ नहीं होता है।
3. पराशर के मतानुसार शुक्र को अशुभ ग्रहों से पीड़ित नहीं होना चाहिए।
4. मेष, मिथुन, कर्क और वृश्चिक में स्थित शुक्र, सुखी वैवाहिक जीवन के लिए अच्छा नहीं है। मंगल की राशियों का शुक्र, अनैतिक जीवन और प्रतिष्ठा की

हानि देता है। कर्क राशि में यह भार्या को शारीरिक सम्बन्धों मे अत्याधिक अनुरक्ति रखने वाली और कामुक बनाता है। विशेषकर मिथुन नवांश में होने पर वह अत्याधिक कामासक्त होती है।

विभिन्न राशियों में स्थित शुक्र के परिणाम

शुक्र, जातक के शारीरिक सम्बन्धों की प्रवृति के साथ-साथ उसकी भार्या को भी इंगित करता है अतः कुण्डली में इसकी राशि और स्थिति, जातक और उसकी भार्या के चरित्र को दर्शाती है। विभिन्न राशियों में स्थित शुक्र के सामान्य परिणाम इस प्रकार से हैं।

1. **मेष राशि का शुक्रः** अनैतिक, अन्य स्त्रियों से अनुचित सम्बन्ध, प्रतिष्ठा की हानि। यदि मेष राशि द्वादश भाव में होती है तो अनैतिक जीवन की अधिकता होती है। अशुभ प्रभाव में होने से जातक दुराचारी होता है। जातक की भार्या आक्रमक एवं क्रूर होती है और उसमें पुरुषत्व का प्रभाव होता है।

   मेष राशि, मंगल की पुरुष राशि है और मंगल आक्रमक एवं शक्ति का ग्रह है। इस राशि में शुक्र प्रफुल्ल स्थिति में नहीं होता है अतः स्वस्थ शारीरिक सम्बन्धों के लिए उर्वरक सिद्ध नहीं होता है। यह जातक में कामातुर प्रवृति देता है और शारीरिक सुख की उत्कण्ठा को उत्तेजित करता है। उसकी भार्या अहंकारी और झगड़ालू प्रवृति की होती है।

2. **वृषभ राशि का शुक्रः** यदि शुक्र अशुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की भार्या अतिसुन्दर, अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग और संगीत एवं नृत्य में अनुरक्ति रखने वाली होती है।

3. **मिथुन राशि का शुक्रः** जातक कामातुर होता है। कई ज्योतिषाचार्यों का मत है कि मिथुन राशि का शुक्र जातक को दो विवाह देता है अथवा वैवाहिक जीवन में खलल डालता है। यह सन्तान से सन्तुष्टि को भी रोक सकता है, लेकिन जातक की भार्या बुद्धिमान, शिक्षित, प्रखर वक्ता और आधुनिक कला की दीवानी होती है।

4. **कर्क राशि का शुक्रः** रोगी शरीर, कामातुर, मैथुन में अत्याधिक लिप्त। भार्या भावुक और अस्थिर। जातक का रुझान स्त्रियों और मदिरा की ओर अधिक होता है।

5. **सिंह राशि का शुक्रः** सम्मानित परिवार की कन्या से विवाह, जातक स्त्रियो को प्रसन्न करने का प्रयास करता है और उनसे लाभान्वित भी होता है। भार्या सुन्दर।

6. **कन्या राशि का शुक्रः** निम्न जाति की स्त्रियों में आसक्ति रखने वाला। भार्या अच्छे विचारों वाली और शिक्षित।

7. **तुला राशि का शुक्रः** वैवाहिक खुशियों के लिए अच्छा। भार्या सुन्दर, उर्जावान और प्रतिष्ठित।

8. **वृश्चिक राशि का शुक्रः** स्त्रियों से झगड़ों के कारण धनहानि। भार्या अंहकारी और झगड़ालू।

9. **धनु राशि का शुक्रः** सुखी पारिवारिक जीवन। भार्या खुले विचारों की और दार्शनिक।

10. **मकर राशि का शुकः** निम्न जाति की स्त्रियों में आसक्ति रखने वाला। भार्या घमण्डी।

11. **कुंभ राशि का शुक्रः** शारीरिक सम्बन्धों में पवित्र। परिहासजनक और मानवतावादी स्वभाव की भार्या।

12. **मीन राशि का शुक्रः** अच्छे वैवाहिक सम्बन्ध। भार्या आदर्श और सुसंस्कृत।

शुक्र एक शुभ, सबका प्रिय, अन्य ग्रहों के प्रति अच्छे स्वभाव का और कलात्मक ग्रह है तथा विवाह में आनन्द और अनुरुप होने का कारक होता है। यदि शुक्र स्वग्रही हो तो जातक मैथुन के प्रति अत्याधिक आसक्त तो होता है लेकिन मात्र एक साथी के साथ ही। शत्रु राशि का शुक्र अल्पसुख और नीच का, निम्न स्तर का जीवनसाथी देता है। शुक्र एवं शनि के मध्य शुभ दृष्टि, एक अच्छी भार्या देती है लेकिन यदि यह सम्बन्ध अशुभ हो तो विवाह का अन्त तलाक के रुप में होता है।

बृहस्पति से शुक्र का शुभ सम्बन्ध, धर्मपरायण और सुन्दर भार्या देता है। बृहस्पति से द्वादश भाव में स्थित शुक्र, प्रथम विवाह को एक दुर्भाग्यपूर्ण या दुःखी विवाह बना सकता है लेकिन शुक्र के द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति सामर्थ्यवान और निष्ठावान पति देता है।

सूर्य और चन्द्रमा शुक्र के अतिशत्रु हैं। यदि शुक्र से द्वितीय भाव में चन्द्रमा और द्वादश भाव में सूर्य हो तो जातक के जीवन में वैवाहिक जीवन का आनन्द नहीं होता है। सूर्य के साथ युति भार्या को लैंगिक सुख (रति सुख) के प्रति तत्पर बनाती है

और उसके परिवार में राजसी ठसक होती है। चन्द्रमा के साथ युति, रतिसुख के विचार युक्त और अस्थिर प्रवृति की बनाती है। चन्द्रमा-शुक्र की प्रतिकूलता सुखी वैवाहिक जीवन के लिए शुभ नहीं होती है। शुक्र प्रेम का और चन्द्रमा मन का कारक होता है अतः इन दोनों को शनि या मंगल से पीड़ित नहीं होना चाहिए।

बुध के साथ, रति में दार्शनिकता देती है, वह बुद्धिमान एवं युवा होती है। जातक के विचार अत्याधिक कामुक होते हैं।

शुक्र से मंगल की युति रतिगमन, के शारीरिक लक्षणों का इंगित करती है। जातक अत्याधिक कामुक होता है और उसकी भार्या घमण्डी और युवा होती हैं।

शुक्र से राहु की युति गुप्त प्रेम सम्बन्ध और केतु से युति मैथुन के प्रति अत्याधिक कामातुर बनाती है। शुक्र, मंगल और राहु की युति भी दूसरे व्यक्ति के साथ गुप्त पलायन इंगित करती है।

यदि राहु-केतु शुभ प्रभाव में हों तो आकर्षक भार्या देते हैं लेकिन वैवाहिक जीवन में विवाह से सम्बन्धित सुख में विघ्न उत्पन्न होता है।

विवाह के संदर्भ में शुक्र की विभिन्न भावों की स्थिति के परिणाम

प्रथम भावः जातक प्रेम की भावना से युक्त होता है और अपनी भार्या को असीम प्रेम करता है। ऐसा जातक सुखी और दीर्घायु होता है।

यदि यह वृश्चिक राशि में मंगल के साथ पीड़ित हो तो शारीरिक उत्कण्ठा होती है लेकिन उसकी पूर्ति नहीं होती है।

द्वितीय भावः कर्त्तव्यनिष्ठ भार्या के साथ अच्छा परिवार, अनेक प्रकार के धनों से युक्त और कवि। यदि पीड़ित हो तो धन और अच्छे भोजन का लालची।

तृतीय भावः कृपण, अप्रिय, सुख-सम्पति से हीन, भार्याहीन अथवा असन्तुष्ट भार्या।

चतुर्थ भावः यदि पीड़ित हो तो स्त्रियों से प्रेम में छल करने वाला। अन्य स्थिति में अच्छी सवारी, आभूषण, मकान और सुगन्धित पदार्थों से सम्पन्न होता है।

पंचम भावः पुत्रवान, प्रेम की भावना से युक्त, स्त्रियों की संगत का अत्याधिक इच्छुक, रति की अत्याधिक इच्छावाला और आनन्द से युक्त।

यदि मंगल से पीड़ित हो तो अत्याधिक कामातुर तथा शनि से युत या दृष्ट हो तो प्रेम में दुःख और निराशा पाने वाला।

षष्टम भावः अनैतिक सम्बन्धों में लिप्त और दुःखी।

सप्तम भावः वैवाहिक खुशियां लेकिन कारको भावनाशाय के सिद्धान्तानुसार शुभ नहीं। यद्यपि अनुभव में यह देखा गया है कि यदि शुक्र पीड़ित नहीं हो तो यह सिद्धान्त सप्तम भाव के शुक्र पर लागू नहीं होता है। सप्तमेश के रुप में शुक्र यदि पीड़ित हो तो जातक को अनियंत्रित रति की अतिइच्छा वाला बनाता है।

अष्टम भावः अवैध सम्बन्ध। यदि शुक्र त्रिक भाव में हो तो सामान्यतः भार्या रोगणी होती है विशेषकर यदि इस पर कोई शुभ प्रभाव न हो तो।

नवम भावः घरेलु खुशियां, शासक की कृपा से भाग्योदय तथा स्त्री, मित्र एवं पुत्र का सुख पाने वाला। यह शुक्र के लिए शुभ स्थिति होती है।

दशम भावः अच्छा विवाह। यश, सम्मान, उच्चपद आदि।

एकादश भावः प्रेम की भावना युक्त। फलदीपिका के मतानुसार जातक धनवान, दूसरों की स्त्रियों में रत रहने वाला और अनेक प्रकार से सुख प्राप्त करने वाला होता है।

द्वादश भावः रतिसुख के आनन्द के प्रति अत्याधिक इच्छावाला, धन, वैभव की प्राप्ति। यदि पीड़ित हो तो वैवाहिक जीवन के लिए शुभ नहीं होता है।

नवांश का आंकलनः

यदि नवांश में सप्तमेश, शुभ ग्रह की राशि में हो और शुभ ग्रहों से प्रभावित हो तो यह जातक के अच्छे एवं सुखी वैवाहिक जीवन को दर्शाता है।

सप्तमेश और शुक्र के संदर्भ में लग्नेश एवं चन्द्रमा की स्थितिः

वैवाहिक जीवन में दम्पति के बीच सद्भावना और अच्छे तालमेल के लिए लग्नेश और चन्द्रमा को सप्तमेश और शुक्र से सुस्थित होना अर्थात 6, 8 या 12वें भाव में न होना, आवश्यक है। अन्यथा वैवाहिक जीवन में असन्तोष और क्षुब्धता बनी रहती है।

वैवाहिक कलह:

सप्तम भाव और सप्तमेश का पीड़ित होना वैवाहिक जीवन में अनबन का कारण है।

1. सप्तम एवं पंचम भाव को अशुभ ग्रहों के मध्य नहीं होना चाहिए। यदि है तो इस युति के कारण जातक अविवाहित भी रह सकता है। सप्तम भाव जहां विवाह का भाव है वहीं पंचम भाव पूर्वपुण्यों, प्रेम की अनुरक्ति और सन्तति का भाव है। अतः इन भावों का पीड़ित होना शुभ नहीं होता है। यदि सप्तम भाव, सूर्य, राहु या मंगल से पीड़ित है तो जातक की भार्या दम्भी और झगड़ालू होती है।
2. लग्नेश और सप्तमेश को एक-दूसरे से 6, 8 या 12वें भाव में नहीं होना चाहिए। यह स्थिति वैवाहिक जीवन की अनुरुपता को तोडती है। लग्न, जातक को और सप्तमेश, उसके जीवनसाथी को दर्शाता है, अतः इनका एक-दूसरे से शुभ स्थिति में होना अच्छे एवं सुखी वैवाहिक जीवन के लिए अच्छा है।

आइये, इनको उदाहरणों से समझने का प्रयास करते हैं।

उदाहरण कुण्डली:

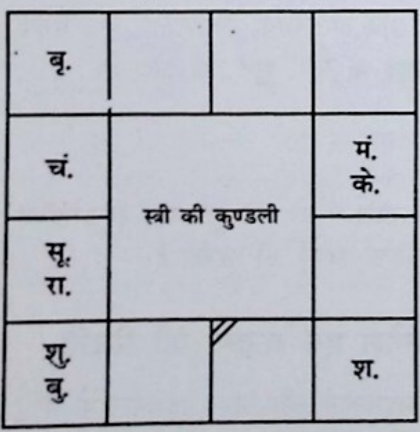

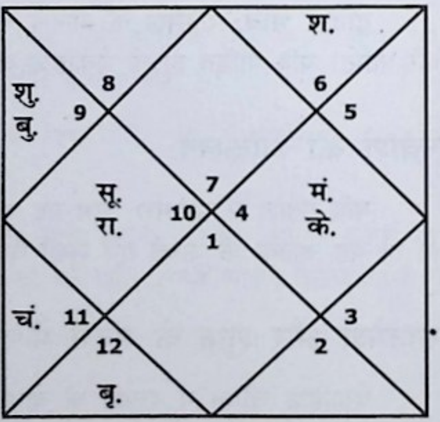

उपरोक्त कुण्डली में लग्नेश, शुक्र है जो जातिका को दर्शाता है। यह तृतीय भाव में स्थित है और सप्तमेश मंगल से, जो उसके पति को दर्शाता है, षष्टम भाव में स्थित है। इस प्रकार मंगल और शुक्र एक-दूसरे से 6/8 की स्थिति में है जो यह इंगित कर रही है कि जातिका और उसके पति के मध्य सम्बन्ध

मधुर नहीं हैं। अत: उन दोनों का एक साथ रहना मुश्किल है अथवा एक साथ नहीं रहेंगे।

विशेष: *यह, वैवाहिक जीवन के सन्तोषपूर्ण न होने के कई कारणों मे से मात्र एक कारण है, अत: इसका उपयोग सावधानी से करना चाहिए।*

उदाहरण कुण्डली:

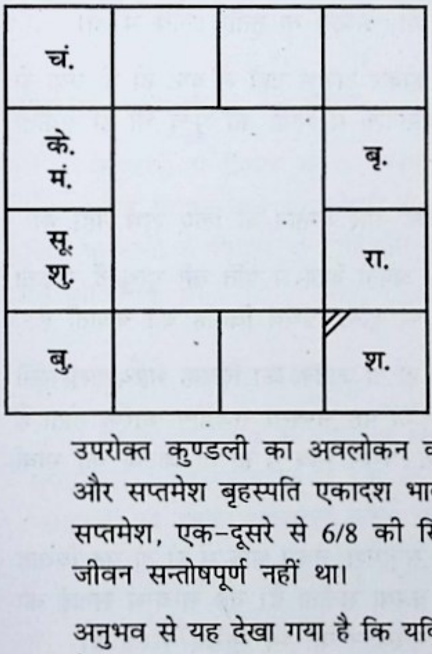

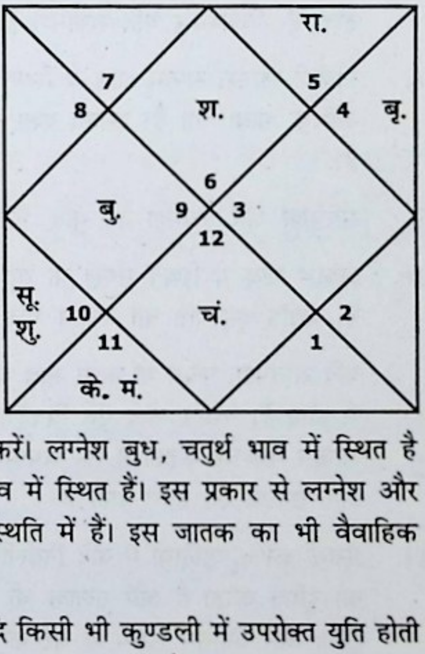

उपरोक्त कुण्डली का अवलोकन करें। लग्नेश बुध, चतुर्थ भाव में स्थित है और सप्तमेश बृहस्पति एकादश भाव में स्थित हैं। इस प्रकार से लग्नेश और सप्तमेश, एक-दूसरे से 6/8 की स्थिति में हैं। इस जातक का भी वैवाहिक जीवन सन्तोषपूर्ण नहीं था।

अनुभव से यह देखा गया है कि यदि किसी भी कुण्डली में उपरोक्त युति होती है तो यह प्रथम विवाह में ही बाधा उत्पन्न करती है।

3. मकर लग्न की कुण्डली में यदि शनि लग्न में स्थित हो और सप्तम में मंगल तो उनकी पारस्परिक दृष्टि जातक को नैतिक मूल्यों से हीन बनाती है।

4. शनि लग्न में अथवा सप्तम भाव में, पापकर्तरी योग में हो तो अपारम्परिक या अलौकिक विवाह अथवा दबाव में विवाह देता है। यह विवाह सुविधा के लिए किया जाने वाला विवाह भी कहलाता है। इसमें शुक्र के उपर, शनि और केतु के प्रभाव की बहुत बड़ी भूमिका भी होती है।

5. स्त्रियों की कुण्डलियों में षष्टम भाव में स्थित सप्तमेश विवाह में विलम्ब कराता है लेकिन अष्टम भाव में स्थित सप्तमेश, विवाह को गंभीर रुप से

दूषित करता है। बृहस्पति की दृष्टि अशुभ प्रभाव को कम करती है लेकिन मिटाती नहीं है।

6. कुंभ लग्न के लिए सप्तमेश सूर्य, षष्टम भाव में नहीं होना चाहिए। यदि यह शुभ ग्रहों से प्रभावित नहीं हो तो विवाह नहीं होने देता है।

7. स्त्रियों की कुण्डलियों में पीड़ित पंचम भाव, निर्बली और गंभीर रुप से पीड़ित पंचमेश से दृष्ट हो तो विवाह से पूर्व, अनैतिक शारीरिक सम्बन्धों का कारण होता है, विशेषकर यदि सप्तमेश द्वादश, अष्टम या तृतीय भाव में हो।

8. निर्बली लग्नेश सप्तम भाव में स्थित होकर अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो एक से अधिक भार्या देता है। इसकी दशा/अन्तर्दशा में भार्या की मृत्यु भी हो सकती है।

9. सप्तमेश और पंचमेश की युति, विवाह और सन्तान के लिए शुभ नहीं है।

10. अष्टम भाव में स्थित मंगल या राहु, अपनी दशा में पति की मृत्यु दे सकता है, यद्यपि बृहस्पति की सप्तम भाव पर दृष्टि, प्रथम विवाह को बचाती है।

    यदि सप्तमेश, पंचम या नवम भाव में हो तो जातक का विवाह भाग्यशाली स्त्री से होता है। यद्यपि केन्द्र एवं त्रिकोण का यह सम्बन्ध राजयोग कारक होता है लेकिन मंत्रेश्वर कहता है कि सप्तमेश, पंचम भाव में हो तो जातक को भार्या और सन्तान की हानि होती है।

11. स्त्रियों की कुण्डलियों में यदि निर्बली सप्तमेश, नवम भाव में हो तो यह विवाह को दूषित करता है और तलाक भी करवा सकता है। यह सम्बन्ध सगाई का टूटना और अन्तिम समय में वर के परिवर्तन को भी सूचित करता है।

12. कुण्डली में मंगल, रतिइच्छा और इसके लिए आवश्यक उर्जा को दर्शाता है। इस पर किसी भी प्रकार की पीड़ा, वैवाहिक जीवन को बिगाड़ने में सक्षम होती है। स्त्रियों की कुण्डलियों में यदि मंगल अस्त हो तो वह अपने पति को नियंत्रित करने में असफल होती है।

13. शनि और शुक्र, अष्टम या दशम में शुभ ग्रहों के प्रभाव से हीन अथवा शुक्र दशम में और शनि लग्न या पंचम में।

14. सप्तमेश अस्त या नीच का अथवा अशुभ ग्रहों के साथ 6, 8 या 12वें भाव में।

15. सूर्य, अशुभ ग्रहों के साथ हो अथवा अशुभ ग्रहों के सामने हो तो विवाह में विघ्न उत्पन्न करता है विशेषकर स्त्रियों की कुण्डलियों में, यदि पीड़ित करने वाला ग्रह सप्तमेश ही हो।

16. चन्द्रमा से सूर्य सामने हो या केन्द्र में हो तो विवाह में अनुरुपता नहीं होती है, यदि पीड़ित हो तो अत्याधिक मतभेद होते हैं।

विवाह का समय निर्धारण:

कुण्डली में विवाह के आंकलन के उपरान्त यह देखना भी बहुत महत्वपूर्ण होता है कि विवाह कब होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो उचित आयु में विवाह होने के लिए कुण्डली में विवाह के योग होने के साथ-साथ विवाह के अनुकूल दशा होना भी आवश्यक है।

विवाह देने वाली दशा:

श्री के. एन. राव के मतानुसार 60 से 70 प्रतिशत विवाह लग्नेश, पंचमेश और सप्तमेश की दशा/अन्तर्दशा में होते हैं। जन्म कुण्डली के साथ-साथ सप्तमांश और नवांश में भी इनका आंकलन करना चाहिए।

शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार विवाह से सम्बन्धित दशायें इस प्रकार हैं:

1. राहु और शुक्र की दशा।
2. सप्तमेश की दशा।
3. सप्तम भाव एवं सप्तमेश को अपनी युति या दृष्टि से प्रभावित करने वाले ग्रहों की दशा।

विवाह को, आयु के अनुसार तीन वर्गों में बांटा जा सकता है, प्रथम शीघ्र विवाह अथवा कम आयु में विवाह, दूसरा सामान्य आयु में विवाह और तीसरा अधिक आयु में विवाह। विवाह का समय निर्धारण करने के लिए सर्वप्रथम जातक की सम्भावित आयु के उस वर्ग का निर्णय करना आवश्यक है जिस आयु वर्ग में उसका विवाह हो सकता है।

शीघ्र विवाह के योग (21 वर्ष की आयु से पूर्व):

1. कुण्डली के लग्न-सप्तम में शुभ ग्रहों की स्थिति।
2. द्वितीय-अष्टम में कोई अशुभ ग्रह नहीं।
3. कुण्डली में शुभ ग्रह वक्री न हों।
4. शुक्र, अस्त न हो। यह देखा गया है कि यदि शुक्र अस्त हो तो सामर्थ्यवान जातकों के विवाह में भी विलम्ब होता है।
5. लग्नेश बली हो।
6. बृहस्पति, शुक्र के निकट स्थित हो और कोई अन्य ग्रह उनसे सम्बन्धित न हो।
7. सप्तमेश, सप्तम भाव में हो।
8. लग्नेश और सप्तमेश की अंशात्मक दूरी कम हो।
9. लग्नेश की सप्तमेश से निकटता।
10. लग्नेश की शुक्र से निकटता।
11. पंचम भाव में कुछ ग्रह हों और सूर्य एवं चन्द्रमा पीड़ित न हों एवं शुभ प्रभाव में हों।
12. सूर्य, दशम एवं सप्तम अथवा चतुर्थ एवं प्रथम भाव के घेरे में हो तो शीघ्र विवाह अथवा कम आयु के जातक से विवाह देता है।
13. यदि सप्तम भाव को बृहस्पति दृष्ट करे तो विवाह में अधिक विलम्ब नहीं होता है।

सामान्य आयु में विवाह (21 से 24 वर्ष की आयु में):

विवाह की सामान्य आयु 21 से 24 मानी गई है और इसके बाद की आयु में होने वाला विवाह, अधिक आयु का विवाह कहलाता है। लेकिन आधुनिक परिवेश में जहां लगभग 24-25 वर्ष की आयु तक जातक की शिक्षा ही पूर्ण नहीं हो पाती है, इसमें परिवर्तन की आवश्यकता है। यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि कोई भी फलकथन, देश-काल-पात्र के आधार पर करना चाहिए। यद्यपि आज भी देश के ग्रामीण भागों में 21 से 24 वर्ष की आयु, विवाह के लिए उचित आयु हो सकती है और 24 से अधिक आयु में विवाह, देरी का विवाह कहा जा सकता है लेकिन,

महानगरों में 28 वर्ष तक की आयु के विवाह को सामान्य वर्ग मे लेना अधिक उचित होगा।

1. प्रथम-सप्तम और द्वितीय-अष्टम भावों का अधिक पीड़ित न होना। इस संदर्भ में सूर्य, राहु और केतु की स्थिति सबसे कम पीड़ित करने वाली होती है। साथ ही साथ ये ग्रह अशुभ ग्रहों की दृष्टि से प्रभावित नहीं होने चाहिए।
2. शुभ ग्रह वक्री न हों।
3. शुक्र, अस्त न हो।
4. सप्तमेश अशुभ प्रभाव में हो।
5. चतुर्थ-दशम में शुभ ग्रह हों। दरिद्र घर की कन्या की कुण्डली में 4/10 के अक्ष में शुभ ग्रहों का होना, विवाह के उपरान्त धन-सम्पति को दर्शाता है क्योंकि चतुर्थ भाव, सुख का प्रतिनिधित्व करता है।
6. पुरुष कुण्डलियों में चन्द्रमा और स्त्रियों की कुण्डलियों में सूर्य 1ले से 3रे अथवा 7वें से 9वें भावों के मध्य हो।
7. शुक्र और अन्य ग्रह, एक से अधिक ग्रह, जल तत्व राशि में हो।
8. शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की पंचम अथवा सप्तम भाव में स्थिति।

विलम्ब से विवाह (24 से 28 वर्ष की आयु में):

आधुनिक परिवेश में और विशेषकर महानगरों के पुरुष जातकों के लिए 28 वर्ष के स्थान पर 30 वर्ष भी लिया जा सकता है।

1. प्रथम-सप्तम अथवा द्वितीय-अष्टम अक्ष में बली अशुभ ग्रह, शनि और मंगल।
2. सप्तमेश बली अशुभ ग्रह से दृष्ट और अस्त।
3. शुभ ग्रहों का वक्री होना।
4. शुक्र का अस्त होना।
5. कुण्डली में कुजा दोष होना।
6. द्वादश भाव का दोहरे अशुभ प्रभाव में न होना।
7. चतुर्थ भाव का तीन प्रकार के अशुभ प्रभाव में होना।

8. दारा कारक का पीड़ित न होना।
9. शुक्र से सप्तम का परिणाम महत्वपूर्ण है।

विवाह में अति विलम्ब (28 से अधिक आयु में विवाह):

1. सूर्य और चन्द्रमा एक-दूसरे के निकट हों अथवा अशुभ प्रभाव में हों।
2. यदि कुण्डली में शनि अधिक प्रभावशाली हो तो विवाह से अति घृणा, अति सावधानी, तत्परता की कमी और अत्याधिक संशय देता है।
3. यदि पुरुष कुण्डली में प्रभावशाली शनि के द्वारा शुक्र और स्त्री की कुण्डली में मंगल पीड़ित हो तो यह विवाह में विलम्ब अथवा विवाह न होने को इंगित करता है।
4. लग्नेश, द्वादश भाव में हो।
5. सप्तमेश, अष्टम में हो अथवा अष्टमेश, सप्तम में हो।

विवाह हीनता अर्थात विवाह न होने के योग:

शास्त्रीय ग्रन्थों में विवाह न होने के लिए निम्नलिखित योगों को दिया गया है:

1. सूर्य और चन्द्रमा, शनि के पूर्ण नियंत्रण में हों।
2. शनि-चन्द्रमा की युति। यह युति जातक में आध्यात्मिकता की उत्कण्ठा उत्पन्न करती है, जातक में वैराग्य की भावना का विकास होता है और बुद्धि अन्तिम सत्य की ओर अग्रसर होती है। ऐसे जातक को विवाह की कोई अभिलाषा नहीं होती है। उदाहरणत: स्वामी विवेकानन्द की कुण्डली का अवलोकन करें। इनकी कुण्डली में शनि-चन्द्रमा की युति दशम भाव में है।
3. शुक्र अस्त हो और शनि से प्रभावित हो।
4. सप्तम भाव में बुध, द्वादशेश और षष्टेश के साथ हो। बुध नपुंसक ग्रह है और द्वादशेश शयनकक्ष के सुख से सम्बन्धित होता है। षष्टेश की युति इन दोनों को ही समाप्त कर देती है।
5. शुक्र, मंगल एवं सप्तमेश के साथ, षष्टम अथवा सप्तम भाव में हो। जातक की कई प्रेमिकायें हो सकती हैं लेकिन वह विवाह का इच्छुक नहीं होता है।

6. यह भी देखा गया है कि शनि और सूर्य का सप्तम भाव-सप्तमेश पर प्रभाव, विवाह न होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सूर्य और शनि की 1/7 अक्ष में स्थिति अथवा सप्तम भाव का इनके मध्य होना, विवाह न होने की ओर अग्रसर कर सकता है।
7. शुक्र, बंजर राशियों अर्थात मिथुन, सिंह या कन्या में हो।
8. लग्न में, ग्रहों के मध्य ग्रह-युद्ध हो।
9. शनि और मंगल का लग्न, षष्टम, अष्टम या सप्तम अथवा नवांश के लग्न से सप्तम में होना विवाह का विनाश करता है।
10. सप्तमेश, षष्टम भाव में निर्बली और नीच का हो।
11. सप्तम भाव अथवा द्वादश भाव में अशुभ ग्रह हों और कृष्णपक्ष का चन्द्रमा पंचम या नवम भाव में हो और बृहस्पति से दृष्ट न हो।
12. शुक्र और चन्द्रमा की युति वृषभ, तुला या कर्क राशि में हो अथवा नवांश के षष्टम या अष्टम भाव में हो।
13. यदि शुक्र और उसका राशीश, एक-दूसरे से 6/8 अक्ष में हो और अन्य अशुभ प्रभाव भी हों तो लड़की अपने पति के घर में रोती-बिलखती हुई नौकरानी के रुप में रहती है।
14. मिथुन राशि का सूर्य यदि शनि से दृष्ट हो तो कन्या जीवनभर कुंवारी ही रहती है।
15. सप्तमेश, लग्न और शुक्र, बंजर राशियों में स्थित हों।
16. यदि शुक्र, नीच के सूर्य से 43 अंश या अधिक दूरी पर हो और शनि से दृष्ट हो तो विवाह से सम्बन्धित चर्चा अन्तिम क्षणों में टूट जाती हैं।
17. तीनों लग्न अर्थात लग्न, सूर्य लग्न और चन्द्र लग्न पर, शनि की दृष्टि हो।
18. चन्द्रमा, सूर्य और शुक्र, तीनों ही शनि से पीड़ित हों।

विवाह में मंगल की भूमिका:

विवाह के दिन गोचर का मंगल, जन्म के शुक्र को दृष्ट करता है अथवा जन्म के मंगल से सम्बन्ध स्थापित करता है।

ग्रह और पुनर्विवाहः

1. **द्विस्वभाव राशियों और शुक्र का महत्वः** पुनर्विवाह में द्विस्वभाव राशियों अर्थात मिथुन, कन्या, धनु एवं मीन राशियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब विवाह का नैसर्गिक कारक शुक्र इन राशियों में होता है और उसका राशीश उच्च का होता है तो पुनर्विवाह की संभावनायें बढ़ जाती हैं।

   ***विशेषः** द्वितीय विवाह के लिए कुण्डली में कलत्रकारक शुक्र का बली होना अतिआवश्यक है। अर्थात यह कुण्डली में उच्च का, स्वराशि का, वर्गोत्तम आदि होना चाहिए। यदि यह नीच का होता है अथवा अन्य किसी प्रकार से पीड़ित होता है तो, द्वितीय विवाह नहीं होता है। स्त्री की कुण्डली में यदि पति के कारक के रुप में मंगल बली होता है और अन्य स्थितियां भी होती हैं तो ही उसका द्वितीय विवाह होता है। हिन्दु कन्याओं के लिए द्वितीय विवाह का भविष्यकथन सावधानी से करना चाहिए क्योंकि सामाजिक स्थितियों के कारण अधिकतर लोग द्वितीय विवाह को अच्छा नहीं मानते हैं, यद्यपि आधुनिक परिवेश में लोगों की इस सोच में भी परिवर्तन आने शुरु हो गये हैं।*

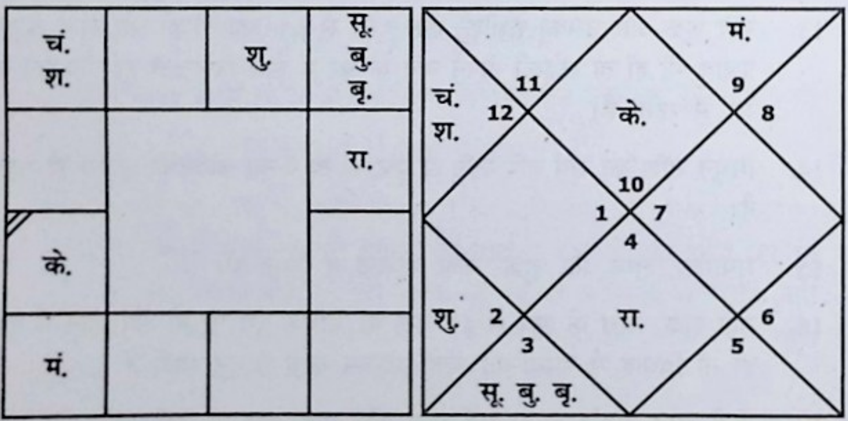

इस कुण्डली के जातक की प्रथम भार्या की मृत्यु हो गई थी। सप्तम भाव और सप्तमेश, दोनों ही पीड़ित हैं। नवांश में शुक्र नीच का है, इसलिए द्वितीय विवाह भी नहीं हो पाया।

2. **बृहस्पति और शुक्र की भूमिकाः** बृहस्पति और शुक्र का प्रभाव, जातक को विपरीत लिंगियों को आकर्षित करने वाला बनाता है और पुनर्विवाह की ओर अग्रसर करता है।

3. **पहली भार्या की मृत्यु के बाद पुनर्विवाहः** यदि लग्नेश अष्टम में हो, मंगल सप्तम में हो और शुक्र, चन्द्रमा से सप्तम में हो तो जातक तीन बार विवाह करता है।

4. मंगल, लग्न से सप्तम और लग्नेश से द्वादश भाव में हो अर्थात लग्नेश, षष्टम भाव में हो तो यह विवाह को एकाएक समाप्त कर देता है। शुक्र-चन्द्रमा का एक-दूसरे के सामने होना, पुनर्विवाह के द्वारा प्रेम की भावना देता है।

5. लग्नेश से दशम भाव में स्थित बली बुध और सप्तमेश से तृतीय भाव में स्थित बली चन्द्रमा, कई भार्यायें देता है।

6. जन्म कुण्डली में लग्नेश, सप्तम भाव में और द्वितीयेश की नैसर्गिक अशुभ ग्रह से युति भार्या के दीर्घायु होने के लिए शुभ नहीं होती है। लग्नेश का विवाह के भाव में होना, जातक की प्रथम भार्या की मृत्यु के उपरान्त पुनर्विवाह को इंगित करता है।

7. सप्तमेश, द्विस्वभाव राशि का होकर एकादश भाव में हो।

8. षष्टेश का द्वादश भाव में होना ऐसी स्थिति है जिसको पुनर्विवाह के लिए गिना जाना चाहिए।

स्त्रियों का पुनर्विवाहः

पति की मृत्यु के उपरान्त अथवा आधुनिक परिवेश में प्रथम पति से तलाक होने के उपरान्त, स्त्री का पुनर्विवाह होता है। स्त्रियों की कुण्डलियों में पुनर्विवाह के योग इस प्रकार से हैं:

1. शनि के त्रिशांश में जन्म।
2. सप्तम भाव पर शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों का सामूहिक दृष्टि प्रभाव।
3. लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भाव/सप्तमेश पर सूर्य और राहु का प्रभाव।
4. फलदीपिका के मतानुसार शनि एवं चन्द्रमा से युत मंगल सप्तम भाव में।
5. वक्री शनि, एकादशेश होकर सप्तम भाव में।

नपुंसकता:

1. षष्टेश लग्न में बुध की राशि में और लग्नेश बुध की राशि में - सर्वार्थ चिन्तामणी।
2. लग्नेश की बुध से युति।
3. शनि और बुध की द्विस्वभाव राशियों में स्थिति।
4. दो नपुंसक ग्रहों बुध और शनि का तुला राशि, सप्तम भाव या चन्द्रमा और शुक्र से सम्बन्ध।
5. अस्त शुक्र की पुरुष राशि में और अस्त मंगल की स्त्री राशि में स्थिति।
6. सप्तम भाव में निर्बली ग्रह और सप्तमेश का नीच राशि में होना।
7. निर्बली चन्द्रमा।
8. शनि षष्टम या द्वादश भाव में नीच का अथवा षष्टम एवं द्वादश भाव में जल तत्व राशि।
9. अष्टम भाव पीड़ित, सूर्य, चन्द्रमा और शुक्र, पीड़ित होकर कन्या राशि या षष्टम भाव से सम्बन्धित।
10. सप्तमेश, शुक्र के साथ षष्टम भाव में।
11. शनि और शुक्र, अष्टम या दशम भाव में, शुभ ग्रहों से अदृष्ट अथवा शुक्र दशम में और शनि लग्न या पंचम भाव में।
12. सप्तमेश अस्त या नीच का अथवा अशुभ ग्रहों के साथ षष्टम या अष्टम भाव में और पीड़ित ग्रह सप्तम भाव में।
13. लग्नेश निर्बली होकर नीच या अस्त ग्रह से दृष्ट और सप्तमेश नीच का होकर षष्टम भाव में स्थित।
14. नवांश में लग्न, चन्द्रमा और शुक्र की विषम राशियों में स्थिति।
15. सम राशि में स्थित मंगल, चन्द्रमा से दृष्ट और लग्न में विषम राशि।

वृहत जातक के अनुसार निम्नलिखित ग्रहों का जैमिनी दृष्टि से एक-दूसरे को दृष्ट करना:

1. चन्द्रमा सम राशि में और बुध विषम राशि में।
2. शनि सम राशि में और बुध विषम राशि में।
3. सूर्य सम राशि में और मंगल विषम राशि में।
4. मंगल सम राशि में स्थित होकर चन्द्रमा को दृष्ट करे और लग्न विषम राशि में।

उपरोक्त योगों में से कोई भी योग हो तो जातक नपुंसक होता है।

विवाह में विघटन की स्थितियां:

ग्रहों के निम्नलिखित योगों को ज्योतिषशास्त्र के विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों के अक्षय कोष से उद्धृत किया गया है। इन नियमों को लगाने से पहले यह समझना आवश्यक है कि कोई भी एक योग जातक को रतिकर्म के व्यवहार में अनैतिक अथवा विवाह से सम्बन्धित आस्तिकता में निश्चल नहीं बनाता है। किसी भी निर्णय में पहुंचने से पहले पूरी कुण्डली की विवेचना करना आवश्यक है।

1. **शुक्र की भूमिका:** शुक्र पीड़ित नहीं होना चाहिए, विशेषकर, यदि यह कुण्डली के सप्तम भाव से सम्बन्धित हो। यदि शुक्र, शनि से पीड़ित हो तो जातक अपने नैतिक मूल्यों के प्रति लापरवाह होता है और अपनी जाति के बाहर सम्बन्ध स्थापित करता है। मंगल का अशुभ प्रभाव, अनियंत्रित कामुक इच्छा की ओर अग्रसर करता है। राहु का अशुभ प्रभाव, सामाजिक निन्दा की ओर ले जाता है। यदि शुक्र, लग्न में नीच अथवा ग्रह-युद्ध में हो और नवांश के लग्न में भी स्थित हो तो जातक की कामुक इच्छायें अनियंत्रित हो जाती हैं।
2. नीच के ग्रहों अथवा ग्रह-युद्ध में लिप्त ग्रहों का शुक्र पर अशुभ प्रभाव विशेषत: यदि इसमें सप्तम भाव भी शामिल हो तो जातक को अनियंत्रित कामुक व्यवहार देता है।

3. **शुक्र का मिथुन राशि में स्थित होनाः** मिथुन राशि में स्थित शुक्र की भूमिका के उपर बहुत सारे लेख लिखे गए हैं। यह देखा गया है कि यदि बुध और शुक्र के मध्य राशि परिवर्तन नहीं है तो मिथुन राशि का शुक्र वैवाहिक जीवन की अप्रसन्नता का कारण होता है तथा मिथुन नवांश में स्थित शुक्र, विवाह के उपरान्त समस्यायें उत्पन्न करता है और विवाहोत्तर सम्बन्धों की ओर ले जा सकता है। जबकि यहां यह समझना भी आवश्यक है कि यह, उत्कृष्ट संगीतकार और कलाकार होने के लिए एक शास्त्रीय योग है।

4. कुण्डली में लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम, अष्टम एवं नवम भावों में तदनुसार अशुभ ग्रह नहीं होने चाहिए। यह विवाह से पूर्व और उपरान्त भी अशांति का कारण बनता है। यह योग तभी बनेगा जब तीनों ही भावों में अशुभ ग्रह होंगे।

5. नवांश कुण्डली में शनि की सप्तम भाव में स्थिति, अपरम्परागत विवाह को इंगित करती है और वैवाहिक अनुरुपता में विघ्न डालती है। यह विवाह के उपरान्त वैवाहिक सम्बन्धों में अविश्वास की ओर अग्रसर कर सकती है।

6. लग्नेश और सप्तमेश के मध्य ग्रह युद्ध अच्छा नहीं होता है।

7. स्त्री की कुण्डली में सप्तमेश की नवम भाव की स्थिति को अच्छा नहीं माना जाता है। यह पति को अव्यवहारिक लैंगिक व्यवहार करने की ओर अग्रसर कर सकता है। जातिका के पति की दो भार्यायें हो सकती हैं अथवा उसके अनैतिक सम्बन्ध हो सकते हैं। यह *सपत्नीयोग* अथवा *अवकलता योग* कहलाता है। यदि सप्तमेश अधिक पीड़ित हो तो यह स्त्री के व्यवहार में भी विवाह के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों से सम्बन्ध बनाने का रुझान दे सकता है।

8. लग्न, चन्द्रमा अथवा शुक्र से अष्टम भाव में अशुभ ग्रह नहीं होने चाहिए। अष्टम भाव, लैंगिक व्यवहार से सम्बन्धित भाव है अतः इसे अशुभ प्रभाव से मुक्त होना चाहिए।

9. पीड़ित मंगल भी वैवाहिक जीवन में विघ्न उत्पन्न करता है क्योंकि स्त्री की कुण्डली में यह पति का और पुरुष कुण्डली में पौरुष शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

10. नवम भाव में स्थित शनि को भी शुभ नहीं माना जाता है चाहे वह उच्च राशि में हो या स्वराशि में हो। यह भी वैवाहिक जीवन के सुख में विघ्न डालता है।

विवाह में विरोधः

विवाह में विरोध का आंकलन करने के लिए हमेशा चतुर्थांश वर्ग कुण्डली को जांचना चाहिए और साथ ही साथ, दशा चक्र को भी देखना चाहिए। यदि राहु दुर्स्थित हो, उदाहरणतः माना कि यह अपनी अन्तर्दशा में महादशानाथ से 6, 8 या 12वें भाव में हो, तो लड़की विवाह के लिए घर से भाग जाएगी। यदि महादशानाथ और अन्तर्दशानाथ त्रिकोण में हों तो समझोता हो जाएगा।

चतुर्थांश घर की अशान्ति को इंगित करता है। कन्या के विवाह के समय उसकी कुण्डली में विवाह के समय की दशा/अन्तर्दशा/प्रयन्तरदशा को देखें और चतुर्थांश से यह देखें कि घर में परिवर्तन हो रहा है अथवा नहीं और 4/10 भाव पीड़ित हैं या नहीं।

यदि दाराकारक अष्टम भाव में हो तो यह समस्यायें देगा। गोचर में जब बृहस्पति, बृहस्पति/शनि, दाराकारक को जैमिनी दृष्टि से देखते हैं तो यह समझ लेना चाहिए कि विवाह का समय आ गया है।

शुक्र वायु तत्व राशियों में सुखद स्थिति में होता है। यदि यह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो इसका नीच राशि में होना भी नकारा जा सकता है। वैवाहिक विषयों में सूर्य सबसे अधिक शत्रुता निभाता है। धनु राशि के अतिरिक्त किसी भी अन्य अग्नि तत्व राशि में इन दोनों की युति हो तो इनके उपस्वामी की अन्तर्दशा में विवाह समाप्त हो जाता है। उपस्वामी अधिक महत्वपूर्ण है। यदि उपस्वामी चन्द्रमा या लग्न का शत्रु हो और पीड़ित होकर सप्तम/सप्तमेश या शुक्र से सम्बन्धित हो तो यह दशा दुर्भाग्यशाली सिद्ध होती है, लेकिन निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व गोचर की स्थितियों की विवेचना करना भी आवश्यक होता है। यदि गोचर में भी पापी ग्रहों का सम्बन्ध आ रहा हो तो विवाह के समाप्त होने के आसार अधिक हो जाते हैं।

लग्न और चन्द्रमा को भी सप्तम भाव/सप्तमेश से अनुकूल स्थिति में होना चाहिए। सप्तमेश और शुक्र से चन्द्रमा अथवा लग्न की दुर्स्थिति, अनुरुपता न होने का मुख्य कारण होती है। इनकी एक-दूसरे से केन्द्र, त्रिकोण और 3/11 की स्थिति अच्छी स्थिति है।

सप्तम भाव/सप्तमेश की चन्द्रमा से युति और शुक्र से सीधा अथवा किसी अन्य प्रकार से सम्बन्ध होने के कारण जातक का वैवाहिक जीवन आनन्दमय होता है।

सप्तम भाव में स्थित ग्रह विवाह को अधिक प्रभावित करते हैं। यदि लग्नेश सप्तम में हो तो इस पर और इसके साथ स्थित अन्य ग्रहों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। चाहे लग्न कोई भी हो, लग्न, सूर्य और चन्द्रमा जातक के बौधिक और आध्यात्मिक आधार होते हैं।

पुरुष की कुण्डली में शुक्र और चन्द्रमा पीड़ित नहीं होने चाहिए जबकि स्त्री की कुण्डली में मंगल, सूर्य और शुक्र को शनि से पीड़ित नहीं होना चाहिए। कुण्डली के नवम भाव में स्थित शुभ ग्रह भार्या के सम्बन्धों से सौभाग्य लाते हैं जबकि पापी ग्रह समस्यायें उत्पन्न करते हैं।

मंगल अथवा कुजा दोष

ज्योतिषशास्त्र में कुण्डली मिलान का विचार करते समय मंगल दोष अथवा कुजा दोष का विचार सबसे अधिक भयंकर और सबसे अधिक गलत समझा जाने वाला विचार है। अप्रशिक्षित और अक्षम ज्योतिषाचार्य इसका तलवार की नोक की तरह प्रयोग करते हैं और फलस्वरुप बहुत सारे माता-पिता अपने बच्चों के लिए उचित वर-वधु की तलाश करने की चिन्ता में बिना सोये कई रातें बिता देते हैं। आजकल की परिस्थितियों में जहां होने वाले वर एवं उसके सम्बन्धियों द्वारा सूक्ष्म परीक्षण एवं निरीक्षण करने हेतु, लड़की का जानवरों की तरह प्रदर्शन किया जाता है, वहां लड़की के लिए उचित वर ढूंढ़ना सरल कार्य नहीं है। वैसे ही वर ढूंढ़ना कठिन कार्य होता है और मांगलिक दोष को इसमें शामिल करने से माता-पिता के पास उचित वर चुनने की सीमा अधिक सीमित हो जाती है जिसके कारण उनकी कठिनाइयों में वृद्धि ही होती है। इसी कारण से कई बार माता-पिता अपनी लड़की की झूठी कुण्डलियां बना कर मिलान करवाने के लिए बाध्य हो जाते हैं और अपने लिए भविष्य में होने वाली समस्याओं में अधिक बढ़ोतरी कर देते हैं।

यह बहुत ही आश्चर्य करने वाली बात है कि ज्योतिष के शास्त्रीय ग्रन्थों में मंगल दोष के संदर्भ में, मात्र मंगल की कुण्डली के विभिन्न भावों की स्थिति के परिणाम के संदर्भ में ही वर्णन मिलता है।

मंगल या कुजा दोष क्या है:

कुजा, मंगल का ही दूसरा नाम है जो कुण्डली में एक अशुभ ग्रह के रुप में जाना जाता है। यह माना जाता है कि यदि किसी लड़की की कुण्डली के द्वितीय,

द्वादश, चतुर्थ, सप्तम अथवा अष्टम भाव में मंगल स्थित हो तो यह उसके पति को, मृत्यु की ओर ले जाता है तथा पुरुष की कुण्डली में इन स्थितियों में मंगल हो तो उसकी भार्या की मृत्यु हो जाती है। इसका आधार निम्नलिखित संस्कृत का श्लोक है:

धनभावे च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे
स्त्रीं भर्तृ विनाशाय भर्ता स्त्रींविनाशम्॥

अर्थात यदि लड़की की कुण्डली के द्वितीय, द्वादश, चतुर्थ, सप्तम अथवा अष्टम भाव में मंगल स्थित होगा तो उसके पति की मृत्यु होगी। इसी प्रकार की स्थिति पुरुष की कुण्डली में हो तो उसकी भार्या की मृत्यु होगी। कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि इसमें प्रथम भाव को भी शामिल करना चाहिए क्योंकि प्रथम भाव से मंगल, सप्तम भाव को दृष्ट करता है।

इन भावों को लग्न, चन्द्रमा और शुक्र, तीनों से ही देखना चाहिए। मंगल दोष शुक्र से अधिक बली होता है, उससे कम चन्द्रमा से और सबसे कम लग्न से होता है।

अब यह प्रश्न उठता है कि इन्हीं भावों को ही क्यों लिया गया है। इसका उत्तर इस प्रकार से है।

1. **प्रथम भाव में स्थित मंगलः** प्रथम भाव से मंगल, विवाह के भाव सप्तम को, मानसिक शान्ति के भाव चतुर्थ को और विवाह की आयु के भाव, अष्टम को दृष्ट करता है।

2. **द्वितीय भाव में स्थित मंगलः** द्वितीय भाव, कुटुम्ब अर्थात परिवार का प्रतिनिधित्व करता है। यहां से मंगल अष्टम भाव को दृष्ट करता है, अतः विवाह के दीर्घायु होने के लिए शुभ नहीं होता है।

3. **चतुर्थ भाव में स्थित मंगलः** चतुर्थ भाव पारिवारिक खुशियों और मानसिक शान्ति को दर्शाता है और यहां से मंगल, सप्तम भाव को दृष्ट करता है।

4. **सप्तम भाव में स्थित मंगलः** विवाह का भाव होने के कारण सप्तम भाव पति या पत्नी को दर्शाता है। फलदीपिका के अनुसार यदि सप्तम भाव में मंगल हो तो जातक सड़कों पर व्यर्थ भटकता है और अपनी भार्या को खो देता है।

   सारावली के अनुसार ऐसे जातक की भार्या मर जाती है, वह अप्रसन्न होगा और अपवित्र जीवन की ओर अग्रसर होगा।

5. **अष्टम भाव में स्थित मंगलः** पति की कुण्डली में अष्टम भाव भार्या की और पत्नि की कुण्डली में पति की आयु का प्रतिनिधित्व करता है। यह भाव विवाह की आयु का भाव भी है, अतः मांगल्यस्थान भी कहलाता है।

   ज्योतिषशास्त्र के सभी प्रमुख ग्रन्थों में अष्टम भाव में स्थित मंगल को अशुभ माना गया है। यह माना गया है कि यह निम्नलिखित परिणाम देता है:

   अ. यह जातक अथवा उसके जीवनसाथी की आयु पर अशुभ प्रभाव डालता है।

   ब. जातक के साथ दुर्घटनायें हो सकती है और वह घायल हो सकता है।

   स. जीवन की प्राप्तियों में जातक का रास्ता अवरोधों से भरा होता है। यह भी कहा जाता है कि अष्टम मंगल के कारण कुण्डली के केन्द्र एवं त्रिकोण में सुस्थित ग्रह भी अपना शुभ प्रभाव देने में असमर्थ होते हैं।

   क. वैवाहिक जीवन में यह स्वयं या भार्या अथवा सन्तान के स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्यायें देता है।

   ख. यह आय का नैतिक अथवा अनैतिक कोई न कोई अतिरिक्त स्रोत देता है।

6. **द्वादश भाव में स्थित मंगलः** द्वादश भाव शयन सुख अर्थात भार्या के साथ शारीरिक सम्बन्धों के सुख को इंगित करता है। यहां से मंगल, विवाह के भाव, सप्तम को देखता है।

मंगल की इन भावों में स्थिति किसी न किसी प्रकार से जीवनसाथी के लिए हानिकारक होने के कारण शुभ नहीं मानी जाती है और **मंगल दोष या कुजा दोष** कहलाती है।

अपवादः

1. कन्या लग्न के लिए अष्टम में स्थित स्वराशि का मंगल, दीर्घायु देता है।
2. मेष लग्न के लिए भी अष्टम में स्थित स्वराशि का मंगल, दीर्घायु देता है।
3. मिथुन लग्न के लिए अष्टम भाव में स्थित मंगल उच्च का होता है अतः दीर्घायु देता है।

श्री के. एन. राव के मतानुसार भू-सम्पति का कारक और उत्तराधिकार के भाव अर्थात अष्टम में स्थित होने के कारण मंगल पैतृक भू-सम्पति देता है।

मंगल दोष का निरस्तीकरण:

1. यह माना जाता है कि यदि वर एवं वधु, दोनों की कुण्डलियों में मंगल दोष हो तो इस दोष का अशुभ प्रभाव स्वतः ही नष्ट हो जाता है।
2. यदि एक की कुण्डली के 1, 2, 4, 7, 8 या 12वें भाव में से किसी भाव में मंगल हो और दूसरे की कुण्डली के उसी भाव में शनि, राहु या केतु स्थित हो तो दोष समाप्त हो जाता है।
3. यह भी माना जाता है कि यह दोष 28 वर्ष की आयु के उपरान्त अपना अशुभ प्रभाव छोड़ देता है।

दुर्भाग्य से पारिवारिक पण्डित, कुण्डली मिलान में इस एक मात्र अव्यय को अत्याधिक महत्व देते हुए इसका ही अधिक विचार करते हैं जबकि इसके अतिरिक्त भी बहुत सारे अन्य शुभाशुभ अव्यय हैं जिनका विचार उचित मिलान की घोषणा से पहले करना आवश्यक होता है। सैकड़ों कुण्डलियों में यह देखा गया है मंगल दोष न होने के उपरान्त भी विवाह टूटा अथवा जीवनसाथी की मृत्यु हुई। इसी प्रकार सैकड़ों कुण्डलियां हैं जिनमें मंगल दोष था लेकिन दम्पति ने एक लम्बा सफल वैवाहिक जीवन बिताया।

अतः सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि कुण्डली को पूर्णरुप से जांचा जाए और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए अनिवार्य अन्य अव्ययों का विचार भी किया जाए। उदाहरणतः किसी भी कन्या के लिए वर चुनते समय इस बात पर बल देना चाहिए कि होने वाले वर की कुण्डली में निम्नलिखित योग हों:

1. उसकी आयु लम्बी होनी चाहिए।
2. वह इतना सामर्थ्यवान होना चाहिए कि परिवार को आर्थिक रुप से संभाल सके।
3. वह अच्छे नैतिक मूल्यों वाला होना चाहिए।
4. उसका वैवाहिक जीवन खुशहाल होना चाहिए।

इसी प्रकार वधु के चयन के लिए उसकी कुण्डली में निम्नलिखित पर अधिक बल देना चाहिएः

1. उच्च नैतिक विचारों वाली और दिखने में सुन्दर होनी चाहिए।
2. सामान्जस्य का व्यवहार करने में सक्षम होनी चाहिए।
3. खुशहाल वैवाहिक जीवन वाली।
4. धार्मिक और सामाजिक विचारों को महत्व देने और विश्वास रखने वाली।
5. सन्तान जनने में और उनका लालन-पालन करने में सक्षम।
6. रोग मुक्त लम्बी आयु वाली।

साथ ही साथ कुण्डली मिलान करते समय ज्योतिष के निम्नलिखित आधारभूत सिद्धान्तों का ध्यान रखना भी परम आवश्यक है।

1. केन्द्र और त्रिकोण में स्थित शुभ ग्रह खुशहाल वैवाहिक जीवन के लिए अच्छे होते हैं और खुशियों में वृद्धि करते हैं।
2. अशुभ ग्रह 3, 6 या 11वें भाव में स्थित होकर कुण्डली को बल देते हुए और अशुभता को क़म करते हुए, खुशियों में वृद्धि करते हैं।

इस विषय में मार्गदर्शन के लिए डा. बी. वी. रमन के विचारों को उनकी पुस्तक "इलेक्सनल एस्ट्रोलॉजी" से यहां उद्धृत किया जा रहा है। उनके अनुसार "यद्यपि कुजा दोष, कुण्डली मिलान का एक ऐसा अव्यय है जिसकी उपस्थिति को नकारना नहीं चाहिए लेकिन, इस दोष को भंग करने वाले भी कुछ योग हैं जिनका ज्ञान सामान्यतः हिन्दू ज्योतिषाचार्य नहीं रखते हैं।" उनके द्वारा कहे गए अपवाद इस प्रकार से हैं:

1. द्वितीय भाव में मंगल, बुध की राशियों में अर्थात मिथुन और कन्या राशियों में अशुभ नहीं होता है।
2. चतुर्थ भाव में स्थित स्वराशि अर्थात मेष और वृश्चिक राशि का मंगल, कुण्डली में मंगल दोष का निर्माण नहीं करता है।।
3. सप्तम भाव में कर्क अथवा मकर राशि का मंगल, काई दोष उदय नहीं करता है।

4. अष्टम भाव में बृहस्पति की राशियों अर्थात धनु और मीन राशि का मंगल, मंगल दोष नहीं देता है।

5. द्वादश भाव में शुक्र की राशियों अर्थात वृषभ और तुला राशि का मंगल, कुण्डली में मंगल दोष उदय नहीं करता है।

6. सिंह और कुंभ राशियों में स्थित मंगल, कुजा दोष कारक नहीं होता है। यदि मंगल और बृहस्पति अथवा मंगल और चन्द्रमा की युति हो, तो दोष स्वतः ही नगण्य हो जाता है।

7. यदि मंगल अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि अथवा उच्च के नवांश में स्थित हो तो कुजा दोष नहीं देता है। मंगल का कर्क अथवा सिंह राशि में होना हानिकारक है।

शान्ति हेतु की जाने वाली प्रक्रियाः

जिस कन्या के अष्टम भाव में मंगल हो उसके लिए मंगल दोष की शान्ति हेतु कई उपायों की सलाह दी गई है। इनमें कुंभ विवाह, सावित्री पूजन और मंगल गौरी वट पूजन मुख्य हैं। इनको सुयोग्य ब्राह्मणों की देख-रेख में करवाना चाहिए।

आइये इन नियमों को कुछ उदाहरणों में परखते हैं।

उदाहरण कुण्डली संख्या 1:

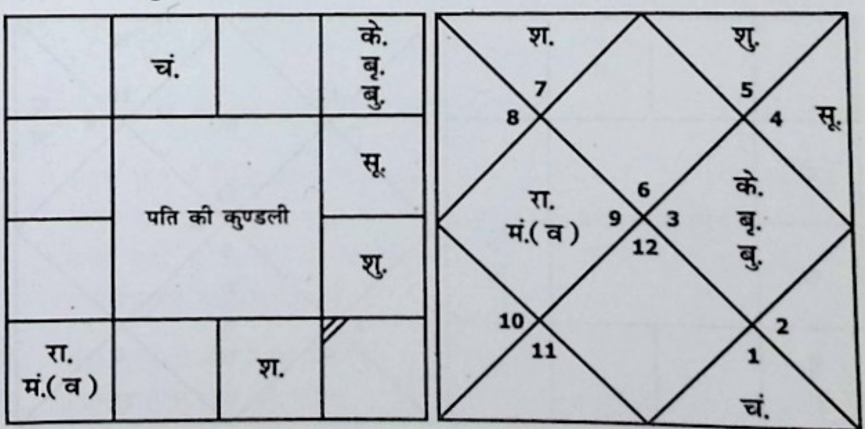

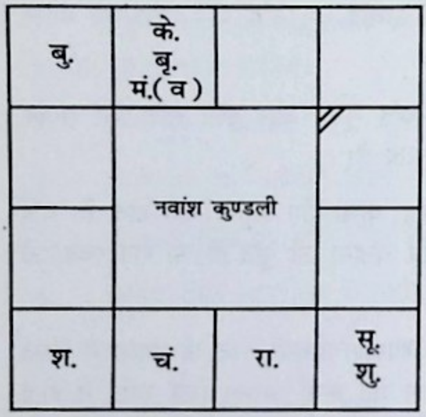

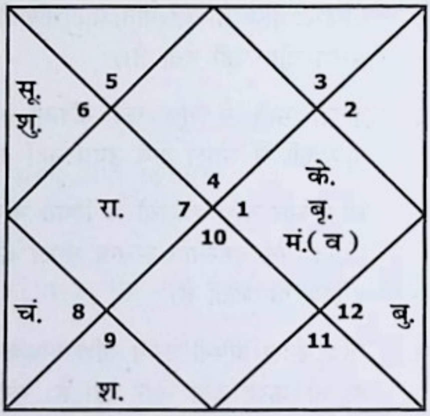

कुण्डली की प्रमुख विशेषताएं:

1. यह स्पष्ट कुजा दोष की कुण्डली है। मंगल, चतुर्थ भाव में राहु के साथ है और शनि से दृष्ट है।
2. सप्तमेश बृहस्पति, शत्रु राशि में स्थित होकर अत्याधिक पीड़ित है।
3. चन्द्रमा से सप्तम भाव में उच्च का शनि है। सप्तमेश शुक्र, शत्रु राशि में है जो बंजर राशि भी है।
4. नवांश कुण्डली में सप्तमेश शनि, षष्टम में स्थित है और षष्टेश बृहस्पति से दृष्ट है।

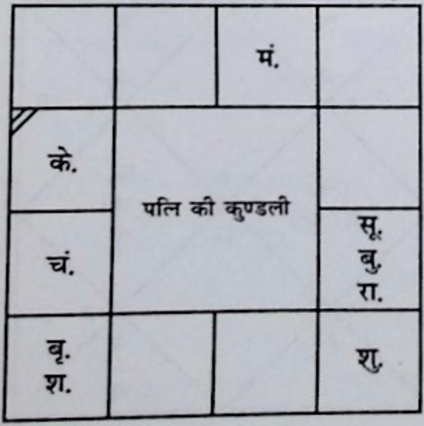

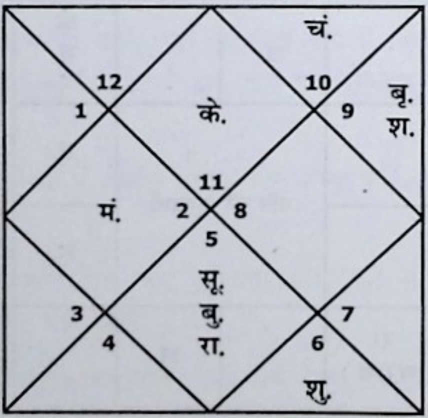

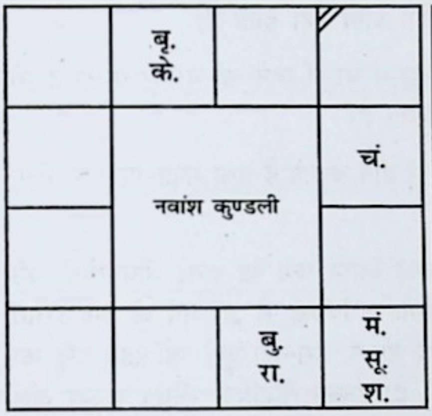

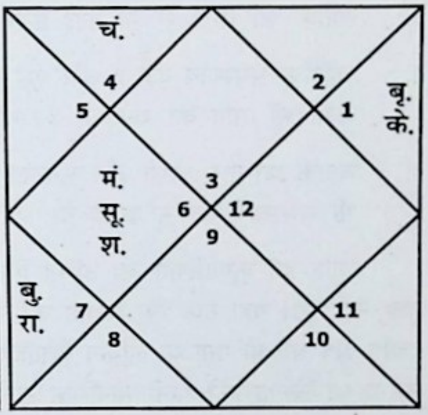

कुण्डली की प्रमुख विशेषताएं:

1. पति की कुण्डली की तरह ही पत्नी की कुण्डली के चतुर्थ भाव में मंगल, शत्रु राशि में है।
2. सप्तमेश पीड़ित है लेकिन बृहस्पति से दृष्ट है।
3. चन्द्रमा से सप्तमेश, चन्द्रमा ही है जो पीड़ित नहीं है।
4. नवांश में सप्तम भाव अपने स्वामी बृहस्पति से दृष्ट है।

कुजा दोष निर्णय: पति की कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के द्वारा निर्मित कुजा दोष, उसकी पत्नी की कुण्डली के उसी भाव में मंगल स्थित होने के कारण, दोष साम्य की स्थिति बन रही है।

चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के अशुभ परिणाम:

1. चतुर्थ भाव में स्थित मंगल यदि उच्च अथवा स्वराशि का न हो, तो पारिवारिक जीवन की खुशियों का हरण कर देता है। सभी शास्त्रीय ग्रन्थों में इसको अशुभ कहा गया है। उच्च अथवा स्वराशि का होने पर यह ***रुचक नाम*** का पंचमहापुरुष योग बनाता है।
2. यह कुण्डली का सबसे अधिक नकारात्मक अव्यय होता है जो अन्य ग्रहों द्वारा निर्मित शुभ योगों के प्रभाव में भी रुकावट उत्पन्न करता है।

3. जातक को मित्रों से भी कोई प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती है।
4. आर्थिक समस्यायें देता है और ऐसे अशुभ घर में रहने को मजबूर करता है जो कभी भी आग की चपेट में आ सकता है।
5. जातक को क्रूर, ऋणी और कृतज्ञता से हीन बनाता है तथा माता-पिता के लिए भी समस्यायें उत्पन्न करता है।

चूंकि इन कुण्डलियों का उचित मिलान किया गया था अत: जीवनसाथी की मृत्यु नहीं हुई। यहां तक कि विवाह की समाप्ति विवाह से 20 वर्ष के बाद हुआ। यद्यपि दोष भंग हो गया था लेकिन वैवाहिक जीवन, प्रसन्नता पूर्ण नहीं रहा। पति का कहना था कि उसकी पत्नी मानसिक रोगी है। इनका वैवाहिक जीवन कटुता और कड़ुवाहट से भरा था और वैवाहिक जीवन की सारी इच्छायें अतृप्त रहीं। अत: इन्होंने विवाह के 20 साल बाद अलग होने का निर्णय लिया।

निष्कर्ष: चूंकि कुजा दोष भंग हो रहा था अत: वैवाहिक जीवन की आयु का हनन नहीं हुआ लेकिन सप्तम भाव और सप्तमेश के पीड़ित होने के कारण उनका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहा।

उदाहरण कुण्डली संख्या 2:

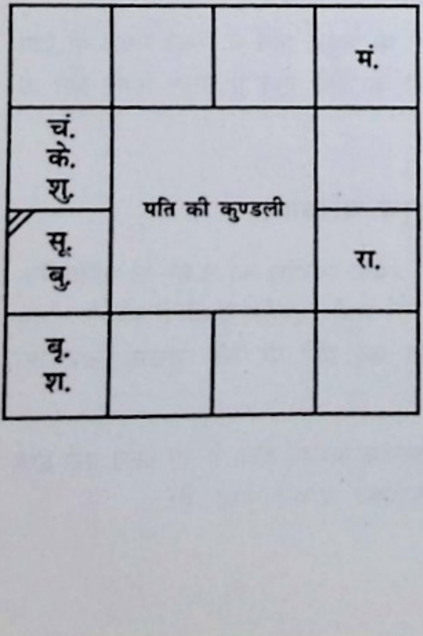

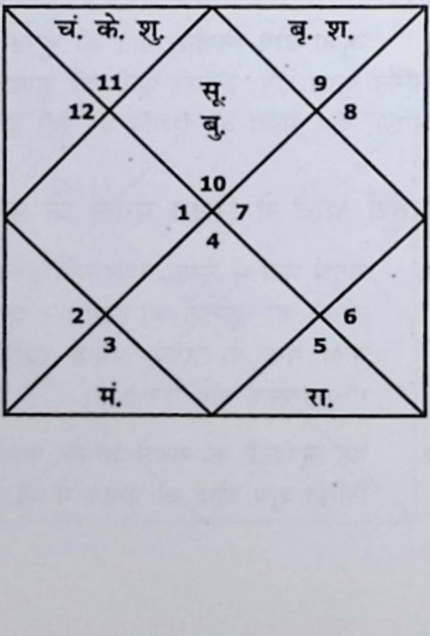

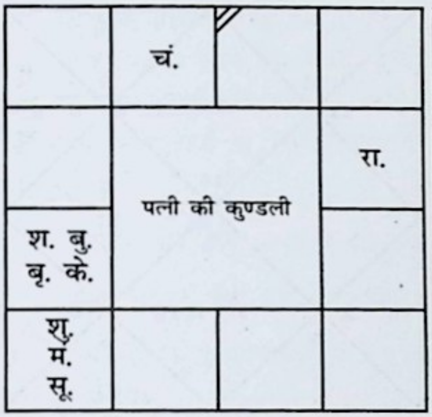

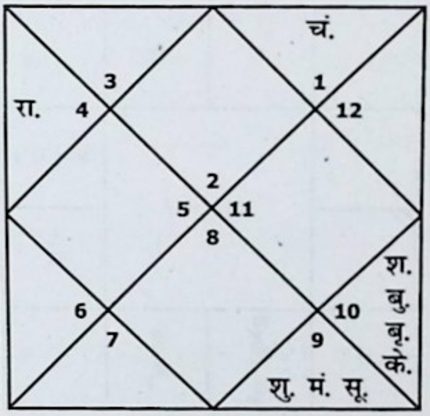

कुण्डलियों की प्रमुख विशेषताएं:

1. पत्नी की कुण्डली के अष्टम भाव, धनु राशि में मंगल, षष्टेश शुक्र और सूर्य के साथ युति में है अतः कुण्डली में स्पष्ट मंगल दोष है।

2. पति की कुण्डली में शनि, धनु राशि में है अर्थात उसी राशि में है जिस राशि में पत्नी की कुण्डली में मंगल बैठा है।

3. एक लम्बे वैवाहिक जीवन के बाद जातिका ने अपने पति से अलग होने का निर्णय लिया। उसके मतानुसार उसका पति मानसिक रोगी था।

उदाहरण कुण्डली संख्या 3:

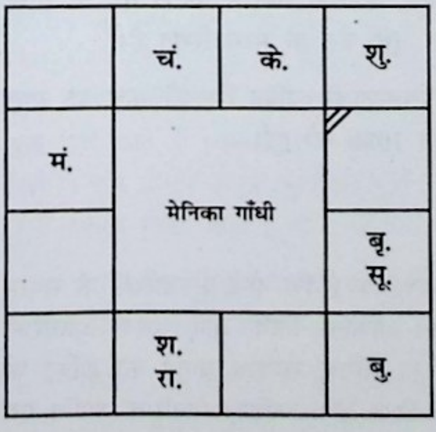

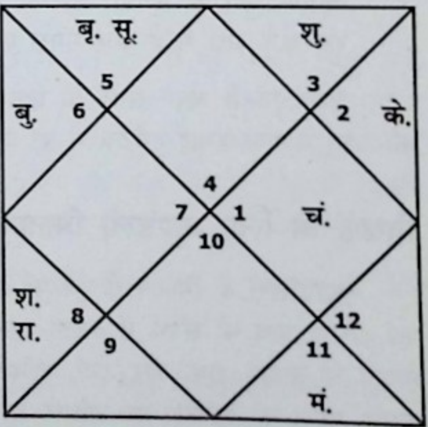

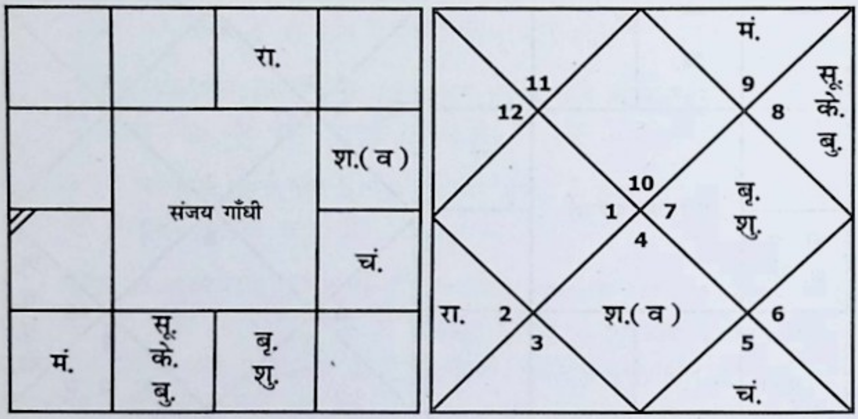

प्रमुख विशेषताएं:

मेनका गान्धी की जन्म कुण्डली में मंगल, अष्टम भाव में होकर कुजा दोष बना रहा है। संजय गान्धी की कुण्डली में मंगल, द्वादश भाव में है अतः तकनीकी रुप से कुजा दोष भंग हो रहा है। मेनका गान्धी की कुण्डली में सप्तमेश शनि, राहु-केतु अक्ष में स्थित होकर पीड़ित है।

कुण्डली में निम्नलिखित दोष होने के कारण संजय गान्धी अल्पायु थे।

1. लग्नेश शनि, वक्री होकर सप्तम भाव में स्थित है और मंगल से दृष्ट है।
2. अष्टम भाव का चन्द्रमा भी दीर्घायु होने के लिए अच्छा नहीं होता है।
3. आयुष्य भाव का स्वामी, अष्टमेश सूर्य, एकादश भाव में षष्टेश बुध के साथ, राहु-केतु अक्ष में है और मंगल एवं बुध-केतु के मध्य स्थित है।

संजय गान्धी अपने समय के एक प्रभावशाली व्यक्ति जिनकी मृत्यु 35 साल की आयु में एक हवाई दुर्घटना में 23 जून 1980 को हुई।

विवाह के लिए कुण्डली मिलान

कुण्डलियों के मिलान से पूर्व यह आवश्यक है कि दोनों कुण्डलियों के सप्तम एवं अष्टम भाव के संदर्भ में अलग-अलग आंकलन किया जाए। इसके अतिरिक्त विवाह के कारक शुक्र और उर्जा, शक्ति या लैंगिक सम्बन्ध बनाने की शक्ति के कारक मंगल की भूमिका पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। मानसिक शान्ति एवं पारिवारिक सुख के लिए चतुर्थ भाव और सन्तति के लिए पंचम भाव की विवेचना

भी आवश्यक है। यह देखा गया है कि बहुत सारे विवाह सन्तानहीनता कारण समाप्त हो जाते हैं। स्वस्थ लम्बे जीवन और परिवार के पालन-पोषण हेतु वर की धन अर्जित करने की क्षमता के दृष्टिकोण से भी कुण्डली की विवेचना करनी चाहिए। संक्षिप्त में, दोनों कुण्डलियों में निम्नलिखित बिन्दुओं का अलग-अलग आंकलन करना चाहिए।

1. सप्तम भाव और सप्तमेश को बड़े दुष्प्रभाव से मुक्त होना चाहिए।
2. शुक्र पीड़ित नहीं होना चाहिए।
3. सांसरिक सुख का प्रतिनिधित्व करने वाला कुण्डली का चतुर्थ भाव बली होना चाहिए।
4. पंचम भाव भी किसी बड़े अशुभ प्रभाव से पीड़ित नहीं होना चाहिए।
5. पुरुष कुण्डली में धन कमाने की क्षमता आवश्यक रुप से होनी चाहिए।
6. यदि एक कुण्डली में कुजा दोष हो तो दूसरी में भी होना चाहिए अथवा अन्य तरीकों से दोष साम्य होना चाहिए।

पारम्परिक मिलानः

लड़का और लड़की, भविष्य में एक अच्छे दम्पति होंगे इसके आंकलन के लिए दोनों कुण्डलियों का 8 प्रकार से गुण मिलान किया जाता है जिसे अष्टकूट मिलान कहते हैं। इन आठों कूटों का एक निश्ंचित क्रम होता है और उनके क्रमानुसार, मिलान को अंक दिये जाते हैं। ये कूट इस प्रकार से हैं: (1) वर्ण, (2) वश्य, (3) तारा, (4) योनि, (5) ग्रह मैत्री अथवा राशियों के स्वामियों की मित्रता, (6) गण, (7) भकूट और (8) नाड़ी तथा क्रमशः 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 एवं 8 अंक अथवा गुण दिये जाते हैं (अर्थात वर्ण के 1, वश्य के लिए 2 और इसी प्रकार अन्य के लिए)। इस प्रकार आठों कूटों के गुणों का योग 36 होता है और कोई भी मिलान तभी अच्छा माना जाता है यदि उसको कम से कम 18 अंक प्राप्त होते हैं।

पारम्परिक मिलान अर्थात अष्टकूट मिलान, कुण्डलियों में वर-वधू के जन्म चन्द्रमा पर आधारित होता है।

1. **वर्णः** यह दम्पति में आध्यात्मिक विकास के स्तर का प्रतिनिधित्व करता है। सभी बारह राशियों को वर्णो के आधार पर चार वर्गों में बांटा गया है। 4 (कर्क)/8 (वृश्चिक)/12 (मीन) राशियां विप्र या ब्राह्मण हैं, 1 (मेष)/5

(सिंह)/9 (धनु) राशियां क्षत्रिय हैं, 2 (वृषभ)/6 (कन्या)/10 (मकर) राशियां वैश्य हैं और 3 (मिथुन)/7 (तुला)/11 (कुंभ) राशियां शूद्र हैं।

ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ वर्ण है और क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र क्रमशः कम होते वर्ण हैं। वर का वर्ण, वधू के वर्ण के समान अथवा उससे श्रेष्ठ होना चाहिए और इसके लिए 1 अंक दिया जाता है। जब वधू का वर्ण श्रेष्ठ होता है तो कोई अंक नहीं दिया जाता है। वर्णानुसार अंक देने के लिए नीचे दी गई तालिका का अवलोकन करें।

वर्ण मिलान तालिका

		वर की चन्द्र राशि			
		ब्राह्मण राशियां 4/8/12	क्षत्रिय राशियां 1/5/9	वैश्य राशियां 2/6/10	शूद्र राशियां 3/7/10
वधू	4/8/12	1	0	0	0
की	1/5/9	1	1	0	0
चन्द्र	2/6/10	1	1	1	0
राशि	3/7/10	1	1	1	1

2. **वश्य अर्थात नियंत्रण में होना:** इस कूट में विभिन्न राशियों के स्वभाव का विचार करके यह देखा जाता है कि कौन सी राशि किस राशि को नियंत्रित कर सकती है।

मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध एवं कुंभ, मनुष्य या द्विपद राशियां, मेष, वृषभ, धनु का उत्तरार्ध एवं मकर का पूर्वार्ध, चतुष्पद राशियां और कर्क, मकर का उत्तरार्ध एवं मीन, जल राशियां होती हैं जबकि सिंह एंव वृश्चिक को कोई भी वर्ग आबंटित नहीं किया गया है।

वर-वधू दोनों एक ही वश्य वर्ग से सम्बन्धित हो तो 2 अंक दिये जाते हैं, जब वर की राशि, वधू की राशि की वश्य होती है तो 1 अंक और जब वर की राशि, वधू की राशि की भक्ष्य राशि होती है तो ½ अंक दिया जाता है। अन्य स्थितियों में शून्य अंक दिया जाता है। वश्य और भक्ष्य होने का निर्णय राशियों के स्वभाव पर होता है। वश्यानुसार अंक देने के लिए आगे दी गई तालिका का अवलोकन करें।

वश्य मिलान

		वर की चन्द्र राशि				
		मनुष्य	चतुष्पद	जलचर	सिंह	वृश्चिक
वधु	मनुष्य	2	0	0	½	0
की	चतुष्पद	1	2	1	½	1
चन्द्र	जलचर	½	1	2	1	1
राशि	सिंह	0	0	0	2	0
	वृश्चिक	1	1	1	0	2

3. **तारा:** वर के नक्षत्र से वधू के नक्षत्र तक गिनें और प्राप्त संख्या को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 3, 5 अथवा 7 आता है तो अशुभ होता है फलस्वरूप शून्य अंक जबकि अन्य स्थितियों में तारा शुभ होता है। तारा शुभ होने पर 1½ अंक दें।

   इसी प्रकार वधू के नक्षत्र से भी वर के नक्षत्र तक गिनें और प्राप्त संख्या को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 3, 5 अथवा 7 आता है तो अशुभ होता है फलस्वरूप शून्य अंक जबकि अन्य स्थिति में तारा शुभ होता है। तारा शुभ होने पर 1½ अंक दें।

   अतः इस प्रकार दोनों के नक्षत्र से गिनने पर शुभ तारा आता है तो पूर्णांक 3 दिये जाते हैं, यदि एक शुभ और दूसरा अशुभ तारा आता है तो 1½ अंक दिये जाते हैं। अन्य स्थिति में कोई भी अंक नहीं दिया जाता है।

4. **योनि:** सभी नक्षत्रों को जानवरों की योनियां आबंटित की गई हैं। वर-वधू की योनि एक-दूसरे की शत्रु नहीं होनी चाहिए। नीचे नक्षत्रों को आबंटित विभिन्न योनियों और उनके विभिन्न योनियों से शत्रुता को दिया गया है।

क्रम संख्या	नक्षत्र	योनि	अतिशत्रु योनि
1	अश्विनी, शतभिषज	अश्व	महिष
2	भरणी, रेवती	गज	सिंह
3	कृतिका, पुष्य	मेष	वानर
4	रोहिणी, मृगशिरा	सर्प	नकुल

5	आर्द्रा, मूल	श्वान	मृग
6	पुनर्वसु, आश्लेषा	मार्जार	मूषक
7	मघा, पूर्वाफाल्गुनी	मूषक	मार्जार
8	उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद	गो	व्याघ्र
9	हस्त, स्वाति	महिष	अश्व
10	चित्रा, विशाखा	व्याघ्र	गौ
11	अनुराधा, ज्येष्ठा	मृग	श्वान
12	पूर्वाषाढ़ा, श्रवण	वानर	मेष
13	उत्तराषाढ़ा, अभिजित	नकुल	सर्प
14	धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद	सिंह	गज

यदि योनियां एक ही हैं तो 4 अंक, यदि वे मित्र हैं तो 3, यदि वे सम हैं तो 2, यदि वे शत्रु हैं तो 1 और यदि वे अतिशत्रु हैं तो कोई अंक नहीं दिया जाता है। योनि के अनुसार अंक देने के लिए नीचे दी गई तालिका का अवलोकन करें।

योनि मिलान

	वर													
	अश्व	महिष	सिंह	हाथी	मेष	वानर	नेवला	सर्प	मृग	श्वान	मार्जार	मूषक	व्याघ्र	गौ
वधू														
अश्व	4	0	1	2	3	2	2	1	3	2	3	3	1	3
महिष	0	4	1	3	3	2	2	2	2	2	2	2	1	3
सिंह	1	1	4	0	1	2	2	2	1	1	2	1	2	1
हाथी	2	2	0	4	2	2	2	2	2	2	3	2	1	2
मेष	3	3	1	2	4	0	3	1	3	2	3	2	1	3
वानर	2	2	2	2	0	4	2	1	2	2	2	2	1	2
नेवला	2	2	2	2	3	2	4	0	2	1	2	2	2	2

सर्प	1	2	2	2	1	1	0	4	1	1	1	1	2	1
मृग	3	3	1	2	3	2	2	1	4	0	2	2	1	2
श्वान	2	2	1	2	2	2	1	1	0	4	1	1	1	1
मार्जार	3	2	2	3	3	2	2	1	2	1	4	0	2	2
मूषक	3	2	1	2	2	2	2	1	2	1	0	4	2	2
व्याघ्र	1	1	2	1	1	1	2	2	1	1	2	2	4	0
गौ	3	3	1	2	3	2	2	1	2	1	2	2	0	4

5. **ग्रहमैत्री अर्थात राशीश के बीच मित्रताः** ग्रहों का मैत्री सम्बन्ध अर्थात एक ग्रह के मित्र, सम और शत्रु ग्रहों ज्ञात करने के लिए आगे दी गई तालिका का अवलोकन करें।

ग्रहों की मित्रता

ग्रह	**मित्र**	**सम**	**शत्रु**
सूर्य	चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति	बुध	शुक्र, शनि
चन्द्रमा	बुध, सूर्य	मंगल, शनि, बृहस्पति, शुक्र	कोई नहीं
मंगल	चन्द्रमा, सूर्य, बृहस्पति	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सूर्य, शुक्र	बृहस्पति, शनि, मंगल	चन्द्रमा
बृहस्पति	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल	शनि	बुध, शुक्र
शुक्र	बुध, शनि	बृहस्पति, मंगल	सूर्य, चन्द्रमा
शनि	बुध, शुक्र	बृहस्पति	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल

यदि दोनों के राशि स्वामी, एक-दूसरे के प्रति मित्र हैं अथवा दोनों का स्वामी एक ही ग्रह है तो 5 अंक दिये जाते हैं। यदि एक-दूसरे के प्रति एक मित्र है एवं दूसरा सम है (उदाहरणतः बुध और शनि) तो 4 अंक देते हैं। दोनों राशि

स्वामी एक-दूसरे के लिए सम हैं तो 3 अंक प्राप्त होंगे (उदाहरणतः बृहस्पति एवं शनि)। एक स्वामी, दूसरे के प्रति मित्रता रखता है जबकि दूसरा शत्रुता तो 1 अंक देते हैं (उदाहरणतः चन्द्रमा एवं बुध)। एक, दूसरे का सम होता है जबकि दूसरा शत्रु, ½ अंक देते हैं। अन्य स्थितियों में कोई भी अंक नहीं दिया जाता है। ग्रहों की मैत्री के अनुसार अंक देने के लिए नीचे दी गई तालिका का अवलोकन करें।

ग्रह-मैत्री

	वर का चन्द्र राशि का स्वामी							
		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
वधू	सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
का	चन्द्र	5	5	4	1	4	½	½
चन्द्र	मंगल	5	4	5	½	5	3	½
राशि	बुध	4	1	½	5	½	5	4
का	बृहस्पति	5	4	5	½	5	½	3
स्वामी	शुक्र	0	½	3	5	½	5	5
	शनि	0	½	½	4	3	5	5

उचित मिलान के लिए वर-वधू, दोनों की राशियों के नवांश के स्वामियों के आपसी सम्बन्ध का भी विचार करना चाहिए।

6. **गणः** इसमें सभी नक्षत्रों को नौ-नौ नक्षत्रों के समूह में देव, नर या मनुष्य और राक्षस, तीन गणों में बांटा गया है।

देव गणः अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाति, हस्त, अश्विनी और पुष्य नक्षत्र।

नर या मनुष्य गणः पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा नक्षत्र।

राक्षस गणः मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषज, विशाखा, कृतिका और चित्रा नक्षत्र।

यदि वर-वधू, दोनों के गण (जन्म नक्षत्र पर आधारित) एक ही हों या वर देव हो एवं वधू नर हो तो 6 अंक, यदि वधू देव हो एवं वर नर हो तो 5 अंक,

यदि वर राक्षस एवं वधू देव हो तो 1 अंक और अन्य स्थितियों में कोई भी अंक नहीं दिया जाता है। गणों के अनुसार अंक देने के लिए नीचे दी गई तालिका का अवलोकन करें।

गण मिलान

		वर का गण		
		देव	मनुष्य	राक्षस
वधू	देव	6	5	1
का	मनुष्य	6	6	0
गण	राक्षस	0	0	6

7. **भकूटः** भकूट मिलान में वर-वधू की जन्म राशियों को एक-दूसरे की स्थिति के अनुसार देखिये। यदि राशियां एक-दूसरे से 2/12, 5/9 अथवा 6/8 की स्थिति में हों तो अशुभ होती हैं और कोई भी अंक नहीं दिया जाता है। अन्य स्थितियों में पूर्णाक 7 दिये जाते हैं।

अन्य विचारणीय बिन्दुः

(1) यदि दोनों की एक ही जन्म राशि हो तो यह शुभ माना जाता है बशर्ते उनके नक्षत्र अलग-अलग हों अथवा यदि नक्षत्र एक ही हो तो नक्षत्र चरण एक नहीं होना चाहिए।

(2) 2/12 की स्थितिः यह स्थिति **"द्विर्द्वादश दोष"** कहलाती है। जब वर की राशि से वधू की राशि द्वितीय हो तो यह अशुभ होती है लेकिन जब वर की राशि से वधू की राशि 12 होती है तो अशुभ नहीं होती है।

(3) वृषभ-मिथुन, कर्क-सिंह, कन्या-तुला, वृश्चिक-धनु, मकर-कुंभ और मीन-मेष राशियों के जोड़ों की 2/12 स्थिति अशुभ नहीं होती है क्योंकि इन स्थितियों में राशियों के स्वामी एक ही ग्रह होता हैं अथवा एक-दूसरे के नैसर्गिक मित्र होते हैं।

(4) 3/11 की सभी स्थितियां शुभ होती हैं।

(5) 4/10 की स्थिति शुभ होती है और इसके लिए 7 अंक दिये जाते हैं लेकिन वृषभ-सिंह, कर्क-तुला, कन्या-धनु, वृश्चिक-कुंभ, मकर-मेष और मीन-मिथुन

राशियों के जोडे शुभ नहीं होते हैं क्योंकि इनके राशि स्वामी एक-दूसरे के शत्रु होते हैं। यह कहा जाता है कि इनके कारण दरिद्रता होती है।

(6) 5/9 की स्थितिं **"नव-पंचम दोष"** कहलाती है। यद्यपि इस स्थिति में राशि स्वामी सदैव नैसर्गिक मित्र होते हैं लेकिन यह स्थिति अशुभ होती है और कोई भी अंक नहीं दिया जाता है। जब वर की राशि से वधू की राशि पंचम होती है वह अधिक अशुभ कहलाती है क्योंकि इसके के कारण सन्तति सम्बन्धित समस्यायें उत्पन्न होती हैं लेकिन जब वर की राशि से वधू की राशि नवम होती है तो यह अशुभ नहीं होती हैं।

(7) 6/8 की स्थिति ***"षडाष्टक"*** कहलाती है और सबसे अशुभ मानी जाती है। जब राशि स्वामी आपस में नैसर्गिक शत्रु हो तो अधिक अशुभ होती है। जब राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र अथवा एक ही ग्रह होता है जैसे कि मेष-वृश्चिक, मिथुन-मकर, सिंह-मीन, तुला-वृषभ, धनु-कर्क और कुंभ-कन्या, तब यह अशुभ नहीं होती है।

अशुभ षडाष्टक दोष के कारण रोग और मृत्यु भय होता है।

(8) 1/7 की स्थिति, कर्क-मकर और सिंह-कुंभ राशियों को छोड़कर अन्य राशियों के लिए सदैव ही शुभ होती है और 7 अंक प्राप्त करती है।

8. **नाड़ी:** यहां तीन प्रकार की नाडियां हैं- (1) आद्य, (2) मध्य और (3) अन्त्य। जातक का जन्म नक्षत्र उसकी नाड़ी निश्चित करता है। तीनों नाड़ियों के नक्षत्रों को ज्ञात करने के लिए आगे दी गई तालिका का अवलोकन करें।

नक्षत्र एवं नाड़ी

नाड़ी	नक्षत्र
आद्य नाड़ी	अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषज, पूर्वाभाद्रपद
मध्य नाड़ी	भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद
अन्त्य नाड़ी	कृतिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाति, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती

वर-वधू की एक ही नाड़ी नहीं होनी चाहिए। यदि दोनों की अलग-अलग नाड़ी होती है तो 8 अंक दिये जाते हैं और जब दोनों की एक ही नाड़ी होती है तो कोई भी अंक नहीं दिया जाता है।

अपवादः

1. जहां वर-वधु, दोनों की एक ही जन्म राशि हो लेकिन नक्षत्र अलग-अलग हों, यह नाड़ी दोष नहीं कहलाएगा (उदाहरणतः दोनों की चन्द्र राशि मिथुन हो और एक का आर्द्रा एवं दूसरे का पुनर्वसु नक्षत्र हो, अतः दोनों की आद्य नाड़ी होने पर नाड़ी दोष नहीं होगा)।
2. जहां दोनों का एक ही नक्षत्र हो लेकिन राशि अलग-अलग हो (जैसे कि दोनों का कृतिका नक्षत्र हो लेकिन एक की मेष राशि हो और दूसरे की वृषभ राशि हो) तो भी नाड़ी दोष नहीं होगा।
3. जहां दोनों का नक्षत्र एक ही हो पर नक्षत्रों के चरण अलग-अलग हों तो भी नाड़ी दोष नहीं होगा।

***विशेषः** यदि वधू के नक्षत्र से वर का नक्षत्र द्वितीय हो तो यह अत्यधिक अशुभ माना जाता है। उदाहरण के लिए वधू का नक्षत्र पुनर्वसु हो और वर का नक्षत्र पुष्य हो तो यह अशुभ है।*

यह मिलान ही पूर्ण मिलान नहीं होता है। किसी भी लड़के और लड़की की जन्मपत्रिक़ाओं का उचित मिलान करने के लिए निम्नलिखित अव्ययों को जांचना भी अतिआवश्यक है।

1. लड़के एवं लड़की की अपनी-अपनी जन्मपत्रिकाओं में आयु की सूक्ष्म परीक्षा करनी चाहिए।
2. एक दूसरे की कुण्डली से भी आयु की जांच करें। यदि लड़के की कुण्डली में विधुर होने का कोई योग हो तो इसी प्रकार का विधवा योग लड़की की कुण्डली में होना आवश्यक है जो इस योग के दोष को समाप्त कर देगा।
3. दोनों कुण्डलियों में विवाह एवं विवाह से सम्बन्धित सभी विषयों के लिए 7वें भाव, पारिवारिक सुख-सुविधा के लिए 4थे भाव, शयन सुख के लिए 12वें भाव, सन्तति के लिए 5वें भाव, कुटुम्ब के लिए 2रे भाव और इसी प्रकार अन्य विषयों के लिए अन्य भावों की सूक्ष्म परीक्षा करें।

4. दोनों कुण्डलियों की आने वाली दशायें बहुत महत्वपूर्ण होती हैं अतः इनकी भी विवेचना अवश्य करें।

5. कूट-मिलान की विवेचना सबसे अन्त में करें।

6. प्रत्येक भाव के दोषों का मिलान करें। जिसकी जन्मपत्रिका में कोई भाव विशेष पीड़ित हो, उसका मिलान ऐसे व्यक्ति से करना चाहिए जिसकी जन्मपत्रिका में भी वह भाव पीड़ित हो। उदाहरणतः जिसकी जन्मपत्रिका के 7वें भाव में मंगल स्थित हो, उसका मिलान ऐसे व्यक्ति से करना चाहिए जिसकी जन्मपत्रिका के 7वें भाव में मंगल हो अथवा अन्य कोई अशुभ ग्रह हो। इसी प्रकार अन्य भावों के लिए भी जितना संभव हो सके इसी नियम को लगाना चाहिए। इस विषय में वैद्यनाथ ने जातक पारिजात में इशारा दिया है:

द्यून कुटुम्ब गतौ यदि पापौ दारवियोगजदुःख करौ तौ।
तादृश योगज दार युतः चेत् जीवति पुत्र धनादियुतश्च॥

अर्थात जहां 2रे और 7वें भाव में पापी ग्रह स्थित होते हैं वह जीवनसाथी से बिछाह एवं दुःख का कारण होगें, लेकिन यदि ऐसे व्यक्ति के जीवनसाथी का भी ये भाव इसी प्रकार पीड़ित होते हैं तो उसकी सन्तति, धन-सम्पति और वैवाहिक जीवन,अच्छा होगा।

विवाह - विनाशकारी नक्षत्रः

अपनी पुस्तक *"मुहूर्त"* में डा. रमन कहते हैं कि "सामान्यतः यह माना जाता है कि यदि लड़की कुछ विनाशकारी नक्षत्र विशेष में जन्मी होगी तो वह अपने पति के किसी सम्बन्धी विशेष के लिए मृत्यु का कारण होगी।"

1. उदाहरण के लिए जिस लड़की का जन्म ***"विशाखा"*** नक्षत्र में होगा वह अपने पति के छोटे भाई के लिए मृत्यु का कारण होगी। अतः ऐसे वर को ढूंढ़ने का प्रयास किया जाता है जिसका कोई छोटा भाई नहीं हो। यद्यपि कुण्डली का मिलान बहुत अच्छा हो लेकिन केवल इस आधार पर ही विवाह नहीं किया जाता है।

   यद्यपि यह देखा गया है कि विशाखा का अन्तिम चरण या पद अशुभकारी परिणाम देता है जबकि अन्य तीन पद अशुभ नहीं होते हैं।

2. यदि वर या वधु का जन्म मूल नक्षत्र में हो तो यह माना जाता है कि उनके कारण उनके ससुर की मृत्यु होगी। विशेषकर यदि जन्म मूल के प्रथम चरण में हो तो यह अधिक अशुभ माना जाता है। जबकि अन्तिम तीन पदों का जन्म शुभ फलकारी होता है।

3. लड़की का आश्लेषा नक्षत्र में जन्म होना उसकी सास के लिए मृत्यु का कारण माना जाता है। यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि आश्लेषा का मात्र प्रथम चरण ही अशुभ होता है।

4. लड़की का ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म होना उसके पति के बड़े भाई के लिए मृत्यु का कारण माना जाता है। यहां भी पुनः प्रथम चरण ही अशुभ होता है।

अध्याय 9

अष्टम भाव
(आयु, आकस्मिक लाभ और दर्प-दमन का भाव)

कुण्डली का अष्टम भाव, मृत्यु अथवा आयु का भाव भी कहलाता है। इसके विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. आयुष्य।
2. दुर्भाग्य।
3. ऋण।
4. पाप कर्म।
5. षडयंत्र, अभियोग, सार्वजिक निन्दा।
6. शत्रुतता।
7. आकस्मिक एवं अकाल मृत्यु, मृत्यु का कारण, पूर्ण विनाश।
8. परेशानियां, अड़चने, दु:ख, पिछले जन्मों में किए पाप कर्मों से अप्रसन्नता।
9. गुप्त शत्रु।
10. संकट, चोरी।
11. सप्तम से द्वितीय होने के कारण भार्या का धन।
12. रुकावटें।
13. सत्याचार्य के मतानुसार अष्टम भाव भी शत्रुओं से सम्बन्धित होता है।

14. रहस्यमय, अलौकिक विषयों के प्रति रुझान।

15. प्रजनन अंगों और गुप्तांगों के रोग।

यदि अष्टमेश अपने भाव के साथ एकादश भाव को भी दृष्ट करता है तो जातक को अपने प्रतिद्वन्दियों पर विजय दिलाता है।

अष्टम भाव में एक से अधिक ग्रहों की स्थिति, जातक को अत्याधिक धन देती है। अष्टम भाव, कुण्डली में अधियोग बनाने वाले भावों में से एक है।

स्त्रियों की कुण्डलियों में अष्टम भाव उसके कामुक प्रवृति को इंगित करता है। यहां शनि की राशि में पीड़ित चन्द्रमा का होना, नैतिक आचरण के लिए अच्छा नहीं होता है।

अष्टम भाव से सम्बन्धित ग्रहों की दशा जीवन में परिवर्तन लाती है।

श्री आर. लक्ष्मणन के मतानुसार जिस कुण्डली में अष्टमेश, लग्नेश और दशमेश से बली होता है उस कुण्डली का जातक अपमान अथवा सार्वजनिक निन्दा का शिकार होता है।

विभिन्न भावों में स्थित अष्टमेश के परिणाम

सामान्यतः अष्टमेश की किसी भी भाव में स्थिति शुभ नहीं मानी जाती है चाहे वह अष्टम भाव को ही क्यों न दृष्ट करता हो। इसका कारण यह है कि अष्टमेश विघ्न-बाधाओं के भाव का स्वामी है। किसी भी भाव में .मारकेश के साथ स्थित अष्टमेश, दुर्घटना में मृत्यु का कारण होता है। अशुभ भावों अर्थात 3, 6, 8 या 12वें भाव/अशुभ राशियों में इसकी स्थिति का अर्थ स्वनिर्मित मृत्यु अर्थात आत्महत्या भी हो सकता है।

अष्टमेश, प्रथम भाव में: पराशर के मतानुसार लग्न भाव में स्थित अष्टमेश जातक को अस्वस्थ बनाता है, घाव देता है और भगवान एवं ब्राह्मणों का निन्दक बनाता है। यह दरिद्रता, ऋण और वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों का रोष भी देता है।

उपरोक्त सिद्धान्त मेष और तुला लग्न की कुण्डलियों में लागू नहीं होता है क्योंकि इनमें अष्टमेश और लग्नेश, एक ही ग्रह होता है। इन लग्नों में, प्रथम भाव में स्थित अष्टमेश, भाव को बिगाड़ता नहीं है अपितु स्वस्थता, वसीयत और दीर्घायु जैसे शुभ परिणाम देता है। इसी प्रकार मीन लग्न की कुण्डली में अष्टमेश शुक्र, लग्न

में उच्च का हो जाएगा, परिणामस्वरुप कुण्डली का जातक धनवान, दीर्घायु और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला आकर्षक व्यक्ति होगा।

लग्न में स्थित बली अष्टमेश, जातक को दीर्घायु बनाता है।

अष्टमेश, द्वितीय भाव में: जातक की आंखों और दान्तों में परेशानी होगी। उसके पास अच्छा भोजन खाने के लिए प्रर्याप्त समय नहीं होगा। पराशर के अनुसार ऐसा जातक शारीरिक पौरुषता से रहित, कम धन-सम्पति वाला तथा खोई धन-सम्पति पुनः प्राप्त करने में असमर्थ होगा। लेकिन द्वितीय भाव से अष्टमेश अपने भाव का दृष्ट करेगा अतः जातक को पैतृक धन, छुपा धन और लम्बी आयु देगा।

अष्टमेश की यह स्थिति पारिवारिक जीवन के लिए शुभ नहीं होती है। यदि कुण्डली में अन्य स्थितियां भी होंगी तो जातक अपनी भार्या और सन्तान से अलग होगा।

अष्टमेश, तृतीय भाव में: तृतीय भाव, अष्टम से अष्टम भाव है अर्थात तृतीय में स्थित अष्टमेश लम्बी आयु के लिए अच्छा सिद्ध होगा। लेकिन अष्टमेश की नवम भाव पर दृष्टि, पिता के भाग्य को बिगाडेगी क्योंकि अष्टमेश और षष्टेश की दृष्टि दुष्प्रभाव देती है। जातक की अपने पिता से शत्रुता, भाइयों से परेशानियां एवं भय तथा मानसिक सन्ताप हो सकता है। पराशर के मतानुसार ऐसा जातक, पौरुष और सेवक से रहित होगा।

अष्टमेश, चतुर्थ भाव में: चतुर्थ भाव में बैठा अष्टमेश, जातक की माता को परेशानियां देगा। जातक माता से रहित होगा अथवा उसकी माता रोगणी होगी। उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होगी, वह मित्रहीन होगा तथा मानसिक अशान्ति से पीड़ित होगा। अष्टमेश की यहां बैठना भू-सम्पति, भूमि अथवा वाहनों के लिए भी शुभ नहीं होगा। उसके वाहन चोरी हो जाएंगे अथवा दुर्घटनाग्रस्त होंगे।

अष्टमेश, पंचम भाव में: पराशर के मतानुसार जातक अल्प सन्तान वाला, धनवान और दीर्घायु लेकिन आनन्द रहित होगा। इसकी व्याख्या करते हुए वृहत्पाराशर होराशास्त्र में श्री गिरीश चन्द्र शर्मा कहते हैं कि, "इस योग वाला जातक इतिहास, प्राचीन भाषाओं जैसे कि ग्रीक, लेटिन या संस्कृत आदि को पढ़ने और सीखने की ओर प्रेरित होगा क्योंकि, अष्टम भाव, मृत विषयों और पंचम भाव, शिक्षा का भाव है। मिथुन और कन्या राशियों के लग्न के लिए, पंचम भाव में स्थित अष्टमेश, उच्च का तथा सिंह और कुंभ राशियों के लग्न के लिए, पंचम भाव में स्थित अष्टमेश

स्वराशि का होगा, अत: इन लग्नों के लिए, अष्टमेश की यह स्थित, सामान्यत: शुभ परिणाम देगी। मीन लग्न में यह सम्बन्ध जातक को खनिक इंजीनियर बनाता है।

अष्टमेश, षष्टम भाव में: जातक अपने प्रतिद्वन्दियों पर विजय प्राप्त करने वाला होगा, रोगग्रस्त शरीर वाला होगा और बाल्यवस्था में उसे पानी एवं सर्पदंश का भय होगा। आधुनिक परिवेश में सर्पदंश, विष अथवा विषाक्त औषधी के रुप में हो सकता है। जिन जातकों की मृत्यु गलत औषधियों के प्रयोग से होती है, उनकी कुण्डलियों में यह सम्बन्ध होता है।

अष्टमेश, सप्तम भाव में: जातक की दो भार्यायें होंगी और यदि अष्टमेश अशुभ ग्रहों की युति में भी होगा तो निश्चित रुप से उसे, व्यापार में हानि होगी।

यहां दो भार्याओं का अर्थ अधिक स्पष्ट नहीं है क्योंकि, आधुनिक समय में कानूनी रुप से दो भार्यायें होना संभव नहीं है। प्रथम भार्या की मृत्यु अथवा कानूनी रुप से तलाक होने के पश्चात ही पुनर्विवाह के द्वारा दूसरी भार्या होने की संभावनायें अधिक सटीक लगती हैं। चूंकि सप्तम भाव में स्थित अष्टमेश, सप्तम भाव के कारकत्वों को नष्ट कर देता है अत: निश्चित रुप से इसका अर्थ यह होगा कि जातक का प्रथम विवाह टूटेगा। अत: यह वियोग अथवा सम्बन्ध विच्छेद का भी योग है।

"किसी भी वैवाहिक सम्बन्ध के समाप्त होने में अष्टम भाव अथवा अष्टम भाव में स्थित ग्रहों की भूमिका चिर-परिचित है" - श्री के. एन. राव।

अष्टमेश, अष्टम भाव में: जातक लम्बी आयु वाला होगा। यदि अष्टमेश निर्बली हो तो जातक मध्यम आयु का और चोर होगा। ऐसा जातक स्वयं निन्दनीय होगा लेकिन दूसरों की निन्दा करेगा।

अष्टमेश, नवम भाव में: जातक अपने धर्म का विश्वासघाती तथा एक नास्तिक व्यक्ति होगा। वह धूर्त स्त्री का पति होगा और दूसरों की धन-सम्पति को चुराएगा।

अष्टमेश, दशम भाव में: जातक के जीवन में माता-पिता के आशीर्वाद की कमी होगी, जातक कहानी सुनाने अथवा सूचना देने वाला और जीवनवृत्ति विहीन होता है। यदि यह शुभ दृष्ट हो तो उपरोक्त फलकथन नहीं कहना चाहिए।

अष्टमेश, एकादश भाव में: जातक धन-सम्पति से विहीन होगा। युवावस्था में दयनीय स्थिति में लेकिन जीवन के उत्तरार्ध में खुशहाल होगा। अष्टमेश की शुभ ग्रहों से युति लम्बी आयु देगी।

अष्टमेश, द्वादश भाव में: जातक दुष्ट या बुरे कार्यों में धन व्यय करेगा। यदि अष्टमेश, अशुभ ग्रहों की युति में होगा तो जातक अल्पायु होगा।

अष्टम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम

"यदि विचारणीय भाव से 6वें, 8वें और 12वें भाव में पापी ग्रह बैठे हों तो वे भाव का नाश करते हैं। यदि इन भावों में शुभ ग्रह हों तो वे उस विचारणीय भाव को पुष्ट करने में समर्थ नहीं होते हैं" - **फलदीपिका**

सूर्य: नैसर्गिक आत्मकारक के लिए यह स्थिति शुभ नहीं है। जातक आकर्षक लेकिन लम्पट, निरुद्योगी, अतिव्ययी, झगड़ालू, हिंसक, रोगी, कमजोर दृष्टि वाला, अल्पसन्तान वाला, कपटी और धूर्त लेकिन परिश्रमी होगा तथा बड़ों के द्वारा छोड़ी गई विरासत प्राप्त करेगा। उसका जीवन मुश्किल और कठिनाइयों से भरा होगा। वह अत्याधिक यात्रायें करेगा, निम्न स्तर की स्त्रियों से सम्बन्धित होगा, बिना सोचे-समझे कुछ भी खायेगा, व्यर्थ में बिना कार्य एवं उद्देश्य के इधर-उधर भटकेगा तथा स्त्रियों पर व्यय करके एवं चोरी से, धन की हानि करेगा। गुप्त अधर्म के कर्म उसे रोग देंगे और स्वास्थ्य क्षीण करेंगे। ऐसा जातक, न अपने जीवन में खुशियां प्राप्त कर पाता है और न दूसरों के जीवन में खुशियां दे पाता है। ऐसा जातक अपने पिता को शीघ्र खो देगा तथा बवासीर, हृदय, उच्चताप, छालों के रोग से अथवा हथियार से आकस्मिक मृत्यु का ग्रास बनेगा।

स्त्री की कुण्डली में, अष्टम भाव का सूर्य पति की पहले मृत्यु और पुरुष की कुण्डली में भार्या की पहले मृत्यु को इंगित करता है। कुंभ और वृषभ राशि का होने पर यह पैतृक धन-सम्पति देने वाला होता है। स्वराशि का होने पर जातक को अतिव्ययी बनाता है।

चन्द्रमा: राजा, बलवान शत्रुओं, चोरों और बार-बार होने वाले रोगों से भय। अशुभ राशि का होने पर जातक को अल्पायु देता है। स्वराशि या बुध या शुक्र की राशि अथवा धनु राशि में होने पर अस्थमा, निमोनिया, ठण्ड से होने वाले रोग, आंखों के रोग, कोढ़, पाचन से सम्बन्धित रोग, हर्निया, पीलिया, बवासीर, मधुमेह, दस्त और रक्तदूषित जैसे रोग देता है। यदि कर्क राशि का हो तो जातक को दीर्घायु बनाता है। सुस्थिति में होने पर जातक को विद्वान, प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी और दानी एवं हंसमुख प्रवृति का बनाता है।

यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो स्त्रियों अथवा ननिहाल से पैतृक धन-सम्पति देता है और रहस्यमय विद्याओं की प्रवृति को तीव्र करता है तथा रहस्यमयी शक्तियां भी

देता है। यदि चन्द्रमा, कुंभ, मिथुन, तुला अथवा कर्क में हो तो जातक महान योगी और भगवान का भक्त होता है। मेष, सिंह और धनु राशि का हो तो उत्तराधिकार में अत्याधिक धन-सम्पति पाता है।

रक्षक के रुप में चन्द्रमा: यदि दिन का जन्म हो और चन्द्रमा कृष्णपक्ष का हो अथवा रात का जन्म हो और चन्द्रमा शुक्लपक्ष का हो तो अष्टम भाव का चन्द्रमा, मां के रुप में जातक के जीवन की रक्षा करता है लेकिन सूर्य और चन्द्रमा के मध्य दूरी 30 अंशों से अधिक होनी आवश्यक है।

अल्पायु और मृत्यु का प्रकार: कृष्णपक्ष के अन्तिम दिनों में अथवा सूर्य के अत्याधिक निकट होने पर, चन्द्रमा अल्पायु देता है। यह सार्वजनिक स्थानों पर डूबने, जहाज डूबने, सड़क दुर्घटना, सार्वजनिक संकट आदि से होने वाली मृत्यु को इंगित करता है।

मंगल: मंगल के लिए यह स्थिति अच्छी नहीं होती है। जिन अधिकारियों के अष्टम भाव में मंगल होता है वे रिश्वत में अत्याधिक धन तो लेते हैं लेकिन कभी भी पकडे नहीं जाते हैं। स्त्रियों के कुण्डलियों में इसका अर्थ पति की मृत्यु हो सकता है क्योंकि यह सप्तम से द्वितीय भाव है।

अष्टम भाव में स्थित मंगल, हिंसक अथवा आकस्मिक मृत्यु को इंगित करता है। जल तत्व राशि में होने पर डूबने से, अग्नि तत्व राशि में होने पर जलने से या हिंसा से और वायु तत्व राशि में होने पर दिमाग पीड़ित होने अथवा वायुयान की दुर्घटना से मृत्यु को इंगित करता है।

रोग: अष्टम भाव का मंगल यदि दुर्स्थित हो अथवा अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो निकृष्ट भाषा, असाध्य रोग, मैथुन सम्बन्धित रोग, रक्तचाप, अल्सर, कुष्ठरोग और पित्त एवं गुरदे से सम्बन्धित रोग देता है।

यदि अष्टम भावगत मंगल, सूर्य-चन्द्रमा एवं शनि से दृष्ट हो तो अल्पायु देता है। सुस्थित मंगल ***हटयोग*** देता है और राजनीतिज्ञ बनाता है।

बुध: अष्टम भाव में यदि बुध अकेला हो तो जातक को प्रचुर मात्रा में धन-सम्पति और प्रसिद्धि देता है। यह कालपुरुष की कुण्डली में बनने वाले अधियोग का भाग है अतः दीर्घायु, अच्छी प्रतिष्ठा और धन-सम्पति देता है। यदि सूर्य इसके निकट हो तो जातक शासक की अनुकम्पा और सामाजिक प्रतिष्ठा का आनन्द लेता है। ऐसा जातक सत्यवादी, अतिथि सत्कार करने वाला और विशेष व्यक्तित्व का स्वामी होता है। वह राज्य से भी धन-सम्पति लेता है, भू-सम्पति वाला और प्रसिद्ध होता है तथा उसका अन्त भी शान्तिपूर्ण होता है।

यदि पीड़ित हो तो जातक कृतघ्न, धूर्त, कामातुर और बिमारियों से ग्रस्त होता है। जातक का अलौकिक विज्ञान, साहित्य और उच्च स्तर की चीजों के प्रति रुझान होता है। स्त्री की कुण्डली में पीड़ित बुध, पति और साझेदारों से, आर्थिक परेशानियों की चिन्ता इंगित करता है।

रोग: मंगल और शनि द्वारा पीड़ित होने पर यह मानसिक अथवा स्नायु का असन्तुलन और जांघों अथवा पेट में अत्याधिक दर्द देता है। यदि नीच का अथवा शत्रु राशि में हो तो अल्पायु देता है।

बृहस्पति: यदि बृहस्पति या शुक्र अथवा दोनों ही अष्टम भाव में हों तो असुर योग बनाते हैं जिसके परिणाम स्वरुप जातक मिथ्या बोलने वाला, मनगढ़त कहानियां सुनाने वाला दूसरों के कार्य बिगाड़ने वाला और मात्र स्वहित की सोचने वाला होता है। वह हठी एवं घृणास्पद होगा और अधम कार्य करेगा। यदि बृहस्पति नीच अथवा वक्री हो तो यह योग अधिक अशुभ होगा।

ऐसा जातक एक दु:खी, उर्जावान और दीर्घायु व्यक्ति हो सकता है क्योंकि अष्टम में स्थित शुभ ग्रह भी लम्बी आयु देता है। बुरे कार्य कर सकता है लेकिन अच्छा होने का दिखावा करता है। उदर से पीड़ित होता है लेकिन शान्तिपूर्ण मृत्यु पाता है।

उदाहरण कुण्डली 1:

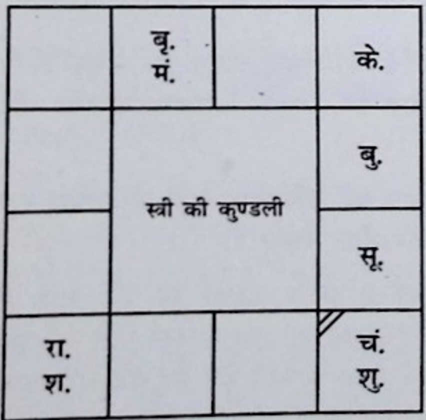

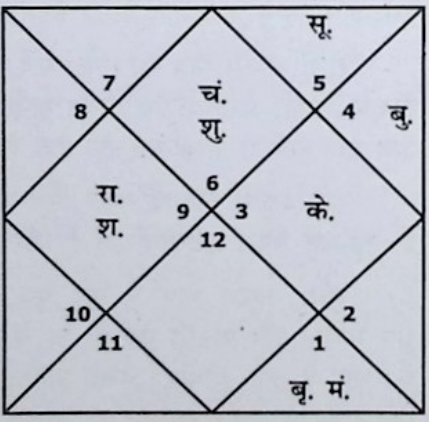

उपरोक्त कुण्डली के अष्टम भाव में बृहस्पति, अष्टमेश मंगल के साथ बैठा है। अष्टमेश मंगल, लग्नेश बुध से अधिक बली है। सप्तमेश बृहस्पति पीड़ित है। इस कुण्डली की जातिका ने एक अनैतिक जीवन व्यतीत किया।

उदाहरण कुण्डली 2:

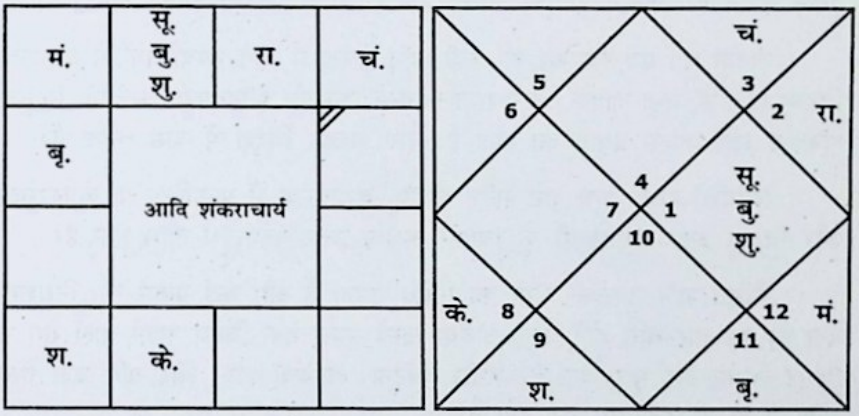

मोक्ष त्रिकोण के एक महत्वपूर्ण भाव, अष्टम में आध्यात्मिक ग्रह बृहस्पति यदि अशुभ प्रभाव में न हो तो योग के अभ्यास और अमरत्व की प्राप्ति के लिए अति शुभ हो सकता है, जैसा कि उपरोक्त आदि गुरु शंकराचार्य की कुण्डली दर्शाती है।

शुक्रः एक नैसर्गिक शुभ ग्रह होने के कारण शुक्र की अष्टम भाव की स्थिति शुभ नहीं है किन्तु इस स्थिति में यह धन के भाव, द्वितीय भाव को दृष्ट करता है और जातक को लम्बी आयु देता है। विवाह का कारक होने के कारण भी इसकी अष्टम भाव की स्थिति, सुखी वैवाहिक जीवन के लिए शुभ नहीं होती है। यदि यह शनि से दृष्ट हो तो नपुंसकता और अस्वच्छ रहने की आदत देता है।

अनुकूल परिणामः दीर्घायु, पशुओं और सेवकों के द्वारा सौभाग्य, द्वितीय भाव को दृष्ट करने के कारण धन और समृद्धि, भू-सम्पति, कठिन प्रयासों से लाभ, बारी-बारी से लाभ-हानि और विलम्ब से सही लेकिन विजय या सफलता।

प्रतिकूल परिणामः अप्रसन्न करने वाली वाणी, कुत्सित और न करने योग्य कार्य, जीवन साथी की मृत्यु, रोगी, झगड़ालू प्रवृति और दरिद्रता। यदि पीड़ित हो तो मधुमेह, मोटापा, गुरदे या मूत्र से सम्बन्धित रोग और रति से सम्बन्धित बिमारियां। मिथुन या वृश्चिक राशि में हो तो भार्या और सन्तान के साथ तनाव, मेष या कन्या राशि का हो तो विवाह के समय भाग्यहीनता, आर्थिक परेशानियां तथा कर्क, सिंह, मीन या वृश्चिक में हो तो नशे की लत देता है।

शनिः नैसर्गिक अशुभ ग्रह होने के कारण अष्टम भाव में स्थित शनि सामान्यतः शुभ नहीं होता है, क्योंकि यहां से यह दशम, द्वितीय और पंचम को दृष्ट

करके क्रमशः जीवनवृत्ति, धन-सम्पति और सन्तति से सम्बन्धित विषयों में अशुभता प्रदान करता है। लेकिन आयुष्य कारक होने के कारण लम्बी आयु देता है।

जातक धन एवं स्वास्थ्य की बड़ी हानि झेलता है, सगे-सम्बन्धियों से अचानक वियोग होता है, तथा जातक अल्प सन्तान वाला, कमजोर दृष्टिवाला, आलसी, विकृत, भुक्कड और कंजूस प्रवृति का होता है। ऐसा जातक विदेश में वास करता है।

स्वराशि अथवा शुभ दृष्ट शनि, दीर्घायु, वृद्धावस्था में प्राकृतिक या काल मृत्यु और विवाह अथवा साझेदारी के व्यापार अथवा उत्तराधिकार में लाभ देता है।

पीड़ित शनि उपरोक्त सभी का निषेध करता है और कई प्रकार की निराशायें देता है। यह बार-बारी होने वाली अथवा लम्बे समय तक बिमार रखने वाले रोग से घिसट-घिसट कर मृत्यु देता है। गंभीर दुर्घटना, आर्थिक हानि और यदि जल तत्व राशि में हो तो डूबने से मृत्यु देता है।

शनि-सूर्यः भाग्यहीन, धूर्त, अपूर्ण, छाले और अन्य चर्म रोग, क्षीण स्वास्थ्य तथा दरिद्रता।

राहुः क्रोधी, कूटनीति से विहीन, दूषित विचार, वरिष्ठ अधिकारियों की दृष्टि में अवांछनीय, विदेश यात्रा आदि। सरकार से कुछ सम्पति प्राप्त कराता है लेकिन साथ ही उसकी हानि भी कराता है।

रोगः वात रोग, प्रजनन अंगो के रोग, अण्डकोष वृद्धि, पेट से सम्बन्धित रोग, अल्पायु और ऐसे अज्ञात रोग जिनका इलाज करना संभव नहीं होता है।

सुस्थित राहु, शासक के द्वारा सम्मान और प्रसिद्धि देता है। जातक सज्जन एवं विचार युक्त, स्वस्थ, पशुधन वाला और वृद्धावस्था में सुखी होता है।

केतुः वृश्चिक, कन्या, मेष या मिथुन राशि का होने पर सरकार से धन लाभ, खेल एवं कार्यक्षेत्र में प्रवीण, चरित्रवान और प्रसन्न तथा बहादुर उद्योगी और दीर्घायु होता है।

यदि पीड़ित हो तो ऋण स्वरुप उधार दिये धन की वापसी में परेशानियां, अल्पायु, मित्रों से वियोग, तनाव, हथियार से घाव, अत्याधिक विरोध और वाहनों से भय देता है।

रोगः बवासीर एवं गुदा के अन्य रोग तथा चेहरे एवं दान्तों से सम्बन्धित रोग।

अध्याय 10

नवम भाव
(धर्म, पिता, भाग्य और लम्बी यात्रायें)

कुण्डली के नवम भाव को ***भाग्य स्थान*** और ***धर्म स्थान*** भी कहा जाता है। इस भाव से मुख्य विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. भाग्य, समृद्धि।
2. सदाचार, ज्ञान देने वाला अर्थात अध्यापक, शिक्षक, गुरु आदि।
3. पिता, पौत्र।

   पाश्चात्य ज्योतिष में दशम भाव को पिता का भाव माना जाता है क्योंकि यह माता के भाव, चतुर्थ के सामने का भाव होता है, जबकि हिन्दु ज्योतिष में नवम भाव को गुरु के साथ-साथ पिता का भाव माना जाता है। प्राचीन काल में पिता को गुरु भी माना जाता था अत: नवम भाव को पिता का भाव माना जाता है। परीक्षण करने पर भी यह पाया गया कि, नवम भाव को पिता के भाव के रुप में विशलेषण करने पर अधिक सटीक परिणाम प्राप्त होते हैं। जबकि पिता की आयु को देखने के लिए दशम भाव को लेना चाहिए क्योंकि यह नवम से द्वितीय भाव होता है।

4. अन्तर्ज्ञान और भविष्य का विचार।
5. धर्म, देवभक्ति, दया, पूजा स्थान।
6. प्रसिद्धि, दानवृत्ति, नेतृत्व।
7. लम्बी यात्राएं और विदेश यात्राएं।
8. आध्यात्मिक पढाई, कानून, दर्शनशास्त्र, विज्ञान और साहित्य।

9. कल्पनाशक्ति।

10. उच्च शिक्षा और घुटने।

नवमेश के विभिन्न भावों में स्थित होने के परिणाम

नवमेश, प्रथम भाव में: यदि बली हो तो त्रिकोणेश की, केन्द्र की यह स्थिति अति शुभ है जो श्रेष्ठ राजयोग बनाती है। यह सम्बन्ध जातक को भाग्यशाली, धर्मपरायण, आकर्षक, शिक्षित और प्रसिद्ध बनाता है। स्त्री की कुण्डली में यह सम्बन्ध जातिका को योग्य गृहणी बनाता है।

यदि नवमेश, लग्नेश के साथ हो तो जातक को सभी प्रकार की सम्पति देता है। यदि शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक सरकार में अधिकार सम्पन्न उच्च अधिकारी होता है, अपनी स्वयं की सम्पति के साथ-साथ पैतृक सम्पति प्राप्त करता है, प्रसिद्वि, उदारचित्त और शक्तिशाली होता है।

यदि निर्बली हो अथवा नवांश लग्न से 6, 8 या 12वें भाव में हो तो दरिद्रता देता है। राहु के साथ हो तो विदेशी शासन में नौकरी अथवा प्रतिनियुक्ति और मंगल के साथ हो तो पुलिस या सेना में उच्च पद देता है। नवमेश के रुप में शनि कानून, इतिहास आदि के विषयों की पढाई देता है। नवमेश के रुप में बुध, वित्तीय संस्थानों से सम्बन्ध देता है, यद्यपि कुछ ज्योतिषशास्त्रियों के मतानुसार, यह योग वृश्चिक लग्न के लिए लागू नहीं होता है।

नवमेश, द्वितीय भाव में: यदि बली हो तो जातक विद्वान, सबका प्रिय, धनवान, विषय-सुख से सुखी, भार्या और सन्तान से प्रसन्न होता है। द्वितीयेश के साथ हो तो पारिवारिक व्यवसाय से अत्याधिक धन-सम्पति, सुख-सुविधाओं युक्त जीवन और अच्छा भोजन देता है।

यदि अशुभ ग्रहों के साथ हो तो पैतृक धन-सम्पति का न होना, कानूनी विवाद आदि। द्वितीयेश और अष्टमेश से युत हो तो अपमान और कलंक। द्वितीय भाव, मारक भाव भी है अतः द्वितीय भाव में स्थित नवमेश, उचित आयु की मृत्यु को इंगित करता है।

नवमेश, तृतीय भाव में: यदि बली हो तो भाइयों से प्रसन्नता, धनवान, धर्मपरायण और आकर्षक व्यक्तित्व। तृतीयेश के साथ हो तो भाई समृद्ध होते हैं। जातक, धार्मिकता और आध्यात्मिकता पर लेखन की प्रवृति वाला तथा संगीत,

संगीतवाद्य, विदेश यात्रा, तीर्थयात्रा आदि। शनि के साथ हो तो विदेश में भूमि और विदेशियों के अन्तर्गत नौकरी। यदि नवांश में नवमेश, 6, 8 या 12वें भाव में हो तो परिणाम अधिक अच्छे नहीं होते हैं।

निर्बली अथवा अशुभ ग्रहों से युत नवमेश हो तो लेखन अच्छा नहीं होता है और नवमेश की यह स्थिति जातक को परेशानियों में डाल सकती है। पिता की धन-सम्पति भी समाप्त हो जाती है।

नवमेश, चतुर्थ भाव में: यदि नवमेश बली हो अथवा शुभ ग्रहों के साथ हो तो केन्द्र और त्रिकोण का यह सम्बन्ध राजयोग बनाता हुआ सभी प्रकार की खुशियां, धन-सम्पति, भू-सम्पति और वाहनों सहित सुख-सुविधाओं युक्त जीवन देता है। यह सम्बन्ध माता के लिए भी शुभ है और जातक की माता समृद्ध और दीर्घायु होती है तथा जातक भी मातृभक्त होता है। चतुर्थेश के साथ हो तो जातक प्रसन्न और शिक्षित, शुक्र के साथ हो तो कई वाहन, उच्च का हो तो शासक या राष्ट्रपति, और बुध के साथ हो तो शिक्षा संस्थान का प्रमुख होता है।

यदि निर्बली अथवा पीड़ित हो विशेषकर यदि राहु के साथ हो तो माता और उसकी खुशियों के लिए परेशानियों का कारण हो सकता है। साथ ही पिता से भी परेशानियां देता है।

नवमेश, पंचम भाव में: यदि बली हो तो पुत्र, समृद्धि, बड़ों के प्रति समर्पित, प्रखर, दानी, शिक्षित। यदि पंचमेश के साथ हो तो विद्वान, पिता से आर्थिक और अन्य सभी प्रकार की सहायता, प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध और समृद्ध सन्तान और समृद्ध पिता। यह उच्च ज्ञान प्राप्त करने और साहित्य में प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए अच्छा सम्बन्ध है।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो पिता या सन्तान के लिए परेशानियां, दुर्भाग्य, शिक्षा में विघ्न।

नवमेश, षष्टम भाव में: यदि बली हो तो जातक न्यायाधीश या न्याय करने वाला अधिकारी होता है। यदि शुभ ग्रहों के साथ हो तो नौकरी से अच्छी आय वाला और समृद्ध। पिता के स्वास्थ्य अच्छा होता है और कई नौकर होते हैं। यदि मंगल के साथ हो तो पैतृक भू-सम्पति, बुध के साथ हो तो ग्रन्थों के प्रकाशन से अनुपात शुल्क और बृहस्पति हो तो शिक्षण के द्वारा अत्याधिक धन-सम्पति।

नवमेश पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि पिता के लिए अच्छी नहीं होती है। पीड़ित नवमेश अत्याधिक ऋण और कानूनी विवाद देता है। जातक की समृद्धि नगण्य होती

है, उसे मामाओं से कोई लाभ प्राप्त नहीं होता और जातक शत्रुओं से परेशानियां पाता है।

नवमेश, सप्तम भाव में: यदि बली हो तो विवाह के उपरान्त खुशियां, धर्मपरायण और प्रसिद्ध। सप्तमेश के साथ हो तो धनवान और सुख-सुविधाओं से सम्पन्न परिवार में जन्म, राजनायिक नियुक्तियों में विदेश गमन और विदेश में सम्पति देता है। जातक, दूसरे लिंग के जातकों में लोकप्रिय होता है और विदेश में ही निवास कर सकता है। नवमेश की मंगल से युति, विदेश में भू-सम्पति और शुक्र से युति स्त्रियों से धन-सम्पति दिलाती है। जातक अच्छी और धनवान भार्या वाला होता है तथा विवाह के बाद धन-सम्पति प्राप्त करता है।

यदि दुर्स्थित हो तो पिता और पिता के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता तथा विवाह में समस्यायें देता है।

नवमेश, अष्टम भाव में: यदि बली हो तो पैतृक सम्पति और आकस्मिक लाभ देता है। जातक शोधकर्त्ता होता है और जीवन के आन्तरिक अर्थ को प्राप्त करता है।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो जीवन में विघ्न-बाधा अधिक होती हैं। उसके जीवन में समृद्धी, भाइयों अथवा पिता से प्रसन्नता नहीं होती है और पैतृक सम्पति में भी बाधायें आती हैं।

अष्टमेश और शुभ ग्रह के साथ हो तो पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होता है। अशुभ ग्रह विपरीत परिणामों के साथ पिता का ऋण और जिम्मेदारियां तथा भार्या की मृत्यु आदि अशुभ परिणाम देते हैं लेकिन प्रचुर मात्रा में धन भी देते हैं।

भावार्थ रत्नाकर के अनुसार अष्टम में स्थित नवमेश तभी अशुभ होगा यदि नवम भाव निर्बली हो।

नवमेश का अष्टम भाव में होने का अर्थ यह भी हो सकता है कि जातक किसी का दत्तक पुत्र होगा। आगे दी गई, भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव की कुण्डली का अवलोकन करें। इसमें अष्टम भाव में स्थित नवमेश शुक्र, राहु-केतु अक्ष में है।

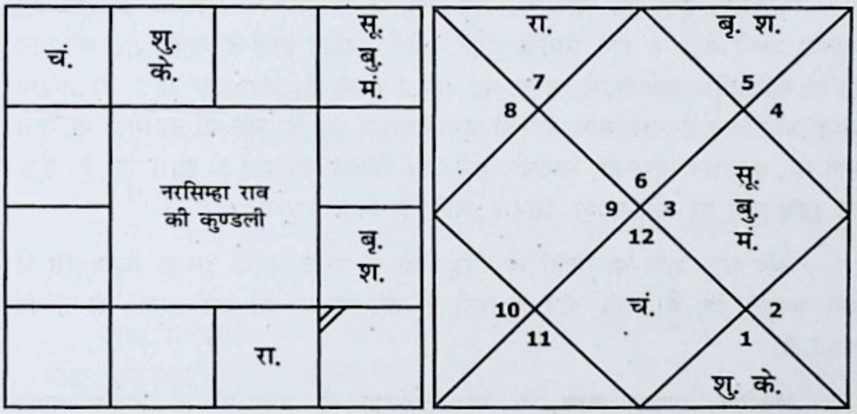

नवमेश, नवम भाव में: अच्छा भाग्य, धर्म, सुन्दरता, भाई-बहनों से खुशियां, धनवान, भू-सम्पतिवान, पिता और भाइयों से सहायता प्राप्त, माता अच्छी समृद्ध, नाना-नानी के द्वारा पालन-पोषण आदि। यदि नवमेश, शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक भाग्यवान, अच्छे स्वभाव की भार्या वाला, विदेश गमन करने वाला, अत्याधिक धन-सम्पति वाला और पिता के व्यापार से समृद्धि प्राप्त करने वाला होता है। यदि सूर्य, शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक राजनीतिज्ञ होता है और चुनाव जीतता है तथा अपने ठाट-बाट के लिए जाना जाता है।

यदि नवमेश, राहु के साथ हो तो जातक का पिता विदेश में प्रसिद्ध होता है। शनि और मंगल का अशुभ प्रभाव जातक को पापी बनाता है और केवल शनि का दुष्प्रभाव हो तो जातक को पेट सम्बन्धित परेशानियां होती हैं। सूर्य एवं चन्द्रमा की युति, अंग-भंग और माता-पिता की मृत्यु का कारण होती है। यहां बृहस्पति जातक को पवित्र और माता-पिता के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ बनाता है।

नवमेश, दशम भाव में: यदि बली हो तो यह केन्द्र एवं त्रिकोण का, "*धर्मकर्माधिपति*" नाम का राजयोग देने वाला शुभ सम्बन्ध होता है, विशेषकर यदि दशमेश से युति हो, तो समृद्धि और उच्च पद देता है। यह योग जातक को राजा, धर्मपरायण, सबका प्यारा, अत्याधिक धनवान, मंत्री या सेना प्रमुख, विद्वता में प्रसिद्ध, उच्च स्तर की जीवनवृत्ति और परोपकार के कार्य करने वाला बनाता है।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो नौकरी की हानि, बदनामी, अनुचित जीवन शैली, अनैतिक एवं छुपकर सौदे करना, धन की हानि और शासन से दण्डित करवाता है।

नवमेश, एकादश भाव में: यदि बली हो तो लाभ के लिए अच्छा होता है। जातक अपने बड़ों के प्रति समर्पित और मेधावी व्यक्ति होता है। एकादशेश के साथ हो तो पारिवारिक व्यापार से जातक को समृद्ध बनाता है। जल तत्व राशि का चन्द्रमा समुद्र और जल से सम्बन्धित वस्तुओं का व्यवसाय देता है। बुध या बृहस्पति के साथ होने पर, प्रकाशन, पुस्तकों, समाचार पत्रों और शैक्षिक संस्थानों से लाभ देता है। शुक्र के साथ होने पर भोजनालय, सिनेमा आदि से आय देता है।

यदि राहु, शनि या मान्दि से पीड़ित हो तो गलत कार्यों अथवा वेश्यावृत्ति से धन-सम्पति देता है। मित्र, शत्रु हो जाते हैं और जातक को धन-सम्पति से वंचित करते हैं।

नवमेश, द्वादश भाव में: यदि द्वादशेश के साथ हो तो जातक महान नीति-उपदेशक या ब्रह्मवादी बनता है क्योंकि नवम भाव धर्म का और द्वादश भाव मोक्ष का भाव है। 12वां भाव, नवम भाव से चतुर्थ भाव है अतः नवमेश अपने गुरु के आश्रम में है। कई विदेशी, जो भारत में अपने गुरुओं के आश्रम में रहने आते हैं उनकी कुण्डलियों में यह सम्बन्ध होता है।

यदि पीड़ित हो तो भाग्यहीनता, अच्छे एवं धार्मिक कार्यों में अतिव्यय और धन हानि, पिता की हानि अथवा पिता, जातक से दूर रहता है और अनुचित धन विनियोग से धन हानि देता है। यदि मंगल के साथ हो तो चोरी या डकैती से धन हानि होती है। षष्टेश और अष्टमेश के साथ हो तो पैतृक सम्पति की हानि होती है।

"महात्मा अपने शरीर का त्याग नवमेश अथवा द्वादशेश की अन्तर्दशा में करने के इच्छुक होते हैं" - श्री के. एन. राव।

नवम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम

सूर्य: सुस्थित सूर्य ऐसे कर्तव्यनिष्ठ सुपुत्र देता है जिनका रुझान आध्यात्मिक मूल्यों की ओर होता है और जातक, अपनी सन्तान से सुख प्राप्त करता है। चन्द्रमा या शुक्र के साथ स्थित पीड़ित सूर्य आंखों से सम्बन्धित समस्यायें अथवा सरकार के साथ समस्यायें देता है।

चन्द्रमा: धनवान, उदारचित्त, प्रेम की भावना से युक्त, पठन का शौकीन, उच्च शिक्षा, मानवतावादी, प्रसिद्ध, सफल, आकर्षक, लोकप्रिय एवं प्रशंसकों वाला और प्रारंभिक जीवन से ही सफलता प्राप्त करने वाला बनाता है। जातक को अतिसुन्दर भार्या, आज्ञाकारी पुत्र, धन-सम्पति, अच्छे कार्य, पवित्र तीर्थयात्रायें और सौभाग्य देता

है। धार्मिक, दान करने वाला, शिक्षित और धर्मपरायण होकर ऐसा जातक मन्दिर और धर्मशालायें बनायेगा। वह विदेश यात्रायें और समुद्री यात्रायें भी करेगा।

अग्नि और जल तत्व राशियों का चन्द्रमा जातक को प्रकाशक, लेखक अथवा मुद्रक बनाता है। पीड़ित चन्द्रमा अच्छे परिणाम नहीं देता है और जातक को कम भाग्यवाला, मूर्ख एवं चरित्रहीन बनाता है।

शनि-मंगल-बुध-चन्द्रमा: राजयोग जो जातक को राजा अथवा राजा के तुल्य बनाता है।

चन्द्रमा-मंगल: चन्द्र-मंगल नाम का लाभ देने वाला योग बनाता है लेकिन माता की दुर्घटना को भी इंगित करता है।

चन्द्रमा-शुक्र: चरित्रहीन भार्या। जातक कवि, लेखक, कलाकार।

चन्द्रमा-शनि: मानसिक तनाव, विदेश यात्रा, चल सम्पति।

मंगल: जातक उदारचित्त, प्रसिद्ध, धनवान और शक्तिसम्पन्न होता है। यदि उच्च, स्वराशि अथवा शुभ ग्रहों के साथ हो तो सौभाग्य देता है और तेजस्वी एवं बेबाक बनाता है। ऐसा जातक आधुनिक दृष्टि से संशोधित करके, रुढ़ीवादी विचारों को समाप्त करता है। नवम भाव में स्वराशि का मंगल, राजयोग बनाता है और शासन की अनुकम्पा, धन-सम्पति और प्रसिद्धि देता है।

वैसे मंगल एक अशुभ ग्रह है जिसका त्रिकोण में स्थित होना अधिक शुभ नहीं माना जाता है। नवम भाव में यह भाग्य ही हानि करता है, पिता के लिए शुभ नहीं होता है, अधार्मिक बनाता है और अग्नि एवं विष से भय देता है। जातक कठोर स्वभाव का होता है और उसके सम्बन्ध अपने पिता एवं भाइयों से अच्छे नहीं होते हैं।

बुध, शुक्र या शनि की राशि में स्थित मंगल, भिन्न जाति की भार्या अथवा भिन्न स्वभाव की भार्या देता है। बृहस्पति या बुध के साथ स्थित होने पर जातक सुशिक्षित और आध्यात्मिक जीवन वाला होता है।

मंगल-शुक्र: दो भार्यायें, विदेश में निवास।

मंगल-शनि: जातक नास्तिक होता है।

बुध: नवम भाव का बुध जातक को अत्याधिक बुद्धिमान, धनवान, दार्शनिक, बुद्धि का वैज्ञानिक झुकाव, वैज्ञानिक, अविष्कारक, खोजकर्त्ता, संगीतज्ञ, लोकप्रिय,

सौम्य, आस्तिक, सज्जन, सत्यवादी, पितृभक्त, प्रखर वक्ता, दानवृत्ति प्रवृति वाला और यात्राओं से लाभ प्राप्त करने वाला बनाता है। जातक कलाप्रेमी और भाग्यशाली होता है। मिथुन, तुला और कुंभ राशि का बुध भाग्य और विवाह के बाद उन्नति देता है और जातक को सम्पादक, प्रकाशक, लेखक, शिक्षक बनाता है।

अग्नि तत्व राशियों में जातक को गणितज्ञ और ज्योतिषाचार्य, पृथ्वी तत्व राशियों में व्यापारी या लिपिक और जल तत्व राशियों में डाक विभाग में लिपिक अथवा सरकारी कर्मचारी बनाता है।

चर राशियों में यात्रा के प्रति प्रेम देता है और वायु तत्व राशियों में आकाश से जुड़े विषयों में रुझान देता है। जातक कुशाग्र बुद्धि का होता है, जीवन के गुप्त रहस्यों को ढूंढ़ने और आध्यात्मिक विषयों का इच्छुक होता है।

यदि अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो दुराचारी, वैदिक ग्रन्थों का विरोधी होता है लेकिन उद्योगी होता है। अस्थिर सोच का होता है, एक ही समय में एक से अधिक कार्यों में व्यस्त रहता है और एक भी कार्य का पूर्ण करने में समर्थ होता है। चिन्ताग्रस्त और व्याकुल रहता है।

बुध-शुक्रः संगीत और आनन्द का आसक्त।

बुध-बृहस्पतिः निपुण और विवेकशील, उपदेश देने के लिए विदेश की यात्रा। पिता से मधुर सम्बन्ध।

बृहस्पतिः यदि शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक अत्याधिक धनवान और अत्याधिक अचल सम्पति वाला होता है। ऐसा जातक धार्मिक, दानी और समझदार होता है तथा उसके अपने पिता से अच्छे सम्बन्ध होते हैं।

चन्द्रमा-मंगल-बृहस्पतिः सेना या पुलिस में उच्च पद।

बृहस्पति-शुक्र-शनिः चरित्रहीन।

बृहस्पति-शनिः यह आध्यात्मिक जीवन यापन करने के लिए एक अच्छा योग है। जातक अपने सिद्धान्तों का पक्का होगा और अपने जीवन को विदेशों में उपदेशक अथवा धर्म-उपदेशक के रुप में व्यतीत कर सकता है।

शुक्रः सामान्यतः जातक अपने जीवन में भाग्यवान होता है जिसके पास परिवार, सन्तान और धन-सम्पति होती है। ऐसे जातक के मन में कविता और कला के प्रति प्रेम होता है।

शुक्र-सूर्यः भाषा अच्छी होती है लेकिन स्वास्थ्य क्षीण होता है।

शुक्र-शनिः राजनीति-कुशल अर्थात कूटनीतिज्ञ अथवा सरकारी सेवक।

शुक्र-सूर्य-चन्द्रमाः अपराधिक प्रवृति, चरित्रहीन और दोषसिद्धि का सामना करना पड़ सकता है।

शनिः निर्जन जीवन, विवाह ही न करे अथवा भार्या से वियोग, शूरवीर, कंजूस लेकिन धनवान। जातक माता-पिता के प्रति कृतघ्न होता है।

शनि-सूर्यः पिता और सन्तान से मतभेद।

शनि-बुधः धनवान लेकिन धूर्त, अधार्मिक और अलौकिक कार्य करने वाला। पिता के लिए अच्छा नहीं।

राहुः दोष निकालने वाली एवं अहंकारी भार्या, कृपण, असभ्य, चरित्रहीन। ऐसा जातक अपने पिता से नफरत करता है और भगवान एवं धर्म की निन्दा करने वाला होता है। यद्यपि जातक धनवान और प्रसिद्ध होता है लेकिन उसे पारिवारिक खुशियां प्राप्त नहीं होती हैं। वह व्यभिचारी होता है और माता-पिता से क्रूर व्यवहार करता है। नवम भाव का राहु जातक को कम से कम एक विदेशी भाषा में प्रवीणता देता है। अंग्रेजी के कई प्राध्यापकों की कुण्डली में नवम भाव में बली शनि और राहु होता है। ये अंग्रेजी साहित्य के, अधिकार सम्पन्न व्यक्ति होते हैं।

विशेषः केन्द्र, त्रिकोण और उपयच भावों में राहु अच्छे परिणाम देता है। यदि मेष, वृषभ, कर्क, कन्या और कुंभ राशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो सर्वोच्च पद, सम्मान, कीर्ति और वैभव देता है।

केतुः जातक शीघ्र अनियंत्रित होने वाला, अहंकारी, घमण्डी, छोटी-छोटी बातों पर परेशान होने वाला ऐसा व्यक्ति होता है जिसके अपने माता-पिता से अच्छे सम्बन्ध नहीं होते हैं। उसकी भार्या और सन्तान अच्छे होते हैं और वह धन संचय करने में भी सक्षम होता है।

भाग्येश का महत्वः

नवमेश का राशीश यदि सुस्थित हो तो यह भी जातक को उच्च स्तर की ओर ले जाता है। एक अनुकूल भाग्यपति, केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होने पर साधारण जातक को भी अत्याधिक सफलता देता है।

नवम भाव, भाग्य के साथ-साथ धर्म का भी प्रतिनिधित्व करता है, अर्थात भाग्य, धर्म से सम्बन्धित है। अतः अच्छी प्रार्थना या धर्मपरायणता, भाग्यहीनता को दूर करती है।

पिता के धनवान होने के योगः

पराशर के मतानुसार निम्नलिखित स्थितियों में जातक का पिता धनवान होता है:

1. नवमेश बली हो, नवम भाव में शुक्र हो और बृहस्पति केन्द्र में हो।
2. नवमेश, बृहस्पति से केन्द्र में हो तो जातक के पिता को राजा बनाता है।
3. नवमेश, दशम भाव में हो और दशमेश शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक का पिता धनवान और प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

पिता के प्रति निष्ठावानः

1. नवमेश, एकादश भाव में हो और सूर्य उच्च का हो तो जातक धर्मपरायण और पितृभक्त होता है।
2. सूर्य त्रिकोण में हो और नवमेश सप्तम भाव में बृहस्पति से युत अथवा दृष्ट हो।

पिता के साथ कटुताः

- लग्नेश, नवम भाव में षष्टेश के साथ हो तो जातक अपने पिता को घृणा के योग्य समझता है।

अच्छा भाग्यः

- द्वितीयेश और नवमेश में राशि परिवर्तन।
- उच्च का शुक्र, नवमेश के साथ और शनि तृतीय भाव में।
- नवमेश केन्द्र में और बृहस्पति नवम भाव में।
- नवमेश, नवम भाव में और बुध उच्च का।

दरिद्रताः

1. दशमेश और तृतीयेश निर्बली। नवमेश अस्त अथवा नीच का।
2. नवम से नवम भाव अर्थात पंचम भाव में राहु, इसका राशीश अष्टम भाव में और नवमेश गिरा हुआ।
3. लग्नेश नीच का और चन्द्रमा से नवम भाव में शनि।

कम आयु में पिता की मृत्युः

दिन के जन्म के लिए सूर्य और रात्रि के जन्म के लिए शनि को, पिता का कारक माना जाता है।

यदि दिन का जन्म हो और सूर्य, मंगल एवं शनि से दृष्ट हो तो यह पिता की कम आयु में मृत्यु होने को इंगित करता हैं। यदि इन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो यह नियम लागू नहीं होता है। यह उन मामलों में अधिक होता है जहां नवम अथवा दशम भाव इसमें शामिल होते हैं।

"यदि सूर्य, लग्न में मंगल और शनि के साथ स्थित हो और शुभ ग्रह बृहस्पति, बुध एवं शुक्र की दृष्टि से अप्रभावित हो तो बच्चे के पिता और दादा की शीघ्र मृत्यु होती है" - **फलदीपिका**।

यदि सूर्य दो अशुभ ग्रहों के मध्य हो अथवा अशुभ ग्रहों से युत हो और जातक का दिन का जन्म हो तो वह कम आयु में ही अपने पिता को खो देता है। यदि मंगल एवं शनि, सूर्य से अष्टम भाव में हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि प्रभाव में न हों तो भी यह फल हो सकता है।

यदि रात्रि का जन्म हो और शनि से अष्टम भाव में मंगल एवं राहु या सूर्य हो तो यह सम्बन्ध पिता के दीर्घायु होने के लिए अच्छा नहीं है। अत: दिन के जन्म में सूर्य से अष्टम भाव और रात्रि के जन्म में शनि से अष्टम भाव, अशुभ प्रभाव से मुक्त होना चाहिए।

यदि सूर्य/शनि चर राशि में हों तो जातक के पिता की मृत्यु विष या हथियार से हो सकती है। वह अपने बच्चे के जन्म के समय दूर भी हो सकते हैं।

अध्याय 11

दशम भाव
(कर्म, सम्मान और प्रसिद्धि का भाव)

कुण्डली का दशम भाव, कर्मस्थान है और इस भाव के विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. जीवनवृत्ति के साधन, आजीविका।
2. पद, सत्ता, नेतृत्व।
3. प्रसिद्धि। यदि दशमेश बली हो, दशम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रहों के मध्य हो तो जातक प्रसिद्ध और अच्छी प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति होता है। इसके विपरीत यहां अशुभ ग्रह बदनामी और आजीविका में समस्यायें देते हैं।
4. शासक के द्वारा सम्मान और पदवी।
5. तीर्थयात्रायें।
6. कीर्ति और उत्तरदायित्व।

उत्तरकालामृत के मतानुसार दशम भाव से निम्नलिखित विषयों का भी विचार किया जाता है:

1. सरकार या शासन के साथ कार्य।
2. शिक्षक।
3. अनुशंसनीय उच्च धार्मिक कृत्य। यदि दशम भाव पर बृहस्पति, बुध और बली लग्नेश का प्रभाव हो तो जातक अनुशंसनीय कार्य करता है।
4. पवित्र शब्दों और मंत्रों का उच्चारण अथवा जाप।
5. मंत्रों के उपर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना।

6. औषधियां।

7. जांघें।

8. सरकारी मोहर प्रयोग करने का अधिकार अर्थात राजपत्रित कर्मचारी।

9. प्रभाव, आत्मसंयम।

10. दत्तक पुत्र।

11. अच्छी नींद। अशुभ ग्रहों के प्रभाव से नींद में विघ्न उत्पन्न होता है।

पाश्चात्य ज्योतिष में दशम भाव को पिता का भाव माना जाता है क्योंकि यह माता के भाव, चतुर्थ के सामने का भाव होता है, जबकि हिन्दु वैदिक ज्योतिष में नवम भाव को गुरु के साथ-साथ पिता का भाव माना जाता है। प्राचीन काल में पिता को गुरु भी माना जाता था अतः नवम भाव को पिता का भाव माना जाता है। पराशर भी नवम भाव को ही पिता का भाव मानता है लेकिन पिता की आयु को देखने के लिए दशम भाव को लेना चाहिए क्योंकि यह नवम से द्वितीय भाव होता है।

दशम भाव के कारकः सूर्य, शनि, बृहस्पति और बुध।

दशमेश के विभिन्न भावों में स्थित होने के परिणाम

दशमेश, प्रथम भाव में: जातक जीवन में उच्च स्तर को प्राप्त करता है। वह अपना व्यवसाय करता है अथवा उच्च पदाधिकारी होता है। यदि लग्नेश के साथ युति में हो तो यह जातक के बहुत प्रसिद्ध और अविष्कारक होने का सम्बन्ध होता है।

दशमेश, द्वितीय भाव में: धनवान, पारिवारिक व्यवसाय। होटल का व्यवसाय। वित्तीय संस्थानों से जुड़ा व्यापार भी हो सकता है। यदि पीड़ित हो तो व्यवसाय में हानि देता है।

दशमेश, तृतीय भाव में: यात्रा, लेखन सम्बन्धित व्यवसाय अथवा भाइयों के साथ व्यापार।

दशमेश, चतुर्थ भाव में: यहां से दशमेश, अपने भाव को दृष्ट करता है अतः ऐसा जातक भाग्यशाली, उच्च पद युक्त, प्रसिद्ध और सुशिक्षित होगा। कृषि अथवा भूमि से सम्बन्धित व्यापार करेगा। यदि नवमेश भी युति करे तो जातक अत्याधिक भाग्यशाली और राजनीति में उच्च पद वाला होगा।

दशमेश, पंचम भाव में: यह एक अच्छा राजयोग है। यदि दशमेश शुभ ग्रह हो तो जातक, पवित्र और शुद्ध जीवन वाला एक बुद्धिमान व्यक्ति होता है। उसकी शैक्षिक प्राप्तियां भी अच्छी होती हैं। यद्यपि पंचम में स्थित दशमेश, जातक को निपुण बुद्धि और सम्मानित पद देता है लेकिन पंचम भाव, दशम भाव से अष्टम भाव है अत: वरिष्ठ अधिकारियों से विचारों का मतभेद भी देता है। यदि मंगल से दृष्ट हो तो मतभेद अधिक कड़वे हो जाते हैं। जातक सरकार में कार्यरत हो सकता है।

दशमेश, षष्टम भाव में: जातक न्याय व्यवस्था, कानून, जेल या अस्पताल से जुड़े व्यवसाय से सम्बन्धित होता है।

अशुभ ग्रहों का दुष्प्रभाव, जीवनवृत्ति में कंलक, झगड़े, कानूनी विवाद और कारावास का कारण होता है।

दशमेश, सप्तम भाव में: जातक की भार्या कार्यरत होती है। दशमेश का शुभ ग्रह होने का अभिप्राय है आकर्षक व्यक्तित्व। शुक्र के साथ होने पर जातक धन-सम्पति प्राप्त करता है क्योंकि शुक्र, देवी लक्ष्मी का रुप होता है। यदि इस सम्बन्ध में नवमेश भी शामिल होता है तो यह पिता के धनवान होने को इंगित करता है।

जातक कूट-नीतिज्ञ सेवाओं में होता है, विदेश यात्रायें करता है और जीवनसाथी से सहायता प्राप्त करता है।

पीड़ित सप्तमेश का अर्थ है अवैध शारीरिक सम्बन्ध। पराशर के अनुसार यदि दशमेश एक अशुभ ग्रह होकर, शनि एवं मंगल के साथ होता है तो जातक कामासक्ति को ही समर्पित होता है, वह केवल जीवन के भौतिक सुखों में लिप्त होता है तथा अनैतिक होता है।

दशमेश, अष्टम भाव में: जीवनवृत्ति में रुकावट। अष्टमेश से युति व्यवसाय में निम्नता लाती है। शुभ ग्रह थोड़े समय के लिए उच्च पद अवश्य देते हैं।

चूंकि अष्टम भाव, दशम भाव से एकादश भाव है अत: कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि जीवन में श्रेष्ठ पद पाने के लिए इस भाव की सहायता की आवश्यक होती है। अशुभ दृष्ट होने पर यह अपराधिक प्रवृति देता है।

पराशर के अनुसार दशमेश की अष्टम भाव में राहु के साथ स्थिति, जातक को लोगों द्वारा त्याज्य व्यक्ति बनाती है। वह मूर्ख और बुरे कार्य करने वाला व्यक्ति होता है। ऐसा जातक असामाजिक कार्यों जैसे तस्करी, चोरी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार आदि

में लिप्त होता है। (यह चमड़े, जूतों के उद्योग, जीवन बीमा और खनन उद्योगों से सम्बन्धित जीवनवृत्ति को भी इंगित कर सकता है।)

पराशर के अनुसार दशमेश और अष्टमेश के एक साथ अशुभ ग्रहों के साथ राशि परिवर्तन में हों तो जातक बुरे कर्म करता है। यदि यहां अष्टम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक रहस्यमय होता है।

दशमेश, नवम भाव में: यदि बृहस्पति भी इसमें शामिल हो तो आध्यात्मिकता के लिए अच्छा योग है। जातक, आज्ञाकारी पुत्र वाला, भलाई के कार्य करने वाला और अत्याधिक भाग्यशाली होता है।

दशमेश, दशम भाव में: यदि पीड़ित न हो तो अत्याधिक सफल जीवनवृत्ति अन्यथा विचलित होने वाली बुद्धि। चार ग्रहो की दृष्टि जातक को सन्यासी के जीवन की ओर अग्रसर करती है।

दशमेश, एकादश भाव में: आजीविका और व्यापार से लाभ। दशमेश और एकादशेश की युति का अर्थ व्यापार के द्वारा आय होता है। जातक अत्याधिक मित्रों वाला, धनवान व्यक्ति होता है।

पीड़ित होने पर जातक मित्रों के विश्वासघात का शिकार होता है।

दशमेश, द्वादश भाव में: विदेश अथवा दूर स्थान में नौकरी, आध्यात्मिक।

यदि पीड़ित हो तो परिवार से वियोग, तस्करी और गैरकानूनी क्रिया-कलाप, धोखेबाज और अपराधी। दशमेश और शुक्र मीन राशि में हो तो जातक जल से जुड़े व्यवसाय जैसे नौ सेना, समुद्री वस्तुओं का व्यापार, संशोधित पानी के व्यापार आदि में लिप्त होता है।

विभिन्न भावेशों का दशम भाव पर प्रभाव:

पराशर ने बृहत्पाराशर होराशास्त्र में विभिन्न भावेशों का दशम भाव पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या की है। यद्यपि यह सामान्य प्रभाव ही है लेकिन इसे फलित कथन के समय सहायता के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

लग्नेश दशम भाव में: जातक पिता के सुख से सम्पन्न, शासक की अनुकम्पा प्राप्त और समाज में प्रसिद्ध होगा तथा उसके पास स्वअर्जित धन-सम्पति भी होगी।

द्वितीयेश, दशम भाव में: विद्वान, धनवान, कामुक, शिक्षित, अच्छे मार्ग से धनार्जन तथा नौकरी, क्रय-विक्रय, व्यापार, धार्मिक क्रिया-कलापों, उपदेश आदि से आय। यदि अत्याधिक पीड़ित हो तो धन हानि हो सकती है।

तृतीयेश, दशम भाव में: यदि बली एवं सुस्थित हो तो जातक अपने स्वप्रयास से जीवन में अच्छी उन्नति करता है, जातक के भाई अच्छी स्थिति में होते हैं और उनसे जातक का सम्बन्ध भी अच्छा होता है। सत्याचार्य के अनुसार यदि तृतीयेश दशम भाव में बुध या शुक्र की राशि में हो तो जातक को गायक, अभिनेता, नर्तक अथवा संगीत के वाद्ययंत्रों का आसक्त बनाता है। प्रसिद्ध अभिनेत्री स्वर्गीय नरगिस दत्त की कुण्डली में तृतीयेश चन्द्रमा, दशम भाव में स्थित है।

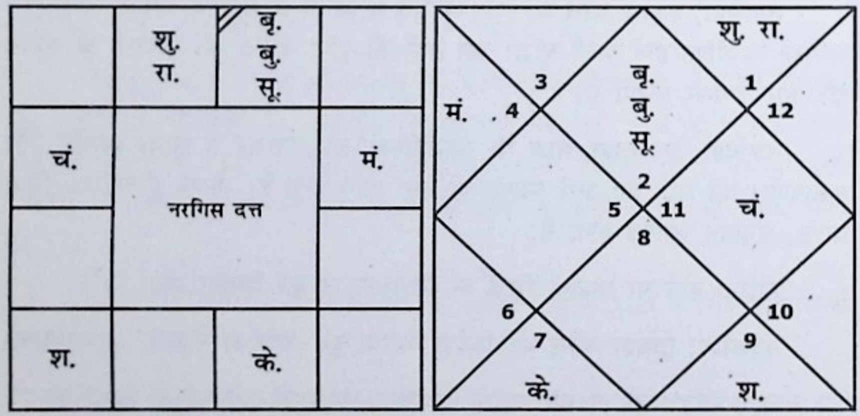

नरगिस दत्त की कुण्डली में तृतीयेश, चन्द्रमा दशम भाव में है। साथ ही साथ अन्य योग भी हैं।

यदि दशम भाव में स्थित तृतीयेश निर्बली हो तो जातक की भार्या पाषाण हृदय और विश्वासघाती होती है।

चतुर्थेश, दशम भाव में: चतुर्थेश की यह एक अन्य शुभ स्थिति है। इस स्थिति में चतुर्थेश, चतुर्थ भाव को दृष्ट करता है जिससे चतुर्थ भाव के नैसर्गिक बल में वृद्धि होती है जो जातक के ऐश्वर्य, खुशियों और समृद्धि के लिए अतिशुभ योग है। जातक की माता दीर्घायु होती है, वह शासन में उंच्च पद प्राप्त करता है और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। ऐसा जातक व्यापार में अत्याधिक धन अर्जित करता है।

यदि दशम भाव में स्थित चतुर्थेश सूर्य से पीड़ित हो तो शासक के रोष के कारण भू-सम्पति की हानि होती है। जातक तत्वम् के मतानुसार यदि दशम भाव में चतुर्थेश, शनि एवं चन्द्रमा से युत हो तो जातक अत्याधिक सुन्दर भवन प्राप्त करता है।

पंचमेश, दशम भाव में: यद्यपि पंचमेश अपने भाव से षष्टम भाव में होता है लेकिन त्रिकोणेश होकर केन्द्र में होने से राजयोग उदय करता है। ऐसा जातक उच्च व्यवसायी, अच्छी शिक्षा प्राप्त, सुप्रसिद्ध, भू-सम्पति वाला, कीर्तिवान और धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति होता है। यदि पीड़ित हो तो शिक्षा के लिए प्रतिकूल होता है और जातक के व्यवसाय में भी परेशानियां उत्पन्न होती हैं।

षष्टेश दशम भाव में: ऐसा जातक बुरे या क्रूर कार्य करता है। वह दिखने में धार्मिक हो सकता है लेकिन पापकर्मों में लिप्त रहता है। नौकरी में स्थानांतरण या परिवर्तन होता रहता है अर्थात जातक लम्बे समय तक एक स्थान में नौकरी नहीं कर पाता है। यदि दुर्स्थित या निर्बली हो तो नौकरी से निकाला जाता है।

सप्तमेश, दशम भाव में:

1. विदेश के व्यापार में सफलता।
2. निष्ठावान और व्यापार में सहायता करने वाली भार्या।

अष्टमेश, दशम भाव में: माता-पिता के आशीर्वाद की प्राप्ति में कमी, जातक कहानी सुनाने अथवा सूचना देने वाला और जीवनवृत्ति विहीन होता है। यदि यह शुभ दृष्ट हो तो उपरोक्त फलकथन नहीं कहना चाहिए।

नवमेश, दशम भाव में: यदि बली हो तो यह केन्द्र एवं त्रिकोण का, ***धर्मकर्माधिपति*** नाम का राजयोग देने वाला शुभ सम्बन्ध होता है, विशेषकर यदि दशमेश से युति हो, तो समृद्धि और उच्च पद देता है। यह योग जातक को राजा, धर्मपरायण, सबका प्यारा, अत्याधिक धनवान, मंत्री या सेना प्रमुख, विद्वता में प्रसिद्ध, उच्च स्तर की जीवनवृत्ति और परोपकार के कार्य करने वाला बनाता है।

यदि निर्बली या पीड़ित हो तो नौकरी की हानि, बदनामी, अनुचित जीवन शैली, अनैतिक एवं छुपकर कार्य करना, धन की हानि और शासन से दण्डित करवाता है।

दशमेश, दशम भाव में: यदि पीड़ित न हो तो अत्याधिक सफल जीवनवृत्ति, अन्यथा शीघ्र विचलित होने वाली बुद्धि। चार ग्रहो की दृष्टि जातक को सन्यासी के जीवन की ओर अग्रसर करती है।

एकादशेश, दशम भाव में: धर्म परायण, कर्त्तव्यनिष्ठ, राजा का प्रिय, बुद्धिमान, सत्यवादी,। व्यापार, यज्ञ और धार्मिक कार्यों से लाभ।

द्वादशेश, दशम भाव में: कर, आर्थिक दण्ड, पिता से प्रसन्नता में कमी।

दशम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम

दशम भाव, कुण्डली का सबसे शक्तिशाली केन्द्र होता है। इस भाव में स्थित बली ग्रह जातक को असोचनीय उच्च स्तर तक ले जाता है। शुभ ग्रह जातक को कुलीन, उदारचित्त और दया करने वाला बनाते हैं। लग्न अथवा चन्द्रमा से दशम भाव में स्थित शुभ ग्रह, कुलीन और समृद्धि का योग, **"अमला योग"** बनाता है। फलदीपिका के अनुसार जब दशम भाव में शुभ ग्रह हो अथवा दशमेश स्वगृही या उच्च का होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो अथवा लग्नेश, दशम भाव में हो तो जातक अत्याधिक प्रसिद्ध व्यक्ति होता है और प्रशंसनीय कार्य करता है।

सूर्य: दशम भाव का सूर्य दिशाबल से युक्त होने के कारण व्यवसाय और व्यवसायिक सफलताओं के लिए अच्छा होता है, यद्यपि नैसर्गिक क्रूर ग्रह होने के कारण यह माता-पिता से वियोग दे सकता है। दशम भाव, पंचम भाव से षष्टम भी है, अतः यहां अशुभ ग्रहों की स्थिति सन्तान के लिए शुभ नहीं होती है।

यदि सूर्य बली हो अर्थात उच्च या स्वगृही हो तो प्रसिद्धि, धन-सम्पति, शिक्षा, सम्मान आदि प्राप्त करने के लिए अच्छा होता है। जातक शूरवीर एवं दयालु होता है और संगीत एवं कला के प्रति उसके मन में असीम प्रेम होता है। वह समाज सेवा के कार्य करता है, तालाब, कुएं, मन्दिर एवं धर्मशालायें बनाता है, सन्तों की सेवा करता है और श्रेष्ठ व्यक्तियों का संरक्षण पाता है। यह सरकार में प्रसिद्ध होने को भी इंगित करता है।

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार ऐसे जातक के पास उत्तरदायित्व वाला उच्च पद होता है और वह सम्मान और स्वाभिमान के साथ जीवन व्यतीत करता है। इसका अर्थ सरकारी नौकरी भी हो सकता है।

फलदीपिका के अनुसार जातक पुत्रवान, बुद्धिमान, धनवान और वाहन, शक्ति एवं प्रसिद्धि युक्त होगा। सभी लोग उसकी सराहना करेंगे।

वराहमिहिर के अनुसार जातक एक अच्छा आनन्दमय जीवन व्यतीत करेगा और वह साहसिक कार्य करने वाला एक शक्तिसम्पन्न व्यक्ति होगा। स्वास्थ्य का कारक होने के कारण ऐसा जातक स्वस्थ शरीर का आनन्द लेगा।

सूर्य-बुध-शुक्रः यह युति ***'वैष्णव योग'*** का निर्माण करती है। यदि पीड़ित न हो तो अच्छे भाव में होने के कारण जातक को उच्च आध्यात्मिक स्तर पर ले जाती है। आदि शंकराचार्य, आचार्य रामानुज, तुलसीदास, विवेकानन्द और अरिबिन्दो घोष की कुण्डलियों में यह योग देखा जा सकता है।

नीचे दी गई आचार्य रामानुज की कुण्डली का अवलोकन करें।

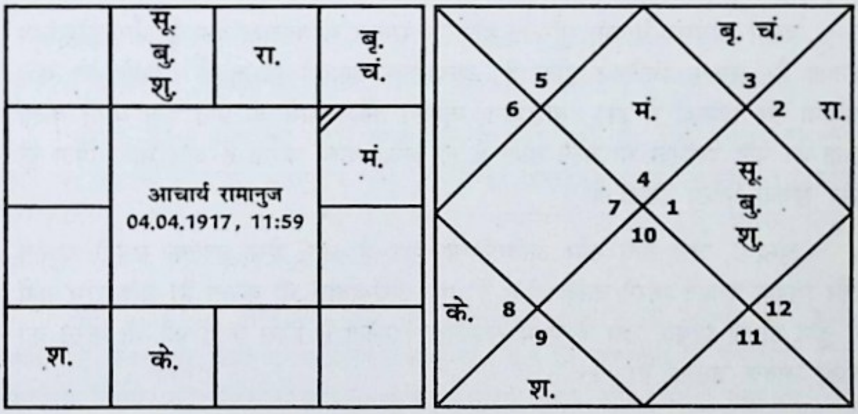

रुकमिणी अरुणडेल की कुण्डली में सूर्य, आध्यात्मिक राशि कुंभ का होकर दशम भाव में स्थित है और यहां से अपने राशि को चतुर्थ भाव में दृष्ट कर रहा है।

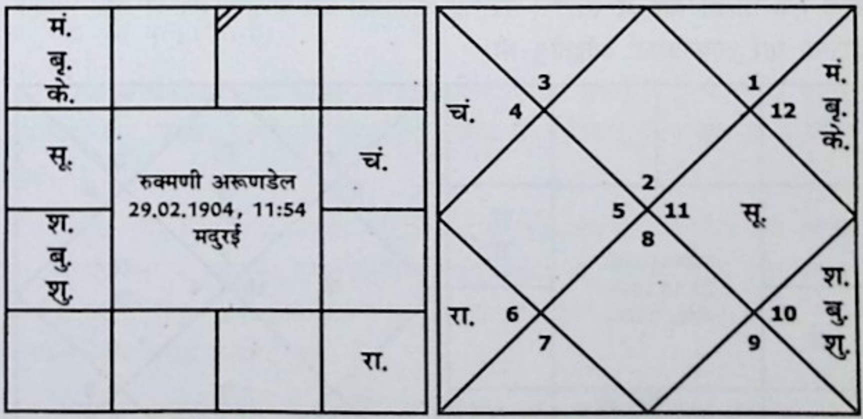

दशम भाव में नीच का सूर्य, माता-पिता के लिए अच्छा नहीं होता है।

कुण्डली में सूर्य किस भाव का स्वामी है यह भी महत्वपूर्ण होता है। यदि यह नवमेश हो, तो दशम में होने से यह ***"क्षेत्र सिंहासन"*** नाम का योग बनाता है।

चन्द्रमाः फलदीपिका के अनुसार ज़िस जातक की कुण्डली के दशम भाव में चन्द्रमा होता है वह जातक जीवन में सफलता प्राप्त करता है। वह अच्छे कार्य करता है और धर्मपरायण एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

वराहमिहिर के अनुसार दशम भाव में स्थित चन्द्रमा सभी प्रकार की सफलता देता है, जातक को दयालु प्रवृति का, धनवान और साहस से युक्त बनाता है।

दशम भावगत चन्द्रमा सुस्थित होने पर समाज में पहचान देता है और लोकप्रिय बनाता है। जातक विशिष्ट होता है, अत्याधिक यात्रायें करता है (विशेषकर यदि चन्द्रमा चर राशियों में हो), बुद्धिमान, कुलीन और दूसरों के प्रति दया करने वाला होता है। यदि दशमेश भी बली होता है तो अच्छे कार्य करता है और माता-पिता के प्रति सच्ची निष्ठा रखता है।

चन्द्रमा, जल तत्व और अतिगतिमान ग्रह है अतः ऐसा जातक समुद्री यात्रायें और विदेश यात्रायें करने वाला होता है तथा तीर्थयात्रायें भी करता है। यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो प्रत्येक उस कार्य में सफलता दिलाता है जिस कार्य को भी करने का बीडा जातक उठाता है।

महात्मा गान्धी की कुण्डली में चन्द्रमा, दशम भाव में स्वगृही होकर राहु के साथ स्थित है। अपने अष्टकवर्ग में यह 7 बिन्दुओं के साथ बली होकर स्थित है और बली गज-केसरी योग में संलिप्त है। वह कुलीनता का संक्षिप्त रुप थे और उनकी प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता अद्वितीय थी।

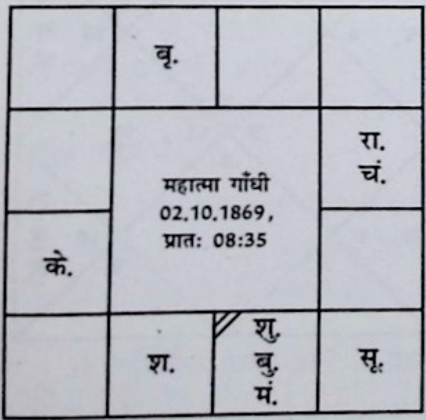

दशम भाव का चन्द्रमा जातक को अत्याधिक मान-सम्मान, प्रतिष्ठा देता है और लोकप्रिय बनाता है।

स्वामी विवेकानन्द की कुण्डली में चन्द्रमा, शनि के साथ दशम भाव में बैठकर आध्यात्मिकता का एक अच्छा योग बना रहा था। स्वामी शिवानन्द का भी दशम भाव में चन्द्रमा था।

दशम भाव का पीड़ित चन्द्रमा बलगम और शीत का कारण होता है। अशुभ ग्रहों के प्रभाव में सार्वजनिक जीवन में निंन्दा और व्यवसाय में रुकावटें देता है।

मंगलः दशम भाव का मंगल दिशा बल से युक्त होता है। उच्च अथवा स्वग्रही होने पर **रुचक** नाम का महापुरुष योग बनाता है। फलदीपिका के अनुसार इस योग में जन्मा जातक अत्याधिक साहसी और शक्ति सम्पन्न होगा। वह शत्रु विजेता, दंभी, प्रसिद्ध, सफल और श्रेष्ठ सेना नायक होगा।

कर्क और सिंह लग्न में मंगल, राज योगकारक होता है जो जातक को किसी राज्य का राजकुमार जैसी उच्च सामाजिक स्थिति देता है। बृहस्पति के प्रभाव में होने पर यह जातक को असोचनीय धन-सम्पति, भूमि, वाहन और समृद्धि देता है।

यदि मंगल निर्बली अथवा दुर्स्थित हो तो दुर्घटना, अग्नि एवं हथियार से भय देता है तथा अतिव्ययी, दुराचारी और कुपुत्रों वाला बनाता है। यदि शत्रु राशि में हो तो पिता की मृत्यु देता है।

मंगल-चन्द्रमाः यदि पीड़ित हो तो जातक ठण्डा, स्वार्थी, अस्थिर बुद्धि वाला, दयाहीन, क्रूर, प्रेरक, साहस से पूर्ण और प्रकृति के शक्तिशाली प्रभाव से प्रभावित होता है।

बुधः यदि बुध उच्च अथवा स्वराशि का हो **भद्र** नाम का महापुरुष योग बनाता है। फलदीपिका के अनुसार ऐसा जातक दीर्घायु, बुद्धिमान, स्वच्छ शरीर और स्वच्छ विचारों वाला, विद्वानों के द्वारा प्रशंसा पाने वाला, मनभावन भाषण करने वाला, बहुत धनवान और समृद्ध व्यक्ति होता है।

जातक उत्तराधिकार में अच्छी धन-सम्पति प्राप्त करता है तथा हंसमुख, कई कलाओं में प्रवीण, सुप्रसिद्ध, उच्च बौधिक क्रिया-कलापों में सलंग्न, सत्यवादी, तीव्र इच्छाओं वाला, सुख-सुधिाओं से सम्पन्न और किसी भी कार्य के प्रारम्भ से ही सफलता प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है।

बृहस्पतिः जातक ध्वजाओं से सुशोभित महल में निवास करता है। ऐसा जातक तेजस्वी, शासक द्वारा भलाई के कार्यों के लिए अनुमोदित एवं सम्मानित, दयालु और एक ऐसा यशस्वी, धार्मिक व्यक्ति होता है जो दिन-रात वैदिक मंत्रों का उच्चारण करने वाले ब्राह्मणों के साथ रहता है।

जातक, राज्य की मोहर वाला, सबसे अच्छे वाहनों से युक्त, मित्रवान, पुत्रवान, भार्यावान और सम्पतिवान होता है।

यदि दशम भाव में बृहस्पति, सूर्य की युति में होता है तो जातक सफल, न्याय-परायण, निष्ठावान और पिता के द्वारा सम्पति प्राप्त करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा के साथ हो तो माता से, यदि बुध के साथ हो तो मित्रों से, मंगल के साथ हो तो शत्रुओं से और यदि शनि के साथ हो तो नौकरों से धन-सम्पति प्राप्त करता है।

लग्न, चतुर्थ या दशम भाव में स्थित बृहस्पति अत्याधिक धनदायक होता है।

सुस्थित होने पर जातक धर्मपरायण, गरिमापूर्ण एवं आदर्श, धार्मिक, दूसरों को समर्पित, अच्छे कार्य करने वाला, कार्यकुशल, सत्यवादी, कार्य प्रारम्भ करने पर उसे पूर्णता देने वाला, एक बौधिक सन्त, उन्नत स्तरवाला, अच्छे नामवाला, प्रसिद्ध, वरिष्ठ व्यक्तियों की अनुकम्पा प्राप्त, कुलीन वंश से सम्बन्धित और जीवन में महत्वपूर्ण पद पाने वाला होता है।

शुक्रः धनवान, स्त्रियों का प्रिय, धार्मिक, भाग्यशाली, आनन्दित, अत्याधिक रतिसुखी, ज्ञानी, वाहनवाला, आभूषण युक्त, सुन्दर आकर्षित करने वाला और जीवन में कई यज्ञ करने वाला होता है। ऐसा जातक शासन में वरिष्ठ अधिकारी, परिवार वाला, माता-पिता से आशीष प्राप्त, कलात्मक सृजन करने वाला और कला एवं संगीत का प्रेमी होता है।

पुरुष राशियों अथवा मीन राशि में शुक्र होने से सन्तानहीनता हो सकती है। यदि पुरुष राशियों में हो तो जातक अविवाहित भी रह सकता है क्योंकि जातक स्त्री विरोधी होता है। मीन राशि में होने से जातक को भार्या से परेशानियां होती हैं और जातक पुनर्विवाह भी कर सकता है। माता-पिता की अल्पायु में मृत्यु होती है।

यदि स्त्री राशियों में हो तो विवाह के उपरान्त भाग्योदय होता है और जातक एक या दो पुत्रों का पिता होता है।

बृहस्पति की दृष्टि शुभ होती है। सूर्य, बृहस्पति या चन्द्रमा सामाजिक विशिष्टता, सम्मान और आर्थिक सफलता को इंगित करते हैं।

यदि पीड़ित हो तो स्त्रियों से अनैतिक और अप्राकृतिक शारीरिक सम्बन्ध, धन एवं प्रसिद्धि की हानि देता है।

शनिः यदि सुस्थित हो तो जातक राजसिक, प्रसन्न, महानुभाव, मंत्री, शान्त, साहसी, एक वरिष्ठ जिलाधिकारी, कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित कार्यो में रुचि रखने वाला, भयहीन, राजनीतिज्ञ और विदेश में भी अपने स्तर को बनाये रखने वाला होता है।

यदि प्रतिकूल राशि में हो तो सफलता के उपरान्त विपत्ति, व्यापार में आर्थिक हानियां, अपमान और पराजय देता है।

यदि दुर्स्थित हो तो बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु, कठिन जीवन, अधम, दरिद्र और अस्थिर बुद्धि। पीछे हटना, अवनति, निलम्बन, सेवायें समाप्त होना, कारावास, गंभीर रोग आदि। पिता और पुत्र एक ही छत के नीचे उन्नति नहीं कर सकते हैं।

राहुः यदि उच्च का हो तो जातक शासक और अचल सम्पति वाला होता है। सामान्यतः जातक विधवा और वेश्याओं से प्रेम एवं शारीरिक सम्बन्ध बनाने वाला, सुन्दर स्त्रियों की संगत का आनन्द लेने वाला, उन्माद अर्थात नशा करने वाला, चोर, चरित्रहीन, बेईमान, वाचाल तथा विदेशियों के साथ रहने वाला होता है। जातक अपने पिता से परेशानियां भी पाता है।

मीन राशि में हो तो जातक कामातुर, अतिव्ययी और शत्रुओं को मृत्यु देने वाला होता है।

केतुः मेष, वृश्चिक, वृषभ या कन्या राशि में हो तो जातक बुद्धिमान, शक्तिशाली, अपनी आत्मा का अहसास करने वाला होता है और शत्रुओं का नाश करता है।

मीन या धनु राशि में हो तो सर्वश्रेष्ठ सम्मान एवं मान्यता प्राप्त, ज्ञानी, कई विजय प्राप्त करने वाला, विदेश में रहने वाला, विदेश में भाग्योदय पाने वाला, प्रसन्न और परिपूर्ण होता है लेकिन यह व्यापार के लिए अनुकूल नहीं होता है।

यदि पीड़ित या दुर्स्थित हो तो धोखेबाजी एवं जालसाजी करने से सम्मान की हानि, लोगों अथवा बाजार से प्रतिकूलता, असफलता, परिवर्तन या खिन्न चित्त पाता है।

यदि कन्या राशि में पीड़ित हो तो निम्न स्तर की आदतें एवं कार्य, दुराचारी, वाहन के द्वारा जांघों में चोट और गुदा के रोग वाला होता है।

दशम भाव की राशियों के अनुसार व्यवसाय

अग्नि तत्व राशियां:

इंजीनियर, स्टील और लोहा उद्योग, इंजन और गतिशील मशीनें।

मेष राशि: साहसिक कार्य, गतिशील और उर्जा। खोज करना, साहस, सेना, पुलिस, इंजीनियर, दन्त चिकित्सक। यदि दशम भाव में मेष राशि का मंगल, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक का कार्य मोटर गाड़ियों से सम्बन्धित होता है।

मंगल-बुध: मकेनिकल इंजीनियर।

बुध-बृहस्पति: लेखक, पत्रकार, वकील।

सूर्य: उद्योगी, राजनीतिज्ञ।

मंगल: व्याख्याकर्त्ता, कानून व्यवस्था को लागू करने वाला अधिकारी।

सिंह राशि: शासन, टकसाल, औषधी, सोने की खान, शेयर बाजार, जंगल, पहाड़, महल। कालपुरुष की कुण्डली की पंचम भाव की राशि है अतः मनोविनोद के स्थान, जुआंघर, घुड़दौड़ के मैदान, नृत्यशाला और क्रीड़ा के मैदान से सम्बन्धित है।

धनु राशि: युद्ध और अग्नि के कार्यों से जुड़ा व्यवसाय। बृहस्पति की राशि और धर्म त्रिकोण का भाव होने के कारण मन्दिर, पुजारी, ट्रस्टी आदि। बृहस्पति धन का कारक होता है अतः वित्तीय संस्थानों, धन-संग्रह करने वाले संस्थानों से सम्बन्धित हो सकता है। बृहस्पति धर्म उपदेशक भी है अतः व्यवसाय धर्म उपदेश, शिक्षा देने, पुराहिताई और वकालत से सम्बन्धित भी हो सकता है।

पृथ्वी तत्व राशियांः

व्यवहारिक जातक, प्रशासन, अर्थशास्त्र, इमारतें, खनन, कृषि, भूमि का कार्य, निर्माण, लेखन।

वृषभ राशिः व्यवहारिक जातक, इच्छाशक्ति, दृढ़ता। कालपुरुष की द्वितीय भाव की राशि है। अतः आर्थिक, सौन्दर्य प्रसाधन और आभूषणों से सम्बन्धित व्यवसाय।

चन्द्रमाः गायक।

मंगल-चन्द्रमाः कृषि।

कन्या राशिः गणितज्ञ, शिक्षक, लेखक, इंजीनियर, ग्रन्थ, पत्र, छपाई और समाचार पत्र से सम्बन्धित शिक्षा, कलात्मक प्रवृति, कला और साहित्य का रसपान।

मकर राशिः खदान, कोयला, सीसे का काम, लोहार और निम्न स्तर की सेवायें जैसे कि चौकीदार, राजनेतिक प्रतिनिधि, मंत्री।

वायु तत्व राशियांः

बौधिक, दार्शनिक, लेखक, चिन्तनशील या विचारक, विज्ञान में शोध, विमान चालक, विमान परिचालिका।

बुध-राहुः इंजीनियर।

बुध से दृष्ट चन्द्रमाः लेखक।

मिथुन राशिः बुध की राशि होने के कारण बौधिक क्रिया-कलापों से सम्बन्धित होती है और लेखक, शिक्षा से सम्बन्धित, प्रतिनिधि, इंजीनियर, छपाई, पत्रिकाओं तथा लेखाकार से सम्बन्धित व्यवसाय देती है।

तुला राशिः स्वामी शुक्र है जो कला, संगीत, कपास, जूट, वस्त्रों का कारक है। साबुन, चांदी, चीनी, जज, बगीचे, सज्जा सामग्री को भी दर्शाती है। वायु तत्व राशि होने के कारण वायुयान सेवाओं, वायुयान सेवाओं के कार्यालय, संगीतकार को इंगित करती है।

कुंभ राशिः वैज्ञानिक उद्यम, शोधकार्य, अविष्कार, परमाणु उर्जा और विद्युत।

जल तत्व राशियां:

तरल, रसायन, जीवविज्ञान, दुग्ध, मदिरा, पानी के जहाजों से सम्बन्धित।

कर्क राशि: पानी से सम्बन्धित व्यवसाय जैसे घर-घर में पीने का पानी पहुंचाना, आयात-निर्यात, नाविक, मछली पालन, नौसेना, होटलों का व्यवसाय, नर्स, प्राचीन वस्तुओं का व्यापार। यह जातक को कल्पनाशक्ति और सार्वजनिक जीवन का उजागर होना देता है।

वृश्चिक राशि: रसायन, औषधालय, बीमा, चाय, काफी औद दवाई बनाना या बेचना। जल तत्व राशि होने के कारण जातक नौसेना अधिकारी, रसायनशास्त्री, तेल या स्प्रिट बेचने वाला भी हो सकता है।

मीन राशि: मछली उद्योग, समुद्री उत्पादन, तरल पदार्थों के उद्योग, नदियों से सम्बन्धित व्यापार, विदेशों से व्यापार, तेल, विदेश यात्रायें, पुजारी, प्राध्यापक और समुद्री मार्ग बताने वाला।

समाज में उच्च स्थान:

1. यदि लग्न, सूर्य और चन्द्रमा से दशमेश, आपस में सम्बन्धित हों।
2. यदि दशम भाव में सूर्य पूर्णोच्च अर्थात 10 अंश का अथवा स्वराशि का हो।
3. द्वितीय, दशम और एकादश भाव में शुभ ग्रह हों- आर्थिक रुप से अतिसमृद्ध।
4. कुण्डली में राजयोगों का होना और उनसे सम्बन्धित ग्रहों की दशायें। विशेषकर केन्द्रश एवं त्रिकोणेश का सम्बन्ध, महाभाग्य योग, राशि परिवर्तन योग, नीचभंग राजयोग और विपरीत राजयोग।
5. जैमिनी पद्धति के अनुसार कारकांश लग्न से दशम भाव में शनि अथवा बुध का होना, प्रसिद्धि देने वाला योग है।

नेतृत्व के गुण: एक सफल नेता में शारीरिक, मानसिक और बौधिक क्षमता होनी आवश्यक है। कुण्डली का लग्न शारीरिक शक्ति, चन्द्रमा बौधिक शक्ति, सूर्य सफलता एवं तेज को और बुध बौधिक शक्ति को इंगित करता है।

यदि बुध या चन्द्रमा, राहु एवं शनि की अशुभ दृष्टि में हों तो यह एक उच्च अधिकारी अथवा नेता बनने में मानसिक शक्ति की दुर्बलता को इंगित करता है।

महत्वपूर्ण नाड़ी सिद्धान्तः आगे नाड़ी ज्योतिष के निश्चित नियम दिये गए हैं लेकिन इनकी भी अपनी सीमा होती है।

1. शनि से द्वितीय भाव में स्थित शुक्र विवाह के उपरान्त समृद्धि देता है।
2. शनि से द्वितीय भाव में बृहस्पति स्थित हो और शनि से युत या दृष्ट हो तो जीवनवृत्ति में मनवान्छित स्तर देता है।
3. यदि बृहस्पति और शनि के मध्य कोई ग्रह न हो तो सफलता का मार्ग आसान होता है।
4. शनि से द्वितीय भाव में स्थित राहु - जातक निम्न स्तर से प्रारम्भ करता है। प्रारम्भिक अवस्था में अधिक संघर्ष होता है।
5. शनि से द्वितीय भाव में स्थित केतु जातक को पीछे की ओर ले जाता है। यह आध्यात्मिकता के लिए अच्छा योग है।
6. शनि से द्वितीय भाव में चन्द्रमा स्थित हो अथवा शनि, चन्द्रमा से युत या दृष्ट हो तो जातक को विदेश में, शराब खाने में, काव्य लेखन में, साहित्य में, धर्म में कार्य देता है।
7. **शनि-मंगल-राहुः** कार्य से सन्तोष नहीं। किसी भी स्तर में सेवा प्रारम्भ करे, प्रारम्भ में संघर्ष होता है।
8. **शनि-राहु-मंगलः** कार्यशाला में इंजीनियर, कठिन परिश्रम।
9. नवमेश और दशमेश की युति मुख्य राजयोग बनाती है।
10. राजनैतिक जीवन में उच्च स्तर पर पहुंचने के लिए राहु विशेष योगदान दे सकता है।
11. यदि अमात्यकारक दशम भाव को देखे तो अपनी दशा में योगकारक होता है।
12. वर्गोत्तम मंगल राजसी स्तर देता है।

शिक्षा की भूमिका और आधुनिक व्यवसायः

आज के प्रतियोगिता से भरे संसार में उच्च शिक्षा, अच्छे और लाभदायक व्यवसाय की पर्याय बन चुकी है। व्यवसाय के सम्बन्ध में निर्णय करने से पहले जातक द्वारा प्राप्त शिक्षा और उसकी शैक्षिक उपलब्धियों के विषय में जानना

आवश्यक है। इसके लिए हम कुण्डली के पंचम भाव और पंचमेश का अध्ययन करेंगे।

यद्यपि जातक-पारिजात शिक्षा के लिए चतुर्थ भाव की अनुशंसा करते हुए इस भाव से सम्बन्धित शिक्षा के योगों को वर्णित करती है लेकिन साथ ही साथ पंचम भाव को बुद्धिमता का भाव भी मानती है। पराशर भी पंचम भाव का उल्लेख श्रेष्ठ बुद्धिमता और सीखने के लिए करता है। जैमिनी में भी द्वितीय और पंचम भाव को शिक्षा और सीखने का भाव कहा है। उत्तरकालामृत और सर्वार्थ चिन्तामणी शिक्षा के लिए द्वितीय भाव की अनुशंसा करती है। इसका कारण यह हो सकता है कि द्वितीय भाव से कुटुम्ब का विचार किया जाता है अत: यह भाव बाल्यवस्था में परिवार से प्राप्त शिक्षा के विषय में इंगित करता है।

चतुर्थ भाव और चन्द्रमा, मस्तिष्क को इंगित करता है। यदि मस्तिष्क अच्छा नहीं होगा तो अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के आसार भी बहुत कम हो जाएंगे। चूंकि कालपुरुष की कुण्डली में चतुर्थ भाव का स्वामित्व चन्द्रमा के पास है अत: यह भाव मस्तिष्क के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो जाता है।

यद्यपि, आधारभूत विद्या के लिए चतुर्थ भाव का विचार करना चाहिए लेकिन आधुनिक व्यवसायों से सम्बन्धित शिक्षा का विचार पंचम भाव और पंचमेश से करना अधिक उचित होगा। कालपुरुष की कुण्डली में यह पूर्व पुण्यों का भाव है और इसका स्वामी सूर्य, आत्मा का नैसर्गिक कारक है। सूर्य, प्रकाश देने वाला और सफलता एवं प्रसिद्धि का कारक है। अत: व्यवसाय से जुड़ी शिक्षा के लिए पंचम भाव, पंचमेश और इसके कारक का महत्व अधिक है। बृहस्पति, नवम भाव अर्थात पंचम से पंचम भाव और विद्वत्ता एवं धर्म का कारक है। अत: इसका विचार भी अतिआवश्यक है।

इस प्रकार उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति और चन्द्रमा मुख्यरुप से महत्वपूर्ण ग्रह हैं। निरन्तर उद्योगी रहने और कठिन परिश्रम के लिए शनि भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

जातकपारिजात के अनुसार यदि चतुर्थेश और विद्याकारक बुध बली होकर शुभ भावों में हों और अशुभ ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हों तो जातक अपनी विद्याओं के लिए प्रसिद्ध होता है।

विदेश में उच्च शिक्षा के लिए चतुर्थ, नवम और द्वादश भावों को देखना चाहिए। द्वादश भाव, भिन्न वातावरण का भाव है जबकि नवम भाव लम्बी यात्रा इंगित करता है।

अशिक्षित रहने के योगः

1. चतुर्थेश, षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित होकर अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
2. चतुर्थेश, वक्री होकर षष्टम भाव में हो और चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश, बृहस्पति से अप्रभावित हों।

ग्रह और विद्याः

किसी भी कुण्डली में विद्या से सम्बन्धित निर्णय करने के लिए ग्रहों के साथ-साथ मिथुन और कर्क राशि की स्थिति का अध्ययन भी आवश्यक है।

सूर्यः कालपुरुष की कुण्डली का पंचमेश होने के कारण शिक्षा में सफलता को इंगित करता है। एक बली सूर्य, विशेषतः, चिकित्सा विज्ञान में उच्च शिक्षा देता है।

सूर्य-शनि-राहुः प्रख्यात चिकित्सक।

चन्द्रमाः

चन्द्रमा-मंगलः इलेक्ट्रोनिक्स, कम्प्यूटर।

चन्द्रमा-बृहस्पतिः बुद्धिमता और भाग्य।

बृहस्पतिः नवम भाव का कारक होने के कारण अद्‌भुत बुद्धि देता है। (कुण्डली में बली बृहस्पति की अनुपस्थिति में कोई भी जातक, अद्वितीय रचनाकार नहीं बन सकता है।)

बुधः यह बुद्धि को इंगित करता है। इसकी अनुपस्थिति में शिक्षा सम्भव नहीं है। तृतीय भाव शिक्षा के प्रति रुझान का भाव है और मिथुन राशि, उच्च शिक्षा के प्रति रुझान को इंगित करती है। बली बृहस्पति और बुध, किसी भी विषय में उच्च ज्ञान देते हैं। निर्बली बुध, अशिक्षित भी रख सकता है।

शुक्रः शिक्षा की क्षमता को दिखाता है। निर्बली शुक्र, शिक्षा में बाधा डालता है। तृतीय या चतुर्थ भाव का शुक्र संगीत अथवा खेल देता है।

शुक्र-सूर्यः यदि बुध भी सुस्थित हो तो अच्छा वैज्ञानिक बनाते हैं।

शुक्र-बुध-सूर्यः विज्ञान के विषय की शिक्षा देते हैं।

शुक्र-बृहस्पति-चन्द्रमाः लेखक।

चतुर्थ भाव में मंगलः अस्थिर बुद्धि, घर में अशान्ति के कारण पढाई में एकाग्रता नहीं होती है।

शनिः सहनशीलता और निरन्तर उद्योगी रहने की क्षमता देता है। यदि अपनी राशि और उच्च राशि को छोड़कर अन्य राशियों का होकर तृतीय, चतुर्थ या पंचम में स्थित हो तो शिक्षा को बाधित करता है। नवम भाव में हो तो उद्देश्यहीन यात्रा देता है। पीड़ित शनि, शोध कार्यों में विघ्न डालता है।

क्रियाशील अपूर्वबुद्धि का जातकः

बृहस्पति-शनि की पंचम या नवम भाव में युति भविष्य देखने में सक्षम ***शौर्यगौरी योग*** देती है।

राहुः अकेला राहु, अथवा बुध या चन्द्रमा के साथ तृतीय, चतुर्थ या पंचम भाव में स्थित राहु शिक्षा में विघ्न-बाधा देता है लेकिन नवम भाव में स्थित राहु विघ्न नहीं देता है।

राहु उन सभी का कारक होता है जो अकल्पनीय गति से चलते हैं जैसे कि विद्युत, आवाज, रोशनी, इलेक्ट्रोनिक्स और दूर-संचार प्रणाली। राहु पंचम में तो जातक यंत्रकार अर्थात इंजीनियर होता है। उच्च का राहु शिक्षा के लिए अच्छा है। कुंभ राशि का राहु शोध देता है, यदि नवम भाव में हो तो जातक विदेश जाकर शोध करता है।

राहु-चन्द्रमा-शनिः मूर्ख। अच्छी शिक्षा नहीं।

केतुः गोपनीयता। यदि तृतीय, चतुर्थ या पंचम में सुस्थित न हो तो शिक्षा में बाधा डालता है। यह गुप्त सेवाओं को इंगित करता है। शुभ केतु का अभिप्राय गुप्तचर होता है।

गणित के लिए योगः

1. द्वितीय भाव में सूर्य और बुध, शनि से दृष्ट।
2. द्वितीय भाव में चन्द्रमा और मंगल, बुध से दृष्ट।
3. द्वितीय भाव में चन्द्रमा और मंगल, बुध केन्द्र में।
4. उच्च का बुध द्वितीय भाव में, बृहस्पति लग्न में और शनि अष्टम भाव में।
5. द्वितीय भाव में बुध, बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण में।
6. सूर्य और बुध, केन्द्र या त्रिकोण या एकादश भाव में।

विद्या का स्वरुपः निम्नलिखित ग्रहों में से जो ग्रह बली होगा वह विद्या के स्वरुप का निर्धारण करेगाः

1. पंचमेश का राशीश, पंचमेश के नक्षत्र का स्वामी और अन्य ग्रहों एवं शामिल राशियों का प्रभाव।
2. बुध से पंचम पर प्रभाव।
3. महादशा और अन्तर्दशा नाथ।
4. यदि दशम और एकादश भी शामिल हों तो व्यवसायिक शिक्षा इंगित करते हैं।

सप्तम भाव - प्रबन्धन।

नवम भाव - धार्मिक ज्ञान।

षष्टम भाव - खेल की विद्या।

शिक्षा-नाड़ी ज्योतिषशास्त्रः द्वितीय भाव प्राप्त ज्ञान को इंगित करता है। चतुर्थ भाव शिक्षा का भाव है। यद्यपि चतुर्थ भाव, पंचम भाव से द्वादश भाव है लेकिन यह पंचम का पूरक है।

शास्त्रीय ग्रन्थों सेः

चतुर्थ में शुक्रः संगीत। बुध या सूर्य के साथ तो काव्य के गुण।

बुधः बुध कला, साहित्य और ज्योतिषशास्त्र देता है।

सूर्य और चन्द्रमाः राजनीति शास्त्र, मनोविज्ञान, पराविज्ञान।

सूर्य-बुधः गणित।

सूर्य-मंगल-बुधः तर्क-वितर्क कुशल, अर्थात तर्कशास्त्री।

ग्रहों द्वारा इंगित विषयः

शनि, मंगल, राहु-केतु विशिष्ट कला (Technical Planets) से सम्बन्धित ग्रह हैं।

सूर्य, चन्द्रमा और शुक्र सामान्य कला के ग्रह (Non-Technical Planets) हैं।

सूर्यः औषधी, रसायन, दृष्टि से सम्बधित विषय, राजनीति शास्त्र, प्रशासन, जंगलात, गणित, भौतिक विज्ञान।

चन्द्रमाः वस्त्र, समुद्र से सम्बन्धित विद्या, उपचार, पाककला, वस्त्र धुलाई, मनोविज्ञान, होटल प्रबन्धन, विज्ञान, संगीत, नृत्य, जलीय कार्य, आधुनिक कला, रसायन शास्त्र, जीव-रसायन शास्त्र।

मंगलः सेना, इंजीनियरिंग, हथियार, रसायन, जन्तुविज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, भूमि सम्वन्धित-सिविल इंजीनियरिंग, शल्य चिकित्सा, भौतिक विज्ञान।

बुधः वस्त्र, गणित, बही-खाता सम्बन्धित विषय, अर्थशास्त्र, वित्तीय संस्थानों से सम्बन्धित विषय, प्रकाशन, पत्रकारिता, सूचना-प्रसारण विज्ञान।

बृहस्पतिः कानून, व्याख्यान, शिक्षा, स्त्री रोग विशेषज्ञ, चिकित्सा विज्ञान, शास्त्रीय साहित्य, व्यापार प्रबन्धन में प्रवीणता, इतिहास।

शुक्रः संगीत, सिनेमा, अभिनय, सिलाई, छायाचित्रकला, विज्ञापन, होटल प्रबन्धन, साहित्य, वनस्पति विज्ञान।

शनिः यदि सूर्य की राशि में हो तो सरकार, राजनीति, श्रम कानून, जन संस्थान।

यदि चन्द्रमा की राशि में हो तो लेखन, विदेश सम्बन्धित मामले, तरल पदार्थ, समुद्र से प्राप्त होने वाली वस्तुएं। यह रुझान तब भी होता है जब कोई ग्रह शनि की युति या दृष्टि प्रभाव में हो।

यदि मंगल की राशि में हो तो मशीनों के साथ कार्य, शारीरिक कार्य, शारीरिक उर्जा, इंजीनियरिंग।

यदि बुध की राशि में हो तो पारिवारिक व्यापार, वाहन, संचार, आरोग्यकर, जडी-बूटी, औषधी। यदि चन्द्रमा के नक्षत्र में हो तो इंजीनियरिंग।

यदि बृहस्पति की राशि में हो तो कानून सम्मत, दूसरों को निर्देशन देने वाला, अध्यापन, नेतृत्व करने वाला।

यदि शुक्र की राशि में हो तो घर, आर्थिक व्यापार।

राहु: गणित, अंतरिक्ष विज्ञान। राहु यंत्रकार (Engineer) है।

केतु: विदेशी भाषायें, इंजीनियरिंग, वायुयान, जीवाणु विज्ञान।

कुण्डली से व्यवसाय का निर्धारण कैसे करें (जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के अप्रैल-जून, 2000 के संस्करण में छपे श्री के. एन. राव के लेख पर आधारित):

कुण्डली के मुख्य आधारभूत ग्रह को ढूढ़ं कर व्यवसाय का निर्णय किया जाता है। यह आधारभूत ग्रह निम्नलिखित् ग्रहों में से कोई भी ग्रह हो सकता है:

1. दशम भाव, दशमेश, दशम भाव में स्थित ग्रह, दशम भाव को दृष्ट करने वाला ग्रह। लग्न, चन्द्रमा और सूर्य में से जो बलिष्ठ हो उससे दशम भाव को लेना चाहिए। भट्टोपाल और गार्गी के अनुसार लग्न और चन्द्रमा, दोनों के ही दशम भावों का अध्ययन करना चाहिए न कि केवल इनमें से बली के दशम भाव का, क्योंकि एक जातक के आय के स्रोत भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।
2. दशमेश के नवांश का स्वामी, पुनः लग्न, चन्द्रमा और सूर्य में से जो बलिष्ठ हो उससे दशमेश।
3. लग्न और लग्नेश को प्रभावित करने वाले ग्रह।
4. सूर्य और चन्द्रमा से सुनफा, अनफा, वोशी, वेशी योग बनाने वाले ग्रह। ये हमें आय के स्रोत बतायेंगे।

उपरोक्त के अतिरिक्त निम्नलिखित का भी ध्यान रखना चाहिए:

1. द्वितीय और एकादश भाव आय की प्रवृति और मात्रा दर्शाते हैं। यहां स्थित ग्रह अर्जित आय के स्वभाव को इंगित करते हैं।
2. विद्या के स्वरुप और बुद्धिमता की सीमा को जांचने के लिए पंचम भाव। चतुर्थ भाव भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यवसाय से प्राप्त आनन्द को इंगित करता है। कभी-कभी, चतुर्थ-दशम में राहु-केतु अक्ष इंजीनियरिंग का व्यवसाय इंगित

करते हैं। चतुर्थ विद्या के लिए भी देखना चाहिए।

3. उस समय विशेष की दशा-अन्तर्दशा भी हमें सूत्र देती है।
4. **योगों का अध्ययनः** योग भी महत्वपूर्ण हैं। महत्वपूर्ण योग भी हमें व्यवसाय के स्वभाव के विषय में सूत्र देगें। सरस्वती योग जातक का आधुनिक कला की ओर झुकाव बनायेगा। लक्ष्मी योग और बली एकादश भाव, जातक को व्यापार में शामिल करेंगे। नाभस योग भी व्यवसाय के स्वभाव के विषय में इशारा देते हैं।
5. फलित में उपचय भावों (3, 6, 10 एवं 11 भाव) से विशेष अभिप्राय जुड़ा है। इन भावों में स्थित ग्रह विशेष बल प्राप्त कर लेते हैं। यही कारण है कि इन भावों में स्थित शुभ ग्रह **वासुमती योग** को जन्म देते हैं जो प्रचुर मात्रा में धन-सम्पति देने वाला योग है। जो लोग नौकरी में हैं उन लोगों के लिए षष्टम भाव अतिरिक्त महत्व रखता है क्योंकि यह नवम से दशम है और दशम से नवम भाव है।
6. व्यवसाय के निर्णय और सफलता की सीमा को जानने के लिए ज्योतिष की जैमिनी पद्धति का प्रयोग। यहां उपपद और कारकांश लग्न महत्वपूर्ण होते हैं।
7. राशि कुण्डली के अतिरिक्त नवांश और दशांश वर्ग कुण्डली का प्रयोग करना चाहिए। सभी प्रकार के फलित करने के लिए नवांश का और व्यवसाय के दशांश का अध्ययन करना चाहिए।

आय के स्रोत और व्यवसायः

वराहमिहिर के मतानुसार लग्न, चन्द्रमा और सूर्य में से जो बलिष्ठ हो उससे दशम भाव व्यवसाय को इंगित करेगा। यदि दशम भाव में कोई ग्रह नहीं हो तो यह नियम दशमेश के नवांशेश पर लागू होगा। लग्न, चन्द्रमा और सूर्य में से जो बलिष्ठ हो उससे विभिन्न ग्रहों के दशमेश होने के परिणाम निम्नलिखित हैं:

सूर्यः 1. सोना, 2. आभूषण, 3. औषधियां, 4. मंत्रों के द्वारा प्रारम्भ पवित्र कार्य, 5. ऊन, 6. अनाज, 7. रस।

इसका अर्थ पिता भी है जो पैतृक सम्पति को इंगित करता है। सरकारी नौकरी, राज्य की नौकरी, प्रशासन, प्रबन्धन, अधिकार सम्पन्न नौकरी, चिकित्सक, इत्र, राजनायिक, कानूनी कार्यवाही, माणिक्य, धातु सम्बन्धित कार्य, पेड़, लकड़ी, जंगल,

अग्नि, अग्निशस्त्र। यदि सूर्य उच्च का हों तो धन अपने द्वारा अर्जित लाभ, वित्तीय संस्थानों और शेयर बाजार से आता है।

शुभ ग्रहों से दृष्ट, दशम भाव का बली सूर्य जातक को अपने प्रयासों से सामाजिक, राजनितिक और उच्चतम आर्थिक स्तर तक ले जाता है।* जबकि निर्बली सूर्य जीवन में कई बाधायें और निराशा देता है। सूर्य और शनि का सम्बन्ध शुभ नहीं होता है विशेषकर यदि सूर्य, शनि से 7 अंशों के अन्दर हो तो जीवनवृत्ति में बाधाओं का कारण होता है।

शनि की शुभ दृष्टि जातक को उच्च सरकारी अधिकारी बनाती है। वृश्चिक राशि का सूर्य जातक को एक प्रसिद्ध चिकित्सक बना सकता है।

सूर्य-चन्द्रमाः राजनीति शास्त्र, मनोविज्ञान, पराविज्ञान।

सूर्य-मंगलः राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, सेना, सरकारी नौकर, लोहा-स्टील उद्योग, चीनी मिल, जूट मिल, कृषि।

मंगल के साथ पीड़ित होने पर मालिक के साथ मतभेद लेकिन सुस्थित मंगल, मंत्री, जज आदि उच्च पद सुनिश्चित करता है तथा प्रशासक के रुप में सफल जीवनवृत्ति, प्रशासनिक क्षमता और विशिष्टता को इंगित करता है।

चन्द्रमाः 1. राजसी तत्व से सम्बन्धित वस्तुएं, 2. स्त्रियां, 3. वस्त्र, 4. जलीय वस्तुएं, 5. मनोरंजन/मनोविनोद, 6. पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुएं, मिट्टी, 7. खेती।

अन्य सम्बन्धित व्यवसायः सरकारी नौकरी, उपभोक्ता वस्तुओं की दुकान, चीनी, दवाइयों की दुकान, होटल उद्योग, शेयर बाजार, कानूनी कार्यवाही, वस्त्र, राजसी स्त्री का संरक्षण, स्त्रियां, कमीशन, बीमा, जलीय उत्पादन, मूंगा, मोती, सीपी, समुद्री जहाजों से सम्बन्धित, नौसेना, जल प्रबन्धन, दुग्ध, मदिरा, काफी, अल्पाहार गृह, मछली, लेखन।

द्वादशेश होकर चन्द्रमा का दशम में उच्च का होने का अर्थ है कि निर्यात से आय, राज्य से धन-सम्पति, सम्मान, उच्च वंश की स्त्रियों से लाभ आदि। जातक एक सम्मानित और प्रखर व्यक्ति होता है जो दानशील, दयालु एवं धार्मिक संस्थानों का प्रबन्धक भी हो सकता है।

* *दशम भाव का सूर्य दिशा बल से युक्त होता है, अतः व्यवसाय और व्यवसायिक सफलताओं के लिए अच्छा होता है। यद्यपि नैसर्गिक क्रूर ग्रह होने के कारण यह माता-पिता से वियोग दे सकता है। दशम भाव, पंचम भाव से षष्टम भी है, अतः यहां अशुभ ग्रहों की स्थिति सन्तान के लिए शुभ नहीं होती है।*

चूंकि चन्द्रमा एक स्त्री ग्रह है और स्त्रियों को इंगित करता है, अतः ऐसा जातक स्त्रियों के प्रभाव में हो सकता है अथवा वह अपनी माता से धन-सम्पति प्राप्त कर सकता है।

चन्द्रमा-सूर्यः राजनीतिज्ञ, नेता, कुलीन, उच्च राजनैतिक पद, नाटककार, नाटक लेखक, समाचार पत्रों का लेखक, समाज सेवक। यदि अशुभ दृष्ट, विशेषतः मंगल से दृष्ट हो तो जातक डकैत भी हो सकता है।

चन्द्रमा-बुधः धार्मिक अथवा काल्पनाशील, अति बुद्धिमान, लेखन, चिकित्सा या व्यापार के लेखों का संपादक, विज्ञापन और परिधान बनाने वाला।

चन्द्रमा-मंगलः जातक में युद्ध की प्रवृति विकसित होती है। युद्ध इतिहासकार, युद्ध-पत्रकार, लेखक, इंजीनियरिंग, औषधी-रसायनशास्त्र, रसायन, साबुन, सब्जियां, तेल, प्लास्टिक।

चन्द्रमा-बृहस्पतिः सम्मानित नौकरी, अनेक व्यवसायियों का संघ, उत्तरदायित्व, धार्मिक प्रमुख, पुजारी, इतिहास-लेखक, राजनीति, पुस्तक विक्रेता, विज्ञापनों से सम्बन्धित।

चन्द्रमा-शुक्रः संगीतकार, संगीत, लेखक, कविता, नाटककार और अभिनेता। यदि चन्द्रमा और शुक्र, अशुभ ग्रहों जैसे शनि, राहु या मंगल के साथ हो तो अवैध शराब, दुष्ट कर्म, वेश्यालय, रात्रिक्लब और गन्दा प्रदर्शन।

चन्द्रमा-शनिः आध्यात्मिकता के लिए अच्छा सम्बन्ध, एक मठाधीश, रोगमुक्त करने वाला, तांत्रिक, रहस्यमय, भविष्यवक्ता। विद्यालय का शिक्षक, लेखक, पाठक, धातुशोधन पर लिखने वाला, खनन, गणित, गुप्त और आध्यात्मिक विज्ञान एवं मनोविज्ञान। दुःख, चिन्तायें, सन्ताप, इच्छाशक्ति की कमी, अन्धविश्वासी। कारखानों का प्रमुख, श्रमिक नेता और खनिक इंजीनियर।

मंगलः 1. युद्ध, लड़ाई, 2. आग, 3. झगड़ों का बढ़ाना, 4. धातु, जड़, 5. ठेकेदारी का कार्य, 6. जुआ, 7. वाद-विवाद सम्बन्धित कार्य, 8. चोरी से सम्बन्धित।

सेना, पुलिस, अग्निशमन, उत्तेजक विषय और शत्रुओं से आय। आधुनिक शिल्प कला विज्ञान में मंगल आग है, अतः निर्माण, इंजीनियर, शिल्पी, यंत्रकार, दन्त चिकित्सक और शल्य चिकित्सक। मंगल उच्च पद, शासन से प्रभुत्व एवं

धन-सम्पति, कृषि, सम्बन्धी एवं मित्र, बार-बार खुशियां मनाना, मुक्तहस्त, आनन्द प्रिय, क्रूर, समृद्ध और लोक-हितेषी।

साहसिक एवं शारीरिक क्षमता, रसोईघर, इंजन चलाना, असावधानीपूर्ण कार्य और कल्पनाशील। रसायन, दवाई, रसायनविज्ञान। मंगल तर्क और विज्ञान का कारक है इसलिए जातक इन विषयों में प्रखर हो सकता है। मंगल भूमि का कारक भी है इसलिए भूमि और कृषि से आय हो सकती है।

व्यापार में तीक्ष्णता और विक्रय के कार्य से लाभ। पर्वतारोहण, पहाड़ों पर चढ़ना, आकाश में कूदना, खोजने का कार्य करना। यदि बुध से शुभ दृष्ट हो तो इंजीनियर, शिल्पी, सशस्त्र सेना, दन्त चिकित्सक और शल्य चिकित्सक।

ऐसे सभी कार्य, जिनमें चीजों को काटना या फाडना शामिल होता है जैसे कृषि, कसाई, शिकार तथा खेल आदि। इसके लिए मंगल का 6, 7 या 10 से सम्बन्ध देखें।

यदि बुध से पीड़ित हो तो राजगीर, श्रमिक, लोहार, कसाई, शौचालय या स्नानघर या धुलाईखाने में सहायक।

बृहस्पति से शुभ दृष्ट हो तो साहसपूर्ण कार्य करने वाला, पराक्रमी और प्रेरित करने वाला। यदि पीड़ित हो तो अविवेकी, अतिअनुराग में नष्टकारी और अपने को धोखा देने वाला।

शनि से अशुभ प्रभावित हो तो व्यापार में हानि, परिश्रम वाली नौकरी, कभी न क्षमा करने वाला और बुरा मानने वाला।

बुधः 1. काव्य, 2. पूजा-पाठ से सम्बन्धित कार्य, 3. शास्त्रीय शिक्षा, 4. वेदान्त अथवा दार्शनिक चिन्तन, 5. शिल्पी, वास्तुकार।

अन्य व्यवसायः हस्तकला, साहित्य, ज्योतिषशास्त्र और अन्तरिक्ष विज्ञान। आधुनिक संदर्भ में बुध पत्रिकारिता को इंगित करता है। मित्रों, लेखन कार्य, गणित, काव्य, आधुनिक कला, चित्रकला, इत्र बनाने, नक्काशी, शिक्षा, शोध, शैक्षिक संस्थान और इनके निर्माण में लगे संस्थाओं से आय होती है।

शिक्षा और काव्य सम्बन्धित कार्य, व्यापार, कहानीकार, पत्रकार, प्राध्यापक, शिक्षक, यात्री, विद्युतकर्मी, मनोविज्ञानी, अविष्कार। यदि अकेला हो तो निर्यातक, थोकविक्रेता या कमीशन लेने वाला, सरकारी अधिकारी, भूमि पैमाइश करने वाला,

प्रबन्धक, भूशास्त्री, वैज्ञानिक, खनन अभियन्ता और ऐसी नौकरी जिसमें दक्षता की आवश्यकता हो।

अनुकूल बुधः जज, मंत्री, राजनायिक, धरोहर रखने वाला और विशिष्टता युक्त स्थिति।

अग्नि तत्व राशि में: गणित, शिक्षक और इंजीनियर।

वायु तत्व राशि में: अच्छी स्मरणशक्ति और व्यापार के लिए धारदार बोलने की शक्ति देता है। सर्वेक्षण विभाग में नौकरी।

जल तत्व राशि में: प्रकाशक, छापने वाला, समाचार पत्र का स्वामी, लेखन सामग्री।

पृथ्वी तत्व राशि में: कमीशन ऐजन्ट, व्यापार, यात्रा प्रतिनिधि।

यदि शत्रु राशि में हो तो मूर्खतापूर्ण क्रिया-कलाप, नीच कार्य, धूर्त।

बुध-सूर्यः राजनीति, राजनायिक, वित्तीय संस्थान, व्यापार। यदि शनि से दृष्ट हो तो जीवनवृत्ति में गिरावट। दलाल, कमीशन ऐजन्ट। यदि मंगल या शनि से पीड़ित हो तो अशान्त, अतिसूक्ष्म, धूर्त, प्रेरक और असत्यवादी। व्यापार में परेशानियां।

बुध-मंगलः ठिठोलिया, व्यापारिक संस्थान।

बुध-शनिः प्रशासक, रसायन विज्ञान, विज्ञान।

बुध-बृहस्पतिः दार्शनिक, लाभदायक क्रिया-कलाप, नेता, कानून, बुद्धिमान एवं चतुर, धार्मिक क्षेत्र।

बुध-शुक्रः दैवीय संगीत। यदि शनि से दृष्ट भी हो तो लोकप्रिय भी। व्यापार, सिलाई, आभूषण, पक्षियों के पंख एवं पशुओं के बाल सम्बन्धित कार्य, चित्रकारी, कला, वस्तुओं को बेचना।

बुध-शनिः उद्योग।

बुध-राहुः मकेनिकल इंजीनियरिंग।

बृहस्पतिः 1. कानूनी कार्य, 2. धार्मिक उपदेश, 3. शास्त्रीय एवं धार्मिक शिक्षा. 4. धार्मिक कार्यशाला, 5. शिक्षण, ब्राह्मण अथवा धार्मिक आध्यात्मिकता वाले व्यक्ति की सेवा में।

अन्य व्यवसायः कानून, बड़े भाई से आय, जज, वित्तीय संस्थान, प्रबन्धन, शिक्षण एवं भलाई और पुस्तकों एवं प्रकाशन के कार्यों से आय। वैज्ञानिक, साधारण लोगों का नेता।

मंगल से पीड़ित हो तो कानूनी अड़चनें, शनि से तो हानियां, बुध से तो सामान्य कार्यालय लिपिक, दुकान आदि।

बृहस्पति और शुक्र, चन्द्रमा की राशि में हो तो सामाजिक विज्ञान, अन्य स्थितियों में व्यापार।

बृहस्पति-शनिः यह युति कानूनी शिक्षा देती है।

शुक्रः सोना, रत्न, आभूषण, होटल, सौन्दर्य प्रसाधन, वाहन, हाथी-घोड़े, स्त्रियां, दूध एवं दूध के उत्पादक जैसे कि दही आदि, काफी, मदिरा, पशु, गाय आदि।

चन्द्रमा की राशि में शुक्रः सिल्क, मंगल से दृष्ट-प्लास्टिक, स्त्रियों, रत्नों, चांदी, धातु से लाभ। सुन्दर वस्तएं, संगीत, कला, नृत्य, इत्र, सिनेमा या टी.वी. में कार्य।

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु या कुंभ में हो तो विज्ञान के विषयों की आधारभूत शिक्षा और गणित एवं ज्योतिष में प्रवीणता।

व्यवसायः सौन्दर्य केन्द्र।

बुध के साथ हो तो संगीत, चित्रकला, मंच के प्रति प्रेम, छपाई, सजावट करने वाला, विश्वसनीय पद पर, श्रृंगार, अत्याधिक यात्रायें।

बुध-शुक्रः दैवीय संगीत। यदि शनि से दृष्ट भी हो तो लोकप्रिय संगीत।

शनिः उद्योग, ईंटा भट्टा, छपाई का कारखाना, ठोस वस्तुएं, तेल शोधन, खदानें, श्रम, लोहा, घृणित कार्य, हस्तकला, लकड़ी का काम, बूचडखाना, विरोधियों को उकसाना, संदेशं पहुंचाना, निम्न स्तर का शिल्प, बोझा उठाना। जातक के लिए उसके नौकर धन लाते हैं। शनि की दशा निम्न स्तर की नौकरी देती है।

दशम भाव में शुभ दृष्टि से रिक्त शनि का अर्थ है निराशाजनक जीवनवृत्ति। बुध के साथ पीड़ित होने के अर्थ है दासता के कार्य, माली, कोयला उठानेवाला।

शनि और मंगल दशम में, चन्द्रमा एवं बृहस्पति से दृष्ट-निर्माण करने वाले उद्योग।

राहु-शुक्रः बहुत सारी प्रेमिकायें। कविताओं और नाटकों में आसक्ति। कम्प्यूटर एवं इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग।

केतुः विदेशी भाषायें, कम्प्यूटर।

दो ग्रहों की युति से व्यवसाय का अनुमान (वराहमिहिर के मतानुसार):

सूर्य-चन्द्रमाः यांत्रिक, राजगीरी-निर्माण या सभी प्रकार की मशीनों के साथ काम करना। अभियन्ता, रसायन शास्त्र जानने वाला और अन्य कार्य करने वाला व्यक्ति। (सूर्य एवं बुध की युति इंजीनियरों के लिए अधिक अच्छी युति है। इसका अर्थ भवन, घर और पत्थर बेचने वाला भी हो सकता है।)

सूर्य-मंगलः दुष्ट कर्म (यह व्यवसाय से अधिक चरित्र के बारे में इंगित करता है।)

सूर्य-बुधः कार्यदक्ष, बुद्धिमान, प्रसिद्ध और प्रसन्न।

सूर्य-बृहस्पतिः क्रूर और दूसरों का कार्य करने वाला। यह सम्बन्ध मन्दिर से सम्बन्धित कार्यों को भी इंगित करता है।

सूर्य-शुक्रः मंच या हथियारों से धन।

सूर्य-शनिः भूमि से प्राप्त होने वाले खनिज अथवा मिट्टी के बर्तन। उच्च राजनैतिक जीवन, कानूनी नौकरी।

सूर्य-राहुः निम्न स्तर के मालिक के साथ कार्य।

चन्द्रमा-मंगलः नकली वस्तुएं, स्त्रियों का विक्रेता, मदिरा, मदिरालय, मदिरा बनाने वाला।

चन्द्रमा-बुधः लोकप्रिय, प्रतिष्ठित, अच्छी भाषा।

चन्द्रमा-बृहस्पतिः धनवान, समाज का प्रमुख।

चन्द्रमा-शुक्रः बुनाई में दक्ष, वस्त्र।

मंगल-बुधः फूल, रेशे, वस्त्र, जडें, हर प्रकार का तेल, नकली वस्तुएं।

मंगल-बृहस्पतिः मुख्य अधिकारी, नेता, मजिस्ट्रेट, शिक्षित, धनवान, विद्या प्राप्त। यह पुलिस की नौकरी की युति भी है।

मंगल-शुक्रः पहलवान, जुआरी, दक्ष, दूसरी स्त्रियों पर आसक्त, गुप्त रोग।

मंगल-शनिः कृपण, बनावटीपन, अपमानित।

बुध-बृहस्पतिः मंच पर अभिनय।

बुध-शुक्रः संगीत, नृत्य, वाकपटु, भूमि संरक्षक, अभियन्ता, छायाचित्रकार, कलाकार।

बुध-शनिः धोखेबाज, आज्ञा न मानने वाला, लेखाकार, किसी भी चीज की नकल बनाने वाला।

बृहस्पति-शुक्रः अच्छी शिक्षा, भार्यावान, धनवान, ललित कला के प्रति प्रेम। यह युति, चमड़े के लिए भी है।

बृहस्पति-शनिः नाई, कुम्हार, रसोइया।

शुक्र-शनिः छोटी आंखें, स्त्रियों पर निर्भर होने से धन, कला की क्षमता, सामान्य स्तर का लेखन या काव्य रचना।

शनि (जब अन्य ग्रहों से सम्बन्धित हो अथवा उनकी राशियों में हो):

सूर्य की राशि में: सरकार, राजनीति, सामाजिक उपक्रम, अधिकार।

चन्द्रमा की राशि में: लेखन, विदेशी सम्बन्ध, तरल और समुद्र से सम्बन्धित वस्तुएं।

मंगल की राशि में: मशीनों के साथ कार्य, हाथ से कार्य और मशीनी शक्ति का प्रयोग।

बुध की राशि में: व्यापार, वाहन, संचार, विश्वविद्यालय, पत्रकारिता, जडी-बूटियां और रोगमुक्त करने वाला।

शुक्र की राशि में: आर्थिक व्यापार।

उदाहरणः जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के अप्रैल-जून, 2000 संस्करण में छपे श्री के.एन. राव के लेख "अबाउट प्रोफेशन" से उद्धृत।

1. लग्न, चन्द्रमा और सूर्य में से जो बलिष्ठ हो उससे देखें कि दशमेश कौन है और उस दशमेश का नवांशेश कौन है।

2. लग्न, चन्द्रमा और सूर्य में से जो बलिष्ठ हो उससे दशमेश के नवांशेश पर इन नियमों को लगायें।

लग्न, चन्द्रमा और सूर्य में से बली का निर्णय करने के लिए सबसे अच्छी विधि यह है कि इनके ***ग्रह बल*** को देखा जाए। कभी-कभी बल का आंकलन भ्रमित भी कर सकता है। ऐसी स्थिति में जैमिनी पद्धति के सिद्धान्तों की सहायता लेनी चाहिए। इसमें आत्मकारक, अमात्यकारक और कारकांश मुख्य बिन्दु होते हैं। इस विधि को विस्तार से अलग समझाया गया है।

उदाहरण संख्या 1: लेखक (दशमेश बुध 08 अंश 09 मिनट)

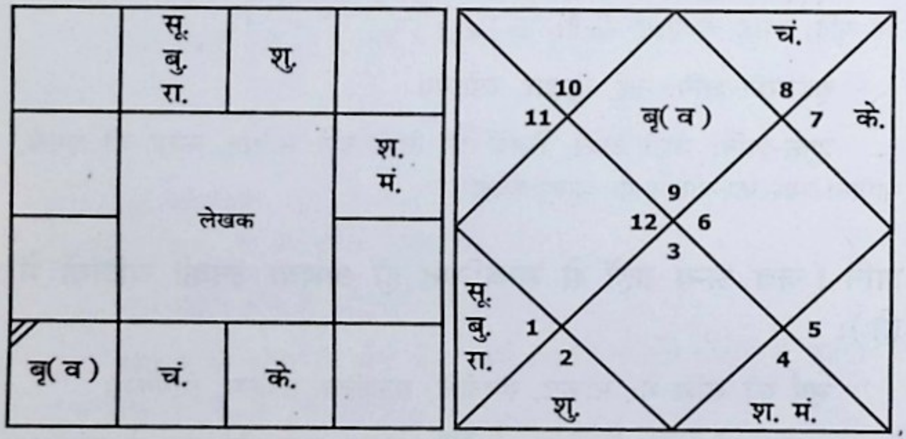

इस कुण्डली में लग्न से दशम भाव में कोई ग्रह नहीं है लेकिन दशम भाव पर द्वितीयेश और तृतीयेश, शनि की दृष्टि है। पंचमेश के साथ युत तृतीयेश, हाथों के प्रयोग अर्थात लेखन को इंगित करता है।

दशमेश बुध, पंचम में उच्च के नवमेश, सूर्य के साथ स्थित होकर उच्च श्रेणी का धर्मकर्माधिपति राजयोग बना रहा है। विद्वता और पांडित्य के ग्रह बृहस्पति की दृष्टि इसको अधिक बली बना रही है।

अब दशमेश बुध के नवांशेश स्वामी का अध्ययन करते हैं। मेष राशि में बुध 8 अंश 9 मिनट का है अर्थात मिथुन नवांश में है और जिसका स्वामी पुनः बुध है। अर्थात बुध स्वनवांश का होकर बल प्राप्त कर रहा है। बुध, पत्रिकारिता का ग्रह भी है। बुध के द्वारा प्रदत्त व्यवसाय बुद्धिमता के व्यवसाय होते हैं न कि निम्न श्रेणी या दासता वाले। इस कुण्डली का जातक एक प्रसिद्ध पत्रकार था जिसने लम्बी आयु प्राप्त की थी।

उदाहरण संख्या 2: व्यापारी (दशमेश बृहस्पति 10 अंश 56 मिनट)

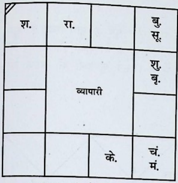

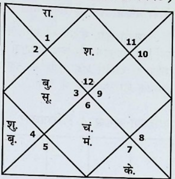

इस कुण्डली में मिथुन राशि में बैठकर सूर्य और बुध, दशम भाव को दृष्ट करते हैं। बुध की अन्य राशि कन्या में स्थित होकर मंगल भी दशम भाव को दृष्ट करता है। शिल्पी एवं वास्तुकला का ग्रह बुध, इस कुण्डली में पुनः अधिक प्रभावशील हो रहा है। दशमेश बृहस्पति, चन्द्रमा की राशि में शुक्र के साथ स्थित है।

इस कुण्डली की जातिका ने समाज शास्त्र में आधुनिक शिक्षा प्राप्त की थी। शुक्र के प्रभाव ने उसको ऐसी वस्तुओं के व्यापार की ओर आकर्षित किया जिन वस्तुओं के प्रति स्त्रियां आकर्षित होती हैं। दशमेश बृहस्पति उच्च का होकर शुक्र के साथ स्थित है और शुक्र के नवांश में भी है। शुक्र स्वर्ण, आभूषण आदि को इंगित करता है। इस मामले में यह सूक्ष्म कढाई किए गए वस्त्र हैं।

उदाहरण संख्या 3: निर्यातक

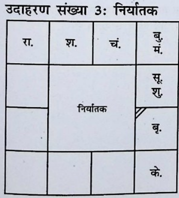

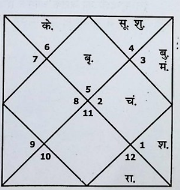

इस कुण्डली के दशम भाव में उच्च का चन्द्रमा है, जो कुण्डली का द्वादशेश भी है। चन्द्रमा वस्त्रों को इंगित करता है।

दशमेश शुक्र, चन्द्रमा की राशि, कर्क में लग्नेश सूर्य के साथ स्थित है। सूर्य ऊन, शुक्र आभूषण और चन्द्रमा कपड़ों को इंगित करता है। शुक्र, सिल्क को भी दर्शाता है। दशमेश शुक्र मंगल के नवांश में है जिसने कुण्डली के जातक को प्लास्टिक का नया काम भी दिया।

उदाहरण संख्या 4 : चित्रकार

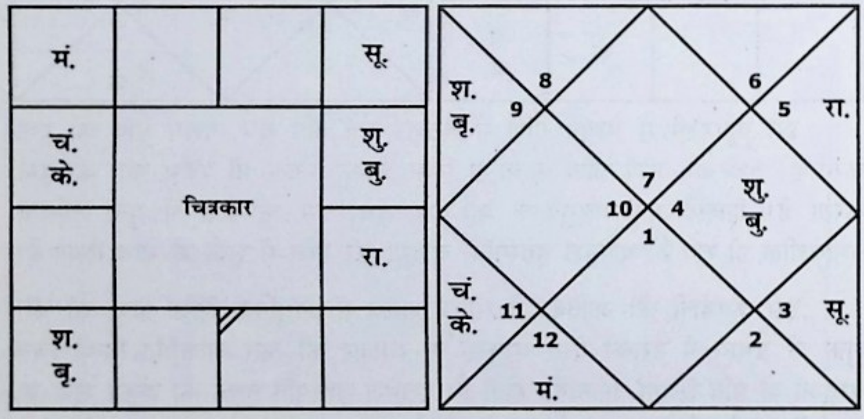

इस कुण्डली के दशम भाव में व्यापार का ग्रह बुध और कला का ग्रह शुक्र स्थित है। दशमेश चन्द्रमा 07 अंश 25 मिनट का है अतः बृहस्पति के नवांश में है।

इस कुण्डली का जातक धार्मिक शिक्षा वाला एक चित्रकार है जो आध्यात्मिक क्रिया-कलापों से सम्बन्धित एक संस्था की नींव रखने में व्यस्त है।

उदाहरण संख्या 5: कानून

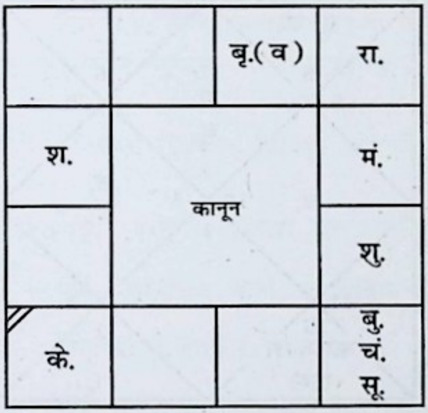

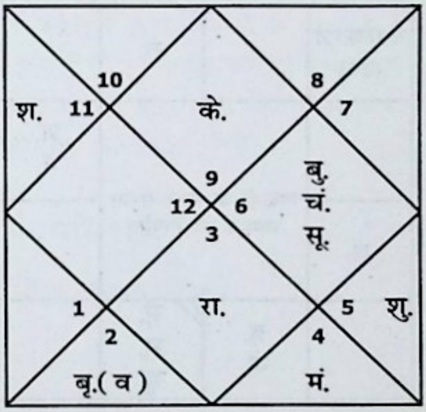

इस कुण्डली के दशम भाव में तीन ग्रह हैं और षष्टम भाव अर्थात लड़ाई-झगड़े के भाव में स्थित बृहस्पति की दृष्टि है। बृहस्पति कानून को इंगित करता है जो हमारे समय की आधुनिक विद्या है और बुध भी बुद्धिमता की जीवनवृत्ति को इंगित करता है।

दशमेश बुध 10 अंश 47 मिनट का होकर मंगल के नवांश में है जो पुनः लड़ाई-झगड़े और तर्क-वितर्क को इंगित करता है। दशमेश बुध, नवमेश सूर्य के साथ है जो उच्च पदवी की संभावनायें देता है। कानून, झगड़ा, तर्क और षष्टम भाव कानूनी व्यवसाय में प्रारम्भ से ही सफलता दिखाता है।

महत्वपूर्ण टिप्पणी:

1. नवांश के साथ-साथ अन्य वर्ग कुण्डलियों विशेषकर दशांश को भी बनाना चाहिए।
2. समय-समय पर चलने वाली महादशा पर सदैव ध्यान केन्द्रित करें।
3. लग्न अथवा चन्द्रमा से से बली दशमेश के अतिरिक्त सूर्य से दशमेश को भी देखना चाहिए क्योंकि कई जातक एक से अधिक कार्य भी करते हैं।
4. सही निर्णय लेने के लिए सदैव जैमिनी पद्धति का प्रयोग करें।

उदाहरण: आत्मकारक - शनि, कारकांश लग्न - मीन

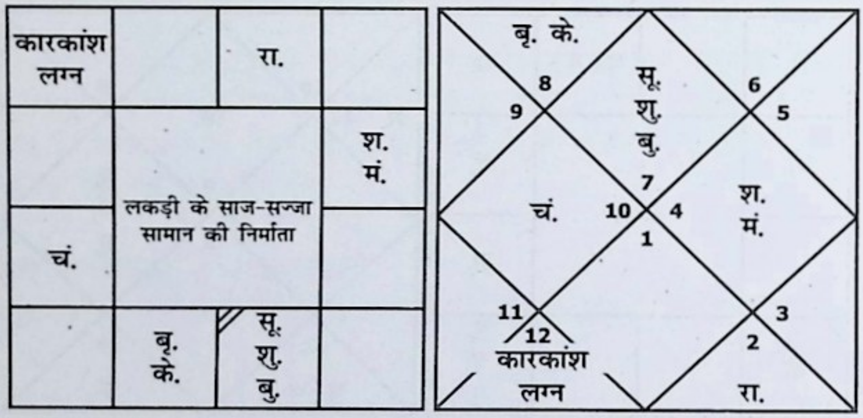

1. कुण्डली के दशम भाव में शनि और मंगल हैं जो चन्द्रमा और बृहस्पति से दृष्ट होकर कुछ निर्माण का कार्य दिखा रहे हैं। बृहस्पति, द्वितीय भाव में होकर अच्छा धन दिखा रहा है।

2. सूर्य से भी यही परिणाम हैं।

3. चन्द्रमा से दशम भाव में तीन ग्रह हैं और यह बली हो रहा है। एकादश भाव में बृहस्पति की स्थिति अच्छे लाभ की संभावनायें दिखा रही हैं।

4. नवांश कुण्डली में चन्द्रमा कुंभ राशि में है। शुक्र उच्च का अर्थात मीन राशि में होकर बल प्राप्त कर रहा है। शुक्र, शनि के साथ स्थित है और धनु राशि में स्थित मंगल से दृष्ट होकर निर्माण कार्य की संभावनाओं में वृद्धि कर रहा है।

5. आत्मकारक शनि है जिससे एकादश भाव में पांच ग्रहों की दृष्टि (जैमिनी पद्धति से) है।

6. कारकांश लग्न मीन राशि में है जहां से दशमेश बृहस्पति, मंगल-शनि एवं चन्द्रमा के दृष्टि प्रभाव में है।

इस कुण्डली की जातिका कई चीजों के निर्माण में लिप्त है और उनमें लकड़ी का साज-सज्जा का सामान, फर्नीचर भी एक है। बृहस्पति इसको इंगित करता है।

ज्योतिषशास्त्र की जैमिनी पद्धति से व्यवसाय का निर्णयः

कारकांश लग्नः नवांश कुण्डली में आत्मकारक जिस राशि में स्थित होता है, वह राशि लग्न कुण्डली में कारंकाश लग्न कहलाती है। इस राशि को लग्न कुण्डली के साथ-साथ नवांश कुण्डली में भी देखना चाहिए। कारकांश लग्न और इससे अन्य महत्वपूर्ण भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम इस प्रकार से हैं:

कारकांश लग्न में स्थित ग्रह/युति के परिणामः

सूर्यः सामाजिक कार्य, राजनीतिक क्रिया-कलाप, दार्शनिक।

चन्द्रमाः संगीतकार।

सूर्य-शुक्रः राजसी अथवा राजनीतिक श्रेष्ठ पुरुष।

चन्द्रमा-शुक्रः शिक्षा के द्वारा धन अर्जन -विद्या से आजीविका।

मंगलः मंगल, आत्मकारक के नवांश में हो तो धातुशोधन, हथियार, अग्नि, रसायनशास्त्र का ज्ञाता, हथियार युक्त रक्षक, इंजन चलानेवाला, रसोइया और आग बुझाने वाला व्यवसास देता है।

बुधः व्यापारी, बुनकर, वस्त्र निर्माता, सामाजिक एवं राजनीतिक विषय।

बृहस्पतिः दार्शनिक, धार्मिक प्रमुख और शास्त्रीय ग्रन्थों जैसे कि वेदान्त का ज्ञान।

शुक्रः यदि आत्मकारक के साथ हो तो बड़ा राजनीतिज्ञ।

शनिः यदि आत्मकारक के साथ हो तो जातक पारिवारिक व्यवसाय में प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

राहुः चोर, डकैत, चिकित्सक, हानिकारक या विषाक्त रसायन।

कारकांश लग्न से दशम भाव में:

सूर्यः यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो पशुओं की बिक्री।

राहुः चिकित्सक।

कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव में:

केतुः घडियां, समय दर्शाने वाले यंत्र।

राहुः चतुर यंत्रकार, अभियन्ता।

कारकांश लग्न से पंचम भाव में:

चन्द्रमा या बृहस्पतिः कई पुस्तकों अथवा ग्रन्थों का लेखक।

शुक्रः कवि।

चन्द्रमाः संगीतकार।

सूर्यः दार्शनिक।

केतुः गणितज्ञ।

उच्च पदों के लिए उत्तरदायी घटक:

1. लग्न/लग्नेश बली होने चाहिए।
2. कुण्डली में शक्तिशाली राजयोग होने चाहिए। केन्द्रों के स्वामियों और त्रिकोण के स्वामियों के मध्य राशि परिवर्तन या युति, शक्तिशाली राजयोग बनाती है। नवमेश एवं दशमेश, चतुर्थेश एवं पंचमेश, चतुर्थेश एवं नवमेश, पंचमेश एवं दशमेश, लग्नेश एवं नवमेश या दशमेश, दशमेश एवं षष्टेश, दशम भाव में षष्टेश, षष्टेश षष्टम में, नवमेश नवम या दशम में, ये सम्बन्ध अच्छे होते हैं।
3. षष्टम भाव/षष्टेश महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि यह नवम से दशम है और दशम भाव से नवम है। सामान्यतः पदोन्नति, दशमेश एवं नवमेश की दशा में होती है लेकिन कभी-कभी षष्टेश की भुक्ति दशा में भी होती है। दशमेश चाहे अष्टम भाव में ही क्यों न स्थित हो, सदैव जीवनवृत्ति को आगे बढ़ाता है।
4. चाहे योग कारक ग्रह दुष्ट भावों में ही स्थित हो लेकिन शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो इसकी दशा/अन्तर्दशा।
5. जब षष्टम भाव का नवम एवं दशम भाव से सम्बन्ध होता है तो षष्टेश/षष्टम भाव से युति, स्थिति या दृष्टि द्वारा सम्बन्ध बनाने वाले ग्रह।

6. शुभ ग्रहों से दृष्ट, तृतीय और एकादश भाव में स्थित अशुभ ग्रहों की दशा/अन्तर्दशा में पदोन्नति होती है।

7. बुध, दशम भाव का कारक है। यदि षष्टम या दशम से सम्बन्धित होता है तो पदोन्नति का कारण बनता है।

पदोन्नति का समय निर्धारण अथवा नौकरी में नियुक्तिः

श्री के. एन. राव के द्वारा पढ़ाये गए निम्नलिखित महत्वपूर्ण सिद्वान्त उनकी पुस्तक **"अप्स एण्ड डाउन इन कैरियर"** से उद्धृत हैं।

1. किसी भी कुण्डली में सर्वप्रथम योगों का अध्ययन करें। पदोन्नति अथवा स्तर के बढ़ोतरी के संदर्भ में निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले यह देखें कि कुण्डली में कितने राजयोग हैं। श्री के. एन. राव के मतानुसार लगभग 25 प्रकार के राजयोग हैं। उनमें से जितने अधिक राजयोग कुण्डली में होंगे, उन्नति के उतने ही अवसर अच्छे होंगे। यदि अधिकतम राजयोग हों तो जातक कल्पना न की जा सकने वाले उन्नति के शिखर पर पहुंचता है।

2. यदि इनमें से कुछ योग विद्यमान हो तो यह योग जातक के तेज में बढ़ोतरी करने और जीवन स्तर को उपर उठाने में समर्थ होते हैं।

दोहरा गोचरः

यदि कुण्डली में राजयोग हों और अनुकूल दशा/अन्तर्दशा भी चल रही हो तो गोचर के दोहरे प्रभाव का आंकलन करना चाहिए। यह दोहरा गोचर, शनि और बृहस्पति का निम्नलिखित अनुकूल गोचर है।

अ. **बृहस्पतिः** गोचर में बृहस्पति को चन्द्रमा या लग्न से दशम भाव को दृष्ट करना चाहिए। लग्न या चन्द्रमा से त्रिकोण में बृहस्पति का गोचर भी अनुकूल स्थिति है लेकिन लग्न या चन्द्रमा से दशम भाव पर बृहस्पति के गोचर अथवा दृष्टि को अधिक महत्व देना चाहिए।

ब. **शनिः** जिस समय कुछ विशेष होने का विश्लेषण करना हो उस समय शनि को दशमेश को दृष्ट करना चाहिए। इसको घटना की पूर्णता के लिए एक आवश्यक घटक के रुप में लेना चाहिए।

उदाहरणः (श्री के. एन. राव की पुस्तक "अप्स एण्ड डाउन इन कैरियर" से उद्धृत)

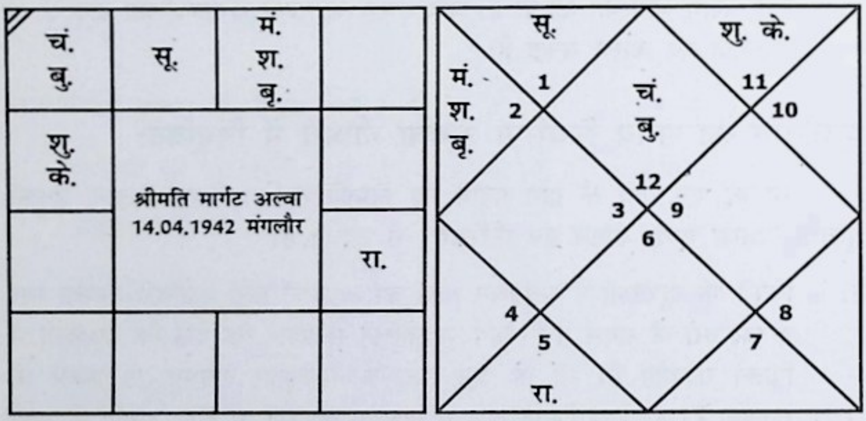

लग्न 05:34 सूर्य 00:21 चन्द्रमा 11:33 मंगल 10:29

बुध 23:22 बृहस्पति 25:01 शुक्र 14:02 शनि 03:54

राहु 18:20

दशाः अगस्त 1982 से 1985 तक शुक्र-बृहस्पति।

श्रीमति मार्गेट अल्वा राज्यसभा की अध्यक्ष थीं और जैसा श्री के. एन. राव ने भविष्यवाणी की थी, 31 दिसम्बर 1984 को संसदीय कार्य मंत्री बनी।

फलित का आधारः

1. **योगः** इस कुण्डली में निम्नलिखित राजयोग हैं:

   अ. चन्द्रमा और तुध की लग्न में युति। बुध चतुर्थेश और सप्तमेश है तथा चन्द्रमा पंचमेश है।

   आ. अष्टमेश शुक्र, द्वादश भाव में स्थित होकर विपरीत राजयोग बना रहा है।

   इ. नवमेश मंगल, लग्नेश एवं दशमेश बृहस्पति से युति करके तृतीय भाव में स्थित होकर धर्मकर्माधिपति योग बना रहा है जो एकादशेश शनि की युति से अधिक दृढ़ हो रहा है।

   ई. शनि और शुक्र में राशि परिवर्तन है।

2. **दशाः** इन योगों के परिणाम देने के समय उनकी शुक्र (द्वितीयेश एवं द्वादशेश) की महादशा में बृहस्पति (लग्नेश एवं दशमेश) की अन्तर्दशा चल रही थी। और बृहस्पति, मंगल के साथ योग बना रहा था। यह वही समय था जब वह मंत्री बनीं।

गोचरः 31.12.1984 के गोचर की, नीचे दी गई कुण्डली का अवलोकन करें।

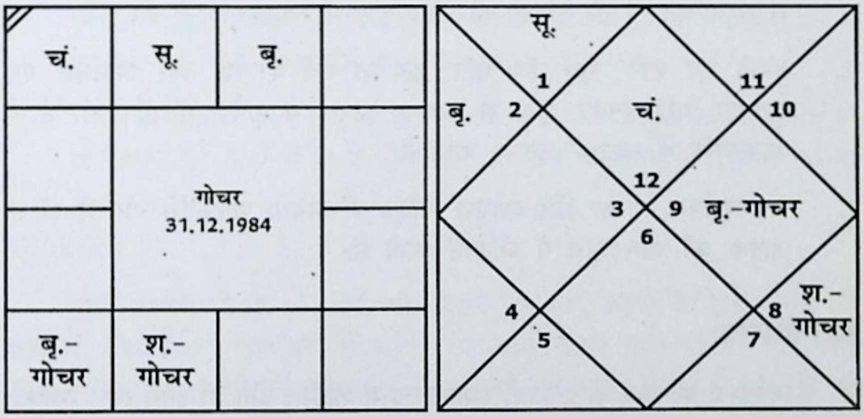

पदोन्नति के समय गोचर में बृहस्पति लग्न एवं चन्द्रमा से दशम भाव में गोचर कर रहा था। शनि वृश्चिक राशि में गोचर करता हुआ दशमेश बृहस्पति को दृष्ट कर रहा था।

सत्ता की प्राप्ति और हानिः

वराहमिहिर के अनुसार, *"कोई भी जातक उस बली ग्रह की अन्तर्दशा में सत्ता प्राप्त करता है जो दशम अथवा लग्न से सम्बन्धित होता है। वह उस ग्रह की अन्तर्दशा में सत्ताच्युत होता है जो ग्रह, शत्रु की राशि में हो अथवा नीच राशि में हो क्योंकि ऐसे ग्रह की दशा छिद्र दशा कहलाती है। ऐसे समय जातक को शक्तिशाली राजा या व्यक्ति का संरक्षण लेना चाहिए।"*

लग्न और दशम में से ऐसा ग्रह चुनिये जो अधिक बली हो और उसकी अन्तर्दशा में सत्ता के प्राप्त होने का फलकथन कहें। यदि इन दोनों भावों में कोई ग्रह न हो तो देखिये कि इनके स्वामियों में से कौन अधिक बली है और उसकी अन्तर्दशा को सत्ता प्राप्ति का श्रेय दें। ऐसे सत्ता के पद अथवा राजसी शक्ति की तब हानि होगी जब उस ग्रह की अन्तर्दशा आयेगी जो नीच अथवा शत्रु राशि में हो। ऐसे ग्रह की दशा

छिद्र दशा कहलाती है जिसक अभिप्राय होता है दुर्भाग्य अथवा पदच्युति और जातक सत्ता या शक्ति सम्पन्न पद को खो कर शक्तिहीन हो जाता है।

जीवनवृत्ति में रुकावटें:

1. यदि कालसर्प या केमद्रुम योग दशम, नवम या षष्टम अथवा इनके स्वामियों से सम्बन्धित हो तो जातक की जीवनवृत्ति में रुकावटें आती हैं।
2. मंगल एवं शनि, सूर्य एवं शनि, द्वादशेश एवं दशमेश और अष्टमेश एवं दशमेश, यदि इनकी युति हो अथवा आपस में राशि परिवर्तन हो तो ये जीवनवृत्ति में रुकावटें उत्पन्न करते हैं।
3. जब षष्टेश, नवमेश और दशमेश पीड़ित हों अथवा पापकर्तरी योग में हों तो जातक की जीवनवृत्ति में रुकावटें आती हैं।

स्थानांतरण:

कुण्डली के चारों केन्द्र भाव, स्थानांतरण में शामिल होते हैं। इनमें लग्न व्यक्ति, चतुर्थ भाव उसका घर, सप्तम यात्रा और दशम कार्यक्षेत्र का भाव हैं। दशम भाव का पीड़ित होना स्थानांतरण को इंगित करता है। इसके लिए चतुर्थमांश कुण्डली की भी विवेचना आवश्यक रुप से करनी चाहिए।

यदि दशमेश और तृतीयेश एक-दूसरे से सम्बन्धित हों तो दशमेश की अपेक्षा तृतीयेश की दशा में अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं -भावार्थ रत्नाकर। श्री नरसिम्हां राव की कुण्डली का अवलोकन करें।

यदि दशम भाव अपवित्र हो तो जातक मान-सम्मान और स्वाभिमान से रिक्त होगा -जातकपारिजात।

पराशर के अनुसार, दशमेश की दशा में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होते देखे जा सकते हैं:

1. यदि दशमेश उच्च का होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो और बृहस्पति से युति करे तो जातक श्रेष्ठ कार्य करता है। यदि दशमेश बलहीन हो तो जातक अत्याधिक रुकावटों का सामना करेगा।

2. यदि दशमेश शुभ ग्रहों की युति में हो तो जातक अपने कार्यों में शासन का संरक्षण प्राप्त करेगा, लेकिन यदि विपरीति स्थिति होगी तो विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे।

अशुभ सम्बन्धः

1. **निर्बली दशमेशः** यदि दशमेश, राहु के साथ अष्टम में हो तो जातक दूसरों से घृणा करेगा, मूर्ख होगा और दुष्ट कार्य करेगा -पराशर।
2. **दशम में अशुभ ग्रहः** यदि दशम और एकादश भाव अशुभ ग्रहों से गृहीत हों तो जातक बुरे कर्मों में लिप्त होगा और अपने ही व्यक्तियों को दूषित करेगा।

दशाचक्रः

दशा प्रणाली जातक के कर्मों को खोलने का कार्य करती है। हमारे साथ जो कुछ भी होता है वो कुछ नहीं है अपितु दशा द्वारा वर्णित फल ही है। यदि कोई जातक जीवन की प्रारंभिक अवस्था में अच्छे ग्रहों की दशा, जैसे कि शुभ ग्रह या लग्नेश या नवमेश की दशा प्राप्त करता है तो उस जातक को जीवन के शुरुआत में ही अतिरिक्त लाभ प्राप्त हो जाता है। ऐसे जातक द्वारा अच्छी शिक्षा प्राप्त करना सुनिश्चित होता है। षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश की दशा शिक्षा में बाधा उत्पन्न करेगी।

व्यवसाय से सम्बन्धित शिक्षा के लिए पंचम भाव, पंचमेश, कारक और दशा चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। यह व्यवसाय के निर्णय में बहुत अच्छा परिणाम देगें। यदि महादशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर दशा के स्वामी पंचम भाव से सम्बन्धित हैं तो अच्छी शिक्षा का होना सुनिश्चित है। मंगल, शनि, राहु और केतु किसी कार्य विशेष की दक्षता (Technical) शिक्षा देने वाले ग्रह हैं।

प्रसिद्धि देने वाले योगः

बली दशमेश और दशम भाव में शुभ ग्रह। किसी भी जातक की सफलता एवं नैतिक आचरण के साथ-साथ, उच्च पद एवं श्रेष्ठता देने में दशम भाव में स्थित ग्रहों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

पराशर के मतानुसार यदि एकादशेश, दशम भाव में हो और दशमेश बली हो तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

पराशर के मतानुसार दशमेश का नवम भाव में, लग्नेश का दशम भाव में और चन्द्रमा का पंचम भाव में होना, प्रसिद्धि के एक अन्य योग है।

फलदीपिका के मतानुसार यदि एक शुभ ग्रह दशम भाव में हो अथवा यदि दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में स्वराशि या उच्च राशि हो अथवा यदि लग्नेश दशम भाव में स्थित हो तो जातक एक प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। वह प्रशंसनीय कार्यों में भी लिप्त होता है। वह एक राजा के समान भाग्यशाली होता है और दीर्घायु होता है।

प्रशंसनीय कार्य करने के योग:

1. यदि दशमेश के साथ-साथ चार ग्रह दशम भाव में स्थित हो तो ***"सन्यास योग"*** का बनता है।
2. दशम भाव में कई शुभ ग्रह हों। बृहस्पति और बुध दशम भाव में हों तो जातक प्रशंसनीय कार्य करता है।
3. चन्द्रमा दशम भाव में हो और दशमेश बली हो तो जातक पवित्र गंगा में बार-बार स्नान करता है।
4. यदि दशम भाव में राहु या सूर्य स्थित हों तो जातक गंगा में बार-बार स्नान करता है।
5. यदि दशम भाव में मीन राशि हो और उसमें बुध एवं मंगल बैठे हों तो जातक अन्तिम मुक्ति अर्थात मोक्ष प्राप्त करता है।

उच्च सामाजिक स्थिति:

1. यदि लग्न, चन्द्रमा और सूर्य से दशमेश आपस में सम्बन्धित हों।
2. दशम भाव में सूर्य उच्च अथवा स्वराशि में हो।
3. द्वितीय, दशम और एकादश में शुभ ग्रह हों - आर्थिक रुप से समृद्ध।
4. कुण्डली में राजयोग और उनकी दशा। विशेषकर केन्द्र एवं त्रिकोण के स्वामियों की युति, महाभाग्य योग, राशि परिवर्तन योग, नीचभंग राजयोग और विपरीत राजयोग।

5. जैमिनी पद्धति के अनुसार कारकांश लग्न से दशम भाव में शनि अथवा बुध हो।

इसके साथ-साथ कुण्डली के द्वितीय, नवम और एकादश भावों का भी अध्ययन करना चाहिए क्योंकि ये भाव क्रमशः धन, भाग्य और लाभ को इंगित करते हैं। बृहस्पति का द्वितीय या एकादश भाव में होना धन के लिए शुभ होता है।

अपराध के कारक ग्रह राहु, मंगल, शनि और केतु हैं। चन्द्रमा और बुध को इनसे पीड़ित नहीं होना चाहिए। राहु-शनि, राहु-चन्द्रमा और राहु-बुध का सम्बन्ध अपराध प्रवृति को बढ़ाता है। दशम भाव में राहु, शनि, मंगल जातक को अपराधी, असामाजिक, जेबकतरा, बलात्कारी, खूनी, डकैत आदि भी बनाते हैं।

अब विभिन्न व्यवसाय के लिए योगों का अध्ययन करते हैं और उदाहरण कुण्डलियों से उन्हें समझने का प्रयास करते हैं।

चिकित्सकः

औषधियों और लोगों को बिमारियों से मुक्ति दिलाने के व्यवसाय को उत्तम व्यवसाय माना जाता है। पुराणों के अनुसार मानवता के उद्धार के लिए देवताओं के वैद्य धनवन्तरी, हाथ में अमृत का कलश लेकर समुद्र मंथन से प्रकट हुए थे। चरक और सुश्रुत दो अन्य नाम हैं जो उपचार करने वाली औषधियों के क्षेत्र में काया और बीजकरण द्वारा रोग निदान के लिए प्रसिद्ध हैं।

मानवता के नाम पर समाज सेवा करने पर बल देने वाला यह व्यवसाय आज के युग में धन अर्जित करने का व्यवसाय बन गया है। रोग की जड़ को पकड़ने और उसको जड़ से मिटाने के स्थान पर आज मंहगे प्रयोगशाला परीक्षण और विषय में अतिविशेषज्ञ बनने पर अधिक बल दिया जाता है। आज का युवा एवं बुद्धिमान वर्ग धन अर्जित करने के उद्देश्य की पूर्ति और उच्च सामाजिक स्थिति बनाने के लिए इस व्यवसाय की ओर आकर्षित होता है न कि मानवता की सेवा के लिए। इस व्यवसाय में आया यह परिवर्तन, ग्रहों के प्रभाव में परिवर्तन से ही ज्ञात हो सकता है, अर्थात यद्यपि शास्त्रीय ग्रन्थों में निर्देशित आधारभूत योग वही रहेंगें लेकिन शास्त्रीय ग्रन्थों में कहे गये मानसिक रुझान में परिवर्तन आ सकता है, जैसे कि बृहस्पति की आधारभूत भूमिका के स्थान पर, आक्रमक ग्रह मंगल, शनि और राहु की मुख्य भूमिक आ सकती है।

चिकित्सक अथवा वह व्यक्ति जो रोग से मुक्ति दिलाता है वह आज के युग में कई प्रकार के क्षेत्रों से सम्बन्धित हो सकता है। यहां होमोपैथ, आयुर्वेद, एलोपैथ, प्राकृतिक चिकित्सा आदि कई क्षेत्र हैं। इसी प्रकार चिकित्सा के व्यवसाय में कई शाखायें हैं जैसे कि हृदय रोग विशेषज्ञ, त्वचा रोग विशेषज्ञ, दन्त चिकित्सा, स्त्री रोग विशेषज्ञ, बच्चा विशेषज्ञ आदि।

श्री के. एन. राव ने अपने लेखों ***"डाक्टर्स ड्रग्ड मून"*** की श्रृंखला में चिकित्सक के लिए आवश्यक कई योगों को दिया है, जिन्हें संक्षेप में नीचे दिया गया है।

1. चिकित्सा के व्यवसाय के निर्णय करने के लिए बृहस्पति और चन्द्रमा की मुख्य भूमिका होती है। बृहस्पति आरोग्यता के लिए और चन्द्रमा औषधियों एवं द्रव्य के लिए देखे जाते हैं। बृहस्पति सामान्यतः 1, 5 और 10वें भाव अथवा इनके भावेशों से किसी न किसी प्रकार से सम्बन्धित होता है।
2. मंगल का पंचम और दशम भाव/भावेश से सम्बन्ध होता है।
3. 3, 6 एवं 8वें भाव का पंचम एवं दशम भाव अथवा भावेशों से सम्बन्ध होता है।

चन्द्रमा की भूमिका:

1. सामान्यतः हड्डी रोग विशेषज्ञ और रेडियोलोजिस्ट को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के चिकित्सकों की कुण्डली में चन्द्रमा पीड़ित होता है।
2. चन्द्रमा से दशम भाव/दशमेश पीड़ित होता है।
3. चन्द्रमा से अष्टम भाव/अष्टमेश पर दुष्प्रभाव होता है।
4. चन्द्रमा, अशुभ ग्रह के नक्षत्र अथवा अशुभ ग्रह से पीड़ित होता है।
5. चन्द्रमा का सप्तम भाव/सप्तमेश से सम्बन्ध होता है।
6. चन्द्रेश भी अशुभ प्रभाव में होता है।
7. चन्द्रमा का नक्षत्रेश, षष्टम या अष्टम भाव में और पीड़ित होता है।
8. कर्क राशि, चिकित्सकों के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

चिकित्सक होने के लिए अन्य योग इस प्रकार से हैं:

1. चन्द्रमा अथवा नवांश में षष्टेश का सम्बन्ध दशमेश से होता है।
2. अधिकतर चिकित्सकों की कुण्डलियों में षष्टेश और नवमेश सम्बन्धित होते हैं।
3. लग्न, नवांश या दशमांश कुण्डली में शनि-मंगल एक साथ अथवा एक-दूसरे से केन्द्रों में स्थित होते हैं।
4. चन्द्रमा, लग्न अथवा दशमेश, अश्विनी या शतभिषज नक्षत्र में। वैदिक काल से ही शतभिषज नक्षत्र को अमृत से जोड़ कर देखा जाता है। इसके स्वामी वरुण के पास जड़ी-बूटियों के ज्ञान से जीवन बचाने की शक्ति है। धर्म शास्त्र के अनुसार चव्यन ऋषि को पुनः युवा करने वाले अश्विनी कुमार ही थे।
5. मंगल, सिंह राशि में।
6. बृहस्पति की व्यवसाय के कारक शनि से युति सामाजिक स्थिति और समृद्धि के लिए अच्छी होती है। यद्यपि मंगल की राशि में स्थित शनि का अभिप्राय कारखानें, औजारों का प्रयोग आदि होता है लेकिन इसका अभिप्राय शल्यचिकित्सा भी होता है। चिकित्सा की जीवनवृत्ति के लिए शनि की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।
7. दशम भाव में सूर्य, मंगल, शनि और राहु - नाड़ी सिद्धान्त।
8. दशम में चन्द्रमा और शुक्र, शुभ ग्रहों से दृष्ट।
9. शुभ ग्रह के कारकांश लग्न में सूर्य और राहु - पराशर।
10. दशम में अथवा एक-दूसरे से केन्द्र में शनि और मंगल। नवांश और दशांश भी देखें।
11. चन्द्रमा से दशम में शुक्र और शनि - औषधी। मंगल और बुध भी यही परिणाम देते हैं।
12. कन्या, वृश्चिक और मीन राशियां प्रभावशाली होती हैं।
13. कारकांश लग्न से दशम भाव में सूर्य और बुध।
14. दशमेश, सूर्य एवं बुध के साथ।
15. सूर्य, चन्द्रमा और लग्न से दशमेश, मंगल के नवांश में। वराहमिहिर के मतानुसार दशमेश, सूर्य के नवांश में।

16. सूर्य-राहु, मंगल-राहु, चन्द्रमा-राहु का योग।

सम्बन्धित भावः

लग्न शरीर को, षष्टम भाव रोग को, अष्टम भाव आयु, बार-बार होने वाले गंभीर रोग एवं दुर्घटनाओं को, दशम व्यवसाय को और द्वादश भाव अस्पताल को इंगित करता है।

चतुर्थ एवं पंचम भाव की भूमिका शिक्षा के स्वरुप एवं उच्च बुद्धिमता के लिए और नवम भाव सफलता एवं भाग्यवान होने के लिए देखे जात हैं। जातक देशमार्ग ने नवम भाव को जबकि उत्तर कालामृत ने दशम भाव, औषधियों को दिया है।

ग्रहः

1. सूर्य, जीवन देने और बचाने वाला होने के कारण अतिमहत्वपूर्ण ग्रह है। कालपुरुष की कुण्डली में यह पंचम भाव का स्वामी होता है जिसका सफलता और प्राप्तियों के लिए कुण्डली में बली होना आवश्यक होता है। राशि अथवा नवांश में दशमेश का सूर्य से कुछ न कुछ सम्बन्ध अवश्य होता है।
2. कालपुरुष की कुण्डली में लग्नेश और अष्टमेश होने के कारण मंगल रक्षक और आयु भाव का स्वामी होता है।
3. शनि, आयुष्य कारक और मृत्यु कारक के रुप में।
4. बृहस्पति, जीवन बचाने और देने वाले के रुप में।
5. बुध, शिक्षा और बुद्धिमता के कारक के रुप में।
6. चन्द्रमा, मन के कारक के रुप में।
7. राहु, सर्प के रुप में अथवा औषधी के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण होता है।

सूर्य, बृहस्पति और शनि अधिक प्रभावशाली ग्रह हैं तथा 6, 8 एवं 12वां भाव रोग और विकलांगता को इंगित करते हैं। चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों की कुण्डलियों में इन ग्रहों और भावों का आपस में सम्बन्ध होता है।

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार सूर्य द्वारा गृहीत राशि चिकित्सा व्यवसाय के विषय में कुछ सूत्र देती है।

1. **मेष राशिः** मनोचिकित्सक, दन्तचिकित्सक।
2. **कर्क राशिः** रोगियों की उपचारिका का व्यवसाय।
3. **कन्या राशिः** प्रयोगशाला, चिकित्सा कर्मचारी।
4. **धनु राशिः** पशुओं का चिकित्सक।
5. **कुंभ राशिः** रेडियोग्राफर।
6. **मीन राशिः** पूरे चिकित्सा क्षेत्र को।

जैमिनी ज्योतिषशास्त्र और चिकित्सा व्यवसायः

इस सम्बन्ध में तीन श्लोक दिए गये हैं जो इस व्यवसाय पर कुछ रोशनी डालते हैं। इन श्लोकों का सार इस प्रकार हैः

1. नवांश में आत्मकारक से राहु की युति अथवा कारकांश लग्न में राहु की स्थिति। (ऐसा जातक दक्षता से प्रयोग किये जाने वाले युद्ध जैसे औजारों के साथ रहता है। वह चिकित्सक ही होता है-आधुनिक संदर्भ में शल्य चिकित्सक)
2. यदि कारकांश और चन्द्रमा, शुक्र से दृष्ट हों तो जातक जड़ी-बूटियों और रसायनों का कार्य करता है।
3. कारकांश और चन्द्रमा पर बुध की दृष्टि हो।

उदाहरणः एक चिकित्सक की कुण्डली। 25.04.1941, 15:20, पटना।

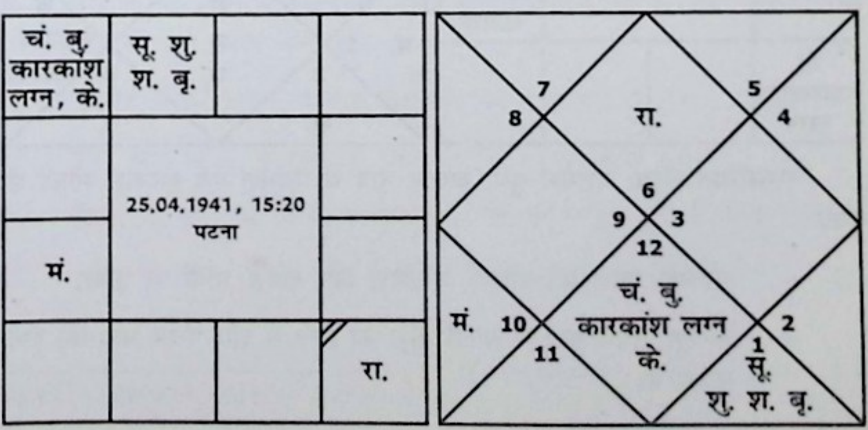

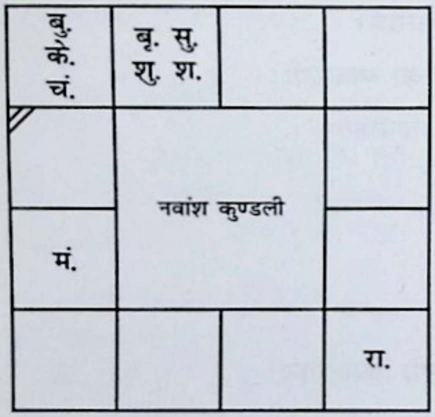

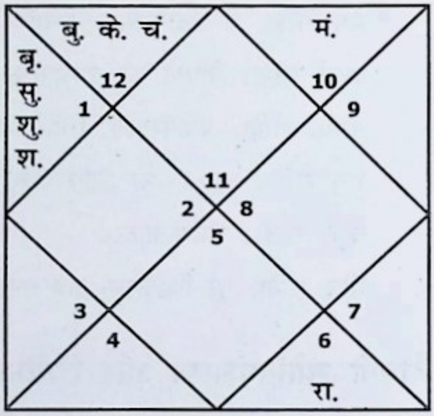

आत्मकारक बुध 29 अंश 47 मिनट, लग्न: 03 अंश 29 मिनट

आत्मकारक बुध और चन्द्रमा, कारकांश लग्न मीन राशि में हैं। 4, 6, 8, 10 एवं 12वें भाव के स्वामियों का सम्बन्ध भी है।

उदाहरण: औषधी के प्राध्यापक की कुण्डली।

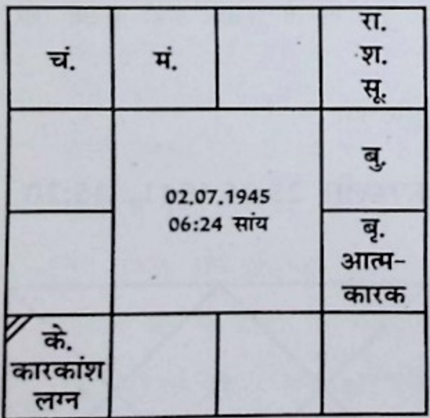

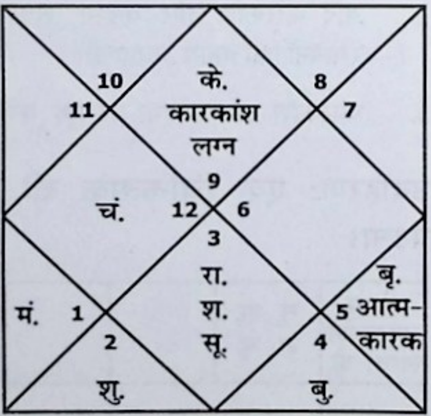

सम्बन्धित भाव: दशमेश बुध, अष्टम भाव में पंचमेश एवं द्वादशेश मंगल से दृष्ट।

- पंचमेश मंगल की अष्टम, एकादश और द्वादश भावों पर दृष्टि।
- लग्नेश, नवम भाव में अपनी राशि का लग्न में और पंचम भाव को दृष्ट करता है।

- राहु की कारकांश लग्न पर दृष्टि।
- चतुर्थेश, नवम भाव में अर्थात अच्छी शिक्षा।
- चन्द्रमा पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को देखें।

चन्द्रमा, शनि की दृष्टि से पीड़ित, चन्द्रमा से दशम भाव भी पीड़ित और चन्द्रमा से अष्टमेश शुक्र है जो लग्न से षष्टम भाव में पापकर्तरी योग में है। चन्द्रमा का शनि के द्वारा सप्तम भाव से सम्बन्ध भी है।

उदाहरणः शल्यचिकित्सा के प्राध्यापक की कुण्डली।

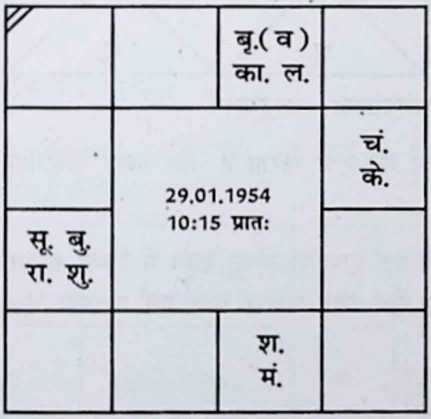

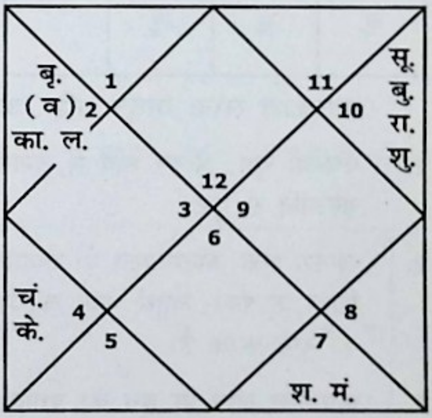

1. चन्द्रमा पर पड़ने वाला राहु-केतु और षष्टेश सूर्य एवं अष्टमेश शुक्र का दुष्प्रभाव देखें।
2. पंचमेश के पंचम में बैठने और विद्याकारक चतुर्थेश एवं सप्तमेश बुध से दृष्ट होने से पंचम भाव बली है।
3. नवमेश होकर मंगल, दशमेश बृहस्पति को दृष्ट कर रहा है।
4. शनि और मंगल, आयुष्य के भाव में युति करके स्थित हैं।
5. शिक्षा के भाव के स्वामी चन्द्रमा और रोग के भावेश सूर्य में सम्बन्ध है।
6. कारकांश लग्न, वृषभ राशि में है जो राहु और सूर्य से दृष्ट है।

आ.का. = आत्मकारक, का.ल. = कारकांश लग्न

उदाहरण: औषधि के प्राध्यापक की कुण्डली।

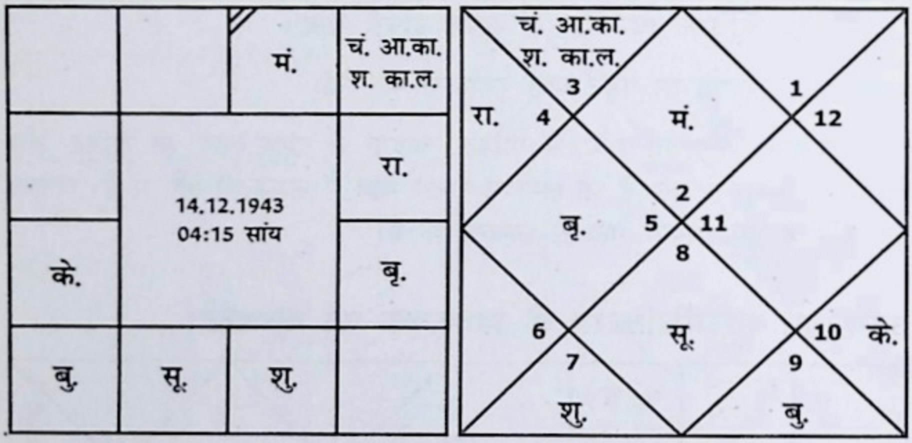

कारकांश लग्न: मिथुन राशि, आत्मकारक: चन्द्रमा।

1. पंचमेश बुध, अष्टम भाव में, दशमेश को दृष्ट करता है और स्वयं अष्टमेश बृहस्पति से दृष्ट।
2. लग्नेश शुक्र, षष्टम भाव में। सप्तमेश एवं द्वादशेश मंगल लग्न में स्थित होकर शिक्षा के भाव, चतुर्थ भाव, चतुर्थेश सूर्य और अष्टम भाव एवं पंचमेश बुध का दृष्ट करता है।
3. कारकांश लग्न पर बुध का प्रभाव है।
4. चन्द्रमा शनि द्वारा पीड़ित है और पापकर्तरी योग में है।

इंजीनियर

कई इंजीनियरों की कुण्डलियों का अध्ययन करने पर निम्नलिखित विशेषतायें उभर कर सामने आयी हैं।

1. उच्च बुद्धिमता, पंचम भाव और पंचमेश का बली होना।
2. गणित करने की दक्षता, इसके योगों का वर्णन अलग से किया हुआ है।
3. तकनीकी से सम्बन्धित ग्रहों मंगल, शनि, राहु और केतु की भूमिका।
4. शिक्षा के समय तकनीकी से सम्बन्धित ग्रहों की दशा।

5. कम्प्यूटर से सम्बन्धित शिक्षा के लिए केतु महत्वपूर्ण होता है क्योंकि केतु भाषा और सीखने का कारक होता है।

6. राहु की भूमिका से भी विशेष महत्व जुड़ा हुआ है। इसका चतुर्थ अथवा पंचम भाव में स्थित होना तकनीकी (टेक्नीकल)/इंजीनियरिंग शिक्षा को इंगित करता है।

7. जैसा कि सभी मामलों में होता है बुध की एक विशेष महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि यह बुद्धिमता का कारक ग्रह है और बुद्धिमता की अनुपस्थिति में एक अच्छा इंजीनियर बनना असंभव है।

8. पंचम भाव और दशम भाव का राजयोग बनाने वाला सम्बन्ध।

उदाहरण संख्या 1:

सिविल इंजीनियरः श्री एल.सी शर्मा द्वारा जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी में प्रकाशित लेख से उद्धृत

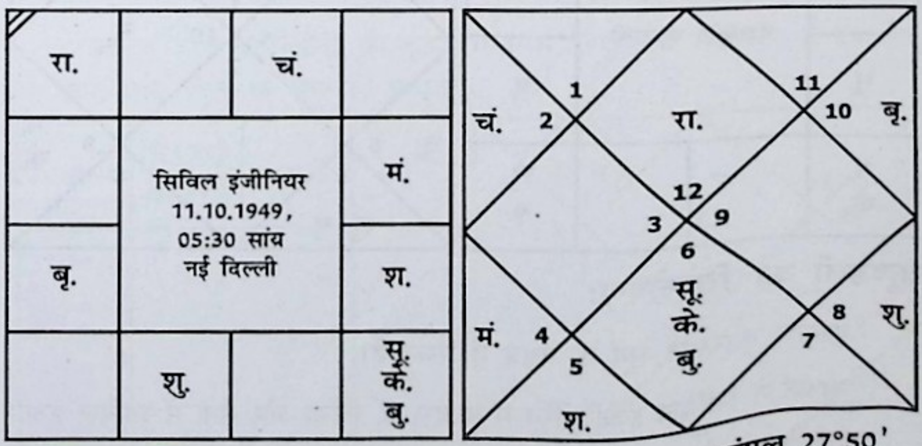

लग्न 16°47' सूर्य 24°41' चन्द्रमा 12°21' मंगल 27°50'
बुध 10°57' बृहस्पति 00°01' शुक्र 08°05' शनि 21°10'
राहु 23°30'

आत्मकारक - मंगल, अमात्यकारक - सूर्य
भोग्य दशाः चन्द्रमा/राहु
मंगल 06.01.1958 राहु 06.01.1965 बृहस्पति 06.01.1983

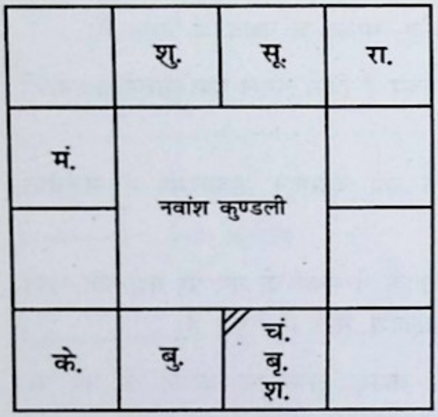

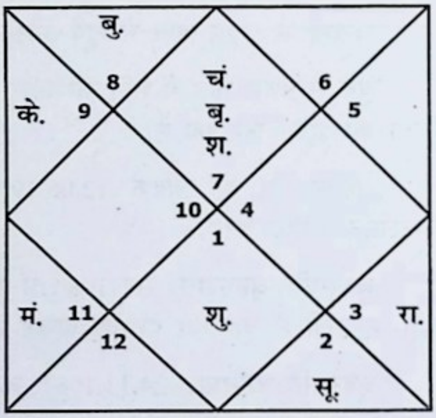

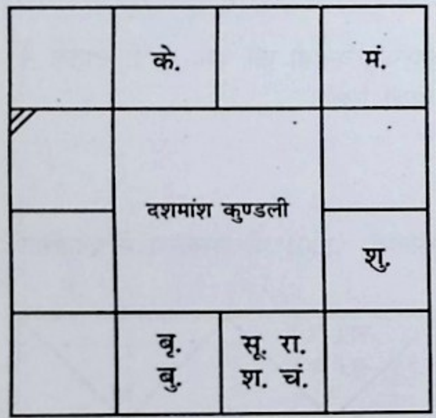

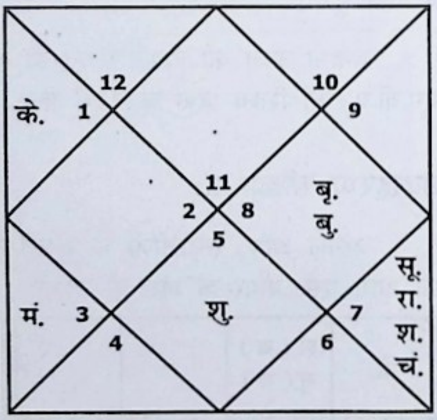

कुण्डली का विश्लेषण:

पंचमेश चन्द्रमा, मंगल के नक्षत्र में स्थित है। मंगल, सूर्य और राहु के साथ युति करके दशम भाव को दृष्ट करता है।

जातक को भोग्य दशा मंगल की मिली जिसके बाद राहु की दशा में जातक ने स्नातक की शिक्षा पूर्ण करी।

राहु/मंगलः पुलिस विभाग में वायरलेस आपरेटर के रुप में नौकरी प्रारम्भ की। राहु, वायरलेस है और मंगल पुलिस है। इसमें मंगल का दशम भाव से सम्बन्ध भी है। इससे शिक्षा में भी बाधा आई।

सन् 1962 में बृहस्पति की दशा में जातक को जूनियर इंजीनियर का पद प्राप्त हुआ। बृहस्पति लग्न कुण्डली का लग्नेश और दशमेश है तथा दशांश कुण्डली में दशम भाव में स्थित है। लग्न कुण्डली में बृहस्पति पंचम भाव को दृष्ट करता है जिसके परिणाम स्वरुप जातक ने पुनः शिक्षा प्रारम्भ करी।

बृहस्पति/शनिः लग्न कुण्डली में शनि, चन्द्रमा के साथ-साथ बुध को भी दृष्ट करता है जो शिक्षा का कारक ग्रह है। किसी भी स्थिति में बृहस्पति अपनी दशा में शिक्षा दे सकता है। अतः जातक ने अपनी शिक्षा पूर्ण की और भारतीय इंजीनियर सेवा में चयनित हुआ।

उदाहरण 3:

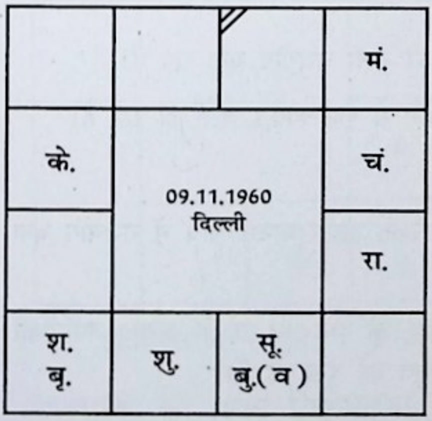

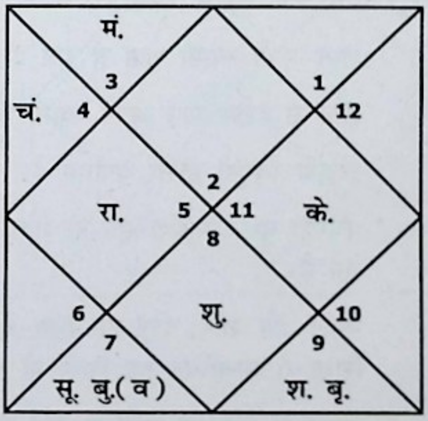

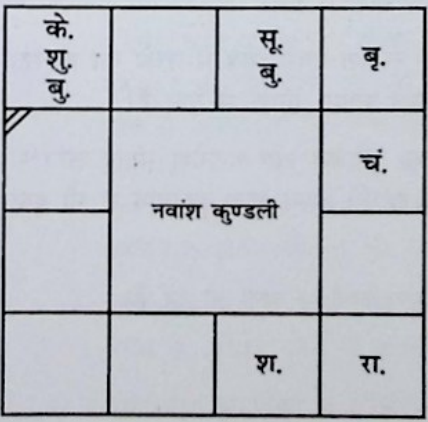

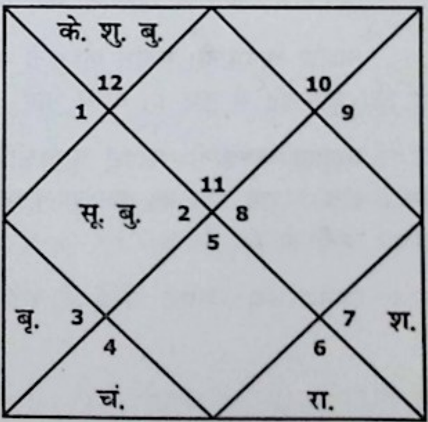

रहा है। पंचमेश एक अन्य अग्नि तत्व ग्रह सूर्य से भी दृष्ट है और सूर्य, इलेक्ट्रोनिक्स एवं इलेक्ट्रोन्स को इंगित करता है।

- सूर्य की युति लग्नेश शुक्र से है जो अतिसंवेदनशील यंत्रों को इंगित कर रहा है।
- पंचमेश शनि दशम भाव में स्थित बृहस्पति से भी दृष्ट है जो यद्यपि एक तकनीक से सम्बन्धित ग्रह नहीं है लेकिन शनि (तकनीक से सम्बन्धित ग्रह) के नक्षत्र में स्थित है।
- बृहस्पति का पंचमेश से दृष्टि सम्बन्ध पंचम भाव और दशम भाव में सम्बन्ध स्थापित कर रहा है। उच्च के बृहस्पति और शनि में नक्षत्र परिवर्तन सम्बन्ध भी है जो शिक्षा और आजीविका के सम्बन्ध को गूढ़ कर रहा है।
- चन्द्रमा से पंचम भाव में अग्नि तत्व ग्रह सूर्य और शुक्र स्थित हैं और शनि से दृष्ट हैं। चन्द्रमा से पंचमेश बुध (संचार) राहु-केतु (इलेक्ट्रोन्स) से सम्बन्धित है।

जैमिनी दृष्टिकोण से:

कारकांश लग्न मिथुन राशि में है। कारकांश लग्न से दशम भाव में शनि (तकनीक से सम्बन्धित ग्रह) स्थित है तथा बुध (गणित) की राशि में स्थित सूर्य (इलेक्ट्रोनिक्स एवं इलेक्ट्रोन्स) और शुक्र से दृष्ट है।

उदाहरण संख्या 5:

कम्प्यूटर विज्ञान- एम. टेक, पी.एच.डी.।

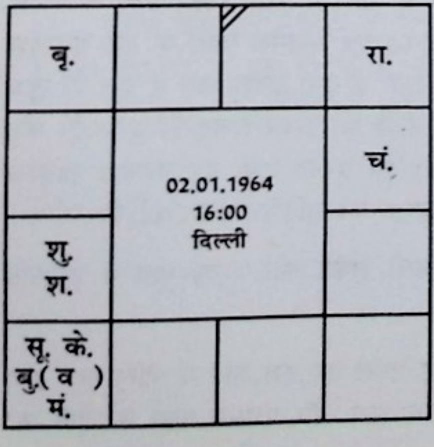

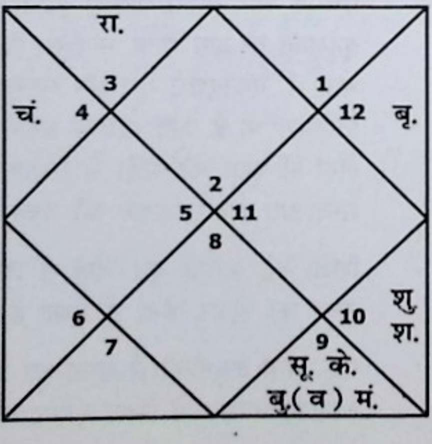

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

- कुण्डली का पंचम भाव को स्वराशिगत बली बृहस्पति एकादश भाव से दृष्ट करता है। बृहस्पति स्वयं नवमेश और दशमेश शनि के नक्षत्र में स्थित है। ग्रहों की यह स्थितियां शिक्षा की अच्छी स्थिति को इंगित करते हुए दशम और पंचम भाव में सम्बन्ध स्थापित कर रही हैं।
- पंचमेश बुध अष्टम भाव की अग्नि तत्व राशि में चतुर्थेश सूर्य के साथ स्थित होकर राजयोग बनाते हुए एक अन्य तकनीकी से सम्बन्धित ग्रह मंगल और केतु (कम्प्यूटर) से युति कर रहा है। पंचमेश बुध स्वयं, शुक्र के नक्षत्र में स्थित है और शुक्र, शनि की राशि में शनि की युति में है।
- चन्द्रमा से पंचम भाव पर बली बृहस्पति (अध्यापक और उच्च बुद्धिमता का कारक) की दृष्टि है और बृहस्पति स्वयं शनि से दृष्ट है।
- चन्द्रमा से पंचम भाव का स्वामी मंगल है जो बुध, सूर्य और केतु के साथ स्थित है।
- बुध से पंचम भाव का स्वामी भी मंगल ही है।

कुण्डली में सूर्य, मंगल, केतु, शुक्र, शनि और अग्नि तत्व राशि का अत्याधिक प्रभाव है जो इलेक्ट्रोनिक्स और कम्प्यूटर के क्षेत्र में शिक्षा को इंगित करते हैं। इस कुण्डली का जातक इलेक्ट्रोनिक्स में बी.टेक और कम्प्यूटर विज्ञान में एम.टेक. है।

दशा चक्र:

शुक्र/राहु (जुलाई, 1982): इस समय जातक ने प्रतियोगिता पास करके बी. टेक. (इलेक्ट्रोनिक्स) में प्रवेश लिया। दशानाथ शुक्र लग्नेश है और पंचम से पंचम भाव अर्थात नवम भाव में योगकारक शनि के साथ स्थित है।

अन्तर्दशानाथ राहु तकनीकी से सम्बन्धित ग्रह है और कुण्डली में उच्च एवं स्वनक्षत्र का होकर बुध की राशि में स्थित है। राहु का राशीश बुध, लग्न से पंचम भाव का स्वामी भी है।

शुक्र/बृहस्पति (जुलाई/अगस्त, 1986): अन्तर्दशानाथ बृहस्पति कुण्डली में सुस्थित होकर लग्न और चन्द्रमा, दोनों से पंचम भावों को दृष्ट करता है। यह दशानाथ शुक्र से तृतीय भाव में स्थित है और योगकारक शनि से दृष्ट है। बृहस्पति, बुध के नक्षत्र में स्थित है।

सूर्य/शनि (अगस्त, 1997): जातक ने विदेश में पी.एच.डी. के लिए प्रवेश लिया। दशानाथ सूर्य चतुर्थेश होकर पंचमेश बुध के साथ शोध के भाव अष्टम में अन्य दो तकनीकी ग्रहों से युति करके राजयोग बना रहा है। इनमें से एक मंगल, सप्तम भाव अर्थात पदप्राप्ति के भाव का स्वामी है और दूसरा केतु है। यहां विशेष बात यह है कि मंगल द्वादशेश भी है। राहु–केतु का प्रभाव विदेश यात्रा देने में पूर्णरुप से सक्षम होता है।

शनि कुण्डली का योगकारक ग्रह है। दशमेश होकर यह विशेष योग्यता को तथा नवमेश होकर उच्च शिक्षा और विदेश यात्रा को इंगित करता है। शनि एक तकनीकी से सम्बन्धित ग्रह होकर अन्य ऐसे ही ग्रह मंगल के नक्षत्र में स्थित है। दशानाथ का पंचम, नवम, अष्टम और द्वादश भावों से अथवा इनके भावेशों तथा तकनीकी से सम्बन्धित ग्रहों से सम्बन्ध के कारण ही जातक ने विदेश जाकर शिक्षा प्राप्त की और कम्प्यूटर विज्ञान में शोध (पी.एच.डी.) किया।

होटल प्रबन्धन:

(जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी के जुलाई-सितम्बर, 2000 के संस्करण में प्रकाशित श्री नवल सिंह के लेख पर आधारित)

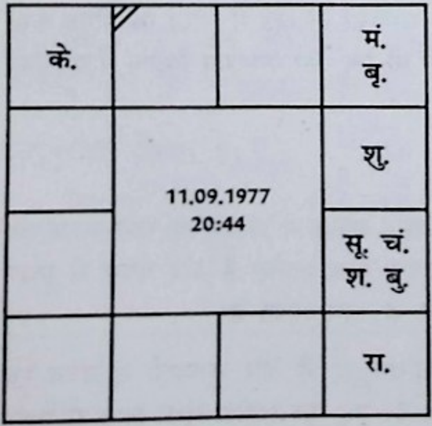

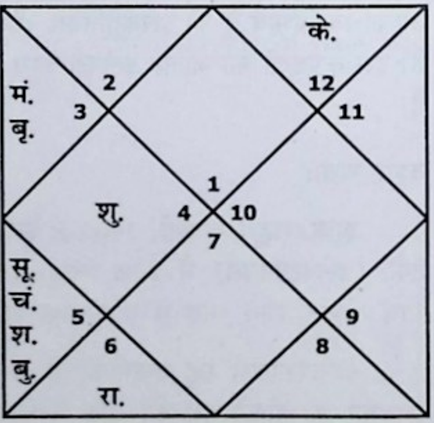

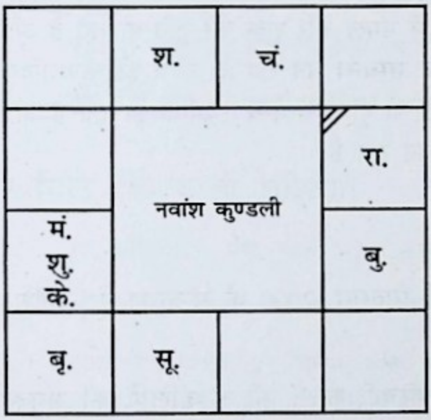

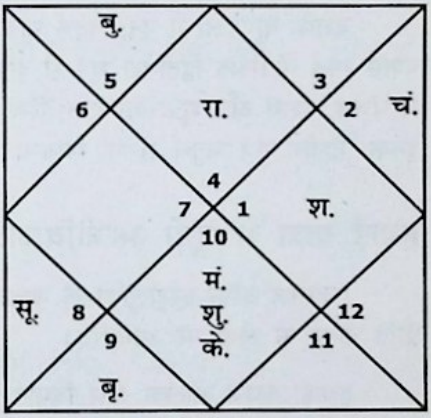

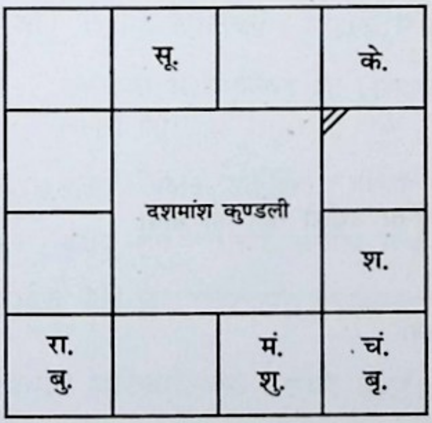

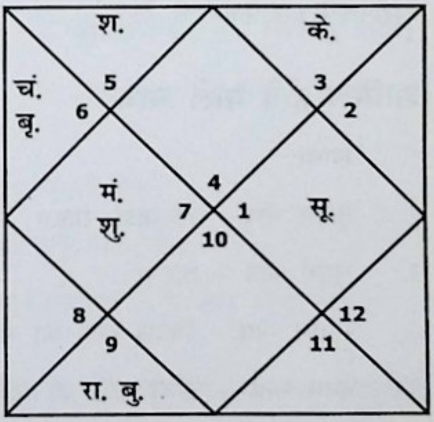

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

लग्न कुण्डली का पंचमेश होकर सूर्य, पंचम भाव में दशमेश शनि के साथ युति करके स्थित है जो उच्च शिक्षा की संभावनाओं को दिखा रहा है और शिक्षा एवं आजीविका के मध्य सम्बन्ध को स्थापित कर रहा है। पंचमेश सूर्य, शुक्र के नक्षत्र में स्थित है जो कुण्डली का द्वितीयेश एवं सप्तमेश होकर कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित है। शुक्र होटल को भी दर्शाता है।

नवांश कुण्डली में शुक्र और मंगल युति करके व्यवसाय के भाव सप्तम में स्थित हैं। यहां शुक्र चतुर्थेश एवं एकादशेश और मंगल, पंचमेश एवं दशमेश हैं। मंगल भोजन और धन-सम्पति के भाव द्वितीय को भी दृष्ट करता है।

दशांश कुण्डली में पुनः चतुर्थ भाव में मंगल और शुक्र की युति हो रही है और दशम भाव में स्थित द्वितीयेश सूर्य से दृष्टि सम्बन्ध बन रहा है। तीनों ही कुण्डलियों में पंचम, दशम और शुक्र का युति, स्थिति या दृष्टि सम्बन्ध स्थापित हो रहा है और इनका द्वितीय एवं चतुर्थ से भी सम्बन्ध बन रहा है।

हवाई यात्रा से जुड़ी आजीविका:

(जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी के जुलाई-सितम्बर, 2000 के संस्करण में प्रकाशित प्रीति कपूर के लेख पर आधारित)

हवाई जहाज चालक और विमान परिचालिकाओं की कुण्डलियों की संयुक्त विशेषतायें इस प्रकार से हैं:

शामिल होने वाले भाव:

1. लग्न।
2. तृतीय भाव - लघुयात्रा, साहस, निरंन्तर उद्योगी रहने का भाव।
3. चतुर्थ भाव - वाहन।
4. सप्तम भाव - विदेश यात्रा का भाव।
5. नवम भाव - लम्बी यात्रा का भाव।
6. दशम भाव - कर्म स्थान, आजीविका का भाव।
7. द्वादश भाव - विदेशी भूमि का भाव।

कुण्डली में इन भावों अथवा भावेशों का आपस में कोई सम्बन्ध होना आवश्यक है।

शामिल होने वाले ग्रह:

1. राहु - मलेच्छ, विदेश से सम्बन्ध दर्शाने वाला ग्रह।
2. शनि - वायु तत्व, कठोर कर्म और दीर्घ कार्यावधि को दर्शाने वाला ग्रह।

3. बृहस्पति - आकाश तत्व और बुद्धिमता को दर्शाने वाला ग्रह।
4. शुक्र - वाहन और व्यक्तिगत आकर्षण को दर्शाने वाला ग्रह।

इन ग्रहों का उपरोक्त भावों से सम्बन्ध होना आवश्यक है।

शामिल होने वाली राशियां:

1. चर राशियां - मेष, कर्क, तुला और मकर।
2. द्विस्वभाव राशियां - मिथुन, कन्या, धनु और मीन।
3. वायु तत्व राशियां - मिथुन, तुला और कुम्भ।

हवाई जहाज चालकों (पाइलट्स) की कुण्डलियों के विशेष गुण:

1. तकनीकी से सम्बन्धित ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु और केतु) - वायुयान चलाने हेतु।
2. शुक्र - वाहन, संवेदनशील मशीनों को चलाने हेतु।
3. तृतीय भाव - संचार, सम्बन्ध स्थापित करने का भाव।

उपरोक्त ग्रहों का, भाव/भावेश का द्वादश भाव/द्वादशेश से सम्बन्ध होना चाहिए।

विमान परिचालिका (एयर होस्टेसिस) की कुण्डलियों के विशेष गुण:

1. खाने से सम्बन्धित द्वितीय भाव का दशम भाव/भावेश से सम्बन्ध।
2. आकर्षक, दिखने में सुन्दर और अच्छा स्वभाव।
3. शुक्र का लग्न और आजीविका के भाव दशम से सम्बन्ध।
4. बार-बार यात्रा के योग - नवम, द्वादश, सप्तम एवं चतुर्थ और लघु यात्रा के भाव।

विमान चालक और परिचालिकाओं को वेतन अधिक दिया जाता है इसलिए इनकी कुण्डलियों में बली 'धनयोगों' का होना भी अति आवश्यक है।

वायुयानों के आवगमन को नियंत्रित करने वाले (एअर ट्रेफिक कन्ट्रोलर्स):

1. तकनीकी से सम्बन्धित ग्रह।
2. तृतीय भाव।
3. सप्तम भाव - मार्ग दिखाने वाला भाव।
4. अष्टम भाव - गुप्तचर पुलिस, सुरक्षित किला। ये सुरक्षित स्थानों में काम करते हैं।
5. दशम भाव - आजीविका का भाव।
6. द्वादश भाव - गुप्त योजनाओं का भाव।
7. राहु - उड़ने से सम्बन्धित कार्य।
8. बृहस्पति - तीक्ष्ण बुद्धिमता।
9. उपरोक्त ग्रहों/भावों का एक-दूसरे से सम्बन्ध।

दशा:

1. द्वादशेश, तृतीयेश, सप्तमेश और नवमेश की दशा।
2. राहु की दशा।

हवाई जहाज चालकों (पाइलट्स)-1:

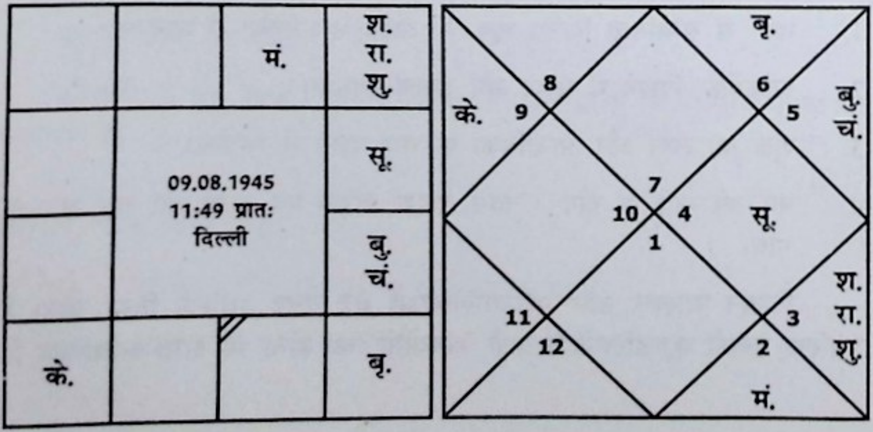

लग्न 11°16'   सूर्य 23°11'   चन्द्रमा 07°55'   मंगल 18°17'
बुध 11°25'   बृहस्पति 03°47'   शुक्र 12°19'   शनि 25°30'
राहु 15°36'

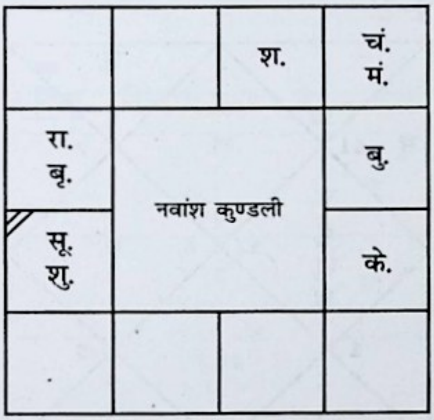

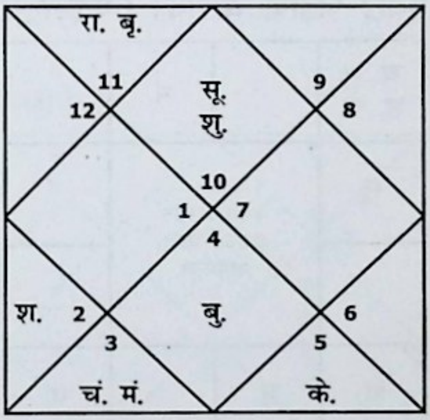

- शुक्र लग्नेश होकर चतुर्थेश एवं पंचमेश शनि और विदेश यात्रा के कारक ग्रह राहु से युति करके नवम भाव में स्थित है।

- दशमेश चन्द्रमा और एकादशेश सूर्य राशि परिवर्तन योग में स्थित होकर अधिक धन-सम्पति की संभावनाओं को इंगित कर रहे हैं। दशम भाव में चर राशि में स्थित होकर सूर्य आजीविका का यात्रा से सम्बन्ध स्थापित कर रहा है।

- बुध और चन्द्रमा शिक्षा के भाव पंचम को दृष्ट कर रहे हैं। बुध कुण्डली का नवमेश है जो यात्रा और प्रशिक्षण से शिक्षा का सम्बन्ध इंगित कर रहा है।

- दशमेश चन्द्रमा और नवमेश एवं द्वादशेश बुध कुण्डली के चतुर्थेश एवं पंचमेश शनि से दृष्ट हैं। दशम भाव आजीविका का भाव है और नवम यात्रा एवं द्वादश विदेश से सम्बन्ध का भाव है जबकि, चतुर्थ एवं पंचम शिक्षा के भाव हैं।

- तृतीयेश बृहस्पति द्वादश भाव में है, बृहस्पति का राशीश बुध है और बुध दशमेश के साथ है। तृतीय भाव छोटी यात्रा का भाव और द्वादश भाव विदेश का भाव है।

- अधिकतर ग्रह चर और द्विस्वभाव राशियों में हैं जो स्थान परिवर्तन और यात्रा को सुनिश्चित कर रहे हैं।

- दशमेश चन्द्रमा केतु के नक्षत्र में बैठा है जो एक तकनीकी से सम्बन्धित ग्रह होकर कुण्डली के 3/9 अक्ष पर स्थित है।

हवाई जहाज चालकों (पाइलट्स)-2:

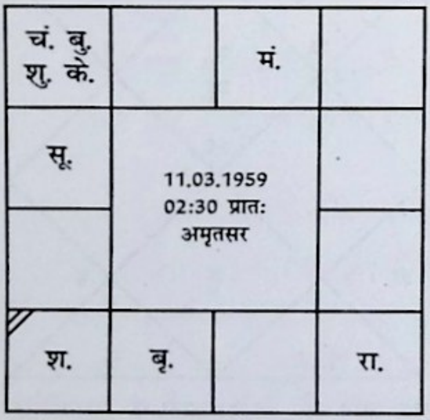

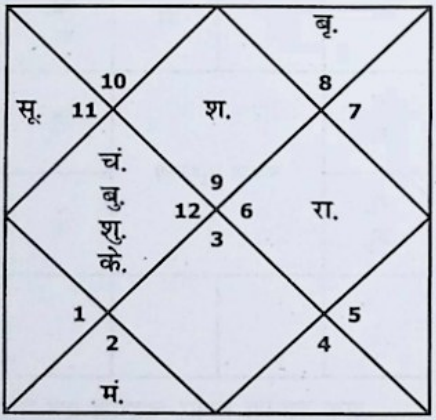

लग्न 08°43' सूर्य 26°15' चन्द्रमा 12°22' मंगल 20°13'
बुध 14°21' बृहस्पति 08°36' शुक्र 24°27' शनि 12°41'
राहु 19°04'

- कुण्डली में अधिकतर ग्रह द्विस्वभाव राशियों में स्थित हैं।
- चन्द्रमा और बुध चतुर्थ भाव में बैठकर निरन्तर यात्रा को इंगित कर रहे हैं।
- दशमेश बुध उच्च के शुक्र (तकनीकी से सम्बन्धित) के साथ बैठकर अपने भाव को दृष्ट कर रहा है और दशमेश एवं दशम भाव दोनों ही राहु-केतु अक्ष पर हैं।
- लग्नेश और चतुर्थेश बृहस्पति, द्वादश भाव में बैठकर विदेश से सम्बन्ध इंगित कर रहे हैं। चूंकि हवाई जहाज चालकों को कम समयावधि के लिए विदेश में रहना पड़ता है जिसकी पुष्टि यह सम्बन्ध कर रहा है। बृहस्पति वायु तत्व ग्रह शनि के नक्षत्र में बैठा है।
- धन भाव का स्वामी शनि, वायु तत्व ग्रह होकर तृतीय भाव अर्थात छोटी यात्रा के भाव का स्वामी भी है और लग्न में बैठकर छोटी यात्रा के भाव तृतीय, आजीविका के भाव दशम और दशम से दशम भाव सप्तम को दृष्ट करके विदेश की यात्रा से आजीविका का सम्बन्ध स्थापित कर रहा है।

- पंचमेश मंगल षष्टम भाव में बैठकर द्वादश भाव, लग्न और चतुर्थेश को दृष्ट कर रहा है। मंगल का राशीश शुक्र, चतुर्थ भाव में उच्च का होकर दशमेश बुध से युति कर रहा है और राहु-केतु अक्ष में है।
- दशमेश बुध तकनीकी से सम्बन्धित ग्रह शनि के नक्षत्र में बैठा है।

विमान परिचालिका (एअर होस्टेसिस)-1:

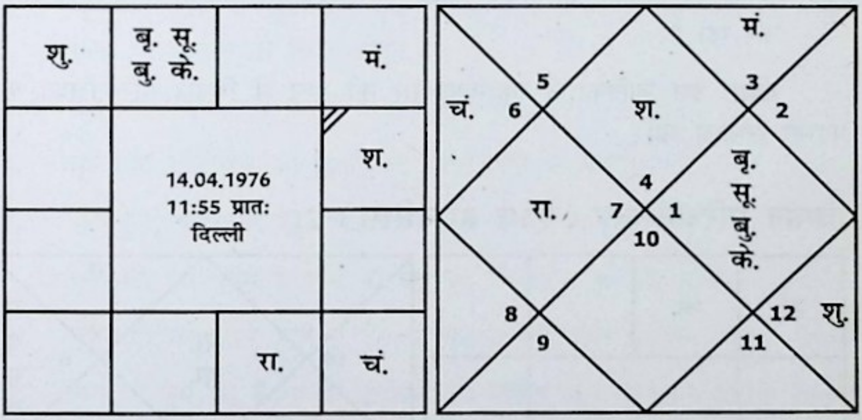

लग्न 02°33' सूर्य 06°54' चन्द्रमा 27°41' मंगल 19°21'
बुध 14°10' बृहस्पति 10°53' शुक्र 13°43' शनि 02°46'
राहु 19°01'

- चन्द्रमा लग्नेश होकर उच्च के शुक्र से दृष्ट है जो जातिका के आकर्षक व्यक्तित्व को इंगित कर रहा है। शुक्र स्वयं वायुतत्व ग्रह शनि के नक्षत्र में है और शनि लग्न में बैठा है।
- सभी ग्रह चर अथवा द्विस्वभाव राशियों में बैठें हैं।
- चर राशि का लग्न है और लग्नेश द्विस्वभाव राशि में बैठा है तथा वायुतत्व ग्रह शनि लग्न में बैठा है।
- शुक्र का राशीश बृहस्पति दशम भाव में उच्च एवं दिग्बली सूर्य के साथ युति कर रहा है। सूर्य, धन भाव द्वितीय का स्वामी है। इनके साथ छोटी यात्राओं के भाव तृतीय का स्वामी बुध भी युति कर रहा है और यह सभी युतियां राहु-केतु अक्ष में भी हो रही हैं।

- द्वितीयेश का दशम भाव में होना भी आजीविका का खाने-पीने से सम्बन्ध इंगित कर रहा है।

- दशमेश मंगल विदेश के भाव द्वादश में और विदेश दर्शाने वाले ग्रह राहु के नक्षत्र में है।

- कुण्डली में शुक्र उच्च का है और इसका राशीश बृहस्पति दशम भाव में बैठा है जो आजीविका का चमक-धमक और ऐश्वर्य (ग्लैमर) से सम्बन्ध इंगित कर रहा है।

दशाः इस जातिका ने राहु/मंगल/बुध की दशा में विमान परिचालिका का पदभार संभाला था।

विमान परिचालिका (एअर होस्टेसिस)-2:

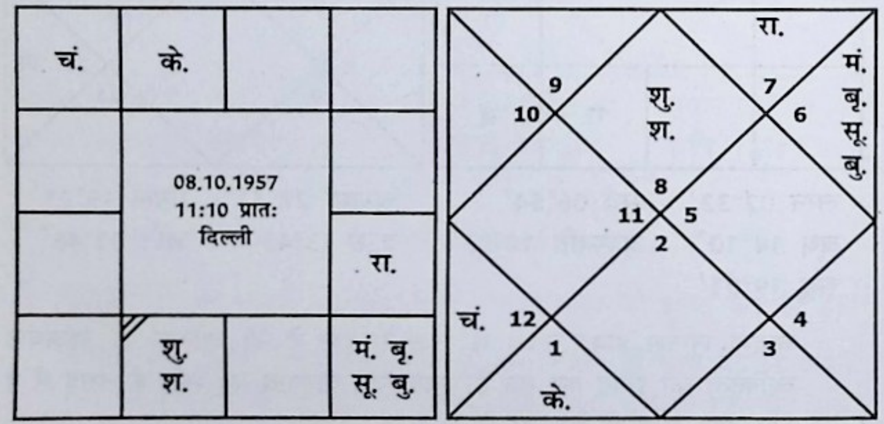

- लग्नेश मंगल एकादश भाव में दशमेश सूर्य के साथ है और नवमेश चन्द्रमा के नक्षत्र में बैठा है।

- शुक्र और शनि लग्न में स्थित है और लग्नेश मंगल पर चन्द्रमा की दृष्टि है जो जातिका के आकर्षक व्यक्तित्व को इंगित करते हैं।

- तृतीयेश एवं चतुर्थेश शनि लग्न में सप्तमेश एवं द्वादशेश शुक्र के साथ बैठा है। यह युति जातिका का विदेश से सम्बन्ध इंगित करता है।

- शुक्र की एक राशि में राहु कुण्डली के द्वादश भाव में बैठा है।

दशाः इस जातिका ने केतु/चन्द्रमा/शनि की दशा में विमान परिचालिका का पदभार संभाला था।

लेखक, ग्रन्थकार, संकलनकर्ता और कवि होने के योग

1. बृहस्पति का बली होकर कुण्डली के द्वितीय भाव में बैठना।
2. चतुर्थेश, बृहस्पति, शुक्र और बुध का कुण्डली में स्वगृही या उच्च का होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होना।
3. राहु का पंचम भाव में बैठना।
4. बृहस्पति और बुध का द्वितीय या दशम भाव में बैठना।
5. बृहस्पति, बुध और शुक्र का नवम भाव में बैठना।
6. बृहस्पति का नवम भाव में बैठकर बुध और शुक्र से दृष्ट होना।
7. बृहस्पति का नवम भाव में बैठकर चन्द्रमा और शनि से दृष्ट होना।
8. लग्न में बुध का बैठना या द्वितीयेश का द्वितीय भाव में बैठना अथवा लग्नेश का द्वितीय भाव में बैठना अथवा द्वितीय भाव, द्वितीयेश, लग्नेश और बुध का शुभ ग्रहों के साथ सम्बन्ध होना।
9. द्वितीय भाव में स्थित सूर्य, बुध और शुक्र, जातक को कवि बनाते हैं। उदाहरण के लिए डा. रविन्द्रनाथ टैगोर की कुण्डली का अवलोकन करें।
10. यदि नवांश कुण्डली में बृहस्पति पंचम भाव या पंचमेश को दृष्ट करता है तो यह जातक को एक गंभीर और लोकप्रिय ग्रन्थकार बनता है।
11. यदि जन्म कुण्डली में बुध से पंचम भाव को बृहस्पति प्रभावित करता है तो भी उपरोक्त परिणाम ही प्राप्त होता है। इस सम्बन्ध को नवांश में भी सुनिश्चित करना चाहिए।
12. दशम भाव में बैठा बृहस्पति आदर्शवाद, बुध हास्यरस और मंगल तीखी टिप्पणियां देता है। लेखन में तीव्र तर्कशक्ति की आवश्यकता होती है।
13. पंचमेश या बृहस्पति या बुध के द्रेष्कोण का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में बैठकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का रुझान लेखन की ओर होता है।

14. एकादश भाव में बैठा बुध सूक्ष्म ज्ञान और उच्च शिक्षा देता है।

15. महर्षि पराशर के अनुसार पंचमेश का नवम भाव में बैठना जातक को एक दृष्टान्तवेत्ता लेखक बनाता है।

16. वराहमिहिर के अनुसार कन्या राशि में स्थित सूर्य लेखन, चित्रकारी, काव्य, दार्शनिकता और गणित की कला देता है।

17. यदि नवांश कुण्डली में दशमेश का स्वामी बुध होता है तो कवि होने, लेखन कार्य करने, ज्योतिषाचार्य होने आदि के माध्यम से जातक अर्जित करता है।

18. दशम भाव में बैठे सूर्य, चन्द्रमा और बुध अच्छी शिक्षा, प्रसिद्धि और नाम देते हैं।

19. चन्द्रमा से दशम भाव में बुध और शुक्र का होना उच्च शिक्षा के लिए शुभ होता है। दशम भाव में स्थित बृहस्पति और शुक्र भी इसी प्रकार का परिणाम देते हैं।

20. सूर्य, चन्द्रमा एवं बृहस्पति, सूर्य, बुध एवं बृहस्पति और सूर्य, बुध एवं शुक्र की युति उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छी युति होती है।

21. पंचमेश का योगकारक ग्रह और एकादशेश के साथ युति करके नवम भाव में बैठना अच्छी शैक्षिक प्राप्तियों के साथ-साथ धन-सम्पति भी देता है।

22. दशम भाव प्राप्तियों का भाव है। कभी-कभी उच्च या शुभ ग्रहों का दशम भाव में बैठना शिक्षा के क्षेत्र में अथवा ज्ञान के क्षेत्र में बहुत बड़ी उपलब्धियों को दर्शाता है क्योंकि दशम भाव के द्वारा ही किसी भी व्यक्ति को पहचान या प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

23. यदि बृहस्पति द्वितीय भाव में बैठा हो और चन्द्रमा या बुध दशम भाव में अथवा बृहस्पति से केन्द्र में हो तो जातक का अच्छा और उज्जवल शैक्षिक जीवन होता है।

लेखक, कवि आदि होने के लिए शास्त्रीय ग्रन्थों में दिये गए योगः

1. **सरस्वती योगः** शुभ ग्रह बृहस्पति, शुक्र और बुध का केन्द्र (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम) अथवा त्रिकोण भावों (पंचम एवं नवम) अथवा द्वितीय भाव में एक साथ अथवा अलग-अलग बैठना। बृहस्पति को उच्च या स्वगृही या मित्र की राशि में बैठकर बली होना चाहिए।

परिणामः कवि, नाटक, गद्य, पद्य, अलंकार शास्त्र एवं गणित में प्रवीण, प्रसिद्ध, धनवान और सभी विज्ञानों में शिक्षित।

2. **गन्धर्व योगः** दशमेश का काम त्रिकोण के भावों (तृतीय, सप्तम एवं एकादश) में होना, लग्नेश एवं बृहस्पति की युति, उच्चादि होकर सूर्य का बली होना और चन्द्रमा का नवम भाव में होना।

   परिणामः संगीत, नृत्य, चित्रकला आदि कला के विभिन्न क्षेत्रों में अत्याधिक दक्षता।

3. **कलानिधि योगः** लग्न से द्वितीय या पंचम भाव में बैठा बृहस्पति, बुध और शुक्र से युत हो या दृष्ट हो अथवा बुध या शुक्र की राशि में हो।

   परिणामः संगीत सहित कला के सभी क्षेत्रों में पारंगत।

4. बुध या शुक्र अथवा इन दोनों के द्वारा बनने वाला **सुनफा/अनफा/दुरुधरा योग** कला के क्षेत्र में प्रवीणता प्रदान करता है।

5. पंचमहापुरुष योगों में शुक्र द्वारा निर्मित होने वाला **मालव्य** और बुध द्वारा निर्मित होने वाला **भद्र योग** कला के क्षेत्र में प्रवीणता प्रदान करता है।

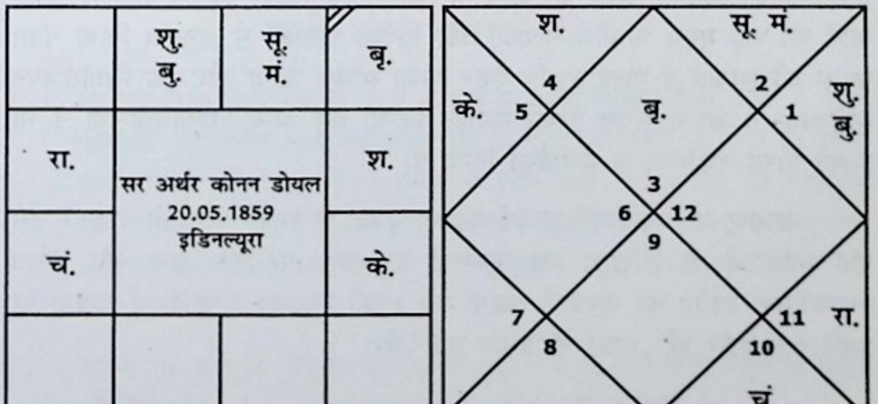

शेरलॉक होल्म्स नाम के जासूस के प्रसिद्ध जासूसी कहानीकार सर अर्थर कोनन डोयल की उपरोक्त कुण्डली में लग्न से पंचम और चन्द्रमा से दशम भाव पर पड़ने वाले तीन शुभ ग्रहों के प्रभाव और पंचमेश शुक्र पर नवमेश शनि के प्रभाव को देखें। इस कुण्डली में चन्द्रमा से चतुर्थेश और पंचमेश के मध्य राशि परिवर्तन भी है।

अमृता प्रीतम-प्रसिद्ध उपन्यासकार और कवियत्री:

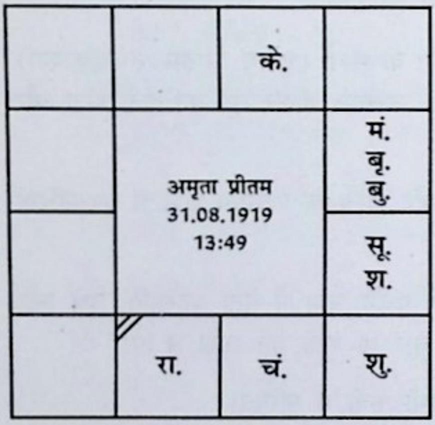

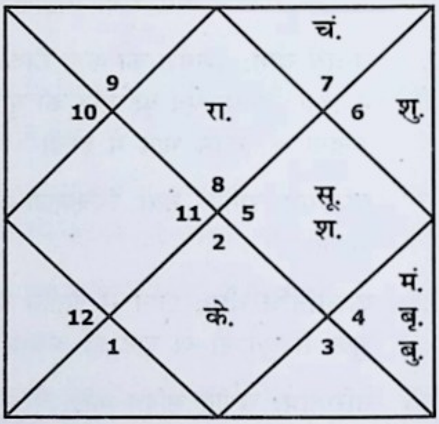

कवियत्री, उपन्यासकार और लघु कहानीकार श्रीमती अमृता प्रीतम ने 75 से भी अधिक पुस्तकें लिखीं हैं। वह बहुआयामी लेखिका होने के साथ-साथ सन् 1955 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने वाली प्रथम महिला भी थी। सन् 1982 में इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया था। सर्वाधिक पढ़े जाने वाले इनके उपन्यासों और कविता संग्रह को अन्य भा..ओं के लोगों तक पहुंचाने के लिए इनके कार्य का कई मुख्य भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया। फ्रान्स की सरकार ने मानद उपाधि देकर इनका सम्मान किया और एक जियोरजियन संगीतकार ने अपना संगीत इनको समर्पित किया। कई अन्य विश्वविद्यालयों ने भी इनको मानद उपाधियों से सम्मानित किया है।

महाराष्ट्र के एक ज्योतिषाचार्य महात्मा काका ने इनकी कुण्डली देखकर उसे एक कवियत्री या लेखिका की कुण्डली के स्थान पर एक सन्त और पवित्र आध्यात्मिक आत्मा की कुण्डली बताया था। इनकी उपरोक्त कुण्डली में चन्द्रमा पर पड़ने वाले शनि और मंगल के प्रभाव को देखें।

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

1. लेखन कार्य से सम्बन्धित तृतीयेश शनि, दशम भाव में दिग्बली सूर्य के साथ बैठा है।
2. चन्द्रमा से तृतीयेश बृहस्पति उच्च का होकर चन्द्रमा से दशम भाव में बैठा है।

3. लग्न से पंचमेश बृहस्पति उच्च का होकर लग्नेश मंगल के साथ नवम भाव में बैठकर राजयोग बना रहा है। इनके साथ लेखन और बुद्धि का कारक ग्रह बुध भी युति कर रहा है।

4. कविता का कारक शुक्र एकादश भाव में बैठकर पंचम भाव को दृष्टि दे रहा है। यह चन्द्रमा से द्वादश और सूर्य से द्वितीय भाव में बैठकर अनफा और वेशि योग का निर्माण करके उनमें काव्य एवं लेखन प्रतिभा भर रहा है। यद्यपि यह नीचस्थ है लेकिन नीचभंग राजयोग भी बना रहा है।

5. कला का ग्रह बुध आत्मकारक होकर उच्च के बृहस्पति और लग्नेश मंगल के साथ नवम भाव अर्थात उच्च बुद्धिमता के भाव पंचम से त्रिकोण भाव में बैठा है।

6. कारकांश लग्न कुम्भ से पंचम भाव की राशि मिथुन पर कविता के ग्रह शुक्र की जैमिनी दृष्टि है।

7. बुध से पंचम भाव में वृश्चिक राशि है जिस पर बुध, उच्च के बृहस्पति और लग्नेश मंगल की जैमिनी दृष्टि है।

संगीतकार होने के योग

1. उत्तरकालामृत में संगीत के लिए सप्तम भाव का विचार किया गया है अतः कुण्डली का सप्तम भाव संगीतकार होने के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। तृतीय भाव आवाज के लिए गले, वाद्ययंत्रों के लिए हाथों और संगीत की गहराइयों को समझने के लिए कानों को इंगित करता है। तृतीयेश का सप्तम भाव में होना अथवा तृतीयेश और सप्तमेश की सप्तम भाव में युति संगीत के लिए अच्छी मानी जाती है।

2. जातक पारिजात के अनुसार बुध के त्रिशांश में जन्म लेने वाली जातिका गायन और वाद्ययंत्रों, दोनों के साथ संगीत के प्रति समर्पित होती है।

3. भावार्थ रत्नाकर के अनुसार चतुर्थ भाव में बैठा शुक्र जातक को संगीत में प्रवीणता प्रदान करता है। शुक्र संगीत का कारक ग्रह है। शिक्षा के भावों द्वितीय, चतुर्थ, पंचम अथवा नवम में बैठा शुक्र जिस प्रकार शिक्षा के लिए शुभ होता है उसी प्रकार संगीत में पारंगता प्राप्त करने के लिए भी शुभ होता है।

4. कुण्डली का चतुर्थ भाव और चतुर्थेश बली होना चाहिए तथा शुक्र के साथ चन्द्रमा के वर्गों में होना चाहिए।

5. लग्नेश और चन्द्रेश तृतीय भाव में अथवा तृतीयेश का लग्न या लग्नेश से सम्बन्ध।

6. लग्नेश और चन्द्रेश का चतुर्थ भाव/चतुर्थेश से सम्बन्ध।

7. लग्न अथवा चन्द्रमा से तृतीय, चतुर्थ, पंचम, दशम और एकादश भाव बली होने चाहिए।

8. चन्द्रमा और बुध भी महत्वपूर्ण हैं।

9. 2, 3, 4, 5, 6, 7, 10 और 11 भाव सम्बन्धित भाव हैं।

10. शुक्र, चन्द्रमा और बुध की राशियां महत्वपूर्ण हैं।

11. चन्द्रमा का लग्न या पंचम भाव में बैठना संगीत के प्रति रुझान देता है।

12. महर्षि जैमिनी के अनुसार, "यदि चन्द्रमा कारकांश लग्न से प्रथम अथवा पंचम भाव से सम्बन्धित होता है तो जातक सांख्यशास्त्र में प्रवीण, भाषा, काव्य, नाटक, अभिनय और संगीत में अत्याधिक प्रवीण और पूर्णतायुक्त होता है।

संगीत के शास्त्रीय योगः

1. **वीणा योगः** सूर्यादि सभी सात ग्रह सात राशियों में बैठे हों।

   परिणामः जातक संगीत और नृत्य में निपुण।

2. **गदा योगः** यह एक नाभस योग है। सभी ग्रह निकट के दो केन्द्रों में स्थित हों।

3. **भास्कर योगः** सूर्य से द्वितीय भाव में बुध, बुध से एकादश भाव में चन्द्रमा और चन्द्रमा से पंचम या नवम भाव में बृहस्पति।

   परिणामः संगीत आदि ललित कलाओं में कुशल।

4. **कलानिधि योगः** लग्न से द्वितीय या पंचम भाव में बैठा बृहस्पति, बुध और शुक्र से युत हो या दृष्ट हो अथवा बुध या शुक्र की राशि में हो।

   परिणामः संगीत सहित ललित कला के सभी क्षेत्रों में पारंगत।

5. **सरस्वती योगः** शुभ ग्रह बृहस्पति, शुक्र और बुध का केन्द्र (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम) अथवा त्रिकोण भावों (पंचम एवं नवम) अथवा द्वितीय भाव में एक साथ अथवा अलग-अलग बैठना। बृहस्पति को उच्च या स्वगृही या मित्र की राशि में बैठकर बली होना चाहिए।

   यदि तीनों शुभ ग्रह बृहस्पति, शुक्र और बुध एक-दूसरे से केन्द्र में स्थित हों तो भी सरस्वती योग बनता है।

   परिणामः कवि, नाटक, गद्य, पद्य, अलंकार शास्त्र एवं गणित में प्रवीण, प्रसिद्ध, धनवान और सभी विज्ञानों में शिक्षित।

6. **चामर योगः** जातक पारिजात के अनुसार यह योग दो प्रकार से बनता है। यदि लग्नेश अपनी उच्च राशि में स्थित होकर केन्द्र में हो और बृहस्पति से दृष्ट हो तो चामर योग होता है। यदि दो शुभ ग्रह एक साथ लग्न, सप्तम, नवम या दशम में हों तो भी चामर योग होता है।

7. **गन्धर्व योगः** लग्न में बृहस्पति, उच्च अथवा बली सूर्य, चन्द्रमा नवम भाव में और दशमेश 3, 7 या 11वें भाव में हो तो गन्धर्व योग होता है।

8. अनफा, सुनफा, भद्र और मालव्य योग।

उदाहरण कुण्डली:

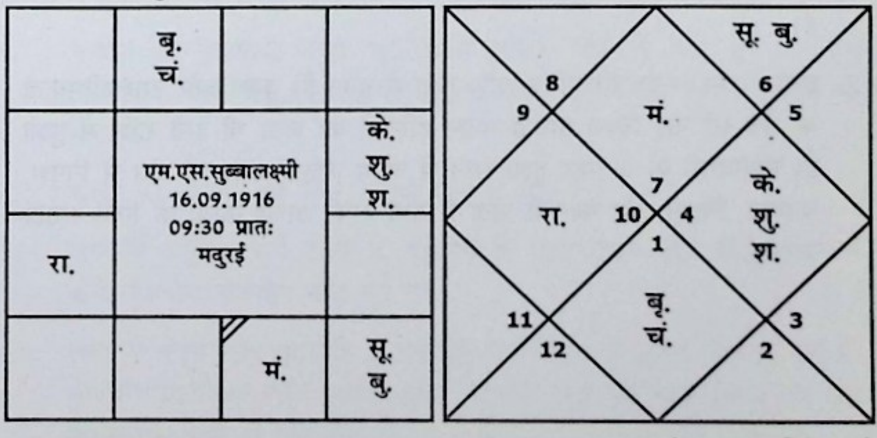

आत्मकारक-बुध, अमात्यकारक-चन्द्रमा कारकांश लग्न-सिंह

एस. एस. सुब्बालक्ष्मी कर्नाटक संगीत की बहुत बड़ी उपासक थी और इनका संगीत दैवीय संगीत था। महात्मा गान्धी को इनके भजन अति प्रिय थे। आध्यात्मिकता की रोशनी को कुण्डली में उच्च के नवमेश की स्थिति के द्वारा देखा जा सकता है। नवमेश बुध मोक्ष के भाव द्वादश में आत्मा के कारक सूर्य के साथ स्थित है। सन् 1998 में बुध/शुक्र/बुध की दशा में इनको भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। दशानाथ और प्रत्यन्तर दशानाथ बुध नवमेश होकर द्वादश भाव में उच्च का है और दशम भाव में बैठे कुण्डली के योगकारक ग्रह शनि से दृष्ट है। शनि दशम भाव में लग्नेश शुक्र के साथ स्थित है। इस कुण्डली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सभी ग्रह दशम भाव से सम्बन्धित हैं। शुक्र, शनि और केतु दशम भाव में स्थित हैं, सूर्य और बुध दशम भाव में बैठे शनि से दृष्ट हैं, बृहस्पति दशमेश चन्द्रमा के साथ युति कर रहा है और मंगल दशमेश चन्द्रमा से दृष्ट है। संगीत से सम्बन्धित अन्य योग इस प्रकार से हैं:

1. लग्नेश शुक्र दशम भाव में चतुर्थेश एवं पंचमेश शनि के साथ बैठा है। इनके साथ केतु भी स्थित है जो आध्यात्मिक कार्यों को इंगित करता है। चतुर्थ भाव अपने स्वामी से दृष्ट होकर बली हो रहा है।

2. तृतीयेश बृहस्पति दशमेश चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में युति करके तृतीय भाव को दृष्ट कर रहा है।

3. तृतीयेश बृहस्पति लग्न के साथ-साथ चन्द्रमा से भी सम्बन्ध स्थापित कर रहा है।

4. इनका जन्म, शुक्र की पवित्र राशि तुला में हुआ है। कला और आध्यात्मिकता के क्षेत्र की कई विश्व प्रसिद्ध महान हस्तियों का जन्म भी इसी राशि में हुआ है। मानसागरी के अनुसार तुला लग्न में जन्मा जातक कला के क्षेत्र में निपुण, धनवान, विद्वान और यशस्वी होता है तथा अपने अच्छे कार्यों के लिए सराहा जाता है।

उदाहरणः लता मंगेशकर

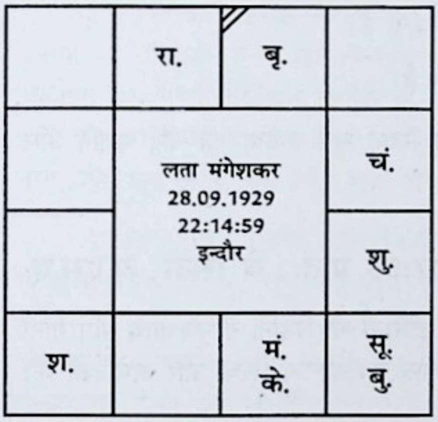

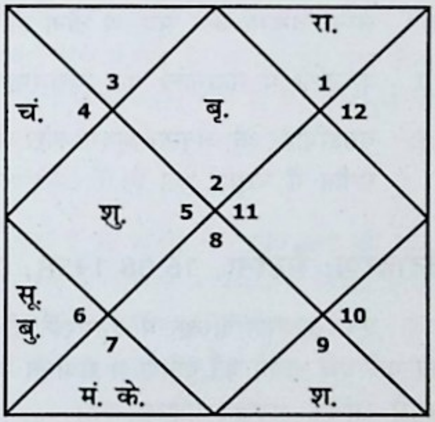

इन्होंने 20 अलग-अलग भारतीय भाषाओं में 50,000 से भी अधिक गाने गाए हैं और इन्हें सन् 2001 में भारत के सबसे बड़े नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया है।

1. गले से सम्बन्धित तृतीय भाव का स्वामी चन्द्रमा स्वराशि का होकर तृतीय भाव में बली होकर बैठा है। अपने अष्टम वर्ग में यह 6 शुभ बिन्दुओं के साथ स्थित है।
2. चन्द्रमा से सप्तमेश शनि, चन्द्रमा से तृतीय भाव को दृष्ट करता है।
3. चन्द्रमा से तृतीयेश, उच्च का होकर तृतीय भाव में बैठा है और इसे अत्याधिक बली बना रहा है। यह सूर्य के साथ युति करके बुधादित्य योग भी बना रहा है।
4. कला का कारक ग्रह शुक्र, चतुर्थ भाव में बैठा है।
5. लग्न से चतुर्थेश सूर्य उच्च के पंचमेश के साथ पंचम भाव में युति करके केन्द्र-त्रिकोण राजयोग बना रहा है।
6. लग्न से पंचम भाव बृहस्पति से दृष्ट है। पंचम भाव ही मुख्य आधार बिन्दु है। वर्गोत्तम द्वितीयेश एवं पंचमेश बुध, चतुर्थेश सूर्य के साथ स्थित है और योगकारक शनि से दृष्ट है।
7. चतुर्थ भाव में बैठा लग्नेश पुनः केन्द्र-त्रिकोण का सम्बन्ध स्थापित कर रहा है।

8. कोदण्ड राशि धनु से दशमेश शनि, दशम भाव को दृष्ट कर रहा है।
9. लग्न, चन्द्रमा और सूर्य, ये तीनों ही बली हैं।
10. कुण्डली में महाभाग्य योग विराजमान है।
11. वराहमिहिर के अनुसार वृषभ राशि में स्थित सूर्य जातक को नाद बजाने और संगीत में चतुराई देता है।

उदाहरण: मैडोना, 16.08.1958, 07:05 प्रातः, बे सिटी, यू.एस.ए.

एक साधारण परिवार में जन्म लेने के उपरान्त भी मैडोना ने पाश्चात्य पॉप गानों को गाने एवं नाचने की दुनिया में सर्वोच्च स्थान का आनन्द लिया और अमेरिका की सबसे अधिक धनवान महिला बनीं।

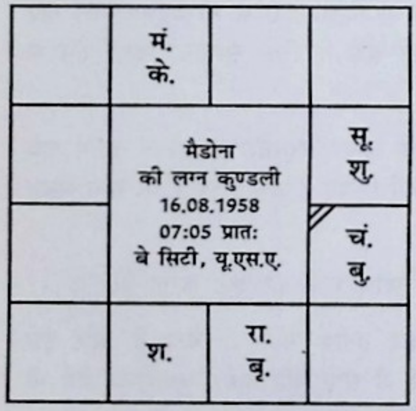

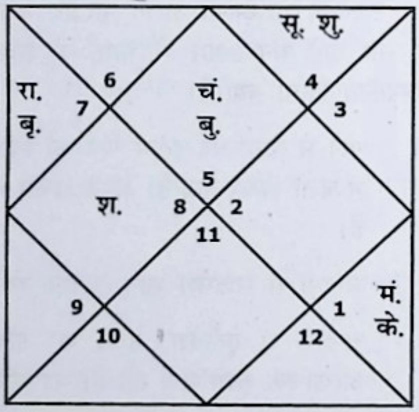

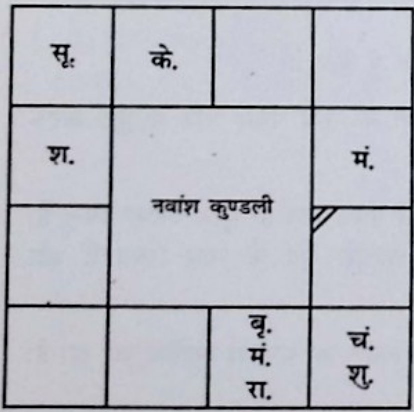

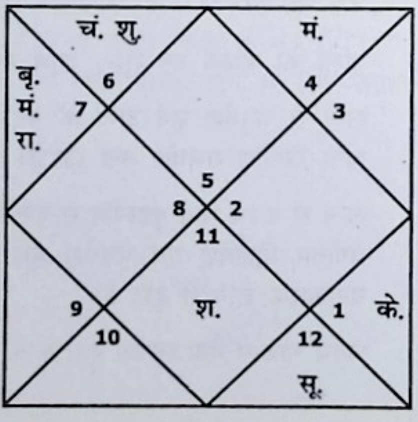

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

कुण्डली का दशमेश, कला का कारक ग्रह शुक्र है जो कला के अन्य ग्रह चन्द्रमा की राशि में लग्नेश सूर्य के साथ द्वादश भाव में बैठा है। चन्द्रमा की एक अन्य विशेषता यह भी है कि वह लग्नेश के साथ राशि परिवर्तन योग में है और बुध के साथ लग्न में स्थित है। इस प्रकार से कुण्डली के तीनों ही लग्न अर्थात लग्न, चन्द्र लग्न और सूर्य लग्न, बुध और शुक्र से प्रभावित हैं।

नवमेश मंगल, पंचमेश बृहस्पति से दृष्ट है जो कला में निपुण होने का एक अन्य योग है। यह योग राहु-केतु अक्ष पर स्थित है अर्थात अपरम्परागत कला। लग्न वर्गोत्तम है और कला प्रदर्शन करने का स्वामी तृतीयेश शुक्र, लग्नेश सूर्य के साथ युति करके कला का योग निर्मित कर रहा है। यह योग भाग्येश मंगल से भी दृष्ट होकर बल प्राप्त कर रहा है।

उदाहरण: नैना देवी, प्रसिद्ध ठुमरी गायिका। 27.09.1917, 01:48 प्रातः कलकत्ता।

(श्री के.एन. राव के मार्गदर्शन में लिखी गई और संपादित पुस्तक "फेमस वूमेन" में इनकी कुण्डली के विषय में विस्तृत चर्चा की गई है)

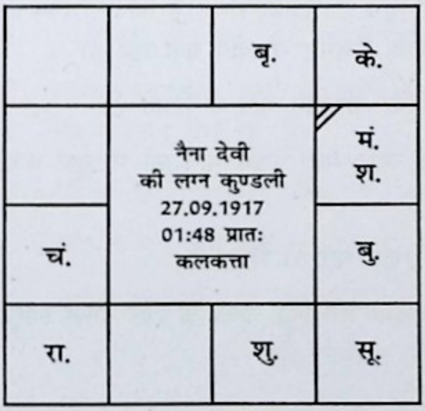

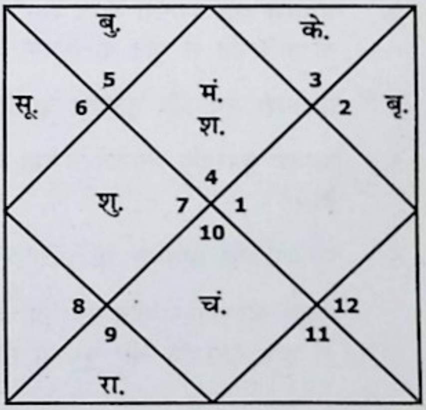

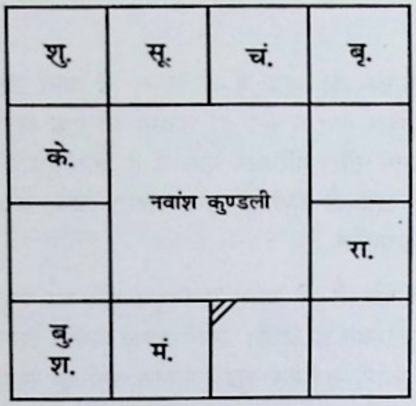

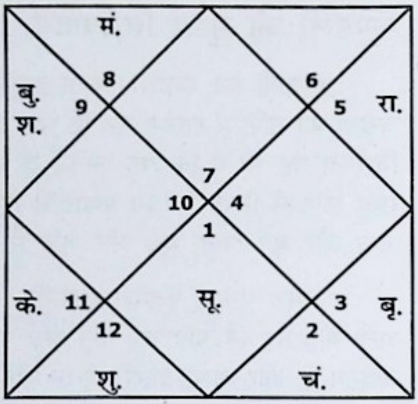

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

1. कला से सम्बन्धित ग्रह शुक्र और बुध, सूर्य के दोनों ओर बैठकर वेशि, वोशि और उभयचारी योग बना रहे हैं।

2. स्वराशि का होकर शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है और मालव्य योग बना रहा है। शुक्र कुण्डली के योगकारक मंगल से दृष्ट होकर राजयोग का निर्माण भी कर रहा है।

3. पंचमेश और दशमेश मंगल लग्न में नीच का होकर स्थित है लेकिन उच्चराशि के अधिपति से युति के कारण बली नीचभंग राजयोग बना रहा है।

4. द्वितीयेश सूर्य और तृतीयेश बुध, राशि परिवर्तन योग में स्थित हैं।

5. नवमेश बृहस्पति, लग्नेश चन्द्रमा के साथ-साथ पंचम भाव को भी दृष्ट करता है।

6. लग्नेश और सप्तमेश भी राशि परिवर्तन योग में स्थित हैं।

नवांश कुण्डली में तीन ग्रह सूर्य, चन्द्रमा और शुक्र उच्च के और मंगल स्वगृही हो रहे हैं तथा बृहस्पति और बुध में राशि परिवर्तन है।

उदाहरणः रविन्द्र नाथ टैगोर

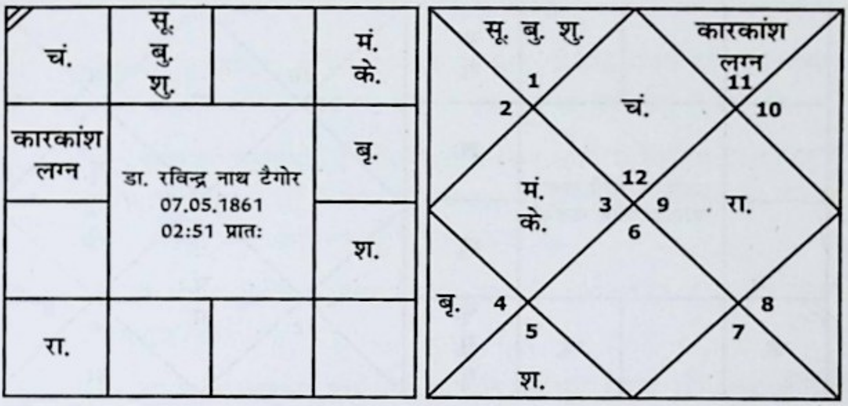

साहित्य के लिए नोबल पुरस्कार जीतने वाले तथा रविन्द्र संगीत और विश्वभारती विश्वविद्यालय के संस्थापक डा. रविन्द्र नाथ टैगोर की कुण्डली का अवलोकन करें। इस कुण्डली की मुख्य विशेषतायें इस प्रकार से हैं:

1. कुण्डली में सरस्वती योग विराजमान है जो अच्छे लेखक और संगीतकार होने के लिए अत्याधिक शुभ योग है।
2. शुक्र, बुध और उच्च का सूर्य द्वितीय भाव में स्थित हैं। यह कवि और संगीतकार होने का एक महत्वपूर्ण योग है।
3. लग्नेश बृहस्पति, पंचम भाव में उच्च का होकर बैठा है और एक उच्च श्रेणी का राजयोग बना रहा है।
4. लग्नेश बृहस्पति और पंचमेश चन्द्रमा, राशि परिवर्तन योग में स्थित हैं।
5. चतुर्थेश बुध और नवमेश मंगल राशि परिवर्तन योग में स्थित हैं।
6. लग्नेश बृहस्पति लग्न को दृष्ट कर रहा है।

उदाहरणः अमजद अली खान, प्रसिद्ध सरोद वादक

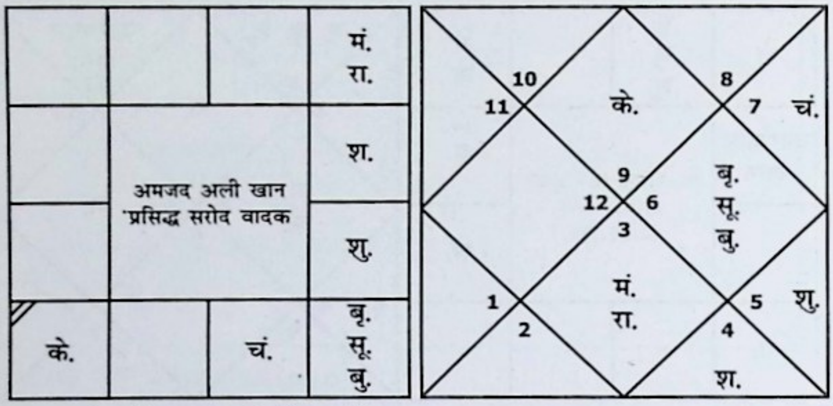

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

1. दशम भाव में बहुत बली राजयोग बन रहा है। सप्तमेश और दशमेश बुध, दशम भाव में बैठकर भद्र योग बना रहा है। बुध, दिग्बली नवमेश सूर्य और लग्नेश बृहस्पति की युति में भी है।
2. द्वितीयेश शनि अष्टम भाव में बैठकर धन भाव को दृष्ट कर रहा है।
3. पंचमेश मंगल सप्तम भाव में बैठकर लग्न को दृष्ट कर रहा है।
4. कलात्मक ग्रह बुध, शुक्र और बृहस्पति का सूर्य और चन्द्रमा पर प्रभाव है (अनफा, वोशि आदि योग)।

सिनेमा अभिनेता होने के योग

सिनेमा जगत से जुड़े विभिन्न अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की कुण्डलियों का विश्लेषण करने के बाद यह पाया गया कि निम्नलिखित विशेष योगों के कारण ही इन्होंने सिनेमा जगत में कुछ न कुछ विशेष किया है।

1. मंगल बली होकर राहु से सम्बन्ध बना रहा था। राहु अच्छे भाषण, रुप बदलने, अभिनय करने और जादू का कारक है।
2. छाया ग्रह होने के कारण राहु, फोटोग्राफी का कारक है और यह चन्द्रमा से सम्बन्ध बनाता है।

3. लग्न में मेष और वृश्चिक राशियों का उदय होना महत्वपूर्ण है और अधिकतर कुण्डलियों में इनकी ही पुनरावृति पायी जाती हैं।

4. अधिकांश कुण्डलियों में किसी न किसी भाव में चन्द्र-मंगल योग विराजमान है। यह योग स्वाभाविक प्रेरणा देता है और अच्छा अभिनेता बनाता है।

5. मिथुन राशि भी महत्वपूर्ण है और इसका सिनेमा जगत से सम्बन्ध है। सारावली के अनुसार मिथुन राशि में बैठा शुक्र जातक को शिल्पकला, चित्रकला, काव्य, संगीत, नाटक और अभिनय में निपुण बनाता है।

6. बृहस्पति, शुक्र और बुध अधिक महत्व रखते हैं। बुध संगीत, नृत्य और काव्य का कारक है।

7. वृहत् जातक के अनुसार बुध और बृहस्पति की युति गायन और नृत्य के प्रति रुझान देता है।

8. बृहस्पति और शुक्र का सम्बन्ध, संगीतकार होने का योग है।

9. शनि रुप बदलने और अभिनय करने का कारक है।

10. वीणा योग: जातक संगीत, नृत्य और नाटक का प्रेमी होता है।

11. एकादश भाव में मंगल और शुक्र के साथ स्थित पापी ग्रह संगीत और नृत्य से धन-सम्पति देते हैं।

12. चन्द्रमा के विषय में पराशर कहते हैं, "इसका बहुत ही मंगलकारी रुप और मीठी भाषा है।" बुध के पास आकर्षक शरीर है, वह हास्य-व्यंग पूर्ण है और इसमें किसी भी बात का मर्म समझने की शक्ति है।

13. पराशर ने शुक्र को आनन्द भोगने वाला, आकर्षक व्यक्तित्व के साथ सम्मोहित करने वाली आंखों वाला और कवि कहा है।

14. वराहमिहिर ने इस विषय में निम्नलिखित योगों को कहा है:

   - सुनफा अथवा अनफा योग में लिप्त बुध जातक को कार्यकुशल, मीठी वाणी वाला और ललित कलाओं का विद्वान बनाता है।
   - जब बुध और बृहस्पति का योग होता है तो यह योग जातक को मंच पर दिखने वाला अर्थात अभिनेता बनाता है। बुध और शुक्र की युति जातक को संगीत, नृत्य और अच्छे भाषण का प्रेमी बनाती है।

- बुध और शनि की युति भी कलात्मक गुणों को प्रदान करने वाली तथा सामान्य लेखन और चित्रकला देने वाली होती है। शुक्र और शनि की युति भी कला के गुण प्रदान करती है।
- मिथुन राशि में स्थित बुध जातक को कला और विज्ञान में निपुण बनाता है।
- सूर्य और शुक्र की युति मंच से धन देने वाली होती है।

15. फलदीपिका के अनुसार शुक्र के नवांश में स्थित दशमेश संगीत, गायन, नृत्य (जातक की भार्या भी कलाकार हो सकती है) अथवा काव्यात्मक गुणों (सिल्कादि बहुमूल्य परिधान सामग्री भी) से आजीविका प्रदान करता है।
16. मेष राशि में बैठा शुक्र और विशेषकर स्वनवांश में स्थित हो तो कला और संगीत देता है।
17. मानसागरी के अनुसार लग्न में स्थित बृहस्पति, बुध और सूर्य जातक को कला और काव्य में निपुण बनाता है।
18. लग्न अथवा दशम भाव में शनि और शुक्र की युति जातक को कला और संगीत में निपुण बनाती है।
19. लग्न अथवा दशम भाव में शुक्र, बुध और शनि की युति अथवा शुक्र और बुध की युति भी उपरोक्त परिणाम देती है।
20. बृहस्पति और बुध की युति, हास्यरस का योग है।

श्री के.एन. राव के अनुसार कला के प्रदर्शन करने के लिए लग्न और कारकांश लग्न से तृतीय भाव और तृतीयेश की अत्याधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके साथ ही साथ षष्टम भाव एवं षष्टेश और नवमेश भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

उदाहरणः मार्लिन मोन्रो

(श्री के.एन. राव की पुस्तक 'कारकांश लग्न और जैमिनी की मंडूक दशा' से उद्धृत)

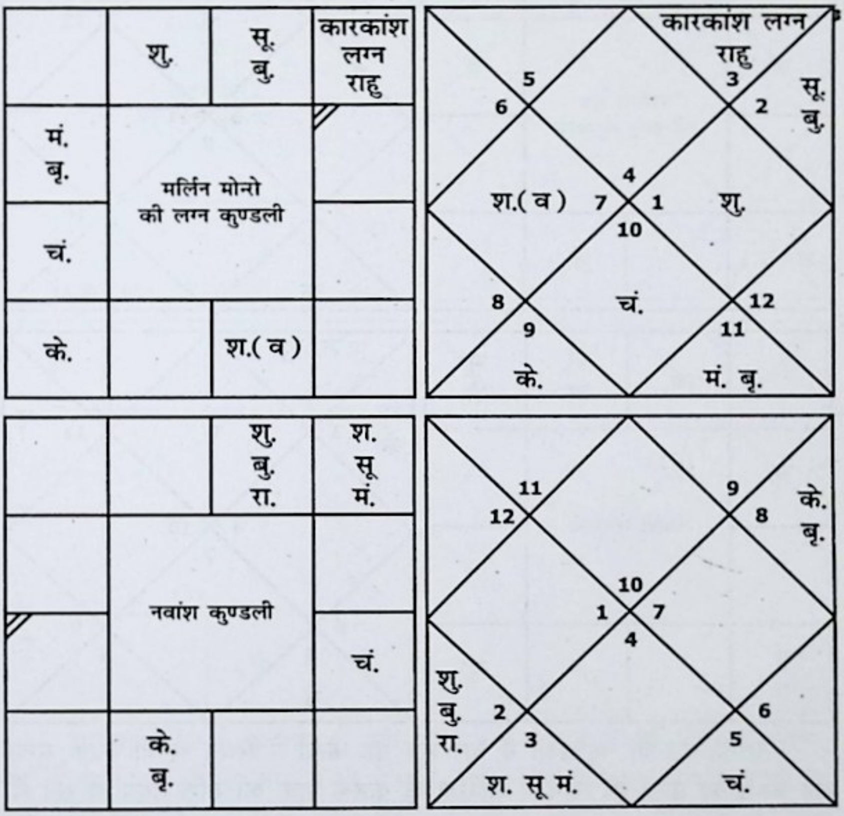

आत्मकारक - शनि   कारकांश लग्न - मिथुन

मार्लिन मोन्रो हालीवुड की अत्याधिक उत्तेजक अभिनय करने वाली अभिनेत्री थी। इनका जन्म 1 जून, 1926 को प्रातः 09:30 पर लॉज एन्जिलस में हुआ था। इनकी कुण्डली में कारकांश लग्न से तृतीय भाव की सिंह राशि पर चन्द्रमा और शुक्र की जैमिनी दृष्टि है। प्रसिद्धि देने वाला शनि, कारकांश लग्न से दशमेश बृहस्पति को दृष्ट कर रहा है।

उदाहरणः नरगिस दत्त, 01.06.1929, 05:07 प्रातः कलकत्ता

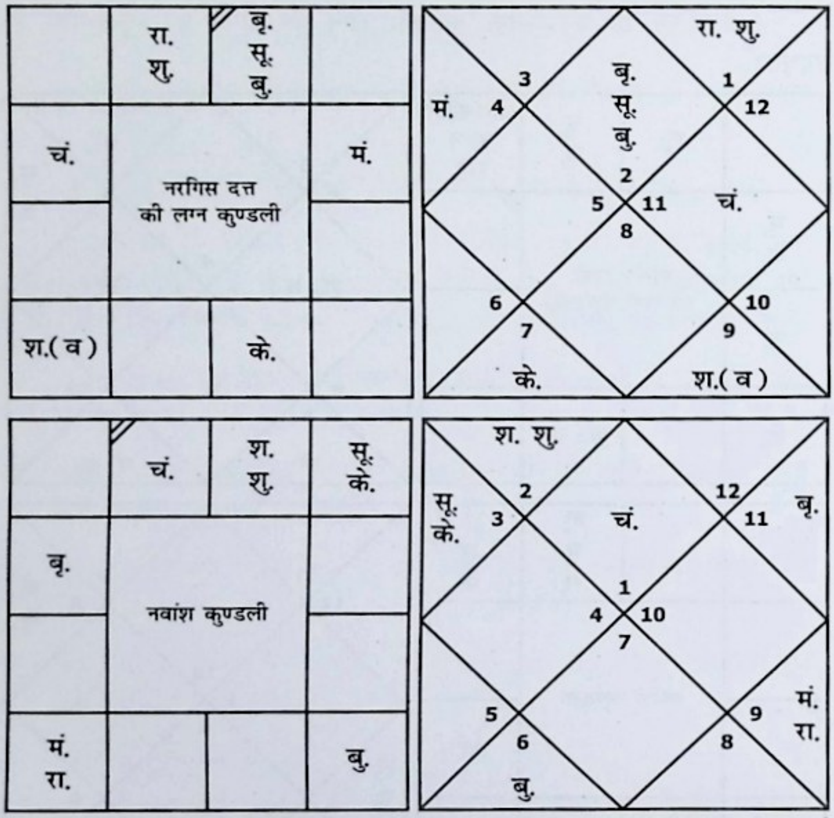

नरगित दत्त की कुण्डली में चार शुभ ग्रह केन्द्रों में स्थित थे जो उनके सुन्दर होने को इंगित करते हैं। लग्न में सुन्दरता के कारक शुक्र की राशि उदय हो रही थी और सुन्दरता का अन्य कारक ग्रह द्वितीयेश बुध लग्न में बैठा था। ***"यदि द्वितीयेश अथवा द्वादश शुभ ग्रह होकर लग्न में स्थित हो तो यह एक आकर्षक शरीर देता है।"***

नवांश कुण्डली में शुक्र और शनि की युति सिनेमा जगत में प्रसिद्ध होने का योग है।

शुक्र और राहु का मंगल से केन्द्र में होना केन्सर की बिमारी से मृत्यु होने का योग है।

उदाहरणः राज कपूर के कुण्डली

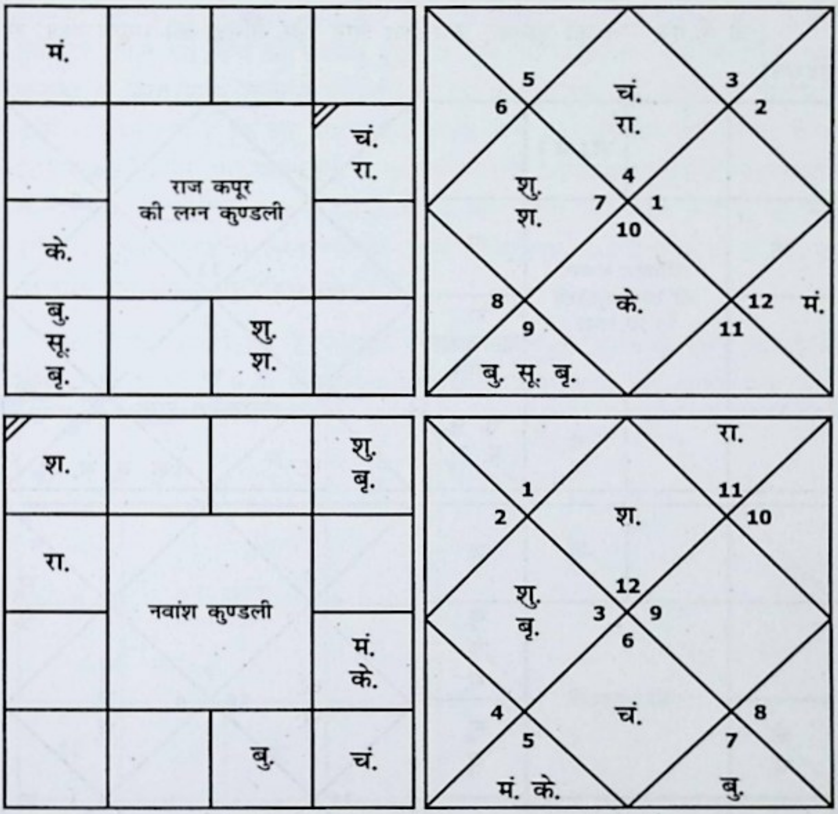

उपरोक्त कुण्डली के लग्न में कर्क राशि उदय हो रही है और लग्नेश चन्द्रमा, राहु के साथ युति करके लग्न में ही बैठा है। चतुर्थ भाव में तुला राशिगत उच्च का शनि और शुक्र बैठा है, मीन राशि का मंगल नवम भाव में और तीन ग्रह बुध, बृहस्पति एवं सूर्य धनु राशि के होकर षष्टम भाव में बैंठे हैं।

बुध और बृहस्पति हास्यरस को इंगित करते हैं और सूर्य की युति इसमें गम्भीर रंग प्रदान कर रही है। सूर्य, बुध और बृहस्पति की युति कला की भी युति है।

उदाहरण: अमिताभ बच्चन, 11 अक्टूबर, 1942

(श्री के.एन. राव की पुस्तक 'कारकांश लग्न और जैमिनी की मंडूक दशा' से उद्धृत)

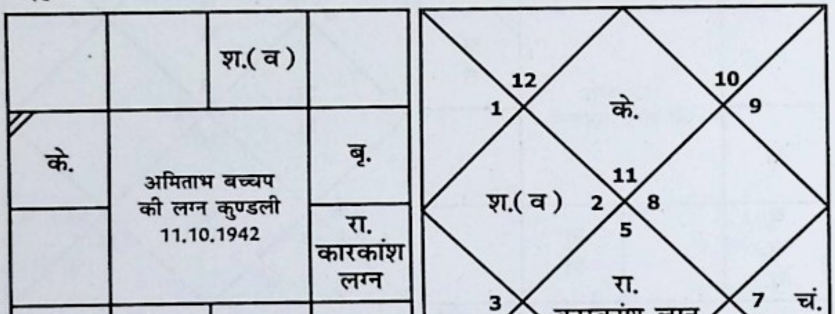

हिन्दी सिनेमा जगत के सबसे अधिक सफल अभिनेता और सदी के महानतम अभिनेता अमिताभ बच्चन की कुण्डली में शुक्र की राशियां, शनि और चन्द्रमा के द्वारा गृहीत हैं और कन्या राशि में शुक्र की युति तीन ग्रहों से हो रही है जिसमें बुध भी शामिल है।

उच्च का बृहस्पति वर्गोत्त॰; है। कारकांश लग्न सिंह राशि में है और इससे दशम भाव में यशस्वी बनाने वाला शनि बैठा है। लग्न से तृतीय भाव चन्द्रमा से दृष्ट है और तृतीयेश मंगल की नीच के नवमेश शुक्र से युति है। कारकांश लग्न से दशम भाव चन्द्रमा के साथ-साथ वर्गोत्तम बृहस्पति से दृष्ट है। श्री राव का कहना है कि इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि यह संसार ऐसे किसी अन्य अभिनेता को नहीं जानता है जो इतने सारे लोगों के द्वारा पसन्द किया जाता है। अर्थात अमिताभ बच्चन के सबसे अधि क प्रशंसक हैं और श्री राव के अनुसार यहां याद रखने वाली बात यह है कि यदि शनि या बुध कारकांश लग्न या/और इससे दशम भाव को दृष्ट करते हैं तो यह यशस्वी होने को चिरपरिचित योग है।

श्री राव आगे कहते हैं कि यदि चन्द्रमा और शुक्र कारकांश लग्न और इससे दशम भाव को दृष्ट करते हैं तो यह भी प्रसिद्धि प्राप्त करने का अच्छा योग है।

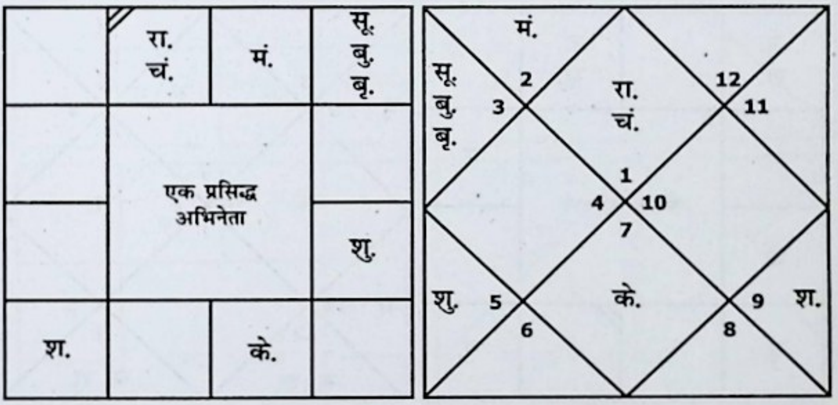

उपरोक्त कुण्डली का अवलोकन करें। इस कुण्डली में अपने स्वामी के साथ-साथ पंचमेश एवं नवमेश की स्थिति और दशमेश की दृष्टि के कारण बली राजयोग बनाता हुआ तृतीय भाव अत्याधिक बल प्राप्त कर रहा है। चन्द्रमा, शनि और शुक्र एक-दूसरे से त्रिकोण में बैठे हैं। ये ग्रह कला के मंचन के लिए हैं।

उदाहरण: रजनी कान्त, 12 दिसम्बर, 1950, 23:55

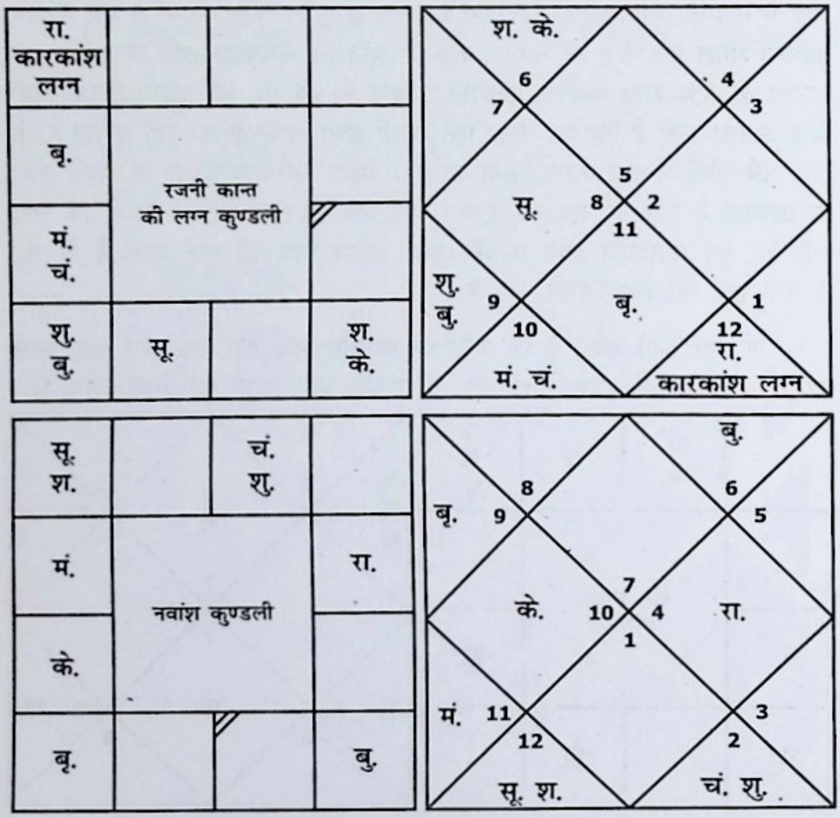

आत्मकारक - सूर्य कारकांश लग्न - मीन

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

1. तृतीयेश एवं दशमेश शुक्र पंचम भाव में द्वितीयेश एवं एकादशेश के साथ बैठा है। नवांश कुण्डली में बुध उच्च का हो जाता है।

2. शुक्र भी नवांश कुण्डली में स्वगृही होकर उच्च के दशमेश, चन्द्रमा की युति में होने से बली हो जाता है।

3. कारकांश लग्न मीन राशि में है जो प्रसिद्धि के कारक शनि से दृष्ट है।

4. चन्द्रमा को लग्न मानकर देखने पर यह कुण्डली अधिक स्पष्ट हो जाती है। चन्द्रमा तीनों शुभ ग्रहों बुध, शुक्र और बृहस्पति के साथ सुनफा और अनफा योग बना रहा है।

उदाहरण: ऐश्वर्य राय, 01.11.1973, 04:05 प्रात: मैंगलोर

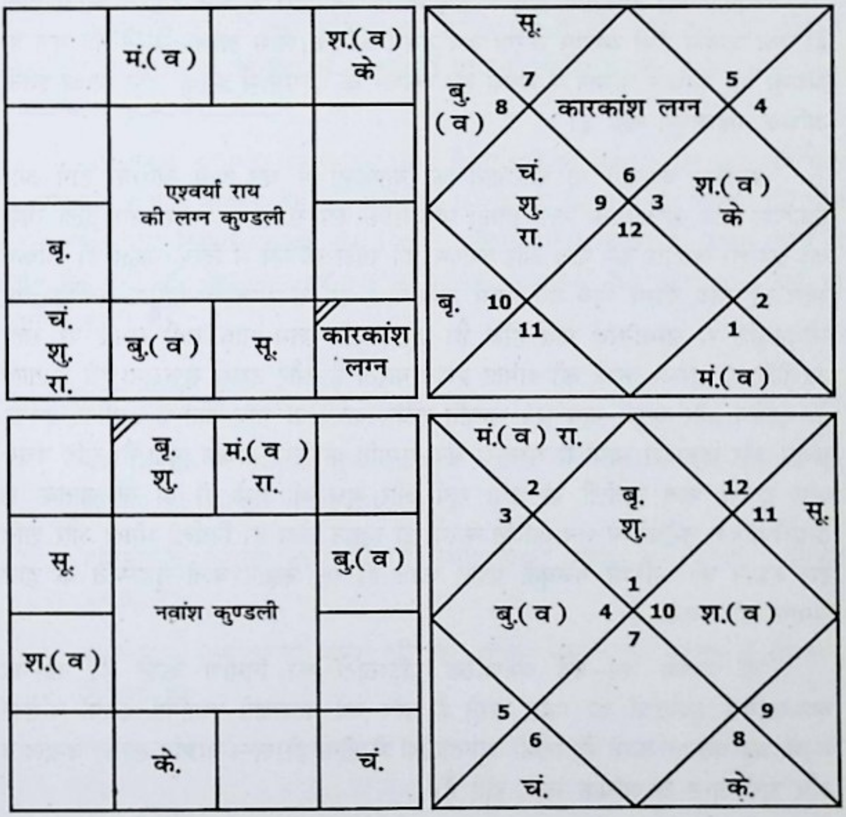

आत्मकारक - चन्द्रमा   कारकांश लग्न - कन्या

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

1. चतुर्थ-दशम भाव अक्ष में चन्द्रमा, शुक्र और शनि, राहु-केतु अक्ष पर बैठे हैं जो सिनेमा और जनता से सम्बन्ध होने की सूचना दे रहे हैं।

2. चन्द्रमा का शुक्र, बुध, बृहस्पति और शनि से सम्बन्ध है जो अभिनेता के रुप में प्रसिद्ध होने का एक चिरपरिचित योग है।

आजीविका - व्यापार

व्यापार का अभिप्राय क्रय-विक्रय करके स्वप्रयास से धन अर्जित करना होता है। एक जातक तभी व्यापार करेगा जब उसमें अधिक लाभ अर्जित करने का गुण हो अथवा वह अधिक कमाने में समर्थ हो। व्यापार के तात्पर्य में इसके लिए शिक्षा इतनी अधिक महत्वपूर्ण नहीं है।

इसलिए व्यापारी या कारोबारी की कुण्डली में धन योग अधिक होगें और एकादश भाव अत्याधिक बली होगा। पारम्परिक रुप से सप्तम भाव और तुला राशि को क्रमशः व्यापार का भाव और व्यापार की राशि के रुप में लिया जाता है। लेकिन साथ ही साथ दशम भाव का इसमें आवश्यक रुप से सम्बन्ध आयेगा क्योंकि यह जीवनवृत्ति से सम्बन्धित भाव होता है। एक बली दशम भाव सही समय पर सही आजीविका प्रारम्भ करने की क्षमता प्रदान करता है और उसमें सफलता भी दिलाता है। द्वितीय और चतुर्थ भाव धन-सम्पति संचय करने के भाव होते हैं इसलिए इनका पंचम और एकादश भावों से सम्बन्ध धन-सम्पति के लिए अच्छा होता है। यदि पंचम और द्वादश भाव निर्बली हों तथा सूर्य और बुध भी ऐसे ही हों तो जातक में असंवैधानिक तरीकों से धन अर्जित करने का रुझान होता है। निर्बली मंगल और शनि इस रुझान को अधिक मजबूती प्रदान करते हैं। यह रुझान बली बृहस्पति के द्वारा समाप्त हो सकता है।

जो जातक बड़े-बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों का निर्माण करते हैं, नई-नई व्यवसायिक इकाइयों का गठन करते हैं और नये कारखाने स्थापित करके करोड़ों रुपयों का व्यापार करते हैं उनकी कुण्डलियों में तीनों ही लग्न अर्थात लग्न, चन्द्रलग्न और सूर्य लग्न अत्याधिक बली होते हैं।

जो जातक अपना स्वयं का कारोबार स्थापित करना चाहते हैं उनके लिए निर्बली लग्न और निर्बली चन्द्रमा मुख्य बाधक होते हैं। निर्बली सूर्य अथवा सूर्य लग्न का अभिप्राय कार्य उर्जा की कमी और कार्य क्षमता एवं उत्साह की कमी होता है। इसका अर्थ किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने की आदत की कमी और दूसरों के उपर निर्भरता भी होता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में बड़े एवं सार्थक निर्णय नहीं ले पाते हैं और उत्तरदायित्व वहन करने से बचते हैं। यदि एक लग्न निर्बली हो और दूसरा बली हो तो ये एक-दूसरे के पूरक होते हैं।

एक व्यापारी को कई जोखिम उठाने पड़ते हैं और इसके लिए मंगल का बली होना अत्याधिक आवश्यक होता है। साथ ही साथ उसे भाग्यवान भी होना चाहिए जिसके लिए नवम भाव का बल महत्वपूर्ण हो जाता है। भाग्यवान होने के लिए बृहस्पति और निरन्तर कार्य एवं कठोर श्रम करने के लिए शनि का बली होना आवश्यक होता है।

पारम्परिक रुप से बुध वाणिज्य का कारक ग्रह है और शुक्र धन की देवी है इसलिए इन दोनों की भूमिका भी व्यापार में महत्वपूर्ण होती है और इनको बली होना आवश्यक होता है।

जो जातक आभूषण का व्यापार करते हैं उनके लिए चन्द्रमा और शुक्र की युति आवश्यक होती है क्योंकि यह युति आभूषण की कारक है। बुध और चन्द्रमा की युति या सम-सप्तम स्थिति अथवा 2/8 स्थिति हानियां इंगित करती है। दशम भाव में राहु-बुध की युति अचानक लाभ के साथ-साथ अचानक होने वाली हानि को भी इंगित करती है।

शास्त्रीय ग्रन्थों में दिये गये योगः

1. फलदीपिका के अनुसार तुला राशिगत चन्द्रमा यदि शुक्र से दृष्ट हो तो यह जातक को व्यापारी बनाता है।
2. होरासार के अनुसार तुला राशि में स्थित चन्द्रमा जातक को व्यापार में निपुण बनाता है।
3. होरासार के अनुसार ही कन्या राशि का चन्द्रमा जातक को व्यापार में सफलता दिलाता है।
4. जातकतत्वम् के अनुसार चन्द्रमा और मंगल की युति व्यापार की वृद्धि करती है।
5. केन्द्र, त्रिकोण अथवा एकादश भाव में स्थित और शुभ ग्रहों से दृष्ट दशमेश जातक को लेन-देन करने वाला व्यापारी बनाता है।
6. महर्षि पराशर ने बुध और चन्द्रमा को व्यापार और कृषि कार्य करने वाली वैश्य जाति से सम्बन्धित बताया है। बुध व्यापार और चन्द्रमा कृषि का कारक ग्रह है। बुध और शुक्र 'रजोगुण' वाले ग्रह हैं अर्थात जो संसारिक सुख से जुड़े होते हैं। ये ग्रह संसारिक सुखों की तृष्णा और उनके प्रति जातक के लगाव को

इंगित करते हैं। इसलिए बुध और शुक्र अधिक धन अर्जित करने और मैथुन के सुख सहित तथाकथित अच्छे सुखों को भोगने की अभिलाषा देते हैं।

7. महर्षि पराशर के अनुसार शनि का सम्बन्ध 'शूद्र जाति' से है जिसे आधुनिक संदर्भ में नौकरी-पेशा लोगों से लिया जा सकता है। यदि कुण्डली में शनि बली न हो तो इसका दशम भाव और दशमेश से सम्बन्ध स्वयं का कारोबार करने के लिए शुभ नहीं होता है।

8. शास्त्रीय ग्रन्थों में अनेक धनयोग दिये गये हैं जिनका व्यापारी की कुण्डली में होना उसकी सफलता को सुनिश्चित करता है। इन योगों को इस पुस्तक के एक अन्य अध्याय में विस्तार से दिया गया है।

9. यदि कुण्डली में पांच या पांच से अधिक ग्रह दृष्ट भावों अर्थात सप्तम से द्वादश भावों में होते हैं और दशम भाव/दशमेश पर शनि का प्रभाव नहीं होता है तो सामान्यतः ऐसा जातक अपना स्वतन्त्र व्यापार करता है।

   यदि पांच ग्रह दशम से तृतीय भाव में होते हैं तो भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त होते हैं। इन भावों में पांच से अधिक ग्रह होने का अर्थ होता है कि जातक में अपना स्वतन्त्र व्यापार करने की क्षमता है।

10. व्यापारी की कुण्डली में केन्द्र और त्रिकोण के सम्बन्ध से बनने वाले शुभ राजयोग भी होने चाहिए। ये योग कुण्डली के बल में वृद्धि करते हैं।

उदाहरणः हेरी फोर्ड, 30.07.1863

		के.	
	हैरी फोर्ड की लग्न कुण्डली 30.07.1863		सू. बु.
चं.			मं.
	रा.		श. शु. बृ.

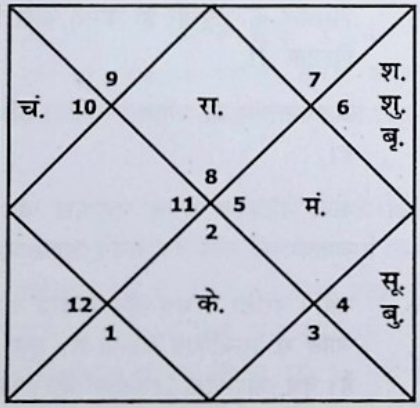

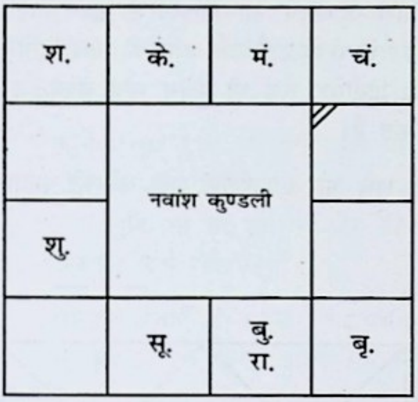

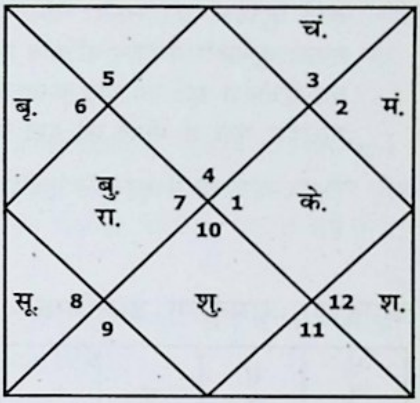

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

1. पांच ग्रह कुण्डली के दृष्ट भाग में बैठकर कुण्डली को बल प्रदानकर रहे हैं।
2. लग्न, लग्नेश से,चन्द्रलग्न बृहस्पति से और सूर्य लग्न अपने स्वामी से दृष्ट होकर बली हैं।
3. तृतीय भाव में बैठा चन्द्रमा पंचमेश और द्वितीयेश बृहस्पति से दृष्ट है और बृहस्पति स्वयं एकादश भाव में बैठा है। चन्द्रमा को दशमेश सूर्य दृष्ट करके इसका सम्बन्ध दशम भाव से स्थापित कर रहा है। इस प्रकार ग्रहों की यह स्थिति अत्याधिक धन कमाने के लिए अत्याधिक बली स्थिति है। दशमेश सूर्य 'बुधादित्य' योग बनाता हुआ नवम भाव में बैठा है।
4. सूर्य लग्न अपने स्वामी चन्द्रमा से दृष्ट है और इसमें शुभ ग्रहों में से एक, बुध बैठा है। पंचमेश बृहस्पति पंचम भाव में अपनी राशि को दृष्ट कर रहा है जिसके परिणामस्वरुप धन भाव अर्थात द्वितीय भाव में बृहस्पति की धनु राशि भी बल प्राप्त कर रही है। यह एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।
5. कुण्डली में दशमेश सूर्य और नवमेश चन्द्रमा का दृष्टि सम्बन्ध होने से बली धर्माधिपति-कर्माधिपति योग का निर्माण हो रहा है।
6. पंचमेश बृहस्पति का सप्तमेश शुक्र और चतुर्थेश शनि से सम्बन्ध एक अन्य राजयोग बना रहा है। चतुर्थ भाव और शुक्र वाहन को इंगित करते हैं। बृहस्पति धन भाव, द्वितीय का स्वामी होकर लाभ के भाव एकादश में इनसे युति कर रहा है।

7. लग्न कुण्डली का लग्नेश और नवांश कुण्डली का योगकारक ग्रह मंगल, नवांश कुण्डली में लाभ के भाव एकादश में बैठा है और धन के भाव द्वितीय एवं द्वितीयेश सूर्य को दृष्ट करता है। द्वितीयेश सूर्य भी पंचम भाव में बैठकर एकादश भाव में मंगल को दृष्ट करता है।

8. नवांश कुण्डली में बृहस्पति एकादश भाव और एकादशेश शुक्र को भी देखता है।

उदाहरण: रामकृष्ण डालमिया

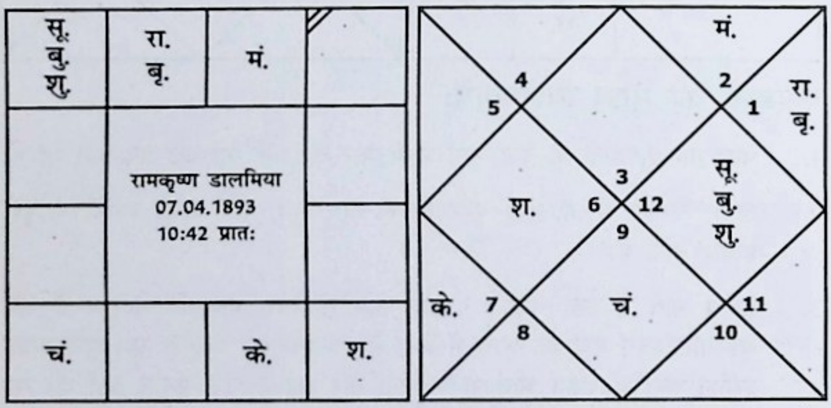

यह एक बहुत बड़े उद्योगी थे जिन्होंने सीमेन्ट, चीनी मिलें बनायीं और डालमिया नगर स्थापित किया।

कुण्डली में स्थित धनयोग:

1. तीनों लग्न बली हैं। लग्नेश बुध चतुर्थ भाव में अपनी राशि को दृष्ट करता है जिसके फलस्वरुप लग्न में स्थित उसकी दूसरी राशि को भी बल प्राप्त हो रहा है। लग्न पर नवमेश शनि और धनेश चन्द्रमा की भी दृष्टि है।

2. बृहस्पति अपनी राशि और उसमें स्थित चन्द्रमा को दृष्ट कर रहा है जिससे उसकी दशम भाव में स्थित उसकी दूसरी राशि को भी बल प्राप्त हो रहा है जो सूर्य लग्न भी है। इस प्रकार सूर्य लग्न भी स्वत: ही बली हो रहा है।

3. सूर्य दिग्बली होकर दो शुभ ग्रहों शुक्र और बुध के साथ बैठा है तथा भाग्येश शनि से भी दृष्ट है।

4. द्वादश में स्थित मंगल, षष्टम भाव में अपनी राशि को दृष्ट करता है जिसके परिणाम स्वरुप एकादश भाव में स्थित इसकी दूसरी राशि भी बल प्राप्त कर रही है।

5. लग्नेश बुध दशम भाव में नीच का होकर स्थित है लेकिन साथ ही साथ नीचभंग राजयोग भी बना रहा है। इसकी पंचमेश शुक्र और दिग्बली सूर्य के साथ युति भी हो रही है और यह युति नवमेश शनि से दृष्ट होकर बली राजयोग बना रही है।

6. जातकपारिजात के अनुसार जब प्रथम, द्वितीय या एकादश भाव अपने स्वामियों से दृष्ट हों तो जातक अत्याधिक धनवान होता है।

उदाहरणः जुगल किशोर बिड़ला, 23.05.1883।

इन्होंने प्रसिद्ध बिड़ला मन्दिर बनवाया था।

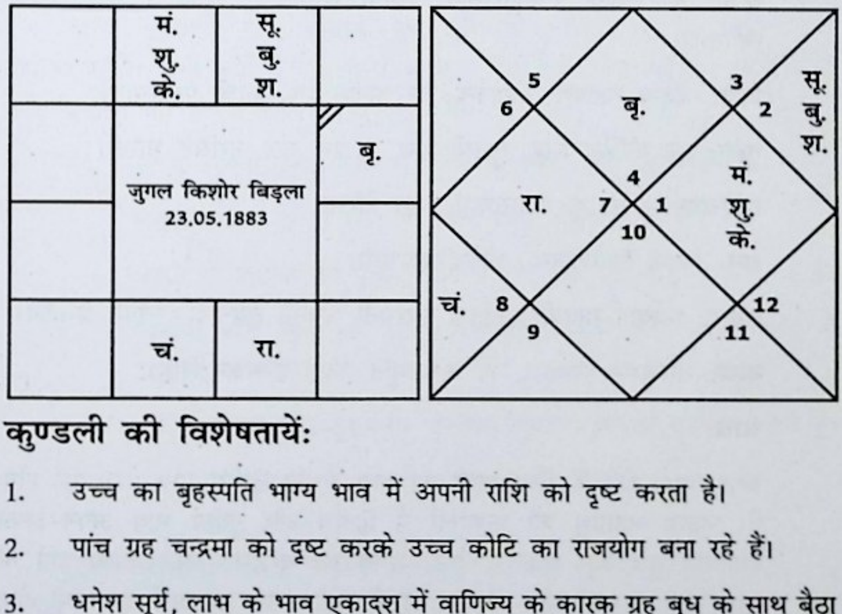

कुण्डली की विशेषतायें:

1. उच्च का बृहस्पति भाग्य भाव में अपनी राशि को दृष्ट करता है।

2. पांच ग्रह चन्द्रमा को दृष्ट करके उच्च कोटि का राजयोग बना रहे हैं।

3. धनेश सूर्य, लाभ के भाव एकादश में वाणिज्य के कारक ग्रह बुध के साथ बैठा है।

4. दशमेश मंगल दिग्बली होकर दशम भाव में चतुर्थेश और एकादशेश शुक्र के साथ बैठा है।

उच्च स्तर की आत्मायें - महात्माओं की कुण्डलियां

परिचयः

स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा था कि भारत में सभी बड़े आन्दोलनों का संचालन धार्मिक प्रवृति के व्यक्तियों के द्वारा किया गया है। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति का प्रयास अन्तिम सत्य अर्थात मोक्ष प्राप्ति के लिए होना चाहिए।

उत्तरदायी घटकः

1. **लग्न में उदय राशि।** महात्माओं और श्रेष्ठ आत्माओं के लिए मुख्य भूमिका निभाने वाली राशियां और इन राशियों में जन्म लेने वाले महापुरुष इस प्रकार से हैं:

   कर्कः शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, स्वामी शिवानन्द, अरविन्दो घोष, स्वामी त्यागराज।

   सिंहः चेतन्य महाप्रभु, योगानन्द, गुरु नानक देव, कांची परमाचार्य।

   तुलाः गुरु गोविन्द सिंह, तुलसी दास, के.एन. राव, नरसिंह भारती।

   वृश्चिकः श्रृंगेरी के शंकराचार्य, मदर टेरिसा।

   धनुः स्वामी विवेकानन्द, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी।

   मकरः भगवान महावीर, जैतिन्द्र सरस्वती, स्वामी तुरीनन्दा, स्वामी प्रभुपाद।

   कुंभः रामकृष्ण परमहंस, जे. कृष्णामूर्ति, योगी हरभजन सिंह।

2. **भावः**

   श्रेष्ठ वक्ता होने के लिए वाणी का भाव अर्थात द्वितीय भाव महत्वपूर्ण होता है। चेतन्य महाप्रभु की कुण्डली में द्वितीय और तृतीय भाव अपने-अपने स्वामियों बुध और शुक्र से दृष्ट थे। ये ग्रह बुद्धिमता और काव्य होने के साथ-साथ सरस्वती योग भी बना रहे थे। तृतीय भाव का अर्थ गायन भी होता है और इन्होने भगवान का नाम गाकर भक्ति आन्दोलन फैलाया था।

   गुरु नानक की कुण्डली में भी तृतीयेश, तृतीय भाव में बैठा था। इन्होने भी भगवान के नाम को भजनों में गाकर अपना संदेश जन-जन तक फैलाया था।

स्वामी विवेकानन्द की कुण्डली के द्वितीय भाव में दो शुभ ग्रह बुध और शुक्र थे। दशमेश बुध का शनि के साथ राशि परिवर्तन भी था।

पंचम भावः मंत्र सिद्धि।

अष्टम भावः समाधी।

नवम भावः धर्म भाव। सन्यासियों की कुण्डलियों में नवम भाव, नवमेश और बृहस्पति बली होते हैं।

दशम भावः कर्म स्थान।

पराशर ने नवम भाव को धार्मिक दिखने और दशम भाव को धार्मिक कृत करने का भाव कहा है।

ग्रहः

शनि, बृहस्पति, सूर्य, चन्द्रमा, बुध और केतु। इनको नवांश, द्रेष्कोण एवं विंशाश सहित सभी वर्गों में एक-दूसरे से शुभ स्थिति में होना चाहिए। इसमें केन्द्र और त्रिकोण की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण है।

- नवम अथवा दशम भाव में स्थित बृहस्पति, ब्रह्म ज्ञान देता है।
- दशम अथवा द्वादश भाव में स्थित शनि, वैराग्य देता है।
- दशम में दशमेश की पंचम दृष्टि से दृष्ट सूर्य और राहु सन्यास देते हैं।
- चन्द्रमा और केतु की युति, विशेषकर चतुर्थ और पंचम भाव में आत्मशक्ति देती है।
- शनि, चन्द्रमा और बृहस्पति धार्मिक सुधारक अथवा तपस्वी बनाते हैं।
- शनि एवं चन्द्रमा वैराग्य और एकाग्रता देते हैं।

3. आत्मकारक और नैसर्गिक आत्मकारक सूर्यः

पराशर के अनुसार जिस प्रकार एक राजा अपने देश का सबसे अधिक प्रसिद्ध व्यक्ति एवं सभी विषयों का प्रमुख होता है और किसी को भी कारागर में डालने अथवा मुक्त करने के अधिकार से सम्पन्न होता है, उसी प्रकार सभी कारकों में से आत्मकारक सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है जो जातक के

विषय में आधारभूत सूचना देता है। जिस प्रकार कोई भी मंत्री, प्रधानमंत्री के विरुद्ध जाकर कार्य नहीं कर सकता है उसी प्रकार अन्य कारकों का विभिन्न कृत्यों पर स्वतन्त्र अधिकार नहीं होता है। यदि आत्मकारक प्रतिकूल हो तो अन्य कारक अनुकूल परिणाम नहीं दे सकते हैं। इसी प्रकार यदि आत्मकारक अनुकूल हो तो अन्य कारक प्रतिकूल परिणाम नहीं दे सकते हैं।

विश्लेषण करने पर यह भी देखा गया है कि जिन व्यक्तियों को भगवान का आर्शीवाद प्राप्त होता है उनकी कुण्डलियों में जैमिनी आत्मकारक और नैसर्गिक आत्मकारक सूर्य अत्याधिक बली होता है।

अत: आत्मकारक सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह होता है। जिस प्रकार सूर्य के चारों ओर अन्य ग्रह भ्रमण करते हैं और प्रकाश के लिए सूर्य पर निर्भर रहते हैं उसी प्रकार अन्य कारक भी आत्मकारक के चारों ओर भ्रमण करते हैं और शुभाशुभ प्रभाव देने के लिए आत्मकारक पर निर्भर होते हैं। यदि आत्मकारक उच्च का हो या शुभ राशि में हो या शुभ ग्रहों की युति में हो तो चाहे जातक कारागर में ही क्यों न हो वह मुक्त होगा, धार्मिक स्थानों में वास करेगा और मोक्ष को प्राप्त होगा।

शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, त्यागराज, भगवान महावीर, जे. कृष्णामूर्ति, योगानन्द, मां आनन्दमाई की कुण्डली में और चेतन्य महाप्रभु की नवांश कुण्डली में उच्च का सूर्य था, स्वामी विवेकानन्द की कुण्डली में सूर्य वर्गोत्तम था तथा स्वामी शिवानन्द, अरविन्दो घोष एवं तुलसीदास की कुण्डलियों में स्वगृही था।

रामकृष्ण परमहंस की कुण्डली में आत्मकारक मंगल उच्च का था आत्मकारक से नवम में उच्च का शुक्र, बृहस्पति से दृष्ट था।

मीन नवांश में बैठा आत्मकारक मोक्ष देता है। यदि नवांश में आत्मकारक मीन राशि में हो तो ऐसा जातक धार्मिक और परमार्थ के कार्यों को करने के लिए ललायित रहता है और मोक्ष प्राप्त करता है। यदि नवांश में बृहस्पति भी आत्मकारक से सम्वन्ध स्थापित करता है तो जातक वेदों अथवा धार्मिक कर्मों में सुशिक्षित होता है।

यदि कारकांश में अथवा कारकांश से पंचम भाव में बृहस्पति हो तो जातक कई मार्गों से ज्ञान प्राप्त करता है और वैदिक साहित्य का ज्ञाता होता है। रमण महर्षि और अरविन्दो घोष की कुण्डलियाँ इसके उदाहरण हैं।

कारकांश से नवम भाव में बैठा शुभ ग्रह सत्यवादी विचारधारा देता है (रमण महर्षि की कुण्डली)।

कारकांश में केतु बैठा हो और शनि से दृष्ट हो तो जातक को तपस्वी बनाता है (अरविन्दों घोष की कुण्डली)। यदि मात्र शनि बैठा हो और उस पर किसी की दृष्टि न हो तो यह जातक को अतिवादी बनाता है।

नवांश में आत्मकारक और केतु पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक दीक्षित अर्थात यज्ञ करने वाला होता है (कांची परमाचार्य की कुण्डली)।

यदि द्वादश भाव में शुभ ग्रह हो और द्वादशेश उच्च का हो या शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो जातक को अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पराशर के अनुसार यदि पंचमेश नवम भाव में हो तो जातक राजकुमार या राजकुमार के समान होगा, कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का लेखक होगा, प्रसिद्ध होगा और अपने वर्ग का श्रेष्ठ व्यक्ति होगा। पंचमेश की नवम भाव की स्थिति लेखकों के लिए भी अच्छी होती है।

4. **वैराग्य:**

सभी आध्यात्मिक प्राप्तियों का आधार वैराग्य ही होता है। यदि महात्मा बुध की कुण्डली में वैराग्य नहीं होता तो वह चक्रवर्ती राजा बनते। आदिशंकराचार्य के अनुसार जिन जातकों में अत्याधिक वैराग्य होता है उनके लिए समाधी प्राप्त करना सरल होता है। अर्थात जो जातक अपने विचारों को नियंत्रित कर सकते हैं उनके लिए समाधी की अवस्था प्राप्त करना कठिन नहीं होता है। समाधी से सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है, सत्य के ज्ञान से जातक अपने बन्धनों से मुक्त होता है और मुक्त होने पर मोक्ष की प्राप्ति करता है।

शनि, राहु का बुद्धि अथवा चतुर्थ भाव और बुद्धि के कारक चन्द्रमा पर प्रभाव होने से वैराग्य आता है। सभी मामलों में यह पाया गया कि चन्द्रमा पर शनि, मंगल या राहु की दृष्टि थी अथवा चन्द्रमा, मंगल की राशि में स्थित होकर शनि से दृष्ट था अथवा शनि की राशि में स्थित होकर मंगल से दृष्ट था। इस सम्बन्ध को नवांश और द्रेष्कोण में भी देखा गया है।

5. **चन्द्रमा की भूमिकाः**

मंगल के द्रेष्कोण में स्थित होकर चन्द्रमा का शनि से दृष्ट होना आत्मत्याग का योग है। महात्माओं की कुण्डलियों में चन्द्रमा, केतु, शनि और बृहस्पति की प्रभावशाली युति होती है। यदि इस युति का सम्बन्ध सूर्य अथवा आत्मकारक से बनता है तो यह योग भक्ति के द्वारा आत्मा का ज्ञान देता है। उदाहरण के लिए चेतन्य महाप्रभु की कुण्डली का अवलोकर करें जिसमें द्वादशेश (सन्यास) चन्द्रमा (बुद्धि का कारक) केतु की युति में होकर शनि एवं मंगल से दृष्ट है। यह युति बृहस्पति से भी दृष्ट है जो भक्ति और समर्पण को इंगित करता है। केतु–बृहस्पति का योग आध्यात्मिक होने का योग भी है।

6. **सत्यवादीः**

वाणी का भाव द्वितीय है। एक बली द्वितीय भाव और द्वितीयेश जातक को सत्यवादी बनाता है।

7. **घर से वियोगः**

परिवार का भाव चतुर्थ और आनन्द भोगने का भाव द्वादश है। वैवाहिक जीवन के लिए सप्तम भाव का महत्व है।

कई महापुरुषों की कुण्डलियों में सप्तम भाव पीड़ित अवस्था में होता है। उदाहरण के लिए चेतन्य महाप्रभु की कुण्डली में राहु और शनि सप्तम भाव में थे तथा नवांश में भी सप्तम भाव पीड़ित था। इनकी प्रथम भार्या की मृत्यु सांप के काटने से हुई थी।

8. **आध्यात्मिक प्राप्तियांः**

धर्म भाव नवम में सूर्य और चन्द्रमा की युति अर्थात आत्मा और बुद्धि या मन का धर्म से सम्बन्ध बनना। यदि प्रथम भाव भी शामिल होता है तो जातक पूर्णरुप से आध्यात्म में संलिप्त होता है। इसके लिए सूर्य और चन्द्रमा से नवम भाव को भी देखना चाहिए।

9. **मोक्ष के कारक और आध्यात्मिक कृपा के रुप में केतु की विशेष भूमिकाः**

लग्न अथवा चन्द्रमा से पंचम, नवम या द्वादश भाव में केतु, मोक्ष का कारक और आध्यात्मिक प्राप्ति के लिए कृपा करने वाले की भूमिका निभाता है

लेकिन राहु और केतु के राशीशों को आध्यात्मिक उत्थान से नहीं जोडना चाहिए।

यदि केतु पंचम या नवम भाव में अच्छी स्थिति में हो अर्थात पीड़ित न हो और इसका राशीश भी शुभ स्थित हो तो यह बुद्धि की निर्मम शक्ति को इंगित करता है। लग्नेश, पंचमेश, नवमेश या बृहस्पति के साथ स्थित अथवा केतु से इनका केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होना या दृष्ट होना आध्यात्मिक उत्थान के लिए सबसे श्रेष्ठ परिणाम देता है। इनसे सम्बन्धित होने पर यह अष्टम या द्वादश भाव में होने पर भी अच्छे परिणाम देता है।

केतु, चन्द्रमा और बृहस्पति का त्रिकोण में स्थित होना भी श्रेष्ठ स्थिति है। केतु की आत्मकारक या सूर्य के साथ युति अथवा त्रिकोण स्थिति भी अच्छी होती है।

उदाहरण के लिए आदिशंकराचार्य, रामानुजाचार्य और अरविन्दो घोष की कुण्डलियों में केतु पंचम भाव में है। बल्लभाचार्य की कुण्डली के नवम भाव में केतु है। स्वामी मूर्खानन्दजी, रमण महर्षि, कांची परमाचार्य और स्वामी प्रभुपाद की कुण्डलियों में केतु पर बृहस्पति की दृष्टि है।

योगः

सप्तम भाव में एक अशुभ ग्रह और अष्टम भाव में कुछ ग्रह - पराशर। इसी प्रकार एक पापी ग्रह सप्तम भाव में और सन्यासी या तपस्वी होने का उत्तरदायित्व निभाने वाला ग्रह नवम भाव में। द्वादश भाव में स्थित केतु पंचमेश, नवमेश या बृहस्पति के साथ होना चाहिए। इस स्थिति में द्वादश भाव में बैठा बृहस्पति शुभ हो जाता है।

वैष्णव योगः सूर्य, बुध, शुक्र और बृहस्पति का सम्बन्ध। परिणामस्वरुप भक्ति और ज्ञान। सन्त तुलसीदास की कुण्डली में यह योग था। बृहस्पति कुंभ राशि का होकर पंचम में, तुला राशि का चन्द्रमा लग्न में और सूर्य, बुध एवं शुक्र सिंह राशि में थे। सूर्य स्वगृही भी था।

सभी ग्रहों का शुभ राशियों में स्थित होना बहुत बड़ी निधि होती है। यदि वर्गोत्तम होने के कारण लग्न भी बली हो तो जातक अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करके साधना कर सकता है - **जातक पारिजात।**

आध्यात्मिक रुप से उपर उठे महापुरुषों की कुण्डलियां:

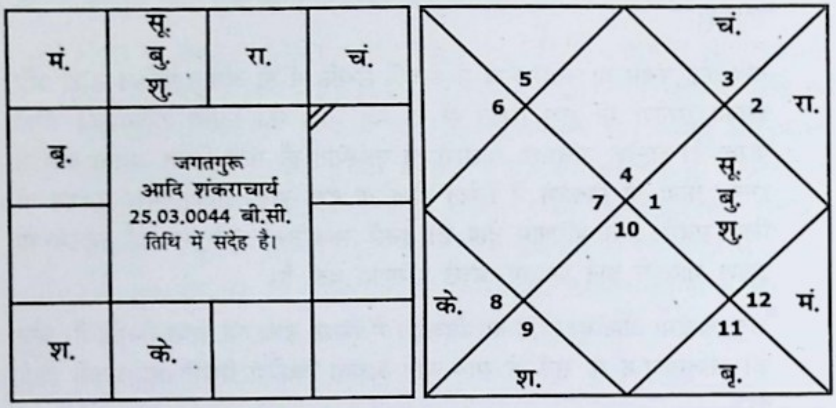

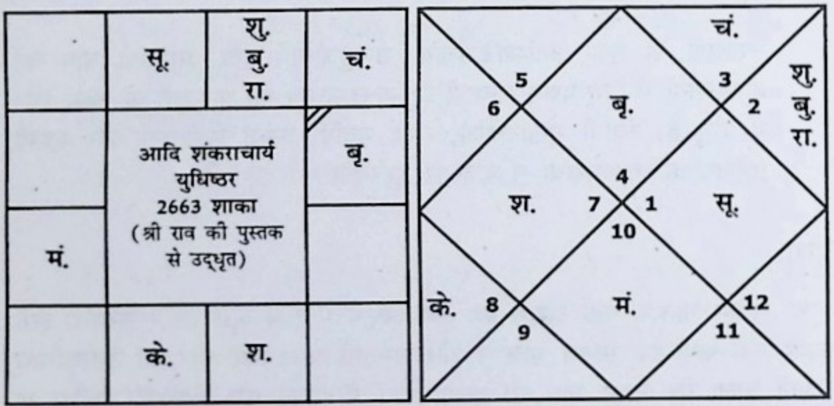

यदि उपरोक्त कुण्डली को सही मानते हैं तो उच्च का पंचमेश लग्न में बैठे उच्च के नवमेश को दृष्ट कर रहा है। भक्ति का सबसे श्रेष्ठ दर्शन परमार्थ और धर्म है।

आध्यात्मिक व्यवहार के चार सामान्य नियम निम्नलिखित हैं:

1. गीता और विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ।
2. भगवान विष्णु के रुप का ध्यान।
3. अच्छे व्यक्तियों की संगति।
4. दरिद्रों और जरुरतमन्दों की सेवा।

जीवन में एक उद्देश्य वाले स्त्री/पुरुष

(जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी के अक्टूबर-दिसम्बर, 1998 के संस्करण में प्रकाशित श्री के.एन. राव के लेख से उद्धृत)

कोई भी जातक किसी उद्देश्य विशेष के लिए इस संसार में आया है अथवा नहीं इसको उसकी कुण्डली में निम्नलिखित नियमों को लगा कर जांचा जा सकता है।

1. **शुभ द्वितीय भावः**

   कुण्डली का द्वितीय भाव नियमों का भाव अर्थात जातक के नीति सम्बन्धित व्यवहार का भाव है। इस भाव में स्थित पापी ग्रह उद्देश्यहीनता अथवा वेशभूषा में कपट और उद्देश्य में अभिमान या अहंकार दिखाता है

   "यदि द्वितीयेश पापी ग्रहों के साथ युत हो और द्वितीय भाव में पापी ग्रह बैठे हों तो ऐसा जातक असत्यवादी एवं पीठ पीछे बुराई करने वाला और वात रोगी होता है"-पराशर।

2. **शुभ दशम भावः**

   पराशर के अनुसार यदि दशम और एकादश भावों में पापी ग्रह हों जातक निम्न स्तर के कार्यों में संलिप्त रहता है और यहां तक कि अपने सगे-सम्बन्धियों का दास हो जाता है।

   यदि दशमेश नीच का हो अथवा दशम भाव और दशम से दशम भाव अर्थात सप्तम भाव में पापी ग्रह बैठे हों तो जातक निम्नस्तर के कार्यों में संलिप्त रहता है।

   उपरोक्त नियमों को लगाने के पश्चात निम्नलिखित की जांच करें:

1. कुण्डली के द्वितीय भाव में शुभ ग्रह होना चाहिए अथवा भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में होना चाहिए। शुभ ग्रहों में लग्न विशेष के लिए योगकारक ग्रह और द्वितीयेश भी शामिल है।
2. दशम भाव/दशमेश से शुभ ग्रहों अथवा बृहस्पति का सम्बन्ध।
3. चन्द्रमा से दशम भाव/दशमेश से शुभ ग्रहों अथवा बृहस्पति का सम्बन्ध।

4. लग्न कुण्डली के दशमेश से दशम भाव या दशमेश से शुभ ग्रहों अथवा बृहस्पति का सम्बन्ध।

5. लग्न कुण्डली के दशम भाव से दशम भाव या दशमेश अर्थात लग्न से सप्तम भाव/सप्तमेश से शुभ ग्रहों अथवा बृहस्पति का सम्बन्ध।

***विशेषः** यदि लग्न से दशमेश नीच को हो और/अथवा द्वितीय भाव पापी ग्रह से पीड़ित हो तो जातक को अशुभ कर्मो से कभी न समाप्त होने वाले अशुभ परिणाम प्राप्त होते रहते हैं।*

उदाहरणः स्वामी विवेकानन्द

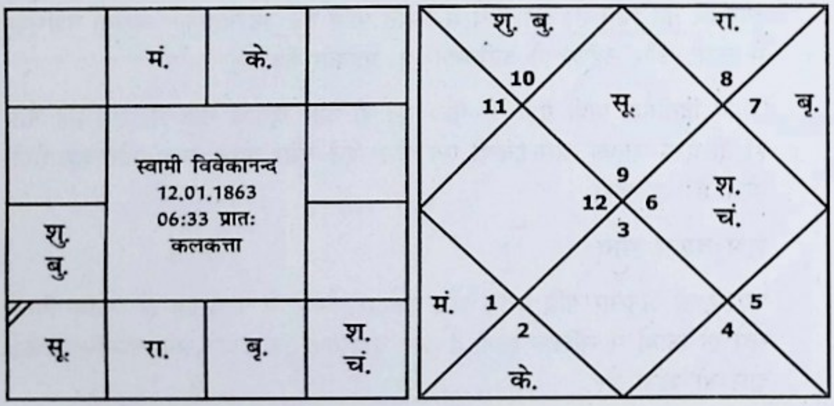

1. **द्वितीय भाव और द्वितीयेश की स्थितिः** द्वितीय भाव में दो शुभ ग्रह बुध और शुक्र बैठे हैं और द्वितीयेश शनि दशमेश बुध के साथ राशि परिवर्तन कर रहा है। द्वितीयेश शनि एक अन्य शुभ ग्रह चन्द्रमा के साथ युति कर रहा है।

2. **दशम भाव और दशमेश की स्थितिः** दशम भाव में द्वितीयेश शनि, चन्द्रमा के साथ बैठा है और दशमेश बुध एक अन्य शुभ ग्रह शुक्र के साथ द्वितीय भाव अर्थात वाणी के भाव में बैठा है। अमेरिका में विवेकानन्द परमात्मा की पवित्र ज्योति के विषय में कहने वाले के रुप में प्रसिद्ध हुए थे।

3. **दशम भाव से दशम भाव अर्थात सप्तम भाव की स्थितिः** सप्तम भाव पर सूर्य और बृहस्पति की दृष्टि उनके जन्म को एक उद्देश्यपूर्ण जीवन होने को सुनिश्चित करती है।

4. **दशमेश से दशम भाव की स्थितिः** दशमेश बुध स्वयं शुक्र के साथ स्थित है और इससे दशम भाव में बृहस्पति बैठा है जो उनके जन्म को एक उद्देश्यपूर्ण जीवन होने को पुनः स्पष्ट करती है। इस भाव पर पंचमेश मंगल की दृष्टि उनकी ओजसपूर्ण वाणी को इंगित कर रही है।

उदाहरणः स्वामी योगानन्दः

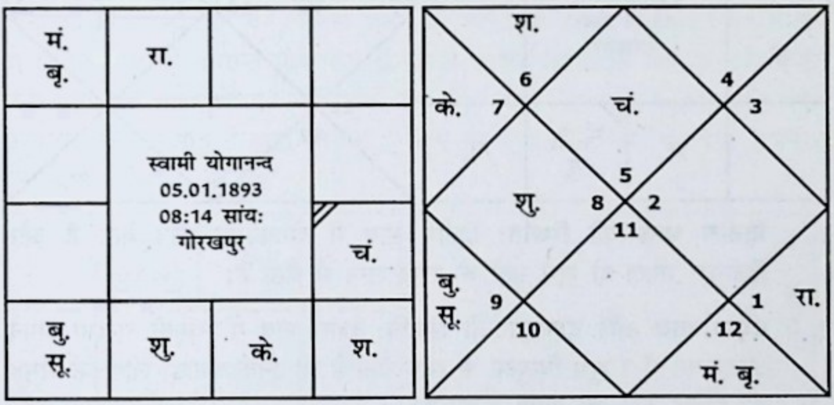

1. **द्वितीय भाव की स्थितिः** यद्यपि द्वितीय भाव को बृहस्पति और योगकारक मंगल दृष्ट करते हैं लेकिन इसमें शनि की स्थिति एक दोष है।

2. **दशम भाव और दशमेश की स्थितिः** दशम भाव अपने स्वामी शुक्र से दृष्ट है। दशमेश शुक्र पर शनि की दृष्टि इसे दूषित कर रही है लेकिन यह प्रभाव बृहस्पति की दृष्टि से दूर हो रहा है।

3. **दशम भाव से दशम भाव अर्थात सप्तम भाव की स्थितिः** सप्तम भाव पर बली चन्द्रमा की दृष्टि है।

4. **दशमेश से दशम भाव की स्थितिः** दशमेश शुक्र से दशम भाव में बली चन्द्रमा बैठा है।

उदाहरण : महात्मा गान्धी की कुण्डली

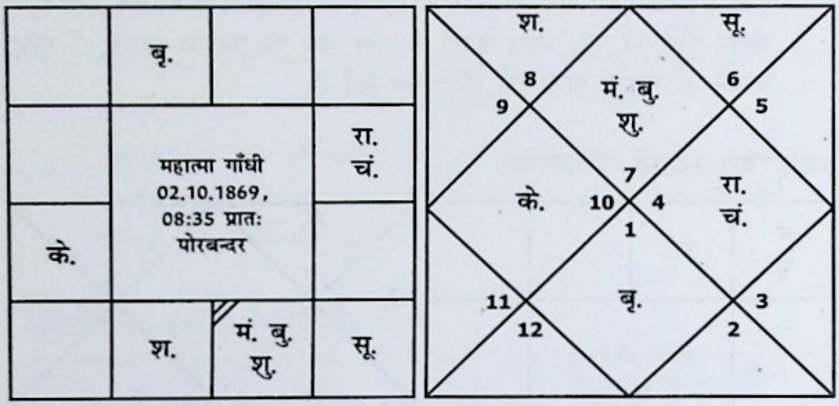

1. **द्वितीय भाव की स्थितिः** द्वितीय भाव में योगकारक शनि बैठा है और द्वितीयेश मंगल दो शुभ ग्रहों के साथ लग्न में बैठा है।

2. **दशम भाव और दशमेश की स्थितिः** दशम भाव में स्वगृही चन्द्रमा अपने अष्टकवर्ग में 7 शुभ बिन्दुओं के साथ बैठा है जो इनके करोड़ों लोगों के समूह का नायक होने को इंगित करता है।

3. **दशम भाव से दशम भाव अर्थात सप्तम भाव की स्थितिः** सप्तम भाव पर अपने स्वामी के अतिरिक्त दो अन्य शुभ ग्रहों की दृष्टि है और इसमें बृहस्पति बैठा है।

4. **दशमेश से दशम भाव की स्थितिः** दशमेश दशम भाव में ही बैठा है और अन्य प्रभावों के विषय में पहले ही कहा जा चुका है।

उदाहरण 2: मदर टेरेसा

मदर टेरेसा, बीसवीं सदी की सबसे अधिक श्रेष्ठ व्यक्तित्व वाली महिलाओं में से एक थीं जिनकी ईश्वर के दूत के रुप में मान्यता प्राप्त होने की भी संभावनायें प्रबल हैं। लगभग 40 वर्षों तक निर्धनों, रोगियों, विकलांगों एवं मृत्यु की ओर अग्रसर व्यक्तियों की सेवा करने के उपरान्त अपने मानवतावादी कार्यों के लिए 1979 में इन्हें नोबल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सच्चे इसाई संस्कारों से परिपूर्ण इन्होंने अपना जीवन निर्धनों और दबे-कुचले लोगों की भलाई के कार्यों में समर्पित कर दिया था। इनकी मृत्यु के उपरान्त पोप पॉल द्वितीय ने इनकी अतिप्रशंसा की थी और इन्हें "कलकत्ता की पवित्र टेरेसा" की पदवी दी। मदर टेरेसा को अन्तिम श्रद्धान्जलि देते हुए फ्रान्स के राष्ट्रपति ने कहा था कि, "आज की शाम इस संसार में प्यार, करुणा और रोशनी कम हो गई है।"

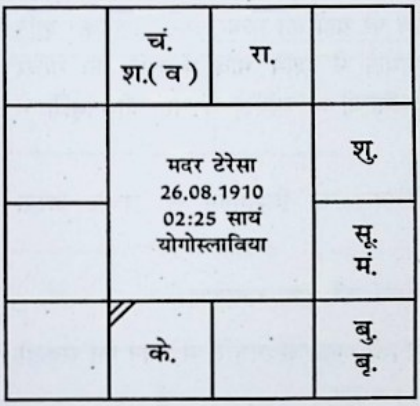

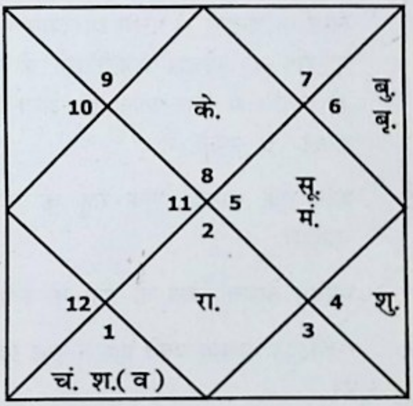

कुण्डली की मुख्य विशेषताएं:

1. द्वितीयेश बृहस्पति उच्च के बुध के साथ स्थित है।
2. दशमेश सूर्य दिग्बली होकर स्वगृही है और लग्नेश मंगल के साथ युति कर रहा है।
3. सप्तम भाव में शुभ ग्रह शुक्र की राशि में उच्च का राहु बैठा है और सप्तमेश शुक्र स्वयं नवम भाव में बैठा है।
4. दशमेश से दशम भाव भी उपरोक्त शुभ स्थिति में है।
5. सप्तम भाव में एक पापी ग्रह और नवम भाव में एक ग्रह सन्यास योग है।

सत्ताच्युत होना (जीवनवृत्ति में संकट)

(श्री के. एन. राव के मार्गदर्शन में किये गए और जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी के अप्रैल-जून, 2003 में प्रकाशित शोध से उद्धृत)

निम्नलिखित स्थितियों में जीवनवृत्ति में संकट अथवा पतन आ सकता है:

1. दशमेश का षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में बैठना अथवा सम्बन्धित होना।
2. कुछ मामलों में पंचमेश या पंचम भाव में बैठे ग्रहों की दशा/अन्तर्दशा क्योंकि पंचम भाव, दशम भाव से अष्टम भाव है।
3. सम्बन्धित ग्रहों के स्वभावानुसार दशा सन्धि या दशा गण्डात के समय शुभाशुभ परिवर्तन।
4. लग्न या चन्द्रमा से पंचम या दशम भाव पर ग्रहों का गोचर और विशेषकर शनि या राहु का गोचर। राजनीतिज्ञों के मामले में दशम भाव में शनि का गोचर जीवनवृत्ति में पतन लाता है। अन्य व्यक्तियों के मामले में यह जीवनवृत्ति में संकट ला सकता है।
5. शनि-शुक्र अथवा शुक्र-राहु के दशाकाल का विशेषरुप से विचार करना चाहिए।
6. पीड़ित अथवा नीच के ग्रहों के स्वामियों की दशा/अन्तर्दशा।
7. वक्री ग्रह अथवा वक्री ग्रह से दृष्ट ग्रहों की दशा जीवनवृत्ति में पतन ला सकती है।
8. शनि की सूर्य पर दृष्टि अथवा जन्म के सूर्य पर शनि का गोचर शुभाशुभ दोनों ही प्रकार का हो सकता है।
9. जैमिनी पद्धति के अनुसार चर दशा/अन्तर्दशा भी देखें। सिंह या धनु राशि की दशा जीवन में उत्थान अथवा पतन की दशा हो सकती है। आत्मकारक, कारकांश और ज्ञातीकारक को विशेष महत्व देखना चाहिए।

उदाहरण : मोरारजी देसाई

(श्री के.एन. राव की पुस्तक 'अप्स एण्ड डाउन इन करियर' से उद्धृत)

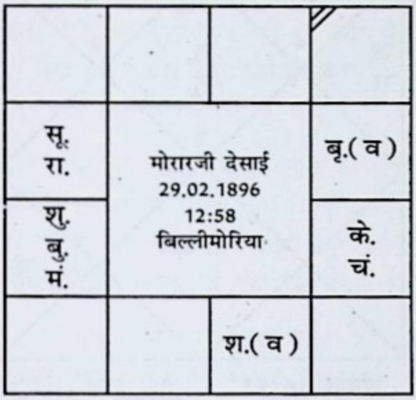

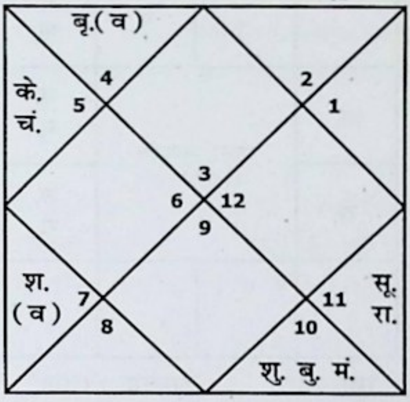

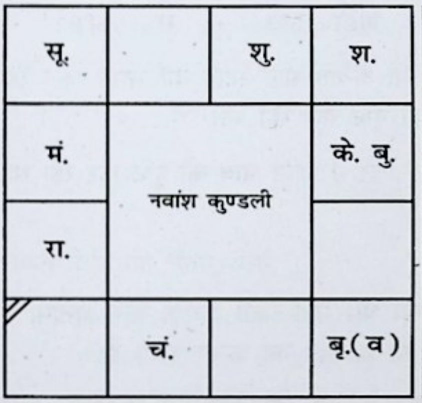

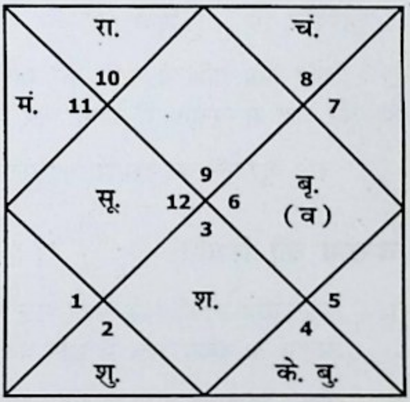

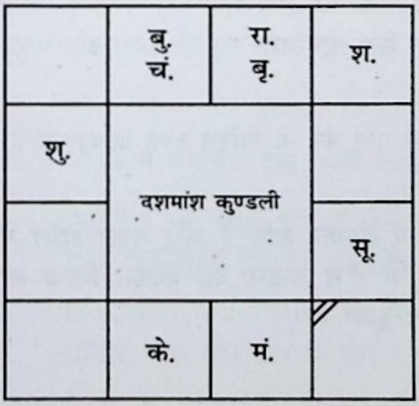

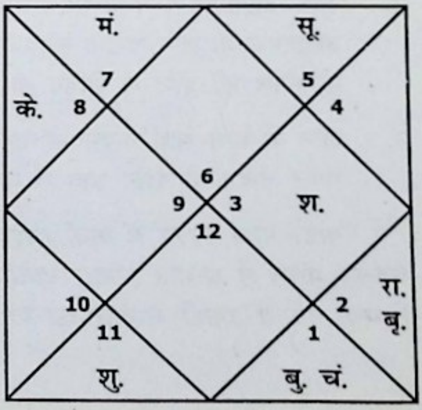

सत्ताच्युत होने के दिन का गोचरः

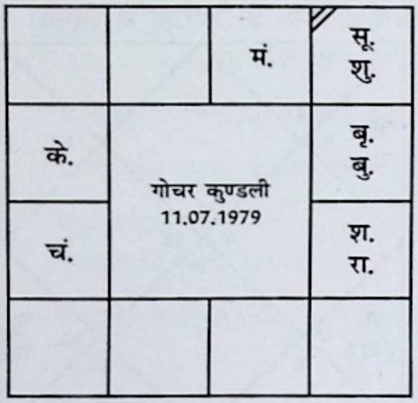

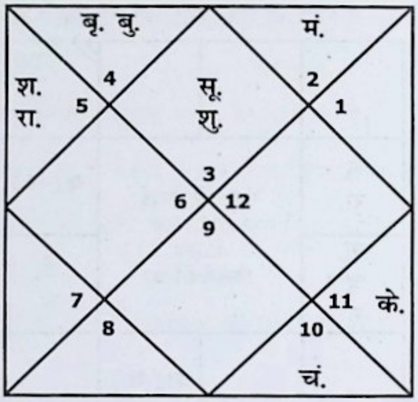

सूर्य 24°	चन्द्रमा 11°08'	मंगल 16°51'	बुध 19°
बृहस्पति 19°	शुक्र 12°	शनि 16°36'	राहु 16°01'

शनि सिंह राशि में गोचर कर रहा था अर्थात साढ़े साती का समय चल रहा था और यहां से चन्द्रमा से दशम भाव को दृष्ट कर रहा था।

जन्म कुण्डली का दशमेश बृहस्पति गोचर में दशम भाव को दृष्ट कर रहा था।

चन्द्रमा की स्थितिः

1. उस समय इनकी साढ़े साती चल रही थी। साढ़े साती अथवा जन्म चन्द्रमा से सप्तम या दशम भाव में शनि का गोचर पतन का कारण होता है।
2. इसके अतिरिक्त पतन के समय चन्द्रमा को भी अन्य पापी ग्रहों से पीड़ित होना आवश्यक है। जन्म चन्द्रमा की राशि सिंह गोचरवश, राहु के गोचर और गोचर के मंगल की दृष्टि से पीड़ित थी।
3. लग्न के साथ-साथ चन्द्रमा से दशम भाव को भी पीड़ित होना आवश्यक है। मंगल चन्द्रमा से दशम भाव में था।

नोटः मार्च 1977 में कर्क राशि में बैठकर शनि ने और मकर राशि में बैठकर मंगल ने श्रीमति इन्दिरा गान्धी के जन्म चन्द्रमा को पीड़ित किया था जिसके कारण उनकी सरकार का पतन हुआ था।

महादशाः बुध/शुक्र/बृहस्पति (07.05.1979 से 23.09.1979):

श्री मोरारजी देसाई की सरकार के पतन के समय उनकी बुध की महादशा और शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी और ये दोनों ही ग्रह जन्म कुण्डली के अष्टम भाव में बैठे थे। नवांश और दशांश कुण्डलियों में भी षष्टम एवं अष्टम भावों बैठकर ये दोनों ही ग्रह अशुभ स्थिति थे।

प्रत्यन्तर दशानाथ बृहस्पति कुण्डली का दशमेश होकर सर्वाष्टक वर्ग और शनि के अष्टकवर्ग में सबसे कम बिन्दु प्राप्त करने वाली कुण्डली की सबसे निर्बली राशि में गोचर कर रहा था। दशांश कुण्डली में बृहस्पति की राहु के साथ युति थी जो अष्टमेश (षडयन्त्र के स्वामी) मंगल से दृष्ट होकर अधिक पीड़ित हो रही थी।

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा (11 जुलाई से 22 जुलाई तक): चन्द्रमा नवांश और दशांश कुण्डलियों में पीड़ित स्थिति में था।

11 जुलाई 1979 का गोचरः शनि और मंगल अंशों में निकटतम होकर एक-दूसरे को दृष्ट कर रहे थे। गोचर के राहु-केतु जन्म के राहु-केतु अक्ष पर स्थित थे और केतु, चन्द्रमा के निकटतम स्थित था।

राजनीतिज्ञ

राजनीतिज्ञों के लिए योगः

1. राजनीति में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए तीनों लग्नों अर्थात जन्म लग्न, चन्द्रलग्न और सूर्य लग्न को बली होना चाहिए। लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम और दशम भाव में सूर्य की स्थिति अच्छी होती है।
2. इनकी कुण्डलियों में राजयोग अधिक संख्या में होने चाहिए।
3. नवम, दशम और एकादश भावों को बली होना चाहिए।
4. जीवन में समुचित्त दशा आनी चाहिए।
5. लोकतन्त्र का कारक होने के कारण शनि को कुण्डली में बली होना चाहिए। शनि, जन समूह का नेता होता है।
6. लग्न विशेष बली होना चाहिए। सामान्यतः लग्न/लग्नेश का सम्बन्ध राजसिक राशियों कर्क और सिंह के साथ तथा कुछ मामलों में तुला और धनु राशियों

से देखा गया है। कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा जनता को और सिंह राशि का स्वामी सूर्य, सत्ता या सरकार को इंगित करता है।

7. लग्न या दशम भाव पर मंगल, बृहस्पति और शनि का प्रभाव भी सामान्यतः सभी बड़े राजनीतिज्ञों की कुण्डलियों में देखा गया है।

8. महाभाग्य योग, महापुरुष योग, नीचभंग राजयोग, अधियोग, वासुमती योग और केन्द्र एवं त्रिकोण के सम्बन्ध को भी सभी बड़े राजनीतिज्ञों की कुण्डलियों में देखा गया है।

9. आत्मकारक और अमात्यकारक केन्द्र या त्रिकोण में होते हैं।

अध्याय 12

एकादश भाव
(लाभ स्थान)

कुण्डली का एकादश भाव दयनीय स्थिति से मुक्ति का भाव है। मंत्रेश्वर ने एकादश भाव को **सिद्धि और प्राप्ति** का भाव कहा है। इस भाव से विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. लाभ या प्राप्तियां।
2. बड़े भाई-बहन।
3. मित्र।
4. शुभ समाचार।
5. बांयां कान।
6. आभूषण।
7. इच्छापूर्ति।
8. वाणिज्य के द्वारा धन-सम्पति और लाभ।
9. श्री के. एन. राव के मतानुसार एकादशेश सम्मान को सुनिश्चित करता है। नोबल पुरस्कार जैसा सम्मान पाने के लिए एकादशेश को बली होना आवश्यक है।

एकादश भाव में स्थित बली ग्रह सौभाग्य, वाहन, सुन्दर घर और सभी प्रकार के सुख-सुविधाओं को प्रदान करते हैं। यह सुन्दर भार्या, परिधान, भोजन और अन्य आमोद-प्रमोद के रुप में संसारिक सुख भी देता है।

एकादश भाव में स्थित निर्बली, जैसे कि नीच, अस्त, शत्रु राशि में स्थित अथवा ग्रह युद्ध में पराजित ग्रह हों तो चाहे जातक एक धनवान परिवार में ही क्यों न जन्मा हो, सारी धन-सम्पति को खो देता है। सर्वार्थ चिन्तामणी के अनुसार यदि एकादश भाव में अशुभ ग्रह बैठे हों अथवा दृष्ट करें तो जातक के बड़े भाई होने की संभावनायें क्षीण होती हैं।

सर्वार्थ चिन्तामणी के मतानुसार यदि एकादश भाव/एकादशेश, शुभकर्तरी में हो तो प्रचुर मात्रा में धन-सम्पति देते हैं। यदि एकादशेश का नवांशेश भी एक शुभ ग्रह हो और द्वितीयेश से दृष्ट हो तो काफी मात्रा में धन-सम्पति देता है।

विभिन्न भावों में स्थित एकादशेश के परिणाम

एकादशेश, प्रथम भाव में: जातक का जन्म धनवान परिवार में होता है। वह स्वयं भी धन अर्जित करने वाला होगा। धन की मात्रा एकादशेश के बल पर निर्भर करती है। यदि एकादशेश उच्चादि होकर अत्याधिक बली हो तो इसका अभिप्राय यह होता है कि जातक का जन्म बहुत समृद्ध परिवार में हुआ है। राजीव गान्धी की कुण्डली में एकादशेश बुध, लग्नेश सूर्य और बृहस्पति, चन्द्रमा एवं शुक्र के साथ लग्न में स्थित है।

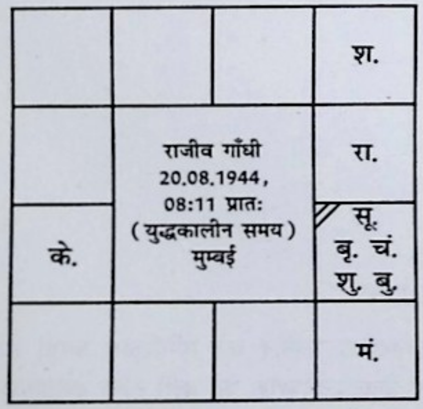

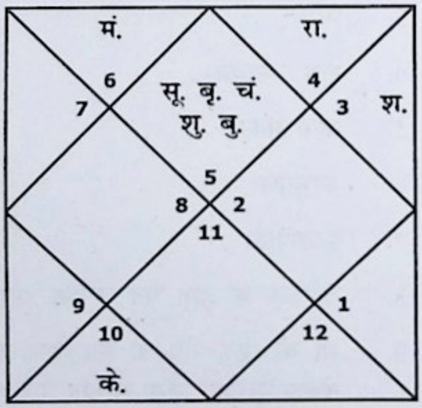

एकादशेश, द्वितीय भाव में: पराशर के अनुसार द्वितीयेश के साथ द्वितीय भाव में स्थित एकादशेश प्रचुर मात्रा में धन-सम्पति देता है। जातक अपने बड़े भाइयों के साथ रहता है, वित्तीय संस्थानों और व्यापारिक संस्थानों से धन अर्जित करता है। वह एक प्रभावशाली प्रमुख वक्ता हो सकता है। द्वितीय भाव में शुभ ग्रह अच्छा परिणाम देते हैं जबकि अशुभ ग्रह हानि देते हैं।

स्वामी विवेकानन्द की कुण्डली में एकादशेश शुक्र, द्वितीय भाव में दशमेश एवं सप्तमेश बुध के साथ स्थित है। दो शुभ ग्रहों ने वाणी के भाव में स्थित होकर उन्हें सबसे श्रेष्ठ वक्ता और व्याख्यान देने की कुशलता वाला ऐसा अद्वितीय व्यक्ति बनाया जो श्रोताओं को समय का अहसास भी नहीं होने देते थे।

एकादशेश, तृतीय भाव में: जातक अपने भाई-बहनों में सबसे छोटा होगा। जीवन में स्वप्रयास और अतिरिक्त श्रम से उन्नति प्राप्त करेगा। भाइयों से भी लाभन्वित होगा। जातक के कई मित्र और सहायता करने वाले पड़ोसी होंगे। पीड़ित होने पर प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की कुण्डली में लाभेश शुक्र, योगकारक मंगल के साथ तृतीय भाव में है।

ऐसा जातक, गाने वाला अथवा संगीतकार और कलाकार भी हो सकता है। जयललिता की कुण्डली में एकादशेश मंगल, तृतीय भाव में द्वितीयेश चन्द्रमा के साथ बैठा है।

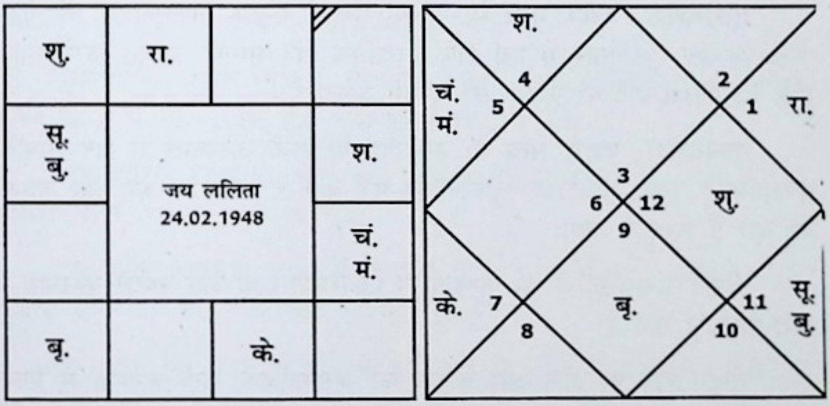

एकादशेश, चतुर्थ भाव में: मां के लिए शुभ होता है। जातक के पास भू-सम्पति होगी और उसे इनसे लाभ भी होगा तथा सुख-सुविधापूर्ण एवं खुशियों से भरा जीवन होगा। जातक सुशिक्षित और प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। विश्व के सबसे धनवान व्यक्तियों में से एक और कम्प्यूटर के क्षेत्र में अग्रणीय, बिल गेट्स की कुण्डली में एकादशेश मंगल, उच्च के चतुर्थेश बुध के साथ चतुर्थ भाव में स्थित है और दशम भाव में स्थित द्वितीयेश चन्द्रमा द्वारा दृष्ट है।

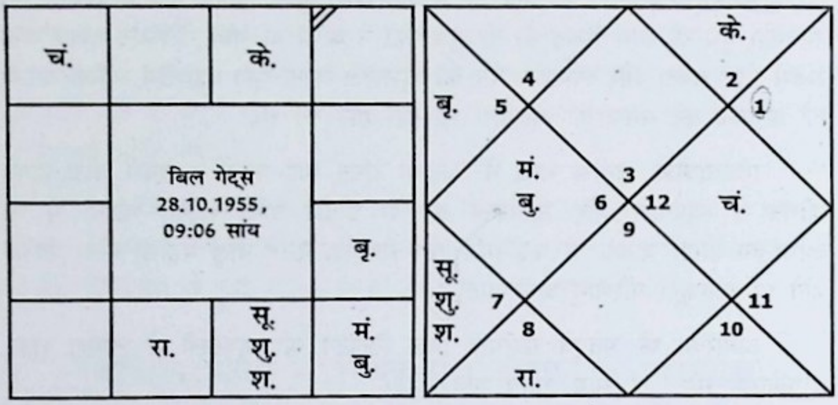

चतुर्थ भाव सुख और अष्टम भाव आयुष्य का भाव है। एकादश भाव, अष्टम से चतुर्थ भाव है, अतः एकादश और चतुर्थ का सम्बन्ध, जीवन की अच्छी चीजों के आनन्द के लिए शुभ सम्बन्ध है।

एकादशेश, पंचम भाव में: जातक सुयोग्य सन्तान वाला, विद्या के लिए जाना-पहचाना, पूर्वानुमान में दक्ष और अत्याधिक धन-सम्पति अर्जित करने वाला होता है। पीड़ित होने पर जातक को जुंआरी बनाता है।

एकादशेश, षष्टम भाव में: रुग्णालय या निजी अस्पताल से धन-सम्पति, मुकद्मेबाजी, मामा और चचेरे-फुफेरे-ममेरे भाई-बहन । कठिन परिश्रम और शत्रुओं को वश में करने से लाभ।

श्रीमति इन्दिरा गान्धी की कुण्डली में एकादशेश शुक्र और षष्टेश बृहस्पति में राशि परिवर्तन योग है।

पीड़ित होने पर हानि और जातक को असामाजिक कार्य-कलापों में लिप्त करता है।

एकादशेश, सप्तम भाव में: जातक का विवाह धनवान स्त्री से होता है। फ्रैंकलिन रुसीवेल्ट की कुण्डली में एकादशेश बुध, सप्तम भाव में है। उसकी भार्या एक प्रभावशाली व्यक्तित्व की एश्वर्यवान स्त्री थी जिसका सामाजिक और निर्धनों को दान देने के कार्यों में प्रचुर मात्रा में अंशदान था। ऐसे बहुत सारे व्यक्ति हैं जो विदेशों में जाकर धनवान स्त्री से विवाह करते हैं और वहीं समृद्ध भी होते हैं लेकिन सप्तम भाव में स्थित एकादशेश पीड़ित होने पर संदिग्ध चरित्रवाली स्त्रियों के साथ अवैध सम्बन्ध भी देता है।

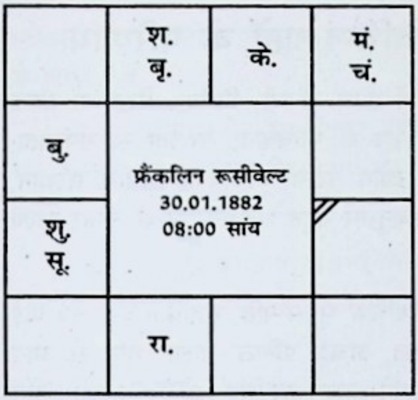

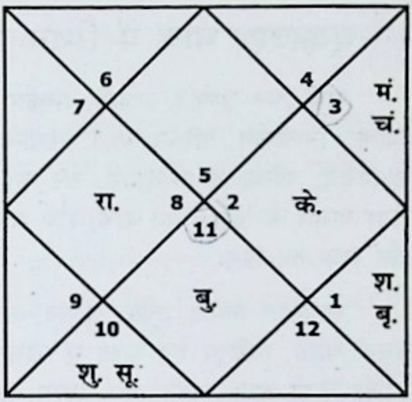

एकादशेश, अष्टम भाव में: उत्तराधिकार और आशारहित स्रोतों के द्वारा लाभ। यदि पीड़ित हो तो प्राकृतिक आपदाओं, चोरों और धोखेबाजों से हानि।

एकादशेश, नवम भाव में: धनवान, भाग्यवान, पिता की पैतृक धन-सम्पति, सभी सुख-सुविधायें, धार्मिक विचार, दयालु।

एकादशेश, दशम भाव में: व्यवसाय से लाभ, बहुत नाम एवं पद और जीवन में पद प्राप्ति के लिए दूसरों द्वारा कुछ सहायता।

एकादशेश, एकादश भाव में: धनवान, प्रसन्न, बहुत मित्र, बड़े भाई से सहायता प्राप्त, परिवार का आर्शीवाद।

एकादशेश, द्वादश भाव में: भावार्थ रत्नाकर के अनुसार एकादशेश और द्वादशेश एक साथ होने पर अच्छा परिणाम देते हैं।

एकादशेश का द्वादश में होने के कई अर्थ हो सकते हैं जैसे कि जातक के विरुद्ध आपराधिक कार्यवाही, बड़ा भाई या बहन का विदेश में स्थाई वास, आयात-निर्यात व्यापार अथवा विदेशों से लाभ, आर्थिक दण्ड, बड़ा भाई रोगी आदि।

महात्मा गान्धी की कुण्डली में एकादशेश सूर्य, द्वादश भाव में है।

एकादश भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम

सूर्यः धन-सम्पति, राजसी, सरकार में उच्च नौकरी, विवेक, सिद्धान्तों वाला व्यक्ति, निष्ठावान, परिवार भक्त, सामान्य रुप से भाग्यवान, सरलता से सफलता, छायाचित्र, पारिवारिक व्यवसाय, ऊन का उद्योग, सोना, आभूषण, वित्तीय संस्थान, शेयर बाजार के हिसाब की जांच। होरा शास्त्रानुसार बहुत धनवान, अच्छे नौकर वाला और राजा का प्रिय।

चन्द्रमाः धनवान, उदार, कुलीन, अत्याधिक भू-सम्पति, सहायता के लिए कई स्त्रियों वाला, साहित्य एवं कला में आसक्ति, अच्छी प्रतिष्ठा वाला, भूमि से आय अर्जित करने वाला, कृषि, दूध, शराब, काफी, अल्पाहार गृह, मोती, मछली। होरा शास्त्रानुसार लज्जावान, पण्डितोचित और धनवान।

मंगलः प्रभावशाली, उच्च सामाजिक स्थित, भू-सम्पति, शक्तिशाली वक्ता, चतुर, धनवान एवं धूर्त, दवाइयां, रसायन, लकड़ी, भूमि, खनिज, धातु, खेल, अच्छी इच्छा शक्ति। होरा शास्त्रानुसार उत्तम गुणवाला।

बुधः बुद्धिमान, कई कलाओं में प्रवीण, विज्ञान का ज्ञाता, तीक्ष्ण बुद्धि, ऐश्वर्यवान, धनवान, सत्यवादी, प्रसन्न, गणित, ज्योतिषशास्त्र, वैज्ञानिक खोज, व्यापार। होरा शास्त्रानुसार लेखन, शिक्षण, शिक्षा में अनुसंधान, स्त्रियों का प्यारा और अच्छे गुणवाला।

बृहस्पतिः होरा शास्त्रानुसार, विभिन्न स्रोतो से लाभ, अत्याधिक धनवान और एक जाति का मुखिया। बुद्धिमान, कुलीन, धन-सम्पति वाला, द्रव्यवान, कई मित्रों वाला एवं संगीत का आसक्त, धार्मिक, भगवान से डरने वाला, थोडा दूसरों पर निर्भर। किताबें, प्रकाशन, धर्म, दानवृति।

शुक्रः धन-सम्पति वाला, यात्राओं का रसिया, विपरीत लिंग के जातकों की संगत पसन्द करने वाला, लोकप्रिय एवं मित्रतवान, रंगमंच, नृत्य, संगीत, अधिक स्त्री मित्रों वाला, होटल व्यवसाय, सौन्दर्य प्रसाधन, सिनेमा का व्यापार, काफी, शराबखाना, कला, वाहन। परम ज्ञान, सहानुभूति, लाभ और सन्तुष्टी।

शनिः जातक के अन्तर्गत कई स्त्री-पुरुष कार्य करते हैं। राजनीति -सरकार के द्वारा आय। आनन्द का आसक्त, अल्प मित्रवाला, शिक्षा में विघ्न, भूमि एवं अचल सम्पति, उद्योग, इटों का भट्टा, छपाईखाना, ठोस सामान, तेल शोधन के यंत्र, खदानें,

श्रमिक, लोहा। द्वितीय भाव का शनि भी खदानों, लोहे, श्रम से सम्बन्धित व्यवसाय से लाभ देता है।

राहुः प्रसिद्ध, धन-सम्पतिवान, शिक्षित, सशस्त्र सेनओं का प्रमुख, विदेशों में धन-सम्पति, कर्ण पीड़ा, निम्न वर्ग का नेता, कृषि एवं अन्य चीजों के उत्पादन से धन।

केतुः लाटरी के द्वारा अलभ्य लाभ, कल्पनाशील, शेयर बाजार, कुलीन और सफल। दिल एवं दिमाग से अच्छे गुणों वाला। कई क्षेत्रों की सुविधापूर्ण यात्रा।

धन-सम्पति के योगः

1. एकादशेश, केन्द्र या त्रिकोण में सुस्थित और बली, अशुभ ग्रह एकादश भाव में।
2. लग्नेश, द्वितीयेश और एकादशेश बली।
3. लग्नेश, केन्द्र में, दशमेश, चतुर्थ भाव में और नवमेश, एकादश भाव में - राजयोग।
4. लग्नेश एवं एकादशेश अथवा द्वितीयेश एवं एकादशेश में राशि परिवर्तन।
5. लग्नेश, द्वितीयेश, नवमेश और एकादशेश, नवांश और अन्य वर्ग कुण्डलियों में बली हों। यदि ग्रह तीन से अधिक वर्गों में उच्च या मूलत्रिकोण राशि में हों तो यह करोडपति होने का योग है।
6. नवमेश, एकादशेश और द्वितीयेश की युति।

धन-सम्पति की हानिः

एकादशेश पर अशुभ प्रभाव हो तो विभिन्न स्रोतों से धन-सम्पति की हानि होती है।

सर्वार्थ चिन्तामणी के अनुसार, "दशमेश के द्वारा इंगित दिशा से आय होती है। एकादश भाव की राशि अथवा एकादश भाव को प्रभावित करने वाले बली ग्रह की दिशा से भी आय होती है।"

सुकर्मों से आय के योगः

शुभ ग्रह, सुकर्मों और नैतिक कर्मों के द्वारा आय को इंगित करते हैं, जबकि अशुभ ग्रह अनैतिक कार्यों से आय दर्शाते हैं। यदि दोनों प्रकार के ग्रहों हों तो आय भी दोनों प्रकार से होती है।

"पीड़ित एकादशेश, आध्यात्मिक तृष्णा देता है"- श्री के. एन. राव।

यदि लग्नेश, द्वितीयेश और एकादशेश मित्र हों तो जातक का धन यथायोग्य और सम्मानीय कार्यों पर व्यय होता है। यदि द्वितीयेश एवं एकादशेश, लग्नेश के शत्रु हों तो जातक अपने धन का अपव्यय मदिरा और स्त्रियों पर करता है।

बहरेपन के योगः यदि तृतीय, एकादश, पंचम एवं नवम पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो और ये भाव शुभ ग्रहों के प्रभावों से मुक्त हों और विशेषकर यदि तृतीय एवं पंचम पापकर्तरी योग में हो तो जातक को बहरा बनाते हैं और कानों से सम्बन्धित परेशानियां उत्पन्न करते हैं।

एकादश भाव और अष्टकवर्गः

श्री के. एन. राव के द्वारा सिखाये गए जीवनवृत्ति से सम्बन्धित अष्टकवर्ग के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्त इस प्रकार से हैं:

1. लग्न, सूर्य, पदलग्न और कारकांश लग्न से दशम और एकादश भाव को देखना चाहिए। दशम भाव उन्नति के स्वभाव के लिए और एकादश उन्नति की सीमा ज्ञात करने के लिए देखना चाहिए।

2. यदि दशम भाव की अपेक्षा एकादश भाव में अधिक शुभ बिन्दु हो तो जीवन में उन्नति का स्तर उच्चतम होता है। बिन्दुओं में जितना अधिक अन्तर होगा, उन्नति भी उतनी ही अधिक होगी। यदि अन्तर 4 या 5 बिन्दुओं से अधिक होता है तो जातक अत्याधिक भाग्यशाली होता है।

   पण्डित जवाहर लाल नेहरु की कुण्डली में दशम भाव में 26 और एकादश भाव में 35 शुभ बिन्दु हैं, अर्थात 9 बिन्दुओं का अन्तर है - इसका अर्थ है कि उन पर अत्याधिक सौभाग्य की कृपा सदैव बनी रही।

3. यदि दशम भाव 28 या अधिक बिन्दुओं के साथ बली हो और एकादश भाव निर्बली हो तो किसी न किसी स्तर पर जीवनवृत्ति में ठहराव आ जाता है।

4. यदि एकादश भाव अधिक बिन्दुओं के साथ बली हो तो एक अत्याधिक निर्बली दशम भाव होने पर इसे अशुभ नहीं कहना चाहिए क्योंकि बली एकादश भाव जातक को उन्नति दिलाने में सक्षम होता है।

भेदः

शनि, व्यवसाय का कारक के साथ-साथ जनसंघ, जनता की भक्ति, जनसंघ के वातान्माद और चुनाव का ग्रह है। राजनीतिज्ञों और शासन से सम्बन्धित संरक्षण प्राप्त अधिकारियों की कुण्डली में उपरोक्त सिद्धान्तों को शनि से दशम और एकादश भाव में लगाकर भी देखना चाहिए। जो जातक प्रभावशाली सम्बन्धों से युक्त होकर प्रशासनिक अधिकारी आदि के रुप में कार्यरत होते हैं उन जातकों के संदर्भ में सूर्य से दशम और एकादश भावों में उपरोक्त नियम लगाकर देखने चाहिए।

अध्याय 13

द्वादश भाव
(हानि, व्यय, विदेश यात्रा और रहस्यवाद)

द्वादश भाव कुण्डली का अन्तिम भाव है जो हानि का भाव भी कहलाता है। यह विनाश, व्यय और पतन का भाव भी है। फलदीपिका के अनुसार, द्वादशेश, कुण्डली के जिस भाव में भी स्थित होता है उस भाव के नैसर्गिक कारकत्वों को समाप्त कर देता है। इसी प्रकार जिस भाव का स्वामी द्वादश भाव में बैठता है, उस भाव के द्वारा जिन विषयों का प्रतिनिधित्व किया जाता है उन विषयों की हानि होती है। उदाहरणतः यदि द्वादशेश, चतुर्थ भाव में बैठा हो तो इसका अभिप्राय यह होता है कि भू-सम्पति की हानि, यद्यपि कुछ स्थितियों में इसका अर्थ विदेश में निवास भी होता है। इसी प्रकार सप्तमेश की द्वादश भाव में स्थिति विवाह में विलम्ब अथवा समस्याओं को इंगित करता है।

वैदिक ज्योतिषशास्त्र में प्रत्येक भाव का द्वादश भाव, उस भाव की हानि को दर्शाता है। उदाहरण के लिए नवम भाव का द्वादश भाव अष्टम है, अतः यह नवम भाव की हानि अर्थात भाग्य की हानि का भाव है।

कालपुरुष की कुण्डली में द्वादश भाव, मीन राशि द्वारा इंगित होता है। इस राशि का स्वामित्व बृहस्पति के पास है जो देवताओं के गुरु हैं। पवित्र दैवीय प्रेम और स्वर्ग से सम्बन्धित मोक्ष के रुप में शुक्र यहां उच्च का तथा संसारिक बुद्धि का कारक बुध, यहाँ नीच का होता है। यह राशि, आध्यात्म के गूढ़ विषय से और आध्यात्मिकता से सम्बन्धित राशि है। बृहस्पति का मीन नवांश में होना जातक को मोक्ष की ओर अग्रसर करता है। ज्योतिष की जैमिनी पद्धति में भी इसे विशिष्ट स्थान दिया गया है जैसे कि कारकांश लग्न के रुप में बृहस्पति की इस राशि में स्थिति अथवा शुभ ग्रहों की इस राशि में स्थिति जातक को अन्तिम मोक्ष की ओर ले जाती है।

कुण्डली में द्वादश भाव के विचारणीय विषय इस प्रकार से हैं:

1. गूढ़ विद्या में परिपक्वता।

2. हानियां और चोरियां। श्री के. एन. राव के अनुसार यदि द्वितीयेश, एकादशेश और द्वादशेश पीड़ित हों तो षष्टेश, अष्टमेश एवं द्वादशेश के कारण सम्मान और धन की हानि होती है।

3. अत्याधिक व्यय।

4. व्यय। चूंकि आधारभूत रुप से यह भाव व्यय भाव है अत: यदि द्वादशेश शुभ वर्गों में स्थित हो तो धन सम्मानीय कार्यों में व्यय होता है। यदि अशुभ में हो तो व्यय मदिरा, स्त्रियों, अनैतिक इच्छाओं की पूर्ति, जुंआ खेलने आदि में होता है। यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक की इच्छा के अनुरुप उसका पिता उसकी अच्छी देखभाल करता है।

5. सर्वस्व अपहरण, दूसरे की सम्पति का छल से अपहरण। द्वादशेश की अशुभ ग्रहों से युति दूसरे की सम्पति का छल से हरण करने, धोखबाजी और धन की दुरुपयोगिता की प्रवृति देती है।

6. शयन सुख।

7. अस्पताल।

8. कारावास।

9. बांई आंख, पांव।

10. विदेश में निवास स्थान।

11. मोक्ष।

12. पतन।

13. स्त्रियों की कुण्डली में द्वादश भाव उनके चरित्र और शारीरिक रुप से प्रदर्शित हाने वाली कामुकता को इंगित करता है।

इस भाव के सकारात्मक पहलू भी हैं। मोक्ष और विदेश में निवास के अतिरिक्त जातक पारिजात के अनुसार यदि द्वादशेश बली हो तो जातक के पास स्वअर्जित धन-सम्पति होती है, उसकी आयु लम्बी होती है और वह एक प्रसन्न व्यक्ति होता है।

शुभ दृष्टि/युतिः द्वादश भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि का अभिप्राय विदेश में निवास, अच्छा भाग्य और आनन्द पूर्ण यात्रा है। यह धार्मिक उत्साह, भक्ति, धर्मनिष्ठा और समर्पित जीवन को भी इंगित करती है।

"महात्मा अपने शरीर का त्याग नवमेश अथवा द्वादशेश की अन्तर्दशा में करने के इच्छुक होते हैं" - श्री के. एन. राव।

यदि द्वादश भाव पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो अथवा भाव पापकर्तरी योग में हो तो जातक शासन के भय से अपने देश को छोड़ता है, स्वेच्छाचारी जीवन जीता है और शयन सुख से वंचित होता है। द्वादशेश की दशा में जातक ऋण, खर्चों, अस्वस्थता और धूर्तों की संगति का अनुभव करता है। यदि द्वादशेश निर्बली होकर षष्टेश से दृष्ट हो तो भू-सम्पति सम्बन्धित कानूनी मुकदमेबाजी आदि में धन का दुरुपयोग होता है। मंगल और शनि की लग्न, द्वितीय अथवा द्वादश भाव में युति, दुर्घटना का योग है।

विभिन्न भावों में स्थित द्वादशेश के परिणाम

द्वादशेश, लग्न मेंः यदि हानि भाव का स्वामी, व्यक्तित्व एवं स्वास्थ्य के भाव में स्थित हो और पीड़ित भी हो तो जातक के स्वास्थ्य की हानि करता है। श्री के. एन. राव की श्रेष्ठ कृति "योगीज, डेस्टनी एण्ड द व्हील आफ टाइम" से उद्धृत महान सन्यासी स्वामी परमानन्द सरस्वती की आगे दी गई कुण्डली का अवलोकन करें।

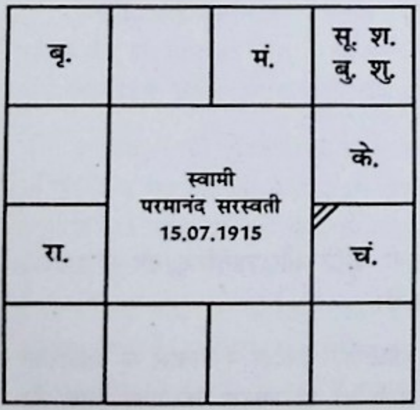

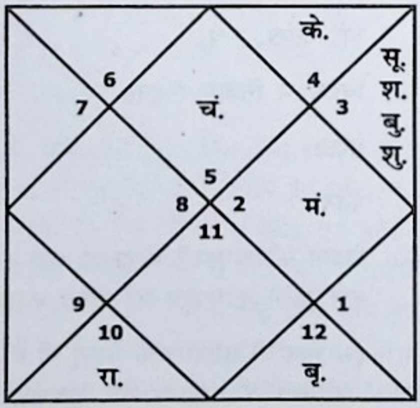

यह सिंह लग्न की कुण्डली है और द्वादशेश चन्द्रमा लग्न में बैठकर शनि एवं मंगल से दृष्ट है। यद्यपि यह सन्यास योग है लेकिन जातक का स्वास्थ्य भी इससे पीड़ित हुआ। श्री के. एन. राव के शब्दों में, "स्वामी परमानन्द सरस्वती जिनका बाल्यपन का नाम मृणाल कान्त था, एक ऐसे रुग्ण बालक थे जिनको कोई भी चिकित्सक रोगमुक्त नहीं कर पाया था। उनके पिता उनको पवित्र गंगा के किनारे ले गए और तीन बार डुबकियां दिलाकर प्रार्थना की कि हे मां, अब इसको बचाने अथवा मारने का निर्णय तुम करो।" मृणाल नाम का वह बच्चा रोग मुक्त तो हो गया लेकिन जिगर का रोग उनका जीवन भर का साथी बन गया।

लग्न में स्थित द्वादशेश जातक को आकर्षक व्यक्तित्व एवं मीठी वाणी वाला और चंचल बुद्धि का बनाता है लेकिन पाचन शक्ति की कमी देता है। चर राशि और द्विस्वभाव राशियों में स्थित होने पर यह जातक को विदेश यात्रायें देता है।

लग्नेश एवं द्वादशेश का राशि परिवर्तन करना अच्छा योग नहीं है। ऐसा जातक लोगों की घृणा का पात्र होता है और जातक स्वयं कृपण एवं बुद्धिहीन होता है।

यदि द्वादशेश, लग्न में हो और केन्द्र एवं त्रिकोण में केवल अशुभ ग्रह हों तो जातक एक दरिद्र एवं उत्साहीन जीवन जीता है।

द्वादशेश, द्वितीय भाव में: दूषित आंखें, पारिवारिक ज़ीवन में असन्तोष, समय पर भोजन नहीं, दूसरों की निन्दा करना, व्यर्थ बोलना आदि। यदि स्वामी शुभ और बली हो तो जातक उचित ढंग से बोलने वाला होगा। यदि बृहस्पति, द्वादशेश होकर द्वितीय भाव में आध्यात्मिक राशि, कुंभ में हो तो यह वैराग्य योग बनाता है।

द्वादशेश, तृतीय भाव में: कानों की समस्या, छोटे भाई-बहनों के लिए शुभ नहीं, असक्षम लेखक, कायर।

द्वादशेश, चतुर्थ भाव में: मानसिक चिन्तायें, माता के लिए शुभ नहीं, सगे-सम्बन्धियों से बुरे सम्बन्ध, रहने के लिए अच्छा घर नहीं, वाहनों से समस्यायें।

द्वादशेश, पंचम भाव में: धार्मिक सोचवाला, तीर्थयात्रायें, सन्तान प्राप्ति और सन्तान से सम्बन्धों में समस्या। राष्ट्रीय स्वयं सेवक के संस्थापक डा. बली राम हेगडेवर की आगे दी गई कुण्डली का अवलोकन करें।

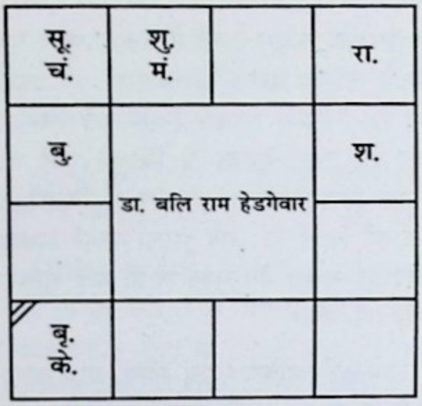

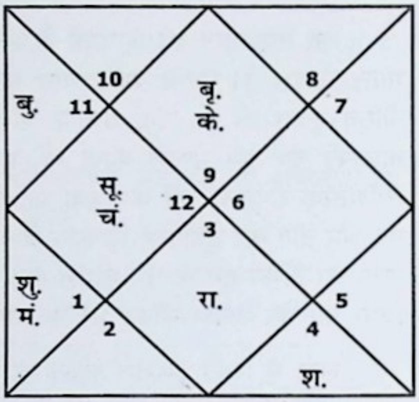

इस कुण्डली में सन्तान के कारक बृहस्पति और लग्न से पंचम भाव में द्वादशेश मंगल, षष्टेश एवं एकादशेश शुक्र के साथ बैठा है तथा अष्टम भाव में स्थित शनि से दृष्ट है। इसमें केतु की पंचम दृष्टि से दृष्ट करना भी शामिल किया जा सकता है। अब आध्यात्मिक, जीवन के उच्च विचारों और तलवार की धार की तरह तेज बुद्धिमता के दृष्टिकोण से पंचम भाव के बल का आंकलन करें। पंचमेश मंगल, पंचम भाव में मोक्ष एवं जीवन के सत्य की रोशनी देने वाले ग्रह, केतु के नक्षत्र में स्थित है। केतु स्वयं भी बृहस्पति की कोदण्ड राशि में गुणकारक बृहस्पति के साथ है। मंगल द्वादशेश भी है और मोक्ष त्रिकोण के द्वितीय भाव और गूढ़ रहस्यों, ध्यान एवं कठोर अभ्यास के भाव अर्थात अष्टम भाव से सन्यास के ग्रह शनि से दृष्ट है। केतु सहित कुल पांच ग्रह पंचम भाव को प्रभावित करके सन्यास योग बना रहे हैं।

यदि द्वादशेश, पंचम भाव में अपनी मूलत्रिकोण राशि में आध्यात्मिक ग्रह केतु के साथ हो और नवमेश अथवा आत्मकारक से दृष्ट हो तो ऐसा जातक अत्याधिक धनराशि दूसरों की भलाई के लिए दान करता है।

मतान्तर से ऐसा जातक कमजोर दिमाग वाला होता है और लोग उसको घृणास्पद समझते हैं।

द्वादशेश, षष्टम भाव में: यह विपरीत राजयोग बनाता है। जातक धनवान, स्वस्थ, आकर्षक और शत्रु विजेता होता है।

द्वादशेश, सप्तम भाव में: वैवाहिक जीवन में समस्यायें, निर्बल स्वास्थ्य, अशिक्षा अथवा भू-सम्पतिहीन।

द्वादशेश, अष्टम भाव में: विपरीत राजयोग। धनवान, प्रसिद्ध, नम्रभाषी। उच्च का द्वादशेश अष्टम भाव में, यदि वह शनि हो तो जातक में जन्म से ही उच्च आध्यात्मिक गुण, गुप्तरुप से विद्यमान होते हैं।

द्वादशेश, नवम भाव में: निवास और समृद्धि विदेश में ही होती है, पिता के लिए शुभ नहीं, कोई आध्यात्मिक विद्या नहीं और जातक मित्रों, भार्या या गुरु को पसन्द नहीं करता। इमानदार, दयालु और बड़े दिल वाला होता है।

द्वादशेश, दशम भाव में: पुत्रों से आनन्द की प्राप्ति नहीं होती है। जेलर, चिकित्सक, कार्य के सम्बन्ध में थकाने वाली यात्रायें।

द्वादशेश, एकादश भाव में: व्यापार लेकिन अच्छा नहीं, भाइयों से समस्यायें, रुबी, मोती एवं बहुमूल्य रत्नों के व्यापार में अच्छा लाभ।

द्वादशेश, द्वादश भाव में: पुष्ट दृष्टि, शयन सुख, शुभ ग्रह होकर यहां स्थित होने का अभिप्राय भी विदेश में निवास होता है।

यदि द्वादशेश स्वराशि में हो तो जातक मृत्यु के उपरान्त सद्गति प्राप्त करता है। बृहस्पति की इस भाव में स्थिति आध्यात्मिक जीवन के लिए अतिशुभ है। पूर्व में वर्णित स्वामी मूर्खानन्दजी की कुण्डली का अवलोकन करें। उनकी कुण्डली में द्वादश भाव में बृहस्पति, धनु राशि में बैठा है।

यदि लग्नेश, द्वादश भाव में हो और केन्द्र एवं त्रिकोण में कोई शुभ ग्रह न हो तो यह जातक को दरिद्रता की ओर ले जाता है।

द्वादश भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम:

सूर्य: पराशर के अनुसार तुला लग्न के लिए द्वादश भाव में स्थित सूर्य सौ वर्षों की आयु प्रदान करता है। सामान्यतः यदि सूर्य द्वादश भाव में हो तो या तो गर्भाधान नहीं होता है- ***बन्ध्या योग,*** अथवा मध्य आयु में प्रथम सन्तान होती है।

यदि सूर्य पीड़ित हो तो दृष्टिदोष, अनैतिक जीवन, स्वास्थ्य की पीड़ा, असफलता देता है और आध्यात्मिक जीवन के लिए भी शुभ नहीं होता है। जातक भरणम् के मतानुसार पिता से सम्बन्ध भी पीड़ित होते हैं। फलदीपिका भी यही मत रखती है। यह शासन द्वारा कष्ट, राजनीति के असफलता और विदेश यात्राओं के साथ-साथ कारावास भी दे सकता है।

मानसागरी के अनुसार ऐसा जातक मूर्ख, सिद्धान्तहीन एवं कुरुप होता है और कई स्त्रियों से शारीरिक सम्बन्ध बनाता है। गुप्त प्रेम सम्बन्ध, विपरीत लिंगी से परेशानियां, अस्वस्थता, सार्वजनिक भर्त्सना और परिवार से वियोग देता है।

चन्द्रमाः पीड़ित चन्द्रमा हो तो जातक संकीर्ण मानसिकता, दूसरों की भावनाओं की उपेक्षा करने वाला, निर्बली शारीरिक शक्ति और दृष्टि वाला होता है।

जातक भरणम् के मतानुसार पीड़ित चन्द्रमा कमजोर दृष्टि और अत्याधिक शत्रु देता है।

मतान्तर से जातक भोजन भ्रष्ट, शत्रुओं से पराजित, भार्या से कम प्रेम करने वाला, नेत्रादि विकारों से पीड़ित और यज्ञादि अच्छे कार्यों में धन व्यय करने वाला होता है।

ऐसा जातक भावुक होता है और विदेश यात्रा करता है। यदि अग्नि तत्व राशियों में हो तो जातक को दुर्बल, क्रोधी, दूसरों से ईर्ष्या करने वाला और असावधान बनाता है। चर राशियों में ही तो यात्रायें देता है।

पानी में डूबने से मृत्युः भृगु के अनुसार षष्टम और अष्टम भाव में स्थित चन्द्रमा डूबने का भय देता है। यदि चन्द्रमा निर्बली हो तो जातक डूब सकता है। इसी प्रकार के परिणाम तब भी प्राप्त होंगे जब चन्द्रमा, 12वें भाव में स्थित हो।

मंगलः स्वहित को ही प्राथमिकता देने वाला, घृणास्पद, भार्या की हानि, आग और रोग।

जातक भरणम् के मतानुसार यदि पीड़ित हो तो यह आंखों की शल्यचिकित्सा, अत्याधिक व्यय, मित्रों से शत्रुवत व्यवहार, कारावास और स्वभाव में क्रूरता देता है तथा चोरों से भय एवं दूसरों की धन हानि होने की इच्छा देता है।

फलदीपिका के मतानुसार जातक कैद, मृत्यु आदि के समान आपत्ति से युक्त, नेत्ररोगी, दुर्बल, मित्रों के लिए कष्टकारी और दुर्बुद्धि होता है।

बुधः जातक भरणम् के मतानुसार ऐसा जातक चतुर लेकिन दृष्टतापूर्ण, धूर्त और अपवित्र दिल का होता है तथा धनहानि और पापकर्म करने वाला होता है। यह भी विदेश यात्रायें देता है विशेषकर यदि बुध चर राशि का होकर द्वादश भाव में होता तो अत्याधिक यात्रायें करवाता है।

मंत्रेश्वर के मतानुसार जातक दीन, विद्याहीन, आलसी, क्रूर और अपमानित होता है। यदि बुध स्त्री राशियों में हो तो अशुभ फल अधिक प्रभावी होते हैं।

बृहस्पतिः जातक अधार्मिक होता है। जीवन की मध्य आयु तक इसका रुझान रतिसुख के प्रति अधिक होता है लेकिन आयु के उत्तरार्ध में आध्यात्मिक रुझान हो जाता है। द्वादश भाव में स्थित बृहस्पति मोक्ष के लिए तो शुभ है लेकिन सन्तान के लिए शुभ नहीं है।

जातक भरणम् के मतानुसार ऐसा जातक क्रोध से भरा हुआ होता है, इसकी भावनायें भ्रमित होती है और बुद्धिमानी से रहित होता है।

यदि बृहस्पति सुस्थित न हो तो इसके नकारात्मक गुण, जैसे कि अतिव्ययता, धन की बरबादी, घमण्डी होना, खाने-पीने की बुरी आदतें होना, कार्य न करना एवं दूसरों से ईर्ष्या करना आदि, उजागर होते हैं। ऐसा जातक यात्राओं में भी अनुरक्ति रखता है।

यदि बृहस्पति उच्च या स्वगृही हो तो यह आध्यात्मिकता और मोक्ष की उच्च स्थिति को प्राप्त करने के लिए शुभ होता है। आगे दी गई स्वामी मूर्खानन्दजी की कुण्डली का अवलोकन करें।

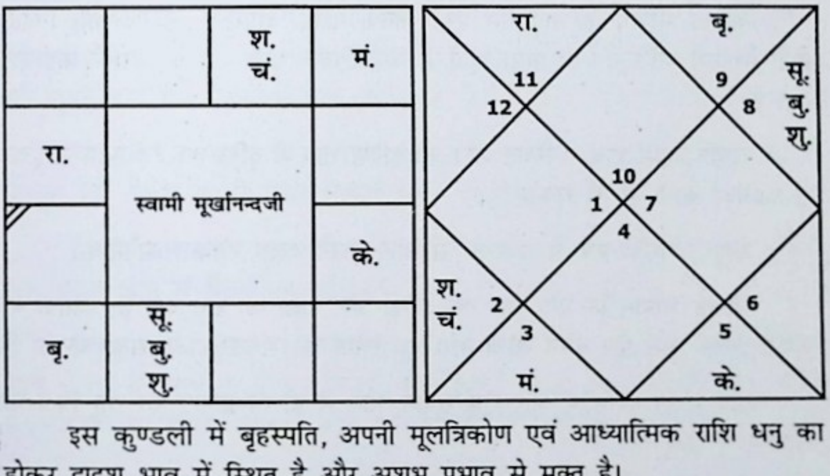

इस कुण्डली में बृहस्पति, अपनी मूलत्रिकोण एवं आध्यात्मिक राशि धनु का होकर द्वादश भाव में स्थित है और अशुभ प्रभाव से मुक्त है।

मंत्रेश्वर के मतानुसार दूसरे लोग जातक से द्वेष करते हैं तथा वह बुरे शब्द बोलने वाला, सन्तानहीन, पापी, आलसी और सेवक होता है।

शुक्रः जातक भरणम् के मतानुसार ऐसा जातक कामातुर, दुष्ट कार्य करने वाला, झूठा और कठोर दिल का होता है यद्यपि ऐसा शुक्र जातक को शयन सुख, धन-सम्पति और विदेश यात्रायें भी देता है।

भावार्थ रत्नाकर के मतानुसार द्वादश का शुक्र अत्याधिक धन-सम्पति देता है।

मंत्रेश्वर के मतानुसार, ***भृगुर्जनयति व्ये स्मरतिसौख्यवित्तद्युतिम्।*** अर्थात यदि शुक्र द्वादश भाव में हो तो ऐसे व्यक्ति को रतिसुख (स्त्रियों के साथ संभोग का सुख), धन और वैभव प्राप्त हो।

पराशर के मतानुसार, ***द्वादशे धनहानि च व्ययं वा कुक्षिरुक् क्रमात्।*** अर्थात जातक निर्धन, व्यय बढ़ने से व्यथित और पसलियों की व्यथा वाला होता है।

शनिः ऐसा जातक निराशावादी, विषादग्रस्त, अकेला, कुरुप, आलसी, आर्थिक हानि वाला और पापयुक्त होता है।

मतान्तर से जातक दूसरी स्त्रियों पर व्यय करने वाला, कानूनी मुकदमेबाजी से पीड़ित और शत्रुओं एवं चोरों से चिन्ता पाने वाला होता है।

यदि द्वादश में स्थित शनि के सामने मंगल हो अथवा मंगल की दृष्टि शनि पर हो तो ऐसी स्त्री सरल धर्म या स्वभाव की होती है।

जातक भरणम् के मतानुसार ऐसा जातक दरिद्र, अप्रसन्न, कृपण और निद्रालु होता है। उसे दृष्टि रोग से पीड़ा होती है, वह निर्बल होता है और उसके कई शत्रु होते हैं।

यद्यपि दशम भाव में स्थित शनि की द्वादश भाव में दृष्टि का अभिप्राय स्वइच्छा से धार्मिक कार्य भी हो सकता है।

राहुः आर्थिक रुप से सम्पन्न, सहायता करने वाला लेकिन अनैतिक।

जातक भरणम् के मतानुसार यह आंखों और पांवो का रोग देता है, जातक को कपटी, स्नेही और प्रेम करने वाला तथा धूर्त लोगों की संगत का आसक्त बनाता है।

यदि मंगल दशम में और सूर्य सप्तम भाव में हो तो द्वादश का राहु पिता को अल्पायु में मृत्यु देता है।

द्वादश भाव में राहु और मान्दी -शूल योग, यदि शनि द्वारा दृष्ट हो अथवा यह शनि से केन्द्र में हो तो यह कारावास का योग है। यदि शुभ ग्रहों के प्रभाव में न हो तो इसका अर्थ जेलयात्रा भी हो सकता है।

केतुः मोक्ष कारक होने के कारण द्वादश भाव में स्थित केतु शुभ माना जाता है, यद्यपि मतान्तर से कुछ ज्योतिषाचार्य केतु के लिए षष्टम भाव की स्थिति को

अधिक श्रेष्ठ मानते हैं। ऐसा जातक सदैव क्रियाशील रहता है, उसकी घुमक्कड़ होने की प्रवृति होती है और आर्थिक हानि उठाता है।

जातक भरणम् के मतानुसार ऐसा जातक खुले हाथ से व्यय करता है, शत्रुओं का नाश करता है तथा आंखों एवं पांवों के रोग पाता है।

विदेश यात्रा के योग

इस विषय की विस्तृत चर्चा दूसरी पुस्तक ***"प्लेनट्स एण्ड ट्रेवल एब्रोड"*** में की गई है। निम्नलिखित, विदेश यात्रा से सम्बन्धित योगों का सार है।

विदेश यात्रा के योगों में शामिल होने वाले भाव:

प्रथम भाव: ऋषि सत्याचार्य के मतानुसार यदि लग्नेश सप्तम भाव में हो और एक शुभ ग्रह से सम्बन्धित हो तो जातक विदेश में निवास करेगा और वहीं मृत्यु को प्राप्त करेगा।

तृतीय भाव: यह भाव छोटी यात्राओं को इंगित करता है। नवमेश का तृतीय भाव में होने का अर्थ है तीर्थयात्रा के लिए विदेश गमन। यह योग उन मुस्लिम जातकों की कुण्डलियों में आसानी से देखा जा सकता है जो "हज" के लिए विदेश जाते हैं।

चतुर्थ भाव: चतुर्थ भाव, निवास स्थान का भाव है। इस भाव पर अशुभ प्रभाव जातक को विदेश में ही स्थिर निवास बनाने के लिए विदेश ले जाता है।

सप्तम भाव: यह भाव भी विदेश के सम्बन्ध में विचारणीय होता है। नवमेश का सप्तम भाव में बैठने का अभिप्राय विदेश में भाग्योदय होता है।

नवम भाव: यह भाव लम्बी यात्राओं को इंगित करता है। यदि नवमेश, नवम भाव में राहु के साथ हो तो यह जातक के पिता को विदेश में सुप्रसिद्ध व्यक्ति बनाता है। नवमेश का द्वादश भाव में होने का अर्थ है विदेश में गुरु के आश्रम में रहना।

द्वादश भाव: विदेश में निवास स्थान होने के लिए द्वादश भाव की मुख्य भूमिका होती है। द्वादशेश का लग्न में होने का सामान्य अर्थ है कि अत्याधिक यात्रायें। यदि यह षष्टेश के साथ हो और अष्टम भाव पीड़ित हो तो इसका अर्थ होता है कि जातक विदेश यात्रा करेगा और वहां कारावास में रहेगा। यदि द्वादशेश, नवम भाव में हो तो विदेश में निवास स्थान और भू-सम्पति, दोनों ही होती हैं।

ग्रह और विदेश यात्राः

सूर्यः

1. सारावली के अनुसार यदि सूर्य अष्टम भाव में हो तो जातक देश-विदेश की यात्रायें करता है।
2. भृगु के अनुसार यदि सूर्य लग्न में हो तो जातक का विदेश में भाग्योदय होता है।
3. जातक पारिजातक के अनुसार यदि सूर्य पंचम में हो तो जातक राजदूत बनकर विदेश में रहता है।
4. बृहत्पाराशर होराशास्त्र के अनुसार यदि सूर्य से षष्टम अथवा द्वादश में केतु हो तो सूर्य की महादशा और केतु की अन्तर्दशा में विदेश यात्रा होती है।
5. चमत्कार चिन्तामणी के अनुसार चतुर्थ भाव का सूर्य एक सम्मानजनक व्यवसाय और विदेश में स्थायी निवास देता है।

चन्द्रमाः

1. जातक तत्वम् के अनुसार यदि चन्द्रमा केन्द्र में स्थित हो तो जातक देश और विदेश, दोनों की ही अत्याधिक यात्रायें करता है।
2. चन्द्रमा का मीन या कर्क राशि में बैठने का अर्थ होता है विदेश यात्रा।
3. चन्द्रमा का द्वादश, अष्टम या नवम भाव में हो और विशेषकर द्वादश भाव में उच्च का हो तो विदेश में स्थायी निवास और सम्पति देता है।
4. बृहत्पाराशर होराशास्त्र के अनुसार चन्द्रमा का शुक्र से षष्टम, अष्टम या द्वादश में होने का अर्थ विदेश गमन है।
5. भृंगु के अनुसार एकादश भाव का चन्द्रमा प्रेम विवाह और विदेश यात्रा देता है।

शुक्रः

1. मानसागरी के अनुसार मेष राशि का शुक्र विदेश यात्रा देता है।
2. भृंगु कहता है कि यदि शुक्र षष्टम में हो तो जातक विदेश जाता है और उसकी सम्पति चोरी हो जाती हैं।

3. सप्तम भाव के शुक्र का अर्थ है कि एक सुन्दर स्त्री से विवाह और विदेश में स्थायी निवास।

4. मंगल एवं शुक्र और शनि एवं शुक्र, विदेश यात्रा की युतियां हैं।

राहुः राहु विदेश की सभी चीजों का कारक है। इसकी दशा में परिवर्तन, विवाह, विदेशियों से सम्पर्क आदि होता है। सारावली के अनुसार जब राहु या केतु, सप्तम, अष्टम, नवम एवं द्वादश से सम्बन्धित होता है तो इसमें विदेश यात्रा शामिल होती है। राहु का लग्न, सप्तम या द्वादश में होने का अर्थ बिना किसी भेद के विदेश यात्रा हो सकता है।

बृहत्पाराशर होराशास्त्र कहता है कि राहु की दशा और बृहस्पति की भुक्ति में विदेश यात्रा होती है। यदि बृहस्पति उच्च का हो तो जातक पश्चिम के देशों में जाता है।

बुधः पाश्चात्य ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यदि बुध चतुर्थ भाव में हो तो जातक बार-बार घर बदलता है और विदेश की यात्रायें करता है। यदि बुध चर अथवा द्विस्वभाव राशियों में होता है तो यह परिणाम अधिक सटीक होता है। अधिक विवरण के लिए मेरी पुस्तक "प्लेनट्स एण्ड ट्रेवल एब्रोड" के द्वितीय संशोधित संस्करण को देखें।

दशम भाव में स्थित बुध और चतुर्थ भाव में स्थित चन्द्रमा विदेश यात्रायें देते हैं -जातक चिन्तामणी।

लग्नेश से द्वादश भाव में बुध होने का अभिप्राय भी विदेश निवास होता है। जहां लग्न से द्वादशेश बैठा हो उससे द्वादश भाव देखिये। यदि यह उच्च के ग्रह के साथ हो अथवा मित्र के घर में हो अथवा यह उस ग्रह से दृष्ट हो जो अपने मित्र के घर में हो या उच्च का हो तो जातक अपनी जन्म भूमि में ही रहता है।

यदि लग्नेश से द्वादश भाव का स्वामी, लग्नेश का शत्रु हो, नीच या निर्बली हो तो जातक विदेश जाता है। यदि शुक्र मित्र होकर वहां स्थित हो अथवा दृष्ट करता हो तो जातक विदेश में स्थायी निवास करता है। यदि उस भाव में सूर्य हो तो वह एक छोटा शहर होगा। यदि ग्रह बली हो तो वह एक समृद्ध स्थान होगा - जातक पारिजात।

लग्नेश से द्वादश भाव का स्वामी, लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक अपने मनपसन्द स्थान पर रहता है। यदि इस भाव को बृहस्पति, चन्द्रमा या

शुक्र दृष्ट करें तो जातक एक सुन्दर स्थान पर जायेगा। यदि यह लग्नेश से द्वितीय भाव में है और मित्र नहीं है, जातक अपनी ही देश में निवास करता है - जातक पारिजात।

विदेश में स्थायी निवास फलित कहने की संक्षिप्त विधिः

पहले के समय में हिन्दुओं में सात समुन्दर पार करने विदेश जाने की जो रुकावट थी वह अब समाप्त हो गई है। आजकल ज्योतिषाचार्य से विदेश निवास के विषय में प्रश्न करना एक आम बात हो गई है। इस विषय में तुरन्त फलित कहने की एक संक्षिप्त विधि को आगे उदाहरण सहित बताया गया है। इन नियमों को लगाने पर सामान्यतः सटीक परिणाम ही प्राप्त हुए हैं।

1. लग्न से चतुर्थ भाव/चतुर्थेश का पीड़ित होना।
2. राहु-केतु की भूमिका और इनका चतुर्थ भाव/चतुर्थेश से सम्बन्ध।
3. अनुभव में यह पाया गया कि जब कभी चतुर्थ भाव/चतुर्थेश पीड़ित हों अथवा चतुर्थेश दुस्थित हो अर्थात षष्टम, अष्टम या द्वादश में स्थित हो तो जातक अपनी जन्मभूमि को छोड़कर विदेश में स्थायी निवास करता है। यदि इसमें किसी भी रुप में राहु-केतु शामिल होते हैं तो निवास स्थान का विदेश में होना सुनिश्चित हो जाता है।
4. इन नियमों के द्वारा चन्द्र कुण्डली और नवांश कुण्डली की भी जांच करें।
5. इन नियमों को पद लग्न से भी लगा कर देखें।

उदाहरण: 19.11.1947, जालन्धर

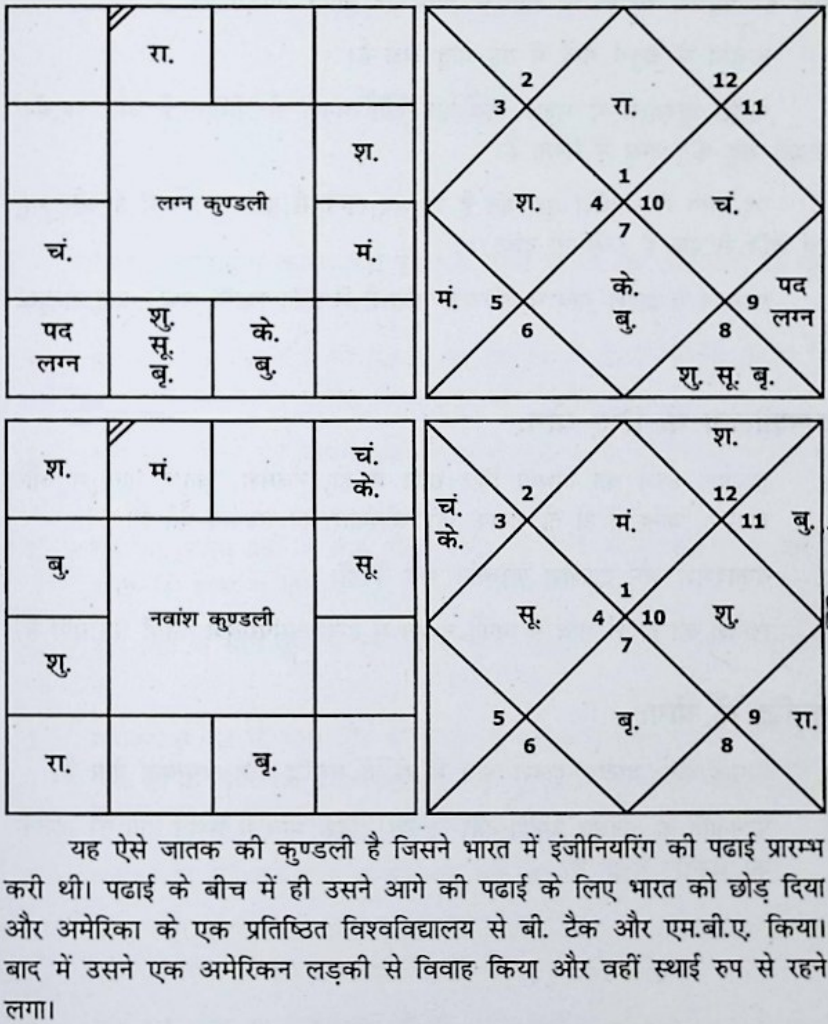

यह ऐसे जातक की कुण्डली है जिसने भारत में इंजीनियरिंग की पढाई प्रारम्भ करी थी। पढाई के बीच में ही उसने आगे की पढाई के लिए भारत को छोड़ दिया और अमेरिका के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से बी. टैक और एम.बी.ए. किया। बाद में उसने एक अमेरिकन लड़की से विवाह किया और वहीं स्थाई रुप से रहने लगा।

इस कुण्डली के चतुर्थ भाव में शनि का दुष्प्रभाव और द्वादशेश बृहस्पति की दृष्टि है। चतुर्थेश चन्द्रमा भी शनि के द्वारा दृष्ट होकर पीड़ित है।

चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में राहु-केतु अक्ष है।

नवांश कुण्डली में चतुर्थ भाव सूर्य और मंगल से पीड़ित है और चतुर्थेश चन्द्रमा राहु-केतु अक्ष में स्थित है।

पद लग्न से चतुर्थेश बृहस्पति है जो पद लग्न से द्वादश भाव में है और राहु एवं शनि से दृष्ट है (जैमिनी दृष्टि)।

पदलग्न से द्वादश भाव में वृश्चिक राशि है जिसका स्वामी मंगल, राहु से दृष्ट है।

दानशीलता के लिए योगः

1. द्वादशेश उच्च का अथवा मित्र राशि में हो, नवमेश, चतुर्थ भाव में और दशमेश, केन्द्र में हो तो जातक को परोपकार का स्वभाव देते हैं।
2. एकादशेश और द्वादशेश परिवर्तन योग में हों।
3. लग्नेश का द्वादश भाव में अपने नवांश में होना धर्मपरायण कार्यों का योग है।

समृद्धि के योगः

1. विमल योगः षष्टेश, द्वादश भाव में हो तो समृद्धि और प्रभुत्वता देता है।
2. प्रश्ननीति के अनुसार षष्टेश और लग्नेश, द्वादश भाव में स्थित होने पर जातक को धनवान बनाते हैं।

अध्याय 14

राहु-केतु

कुण्डली में राहु का महत्व

"राहु, जो ग्रहण का कारण होता है, एक जातक के जीवन में भी कुछ ग्रहण लाता है" - श्री के. एन. राव।

1. यदि कुण्डली के किसी भी भाव में राहु अकेला हो और किसी भी ग्रह से दृष्ट न हो तो यह अपने राशीश के अनुसार ही परिणाम देगा।

2. यदि राहु किसी ग्रह अथवा ग्रहों के साथ युति करता है तो उन्हें ग्रसित कर लेगा।

3. राहु का अशुभ ग्रहों के साथ युति या दृष्टि सम्बन्ध विनाशकारी सिद्ध होता है। मंगल के साथ सम्बन्धित होने पर यह हिंसा देता है।

4. शुभ ग्रहों के साथ युति या दृष्टि द्वारा सम्बन्धित होने पर राहु शुभ परिणाम देता है।

5. योगकारक ग्रह के साथ युति या दृष्टि द्वारा सम्बन्धित होने पर राहु योगकारक जैसा ही परिणाम देता है। कुण्डली में राहु मनोस्थिति से सम्बन्धित बिन्दु है जो उत्थान अथवा पतन का बिन्दु हो सकता है।

6. चन्द्रमा पर राहु की दृष्टि उन्माद की ओर अग्रसर करती है।

7. यदि राहु दशम, एकादश, चतुर्थ या पंचम भाव में होता है तो अपनी दशा/अन्तर्दशा में राजयोग प्रदान करता है - भावार्थ रत्नाकर।

8. यदि राहु केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अपनी दशा/अन्तर्दशा में राजयोग देता है - भावार्थ रत्नाकर।

9. यदि राहु, सूर्य एवं शनि के साथ तृतीय भाव में हो तो अपनी दशा में साहस और सौभाग्य देता है।

10. यदि बुध तृतीय भाव में हो तो राहु की दशा में जातक कायर हो जाता है।
11. यदि एक से अधिक ग्रह राहु से युति करें या दृष्ट हों तो उनमें से बलिष्ठ ग्रह इसके कारकत्वों से सम्बन्धित परिणाम देता है।
12. तृतीय भाव में राहु अतिश्रेष्ठ है। कर्क राशि में यह भौतिक समृद्धि के लिए बुरा है।
13. पंचम में होने पर यह अर्न्तज्ञान, पाखण्ड, राजनैतिक कौशल और धूर्तता देता है। भावार्थ रत्नाकर के अनुसार यदि पंचम में राहु हो तो जातक किसी भी चीज का आन्तरिक अर्थ जानता है।
14. बृहस्पति की राशि में और बृहस्पति से दृष्ट राहु सदैव ही अच्छा होता है - उत्तरकालामृत।
15. षष्टम भाव में स्थित मंगल और राहु, कुछ हद तक लक्ष्मीयोग का ही रुप हैं। षष्टम भाव में मंगल, धन-सम्पति के लिए अच्छा होता है।
16. राहु-केतु योगों की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं।
17. राजनीति के जीवन में उच्च स्तर की प्राप्ति के लिए राहु अतिविशिष्ट योग प्रदान कर सकता है।
18. एक अन्धकारमय और स्वांग एवं छाया का ग्रह होने के कारण यह अभिनेताओं की कुण्डलियों में विशेष प्रभावी होता है।

यदि आपकी कुण्डली में राहु और केतु सुस्थित हैं तो आप बार-बार यह पायेंगें कि जब-जब भी चन्द्रमा आपकी कुण्डली में स्थित राहु-केतु के उपर गोचर करता है तब-तब आपको लाभकारी परिणाम प्राप्त होगें।

सामान्यतः राहु और केतु सदैव ही वक्री गति से भ्रमण करते हैं लेकिन यदि इनकी गति का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया जाये तो कभी-कभी यह एक ही बिन्दु पर स्थिर भी रहते हैं जिसे इनका स्तम्भन कहा जाता है। राहु एक राशि में लगभग 18 महीने रहता है। राहु और चन्द्रमा लग्न में हो और पंचम एवं नवम भाव में अशुभ ग्रह हों तो यह **"पैशाच योग"** बनाते हैं। राहु के अशुभ परिणामों को दूर करने के लिए देवी दुर्गा की पूजा की जाती है। कुछ ज्योतिषाचार्य शिव की प्रार्थना करने की भी अनुशंसा करते हैं।

राहु के विषय में याद रखने वाली अन्य बात यह है कि यह भगवान विष्णु का ***वाराह*** अवतार है। अतः राहु की प्रसन्नता के लिए भगवान विष्णु के ***वाराह अवतार*** की पूजा करने की अनुशंसा की जाती है।

मानसिक पीड़ाः राहु की चन्द्रमा और बुध पर दृष्टि अनुकूल नहीं मानी जाती है। यह जातक को दोषपूर्ण बुद्धि और उन्माद की ओर अग्रसर करती है।

राहु की उच्च और नीच राशिः

पराशर के अनुसार वृषभ राशि, राहु की उच्च राशि है जबकि अन्य मिथुन राशि को लेते हैं। इस तरह नीच राशि वृश्चिक और धनु हो जाती हैं।

पराशर के मतानुसार राहु की मूलत्रिकोण राशि मिथुन है जबकि अन्य कुंभ राशि का राहु की मूलत्रिकोण राशि मानते हैं।

राहु की दृष्टिः

अलग-अलग ग्रन्थकारों ने राहु की अलग-अलग दृष्टि को दिया है। कुछ के अनुसार राहु की पंचम, सप्तम, नवम और बारहवीं दृष्टि है जबकि अन्य केवल पंचम और सप्तम दृष्टि को ही लेते हैं।

विभिन्न भावों में स्थित राहु के परिणाम

राहु, प्रथम भाव में: मेष, सिंह एवं धनु राशियों में स्थित होने पर जातक अड़ियल, घमण्डी, धनवान, चरित्रहीन और स्वार्थी होता है। सिंह राशि में इसके अशुभ परिणाम अधिक होते हैं क्योंकि इसका स्वामी सूर्य है।

कर्क, कन्या एवं मकर राशियों में होने पर चोर, डकैत और अत्याधिक शत्रु देता है। वृषभ एवं वृश्चिक में होने पर भार्या के प्रति अविश्वासी, धन सम्बन्धित मामलों में अविश्वासपात्र तथा रंगमंच या अन्य अभिनय के क्षेत्रों में बुरे व्यक्ति का चरित्र निभाने वाला बनाता है।

लग्न में मेष, वृषभ और कन्या राशि में स्थित होने पर सामान्यतः यह जातक को लम्बा कद वाला बनाता है। राहु की दशा में जातक को अपनी भार्या अथवा साझेदारों के प्रति सावधान रहना चाहिए।

राहु, द्वितीय भाव में: कठोर वाणी, झूठ बोलने वाला, अस्पष्ट भाषणकर्त्ता, मुख में रोग, बड़ी नासिका वाला, शीघ्र उत्तेजित होने वाला लेकिन पवित्र बुद्धिवाला होता है। ऐसा जातक राजा से धन प्राप्त करता है और सुखी होता है। द्वितीय भाव में मीन राशि का राहु शुभ होता है।

द्वितीय भाव में अशुभ ग्रह, धन का नाश करते हैं। यदि द्वितीय भाव में स्थित राहु अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक में दूसरों से धोखेबाजी करने और अनैतिक तरीके से धन बनाने की प्रवृति होती है।

राहु, तृतीय भाव में: इसकी सराहना की जाती है क्योंकि ऐसा राहु जातक को आत्मसंयम और आत्मशक्ति प्रदान करता है। यदि अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो भाई-बहनों का विनाश करता है। जातक अपने परिवार में सबसे छोटा या सबसे बड़ा अथवा भाइयों में सबसे बड़ा या सबसे छोटा होता है। चूंकि यह साहस देता है अत: यह अतिरिक्त कार्य-कलापों और खेलों के लिए बहुत अच्छा होता है।

राहु, चतुर्थ भाव में: कुण्डली के अन्य योगों की स्थिति के अनुसार केन्द्र के स्वामी की तरह ही बहुत अच्छे परिणाम से लेकर सामान्य परिणाम तक देता है। अन्यथा सामान्यत: चतुर्थ भाव का राहु, दुर्भाग्य, अप्रसन्नता और सन्तानहीनता भी दे सकता है तथा जातक के विवाह में कोई सामांजस्य नहीं होता है। चतुर्थ भाव अथवा चतुर्थेश के साथ स्थित होने पर राहु जीवन में निराशा और दुखान्त घटनायें देता है।

- मिथुन अथवा कुंभ राशि में प्रचुर धन-सम्पति, खुशियां नहीं।
- कर्क एवं कन्या राशि में श्रेष्ठ महाप्रतापी, सम्मानित।
- मेष, वृषभ, कर्क, कन्या राशियों में परिणाम अच्छे होते हैं।
- शुभ ग्रहों से युति माता को लम्बी आयु देने वाली होती है।

राहु, पंचम भाव में: पंचम भाव, नवम भाव से नवम है अत: यहां स्थित राहु जातक के सौभाग्यशाली होने में अड़चने उत्पन्न करता है और सन्तान से परेशानियां देता है। यदि शुभ ग्रहों के साथ हो अथवा शुभ राशि में हो अथवा राजयोग कारक ग्रहों के साथ हो तो राजयोग बनाता है। यह दुर्लभ आन्तरिक दृष्ट भी देता है।

राहु, षष्टम भाव में: षष्टेश के साथ होने पर जानवरों से घाव देता है अर्थात दुर्घटना का कारण होता है। षष्टम भाव में राहु-शनि की युति अतिअशुभ होती है।

श्री के. एन. राव के मतानुसार राजनीतिज्ञों के लिए षष्टम भाव का राहु सदैव ही अच्छा होता है।

राहु, सप्तम भाव में: राहु की यह स्थिति अच्छी नहीं होती है। चरित्रहीन व्यक्तियों की संगत और भार्या के साथ दयनीय जीवन होता है। यदि सप्तम भाव में तुला या वृषभ राशि होती है तो जातक जुआं खेलने, घुड़दौड़ और शेयर बाजार से धन कमा सकता है।

बहुत सारे ज्योतिषाचार्य राहु की इस स्थिति को विवाह के लिए अति अशुभ मानते हैं और कुण्डली का ही त्याग कर देते हैं। ऐसा करना अनुचित है।

राहु, अष्टम भाव में: रति के कारण असाध्य रोग, बिना किसी कारण के कुलीन व्यक्तियों द्वारा त्याग, दरिद्र, कायर, उतावला और दयनीय। आर्थिक स्थिति के लिए शुभ हो सकता है, सरकार द्वारा धन लाभ लेकिन यदि पीड़ित हो तो कभी-कभी धनहानि भी होती है। शासक द्वारा सम्मान और प्रसिद्धि, अच्छे कार्य और वृद्धावस्था में सुखी।

अष्टम भाव में पुरुष राशियों का राहु अनुकूल नहीं होता है। समस्यायें, तनाव, चाहत, अवैध तरीके से धन। स्त्री राशियों में स्थित राहु सहनशीलता और धन-सम्पति जोडनी वाली भार्या देता है। भार्या की मृत्यु पहले होती है।

राहु, नवम भाव में: यदि सुस्थित हो तो जातक अच्छा विद्यार्थी, धर्मपरायण, प्रभावशाली वक्ता, सुसंस्कृत, मानवतावादी और भक्तिभाव वाला होता है। वह अपने धर्म की अपेक्षा दूसरों के धर्म में अधिक निष्ठा रखता है।

यदि दुर्स्थित हो तो धन-सम्पति की हानि, सच्चाई, व्यवहार, भाग्य और विद्वता की चाहत वाला होता है।

राहु, दशम भाव में: अपनी महादशा में राजयोग प्रदान करता है लेकिन अशुभ ग्रहों से दृष्ट होने पर परिणामों में अस्पष्टता आती है। इस भाव में सूर्य से युति आर्थिक परेशानियां देती है।

शुभ परिणाम: सम्माननीय, सत्यवादी, ईमानदार, मानवतावादी, सभी देशों की यात्रा करने वाला, शिक्षित, परिश्रमी।

यदि पीड़ित हो तो बेईमान, बातूनी, अतिव्ययी, मूर्ख, घमण्डी, अहंकारी।

यदि चन्द्रमा युति में हो अथवा राहु के निकट हो तो काल्पनिक और अव्यवहारिक विचार। दयनीय होने की प्रवृति भी देता है।

राहु-केतु के अक्ष पर नीच का नवमेश या दशमेश स्थित होने पर जातक को कपटी से धोखेबाज व्यक्ति का दुर्बोध अथवा गूढ़ार्थक चरित्र देता है।

राहु, एकादश भाव में: यह एक शुभ स्थिति होती है।

1. जातक हथियारों के प्रयोग मे दक्ष होता है - वह एक दक्ष शल्य चिकित्सक भी हो सकता है।
2. आकर्षक और दयालु।
3. विदेश में वास करता है।
4. पुत्र विहीन अथवा पुत्र से खुशियां प्राप्त नहीं होती हैं। इसे केवल प्रथम सन्तान पर ही लगायें।
5. जातक अपनी माता-पिता की अकेली सन्तान अथवा भाई-बहनों में सबसे छोटा या बड़ा हो सकता है।
6. अत्याधिक धन-सम्पति देता है।

राहु, द्वादश भाव में: धर्म, सन्तान और भार्या, जातक का त्याग कर देते हैं (यह एक कठिन फल है इसलिए इसको सोच-समझकर कहना चाहिए)। जातक विदेश में निवास करता है और उसके नाखुनों में विकृति होती है।

राहु रक्षक के रुप में:

1. तृतीय, षष्टम अथवा एकादश भाव में सुस्थित राहु सभी बुरे प्रभावों से मुक्त रखता है और बल प्रदान करता है।
2. राहु, निम्नलिखित लग्नों में केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होने पर शुभ परिणाम देता है:

   अ. बुध की राशियों में अर्थात मिथुन और कन्या में।

   ब. लग्न में मेष, वृषभ अथवा कर्क राशि में।

राहु की दशा के परिणाम:

1. राहु-बुध, राहु-शुक्र और राहु-बृहस्पति की दशा सामान्यत: शुभ फल देने वाली होती है यद्यपि राहु-बुध के दशाकाल में दिमाग सही मार्ग से हट सकता है और राहु-शुक्र के दशा काल में अधिक संघर्ष हो सकते हैं।
2. किसी भी मुख्य ग्रह की दशा में राहु की अन्तर्दशा शुभ नहीं होती है।

3. शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा का दशाकाल सामान्यतः कठिन होता है।
4. फलदीपिका के अनुसार यदि राहु शुभ ग्रहों से युत हो तो इसकी महादशा भी शुभ होती है।
5. शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट राहु शुभ हो जाता है और एक शुभ राहु की दशा में धन-सम्पति की प्राप्ति होती है।
6. एक अशुभ राहु, अपनी दशा में रोग, सर्पदंश (विषाक्त भोजन, अनुचित औषधी अथवा किसी चीज की प्रतिक्रिया) आदि का भय देता है।
7. यदि राहु या केतु कुण्डली के द्वितीय या सप्तम भाव में होकर पंचमेश और नवमेश से सम्बन्धित होते हैं तो अपनी दशा में मान्यता दिलाते हैं।
8. पंचम या नवम भाव में स्थित राहु, द्वितीयेश एवं सप्तमेश से सम्बन्धित होने पर मारक हो जाते हैं।
9. केन्द्रेश या त्रिकोणेश से सम्बन्धित होने पर 6, 8 या 12वें भाव में स्थित राहु भी अच्छा परिणाम देते हैं।
10. तृतीय या एकादश अथवा केन्द्र में स्थित राहु, केन्द्रेश या त्रिकोणेश से युति करने पर समृद्धि देता है।

विभिन्न भावों में स्थित केतु के परिणाम

बार-बार होने वाला गंभीर और रहस्यमय रोग देता है। अष्टम भाव में केतु की शनि एवं बृहस्पति से युति कैन्सर का कारण भी सकती है।

मिथुन में केतु नीच का होकर अशुभ परिणाम देता है जैसे कि बार-बार उग्र रुप लेने वाला अस्थमा, क्षयरोग या फेफड़ों का कैन्सर, विशेषतः चतुर्थ भाव में होने से इसकी संभावनायें बढ़ जाती हैं।

केतु, प्रथम भाव में: सगे-सम्बन्धियों से परेशानियां, व्यग्रता तथा भार्या पेट सम्बन्धित समस्याओं से ग्रस्त रहती है। सामान्यतः जातक यह सोच-सोच कर तनाव में रहता है कि कहीं सरकार दण्ड के रुप में सारा धन न ले ले।

यदि केतु मेष, मिथुन या कन्या राशि का होता है तो अथिति सत्कार, बहुत सारी खुशियां और धन-सम्पति देता है।

मकर अथवा कुंभ राशि का केतु भू-सम्पति और सत्पुत्र देता है। केतु कैवल्यकारक है, यदि कर्क राशि का होकर लग्न में चन्द्रमा के साथ हो तो तीव्र उत्साह और धर्मनिष्ठा देता है।

यदि पीड़ित हो तो मस्तिष्क में खून जमने, दिमागी बुखार, दिमागी फोड़ा (ट्यूमर), लकवा और ऐंठन से मृत्यु का कारण होता है।

केतु, द्वितीय भाव में: द्वितीय भाव का केतु पारिवारिक जीवन में खलल डालता है और वाणी के दोष का कारण हो सकता है। यह अन्धेपन, आंखों के केन्सर, दृष्टिदोष आदि का भी कारण हो सकता है।

मतान्तर से द्वितीय भाव में मेष अथवा मिथुन का केतु जातक को धनवान लेकिन राजा द्वारा धनहानि, व्यग्रता, बान्धव जनों से क्लेश आदि देता है।

केतु, तृतीय भाव में: जातक अत्याधिक खुशियां प्राप्त करता है लेकिन मानसिक रुप से परेशान रहता है और भाइयों के प्रति शत्रुता रखता है। यदि केतु अपनी राशि या उच्च का हो तो शत्रुओं पर विजय, प्रसिद्धि और खुशियां पाता है तथा शूरवीर एवं धर्मपरायण होता है।

यदि नीच का हो तो मानसिक तनाव तथा भाइयों और पड़ोसियों से समस्यायें देता है। यदि केतु और मंगल सिंह राशि में हों तो शिरच्छेद होने के संभावना होती है। एक प्रसिद्ध सिने अभिनेत्री जेन मन्सीफिल्ड का सामूहिक बलात्कार करने के बाद उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया गया था। इसकी कुण्डली में तृतीय भाव में सिंह राशि में केतु एवं मंगल की युति थी।

तृतीय भाव मस्तिष्क का नियंत्रक और संतुलन बनाने का भाव है। इस भाव में स्थित केतु जातक को हिंसक अपराधों की ओर प्रेरित कर सकता है। शनि के साथ स्थित होने पर यह जातक को क्रूर और विभत्स हत्यारा बना सकता है। आगे दी गई डा. सैम्युल शीफर्ड की कुण्डली का अवलोकन करें। डा. सैम्युल शीफर्ड ने अपनी भार्या की हत्या की थी और आजीवन कारावास की सजा पाई थी।

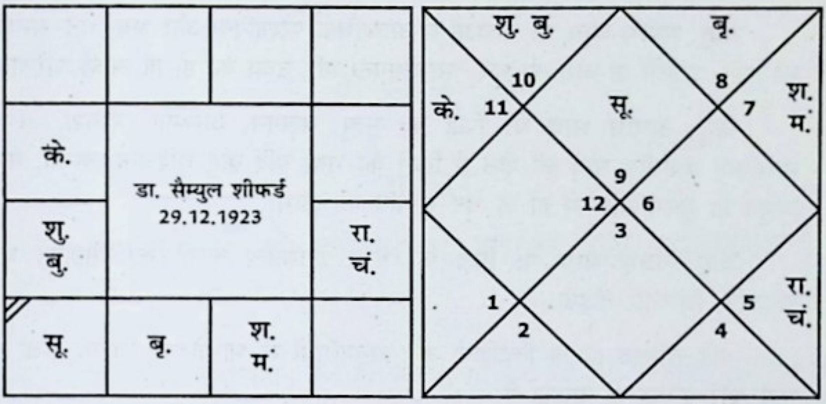

इस कुण्डली में तृतीय एवं नवम भाव बुरी तरह पीड़ित हैं। लग्न से तृतीय भाव में केतु है और चन्द्रमा से तृतीय भाव में शनि एवं मंगल हैं।

केतु, चतुर्थ भाव में: माता से प्राप्त होने वाली सहायता एवं लाभ की हानि, पिता का सुख नहीं, मित्रों के द्वारा पैतृक धन-सम्पति की हानि और जातक कभी भी घर में नहीं रहता है अर्थात जन्मस्थान से दूरी।

यदि केतु अपनी राशि मीन या उच्च राशि धनु में हो तो राजयोग, अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि वृश्चिक या सिंह में हो तो माता-पिता से अत्याधिक सहायता और लाभ प्राप्त होता है।

केतु, पंचम भाव में: भाई हाथों की क्षति से पीड़ित, अल्प शिक्षा, पुत्र से तनाव, उंचे स्थान से गिरने के कारण शारीरिक क्षति, धूर्त, ईर्ष्यालु, निर्बल, कायर और व्याकुलता। जातक के पुत्र की अपेक्षा कन्या सन्तान अधिक होती हैं और वह पेट की समस्याओं से ग्रस्त रहता है।

यदि सिंह, धनु, मीन या वृश्चिक राशि में होता है तो यह राजयोग देता है और जातक प्रभावशाली ढंग से धार्मिक विषयों पर व्याख्यान देता है।

केतु, षष्टम भाव में: रोगमुक्त, चिन्तामुक्त, धनवान, वाद-विवाद में सफल, उदार हृदय और सगे सम्बन्धियों का प्यारा होता है और जातक को मामाओं के द्वारा मायाजाल से मुक्ति मिलती है। लेकिन केतु शारीरिक पीड़ा और कृतघ्न सेवक भी देता है।

केतु, सप्तम भाव में: यात्राओं से अत्याधिक परेशानियां और भय, धन-सम्पति की हानि, शत्रुओं या चोरों का भय, परस्त्रीगमन। यदि उच्च का हो तो अच्छे परिणाम।

केतु, अष्टम भाव में: पिता की मृत्यु, बलगम, अस्थमा, पेचिश, अपच सम्बन्धित बबासीर, घोड़े की पीठ से गिरने का भय। यदि केतु वृश्चिक, कन्या, मेष, मिथुन या वृषभ राशि में हो तो धन-सम्पति का लाभ।

केतु, नवम भाव में: पिता को भय, प्रशंसनीय कार्यों का विनाश, धर्म परिवर्तन, विश्वास तोड़ना।

यदि सुस्थित हो तो विदेशियों और सन्यासियों से भाग्योदय। जातक राजा या मंत्री और प्रसिद्ध हो सकता है।

केतु, दशम भाव में: दुर्भाग्यवान और दयनीय, पिता के लिए अथवा पिता से परेशानियां और वाहन से गिरने का भय।

यदि वृश्चिम, वृषभ, कन्या अथवा मेष राशि में हो तो शत्रुओं का नाश करता है। जातक बुद्धिमान, शक्तिशाली, विद्धान और अपने में ही प्रसन्न रहने वाला होता है।

केतु, एकादश भाव में: सभी स्रोतों से लाभ और सफलता। अत्यन्त भाग्यशाली, शिक्षित, आकर्षक, अच्छा परिधान पहनने वाल और तेजस्वी।

केतु, द्वादश भाव में: कुकर्मों में धन का व्यय, दुराचारी, दरिद्र, कृपण, अत्याधिक यात्रायें, धर्मपरायण और अतिव्ययी। द्वादश भाव में बुध-केतु की युति जातक को ऐसा व्यक्ति बनाती है जिसके चरित्र के विषय में अनुमान लगाना कठिन होता है। यह जातक को अपराधिक प्रवृति का रुझान भी देती है।

अध्याय 15

गोचर
(अष्टकवर्ग के संदर्भ में गोचर का परिणाम)

ग्रह हमेशा चलायमान होते हैं। जन्मकुण्डली में ग्रह दिन और समय विशेष के अनुसार कुछ राशि विशेष में हो सकते हैं लेकिन समय के साथ-साथ ये चलते रहते हैं और सौरमण्डल में अपनी-अपनी कक्षा में भ्रमण करते हुए चक्र पूरा करते रहते हैं। उदाहरण के लिए सूर्य प्रत्येक वर्ष 14 अप्रैल के आस-पास मेष राशि में प्रवेश करता है और एक मास के पश्चात अगली राशि अर्थात वृषभ राशि में प्रवेश करता है तथा इसी प्रकार चलते-चलते वह लगभग एक वर्ष में एक चक्र पूर्ण करता है। इसी प्रकार अन्य ग्रह भी भचक्र में कुछ निश्चित नियमों के अनुसार भ्रमण करते रहते हैं।

ग्रहों का किसी भी राशि में एक दिन की लगभग गति और एक राशि का गोचर पूर्ण करने में लिया जाने वाला समय निम्नलिखित है:

क्र. सं.	ग्रह	एक दिन की लगभग गति	एक राशि में गोचर पूर्ण करने में लिया जाने वाला समय
1	सूर्य	1º	सूर्य एक राशि में एक मास रहता है।
2	चन्द्रमा	13º से 15º	चन्द्रमा एक राशि में लगभग सवा दो दिन रहता है।
3	मंगल	30' से 45'	मंगल एक राशि में लगभग डेढ़ मास रहता है।
4	बुध	1º05' से 1º40'	बुध एक राशि में लगभग एक मास रहता है।
5	बृहस्पति	05' से 15'	बृहस्पति एक राशि में लगभग एक वर्ष रहता है।
6	शुक्र	01º02' से 01º22'	शुक्र एक राशि में लगभग एक मास रहता है।

7	शनि	02'	शनि एक राशि में लगभग ढाई वर्ष तक रहता है।
8	राहु/केतु	03'	राहु/केतु एक राशि में लगभग डेढ़ वर्ष रहते हैं।

चूंकि सभी ग्रह चुम्बकीय तरंगों को छोड़ते हैं जो एक ओर मानवता को प्रभावित करती है वहीं दूसरी ओर किसी समय विशेष में ग्रहों की एक-दूसरे से स्थिति, फलित के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है। हमारे ऋषियों ने कुछ नियमों को बताया है जो किसी दिए गए समय विशेष में ग्रहों के विभिन्न राशियों में होने के प्रभाव को उनकी विभिन्न स्थितियों के संदर्भ में वर्णित करते हैं अर्थात जन्म चन्द्रमा से गोचर का चन्द्रमा, लग्न और अन्य ग्रह। किन्तु एक बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि गोचर के परिणाम कभी भी जन्मपत्रिका के संभावित परिणामों के उपर प्रभावशाली नहीं हो सकते हैं। जन्मकुण्डली ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है जिसमें दशाचक्र भी निहित है और जो हमें कर्मो के अनुरुप, कर्मफल से बांधता है। नियति की पूरी पद्धति हमारे कर्मों को प्रकट करने अर्थात कर्मों के अनुसार फल देने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। हमारे जीवन में, जो कुछ भी शुभ अथवा अशुभ घटनायें होती हैं वह हमारे कर्मों का ही फल होता है।

उदाहरणत: यदि जन्मपत्रिका में सन्तान की संभावना नहीं है तो चाहे गोचर सन्तान होने के अनुकूल कितना भी शुभ हो (बृहस्पति और शनि का 1/5 अक्ष पर दृष्टि), सन्तान का जन्म होगा, यह फलित कभी भी नहीं करना चाहिए। सही अर्थों में दशाक्रम द्वारा इंगित किये जाने वाली घटनाओं के संदर्भ में गोचर को द्वितीय वरीयता ही देनी चाहिए। एक शास्त्रीय ग्रन्थ जातक तत्वम् के अनुसार कोई भी ग्रह अपनी किसी भाव विशेष एवं राशि विशेष की स्थिति, दृष्टि, युति और अपने कारकत्व के परिणाम अपनी दशा में ही देते हैं। गोचर के ग्रह एक पत्रवाहक की भान्ति उसी शुभाशुभ परिणाम को देते हैं जिसकी अभिव्यक्ति योगों और दशाचक्र के द्वारा जन्म कुण्डली में होती है।

उदाहरणत: यदि जन्मपत्रिका में सन्तान योग है तो वह कब फलीभूत होगा इसका निर्णय कैसे हो? ज्योतिषशास्त्र का सामान्य ज्ञाता भी इस प्रश्न के उत्तर में कह सकता है कि ज्योतिषशास्त्र के सामान्य नियमानुसार जन्मपत्रिका का कोई भी योग, उस योग सम्बन्धित अनुकूल दशा में फलीभूत होता है, अत: सन्तान सम्बन्धित अनुकूल दशा आने पर यह योग भी फलीभूत होगा। यहां पुन: यह प्रश्न उत्पन्न होता

है कि दशाकाल कम से कम 6 वर्ष लम्बा होता है और 6 वर्ष का समय कोई कम समय नहीं होता है, तो इसका निर्णय कैसे हो कि इन वर्षों में सन्तान कब होगी। इस प्रश्न का उत्तर जानने में गोचर की भूमिका प्रारम्भ होती है। जैसे कि पहले भी कहा गया है कि ग्रह चलायमान होते हैं, अतः जिस समय ग्रह, गोचरवश अनुकूल स्थिति में आएंगे तो वह समय विशेष, सन्तान योग के फलीभूत होने का समय होगा। अतः यद्यपि जीवन में होने वाली मुख्य घटनाओं की विवेचना जन्मपत्रिका से करते हैं लेकिन, गोचर को अष्टकवर्ग से मिलाकर देखने पर उस घटना की शुभता अथवा अशुभता के स्तर को आंका जा सकता है।

यद्यपि गोचर देखने के लिए चन्द्रमा को आधारभूत प्रमुखता दी गई है लेकिन लग्न से भी इसका विचार अवश्य करना चाहिए। महर्षि मंत्रेश्वर सहित सभी ज्योतिषाचार्यों ने गोचर देखने के लिए सभी ग्रहों की स्थिति को जन्म चन्द्रमा से देखने की अनुशंसा की है। अपनी कृति फलदीपिका के छब्बीसवें अध्याय के प्रथम श्लोक में मंत्रेश्वर, गोचर देखने के विषय को स्पष्ट करते हुए कहते हैं:

सर्वेषु लग्नेष्वपि सत्सु चन्द्रलग्नं प्रधानं खलु गोचरेषु।
तस्मात्तदृक्षादपि वर्तमानग्रहेन्द्रचारैः कथयेत्फलानि ॥

अर्थात यद्यपि जन्मपत्रिका में जन्म लग्न से, सूर्य को लग्न मानकर* या अन्य ग्रह जिस राशि में हों उनको लग्न मानकर विचार किया जा सकता है, किन्तु गोचर फलादेश में चन्द्र लग्न की प्रधानता है। चन्द्र लग्न अर्थात जन्म के समय जिस राशि में चन्द्रमा स्थित था और जो चन्द्रराशि भी कहलाती है।

गोचर के परिणामों के निर्णय के लिए निम्नलिखित बातों का विचार करना चाहिए:

1. ग्रहों का शुभ और अशुभ भावों में गोचरः

कोई ग्रह शुभ भाव में गोचर कर रहा है अथवा अशुभ भाव में, वैदिक ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यह ज्ञात करने के लिए जन्म चन्द्रमा से गोचर के ग्रहों की स्थितियों का विचार करना चाहिए। उदाहरणतः आगे दी गई कुंण्डली के लग्न में मिथुन राशि उदय हो रही है जबकि चन्द्रमा वृषभ राशि में स्थित है। अतः ग्रहों का गोचर वृषभ राशि से विचार किया जायेगा।

* *ज्योतिषशास्त्र के सभी ग्रन्थों ने फलित करने के लिए लग्न के अतिरिक्त, चन्द्रमा एवं सूर्य को भी लग्न मानकर, जन्मपत्रिका की विवेचना करने की अनुशंसा की है। फलदीपिका ने यहां इसी सिद्धान्त को पुनः कहा है।*

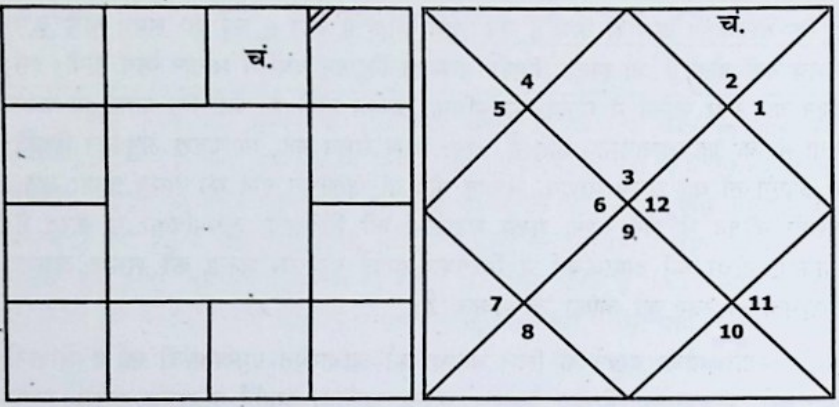

जन्म चन्द्रमा से गोचर के ग्रहों की शुभ स्थितियां:

- **सूर्य:** गोचर का सूर्य, जन्म चन्द्रमा से 3, 6, 10 और 11 भाव में अच्छे परिणाम देता है। अन्य भावों में यह अशुभ परिणाम देता है।
- **मंगल:** गोचर का मंगल, जन्म चन्द्रमा से 3, 6 और 11 भाव में अच्छे परिणाम देता है। अन्य भावों में यह अशुभ परिणाम देता है।
- **शनि:** गोचर का शनि भी, जन्म चन्द्रमा से 3, 6 और 11 भाव में अच्छे परिणाम देता है। अन्य भावों में यह अशुभ परिणाम देता है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि क्रूर/पापी ग्रहों सूर्य, मंगल और शनि का जन्म चन्द्रमा से 3, 6 एवं 11वें भाव में गोचर, शुभ परिणाम देने वाला होता है। इसके अतिरिक्त, गोचर का सूर्य दशम में भी शुभ होता है क्योंकि दशम भाव में इसी दिशाबल भी प्राप्त हो जाता है।

- **चन्द्रमा** का गोचर भी 3, 6 एवं 11वें भाव के साथ-साथ 7वें एवं 10वें भाव में भी शुभ फलदायक होता है। अन्य भावों में यह अशुभ परिणाम देता है।
- **बुध** का गोचर द्वितीय, चतुर्थ, षष्टम, अष्टम एवं दशम भाव में गोचरवश शुभ फलदायक होता है। अन्य भावों में यह अशुभ परिणाम देता है।
- **बृहस्पति** का गोचर द्वितीय, पंचम, सप्तम, नवम एवं एकादश भाव में अच्छा होता है जबकि अन्य भावों में अशुभ होता है।

- **शुक्र** का गोचर 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 और 12वें भाव में शुभ होता है। इसका अर्थ है कि इसका गोचर षष्टम, सप्तम एवं दशम भावों को छोड़कर, अन्य सभी भावों में शुभ फलदायक होता है।

राहु-केतुः

- **गोचर में राहु,** सूर्य के समान ही कार्य करता है और 3रे, 6वें, 10वें एवं 11वें भाव में शुभ परिणाम देता है।
- **गोचर में केतु** मंगल की भान्ति ही 3रे, 6वें और 11वें भाव में शुभ परिणाम देता है।

2. जन्म चन्द्रमा से ग्रहों के गोचर के शुभाशुभ परिणामः

सूर्य :

शुभ परिणाम

- **तृतीय भावः** नौकरी में उच्च पद, धन-सम्पति में लाभ, खुशियां, रोगों से मुक्ति और शत्रुओं का नाश।
- **षष्टम भावः** रोगों से मुक्ति, शत्रुओं का नाश और दुःख एवं चिन्ताओं की समाप्ति।
- **दशम भावः** बड़े और महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता।
- **एकादश भावः** नवीन पदवी, सम्मान, धन-सम्पति और रोगों से मुक्ति।

अन्य भावों में सूर्य का गोचर शुभ फल नहीं देता है।

अशुभ परिणाम

- **प्रथम भावः** धन-सम्पति की हानि, सिरदर्द, रक्तचाप में वृद्धि, परिवार में झगड़ा, निराशाजनक और कष्टकारी यात्रायें।
- **द्वितीय भावः** धन-सम्पति की हानि, आंखों सम्बन्धित परेशानियां और पारिवारिक झगड़े।

- **चतुर्थ भावः** रोग, मैथुन सुख में रुकावट।
- **पंचम भावः** मानसिक चिन्तायें, अस्वस्थता और सभी संभावित तरीकों से अपमान।
- **सप्तम भावः** निराशाजनक यात्रायें, पेट की खराबी, गुदा द्वार में परेशानी और अपमान।
- **अष्टम भावः** भय, रोग, झगड़ा, शासन की अप्रसन्नता, अत्याधिक गर्मी के कारण परेशानियां।
- **नवम भावः** भय अपमान, सगे-सम्बन्धियों से विछोह और मानसिक अवसाद।
- **द्वादश भावः** दुःख, धन-सम्पति की हानि, मित्रों से झगड़े और ताप।

इसे संक्षिप्त में कहें तो अष्टकवर्ग में अच्छे बिन्दुओं के साथ बली सूर्य अपने कारकत्व के अनुसार और कुण्डली में भावविशेष के स्वामित्व के अनुसार आनन्दित चित्तवृत्ति, शत्रुओं के उपर विजय, उच्च सामाजिक स्थिति, स्वास्थ्य और धन-सम्पति देता है।

कम बिन्दु होने के कारण सूर्य के अशुभ परिणामः धन-सम्पति की हानि (2रे एवं 12वें भाव), सूर्य के पीड़ित होने से उत्पन्न होने वाले रोग, सिरदर्द, रक्तचाप, हृदय रोग, सीने में दर्द, आंखों की बिमारियां, पेटदर्द आदि, (1, 4, 5, 7, 8, 9 एवं 12वें भाव में), बाधायें, शासन से परेशानियां, परिवार से अलगाव और इधर-उधर भटकना।

चन्द्रमाः

अधिकतम शुभ बिन्दुओं के साथ शुभ परिणामः धन-सम्पति, अच्छा भोजन, शयनकक्ष का सुख, सुन्दर एवं बहुमूल्य परिधान, मित्रता, विपरीत लिंग से सम्बन्ध, खुशियां, सुख, समृद्धि और अच्छा स्वास्थ्य।

कम बिन्दुओं के साथ अशुभ गोचर के परिणामः डर, हर प्रकार की समस्यायें, स्वास्थ्य एवं धन की हानि, दिमागी अशान्ति, पारिवारिक असन्तोष, शरीर में आलस्य और इर्ष्या।

चन्द्रमा से सम्बन्धित रोगः फेफड़े सम्बन्धित रोग, अस्थमा, सांस की बिमारियां, पाचन क्रिया सम्बन्धित रोग, हैजा, अतिसार, पीलिया, रक्त विकार आदि।

चन्द्रमा के गोचर के शुभ भाव और शुभ भावों में गोचर के परिणामः

- **प्रथम भावः** भाग्योदय, अच्छा भोजन, सुख-सुविधा के साधन, मैथुन सुख, उपहार, सुगन्धी और आभूषण।
- **तृतीय भावः** सफलता, धन-सम्पति, आनन्द, खुशियां, आत्मविश्वास, साहस और मित्रों की सहायता।
- **सप्तम भावः** प्रसन्नता, व्यापार एवं वाणिज्य से लाभ, विपरीत लिंग के जातकों में लोकप्रियता, खुशियां देने वाली छोटी यात्रा, पदोन्नति से लाभ, धन-सम्पति, अच्छा भोजन और आनन्द।
- **दशम भावः** अभिलाषाओं की पूर्ति, नौकरी में पदोन्नति, उच्च अधिकारियों द्वारा अनुशंसा, धन-सम्पति, यश-कीर्ति और तीर्थ यात्रायें।
- **एकादश भावः** आनन्द, अभिलाषाओं की पूर्ति, नौकरी एवं व्यापार में लाभ, मित्रों एवं विपरीत लिंग के जातकों में लोकप्रियता, मनोरंजन और रोगों से मुक्ति।

चन्द्रमा के गोचर के अशुभ भाव और अशुभ भावों में गोचर के परिणामः

- **द्वितीय भावः** धन-सम्पति की हानि, मानसिक अवसाद, सम्मान की हानि, थकाने वाला परिश्रम एवं थकावट, परिवार में शोक, कष्टकारक व्यय और आंखों में परेशानियां।
- **चतुर्थ भावः** भय, माता की अस्वस्थता, मानसिक अवसाद. धन-सम्पति की हानि एवं नींद, खुशियों की हानि और छाती में परेशानी।
- **पंचम भावः** शोक, बच्चों के लिए परेशानियां, अपच, धन-सम्पति की हानि, मानसिक चिन्तायें और गर्भपात की संभावनायें।
- **अष्टम भावः** अप्रसन्नता एवं परेशानियां युक्त घटनायें। यह चन्द्राष्टम कहलाता है जो अपमान, मानसिक चिन्तायें, निरादर, पेट में विकार, कारावास, सम्मान की हानि और चोरी का आरोप देता है।
- **नवम भावः** रुग्णता, मानसिक चिन्तायें, रुकावटें, धन एवं सम्मान की हानि और अवांछनीय व्यय देता है।

- **द्वादश भावः** व्यय, स्त्रियों पर धन की अपव्यय, अत्याधिक खर्चा, अवांछनीय विदेश यात्रा, दुर्घटना, ईर्ष्या, आंखों में दोष, भय और व्याकुलता।

मंगलः

अधिकतम बिन्दुओं के साथ शुभ परिणामः प्रभुत्व, शत्रुओं पर सफलता, विजय, भूसम्पदा, धन-सम्पति, मनोरंजन।

मंगल का शुभ भावों (3, 6 एवं 11) में गोचर का परिणामः

- **तृतीय भावः** सभी कार्यों में सफलता, स्वर्ण आभूषणों का संचय और उनके प्राप्त होने के कारण आनन्द एवं प्रसन्नता।
- **षष्टम भावः** विवाद का अन्त एवं शत्रुओं का वापस लौटना, रोगों से मुक्ति, विजय, धन-सम्पति की प्राप्ति और सभी कार्यों में सफलता।

एकादश भावः

- **कम बिन्दुओं के साथ अशुभ परिणामः** झगड़े-फसाद, कड़वे शब्दों का आदान-प्रदान, धन-सम्पति की हानि एवं पदच्युति (4था भाव), भार्या के साथ मतभेद, दुर्घटनायें।
- **मंगल द्वारा प्रदत्त रोगः** अल्सर, रक्तचाप, घाव, चोट, पित्त की अधिकता एवं इसके कारण बुखार, रक्तविकार।

मंगल का अशुभ भावों (1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 10 एवं 12) में गोचर का परिणामः

- **प्रथम भावः** मानसिक अवसाद, सगे-सम्बन्धियों से वियोग और रक्त विकार और पित्त एवं गर्मी के कारण रोग।
- **द्वितीय भावः** भय, कड़वे शब्दों का आदान-प्रदान और धन-सम्पति की हानि।
- **चतुर्थ भावः** पदच्युति, पेट में विकार और सगे-सम्बन्धियों के द्वारा शोक।

- **पंचम भावः** ताप, अनावश्यक अभिलाषायें, पुत्र के द्वारा मानसिक विषाद और सगे-सम्बन्धियों से झगड़ा।
- **सप्तम भावः** भार्या से मतभेद, आंखों का रोग, पेट दर्द और इसी प्रकार के विकार।
- **अष्टम भावः** ताप, खून की कमी और धन-सम्पति एवं सम्मान की हानि।
- **दशम भावः** अभद्र व्यवहार, प्रयासों में विफलता और थकान।
- **द्वादश भावः** धन-सम्पति की हानि और अत्याधिक गर्मी के कारण रुग्णता।

बुधः

अधिकतम बिन्दुओं के साथ शुभ परिणामः धन-सम्पति, समृद्धि, सम्मान, सचरित्र, खुशियां और अच्छे लोगों से मित्रता।

बुध का शुभ भावों (2, 4, 6, 8, 10 एवं 11) में गोचर का परिणामः

- **द्वितीय भावः** धन-सम्पति, स्वास्थ्य एवं आनन्द की प्राप्ति तथा शैक्षिक योग्यता में उन्नति।
- **चतुर्थ भावः** धन-सम्पति का लाभ, मानसिक शान्ति, शिक्षा में सफलता, माता के लिए अच्छा, वाहनों का संचय और मानसिक प्रसन्नता।
- **षष्टम भावः** सफलता, धन-सम्पति, भोजन, कपडे, आनन्द, शत्रुओं पर विजय, सामान्य प्रसन्नता एवं समृद्धि और संगीत में रुचि।
- **अष्टम भावः** धन-सम्पति का लाभ एवं सन्तान का जन्म, जीवनवृत्ति में सफलता, विघ्न-बाधाओं का दूर होना, शत्रुओं पर विजय, पैतृक धन-सम्पति की प्राप्ति, नवीन मकान, नौकरी और परिवार में खुशियां।
- **दशम भावः** चारों ओर से प्रसन्नता, पदोन्नति, सुन्दर स्त्रियों का संग, सफलता, मानसिक एवं पारिवारिक खुशियां और आध्यात्मिक क्रिया-कलाप।
- **एकादश भावः** समृद्धि में वृद्धि, धन-सम्पति एवं आनन्द, सांस्कृतिक क्रिया-कलापों में वृद्धि, मित्रता और मानसिक प्रसन्नता।

कम बिन्दुओं के साथ अशुभ परिणामः धन-सम्पति की हानि, कर्कश वाणी, अपमान, सन्ताप, पदच्युति, बुद्धि का मन्द होना।

बुध द्वारा प्रदत्त रोगः स्नायु का असन्तुलन, मस्तिष्क सम्बन्धित बिमारियां, त्वचा सम्बन्धित बिमारियां, खून की कमी।

बुध का अशुभ भावों (1, 3, 5, 7, 9 एवं 12) में गोचर का परिणामः

- **प्रथम भावः** धन-सम्पति की हानि, मानसिक परेशानियां, शिक्षा में विघ्न-बाधा, मान-सम्मान एवं स्वास्थ्य की हानि और मानसिक असन्तुलन।
- **तृतीय भावः** शत्रुओं का भय, शासन से परेशानियां, भाई-बहनों से झगड़ा, आय की हानि, मुसीबतें और शासन का कोप।
- **पंचम भावः** भार्या एवं सन्तान से झगड़ा, बुद्धि की स्थिलता, दुर्भाग्य, धन और पद की हानि।
- **सप्तम भावः** मतभेद, शारीरिक तनाव, धन की हानि, निम्न जातियों की स्त्रियों के साथ शारीरिक तृप्ति और असम्मान।
- **नवम भावः** कार्यों में असफलता, धन-सम्पति की हानि, मानसिक शान्ति में बाधा, कार्यक्षेत्र में विघ्न-बाधा, धोखा और त्वचा रोग।
- **द्वादश भावः** अपमान, पारिवारिक अप्रसन्नता, गुप्त शत्रु, भार्या से मतभेद, लकवे का प्रभाव, जोड़ों का दर्द, अस्पताल में भर्ती, पांवों की चोट, मानसिक असन्तुलन, व्यापार में हानि, व्यय और व्यर्थ भ्रमण।

बृहस्पतिः

अधिकतम बिन्दुओं के साथ शुभ परिणामः धन-सम्पति, समृद्धि, सन्तान, शासन की अनुकम्पा, धार्मिक एवं सचरित्र व्यक्तियों से सम्बन्ध, ज्ञान, विवाह और पारिवारिक प्रसन्नता, भूसम्पति, घर, पदोन्नति।

बृहस्पति का शुभ भावों (2, 5, 7, 9 एवं 11) में गोचर का परिणामः

- **द्वितीय भावः** धन-सम्पति का संचय, पारिवारिक प्रसन्नता और दूसरों पर प्रभाव। मंत्रेश्वर के अनुसार, **"स्ववाचां फलम्"** अर्थात जो कह दिया वही फलीभूत हो जाये।

- **पंचम भावः** सन्तान का जन्म, सज्जन व्यक्तियों की संगति और शासन की अनुकूलता।
- **सप्तम भावः** भार्या से प्रसन्नता और शुभ कार्यों के लिए यात्रा।
- **नवम भावः** चारों ओर समृद्धि, नौकरी में पदोन्नति, धन-सम्पति में वृद्धि, धार्मिक कार्य, सौभाग्य, पिता एवं पितामह से प्राप्ति और अच्छे परिणाम देने वाली यात्रायें। जातक प्रसिद्ध और लोकप्रिय हो जाता है।
- **एकादश भावः** नवीन पद एवं सम्मान का लाभ, सन्तान का जन्म, व्यापार में वृद्धि, नौकरी में पदोन्नति, मैथुन सुख, विवाह और परमार्थ कार्य।

कम बिन्दुओं के साथ अशुभ परिणामः धन-सम्पति की हानि, अपमान, पदच्युति, स्थान परिवर्तन, अपव्यय, वियोग, मृत्यु, रोग, दुर्घटनायें (8वां भाव), पारिवारिक असन्तोष।

बृहस्पति द्वारा प्रदत्त रोगः यकृत सम्बन्धित बिमारियां, केन्सर, पीलिया, मधुमेह।

बृहस्पति का अशुभ भावों (1, 3, 4, 6, 8, 10 एवं 12) में गोचर का परिणामः

- **प्रथम भावः** जन्म स्थान से प्रस्थान, बहुत बड़ा खर्चा और दूसरों के प्रति बुरे विचार।
- **तृतीय भावः** पद की हानि, व्यापार में विघ्न-बाधायें एवं रोग और मित्रों से वियोग।
- **चतुर्थ भावः** जानवरों से भय, सगे-सम्बन्धियों से शोक और अपमान।
- **षष्टम भावः** शत्रुओं, चचेरे-ममेरे भाई-बहनों से विघ्न-बाधा और रोग।
- **अष्टम भावः** थकान देने वाली यात्रायें, सन्तान, दुर्भाग्य, कृपणता और धन-सम्पति की हानि।
- **दशम भावः** सामाजिक स्थिति, भू-सम्पति एवं सन्तान को भय, नौकरी में हानि या अवनति, धन-सम्पति की हानि, कलंक, धन का गलत स्वायत्तीकरण, अस्वस्थता, किसी सम्बन्धी की मृत्यु, मानसिक न्यूनता और आत्मविश्वास की हानि।

- **द्वादश भावः** क्लेश, भू-सम्पति के कारण भय, परिवार से वियोग, भू-सम्पति विक्रय में समस्या, धन-सम्पति की हानि और आर्थिक परेशानियां।

शुक्रः

अधिकतम बिन्दुओं के साथ शुभ परिणामः विषय-सुख, सुगन्धित द्रव्य, बहुमूल्य परिधान, खुशियां, विवाह, सन्तान, धन-सम्पति, समृद्धि, पारिवारिक खुशियां, आनन्दमय यात्रायें, प्रसिद्धि, भूसम्पति एवं सुन्दर आवास।

शुक्र का शुभ भावों (1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 एवं 12) में गोचर का परिणामः

- **प्रथम भावः** सभी प्रकार का आनन्द, स्त्रियों के साथ मित्रता, सभी प्रकार के सुख, धन-सम्पति, विवाह, सुगन्धी, परिधान और कला में रुचि।
- **द्वितीय भावः** धन-सम्पति का लाभ, परिवार में खुशियां, अच्छा भोजन एवं शिक्षा, दूसरों पर प्रभाव, भार्या एवं सन्तान की प्राप्ति, विवाहोपरान्त शारीरिक सम्बन्ध एवं उनका आनन्द, उच्च पदवी और परोपकार के कार्य।
- **तृतीय भावः** समृद्धि, धन-सम्पति, सम्मान, पदवी, भाई-बहनों से अच्छे सम्बन्ध, धर्म के कार्य और रोग मुक्ति।
- **चतुर्थ भावः** खुशियों एवं मित्रों की वृद्धि, वाहन एवं समृद्धि का संचय, अच्छी शिक्षा, धन-सम्पति, पदोन्नति, अच्छे परिधान और सुन्दर घर।
- **पंचम भावः** सन्तान का जन्म, अच्छी शिक्षा, कला में रुचि, पद एवं धन-सम्पति का लाभ, नौकरी में पदोन्नति, यश-कीर्ति और धर्मपरायण कार्य।
- **अष्टम भावः** धन-सम्पति, सुख-समृद्धि में वृद्धि, रोग मुक्ति और दुःख मुक्ति।
- **नवम भावः** सुख एवं सुन्दर परिधानों की प्राप्ति, मनवान्छित अभिलाषाओं की प्राप्ति और स्वास्थ्य का लाभ।

- **एकादश भावः** निर्भयता, धन-सम्पति की वृद्धि, यश-कीर्ति, नवीन कार्यों में सफलता, उत्तम भोजन और लाभ।
- **द्वादश भावः** धन-सम्पति का लाभ, वस्त्र-परिधानों एवं सभी विषय-सुख की प्राप्ति और अन्यादि शुभ फल।

कम बिन्दुओं के साथ अशुभ परिणामः ऋण, सन्ताप, मुकदमेबाजी, हानियां, स्त्रियों के द्वारा बुराइयां, भार्या की अस्वस्थता।

शुक्र द्वारा प्रदत्त रोगः यौन रोग, विषय-सुख से होने वाले रोगादि।

शुक्र का अशुभ भावों (6, 7 एवं 10) में गोचर का परिणामः

- **षष्टम भावः** संकट, शत्रुओं की वृद्धि, परिवार में विरोध और धन-सम्पति की हानि।
- **सप्तम भावः** भार्या के कारण क्लेश, भार्या की बिमारी, शोक, जीवनवृत्ति में कठिनाइयां और गुप्तरोग का भय।
- **दशम भावः** शत्रुओं से भय, पारिवारिक क्लेश, कष्ट, मानसिक पीड़ा, धन-सम्पति की हानि, स्त्रियों से क्लेश और शारीरिक एवं मानसिक न्यूनता।

शनिः

अधिकतम बिन्दुओं के साथ शुभ परिणामः धन-सम्पति, खुशियां, सेवकों का सुख, भूसम्पति, विजय, स्थायी नौकरी, जनसमूह का नेतृत्व, सुखी वैवाहिक जीवन एवं सम्मान।

शनि का शुभ भावों (3, 6 एवं 11) में गोचर का परिणामः

- **तृतीय भावः** नौकरी, सेवकों और धन-सम्पति की प्राप्ति।
- **षष्टम भावः** चारों ओर से खुशियां और प्रसन्नता। सभी कार्यों में सफलता।
- **एकादश भावः** सभी प्रकार की खुशियां, धन-सम्पति का लाभ और विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति

अशुभ परिणाम-कम बिन्दुः अस्वस्थता, मृत्यु अथवा मृत्युभय, शत्रु, दूर स्थानों की यात्रा, नाते-रिश्तेदारों से दूरी, बाधायें, दरिद्रता, धन-सम्पति की हानि, देरी, कारावास, सन्ताप, प्राकृतिक आपदाएं, सन्ताप।

शनि द्वारा प्रदत्त रोगः वायु एवं कफ जनित बिमारियां, गठिया, पाचन शक्ति की निष्क्रियता, विकलांगता, यौनशक्ति का क्षीण होना, अनुवांशिक बिमारियां, बार-बार होने वाली गंभीर रोग।

शनि का अशुभ भावों (1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 10 एवं 12) में गोचर का परिणामः

- **प्रथम भावः** रोग और दाह-संस्कार करना अर्थात किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु।
- **द्वितीय भावः** धन-सम्पति और सन्तान को खोना।
- **चतुर्थ भावः** भार्या, सम्बन्धियों और धन-सम्पति को खोना।
- **पंचम भावः** सन्तान एवं धन-सम्पति की हानि और दिमागी व्यग्रता।
- **सप्तम भावः** भार्या को पीड़ा और यात्राओं में कष्ट झेलना।
- **अष्टम भावः** सन्तान, पशुओं, मित्रों और धन-सम्पति की हानि तथा रोगों से पीड़ा।
- **नवम भावः** धन-सम्पति की हानि, अच्छे धर्मपरायण कार्यों में रुकावटें, पिता के समान किसी बुजुर्ग सम्बन्धी की मृत्यु और निरन्तर शोक।
- **दशम भावः** पापकर्मों में संलिप्तता, सम्मान की हानि और रोगों से पीड़ा।
- **द्वादश भावः** सभी प्रकार के व्यय, व्यापार में हानि, शत्रुओं के द्वारा धन-सम्पति की हानि और पुत्र एवं भार्या की बिमारी।

राहु-केतु का गोचरः

राहु का गोचर 3रे, 6वें, 10वें एवं 11वें भाव में जबकि केतु का गोचर 3रे, 10वें एवं 11वें भाव में शुभ परिणाम देता है।

- **तृतीय भावः** नौकरी, धन-सम्पति और सेवक।
- **षष्टम भावः** खुशियां।
- **दशम भाव (केवल राहु):** धन-सम्पति की प्राप्ति। दशम भाव में केतु का गोचर शुभ नहीं है और हानि का कारण होता है।
- **एकादश भावः** खुशियां।

राहु-केतु के गोचर के अशुभ परिणामः

- **प्रथम भावः** बिमारी अथवा मृत्यु।
- **द्वितीय भावः** धन-सम्पति की हानि।
- **चतुर्थ भावः** शोक।
- **पंचम भावः** आर्थिक हानि।
- **सप्तम भावः** धन-सम्पति की हानि।
- **अष्टम भावः** जीवन को भय।
- **नवम भावः** धन-सम्पति की हानि।
- **द्वादश भावः** व्यय।

3. **वेध स्थानः**

गोचरवश कोई भी ग्रह चाहे अपने शुभ भाव अथवा अशुभ भाव में गोचर कर रहा हो, यदि दूसरा ग्रह उस ग्रह के भाव से, वेध के भाव में गोचर करता है तो इस स्थिति में गोचर के परिणाम का अहसास नहीं होता है।

उदाहरणतः सूर्य तृतीय भाव में गोचर कर रहा हो तो वह शुभ परिणाम देने के लिए बाध्य होता है लेकिन यदि उसी समय कोई अन्य ग्रह नवम भाव में गोचर कर रहा हो तो सूर्य के शुभ परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। इसी प्रकार यदि एक ग्रह नवम भाव में गोचर कर रहा हो और उसी समय कोई अन्य ग्रह तृतीय भाव में गोचर करे तो अशुभ परिणाम भी प्राप्त नहीं होंगे।

ग्रहों के शुभ भाव और उन भावों के वेध भाव इस प्रकार से हैं:

सूर्य

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	3	6	10	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	9	12	4	5

चन्द्रमा

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	1	3	6	7	10	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	5	9	12	2	4	8

मंगल

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	3	6	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	12	9	5

बुध

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	2	4	6	8	10	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	5	3	9	1	7	12

बृहस्पति

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	2	5	7	9	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	12	4	3	10	8

शुक्र

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	1	2	3	4	5	8	9	11	12
उपरोक्त भावों के वेध भाव	8	7	1	10	9	5	11	6	3

शनि

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	3	6	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	12	9	5

इस बात को याद रखना आवश्यक है कि चूंकि सूर्य, शनि का पिता है अत: सूर्य एवं शनि के बीच में कोई वेध नहीं होता है। इसी प्रकार चूंकि चन्द्रमा, बुध का पिता है अत: इनके बीच भी वेध नहीं होता है।

4. सर्वाष्टकवर्ग में 30 से अधिक बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि में जब कोई ग्रह गोचर करता है तो वह बहुत ही श्रेष्ठ फल देता है। इसी प्रकार अपने भिन्नाष्टकवर्ग में 4 बिन्दुओं से अधिक बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि में भी गोचर का ग्रह बहुत ही पवित्र एवं शुभ फल देता है।

5. किसी भी ग्रह की अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि में गोचर करने की अवधि बहुत ही शुभ फलदायक होती है, जबकि ग्रह का नीच राशि में गोचर विनाशकारी साबित होता है। शनि ने 17 अप्रैल 1998 को अपनी नीच राशि, मेष में प्रवेश किया था तो इसके विनाशकारी परिणामों का अनुभव सारे विश्व ने किया था। चारों ओर आग, बाढ, भूकम्प आदि ने हलचल मचा दी थी। बाढ ने पूरे बांग्ला देश को तबाह कर दिया। दक्षिण एशिया की अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी। बांग्लादेश पूर्ण रुप से बाढ की चपेट में आ गया था। नाटो ने युगोस्लाविया में बहुत बड़े पैमाने पर बमबारी की। कोसोवा से शरणार्थियों के स्थानांतरण ने हत्या, लूट, एवं आगजनी से भरे मध्य युग के इतिहास की याद ताजा कर दी थी। भारत में, जयललिता द्वारा समर्थन वापिस लेने से वाजपेयी सरकार के स्थायित्व को खतरा उत्पन्न हो गया था और 15 अप्रैल 1999 को उसने संसद में अपना बहुमत खो दिया। सरकार केवल एक मत से बहुमत सिद्ध करने में असफल रही और उसे त्यागपत्र देना पडा। भारत में उत्पन्न इस स्थिति का एक अन्य कारण, स्वतत्रं भारत की जन्मपत्रिका के लग्नेश शुक्र का वृषभ/मिथुन राशि में गोचर का प्रभाव भी था।* स्वतंत्र भारत की जन्मपत्रिका में चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में मिथुन राशि में कोई भी बिन्दु नहीं है। चन्द्रमा बुद्धि का कारक है और द्वितीय भाव परिवार को दर्शाता है।

6. **साढ़े-साती:** ज्योतिषशास्त्र में साढ़े-साती का अर्थ है कि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की राशि विशेष से द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय भाव में गोचर के शनि द्वारा लिया जाने वाला सात वर्ष और 6 महीनों का समय। चूंकि शनि एक राशि में सामान्यतः ढाई वर्ष गोचर करता है अतः यह उसके द्वारा तीन राशियों में गोचर करने में लिया गया कुल समय होता है।

आओ इसे उदाहरण से समझते हैं। पण्डित जवाहर लाल नेहरु की कुण्डली में चन्द्रमा कर्क राशि में है। जब शनि कर्क से द्वादश भाव की राशि अर्थात मिथुन में प्रवेश करेगा तो उनकी साढ़े साती का समय प्रारम्भ हो जाएगा। यहां शनि

---

* *इस विषय में श्री एम. एस. मेहता ने भारतीय विद्या भवन से प्रकाशित हाने वाली पत्रिका जरनल आफ ऐस्टोलॉजी के एक लेख में विस्तार से वर्णन किया है।*

ढाई वर्ष तक रहेगा और फिर कर्क राशि में प्रवेश करेगा और ढाई वर्ष कर्क राशि में गोचर करने के उपरान्त सिंह राशि में प्रवेश करेगा। सिंह राशि में भी वह ढाई वर्ष तक रहेगा। इस प्रकार तीनों राशियों में शनि द्वारा गोचर करने में लिया गया समय साढ़े सात वर्ष का होगा। यह साढ़े सात साल का समय ही साढ़े-साती कहलाता है।

श्री काटवे की साढ़े-साती की परिभाषा: महाराष्ट्र के ज्योतिषाचार्य स्वर्गीय श्री काटवे कहते हैं कि साढ़े सात साल के समय अन्तराल का कोणीय दूरी के आधार पर निर्णय करना चाहिए न कि राशियों के आधार पर। अर्थात जब शनि, जन्म चन्द्रमा से 45 अंश दूर होगा तो जातक की साढ़े-साती का समय प्रारम्भ होएगा। उनके इस विचार में गूढ तथ्य छुपा है। उदाहरणत: किसी जातक का जन्म चन्द्रमा मेष राशि में 27 अंश का है तो साढ़े-साती का समय तब प्रारम्भ होगा जब गोचर में शनि मीन राशि में प्रवेश करेगा अथवा यह अधिक सटीक होगा कि जब गोचर का शनि मीन राशि में 12 अंश अर्थात जन्म चन्द्रमा से 45 अंश दूरी पर पहुंचेगा तब साढ़े-साती का प्रारम्भ होगा। काटवे के अनुसार, मीन राशि में 12 अंश पर पहुचने पर साढ़े साती का प्रारम्भ मानना अधिक सही है और इसी प्रकार जब शनि मिथुन राशि में 12 अंश पर पहुंचेगा तो साढ़े साती समाप्त होगी न कि मिथुन में प्रवेश करते ही।

जन्म चन्द्रमा से 12वें, 1ले और 2रे भाव में शनि के गोचर का परिणाम: शास्त्रीय ग्रन्थों में साढ़े-साती शब्द का उल्लेख कहीं नहीं है फिर भी यह शब्द सुनने के पश्चात लोंगों की नसों में भय के मारे खून का प्रभाव तेज हो जाता है। यह कहा जाता है कि इसके कारण **"छत्र भंग"** हो जाता है। लोगों में यह सामान्य अन्धविश्वास है कि प्रथम साढ़े साती में जातक अपने दादा-दादी को खो देता है, दूसरी साढ़े-साती में माता-पिता को और तीसरी साढ़े-साती में उसकी स्वयं की मृत्यु हो जाती है।

यद्यपि शास्त्रीय ग्रन्थों में साढ़े-साती शब्द का उल्लेख नहीं है लेकिन जन्म चन्द्रमा से द्वादश, प्रथम और द्वितीय भाव में शनि के गोचर के अशुभ परिणाम अवश्य मिलते हैं। आओ देखते हैं कि इन ग्रन्थों में इस गोचर के विषय में क्या कहा गया है।

सभी ग्रन्थों में जन्म चन्द्रमा से 3, 6 एवं 11वें भाव के अतिरिक्त सभी भावों में शनि के गोचर को अशुभ फलदायी कहा है। शनि एक अशुभ ग्रह है तथा सीमा, बाधाओं, देरी, मृत्यु, हत्या, बलात्कार, लैंगिक सम्बन्धों में दोष, वियोग, दर्द और अन्तकाल की शारीरिक पीड़ा का कारक है। इसके कारण धन की हानि, चोरी और दरिद्रता होती है तथा यह जातक को आलसी, व्यग्र और अस्पष्ट बनाता है।

साढ़े-साती के परिणामः फलदीपिका में मंत्रेश्वर कहते हैं कि जन्म चन्द्रमा से द्वादश भाव में शनि का गोचर व्यापार में कोई लाभ नहीं देता है तथा शत्रुओं के उपद्रवों और भार्या एवं सन्तान के रोगग्रस्त होने के कारण धन हानि देता है। इसी प्रकार प्रथम भाव अर्थात जन्म चन्द्रमा के उपर शनि का गोचर बिमारियां और दाह-संस्कार के कर्म करवाता है तथा द्वितीय भाव में ध न-सम्पति और सन्तान की हानि देता है।

क्या साढ़े-साती का समय वास्तव में भयानक होता है?

पारम्परिक ज्योतिषाचार्यों के मतानुसार **"अष्टम"** शनि के अतिरिक्त, साढ़े-साती का समय सबसे अधिक भंयकर होता है और इसके पक्ष में निम्नलिखित उदाहरण देते हैं:

1. जब 30 जनवरी 1948 को महात्मा गान्धी की हत्या हुई उस समय उनकी साढ़े-साती चल रही थी।
2. श्रीमति इन्दिरा गान्धी ने अपनी प्रथम साढ़े-साती के समय माता हो खोया था तथा द्वितीय साढ़े-साती के समय अपने पति और पिता को खोया था। यद्यपि इसी साढ़े-साती के समय वह स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमण्डल में मंत्री बनी थीं।

इसके विपरीत,

1. जवाहर लाल नेहरु जब 1947 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने थे उस समय शनि, कर्क राशि में ही गोचर कर रहा था, अर्थात नेहरु का साढ़े-साती का समय चल रहा था।

2. श्रीमति इन्दिरा गान्धी जब जनवरी 1966 में भारत की प्रधानमंत्री बनी उस समय उनका भी, उनका साढ़े-साती का समय चल रहा था।

3. साढ़े-साती का समय श्री मोरारजी देसाई के लिए बड़ा भाग्यशाली सिद्ध हुआ था। द्वितीय साढ़े-साती के समय वह महाराष्ट्र की सरकार में मंत्री बने और तीसरी साढ़े-साती में भारत के प्रधानमंत्री बने।

जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के अप्रैल-जून, 1999 के संस्करण में श्री के. एन. राव की देखरेख में साढ़े-साती के परिणामों के गूढ अध्ययन पर एक अति विशिष्ट लेख छपा था। जिसने बिना किसी शंका के यह सिद्ध किया कि साढ़े-साती का समय अशुभ समय नहीं हो सकता है, यदि:

1. उस समय की महादशा और अन्तर्दशा शुभ हों।

2. यदि सर्वाष्टक वर्ग में चन्द्रमा से विचारणीय तीनों भावों अर्थात द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय में 30 से अधिक शुभ बिन्दु हों तो शनि के इस गोचर के परिणाम अतिशुभ होंगे।

3. यदि अपने भिन्नाष्टक वर्ग में इन तीनों भावों में शनि अधिकतम शुभ बिन्दु प्राप्त करता है तो इन भावों में शनि के गोचर का परिणाम अशुभ नहीं हो सकता है।

4. यदि इन तीनों भावों में शनि अपनी राशि अथवा मित्र की राशियों में गोचर करता है तो परिणाम अशुभ नहीं हो संकते हैं।

5. चन्द्रमा के आस-पास के नक्षत्रों को देखिये। यदि ये शुभ हैं तो साढ़े-साती का परिणाम अशुभ नहीं हो सकता है।

6. अन्य ग्रहों की दृष्टियों के प्रभाव का भी विचार करना चाहिए। शुभ ग्रहों की दृष्टि अच्छे परिणाम और अशुभ ग्रहों की दृष्टि बुरे परिणाम देती है।

7. नक्षत्रों के द्वारा गोचर की विवेचना:

जन्म नक्षत्र: जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर होता है वह नक्षत्र, जन्म नक्षत्र कहलाता है। उदाहरणत: नेहरु की कुण्डली में चन्द्रमा कर्क राशि में 1' अंश 51 मिनट का है। इस अंश पर कर्क राशि में आश्लेषा नक्षत्र होता है, अत: उनका जन्म नक्षत्र भी आश्लेषा ही हुआ।

ज्योतिषशास्त्र के श्रेष्ठ ग्रन्थों में से एक, फलदीपिका में मंत्रेश्वर ने ग्रहों के विभिन्न नक्षत्रों में गोचर के फलों का उल्लेख विस्तार से किया है। फलदीपिका के सिद्धान्त अन्य ग्रन्थों के सिद्धान्तों से अलग मत रखते हैं। फलदीपिका के मतानुसार किसी भी ग्रह का जन्म नक्षत्र से तृतीय, पंचम एवं सप्तम नक्षत्र अथवा इनके त्रिकोण के नक्षत्रों अर्थात जन्म नक्षत्र से बारहवें, इक्कीसवें, चौदहवें, तेईसवें, सोलहवें एवं पच्चीसवें नक्षत्र में गोचर, जीवन में दुर्भाग्य का कारण होता है। तृतीय एवं इसके त्रिकोण के नक्षत्र **विपत् तारा**, पंचम एवं इसके त्रिकोण के नक्षत्र **प्रत्यरि तारा** और सप्तम एवं इसके त्रिकोण के नक्षत्र **वध तारा** कहलाते हैं। जब कोई शुभ ग्रह इन नक्षत्रों में गोचर करता है तो परिणाम शुभ नहीं होते हैं जबकि पापी एवं क्रूर ग्रह का इन नक्षत्रों में गोचर शुभ फलदायक होता है। विशेषकर तब अधिक श्रेष्ठ परिणाम मिलते हैं जब ये ग्रह अन्य अशुभ ग्रहों से युति करें अथवा दृष्ट हों अथवा ये स्वयं वक्री या अस्त हों।

ज्योतिषशास्त्र के विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों के मतानुसार ग्रहों का अलग-अलग नक्षत्रों में गोचर का फल इस प्रकार से होता है:

सूर्य का जन्म नक्षत्र से 1ले और 14वें से 23वें नक्षत्र तक गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

चन्द्रमा का जन्म नक्षत्र से 1ले, 2रे, 16वें से 18वें नक्षत्र तक पर गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

मंगल का जन्म नक्षत्र से 1ले से 8वें तक, 12वें से 15वें और 18वें से 21वें नक्षत्र तक गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

बुध, बृहस्पति और शुक्र का जन्म नक्षत्र से 1ले से 3रे तक, 7वें से 12वें तक, 18वें एवं 19वें नक्षत्र का गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

शनि, राहू और केतु का जन्म नक्षत्र से 1ले, 7वें, 9वें से 11वें तक, 26वें एवं 27वें नक्षत्र पर गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

8. **ग्रहों का कक्ष्याओं में गोचर:** अष्टकवर्ग पद्धति द्वारा ग्रहों के गोचर का सूक्ष्म अध्ययन करने का यह एक अतिमहत्वपूर्ण विचार है। प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 3 अंश 45 मिनट के आठ बराबर भागों में बांटा गया है जिन्हे कक्ष्यायें कहते हैं। इन कक्ष्याओं के स्वामी क्रमशः शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्रमा और लग्न होते हैं। कक्ष्याओं और उनके स्वामियों का यह क्रम निश्चित होता है। कोई ग्रह जब गोचर करते समय उस कक्ष्या में आता है जिस कक्ष्या के स्वामी ने उस भाव में शुभ बिन्दु दिया होता है (इसे प्रत्येक ग्रह का प्रस्तारक चक्र बनाकर देखा जा सकता है) तो वह अच्छा परिणाम देता है जबकि बिन्दुहीन कक्ष्या में किसी भी ग्रह का गोचर अशुभ परिणाम देता है।

यहां परिणामों को परिभाषित करने के लिए एक अन्य सोच भी है। उदाहरणत: गोचर में शनि, मंगल की कक्ष्या में पहुंचता है और मंगल ने एक बिन्दु का अंशदान दिया है तो शनि का इस कक्ष्या में गोचर न केवल शुभ होगा अपितु यहां शनि अपने कारकतत्वों के साथ-साथ मंगल के भी कारकतत्वों के भी शुभ परिणाम देगा। इसको विस्तार से मेरी अष्टकवर्ग की पुस्तक में कक्ष्या के अध्याय में समझाया गया है।

9. **विभिन्न लग्नों के लिए तत्कालिक शुभ एवं अशुभ ग्रह:**

किसी भी ग्रह के गोचर के परिणामों को जांचने से पहले कुण्डली में उस ग्रह के स्वामित्व के भावों को देखना चाहिए और तब निर्णय करना चाहिए कि वह ग्रह उस लग्न विशेष के लिए शुभ ग्रह है अथवा अशुभ ग्रह है। यह विचार वैदिक ज्योतिष में अतिविशिष्ट है और बृहत्पाराशर होराशास्त्र में महर्षि पराशर ने इसको विस्तार से कहा है। इस संदर्भ में निम्नलिखित नियमों को याद रखना अतिआवश्यक है।

1. लग्नेश चाहे नैसर्गिक शुभ ग्रह हो अथवा अशुभ, सदैव शुभ ही होता है। उदाहरण के लिए मेष एवं वृश्चिक लग्न के लिए मंगल तथा मकर एवं कुम्भ लग्न के लिए शनि, सदैव ही शुभ ग्रह होता है।
2. पंचमेश और नवमेश सदैव ही पवित्र होते हैं।
3. केन्द्र एवं त्रिकोण के स्वामी होने के कारण कर्क एवं सिंह लग्नों के लिए मंगल, वृषभ एवं तुला लग्न के लिए शनि और मकर एवं कुम्भ लग्न के लिए शुक्र योगकारक ग्रह होकर सदैव शुभफलकारी होता है।

4. केन्द्राधिपति दोष के कारण केन्द्र के स्वामी होने पर अशुभ ग्रह अपनी अशुभता छोड़कर एवं शुभ ग्रह अपनी शुभता छोड़कर, सम हो जाते हैं।

10. **दृष्टियां:** गोचर के, ग्रहों की दृष्टियां भी महत्वपूर्ण होती हैं। गोचर के ग्रह पर शुभ दृष्टि अच्छे परिणाम देती है जबकि अशुभ दृष्टि, विनाशकारी परिणाम देने वाली हो सकती हैं।

11. **वक्री ग्रह:** एक नैसर्गिक शुभ ग्रह जब वक्री होकर किसी अनुकूल भाव में गोचर करता है तो उस भाव के कारकतत्वों की वृद्धि करता है जबकि यदि वह प्रतिकूल भाव में वक्री होकर गोचर करता है तो परिणामों की अशुभता को कम करता है।

एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह जब वक्री होकर किसी अनुकूल भाव अर्थात 5, 6 या 11 वें भाव में गोचर करता है तो यह विनाशकारी परिणाम देता है, जबकि प्रतिकूल भाव में वक्री अशुभ ग्रह का गोचर अशुभ परिणाम दायक होता है।

12. **दशा:**

1. यदि एक़ शुभ ग्रह की दशा चल रही हो और गोचर में वह शुभ ग्रह, अनुकूल भाव में गोचर कर रहा हो तो उस ग्रह से सम्बन्धित अधिकतम शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि दशानाथ प्रतिकूल भाव में गोचर करता है तो शुभ परिणामों में कमी आएगी।

2. यदि एक अशुभ ग्रह की दशा चल रही हो और गोचर में वह अशुभ ग्रह, प्रतिकूल भाव में गोचर करता है तो परिणाम अत्याधिक अशुभ होंगें, जबकि अनुकूल भाव में उसका गोचर अशुभ परिणामों में कमी करेगा।

13. **अस्त होने का प्रभाव:** यदि ग्रह चन्द्रमा से अनुकूल भाव में गोचर करते समय अस्त हो अथवा राहु-केतु अक्ष में आने से ग्रहण से पीड़ित हो तो शुभ परिणाम नहीं दे सकते हैं, जबकि ऐसी ही स्थिति में यदि ग्रह प्रतिकूल भाव में गोचर कर रहे हों तो अशुभ परिणाम अवश्य देते हैं। प्रत्येक ग्रह सूर्य से एक निश्चित अंशात्मक दूरी पर होने पर ही अस्त हो जाता है। प्रत्येक ग्रह की अस्त होने के लिए सूर्य से अंशात्मक दूरी इस प्रकार से है:

क्र.सं.	ग्रह	अस्त होने के लिए सूर्य से निम्नतम अंशात्मक दूरी
1	चन्द्रमा	12 अंश
2	मंगल	17 अंश
3	बुध	3 अंश
4	बृहस्पति	11 अंश
5	शुक्र	9 अंश
6	शनि	15 अंश

14. **पापकर्तरी योगः** यदि गोचर में कोई ग्रह पाप कर्तरी योग में आ जाता है तो यदि यह अनुकूल भाव में गोचर कर रहा होता है तो इसके शुभ परिणामों में कमी आ जाती है और यदि प्रतिकूल भावों में गोचर कर रहा तो इसके अशुभ परिणामों में वृद्धि हो जाती है।

15. **शुभकर्तरी योगः** इसमें पापकर्तरी योग के विपरीत परिणाम प्राप्त होंगे।

16. गोचर करते समय किसी भी ग्रह से अन्य ग्रहों की स्थितियों को भी देखना चाहिए। किसी भी गोचर के ग्रह से 4थे, 5वें, 8वें और 9वें भाव में शुभ ग्रहों का गोचर अच्छा होता है जबकि अशुभ ग्रहों का गोचर, अशुभ होता है। यह नियम, पराशर द्वारा दशा/अन्तर्दशा के परिणामों की विवेचना में बताए गये नियम के अनुसार ही है।

17. किसी भी राशि के प्रथम 10 अंशों में गोचर करते समय सूर्य और मंगल, तुरन्त परिणाम देते हैं। धीमी गति के ग्रहों, शनि और बृहस्पति का गोचर अधिक शक्तिशाली होता है। ढाई साल के परिणामों का अनुमान शनि से, एक वर्ष के परिणामों का अनुमान बृहस्पति से, एक महीने के परिणामों का अनुमान सूर्य से और प्रतिदिन के परिणामों का अनुमान चन्द्रमा से करना चाहिए।

18. **प्रत्येक ग्रह को लग्न मानकर गोचर के परिणामः** वैदिक ज्योतिषशास्त्र का एक सम्माननीय ग्रन्थ फलदीपिका, कुण्डली के प्रत्येक ग्रह को लग्न मानकर उससे गोचर के ग्रहों की स्थिति देखकर गोचर के परिणामों का अनुमान लगाने की अनुशंसाा करता है। यह सिद्धान्त, निम्नलिखित उदाहरण से अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

माना कि जन्म कुण्डली में मंगल वृषभ राशि में है। गोचर के मंगल के परिणामों को जानने के लिए वृषभ राशि को लग्न मानकर यह देखना चाहिए कि इससे मंगल किस भाव में गोचर कर रहा है। यदि मंगल वृश्चिक राशि में गोचर कर रहा हो और यह बिन्दुहीन हो तो मंगल का गोचर विवाह सम्बन्धित कष्टदायक परिणाम देगा। इसी प्रकार यदि कन्या राशि 6 बिन्दुओं से युक्त है तो मंगल का इस राशि में गोचर शुभ फलदायक होगा।

19. किसी ग्रह विशेष के अष्टकवर्ग में जिस राशि में कोई भी बिन्दु नहीं होता है उस राशि विशेष में उस ग्रह विशेष का गोचर अशुभ परिणाम देता है, यहां तक कि जीवन की हानि भी दे सकता है। लेकिन जिस भाव में 7 या 8 बिन्दु हों उस भाव की राशि में उस ग्रह विशेष का गोचर अत्याधिक शुभ फल जैसे कि उच्च सरकारी पद अथवा व्यापार में मोटा लाभ आदि देगा।

20. **गोचर के परिणामों का समय निर्धारण:** फलदीपिका के अनुसार शुभ अथवा अशुभ परिणाम तब प्राप्त होंगे जब कोई ग्रह जन्म कुण्डली में अपने भोगांशों को गोचर में पार करेगा। उदाहरण के लिए यदि जन्म कुण्डली में बृहस्पति, मेष राशि में 15 अंश का है और यह वृश्चिक राशि में गोचर कर रहा है जिसके पास 8 शुभ बिन्दु हैं। इस भाव के शुभ परिणाम तब प्राप्त होंगे जब गोचर में बृहस्पति वृश्चिक राशि के 15 अंश पर पहुंचेगा।

21. चाहे कोई ग्रह नैसर्गिक अशुभ ही क्यों न हो, गोचर में जब वह अपनी राशि में गोचर करता है तो कुण्डली में उस राशि के भाव के परिणामों में बढ़ोतरी होगी। यदि गोचर का ग्रह नीच अथवा शत्रु राशि में हो तो वह कुण्डली में सम्बन्धित भाव के परिणामों में भी दुष्टता लाएगा।

22. यदि जन्मकुण्डली में कोई शुभ ग्रह दुष्ट स्थानों (6, 8 और 12) का स्वामी हो तो यह जिस भाव में होगा उस भाव को नष्ट कर देगा चाहे वह उस भाव में उच्च अथवा स्वराशि का ही क्यों न हो। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह किसी शुभ भाव का स्वामी हो और कुण्डली में अपनी उच्च या स्वराशि में स्थित हो तो यह उस भाव के लिए शुभता ही प्रदान करेगा – **फलदीपिका।**

23. अधिकतम बिन्दु वाले भावों में ग्रहों का गोचर अच्छे परिणाम देने वाला होता है। पवित्र कार्य करने के लिए यह नियम 6, 8 और 12वें भाव पर लागू नहीं होता है।

मूर्तिनिर्णय

यह ग्रहों के गोचर के अनुसार फलकथन कहने के लिए अपनायी जाने वाली एक विशिष्ट विधि है। मूर्तियां चार प्रकार की होती हैं। स्वर्ण, रजत, ताम्र और लौह। इसमें स्वर्ण मूर्ति सबसे अधिक मंगलकारी और घटते क्रम में लौह मूर्ति सबसे कम शुभ होती है। इसे निम्नलिखित तरीके से देखा जाता है।

यदि हमें किसी राशि विशेष में शनि अथवा किसी अन्य ग्रह के गोचर के परिणाम कहने हों तो शनि अथवा विचारणीय ग्रह का उस राशि विशेष में प्रवेश के समय को सावधानी पूर्वक लिख लें। यह भी देखें कि उसी समय गोचर में चन्द्रमा किस राशि में स्थित है। गोचर के चन्द्रमा की स्थिति को जन्म चन्द्रमा की स्थिति से जांचे। यदि जन्म चन्द्रमा से गोचर का चन्द्रमा

1. 1ले, 6वें या 11वें भाव में हो तो उस राशि विशेष के लिए राशि परिवर्तन कर रहे विचारणीय ग्रह का गोचर स्वर्ण मूर्ति होगा और अत्याधिक श्रेष्ठ होकर शुभ एवं स्वर्णिम परिणाम देगा।

2. 2रे, 5वें या 9वें भाव में हो तो उस राशि विशेष के लिए राशि परिवर्तन कर रहे विचारणीय ग्रह का यह गोचर रजत मूर्ति होगा और उत्तम होकर अच्छे अवसर एवं परिणाम देगा।

3. 3रे, 7वें या 10वें भाव में हो तो उस राशि विशेष के लिए राशि परिवर्तन कर रहे विचारणीय ग्रह का यह गोचर ताम्र मूर्ति होगा और मध्यम होकर शुभाशुभ दोनों प्रकार के परिणाम देगा।

4. 4थे, 8वें या 12 वें भाव में हो तो उस राशि विशेष के लिए राशि परिवर्तन कर रहे विचारणीय ग्रह का यह गोचर लौह मूर्ति होगा और निकृष्ट होकर परेशानियां एवं समस्यायें देगा।

इसे संक्षिप्त में कहें तो यह एक ग्रह के गोचर के परिणाम का जन्म चन्द्रमा के संदर्भ में गोचर के चन्द्रमा की स्थिति से अवलोकन है अर्थात यह दो चन्द्रमाओं की कहानी है।

इसे आगे दी गई तालिका द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।

ग्रह द्वारा किसी राशि में प्रवेश करते समय जन्म चन्द्रमा से गोचर के चन्द्रमा द्वारा गृहीत भाव	मूर्ति लक्षण	परिणाम
1ला, 6वां अथवा 11वां भाव	स्वर्ण	अत्याधिक मंगलकारी और शुभ परिणाम
2रा, 5वां अथवा 9वां भाव	रजत	परिमित रुप से अच्छे अवसर और परिणाम
3रा, 7वां अथवा 10वां भाव	ताम्र	परिमित रुप से मिले-जुले परिणाम
4था, 8वां अथवा 12वां भाव	लौह	अत्याधिक अमंगलकारी परिणाम - परेशानियां और समस्यायें

विशेषः इस नियम को गोचर के अन्य नियमों के साथ सुनिश्चित होने के लिए प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरण के लिए जन्म चन्द्रमा से 3रे, 6वें और 11वें भाव में शनि का गोचर शुभ परिणाम देने वाला होता है। इसके साथ ही साथ यदि यह स्वर्ण मूर्ति भी हो तो इसके परिणाम अत्याधिक श्रेष्ठ होगें। इसी प्रकार यदि कोई ग्रह अशुभ भाव में प्रवेश करे और मूर्ति भी लौह हो तो उस ग्रह के परिणाम अत्याधिक अशुभ होगें। यह नियम गोचर के अन्य नियमों जैसे कि साढ़े साती का समय, ग्रह के अधिकतम बिन्दु वाले बली भाव का गोचर, जन्मादि नक्षत्र पर गोचर आदि के आधार पर संशोधित होगा।

उदाहरणः कुण्डली में गोचर के फलों और मूर्ति निर्णय।

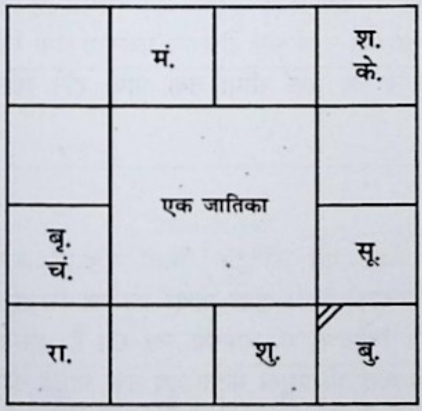

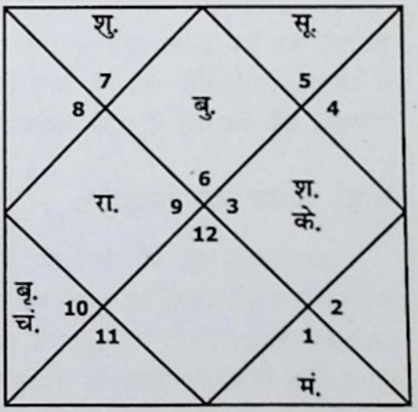

इस जातिका की बृहस्पति में शुक्र की दशा चल रही है। 9 दिसम्बर, 2008 को 23 बजकर 0041 मिनट पर जब बृहस्पति राशि परिवर्तन करेगा उसके अनुसार हमें इस जातिका के लिए गोचर के परिणाम और मूर्ति निर्णय करना है।

9 दिसम्बर, 2008 को जब बृहस्पति राशि परिवर्तन करेगा उस समय ग्रहों की स्थिति इस प्रकार से होगी।

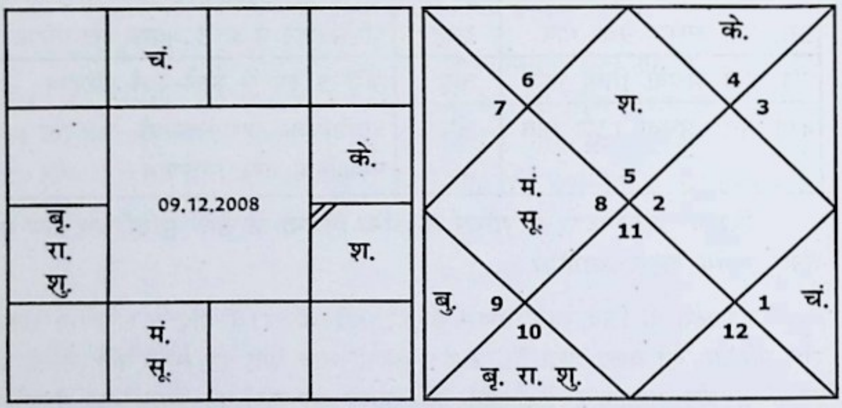

जब चन्द्रमा मकर राशि में प्रवेश करेगा उस समय गोचर में चन्द्रमा मेष राशि में होगा। इस जातिका की राशि भी मकर है अर्थात जन्म चन्द्रमा मकर राशि में है। अतः जन्म चन्द्रमा से गोचर का चन्द्रमा 4थे भाव में होगा जो लौह मूर्ति है। इस जातिका के लिए बृहस्पति का यह गोचर शुभ परिणाम नहीं लायेगा क्योंकि बृहस्पति अपने अशुभ भाव में प्रवेश करेगा और चूंकि मूर्ति भी लौह है इसलिए गोचर के परिणाम में निकृष्टता अधिक होगी। लेकिन यहां केवल इसी का विचार करके परिणाम कह देना उचित नहीं होगा। यह बृहस्पति न केवल नीचभंग राजयोग बना रहा है अपितु गज-केसरी योग भी बना रहा है जो एक सीमा तक प्राप्त होने वाले परिणामों की अशुभता में कमी लायेगा।

दोहरे गोचर का सिद्धान्तः

इस नियम का प्रतिपादन श्री के. एन. राव के द्वारा किया गया है और ज्योतिषशास्त्र को उनका यह बहुत बड़ा योगदान भी है। दोहरे गोचर का यह सिद्धान्त आज एक प्रमुख नियम बन चुका है और विश्वभर में अपनाया जा रहा है। इसके अनुसार कि किसी भी जातक के जीवन में कोई भी प्रमुख घटना तब तक घटित नहीं होती है जब तक शनि अपनी सहमति और बृहस्पति अपना आशीर्वाद नहीं दे देता है। उदाहरण के लिए तब तक सन्तान नहीं हो सकती है जब तक शनि और बृहस्पति

सम्बन्धित पंचम या नवम भाव को दृष्ट नहीं करते हैं। इसी प्रकार विवाह तब तक नहीं हो सकता है जब तक बृहस्पति और शनि, सप्तम भाव/सप्तमेश अथवा लग्न/लग्नेश को दृष्ट न करे। इसी प्रकार नौकरी प्राप्त करने के लिए भी दशम/दशमेश से सम्बन्ध स्थापित होता है। शनि और बृहस्पति धीमी गति से चलने वाले ग्रह हैं और घटित होने वाली घटना पर इनका आशीर्वाद होना आवश्यक है। इनके आशीर्वाद के पश्चात ही घटना को सुनिश्चित करने के लिए तीव्र गति से चलने वाले ग्रहों के गोचर को लगाना चाहिए।

दोहरा गोचर और विवाहः

श्री के. एन. राव के मतानुसार विवाह के समय का निर्धारण करने के लिए हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि विवाह का सही समय आ चुका है (विवाह से सम्बन्धित अध्याय देखें)। इस समय को उचित दशा की सहायता भी मिलनी चाहिए और इसके पश्चात गोचर में शनि को ढाई वर्ष के दौरान सीधी अथवा वक्री गति से लग्न/लग्नेश अथवा सप्तम/सप्तमेश से सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। वक्री गति में ग्रह अपने द्वारा गृहीत भाव से एक भाव पीछे से भी दृष्ट करता है।

इसी प्रकार बृहस्पति को भी विवाह के एक वर्ष के अन्दर सीधी या वक्री गति में उपरोक्त भावों/भावेशों से सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि बृहस्पति इन भाव/भावेशों के अतिरिक्त पंचम/नवम भाव अथवा इनके भावेशों से भी सम्बन्ध स्थापित करता है।

उदाहरणः कुण्डली में विवाह निर्णय।

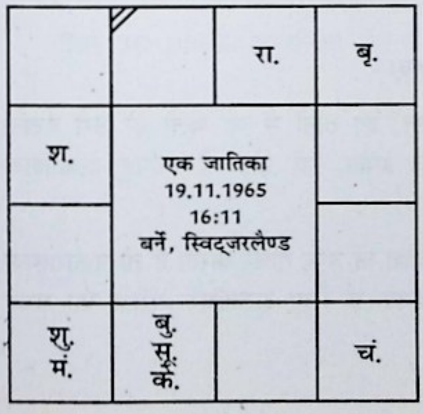

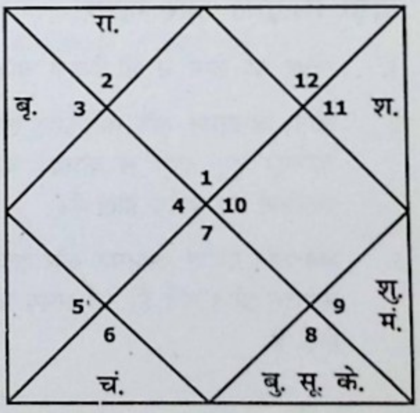

इस जातिका का विवाह 11 नवम्बर, 1994 को बृहस्पति/बृहस्पति की दशा में हुआ। विवाह के समय शनि, कुंभ राशि में बैठकर और बृहस्पति, सप्तम भाव की तुला राशि में बैठकर लग्न को दृष्ट कर रहे थे। इस दिन मंगल चतुर्थ भाव में बैठकर सप्तम भाव को देख रहा था और शुक्र एवं सूर्य सप्तम भाव में थे।

सन्तान का जन्मः

उदाहरण कुण्डली अमेरिका में बसे एक धनवान चिकित्सक की है।

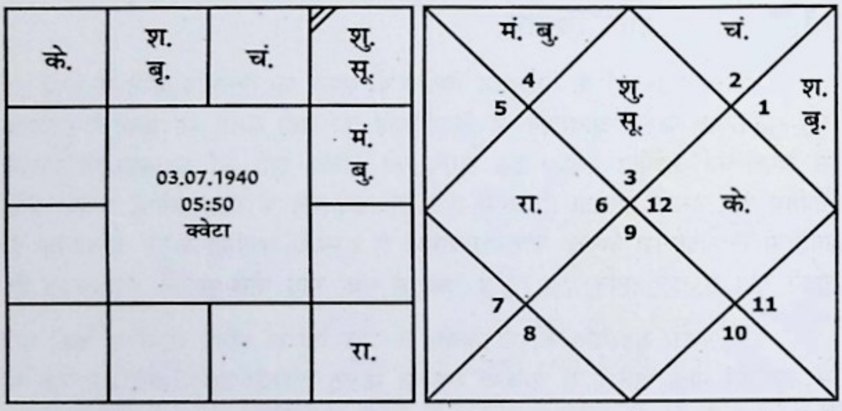

इस जातक की प्रथम सन्तान का जन्म सितम्बर, 1969 में हुआ। इनकी भार्या ने जब गर्भधारण किया उस समय बृहस्पति सिंह राशि से नवम भाव को और शनि, मेष राशि से पंचम भाव को दृष्ट कर रहा था।

नाड़ी सिद्धान्त और गोचरः

1. गोचर को लग्न से भी देखना चाहिए।
2. लग्न, चन्द्रलग्न और कारकांश लग्न, इन तीनों में जो बली हो उसे देखना चाहिए। भृगु नाड़ी में कारकों का प्रयोग नहीं होता है अपितु तत्कालिक स्वामियों का प्रयोग होता है।
3. जब शनि षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश के उपर गोचर करता है तो नकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। यह समय जातक के लिए अत्याधिक परीक्षा का समय होता है।

4. शनि का लग्नेश, पंचमेश और नवमेश के उपर गोचर सकारात्मक परिणाम देता है।

5. शनि का चतुर्थेश के उपर गोचर निवास स्थान अथवा कार्यालय में परिवर्तन या रुपान्तरण लाता है।

6. शनि का सप्तमेश के उपर गोचर, विवाह देता है और भार्या के लिए शुभ संदेश लाता है।

7. तृतीयेश के उपर गोचर, भाई-बहनों के लिए तथा नवमेश के उपर गोचर पिता, उच्च शिक्षा और विदेश यात्रा के लिए शुभ संदेश लाता है।

8. शनि का 6, 8 एवं 12 का गोचर निकृष्ट से निकृष्ट होता है।

9. कोई भी लग्न हो शनि का षष्टम, अष्टम और द्वादश भावों में गोचर का समय, जातक की अत्याधिक परीक्षा का समय होता है। जातक की आंखों में आंसू तक आ जाते हैं और इस स्थिति में तभी विराम लगता है जब शनि वक्री होता है।

10. जिस भाव में तीन से अधिक ग्रह होते हैं उस भाव पर शनि का गोचर अत्याधिक महत्वपूर्ण घटनाओं को देता है।

11. बृहस्पति के षष्टम, अष्टम और द्वादश भावों में गोचर करते समय जातक सत्ताहीन हो जाता है लेकिन षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश के उपर बृहस्पति का गोचर संरक्षण देता है।

12. चाहे राजयोग भी क्यों न हो, किसी भी भाव अथवा भावेश के उपर राहु का गोचर उस भाव/भावेश से सम्बन्धित क्षेत्र में परेशानियां देता है तथा केतु का गोचर उस भाव से सम्बन्धित क्षेत्र में आकस्मिक परिवर्तन देता है।

अध्याय 16

दशा
(दशा की व्याख्या कैसें करें)

किसी भी कुण्डली की विवेचना के लिए ज्योतिषशास्त्र में कई प्रकार के दशाचक्र उपलब्ध हैं। पराशर ने भी स्वयं 32 प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है, लेकिन कलयुग में विंशोत्तरी दशा ही सर्वाधिक प्रसिद्ध दशा है। अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा, अन्य दो प्रचिलित दशायें हैं।

विंशोत्तरी का अर्थ है एक सौ बीस साल। एक जातक की अधिकतम आयु को 120 वर्ष मानकर प्रत्येक ग्रह को कुछ वर्षों का समय दिया गया है। विंशोत्तरी दशा को लगाते समय पराशर द्वारा दिए गये सिद्धान्तों का अनुकरण करना आवश्यक है। इन सिद्धान्तों को लघु रुप में नीचे दिया जा रहा है।

1. किसी भी कुण्डली में लग्नेश और त्रिकोणेश (पंचमेश एवं नवमेश), हमेशा ही कुण्डली के लिए पवित्र एवं मंगलकारी होते हैं।

2. जब भी केन्द्राधिपति और त्रिकोणाधिपति की युति होती है तो यह युति उच्च स्तर का राजयोग देती है।

3. शुक्र की राशियों के लग्न के लिए शनि, शनि की राशियों के लग्न के लिए शुक्र, योग कारक होता है। इसी प्रकार कर्क और सिंह राशि के लिए मंगल योग कारक होता है।

4. तृतीयेश, षष्टेश और एकादशेश दुष्ट होते हैं।

5. अष्टमेश और द्वादशेश सम होते हैं और जिन ग्रहों से सम्बन्धित होते हैं उनके अनुसार ही शुभाशुभ परिणाम देते हैं।

6. यदि कोई शुभ ग्रह, दो केन्द्रों का स्वामी होता है तो वह शुभ नहीं रहता है।

7. इसी प्रकार यदि कोई अशुभ ग्रह केन्द्र का स्वामी होता है तो उसकी अशुभता में कमी आती है लेकिन यदि वह एक त्रिकोण का भी स्वामी हो जाता है तो शुभ ग्रह के अनुरुप फल देता है।

8. नीच के तृतीयेश, षष्टेश या द्वादशेश अथवा तृतीय, षष्टम या अष्टम भाव में स्थित नीच के ग्रहों की दशा अत्याधिक शुभ परिणाम देती है।

विभिन्न लग्नों के लिए शुभ ग्रहः

1. **मेषः** बृहस्पति और सूर्य, क्रमशः नवमेश और पंचमेश होने के कारण शुभ होते हैं। यदि कुण्डली में बृहस्पति और शनि का सम्बन्ध होता है तो यह सम्बन्ध बृहस्पति को शुभ होने से रोकता है।

   मंगल, लग्नेश एवं अष्टमेश होने के कारण और चन्द्रमा, चतुर्थेश होने के कारण सम होते हैं। यदि शुक्र अशुभ ग्रहों से सम्बन्धित हो तो मारक होता है। अशुभ ग्रह, शनि से सम्बन्धित होने पर मारकेश हो जाते हैं। यद्यपि बृहस्पति, द्वादशेश भी होता है लेकिन सूर्य युति करने पर राजयोग बनाता है।

2. **वृषभः** शनि अकेला ही राजयोग कारक है। शनि और बुध शुभ हैं। शनि और बुध की युति, अतिशुभ होती है क्योकि दोनों ही त्रिकोण भावों के स्वामी भी होते हैं। द्वितीयेश होने के उपरान्त भी पंचमेश होने के कारण बुध, मारक नहीं होता है।

3. **मिथुनः** शुक्र, अकेला ही शुभ ग्रह होता है। चन्द्रमा अशुभ ग्रहों से सम्बन्धित नहीं हो तो मारक नहीं होता है। बुध एवं शुक्र की युति, राजयोग कारक होती है और मंगल एवं शनि मारक होते हैं।

4. **कर्कः** मंगल, राजयोग कारक है और बृहस्पति अच्छा है। शनि, मारक है।

5. **सिंहः** मंगल, राजयोग कारक है और बृहस्पति अच्छा है। बुध और अन्य अशुभ ग्रह, मारक होते हैं।

6. **कन्याः** शुक्र, अकेला ही शुभ होता है। शुक्र, द्वितीयेश होने के उपरान्त भी नवमेश होने के कारण मारक नहीं होता है। मंगल और अन्य ग्रह, मारक हैं।

7. **तुलाः** शनि और बुध अच्छे हैं। चन्द्रमा एवं बुध की युति, राजयोग कारक है। मंगल, मारक है।

8. **वृश्चिकः** बृहस्पति एवं चन्द्रमा, अच्छे हैं। सूर्य एवं चन्द्रमा की युति, राजयोग कारक हैं। बृहस्पति, द्वितीयेश होने के उपरान्त भी पंचमेश होने के कारण मारक नहीं होता है। बुध और अन्य दुष्ट ग्रह, मारक होते हैं।

9. **धनुः** केवल शुक्र अशुभ होता है। मंगल एवं सूर्य, अच्छे हैं। सूर्य एंव बुध की युति राजयोग कारक है। शनि, मुख्य मारकेश है।

10. **मकरः** केवल शुक्र ही राजयोग कारक है। शुक्र एवं बुध अच्छे हैं और यदि इनकी युति अतिविशिष्ट राजयोग बनाती है। मंगल, मारकेश हो सकता है।

11. **कुंभः** शुक्र अच्छा और योगकारक है। बृहस्पति, चन्द्रमा और मंगल, अशुभ हैं।

12. **मीनः** मंगल और चन्द्रमा, अच्छे हैं। मंगल और बृहस्पति की युति, राजयोग कारक है। मंगल मारता नहीं हैं लेकिन शनि और बुध मारते हैं।

दशा की व्याख्या करने के महत्वपूर्ण घटकः

1. पराशर के अनुसार किसी भी जातक के जीवन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण दशायें, लग्नेश, दशमेश और उच्च के ग्रहों की दशायें होती हैं।

2. अशुभ दशायें:

   (1) जन्म की दशा से चतुर्थ दशा, यदि यह शनि की हो, अथवा

   (2) जन्म की दशा से षष्टम दशा, यदि यह बृहस्पति की हो, अथवा

   (3) जन्म की दशा से नवम दशा, यदि राहु या मंगल की महादशा हो तो प्रतिकूल परिणाम देती है।

टिप्पणीः शुभ स्वामित्व होने पर भी उपरोक्त ग्रह परिणाम प्रतिकूल ही देते हैं।

यदि किसी जातक का जन्म, मंगल की महादशा में होता है तो उसके लिए शनि की दशा, चतुर्थ दशा होगी। जो जातक शुक्र की दशा में पैदा होता है उसके लिए राहु की दशा, पंचम और बृहस्पति की दशा, षष्टम होगी। जिस जातक का जन्म केतु की दशा में हो उसके लिए मंगल की दशा, पंचम होगी।

(4) जो ग्रह राशि के अन्तिम अंशो में होता है उसकी दशा भी अशुभ होती है।

(5) षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश की दशा।

3. जो ग्रह अपने सर्वोच्च बिन्दु की ओर अग्रसर होते हैं, उन ग्रहों की दशा ***"आरोहिणी दशा"*** कहलाती है। यह दशा बड़ी मंगलकारी होती है और शुभ परिणाम लाती है।

4. जो ग्रह अपने सर्वोच्च बिन्दु को पार कर चुके होते हैं और नीच बिन्दु की ओर अग्रसर होते हैं उन ग्रहों की दशा ***"अवरोहिणी दशा"*** कहलाती है। यह दशा अप्रसन्नता और दुर्भाग्य लाती है। यदि ऐसा ग्रह उच्च का हो, स्वराशि अथवा मित्रराशि का हो तो दशा सामान्य परिणाम देती है।

चतुर्थ में अशुभ ग्रहः किसी भी अशुभ ग्रह की महादशा में अथवा अन्तर्दशा में यदि उस ग्रह से चतुर्थ भाव में कोई अशुभ ग्रह हो तो घर एवं भू-सम्पति की हानि हो सकती है।

(1) यदि चतुर्थ भाव में मंगल हो तो आग, दुर्घटना, पालुतू जानवरों का आकस्मिक निधन अथवा आकस्मिक भय होता है।

(2) यदि शनि हो तो सीने में दर्द, सिरदर्द या स्नायु सम्बन्धित रोग का भय।

(3) यदि सूर्य हो तो सरकार से खिन्नता, जीवनवृत्ति में समस्या, धन एवं भू-सम्पति की हानि।

(4) यदि राहु हो तो विष के कारण रोग, चोरी।

1-7 के अक्ष में ग्रहः मंगल-चन्द्रमा, शनि-बृहस्पति और मंगल-बृहस्पति को छोडकर, महादशा नाथ और अन्तर्दशा नाथ का एक-दूसरे से सम-सप्तम होना अधिक शुभ नहीं होता है।

लाभदायक दशायें:

1. षडबल में बली एक उच्च के ग्रह की दशा, स्वास्थ्य, धन-सम्पति और उच्च सामाजिक स्थिति के साथ खुशियों के रुप में अत्याधिक अच्छे परिणाम देती है।

2. षडबल में बली होकर स्वगृही अथवा मित्रगृही ग्रह की दशा अच्छे परिणाम देती है। यह दशा, "शुभ दशा" कहलाती है।

3. अपने अष्टकवर्ग में पांच से अधिक बिन्दुओं के साथ अथवा 28 से अधिक बिन्दु वाली राशि में स्थित अष्टकवर्ग में बली ग्रह की दशा।

4. जो ग्रह उच्च, स्वगृही अथवा मित्रगृही हो लेकिन नवांश में नीच राशि अथवा शत्रु राशि में होता है, वह ग्रह अपनी दशा के पूर्वाध में मिश्रित परिणाम और उत्तरार्ध में शुभ परिणाम देता है।

5. जो ग्रह अपने भाव को देखते हैं वह अच्छा परिणाम देते हैं।

6. जो ग्रह राजयोग में शामिल होते हैं, अपनी दशा में शुभ परिणाम देते हैं।

7. लग्नेश यदि पंचमेश अथवा नवमेश से सम्बन्धित हो तो अपनी दशा में राजयोग देता है।

8. लघु पराशरी के अनुसार जो ग्रह पंचमेश अथवा नवमेश से सम्बन्धित होता है वह भी मंगलकारी परिणाम देने वाला होता है। इसी प्रकार जो ग्रह शुभ ग्रहों से सम्बन्धित होता है वह भी अच्छा होकर धन-सम्पति देता है।

9. लघु पराशरी के अनुसार नवम भाव में स्थित दशमेश की दशा प्रसिद्धि, समृद्धि और खुशियों को सुनिश्चित करती है। इसी प्रकार के परिणाम तब भी मिलते हैं जब दशमेश, पंचमेश से सम्बन्धित होता है।

10. लघु पराशरी के अनुसार षष्टेश और सप्तमेश की दशा भी तभी शुभ होगी यदि वे दशम भाव में स्थित हों अथवा दशमेश से सम्बन्धित हों।

11. जो ग्रह दो मारक भावों, द्वितीय एवं सप्तम के स्वामी होकर (मेष लग्न के लिए शुक्र और तुला लग्न के लिए मंगल) चतुर्थ भाव अथवा चतुर्थेश से सम्बन्धित होते हैं तो उनकी दशा भी शुभ परिणाम देती है।

12. ***"यदि षष्टेश, अष्टमेश या द्वादशेश, पंचमेश से सम्बन्धित होते हैं तो इनकी दशा भी शुभ परिणाम देती है" - लघु पराशरी।***

13. दशम भाव में स्थित चतुर्थेश अथवा चतुर्थ भाव में स्थित दशमेश की दशा, शुभ दशा होती है।

14. पंचमेश और दशमेश से सम्बन्धित ग्रहों की दशा सत्ता और अधिकार सुनिश्चित करती है।

15. दशम भाव में स्थित पंचमेश अथवा स्वगृही दशमेश की दशा, धन-सम्पति और सत्ता सुनिश्चित करती है।

16. पंचम से सम्बन्धित नवमेश की दशा, सत्ता और सन्तान देती है। चतुर्थेश के दशम से सम्बन्धित होने पर भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त होते हैं।

17. यदि राहु और केतु, केन्द्र में स्थित होकर त्रिकोण के अधिपतियों से सम्बन्धित हों अथवा त्रिकोण में स्थित होकर केन्द के स्वामियों से सम्बन्धित हों तो अपनी दशा में मंगलकारी परिणाम देते हैं। पंचम भाव में स्थित राहु का यदि केन्द्रेश अथवा त्रिकोणेश से सम्बन्ध न हो तो यह सन्तति के अतिअशुभ माना जाता है।

18. यदि किसी ग्रह से पंचम, षष्टम और सप्तम भाव में उच्च अथवा शुभ ग्रह हों तो उस ग्रह की दशा भी मंगलकारी परिणाम देती है।

19. यदि कोई ग्रह उच्च अथवा स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में स्थित हो तो अपनी दशा में शुभ परिणाम देता है।

अशुभ दशायें:

दशा छिद्र (वराहमिहिर कृत वृहत्जातक से उद्धृत):

एक जातक उस बली ग्रह की अन्तर्दशा में शासकीय सत्ता की प्राप्ति करता है जो दशम अथवा लग्न से सम्बन्धित होती है। जब नीच अथवा शत्रु राशि में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा आती है तो जातक उस शासकीय सत्ता को खो देता है क्योंकि ऐसे ग्रह की दशा छिद्र दशा कहलाती है। ऐसी स्थिति में उसे शक्तिसम्पन्न राजा का संरक्षण आवश्यक रुप से प्राप्त करना चाहिए।

लग्न एंव दशम में स्थित ग्रह को देखें कि उनमें से कौन अधिक बली है। बली ग्रह की अन्तर्दशा में सत्ता की प्राप्ति का फलकथन कहें। यदि इन दोनों भावों में कोई ग्रह न हो तो दोनों के स्वामियों के बल का आंकलन करके, बली ग्रह की अन्तर्दशा में उपरोक्त फलकथन करें। जब ऐसे ग्रह की अन्तर्दशा आएगी जो नीच का हो अथवा शत्रु राशि में हो तो ऐसी शासकीय सत्ता उस जातक से छिन जाएगी। ऐसे ग्रह की दशा छिद्र दशा कहलाती है जिसका अर्थ दुर्भाग्य या दुर्घटना के साथ-साथ छेद होता है।

विशेष: *किसी भी महादशा में प्रथम और अन्तिम अन्तर्दशा भी छिद्र दशा कहलाती है जिसका अभिप्राय होता है, जातक के जीवन में परिवर्तन।*

अन्य अशुभ दशायें इस प्रकार से हैं:

1. अशुभ ग्रह से युत ग्रह की दशा।
2. अशुभ ग्रह की दशा।
3. अष्टकवर्ग में कम बिन्दु वाली राशि में स्थित होने के कारण निर्बली अथवा नीच के ग्रह की दशा अशुभ होती है और हानियां सुनिश्चित करती है। यह दशा, ***"रिक्ता दशा"*** कहलाती है।
4. जो ग्रह नीचतम अंश में हो अथवा शत्रु के नवांश में हो अथवा शत्रु की राशि में हो, उस ग्रह की दशा ***"अरिष्ट दशा"*** कहलाती है। इस दशा में जातक के स्वास्थ्य, धन-सम्पति और यश की हानि होती है।
5. यदि दशा स्वामी नीच अथवा शत्रु राशि या शत्रु नवांश या नीच नवांश में हो तो अवरोहिणी दशा सबसे अधिक अशुभ दशा सिद्ध होती है।
6. वक्री ग्रह की दशा, ऐसे परिणाम देती है जिनका अनुमान लगाना संभव नहीं होता है। चिकित्सा ज्योतिषशास्त्र में वक्री ग्रह की दशा को स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं माना जाता है।
7. जो ग्रह किसी भी राशि के अन्तिम अंशों में होता है उसके पास अच्छे परिणाम देने की क्षमता नहीं होती है।
8. मान्दी के साथ स्थित ग्रह की दशा।
9. जन्म नक्षत्र से 3रे, 5वें अथवा 7वें नक्षत्र में स्थित ग्रह की दशा।
10. अशुभ ग्रह से दृष्ट, पापकर्तरी योग में स्थित और अस्त ग्रहों की दशा।
11. षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश की दशा अमंगलकारी होती है। फलदीपिका के अनुसार यदि षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश की दशा में इनमें से किसी की भी अन्तर्दशा हो, तो अशुभ परिणाम ही प्राप्त होते हैं। इन भावों में बैठे ग्रहों की दशा में षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश की अन्तर्दशा में भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त होते हैं।

12. फ़लदीपिका के अनुसार अशुभ ग्रह की दशा और जन्म नक्षत्र से 3रे, 5वें अथवा 7वें नक्षत्र में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा में घर में चोरी, शत्रुओं से परेशानियां आदि अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे। अशुभ ग्रह की दशा और चन्द्रेश की अन्तर्दशा अथवा चन्द्रमा से अष्टमेश की अन्तर्दशा में भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त होंगे।

13. सभी नीच के ग्रह, षष्टम या द्वादश भाव में स्थित होने पर प्रतिकूल परिणाम देगें। इन भावों में स्थित अशुभ ग्रह भी इसी प्रकार के परिणाम देगें।

14. किसी भी ग्रह की दशा में यदि अन्तर्दशानाथ (1) दशानाथ का शत्रु होगा, (2) शत्रु राशि में होगा, (3) षष्टम भाव में होगा, अथवा (4) लग्नेश का शत्रु होगा, तो उसकी अन्तर्दशा में जातक को शत्रुओं से भय का सामना करना पड़ेगा, धन या पद की हानि उठानी पड़ेगी और उस व्यक्ति का सेवक बन कर रहना पड़ेगा जो कभी उसका मित्र था।

15. जो ग्रह दशानाथ से षष्टम, अष्टम और द्वादश भाव में स्थित होते हैं, वह शुभ परिणाम नहीं देते हैं।

महत्वपूर्ण: कोई भी ग्रह अपनी दशा में निम्नलिखित दो प्रकार के परिणाम देता है:

1. अपने कारकत्व के अनुरुप, जैसे कि सूर्य-प्रभुत्व, मंगल-भूमि, भाई, बृहस्पति-धन-सम्पति एवं सन्तान, शुक्र-भार्या, सुख-समृद्धि आदि।
2. विभिन्न भावों के स्वामित्व के अनुरुप जैसे कि पंचमेश एवं नवमेश मंगलकारी परिणाम देंगे जबकि षष्टेश, अष्टमेश या द्वादशेश प्रतिकूल परिणाम देगा।

ग्रहों की दशा:

यदि ग्रह बली हो तो वह अपनी दशा में अच्छे परिणाम देता है। यदि ग्रह उच्च का हो, अपनी मूलत्रिकोण या स्वराशि में हो, केन्द्र, त्रिकोण या एकादश भाव में हो, शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो अथवा शुभकर्तरी योग में हो तो बली होता है।

यदि ग्रह नीच का हो, शत्रु राशि में हो, अस्त हो, अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से प्रभावित हो, षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में हो या इनके स्वामियों से दृष्ट हो, राहु-केतु अक्ष में हो अथवा पापकर्तरी योग में हो तो निर्बली होता है।

विभिन्न ग्रहों की दशाओं के परिणाम

सूर्य की दशा (6 वर्ष):

सूर्य की दशा का परिणाम कहने से पहले यह जानना आवश्यक है कि इसकी अवस्था क्या है, क्या यह वर्गोत्तम है, उच्च का है, स्वगृही है अथवा अपनी मूलत्रिकोण राशि में है, दिग्बली है या नहीं आदि। इससे सम्बन्धित शुभाशुभ योग जैसे वेशी/वोशी, पाप वेशी/वोशी, उभयचारी आदि की सूक्ष्म जांच करें। अशुभ ग्रह होने के कारण सूर्य, तृतीय, षष्टम और एकादश भावों में स्थित होने पर अच्छा होता है। दशम भाव में स्थित सूर्य, दिशा बल से युत होता है।

बली सूर्यः उच्च सामाजिक स्थिति, स्वास्थ्य, वाहन और बुद्धि की शुद्धता। उत्तरकालामृत्त में कालिदास कहता है कि एक मंगलकारी सूर्य, सन्तान, बुद्धिमता, विद्वत्ता, उच्च सामाजिक स्थिति एवं सत्ता, ज्ञान, धन-सम्पति, प्रसिद्धि, साहस, खुशियां और परमात्मा की अनुकम्पा देता है।

सारावली के अनुसार जातक नई औषधियों एवं मार्गों और रसायनों की आपूर्ति से लाभ अर्जित करता है तथा पदोन्नति, धन-सम्पति और अनुकम्पा प्राप्त करता है।

फलदीपिका के अनुसार, राजाओं से अथवा युद्ध से धन प्राप्ति होती है।

निर्बली सूर्यः पराशर के अनुसार, दयनीय स्थिति, धन-सम्पति एवं यश की हानि, विदेश में निवास, सरकार से दण्ड, रुग्णता, पिता को भय, लोगों का आक्रोश, हड्डियों का टूटना, उच्चताप, आत्मविश्वास की हानि।

फलदीपिका के अनुसार अत्याधिक तीव्र वेदना एवं गुप्त धन से भय होगा। जातक का अनाज भस्म हो जाएगा और उसकी भार्या एवं सन्तान को तीव्र वेदनायें होंगी। अग्नि से और चौपायों से पीड़ा हो, आंखों में जलन हो, पेट एवं दान्त के रोग हों, पुत्र एवं स्त्री को बीमारी हो या अन्य प्रकार का कष्ट हो, धन की हानि हो और गुरुजन (पिता, चाचा आदि) का वियोग या विरह हो।

आगे दिये गए धीरेन्द्र ब्रह्मचारी की कुण्डली का अवलोकन करें। (जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के अप्रैल-जून, 2000 में प्रकाशित श्री के. एन. राव के लेख पर आधारित)

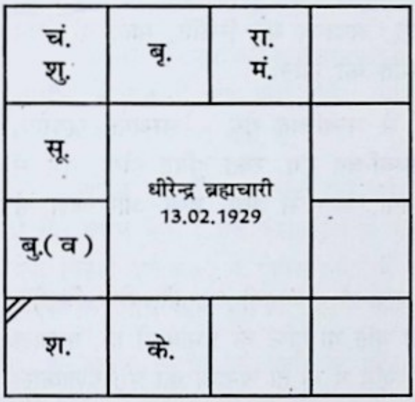

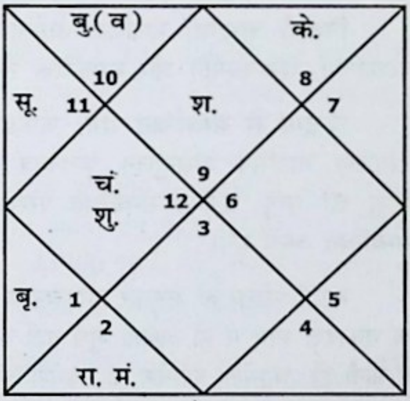

इस कुण्डली में सूर्य, तृतीय भाव में शत्रु राशि में स्थित है। 00 अंश 50 मिनट का होकर यह बाल्यावस्था और मृत्यु अवस्था में है। यह शनि से दृष्ट है और राहु एवं मंगल के केन्द्र में है और नवांश में नीच का हो जाता है। इस प्रकार सूर्य अत्याधिक पीड़ित है।

धीरेन्द्र ब्रह्मचारी, जो किसी समय इन्दिरा गान्धी को प्रिय व्यक्ति था, सूर्य की दशा में गान्धी परिवार में अपने प्रभाव को बचाये रखने में असमर्थ रहे। जब राजीव गान्धी प्रधानमंत्री थे उस समय, भारत के प्रधानमंत्री के राजसी मंत्रिमण्डल की कृपा इनसे हट गई। यद्यपि अपनी संचय पूंजी के कारण यह समृद्धशाली जीवन जीते रहे लेकिन उसी समय इनके उपर हथियारों की तस्करी के आरोप भी लगे। इस दशा में इनको बार-बार दिल्ली और अन्य स्थानों की निरर्थक यात्रायें करनी पड़ीं। षष्टम भाव में स्थित अशुभ ग्रहों ने इनको विरोधियों पर विजय प्राप्त करने और कठिन परिश्रम करने में सहायता की। नवम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि ने भी इनके भाग्य की रक्षा की और पारंपरिक संस्कृति के साथ-साथ हट योग की सिद्धस्थता से विश्वास अडिग बनाये रखने में सहायता की।

चन्द्रमा की दशा (10 वर्ष):

बली चन्द्रमा: चन्द्रमा भी एक लग्न है, अतः कुण्डली में अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। समृद्धि के लिए इसका बली होना आवश्यक है। अधिक धन-सम्पति,

कृषि, मंगलकारी उत्सव, वाहन, सरकार की अनुकम्पा, सफलता, पुत्र सन्तान और देवी लक्ष्मी की कृपा आदि शुभ परिणामों को देने के लिए इसका शुभ योगों में शामिल होना आवश्यक है। वर्गोत्तम चन्द्रमा एक सफल जीवन देता है।

निर्बली चन्द्रमाः मानसिक असन्तुलन, अवसाद की स्थिति, माता के लिए परेशानियां, धन-सम्पति और सामाजिक स्थिति की हानि।

चन्द्रमा से सम्बन्धित रोगः फेफड़ों से सम्बन्धित रोग - अस्थमा, क्षयरोग, डायरिया, मानसिक असन्तुलन, पाचनतत्रं सम्बन्धित रोग, रक्त दूषित होना, गर्भ में शिशु की मृत्यु, प्रजनन सम्बन्धित परेशानियां, जल से भय, हेजा और जल से सम्बन्धित अन्य रोग।

महर्षि पराशर के अनुसार यदि चन्द्रमा बली हो, उच्चगृही, स्वगृही, केन्द्र-त्रिकोण या एकादश भाव में हो अथवा शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि के प्रभाव में हो, पक्षबल में बली हो, चतुर्थेश, दशमेश या नवमेश की युति में हो तो चन्द्रमा का पूरा दशाकाल धन-सम्पति, समृद्धि, अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छा भाग्य जैसे शुभ परिणाम दायक होगा। जातक के घर में मंगलकारी उत्सव होंगे, उसके पास अच्छे वाहन होंगे और वह अपने वरिष्ठ अधिकारियों की अच्छे व्यक्तियों की सूची में होगा। उसके घर में देवी लक्ष्मी का आशीर्वाद होगा। वह अपने प्रभावशाली मित्रों की सहायता से यशस्वी बनेगा तथा सन्तान, घर और पशुधन को प्राप्त करेगा।

यदि चन्द्रमा नीच अथवा पक्षबल से हीन होगा तो चन्द्रमा की दशा में धन-सम्पति की हानि होगी। जातक अपने विचारों में व्यग्र होगा, मानसिक अवसाद से भी पीड़ित हो सकता है और माता के पक्ष के सम्बन्धियों से पीड़ा होगी। यदि निर्बली चन्द्रमा, लग्न से षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो अथवा अशुभ ग्रहों से सम्बन्धित हो तो इसके कारण सरकार की अप्रसन्नता, धन-सम्पति की हानि, मानसिक सन्ताप और माता को परेशानियां हो सकती हैं। यदि पक्षबली होकर चन्द्रमा, षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो तो कभी शुभ और कभी अशुभ परिणाम देगा।

सूर्य के संदर्भ में चन्द्रमा की स्थिति भी महत्वपूर्ण होती है। इसकी सर्वश्रेष्ठ स्थिति सूर्य से 3, 6, 9 या 12वें भाव अर्थात ओपेक्लिम भावों की है। दूसरे स्थान की शुभ स्थिति सूर्य से पणफर अर्थात 2, 5, 8 या 11वें भाव की है। सूर्य से केन्द्र में स्थित चन्द्रमा शुभ परिणाम देने के लिए सबसे निर्बल स्थिति में होता है।

चन्द्रमा की दशा के परिणामों को कहने से पहले इसकी अवस्था और इससे सम्बन्धित शुभाशुभ योगों जैसे कि सुनफा, अनफा, अधि, अमला, गजकेसरी, चन्द्र-मंगल, केमद्रुम आदि को देखना आवश्यक है। जिस प्रकार के योग में चन्द्रमा लिप्त होता है, उसी प्रकार के परिणाम अपनी दशा में देता है।

जातक पारिजात के अनुसार चन्द्रमा की दशा में मंत्रों, देवताओं और ब्राह्मणों से लाभ हो सकता है तथा कोई स्त्री, समृद्धि का कारण बनती है। निर्बली चन्द्रमा वात सम्बन्धित परेशानियां देता है।

जातक पारिजात, चन्द्रमा की महादशा के परिणामों के विषय में आगे कहती है कि प्रथम एक तिहाई दशाकाल में चन्द्रंमा अपने भावानुसार परिणाम देगा, द्वितीय एक तिहाई दशाकाल में गृहीत राशि के अनुसार और तृतीय एक तिहाई दशाकाल में इसके स्वामित्व और इस पर पड़ने वाली दृष्टियों के अनुसार परिणाम देगा।

जातक भरणम् के मतानुसार मित्र राशियों अथवा 3, 6, 10, 11, 5, 7 और 9वें भाव में स्थिति चन्द्रमा मंगलकारी परिणाम देता है।

मंगल की दशा (7 वर्ष):

बली मंगलः उच्च सामाजिक स्थिति, धन-सम्पति, कृषि, भूमि, वाहन, आभूषण, भाइयों से मधुर सम्बन्ध, शत्रुओं पर विजय।

फलदीपिका के अनुसार झूठे दिखावे से धन लाभ, धोखेबाली, हिंसात्मक कर्म और दूसरों के भाग्य का आनन्द लेना।

फलदीपिका के अनुसार यदि मंगल उर्ध्वमुखी राशि में हो या अपनी उच्च राशि में होकर दशम या एकादश भाव में हो तो जातक मंगल की दशा में किसी राज्य की राजधानी को अपने नियत्रण में कर लेगा। वह राजा बनेगा और अपने शत्रुओं का नाश करेगा। वह कई वाहनों एवं एक बड़ी सेना का स्वामी होगा और कई लोगों को भोजन देगा।

केन्द्र में स्वराशि या उच्च राशि में स्थित मंगल रुचक नाम का महापुरुष योग बनाता है जो समृद्धि और उच्च सामाजिक स्थिति का योग है।

निर्बली मंगलः दुर्घटनायें, रोग, चोरी, छाले एवं रक्त का दूषित होना, पुत्र या भाइयों से शत्रुता, दुर्जन स्त्रियों में आसक्ति, भार्या से मतभेद, लकवा, चोट एवं घाव, घमण्ड, अनीतिशास्त्र सम्बन्धी और अधार्मिक।

बुध की दशा (17 वर्ष):

बली बुधः शिक्षा में उच्च प्राप्तियां, व्यापार, धन-सम्पति, सही निर्णय और भाग्य।

फलदीपिका के अनुसार आचार्य सिद्धि, मित्रों से भेंट, खुशियां और उच्च शिक्षित व्यक्तियों से प्रशंसा आदि शुभ परिणाम होते हैं।

निर्बली बुधः दिमागी रोग, घबराहट, चर्म रोग, शिक्षा में बाधा, विदेश यात्रा, धन-सम्पति की हानि, मूत्र सम्बन्धित रोग, चोरी, आग, सरकार का भय। यदि बुध षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में हो तो आय, उत्साह और धन-सम्पति पर दुष्प्रभाव पड़ता है। पीलिया और सन्धिवात या गठिया हो सकता है।

दशा प्रारम्भ में धन-सम्पति, सुख-सुविधा, भू-सम्पति और सन्तान देती है। मध्य में राजा से मान्यता प्राप्त होती है लेकिन अन्तिम भाग में दुर्भाग्य और प्रतिरोधकता लाती है।

बृहस्पति की दशा (16 वर्ष):

बृहस्पतिः सरकार से लाभ, खुशियां, सन्तान, शिक्षा, स्वास्थ्य, धन-सम्पति।

फलदीपिका के अनुसार धन एवं मित्रों की वृद्धि, धन-सम्पति की वृद्धि, स्वास्थ्य, भार्या एवं सन्तान से प्रसन्नता, राजा एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों से सम्मान का अनुभव होगा।

निर्बली बृहस्पतिः निवास स्थान में परिवर्तन, धन-सम्पति एवं सन्तान की हानि और मानसिक तनाव।

शुक्र की दशा (20 वर्ष):

बली शुक्रः धन-सम्पति, आभूषण, विवाह, वाहन, नौकरी, प्रमाणीकरण, घर, सन्तान के लिए खुशियां, सेना का नेतृत्व, मंत्रीपद, धार्मिक उत्सव, श्रेष्ठ भोजन, उच्च सामाजिक स्थिति। यदि यह नवमेश अथवा दशमेश होकर लग्न में स्थित हो तो अत्याधिक आनन्द की स्थिति और सामाजिक उच्च स्थिति की प्राप्ति होती है तथा जातक जनहित के लिए मन्दिर एवं तालाबों का निर्माण करता है। जातक श्रेष्ठ भोजन खायेगा और उसके पास उच्च सामाजिक स्थिति, धन-सम्पति, संचित पूंजी, अच्छी भार्या और सन्तान होगी।

फलदीपिका के अनुसार, खेल, वाहन, बहुमूल्य रत्न, युवा स्त्रियों की संगत, बौधिक प्रवृति, समुद्र से यात्रा और राजा से सम्मान आदि शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि शुक्र उच्च या स्वराशि का होकर दशम, एकादश या द्वादश भाव में हो और अशुभ प्रभाव से मुक्त हो तो यह जातक को अत्याधिक धन-सम्पति का लाभ देगा, जातक तेजस्वी एवं वैभवशाली, सभी की प्रशंसा पाने वाला और सभी प्रकार के सुखों का आनन्द लेने वाला होगा।

निर्बली शुक्रः यदि शुक्र षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में, नीच का अथवा द्वादशेश की राशि में हो तो मारक बन जाता है और मैथुन सम्बन्धित रोग, व्यापार में हानि, स्त्री जाति से तनाव, भार्या की उपेक्षा या हानि, भार्या एवं सन्तान से तनाव आदि परिणाम प्राप्त होते हैं।

शनि की दशा (19 वर्ष):

बली शनिः धन-सम्पति, उच्च सामाजिक स्थिति, व्यापार, शिक्षा और शासन से जुड़ी आजीविका।

फलदीपिका के अनुसार युद्ध या अशान्ति के परिणाम स्वरुप धन-सम्पति, सेवक, वृद्ध स्त्रियां।

निर्बली शनिः सन्ताप, भय, चोरी, धन-सम्पति की हानि, रोग, भार्या एवं सन्तान का क्लेश, कारावास।

फलदीपिका के अनुसार, धन-सम्पति की हानि, गठिया, सन्धिवात, कृषि की हानि, नीच चरित्र की स्त्रियों से मैथुन, सेवकों का अभाव आदि परिणाम होते हैं।

राहु की दशा (18 वर्ष):

बली राहुः धन-सम्पति, आजीविका, नवीन घर, विवाह, विदेशी भूमि में शासन के द्वारा मान्यता, आभूषण, विदेश यात्रायें। राहु, विदेशियों और अन्य धर्मों के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, अतः इसकी दशा में विदेशियों से सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

फलदीपिका के अनुसार यदि शुभ ग्रहों से सम्बन्धित हो अथवा शुभ भाव में हो तो राजा के समान वैभव का आनन्द लेगा, उसकी लोकप्रियता दूर-दूर तक फैलेगी तथा धन-सम्पति, सफलता एवं खुशियां प्राप्त करेगा। कन्या, वृश्चिक और मीन राशि

का राहु अच्छा होता है और अपनी दशा में सम्मान, खुशियां, भू-सम्पति का स्वामित्व, वाहन और सेवकों का सुख देगा, लेकिन दशा के अन्त में इन सभी की हानि हो जाएगी।

यदि राहु-केतु सुस्थित होकर लग्न, पंचम या नवम भाव में हों और चाहे योगकारक ग्रह से सम्बन्धित हों अथवा नहीं हों, योग कारक की अन्तर्दशा में योग कारक ग्रह के अनुरुप परिणाम देते हैं।

निर्बली राहुः पराशर के मतानुसार अष्टम या द्वादश भाव में स्थित राहु अशुभ है। स्थान परिवर्तन, मानविक क्लेश, भार्या की मृत्यु, निराशायें, चिड़चिड़ापन, ऋण, चोरी, रोग, चोट, दुर्घटनायें, धोखेबाजी, अत्याधिक व्यय, अंगों के रोग और विश्वासघात, परिणाम होगा। यदि अशुभ ग्रह अथवा मारक ग्रह इसको पीड़ित करता है तो परिणाम अधिक अशुभ होता है।

फलदीपिका के अनुसार राजा, विष, आग और हथियार से भय, निम्नस्तर के व्यक्तियों से अपमान, सामाजिक स्थिति में गिरावट और प्रतिष्ठा की हानि, परिणाम होंगें।

केतु की दशा (7 वर्ष):

बली केतुः मोक्ष, आध्यात्मिकता और यदि केतु केन्द्र या त्रिकोण में हो तो गहन अध्ययन।

यदि शुभ राशि अथवा शुभ वर्गों में हो तो राजा का अनुग्रह, सन्तान एवं वाहन से आनन्द और देश एवं विदेश की यात्राओं से खुशियां देता है। तृतीय, षष्टम अथवा एकादश भाव में स्थित केतु अपनी दशा में खुशियां देता है और जातक सरकार से लाभान्वित होता है।

प्रारम्भ में दशा राजा का वैभव लाती है, मध्य में दशा अत्याधिक भय देती है और अन्त में अत्याधिक दूर स्थान में फेंककर बिमारी का भय देती है।

निर्बली केतुः यदि केतु द्वितीय, अष्टम या द्वादश स्थान में बैठकर अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि में हो तो इसकी दशा, सगे-सम्बन्धियों से सम्बन्धों को बिगाड़ती है, भू-सम्पति का विनाश करती है और तनाव एवं रोग देती है। धोखा खाना, हानि, दान्तों के रोग, पांवों में दर्द आदि अन्य शुभ परिणाम हैं।

टिप्पणीः राहु-केतु छायाग्रह हैं और जिन ग्रहों से युति करते हैं उनके अनुरुप अन्यथा अपने राशीश के अनुरुप ही परिणाम देते हैं।

लग्नेश की दशाः

बलीः फलदीपिका के अनुसार हंसी-खुशी भरा जीवन, संसार भर में प्रतिष्ठा। जातक का शरीर पुष्ट अंगों वाला एवं स्वस्थ होगा और उसकी समृद्धि बढ़ेगी।

निर्बलीः यदि लग्नेश दुर्स्थित हो तो जातक को कारावास जाना पड़ेगा, भय, बिमारियां और मानसिक तनाव होगा। दाह-संस्कार, स्थिति की हानि और दुर्भाग्य परिणाम होगा।

द्वितीयेश की दशाः

बलीः परिवार की वृद्धि, अच्छी पुत्रियाँ, अच्छा भोजन तथा व्याख्यान से धन प्राप्ति, उपदेशक भाषण और श्रोताओं द्वारा सराहना।

निर्बलीः धन हानि, कठोर भाषण, आंखों से सम्बन्धित परेशानियां, राजा की अप्रसन्नता, श्रोताओं के सामने मूर्खतापूर्ण कार्य और मृत्यु भय।

तृतीयेश की दशाः

बलीः सेनाध्यक्ष, सम्मान की प्राप्ति और शूरवीरता का परिचय। अच्छे गुणों और भाइयों से सहयोग के लिए लोकप्रिय होगा।

निर्बलीः भाई-बहनों की हानि, गुप्त शत्रुओं के द्वारा प्रताडना, अपमान और स्वाभिमान की हानि।

चतुर्थेश की दशाः

बलीः खेती सम्बन्धित कार्यों में सफलता, भार्या से मधुर सम्बन्ध, वाहन, धन-सम्पति और उच्च सामाजिक स्थिति।

निर्बलीः घर को भय, माता एवं सम्बन्धियों से तनाव, जल से भय, भू-सम्पति की हानि।

पंचमेश की दशाः

बलीः पुत्र का जन्म, मंत्रीपद, सम्मान का प्रतिपादन, धार्मिक कार्य।

निर्बलीः पुत्र की हानि, उद्देश्यहीन भ्रमण, धोखा, पेट का खराब होना, राजा की अप्रसन्नता।

षष्टेश की दशाः

बलीः अपनी पौरुषता के बल पर शत्रुओं पर विजय, रोगमुक्त, उर्जावान एवं शक्तिशाली. धन-सम्पति, वैभव और समृद्धि।

निर्बलीः चोरी, दरिद्रता, रुग्णता, दूसरों की सेवा, अपमान, प्रतिष्ठा की हानि, शरीर पर चोट।

सप्तमेश की दशाः

बलीः भार्या, नवीन परिधान, आभूषण, आनन्ददायक यात्रायें, कार्यशक्ति अथवा शारीरिक बल।

निर्बलीः दुर्जन स्त्रियों से सम्बन्ध, भार्या से वियोग, दामाद से तनाव, यौन रोग, उद्देश्यहीन यात्रायें। दुर्जन स्त्रियों के द्वारा कुछ कष्ट होगा।

अष्टमेश की दशाः

बलीः फलदीपिका के अनुसार व्यवसाय में प्रगति, ऋण मुक्ति, विवादों का अन्त, पशुओं और सेवकों की प्राप्ति।

निर्बलीः दुःख, बुद्धिमता की हानि, अत्याधिक कामुकता, ईर्ष्या, दरिद्रता, अपमान, बिमारी और जीवन का अन्त।

नवमेश की दशाः

बलीः राजा या सरकार की अतिकृपा, समृद्धि, प्रशंसनीय कार्य, पुत्र और पोता।

निर्बलीः बड़े भाई या पिता की मृत्यु, भार्या एवं सन्तान से तनाव और दरिद्रता।

(जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के जुलाई-सितम्बर, 2001 के संस्करण में प्रकाशित श्री के. एन. राव के लेख "इफ लक इज स्ट्रांग......." पर आधारित)

श्री के. एन. राव के अनुसार यदि किसी जातक के जीवन में बली और अनुकूल ग्रह की दशा आती है तो जातक अत्याधिक सफलता प्राप्त करने वाला और यहां तक की ऐतिहासिक व्यक्ति बन जाता है। यदि कुण्डली में लग्न और लग्नेश निर्बली न हों तो नवम भाव/नवमेश अथवा नवांश में नवमेश की बली स्थिति, कुण्डली में अत्याधिक शुभ प्रभाव डालकर कुण्डली को बल प्रदान करती है। इस स्थिति में नवम से नवम भाव होने के कारण पंचम भाव और पंचमेश भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। सही अर्थों में वर्गोत्तम लग्न, वर्गोत्तम चन्द्रमा, कुण्डली या नवांश में उच्च के ग्रह और अच्छा दशाचक्र, कई प्रकार के प्रतिरोधों से उभरने और उच्चता के शिखर पर पहुंचने में सहायता करते हैं।

आगे कुछ प्रसिद्ध महिलाओं की कुण्डलियों को दिया जा रहा है जिनमें उपरोक्त वर्णित योगों को देखा जा सकता है। इन कुण्डलियों को "फेमस वूमेन आफ ट्वन्टीयथ सैन्चुरी" से उद्धृत किया गया है। इनका पूर्ण विवरण इस पुस्तक में उपलब्ध है।

श्रीमति भण्डारनायिके

बृ.	सू. बु.	शु.	श.
	श्रीमति भण्डारनायके 17.04.1916 15-37 कोलम्बो		के. मं.
रा.			
			चं.

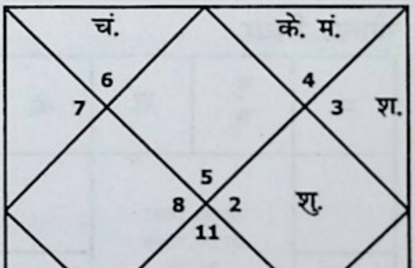

इस कुण्डली के नवम भाव में लग्नेश सूर्य उच्च का है। नवमेश मंगल, नीच का है और बृहस्पति से दृष्ट होकर नीचभंग राजयोग बना रहा है। नवमेश मंगल का

भोगांश 21 अंश 28 मिनट है अत: नवांश में उच्च का है। यह जातिका तीन बार श्रीलंका की प्रधानमंत्री बनी और इन्होने लगभग 14 साल तक शासन किया।

श्रीमति इन्दिरा गान्धी

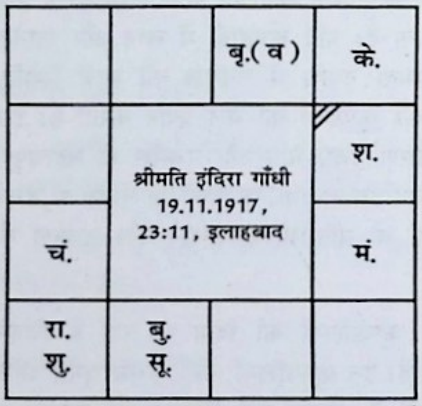

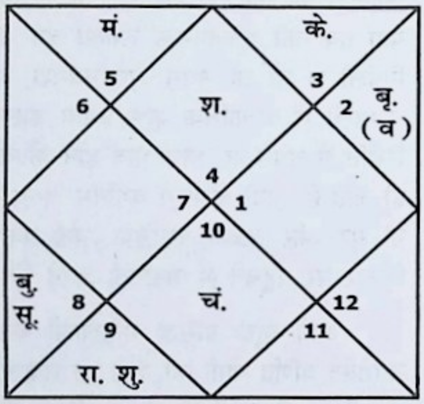

इस कुण्डली में नवमेश बृहस्पति और पंचमेश मंगल वर्गोत्तम हैं जो अपने आप में एक अद्वितीय उदाहरण है। यह विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश की सबसे शक्तिशाली प्रधानमंत्री थीं।

गोल्डा मियर

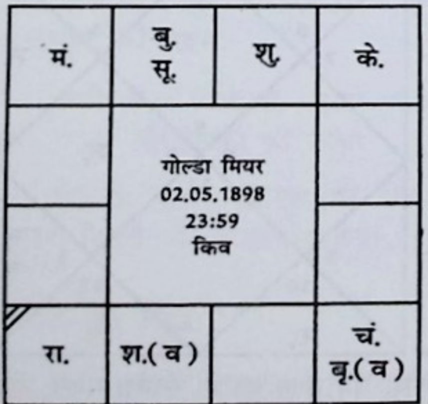

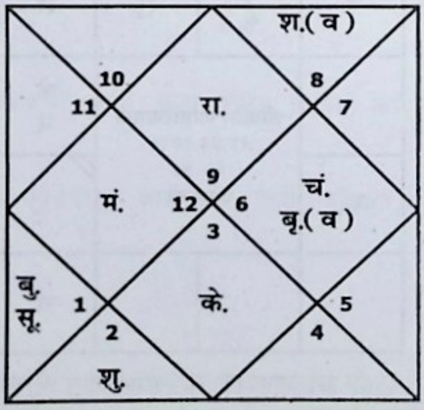

इजराइल की प्रसिद्ध महिला प्रधानमंत्री गोल्डा मियर की कुण्डली में नवमेश सूर्य, दशमेश बुध के साथ राजयोग बना कर पंचम भाव में है लेकिन यह नवांश में नीच का है। वह मात्र चार वर्षों के लिए इजराइल की प्रधानमंत्री रहीं।

मारगेट थैचर

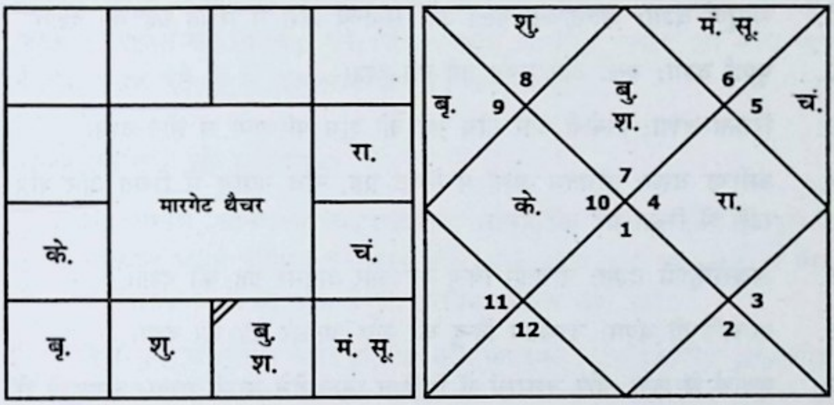

लौह महिला के नाम से प्रसिद्ध मारगेट थैचर दस साल तक इंग्लैण्ड की प्रधानमंत्री रहीं। इनकी कुण्डली में नवमेश बुध, वर्गोत्तम होकर उच्च के योगकारक ग्रह शनि के साथ लग्न में स्थित है।

दशमेश की दशा:

बली: नाम, यश, धन-सम्पति एवं प्रतिष्ठा और धर्म सम्बन्धित कार्य।

निर्बली: दुष्ट कार्य, उद्यम में असफलता, जन्मस्थान से दूर वास, संताप और सम्मान की हानि।

एकादशेश की दशा:

बली: समृद्धि की उन्नति, पारिवारिक प्रसन्नता।

निर्बली: कान के रोग, बड़े भाई को परेशानियां, पुत्र की बिमारी, कष्ट और धोखा।

द्वादशेश की दशा:

बली: शासन से सम्मान, प्रशंसनीय कार्य, शुभ कार्यों पर अतिव्यय।

निर्बली: रोग, अपमान, दासता और धन-सम्पति की हानि।

दशाओं की कुछ अन्य परिभाषायें:

1. **सम्पूर्ण दशाः** अत्याधिक बली और सर्वोच्च अंश में स्थित ग्रह की दशा।
2. **पूर्णा दशाः** बली और उच्च ग्रह की दशा।
3. **रिक्ता दशाः** निर्बली और नीच ग्रह की शुभ परिणामों से हीन दशा।
4. **अरिष्ट दशाः** नीचतम अंशों में स्थित ग्रह, नीच नवांश में स्थित और शत्रु राशि में स्थित ग्रह की दशा।
5. **अवरोहिणी दशाः** नीचतम बिन्दु की ओर अग्रसर ग्रह की दशा।
6. **आरोहिणी दशाः** उच्चतम बिन्दु की ओर अग्रसर ग्रह की दशा।
7. **पूर्वार्ध में शुभ और उत्तरार्ध में मिश्रित फल देने वाली दशाः** कुण्डली में उच्च या बली या स्वराशि या मित्रराशि में स्थित लेकिन नवांश में नीच या शत्रु राशि में स्थित ग्रह की दशा।
8. **नीच दशाः** अस्त, नीच, शत्रु राशिगत अथवा नीच नवांश में स्थित ग्रह की दशा।
9. **वक्री ग्रह की दशाः** सम्मान का घायल होना और अच्छी स्थिति से नीचे गिरना। सारावली के अनुसार शुभग्रह वक्री होकर अतिबली हो जाते हैं और राजपद सुनिश्चित करते हैं। अशुभ ग्रह वक्री होकर सन्ताप और उद्देश्यहीन यात्रा देते हैं। वक्री ग्रह जिस भाव का स्वामी हो और जिस भाव में स्थित हो, उन दोनों भावों के बल में कमी लाता है। वक्री ग्रह के साथ स्थित और इससे दृष्ट ग्रह पर इसका प्रभाव अधिक होता है।
10 तृतीय, षष्टम और एकादश भाव में स्थित ग्रह की दशा में सभी इच्छाओं की पूर्ति होती है।

दशा की व्याख्या कैंसे करें:

लघुपराशरी के अनुसार शुभाशुभ ग्रह, अपनी महादशा और अपनी ही अन्तर्दशा में अपने स्वभावानुसार शुभाशुभ परिणाम नहीं देते हैं। यहां तक की एक मारक ग्रह भी अपनी अन्तर्दशा में मारता नहीं है। ये कोई परिणाम नहीं देता है लेकिन अल्प मात्रा में परिणामों का अहसास हो सकता है।

पराशर के अनुसार दशानाथ को लग्न की तरह लेकर उससे विवेचना करनी चाहिए। अर्थात कुण्डली में दशानाथ जिस राशि में स्थित हो उस राशि को लग्न मानकर कुण्डली की विवेचना करें। यदि दशानाथ से पंचम, अष्टम एवं नवम भाव में अशुभ ग्रह बैठे हों तो दशा समस्यायें देने वाली होगी।

अन्तर्दशानाथ के परिणाम:

1. यदि लग्नेश, स्वनवांश, स्वद्वादशांश या स्वद्रेष्कोण में स्थित होगा तो इसकी अन्तर्दशा पवित्र परिणाम देने वाली होगी। इसी प्रकार यदि यह अपने या मित्र के त्रिशांश में स्थित होता है तो परिणाम अधिक शुभ होंगे।
2. जिस राशि में लग्नेश स्थित हो, उस राशि का स्वामी अर्थात लग्नेश का राशीश यदि मित्र के नवांश, द्वादशांश या द्रेष्कोण में स्थित हो और मित्र ग्रहों से ही दृष्ट हो तो इसकी अन्तर्दशा मंगलकारी कही गई है।
3. जो ग्रह पंचमेश या नवमेश के नवांश, द्वादशांश अथवा द्रेष्कोण में हो वह भी मंगलकारी परिणाम देता है। इसी प्रकार चतुर्थेश के नवांश, द्वादशांश अथवा द्रेष्कोण में स्थित ग्रह भी मंगलकारी परिणाम देता है।
4. ऐसे शुभ ग्रह की दशा जो योगकारक से सम्बन्धित न हो और योगकारक की अन्तर्दशा एवं अन्य शुभ ग्रह की प्रत्यन्तर दशा में सामान्यतः मंगलकारी परिणामों का अनुभव होता है। यदि दशानाथ, योगकारक से सम्बन्धित हो तो शुभ परिणाम देखे जा सकते हैं।
5. अशुभ ग्रह (षष्टेश, अष्टमेश एवं द्वादशेश) भी योगकारक से सम्बन्धित होने पर अपने बलानुसार एवं योगकारक से सम्बन्ध के आधार पर, अपनी दशा/अन्तर्दशा में अच्छा परिणाम देते हैं।

अशुभ दशा:

1. षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश की दशा।
2. यदि मारक का राशीश, षष्टेश या लग्नेश से सम्बन्धित हो तो इसकी दशा में ज्वर होता है।
3. इसी प्रकार षष्टेश से सम्बन्धित लग्नेश की अन्तर्दशा, षडवर्गो में अपनी स्थिति के अनुसार रोग देगी। यदि षडवर्गों में लग्नेश, चन्द्रमा की राशि में होगा तो

अजीर्ण आदि, यदि मंगल की राशियों में हो तो रक्त सम्बन्धित रोग आदि।

4. षष्टेश की दशा और मारकेश की अन्तर्दशा में हथियारों से भय और अत्याधिक कष्ट होता है।

5. यदि राहु, केतु, शनि या मंगल, मारकेश से सम्बन्धित होकर षष्टम भाव में बैठे हों तो इनकी दशा और अन्तर्दशा में बिमारियां होती हैं।

6. यदि लग्नेश और षष्टेश, अष्टमेश या मारकेश से सम्बन्धित हो तो इनकी अन्तर्दशा में हानि होती है। अशुभ ग्रह होने पर मृत्यु और शुभ ग्रह होने पर रोग होता है।

अन्तर्दशा के सामान्य परिणामः

अशुभ महादशानाथ/अशुभ अन्तर्दशानाथ	दर्दनाक दशा।
अशुभ महादशानाथ/शुभ अन्तर्दशानाथ	पूर्वार्ध में अशुभ, उत्तरार्ध में शुभ।
शुभ महादशानाथ/शुभ अन्तर्दशानाथ	अच्छी दशा।
शुभ महादशानाथ/अशुभ अन्तर्दशानाथ	पूर्वार्ध में शुभ, उत्तरार्ध में अशुभ।
महादशा नाथ और अन्तर्दशानाथ की 2/12 या 6/8 स्थिति	धन-सम्पति की हानि, मानसिक परेशानियां।

दशा की व्याख्या का महत्वपूर्ण नियमः

दशा की विवेचना करने के लिए श्री के. एन. राव ने एक महत्वपूर्ण नियम पढ़ाया है। एक सामान्य स्तर का ज्योतिषाचार्य इस नियम की अवहेलना कर देता है और परिणाम स्वरुप सही नतीजे पर पहुंचने में असमर्थ रहता है। यह नियम है कि दशा नाथ जहां स्थित हो उस भाव को लग्न मानकर फल कथन कहना चाहिए। श्री राव के अनुसार महादशानाथ के उपर उंगली रखो और कुण्डली को उस भाव से पढ़ो। यह नियम उन सिद्धान्तों पर आधारित है जिनकी अनुशंसा पराशर और फलदीपिका करती है।

दशानाथ को लग्न मानने पर बल देते हुए पराशर कहता है, महादशा नाथ (इस मामले में राहु) से केन्द्र, त्रिकोण या तृतीय या एकादश भाव में मंगल का स्थित होना,

लाल वस्त्र, यात्रा, राजा से भेंट, सन्तान की समृद्धि, भगवान की अत्याधिक कृपा आदि सुनिश्चित करता है।

इसी प्रकार, फलदीपिका के अनुसार, यह देखें कि महादशानाथ से किस भाव का स्वामी अन्तर्दशानाथ है। जिस भाव को अन्तर्दशानाथ इंगित करेगा, उसकी अन्तर्दशा में उस भाव से सम्बन्धित शुभाशुभ परिणाम ही मिलेंगे। यदि अन्तर्दशा नाथ, महादशानाथ से षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव का स्वामी है तो उसकी दशा में सबसे अधिक कष्टकारी परिणाम प्राप्त होंगे जबकि अन्य ग्रहों की दशा में शुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

यह नियम, श्री राव द्वारा उनकी पुस्तक **"टाइमिंग आफ इवेंन्ट थ्रो विंशोत्तरी दशा"** में दी गई कुण्डली के आंकलन से अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

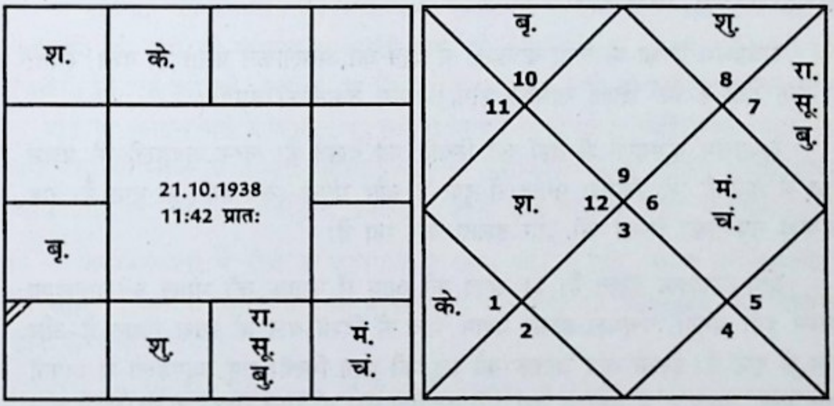

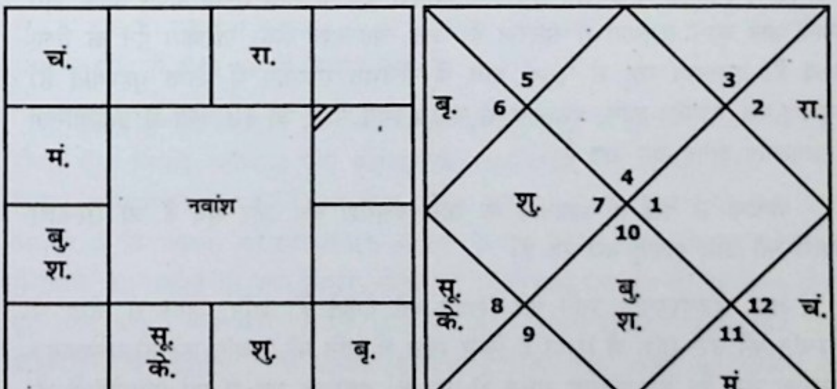

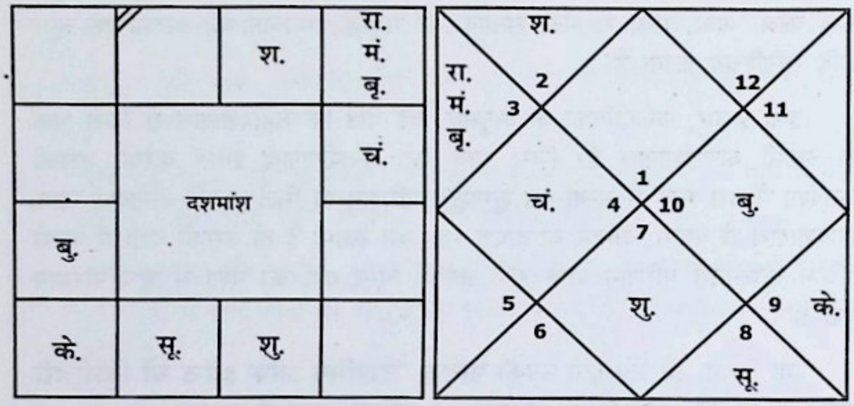

कुण्डली की विवेचनाः

सर्वप्रथम शिक्षा के लिए कुण्डली में दशा का अवलोकन करते हैं। दशा, स्वतः ही कह देती है कि शिक्षा सामान्य होगी अथवा तकनीकी होगी।

सर्वप्रथम कुण्डली में ग्रहों की स्थिति को देखते हैं। लग्न कुण्डली के पंचम भाव में केतु है जो पंचमेश मंगल से दृष्ट है और मंगल स्वयं शनि से दृष्ट है। यह सम्बन्ध तकनीकी शिक्षा की ओर इशारा कर रहा है।

अब दशाचक्र देखते हैं। 11 साल की आयु में जातक की मंगल की महादशा प्रारम्भ हुई। मंगल, पंचमेश होकर दशम भाव में दिशा बल के साथ स्थित है और शनि से दृष्ट है। इसके बाद जातक को राहु की दशा मिली। राहु, कुण्डली में अपनी श्रेष्ठ भाव, एकादश में नवमेश सूर्य और दशमेश बुध के साथ स्थित होकर इनके द्वारा बनाये जाने वाले राजयोग में संलिप्त है। अतः यह दशा श्रेष्ठ परिणाम देने के लिए बाध्य है। दशानाथ राहु से चतुर्थ भाव में नीचभंग राजयोग में लिप्त बृहस्पति है। चतुर्थेश एवं पंचमेश शनि, दशानाथ से षष्टम भाव में है जो इस दशा में प्रतियोगिता में सफलता इंगित कर रहा है।

चन्द्रमा से देखें तो दशानाथ के साथ दशमेश बुध और सूर्य हैं जो सरकारी नौकरी की ओर इशारा कर रहे हैं।

अब अन्तर्दशानाथ शनि की स्थिति को देखते हैं। शनि, लग्न से केन्द्र में बृहस्पति की उस राशि में स्थित है जिस राशि में शनि की स्थिति को उत्तरकालामृत में सराहा गया है। यह पंचमेश मंगल से दृष्ट है। दशानाथ राहु से यह प्रतियोगिता के

भाव षष्टम में है। चन्द्रमा से देखने पर यह पंचमेश और षष्टेश होकर पदप्राप्ति के भाव, सप्तम में स्थित है। इससे अधिक महत्वपूर्ण अगला अन्तर्दशानाथ बुध है जो सप्तमेश और दशमेश होकर राजयोग में लिप्त है। अतः यह अन्तर्दशा विवाह और उच्चपद, दोनों की इंगित करती है।

नवांश में राहु पुनः एकादश भाव में है और शनि, पदप्राप्ति एवं विवाह के भाव सप्तम भाव मे है। शनि, दशानाथ राहु से त्रिकोण भाव में बुध के साथ है और बृहस्पति से दृष्ट है। बुध, राहु से पंचम भाव का स्वामी है और बृहस्पति वहीं स्थित है। इस नवांश की सबसे श्रेष्ठ स्थिति यह है कि बृहस्पति, तृतीय भाव से दशानाथ राहु और अन्तर्दशानाथ शनि एवं बुध, तीनों और चन्द्रमा को दृष्ट करता है। इससे स्पष्ट है कि राहु का दशाकाल अच्छा होना सुनिश्चित था।

बृहस्पति की महादशा की चर्चा करते समय श्री राव साहब ने कहा कि यद्यपि बृहस्पति की दशा भी सामान्य से अच्छी होनी थी लेकिन उतनी अच्छी नहीं होनी थी जितनी की राहु की थी, क्योंकि यह नीचस्थ है। लेकिन शनि के साथ राशि परिवर्तन में होने के कारण यह दशाकाल भू-सम्पति बनाने वाला होना चाहिए था। बृहस्पति की दशा के अन्त में अर्थात बृहस्पति-राहु के दशाकाल में जो विशेष घटित होना आवश्यक था, वह एक विशिष्ट प्रमाण है, जिसे तीन तरह से देखा जा सकता है।

जन्मकुण्डली में नीच के बृहस्पति से दशम भाव में राहु, षष्टेश एवं अष्टमेश के साथ है, यद्यपि नवमेश होने के कारण बुध ने जातक की जीवनवृत्ति को विध्वंस होने से बचाया होगा।

नवांश में राहु तृतीय भाव में है और बृहस्पति से अष्टमेश मंगल एवं द्वादशेश सूर्य से दृष्ट है। दशमांश कुण्डली में राहु अष्टमेश और द्वादशेश के साथ है जो शक्ति सम्पन्न होने के लिए अच्छी स्थिति नहीं है।

इससे अगली महादशा शनि की थी जो जन्मकुण्डली के द्वादशेश मंगल से दृष्ट होकर कुछ विवाद, प्रतिकूल गुप्त वृतान्त अथवा अनिच्छा से कार्य को दिखा रहा है, जिसके परिणामस्वरुप पदोन्नति के लिए जातक को नकारा जा सकता था। यहां ऐसे अवसर थे कि जातक का स्थानान्तरण सरकार के ऐसे किसी निजी उपक्रम कार्यालय में किया जा सकता था जहां निर्माण कार्य और विशेषकर घर का निर्माण कार्य होता हो। शनि चतुर्थ भाव में है, मंगल भूमि को इंगित करता है और द्वादश भाव उस प्रतिनियुक्त को दर्शाता है जो इसको सेवामुक्त होने के लिए विवश कर सकती है।

नवांश कुण्डली में दशमेश, अष्टम भाव में है जबकि दशांश का दशमेश, अष्टम भाव से सूर्य द्वारा दृष्ट है। ऐसे मामलों में पहले सेवामुक्त होना लाभदायक होता है।

कुण्डली में नीच ग्रह की भूमिकाः

किसी भी जातक को, कुण्डली में नीच ग्रह देखकर भयभीत नहीं होना चाहिए। कई प्रसिद्ध व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों को देखने के बाद यह पाया गया कि अधिकतर कुण्डलियों में एक या दो ग्रह नीच के थे। विश्व प्रसिद्ध सितार वादक, पण्डित रवि शंकर की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा षष्टम भाव में नीच का, अनुराधा नक्षत्र में है। शास्त्रीय ग्रन्थों में अनुराधा नक्षत्र के चन्द्रमा की प्रशंसा की गई है। पराशर के नियमानुसार, षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित नीच का ग्रह भी शुभ होता है। पण्डित रवि शंकर की जन्म कुण्डली में लग्न और चन्द्रमा, दोनों से ही सरस्वती योग बन रहा है। संगीत, कला ओर उच्च शिक्षा का यह योग तब बनता है जब तीन शुभ ग्रह, बृहस्पति, शुक्र एवं बुध, लग्न या चन्द्रमा से द्वितीय भाव, केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों। यह सर्वविदित है कि देवी सरस्वती, विद्या, संगीत और कला की अराध्य देवी है।

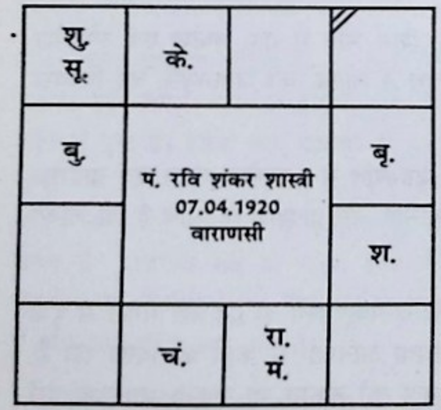

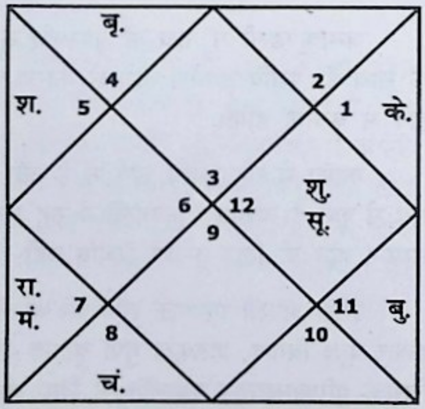

विश्व प्रसिद्ध और नोबल पुरस्कार विजेता अलबर्ट इन्सटाइन की कुण्डली में दो ग्रह, चन्द्रमा और बुध नीच के हैं। इसमें भी चन्द्रमा, अनुराधा नक्षत्र का होकर षष्टम भाव में स्थित होकर राजयोग बना रहा है और बुध, उच्च के शुक्र से युति करके नीचभंग राजयोग में लिप्त है। इस कुण्डली में भी लग्न के साथ-साथ चन्द्रमा से भी सरस्वती योग बन रहा है। फलदीपिका के मतानुसार यह योग बुद्धिमता, गणित में दक्षता के साथ-साथ कलात्मक सक्षमता, प्रवीणता आदि देता है।

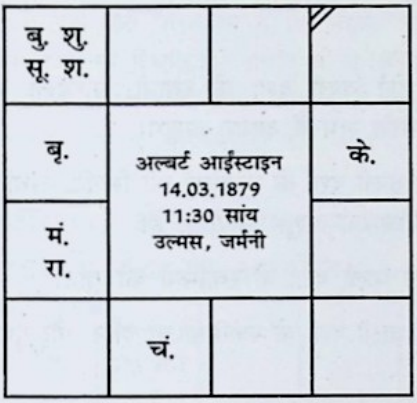

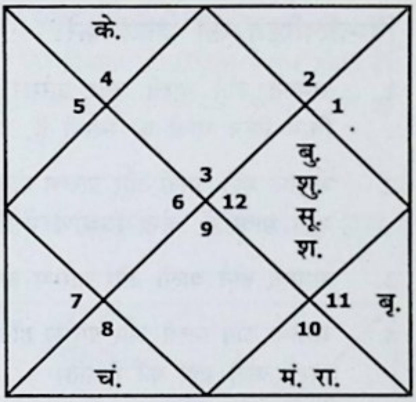

दशा छिद्रः

(जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के अप्रैल-जून, 2001 संस्करण में प्रकाशित श्री के. एन. राव के लेख पर आधारित)

प्रत्येक महादशा एक विशेष प्रकार की परिस्थितियों में बड़े परिवर्तन को इंगित करती है जबकि किसी भी महादशा में अन्तर्दशा, उस महादशा द्वारा निश्चित परिस्थितियों के अर्न्तगत, स्थितियों के परिवर्तन को इंगित करती है।

सामान्यतः एक महादशा का अन्तिम दशाकाल और दूसरी महादशा के प्रारम्भिक काल एक विशेष समय होता है जो दशा छिद्र के नाम से जाना जाता है। कुछ ज्योतिषाचार्य नकारात्मक और विनाशात्मक परिवर्तनों पर ही अधिक बल देते हैं, जबकि कोई भी परिवर्तन, परिवर्तन ही होता है।

निम्नलिखित चार प्रकार का परिवर्तन दशा से हो सकता है:

1. शुभ से शुभ
2. शुभ से अशुभ
3. अशुभ से अशुभ
4. अशुभ से शुभ

यह परिवर्तन, वर्तमान महादशा की अन्तिम अन्तर्दशा और आने वाली महादशा की प्रथम अन्तर्दशा, जो कि महादशानाथ की होती है, से दृष्ट होगा।

निम्नलिखित की जांच करें:

1. समाप्त होने वाली और प्रारम्भ होने वाली दशा के स्वामी, कुण्डली में किन-किन भावों के स्वामी हैं, अर्थात शुभ हैं अथवा अशुभ।
2. समाप्त होने वाली और प्रारम्भ होने वाली दशा के स्वामियों की स्थिति, अर्थात शुभ भावों में, केन्द्र-त्रिकोण में हैं अथवा अशुभ भावों में हैं।
3. समाप्त होने वाली और प्रारम्भ होने वाली दशा के स्वामियों की युति।
4. समाप्त होने वाली और प्रारम्भ होने वाली दशा के स्वामियों पर दृष्टि और दृष्ट करने वाले ग्रहों की स्थिति।
5. समाप्त होने वाली और प्रारम्भ होने वाली दशा के स्वामियों की स्थिति - उच्च, स्वगृही, मूलत्रिकोण राशि में, नीच, वक्री आदि।
6. दशानाथों से सम्बन्धित योग।
7. वर्गों का अध्ययन। अच्छा या बुरा भाग्य किस वर्ग से प्रफुल्लित हो रहा है। नवांश और षष्टियांश को विशेष महत्व देना चाहिए लेकिन षष्टियांश तभी देखना चाहिए जब जन्म समय सही हो।
8. दशानाथों की एक-दूसरे से 2/12, 6/8, 5/9 आदि स्थितियां।
9. अन्य दशाओं का अध्ययन, योगिनी और चर दशा।

छिद्र दशा प्रारम्भ होने का समय:

इस प्रश्न का उत्तर देना सरल नहीं है। यह देखा गया है कि कुछ मामलों में यह महादशा की अन्तिम अन्तर्दशा से पूर्व ही प्रारम्भ होती है और नई महादशा की प्रथम अन्तर्दशा में ही समाप्त होती है। उदाहरणत: यह बृहस्पति-मंगल से प्रारम्भ होकर बृहस्पति-राहु और शनि-शनि तक चलती है।

अक्सर यह देखा जाता है कि कई वर्षों के अथक प्रयास के बाद एक जातक के जीवन में बहुत बड़ा उत्थान आता है अथवा कई वर्षों की समृद्धि के बाद जातक के जीवन में अचानक न्यूनता आ जाती है। आधारभूत रुप से इस प्रकार के परिवर्तन छिद्र दशा में ही होते हैं।

इस बात पर ध्यान दें कि महादशानाथ और अन्तर्दशानाथ की एक-दूसरे से षडाष्टक की स्थिति इस प्रकार के परिवर्तनों को दिखाने में अधिक सक्षम होती है। दोनों के भोगांशों को देखें। यदि दोनों दशानाथ भोगांशों में अधिक निकट होंगे तो परिणाम अधिक प्रभावशाली होंगें।

उदाहरणः जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी में प्रकाशित श्री आर. एस. पंवार के लेख पर आधारित।

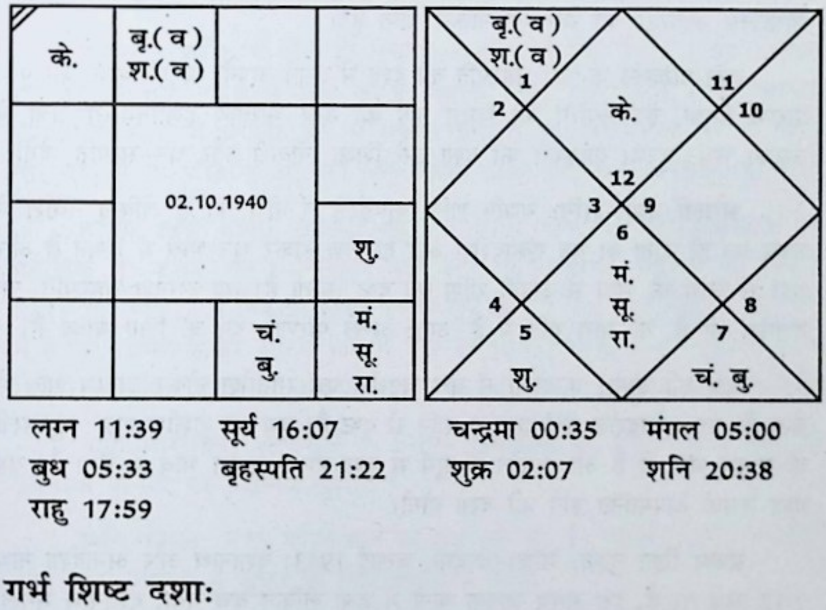

लग्न 11:39	सूर्य 16:07	चन्द्रमा 00:35	मंगल 05:00
बुध 05:33	बृहस्पति 21:22	शुक्र 02:07	शनि 20:38
राहु 17:59			

गर्भ शिष्ट दशाः

जन्म के समय की दशा जो जीवन के बहाव के निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, गर्भ शिष्ट दशा कहलाती है। इस कुण्डली में चन्द्रमा, चित्रा नक्षत्र में है जिसका स्वामी मंगल है। जन्म के समय मंगल की महादशा 3 वर्ष, 4 मास और 9 दिन की शेष थी। मंगल, इस कुण्डली में द्वितीयेश अर्थात धनेश और नवमेश अर्थात भाग्येश होकर सप्तम में बैठकर लग्न को दृष्ट कर रहा है। यह षष्टेश सूर्य और राहु की युति में है। जातक धन अर्जित करने और उच्च स्तर के जातकों से सम्बन्ध बनाने में कष्ट पायेगा। उसको अत्याधिक प्रतिरोधों का सामना करना पड़ेगा क्योंकि सूर्य षष्टेश होकर दशानाथ से सम्बन्ध बना रहा है। मंगल आक्रमक, शक्ति और किसी

कार्य को प्रारम्भ करने का कारक है, चूंकि मंगल दशम भाव को भी दृष्ट करता है अतः जातक अत्याधिक परिश्रम करके धन कमायेगा।

कुण्डली की सामान्य रुपरेखाः

राहु की दशाः इस दशा में जातक ने अपनी शिक्षा पूर्ण की लेकिन वह नौकरी पाने में असमर्थ रहा। दूसरी छिद्र दशा में उसका अपने परिवार के लोगों से मन-मुटाव हो गया और उसने गुस्से में आकर अपना घर छोड़ दिया। उसे पुलिस विभाग में वायरलेस आपरेटर की साधारण नौकरी प्राप्त हुई।

दशा परिवर्तन के बाद बृहस्पति की दशा में उसने अपनी अपूर्ण शिक्षा को पुनः प्रारम्भ किया, इंजीनियरिंग की शिक्षा पूर्ण की और भारतीय इंजीनियरिंग सेवा में उसका चयन हुआ। बृहस्पति की दशा उसे शिक्षा, नौकरी और धन-सम्पति, देगी।

अगली दशा-शनिः यद्यपि शनि, कुण्डली में नीच का है लेकिन नवांश में उच्च का हो जाता है। यह एकादशेश और द्वादशेश होकर धन भाव में स्थित है और वहां से लाभ के भाव में अपनी राशि को दृष्ट करता है। यह लग्नेश बृहस्पति, जो दशमेश भी है, के साथ युति में है, अतः अच्छे परिणाम देने के लिए बाध्य है।

बुध की दशाः कुण्डली में बुध चतुर्थेश एवं सप्तमेश होकर अष्टम भाव में बैठा है। यह एकादशेश एवं द्वादशेश शनि से दृष्ट है। बुध का राशीश शुक्र, कुण्डली के षष्टम भाव में है और नवांश में सूर्य से दृष्ट होकर द्वादश भाव में बैठा है। यह दशा उसके अपमानित होने की दशा होगी।

प्रथम छिद्र दशाः मंगल-चन्द्रमा, जुलाई 1943। दशानाथ और अन्तर्दशा नाथ 2/12 अक्ष पर हैं। इस समय जातक पानी में डूबा लेकिन बच गया। दशानाथ मंगल, सप्तम भाव में है जो मारक भाव है और चन्द्रमा अष्टम भाव में है जो बालारिष्ट का योग बना रहा है। लेकिन यह वर्गोत्तम होने और बृहस्पति से दृष्टि होने के कारण अरिष्टभंग योग भी बना रहा है। लग्नेश भी बली है।

द्वितीय छिद्र दशाः राहु-मंगल, 1961 के अन्त में। दोनों ही अशुभ ग्रह हैं। इस दशाकाल में इसका अपने माता-पिता से विवाद हुआ क्योंकि इसके माता-पिता निर्धन थे और चाहते थे कि जातक कोई कार्य करे। उसने गुस्से में घर छोड़ दिया। घर छोडने के बाद इसने नौकरी ढूंढ़नी प्रारम्भ की और पुलिस विभाग में वायरलेस आपरेटर की साधारण नौकरी प्राप्त की। राहु-मंगल, दोनों ही सप्तम में बैठकर यात्रा दिखा रहे हैं। अन्तर्दशानाथ मंगल, दशम भाव को दृष्ट करता है जो आजीविका का

भाव है। राहु/मंगल, संचार भी दिखाते हैं, जबकि मंगल सेना अथवा पुलिस जैसी नौकरी को इंगित करता है।

बृहस्पति की दशा (1962 से): पराशर के मतानुसार लग्नेश और दशमेश होने के कारण बृहस्पति की दशा शुभ दशा है। बृहस्पति, कुण्डली में बनने वाले गजकेसरी योग, पंचमेश चन्द्रमा से सम्बन्धित राजयोग और चतुर्थेश एवं सप्तमेश बुध का चन्द्रमा के साथ बनने वाले केन्द्र-त्रिकोण राजयोग में शामिल है। यह एकादशेश एवं द्वादशेश शनि के साथ युति में भी है। जातक ने अपनी शिक्षा पुनः प्रारम्भ की और उसका चयन कनिष्ठ अभियन्ता के लिए हुआ।

बृहस्पति/शनि: ये दोनों ही पंचमेश चन्द्रमा को दृष्ट करके अच्छे राजयोग बना रहे हैं। शनि नवांश में उच्च का है। जातक अपने प्रथम प्रयास में ही भारतीय इंजीनियरिंग सेवा में चयनित होने में सफल रहा। नई दशा के प्रारम्भ होने के प्रथम चार वर्षों में ही परिवर्तन आ गया और जातक प्रथम श्रेणी का अधिकारी हो गया।

तृतीय छिद्र दशा: बृहस्पति/राहु - 1977। दोनों दशानाथ एक-दूसरे से षडाष्टक हैं। जातक का स्थानान्तरण हुआ और वह मानसिक अवसाद का शिकार हुआ। राहु, भोगांशों में निकटम होकर षष्टेश सूर्य से युति में है। राहु, चन्द्रमा के नक्षत्र में है जो पंचमेश होकर अष्टम भाव में बैठा है। इसका लग्नेश से भी सम्बन्ध है जो बिमारी को इंगित करता है। चन्द्रमा, मन का कारक है अतः मानसिक अवसाद हुआ।

दशा परिवर्तन: शनि/शनि - 1979। जीवनवृत्ति में उत्थान आया और उप प्रबन्धक के पद पर पदोन्नति हुई।

शनि/मंगल: मंगल दशम भाव को दृष्ट कर रहा है। जातक अपनी कार्यशैली और कार्य प्रणाली में सुधार के लिए लोकप्रिय हुआ।

शनि/राहु: शनि की महादशा में यह अन्तिम अन्तर्दशा से द्वितीय अन्तर्दशा थी। इसी समय जातक की छिद्र दशा प्रारम्भ हो गई। मंत्री जातक से अत्याधिक प्रसन्न थे, अतः उसका दिल्ली स्थानान्तरण कर दिया (अन्तर्दशा नाथ राहु सप्तम भाव में है)। जातक ने अत्याधिक धन-सम्पति अर्जित की।

चतुर्थ छिद्र दशा: शनि/बृहस्पति/राहु।

प्रत्यन्तर दशानाथ राहु, दशानाथ एवं अन्तर्दशानाथ से षडाष्टक है। शनि द्वादशेश भी है। राहु का राशीश बुध, अष्टम भाव में है। छिद्र दशानाथ, त्रिक भावेशों से सम्बन्ध बना रहे हैं। जातक नौकरी से निलम्बित हुआ और उसके विरुध सी.बी.आई.

द्वारा जांच की गई। इस लग्न के लिए बुध अशुभ ग्रह होकर अष्टम भाव में स्थित है और नवांश में द्वादश भाव में बैठा है।

बुध/बुधः जातक को अत्याधिक अपमानित होना पड़ा।

बुध/शुक्रः बुध अष्टम भाव में है और शुक्र, अष्टमेश है। जातक न्यायालय में अपना केस हार गया।

दशाचक्र से कुण्डली की विवेचनाः

उदाहरण 1: लता मंगेश्कर (श्री के. एन. राव की पुस्तक "फेमस वूमेन" पर आधारित)

लता मंगेशकर एक ऐसी बहुगुण सम्पन्न गायिका है जिन्होंने 20 से भी अधिक भारतीय भाषाओं में 50,000 से भी अधिक गाने गायें हैं और जिनको 2001 में भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। उनका मधुर स्वर आज भी करोड़ों लोगों के दिलों में राज करता है। चीन के विरुद्ध युद्ध में भारत की अपमानजनक हार के समय जब उन्होंने देशभक्ति से भरे अपने मधुर स्वर में प्रसिद्ध गाना "ये मेरे वतन के लोगों, जरा आंख में भर लो पानी, जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी" गया तो पण्डित जवाहर लाल नेहरु भी अपनी आंखों के आंसुओं को नहीं रोक पाए थे। पाकिस्तान के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय जुल्फीकार भुट्टो ने एक बार कहा था कि वह प्रसन्नता पूर्वक कश्मीर को लता मंगेश्कर से बदल सकते हैं।

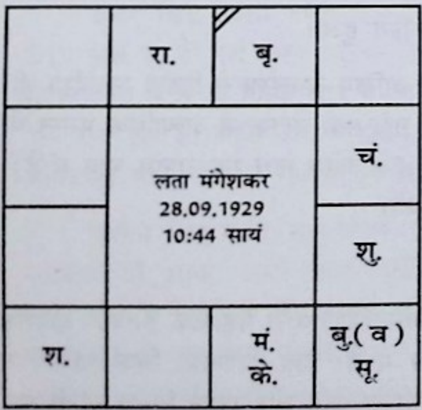

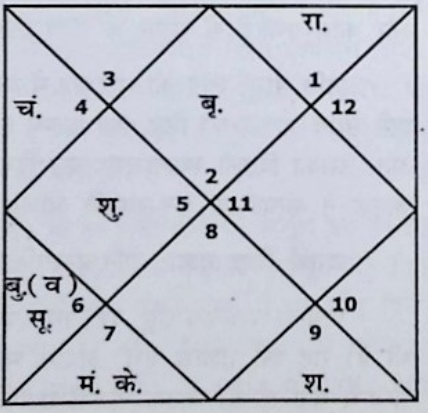

कुण्डली की मुख्य विशेषताएं:

1. कुण्डली में सरस्वती योग और महाभाग्य योग है।
2. वाणी का स्वामी अर्थात द्वितीयेश बुध, पूर्वपुण्यों एवं श्रेष्ठ बुद्धिमता के भाव पंचम में उच्च का है और चतुर्थेश सूर्य के साथ युति करके राजयोग बना रहा है। पंचम भाव में स्थित बुध कला एवं संगीत के लिए अतिशुभ है और जातक भरणम् के मतानुसार कन्या राशि का सूर्य विद्या और ज्ञान देने वाला होता है।
3. द्वितीयेश बुध, उच्च होने के साथ-साथ वर्गोत्तम भी होकर पंचम भाव से एकादश भाव को देखता है और स्वयं योगकारक शनि से दृष्ट है। पराशर के मतानुसार यह बहुत बड़ा धनयोग है।
4. चतुर्थ भाव में स्थित दिग्बली शुक्र, संगीत में दक्षता देता है।
5. कलात्मक क्षमता के भाव तृतीय में चन्द्रमा स्वगृही होकर स्थित है अतः बली है। जातक भरणम् के अनुसार कर्क का चन्द्रमा कला के लिए शुभ होता है और भू-सम्पति देता है।
6. बृहस्पति, वृषभ राशि में दिग्बली होकर स्थित है। वराहमिहिर के अनुसार वृषभ का बृहस्पति संगीत और नृत्य के गुण प्रदान करता है।

दशा चक्रः

बुध - 24.02.1946 तक, केतु - 23.02.1953 तक,
शुक्र - 23.02.1973 तक, सूर्य - 23.02.1979 तक,
चन्द्रमा - 23.02.1989 तक, मंगल - 23.02.1996 तक,
राहु - 23.02.2014 तक।

जन्म के समय लता मंगेशकर को उच्च एवं वर्गोत्तम बुध की दशा मिली जिसने इनके जीवन को एक अच्छी शुरुआत दी। पराशर के अनुसार बुध की दशा धन-सम्पति, समृद्धि, शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य और खुशियां लाती है। इनके पिता स्वर्गीय दीनानाथ मंगेशकर एक सामान्य स्तर के अभिनेता एवं गायक थे और उनकी एक नाटक मण्डली थी जिससे लता जी को प्रारम्भिक मार्गदर्शन मिला।

बुध-राहु और बुध-बृहस्पतिः आर्थिक समस्याओं और पिता की अस्वस्थता के कारण यह नाटक मण्डली बन्द करनी पड़ी। इनकी कुण्डली में राहु, दशानाथ बु

से अष्टम भाव में स्थित होकर मंगल से दृष्ट है। परिवार को पूना स्थानान्तरण करना पड़ा। राहु, लग्न से द्वादश भाव में है।

बृहस्पति, अष्टमेश और एकादशेश होने के कारण कुण्डली का अशुभ ग्रह है और दशानाथ बुध से नवम भाव में स्थित है।

बुध-शनिः सन् 1942 में पिता का देहान्त हुआ। पिता का नैसर्गिक कारक सूर्य, अपने से द्वादशेश, बुध के साथ बैठा है। सूर्य, नवम भाव से अष्टम भाव का स्वामी है और शनि से दृष्ट है। शनि, नवमेश होकर अष्टम भाव में स्थित है। इसी दशा के समय सन् 1945 में लता जी को अचानक पूना से मुम्बई जाना पड़ा। अष्टम भाव में स्थित होने के कारण शनि यह परिवर्तन दिखा रहा है।

केतु-चन्द्रमाः

लता ने संगीतकार गुलाम हैदर के संगीत निर्देशन में फिल्म "मजबूर" में गाना गाया जो अत्यन्त मशहूर होकर घर-घर में छा गया। चन्द्रमा, कला की क्षमता के भाव तृतीय में स्वगृही होकर, दशानाथ केतु से दशम भाव में स्थित है। चन्द्रमा, संगीत का भी कारक होता है। दशानाथ केतु, लग्न से षष्टम भाव में अन्य अशुभ ग्रह मंगल के साथ स्थित है जो प्रतियोगिता में विजयी होने के लिए अच्छा योग है। मंगल वर्गोत्तम भी है।

शुक्र की महादशा (1953 से 1973 तक):

इस समय वह अपने जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुंची। उनके चरणों में पुरस्कारों का ढ़ेर लग गया। वह अपने समय की सबसे मधुर स्वर वाली अद्वितीय सुर सम्राज्ञी बन गई। शुक्र, संगीत एवं कला का कारक है और चतुर्थ भाव में दिग्बली होकर कला एवं संगीत का रसपान करा रहा है। शुक्र कुण्डली का लग्नेश और षष्टेश भी है जो मंगल एवं केतु की स्थिति के कारण दूषित भी हो रहा है। इसने इन्हें एक घमण्डी महिला भी बनाया जो अन्य युवा गायिकाओं की लोकप्रियता को सहन नहीं कर सकती थी तथा इन्होने अन्य गायिकाओं के गुणों को निरुत्साहित किया।

सूर्य की महादश। (1973 से 1979 तक):

सूर्य चतुर्थेश होकर त्रिकोण भाव, द्वितीयेश एवं पंचमेश बुध से युति करके, पंचम भाव में बैठा है और राजयोग बना रहा है। यह युति, लग्न में स्थित दिग्बली बृहस्पति से भी दृष्ट है। पंचम भाव मंनोरजन का भाव भी है।

चन्द्रमा (1979 से 1989 तक):

चन्द्रमा, कला की क्षमता के भाव तृतीय में स्वगृही होकर स्थित है। इस समय लता जी पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो चुकी थीं और अद्वितीय लोकप्रियता एवं धन प्राप्त कर चुकी थी। हिन्दी सिनेमा में कोई भी ऐसी गायिका नहीं थी जो इनका सामना कर सकें और लोगों के ओंठों पर केवल इनके ही गीत थे। उर्दू के एक शायर ने इनके मधुर स्वर के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि "तेरी आवाज के शबनम से धुल जाते हैं गम सारे" जो इनके स्वर की मधुरता एवं लोकप्रियता को दर्शाता है।

मंगल की महादशा (1989 से 1996 तक):

मंगल, केतु के साथ षष्टम भाव में बैठा है। इस समय वह अपने सभी प्रतिद्वन्दियों को पीछे छोड़ते हुए लोकप्रियता के शिखर पर आगे ही बढ़ती गई। सफलता स्वतः ही प्राप्त होती गई। मोक्ष कारक केतु ने इन्हें धार्मिक और आध्यात्मिक गानों की ओर प्रेरित किया तथा इनका आध्यात्मिक महिला के रुप में परिवर्तन हो गया।

राहु की महादशा (1996 से 2014 तक):

राहु-शनि के दशाकाल में इन्हें सर्वश्रेष्ठ सम्मानीय पुरस्कार, भारत रत्न से सम्मानित किया गया। राहु, चन्द्रमा से दशम भाव में है और अपने राशीश मंगल से दृष्ट है। योगकारक शनि, अष्टम भाव में बैठकर, लग्न से दशम भाव को दृष्ट कर रहा है। अष्टम भाव में शनि की श्रेष्ठ स्थिति है और यह यहां बृहस्पति की राशि धनु में स्थित है। इसका राशीश बृहस्पति लग्न में दिग्बली होकर बैठा है।

उदाहरण 2: मदर टेरेसा (श्री के. एन. राव की पुस्तक "फेमस वूमेन" पर आधारित)

मदर टेरेसा, बीसवीं सदी की सबसे अधिक उच्च व्यक्तित्व वाली महिलाओं में से एक थीं। इन्होंने भारत में मानवता के धर्म और दया भाव के प्रचार के लिए एक संस्था की नींव रखी। लगभग 40 वर्षों तक निर्धनों, रोगियों, विकलांगों एवं मृत्यु की ओर अग्रसर व्यक्तियों की सेवा करने के उपरान्त अपने मानवतावादी कार्यों के लिए 1979 में इन्हें नोबल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सच्चे इसाई संस्कारों से परिपूर्ण इन्होंने अपना जीवन निर्धनों और दबे-कुचले लोगों की भलाई के कार्यों में समर्पित कर दिया।

मदर टेरेसा के नेतृत्व में मानवता के धर्म और दया भाव के प्रचार के लिए बनी इनकी संस्था ने अधिक लोकप्रियता प्राप्त करने के बाद अपने कार्यों को भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में फैलाया। 1970 तक मानवतावादी और निर्धनों एवं असहायों के वकील के रुप में इनकी लोकप्रियता अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूरे विश्व में फैल गई थी। इनकी मृत्यु के उपरान्त पोप पॉल द्वितीय ने इनकी अतिप्रशंसा की थी और इन्हें "कलकत्ता की पवित्र टेरेसा" की पदवी दी। इनकी ईश्वर के दूत के रुप में मान्यता प्राप्त होने की भी संभावनायें प्रबल हैं।

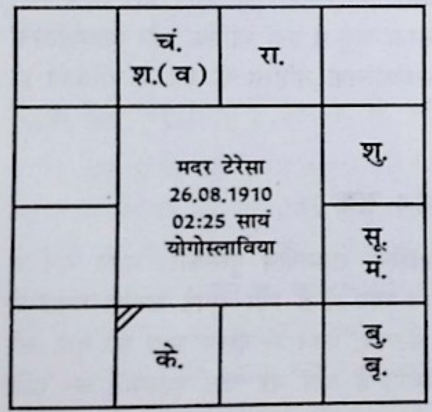

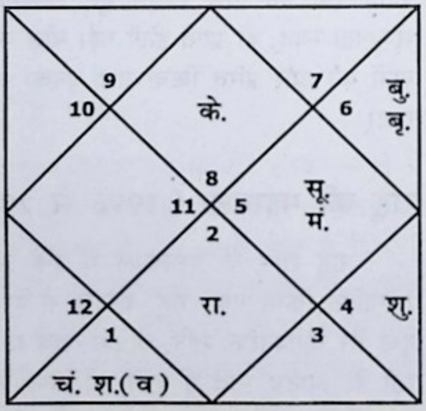

दशा चक्रः

शुक्र - 18.8.1911 तक,
सूर्य - 16.08.1917 तक,
चन्द्रमा - 16.08.1927 तक,
मंगल - 16.08.1934 तक,
राहु - 16.08.1952 तक,
बृहस्पति - 16.08.1968 तक,
शनि - 16.08.1987 तक,
बुध -16.08.2004 तक।

कुण्डली की मुख्य विशेषताएं:

1. इस कुण्डली में आत्मत्याग से सम्बन्धित दो योग हैं जो महिलाओं में विशेषकर लागू होते हैं। पराशर के अनुसार स्त्रियों की कुण्डली के सप्तम भाव में एक अशुभ ग्रह (इस कुण्डली में राहु) और नवम भाव में एक ग्रह ***'विशेष सन्यास'*** योग है।

2. मेष राशि, अर्थात मंगल की राशि में शनि और चन्द्रमा की युति, सन्यास योग की सुप्रचित युति है।

3. वह स्वयं एक संस्था की निर्माता थी, निर्मल हृदय (मृत्यु की शय्या पर लेटे व्यक्तियों का घर) से सम्बन्धित थी और विश्व में फैले दया भाव के मानवतावादी धर्म के 570 नियोगों से जुड़ी हुई थी। इस विश्व प्रसिद्ध संस्था की नींव रखने के लिए उनकी कुण्डली में लघुपराशरी द्वारा अनुशंसनीय सुप्रचित योग, लग्नेश और दशमेश की युति दशम भाव में है। उनका लग्नेश मंगल, दिशा बल से युक्त होकर दशम भाव में नैसर्गिक आत्मकारक सूर्य से युति कर रहा है। सूर्य भी दिशा बल से युक्त है और दोनों ग्रहों की यह युति शुभकर्तरी योग में भी है। इस प्रकार दशम भाव भी अत्यन्त बली है।

4. पुरस्कारों और पदवियों को दशम एवं एकादश भाव से देखा जाता है। यह पहले ही कह दिया है कि दशम भाव बली है। इनकी कुण्डली में एकादश भाव भी दो शुभ ग्रहों, बुध एवं बृहस्पति की स्थिति के कारण बली हो रहा है। बुध जहां एकादशेश होकर उच्च का हो रहा है वहीं बृहस्पति द्वितीयेश और पंचमेश है। यह पराशर द्वारा बताया गया उत्कृष्ट धनयोग है। उनके पास पूरे विश्व से सहायता राशि दान के रुप में आती थी।

चन्द्रमा की महादशा (1917 से 1927 तक):

इस कुण्डली में चन्द्रमा सन्यास योग में संलिप्त हैं। इस दशाकाल में इनकी आध्यात्मिकता प्रफुल्लित होने लगी। वह ईसा मसीह के विचारों से प्रभावित थी जिन्होंने इन्हे जीवन के सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य की ओर प्रेरित किया। इसी दशा में उन्होंने अपना जीवन निर्धनों और असहायों को समर्पित करने का निर्णय लिया।

इसी दशा काल में उनके पिता की मृत्यु हुई। नवमेश चन्द्रमा, शनि से युति करके षष्टम भाव में बैठा है। चन्द्रमा, सूर्य से नवम भाव में भी स्थित है।

मंगल की महादशा (1927 से 1934 तक):

मंगल, लग्नेश है और दशम भाव में दिग्बली होकर, दिग्बली दशमेश सूर्य के साथ स्थित है। जिस उद्देश्य के लिए इनका जन्म हुआ था उसने आकार लेना प्रारम्भ कर दिया। मंगल, भू-सम्पति के भाव चतुर्थ को देखता है। उन्हें पीड़ित व्यक्तियों के लिए कई घर बनाने थे।

मंगल-राहु (नवम्बर, 1928) में वह अपनी जन्मभूमि से बहुत दूर, भारत की यात्रा पर आयीं और यहीं बस गयीं।

मंगल-बृहस्पति की दशा में वह पढ़ाने के लिए कलकत्ता गयीं। बृहस्पति शिक्षा देने का कारक है।

मंगल-बुध (1931): इन्होने ब्रह्मचर्य, आत्मत्याग और धर्मनिष्ठा की शपथ ली और अपना नाम बदल कर टेरेसा रख दिया। बुध उच्च का होकर पंचमेश बृहस्पति के साथ बैठा है और पंचम भाव को देखता है। पंचम भाव आध्यात्मिकता एवं श्रेष्ठ विद्या का भाव है, बुध भगवान विष्णु का अवतार है और बृहस्पति आत्मज्ञान एवं विद्धता का कारक है।

राहु की महादशा (1934 से 1952 तक):

दशानाथ राहु, उच्च का होकर सप्तम भाव अर्थात केन्द्र में वृषभ राशि में स्थित है। यह भाव समाधि का भाव भी कहलाता है। राहु का राशीश शुक्र, नवम भाव अर्थात धर्म भाव में बैठा है। राहु, पंचमेश बृहस्पति से भी दृष्ट है अतः धर्म के क्षेत्र में राजयोग बना रहा है। 10 सिप्तम्बर, 1946 को जब वह दार्जिलिंग जाने के लिए रेलगाडी में यात्रा कर रहीं थी तो उन्हें भगवान का सन्देश प्राप्त हुआ कि भगवान की सेवा हेतु निराश्रय और निर्धन लोगों की सेवा करो। उस समय उनकी राहु-शुक्र की दशा चल रही थी जो उनके जीवन में आने वाले एक बहुत बड़े परिवर्तन की दशा सिद्ध हुई। शुक्र, आत्मत्याग के भाव द्वादश का स्वामी होकर, धर्म के भाव नवम में बैठा है। राहु, विदेशी या मलेच्छ या चण्डाल है और वह ऐसे ही लोगों के बीच में सहायता एवं प्रेम देने के लिए गई। शुक्र, प्रेम का भी कारक है और अशुभ प्रभाव से मुक्त है जिसका अर्थ दैवीय प्रेम भी है। शुक्र का राशीश चन्द्रमा, शनि के साथ षष्टम भाव में युति करके रोग एवं रोगियों के लिए सन्यास योग बना रहा है।

राहु-चन्द्रमाः इस दशा में इन्होने उस करुणा के अपने उद्देश्य हेतु उस संस्था की नींव रखी जिसने उन्हे विश्व में लोकप्रियता दी। अन्तर्दशानाथ चन्द्रमा, नवमेश

होकर धर्म के भाव का स्वामी है और संस्थाओं और भू-सम्पति के भावेश शनि के साथ युति कर रहा है। चन्द्रमा, दूसरों की भलाई और मानवता के प्रेम का भी कारक है।

शनि की महादशा (1968 से 1987 तक):

पराशर के अनुसार षष्टम भाव में स्थित नीच का ग्रह राजयोग प्रदान करता है। इस कुण्डली में तृतीयेश भी होने के कारण, षष्टम भाव में स्थित शनि विपरीत राजयोग भी बना रहा है। इसी दशाकाल में इन्हे नोबल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस पुरस्कार को पाने वाली ये छठी महिला थी। भारत सरकार ने भी 1980 में इन्हें जवाहर लाल नेहरु पुरस्कार और भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया था। दशा के अन्तिम काल, 1985 में अमेरिका के राष्ट्रपति रीगन ने इन्हें उच्चतम नागरिक पुरस्कार, स्वतन्त्रता के मेडल से सम्मानित किया।

बुध की महादशा (1987 से 2004 तक):

इस दशा के काल तक मदर टेरेसा वृद्धावस्था में पहुंच चुकी थी और एक न एक दिन उनको अपना शरीर त्यागना ही था। लेकिन उनकी मृत्यु भी उनके जीवन की भान्ति ही सम्मानीय और प्रतिष्ठित मृत्यु थी। उनकी मृत्यु के समय बुध -राहु-बृहस्पति की दशा चलायमान थी। अन्तर्दशानाथ राहु सप्तम भाव में बैठा है और प्रत्यन्तर दशानाथ बृहस्पति, द्वितीयेश होकर मारक बन रहे हैं। मदर टेरेसा को अन्तिम श्रद्धान्जलि देते हुए फ्रान्स के राष्ट्रपति ने कहा, "आज की शाम इस संसार में प्यार, करुणा और रोशनी कम हो गई है।" मदर टेरेसा के प्रति यह सबसे श्रेष्ठ श्रद्धान्जलि थी और इससे अधिक श्रेष्ठ अभिव्यक्ति नहीं हो सकती है।

शुक्र और शनि की दशा/अन्तर्दशा के विशेष परिणामः

उत्तरकालामृत के मतानुसार यदि शनि और शुक्र, दोनों ही बली हों और योगकारक बनते हों तो इनकी दशा और अन्तर्दशा अत्यधिक अशुभ होती है। बली का अर्थ उच्च, स्वग्रही, वर्गोत्तम आदि है। ऐसी स्थिति में जातक चाहे कुबेर की भान्ति धनवान क्यों न हो, एक भिखारी के समान हो जाता है। लेकिन यदि एक बली हो और दूसरा निर्बली हो तो बली ग्रह के बल एवं स्वभावानुसार जातक अच्छे परिणामों का आनन्द लेता है।

यदि दोनों ग्रह ही निर्बली होकर 6ठे, 8वें, 12वें भाव में हों या दोनों में से एक 6ठे, 8वें, 12वें भाव में हो या इन भावों के स्वामी कि युति में हो, या ये स्वयं ही इन भावों का स्वामित्व रखते हों तो इनकी दशा/अन्तर्दशा विशेष रूप से शुभ फलदायक होगी। उत्तरकालामृत में कालीदास ने शनि और शुक्र की दशा/अन्तर्दशा के जो परिणाम दिए हैं उसके अनुसार यदि ये एक-दूसरे से 6ठे, 8वें, 12वें भाव में हों या 6ठे, 8वें, 12वें भाव में युति करें अथवा एक या दोनों ही नीच के हों या कुण्डली के अशुभ ग्रह हों तो एक की दशा में दूसरे की अन्तर्दशा का समय अत्याधिक शुभ होता है।

उदाहरण कुण्डली:

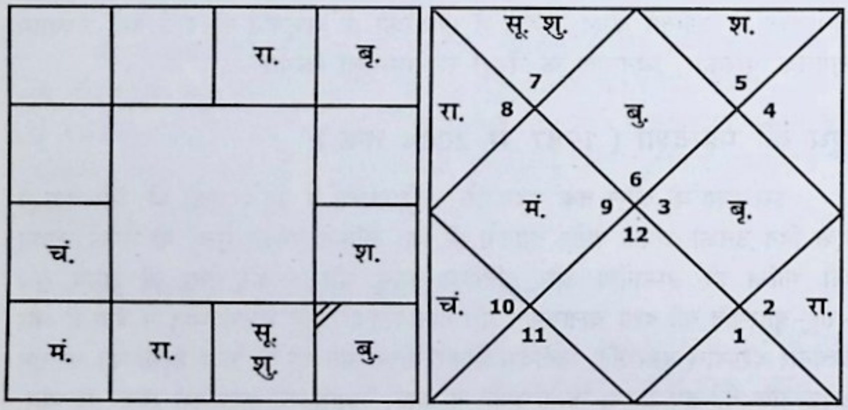

यह कुण्डली ऐसे जातक की है जिसने मंगल की महादशा में करोड़ों रुपयों की अपनी भू-सम्पति की हानि उठाई। मंगल, अष्टमेश होकर कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित है और चतुर्थेश एवं धन-सम्पति के कारक बृहस्पति को दृष्ट करता है। धनेश शुक्र, अस्त होकर द्वादशेश सूर्य से युति करके द्वितीय भाव में ही स्थित है और द्वादश भाव में स्थित षष्टेश शनि से दृष्ट है। बृहस्पति, इस कुण्डली का **बाधक** है और केन्द्राधिपति दोष से पीड़ित है। यह मंगल की दृष्टि से भी पीड़ित है अतः द्वितीय भाव पर इसकी दृष्टि अधिक सहायक सिद्ध नहीं हुई। यह जातक एक धनवाल व्यक्ति था क्योंकि एकादश भाव, एकादशेश चन्द्रमा से दृष्ट है।

अध्याय 17

योगिनी दशा

उत्तर भारत में प्रचलित दशाओं में योगिनी दशा प्रमुख है। प्राचीन संस्कारों में ढले कुछ ज्योतिषाचार्य केवल इसी दशा का ही प्रयोग करते हैं। यह भी देखा गया है कि इस दशा के आधार पर ही वह कई सटीक भविष्यवाणी करते हैं। बृहत्पाराशर के अनुसार, योगिनी दशा का रहस्य भगवान शिव ने पार्वती जी को उजागर किया था। कुल आठ प्रकार की योगिनियां होती हैं जिनका निम्नलिखित प्रकार से एक निश्चित क्रम होता है। सभी आठ योगिनियों का कुल दशाकाल 36 वर्ष का होता है और 36 वर्ष का एक चक्र पूर्ण होने के उपरान्त पुनः उसी क्रम में द्वितीय चक्र प्रारम्भ होता है और यह बार-बार होता रहता है।

क्र.सं.	योगिनी	स्वामी ग्रह	दशाकाल
1	मंगला	चन्द्रमा	1 वर्ष
2	पिंगला	सूर्य	2 वर्ष
3	धान्या	बृहस्पति	3 वर्ष
4	भ्रामरी	मंगल	4 वर्ष
5	भद्रिका	बुध	5 वर्ष
6	उल्का	शनि	6 वर्ष
7	सिद्धा	शुक्र	7 वर्ष
8	संकटा	राहु	8 वर्ष

योगिनी दशा भी विंशोत्तरी दशा की भान्ति, नक्षत्र पर आधारित दशा है। प्रत्येक योगिनी की महादशा में प्रथम अन्तर्दशा उसी योगिनी की होती है और क्रमशः उसके बाद की योगिनियों की अन्तर्दशायें एक निश्चित समय के बाद आती रहती हैं।

योगिनी दशा की गणना:

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस नक्षत्र में हो उसकी क्रम संख्या ज्ञात करें। उसमें 3 जोडकर 8 से भाग करें (8 योगिनियों को ही 27 नक्षत्रों में बांटा गया है, यदि 27 को 8 से भाग दें तो 3 शेष बचता है)। शेषफल, तालिका के अनुसार योगिनी के क्रम को इंगित करेगा।

आइये इस गणना को एक उदाहरण से समझते हैं। मानो चन्द्रमा, तुला राशि में 16 अंश 40 मिनट का है तो चन्द्रमा के भोगांश से स्पष्ट है कि चन्द्रमा स्वाति नक्षत्र में है, जिसकी क्रम संख्या 15 है। इसमें 3 योग करने से 18 आता है और 18 को 8 से भाग देने पर शेषफल 2 बचता है। अत: जन्म के समय 2री योगिनी की दशा होगी जो पिंगला है। इसी गणना को अच्छी तरह समझने के लिए मदर टेरेसा की कुण्डली का प्रयोग करते हैं।

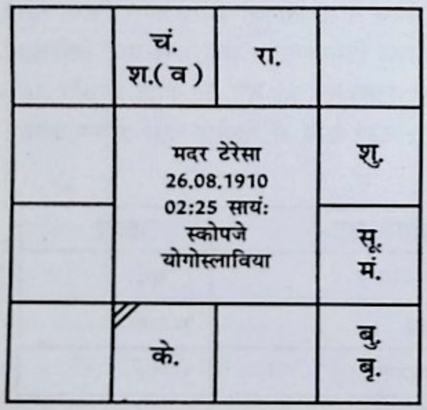

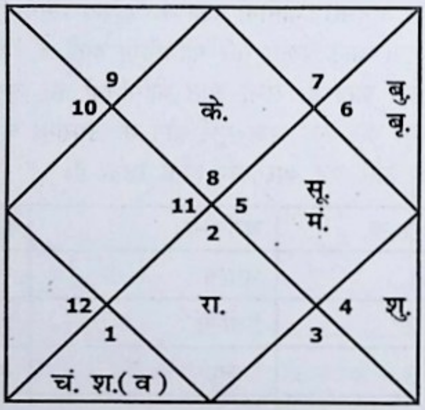

मदर टेरेसा की कुण्डली में चन्द्रमा मेष राशि में 26 अंश 00 मिनट का है। अत: भरणी नक्षत्र में है जिसकी क्रम संख्या 2 है। इसमें 3 जोड़ने के बाद 5 आता है। चूंकि यह संख्या 8 से कम है, अत: इसे भाग देने की आवश्यकता नहीं है और इसे 5 ही लिया जाएगा। जिसका अभिप्राय यह होगा कि मदर टेरेसा को जन्म के समय 5वीं योगिनी, भद्रिका की दशा मिली।

चन्द्रमा का भोगांश	राशि	योगिनी	राशि	योगिनी	राशि	योगिनी
00°00' - 13°20'		भ्रामरी		भद्रिका		उल्का
13°20' - 26°40'	मेष	भद्रिका	सिंह	उल्का	धनु	सिद्धा
26°40' - 30°00'		उल्का		सिद्धा		संकटा
00°00' - 10°00'		उल्का		सिद्धा		संकटा
10°00' - 23°20'	वृषभ	सिद्धा	कन्या	संकटा	मकर	मंगला
23°20' - 30°00		संकटा		मंगला		पिंगला
00°00' - 06°40'		संकटा		मंगला		पिंगला
06° 40' - 20° 00'	मिथुन	मंगला	तुला	पिंगला	कुंभ	धान्या
20° 00' - 30° 00'		पिंगला		धान्या		भ्रामरी
00° 00' - 03° 20'		पिंगला		धान्या		भ्रामरी
03°20' - 16°40'	कर्क	धान्या	वृश्चिक	भ्रामरी	मीन	भद्रिका
16°40' - 30°00'		भ्रामरी		भद्रिका		उल्का

दशा और अन्तर्दशा की गणनाः

मदर टेरेसा की कुण्डली में चन्द्रमा मेष राशि में 26 अंश का है जो भरणी नक्षत्र में आता है। प्रत्येक नक्षत्र की भान्ति ही भरणी नक्षत्र का कुल विस्तार 13 अंश 20 मिनट का होता है जो मेष राशि में 13 अंश 20 मिनट से प्रारम्भ होकर 26 अंश 40 मिनट तक होता है, अर्थात चन्द्रमा को अभी इस नक्षत्र में 40 मिनट का विस्तार पार करना शेष है। भद्रिका का कुल दशाकाल 5 वर्ष है और अब यह ज्ञात करना है कि नक्षत्र के भोगांश के आधार पर जन्म के समय 5 वर्ष के कुल दशाकाल में से कितना समय शेष मिला।

अर्थात 13 अंश 20 मिनट अथवा 800 मिनट में दशा मिलती है = 5 वर्ष या 1800 दिन (360 x 5)

1 मिनट में दशा मिलेगी = 1800 ÷ 800

40 मिनट में दशा मिलेगी = 1800 ÷ 800 x 40

= 90 दिन

अतः इन्हें जन्म के समय भद्रिका योगिनी की शेष दशा 90 दिन की मिली। उसके बाद क्रम से सभी योगिनियां की निश्चित वर्षों के दशा आयेगी।

इसी प्रकार से विभिन्न नक्षत्रों में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म के समय प्राप्त होने वाली सम्बन्धित योगिनी की दशा को ज्ञात किया जा सकता है।

प्रत्येक योगिनी की दशा में उसी योगिनी की अन्तर्दशा आती है और फिर क्रम से दूसरी योगिनियों की अन्तर्दशा आती है। किसी भी योगिनी की अन्तर्दशा का समय ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित नियम का प्रयोग किया जा सकता है।

नियम = दशा x अन्तर्दशा x 360 दिन

36

प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थ मानसागरी के अनुसार विभिन्न योगिनियों की दशा के परिणाम इस प्रकार से हैं:

1. **मंगला (चन्द्रमा):** मंगला का अर्थ है देवी पार्वती, पवित्र, पतिव्रता स्त्री, एक त्यौहार। मंगला का अर्थ शुभ अथवा कल्याणकारी भी होता है और यह ऐसे फलों की ओर अग्रसर करती है जो आध्यात्मिकता के दृष्टिकोण से अधिक शुभ होते हैं।

   परिणामः धर्म के प्रति रुझान, शुभ धर्म में प्रवृत, पवित्र एवं धार्मिक व्यक्तियों से मिलन, कर्तव्य के प्रति निष्ठावान, अनेक प्रकार के भोग अर्थात सभी प्रकार की सुख-सुविधायें, प्रसिद्धि, धनवान, शासक से वाहन की प्राप्ति, स्त्रियों से सम्वन्धों में मधुरता, ज्ञान की प्राप्ति और मंगलकारी घटनाओं का उत्सव आदि।

2. **पिंगला (सूर्य):** पिंगला के आग, भगवान शिव का सेवक, रक्तवर्ण, भूरा आदि कई प्रर्यायवाची हैं। यह शब्द हटयोग में भी प्रयोग होता है। दो मुख्य नाड़ियों, इडा और पिंगला में से एक है जो सूर्य नाड़ी भी कहलाती है।

   परिणामः हृदय रोग (यदि कुण्डली इंगित करे), चिन्तायें, दुष्ट लोगों की संगति के कारण शारीरिक एवं मानसिक व्याधि, अपूर्ण इच्छायें, अनैतिक सम्वन्ध और धन-सम्पति, प्रेम एवं प्रसिद्धि की हानि। रक्त-विकार, ज्वर, पित्त, शूल, मलीनता। सन्तान, स्त्री एवं सेवको के मध्य सम्मान का नष्ट होना।

3. **धान्या (वृहस्पति):** इसका अर्थ खाद्य पदार्थो की प्रचुरता है, जो समृद्धता को दर्शाता है। इसका अर्थ शुभ, खुशी, धनवान और स्वस्थ भी है।'

परिणामः धन-सम्पति का आगमन, व्यापार में लाभ, भोगों की प्राप्ति, समृद्धि, सुखी वैवाहिक जीवन, विद्या-लाभ, शत्रुओं का दमन, प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा और शासन से सम्मान की प्राप्ति तथा तीर्थ यात्रायें एवं भगवान पर श्रद्धा।

4. **भ्रामरी (मंगल):** इसका अर्थ है घूमने वाला, भटकने वाला, परेशानियां, भ्रम और भूल है।

परिणामः उद्देश्यहीन घूमना, घर से दूर होना, व्याकुलता, मृगतृष्णा की अपूर्ति बनी रहना, सामाजिक स्थिति की हानि और उसे पुनः प्राप्त करने में अत्याधिक कठिनाइयों का सामना करना। राजा, अपनी राजधानी को ही खो देता है, उद्देश्यहीन भटकता है और कष्टपूर्वक समय यापन करता है।

5. **भद्रिका (बुध):** सभ्य, सज्जनतापूर्वक, अच्छा कर्म, मंगलकारी, अतिसुन्दर।

परिणामः घर में सुख, मित्रों से सौहार्द्र, धार्मिक रुप से शुद्ध व्यक्तियों एवं राजा से भी मिलन, व्यापार में मन लगे एवं लाभ हो, सभी प्रकार की सुख-सुविधायें, मंगल कार्यों का होना और आमोद-प्रमोद रहता है।

6. **उल्का (शनि):** आकाश की आग, उल्कापिण्ड, खतरा।

परिणामः लोकप्रियता, धन-सम्पति एवं वाहनों की हानि होती है, भार्या, सन्तान और सेवको से बैर होता है तथा शासक एवं उसके सेवकों से परेशानियां उत्पन्न होती है। नौकरी की हानि, दण्ड, परिवार के लोगों से सम्बन्धों में खटास तथा हृदय, पेट, कान, दान्त, पांव आदि से सम्बन्धित रोग उत्पन्न होते हैं। ऐसी सभी हानियां जो उल्कापिण्ड के गिरने से हो सकती हैं, इस दशा में प्राप्त होती हैं।

7. **सिद्धा (शुक्र):** दक्षता, पवित्र, इच्छाओं की पूर्ति।

परिणामः जातक को सर्व सिद्धि होती है। सुन्दर भोग, सम्मान, धन-सम्पति की प्राप्ति, राजा के समान प्रताप, श्रेष्ठ धर्म, सद्ज्ञान, व्यापार में लाभ, वस्त्र, भूषणादि, सफलता और शासक से वैभव एवं राज्यपद आदि प्राप्त होते हैं।

8. **संकटा (राहु):** कष्टपूर्ण, भय, कठिनाई आदि इसके प्रर्यायवाची अर्थ हैं।

परिणामः राज्य भ्रष्ट, पद एवं धन-सम्पति की हानि, तृष्णावृद्धि, मोह, शत्रु-भय, पुत्र एवं भार्या से वियोग या विरोध, अग्निदाह और घर, महल, नगर, ग्राम, गोष्ठादि की हानि। धातु-विकृति से शरीर में क्षयादि रोग, शरीर में कृषता ओर जन्म से मरण पर्यन्त दुःख ही रहता है।

विभिन्न योगिनियों की दशा में अन्तर्दशाओं के परिणामः

मंगला की महादशाः

मंगला-मंगलाः मित्र, पुत्र, स्त्री, स्वास्थ्य और व्यापार वृद्धि से सुख और मंगल उत्सव।

मंगला-पिगंलाः सगे-सम्बन्धियों से कलह, चित्त में उद्वेग और विभिन्न प्रकार के दु:ख।

मंगला-धान्याः पशुधन, वाहन आदि से सुख, सन्तान एवं मित्रों से लाभ एवं अत्यन्त सुख तथा विविध प्रकार के भोग-विलासों की प्राप्ति।

मंगला-भ्रामरीः स्त्री एवं मित्रों से कलह, प्रवास, धन-सम्पति की हानि लेकिन राजा अथवा उच्च अधिकार सम्पन्न व्यक्तियों से परिचय।

मंगला-भद्रिकाः धन-सम्पति की प्राप्ति, भार्या एवं सन्तान से अच्छे सम्बन्ध, स्वजनों से प्रीति, आमोद-प्रमोद और श्रेष्ठ ज्ञान की प्राप्ति।

मंगला-उल्काः धन की हानि, पुत्र के विषय में उद्वेग, स्त्री एवं मित्र को पीड़ा और शासक से दण्ड का भय।

मंगला-सिद्धाः सन्तान, मित्र एवं भार्या से सुख, विविध प्रकार के भोग-विलास और भाई एवं मित्रों से सहयोग की प्राप्ति हो।

मंगला-संकटाः जल, अग्नि, चोर एवं राजा द्वारा पीड़ा प्राप्त हो, कलह बढ़े और मृत्यु तुल्य कष्ट हो।

पिंगला की महादशाः

पिगंला-पिगंलाः रोग, शोक, व्यसन, मन में उद्वेग, सन्ताप और क्लेश हो।

पिगंला-धान्याः धन-सम्पति, सन्तान एवं भोग-विलास की प्राप्ति हो तथा कामना-पूर्ति, वन में भ्रमण एवं स्त्री से सुख की प्राप्ति हो।

पिगंला-भ्रामरीः देश-त्याग अर्थात विदेश में वास, धन हानि, स्वजनों से कलह और घर का नाश हो।

पिगंला-भद्रिकाः सर्वथा मंगल, स्थानान्तरण एवं पुत्रादि से कीर्ति तथा व्यापार में धन लाभ हो।

पिगंला-उल्काः मित्रों एवं बन्धुओं से विग्रह तथा राजा या चोरों के द्वारा दुःख की प्राप्ति हो।

पिगंला-सिद्धाः मंत्र-यत्रों के प्रयोग में सिद्धि, धन-धान्य की प्राप्ति लेकिन कास, श्वास एवं प्रमेह रोग उत्पन्न होने से पीड़ा होती है।

पिगंला-संकटाः धन हानि, रोग का भय, शत्रुओं से विरोध तथा राजभ्य प्राप्त हो।

पिगंला-मंगलाः अनेक प्रकार की व्याधियां, शोक, मोह, भय एवं विपत्ति हो और आयु का ह्रास हो।

धान्या की महादशाः

धान्या-धान्याः भूमि, धन-धान्य की प्राप्ति हो, राजा की ओर से, परिवार जनों से और सन्तान एवं भार्या से सुख की प्राप्ति हो।

धान्या-भ्रामरीः भ्रमण के कारण अत्यन्त क्लेश एवं हानि, धनहानि, मित्रों से मतभेद और घर से दूरी हो।

धान्या-भद्रिकाः सौभाग्य, मित्रों एवं स्वजनों से सुख एवं प्रसन्नता, उच्चपद की प्राप्ति, शासन से वाहन की प्राप्ति और परिधान एवं भू-सम्पति का लाभ हो।

धान्या-उल्काः विविध प्रकार के कष्ट, उत्पात, हृदय रोग, धन-सम्पति की हानि।

धान्या-सिद्धाः सन्तान एवं मित्रादि से खुशियां, विविध प्रकार के भोग-विलास, नवीन मित्रता आदि।

धान्या-संकटाः बन्धन की प्राप्ति हो, कार्य अथवा व्यापार में मन न लगना, व्याकुलता।

धान्या-मंगलाः अच्छे कार्य हों, व्यापार-वृद्धि, राज-सम्मान एवं उत्साह और धन-सम्पति, भार्या एवं सन्तान से खुशियां प्राप्त हों।

धान्या-पिगंला: धन-सम्पति एवं भू-सम्पति की हानि, मानसिक तनाव, सिरदर्द और शासन से भय प्राप्त होता है।

भ्रामरी की महादशा:

भ्रामरी-भ्रामरी: भय, मोह, विषपान से संकट, अपने स्थान पर दुःख, जल से भय तथा परिजनों, शत्रुओं एवं दुष्टों से पीड़ा की प्राप्ति हो।

भ्रामरी-भद्रिका: विदेश यात्रा एवं मित्रों से पुर्नमिलन, विद्या लाभ और राज्य सम्मान की प्राप्ति हो।

भ्रामरी-उल्का: ज्वर, शूल, रक्त विकार से पीड़ा, धनहानि, पुत्र, भार्या एवं स्वयं के शरीर में भी पीड़ा हो।

भ्रामरी-सिद्धा: सभी कार्यों में सिद्धि हो, इच्छाओं की पूर्ति, स्वस्थ शरीर, विवेक, बुद्धि, विद्या एवं पर्याप्त धन की प्राप्ति हो।

भ्रामरी-संकटा: मृत्यु तुल्य कष्ट, शोक, मोह, भ्रमण, रोग, राजभय, चोर-भय लेकिन ख्याति की प्राप्ति हो।

भ्रामरी-मंगला: विविध प्रकार के भोग-विलास से सुख, राजा की सेवा से लाभ।

भ्रामरी-पिंगला: गुदा, पांव एवं मुख में रोग हो और पशु या जंगली जानवर से चोट का भय होता है।

भ्रामरी-धान्या: धन-धान्य, वाहन एवं भोग-विलास की प्राप्ति होती है, राजा से प्रीति लेकिन भील या निम्न स्तर के जातकों से शत्रुता के कारण हानि हो सकती है।

भद्रिका की महादशा:

भद्रिका-भद्रिका: यश, कल्याण, वाहन की प्राप्ति, व्यसनों का नाश किन्तु पुण्यमार्ग में बाधा आती है।

भद्रिका-उल्का: विवाद के कारण रोग, स्थान भ्रंश, धनहानि और उद्वेग।

भद्रिका-सिद्धा: ब्राह्मणो एवं देवताओं के पूजन में रुचि, पुत्र, मित्र, स्त्री एवं स्वयं स्वस्थ हो, अच्छा समय और उत्सव का वातावरण।

भद्रिका-संकटाः संकट एवं दुःख प्राप्त हो, मोह, शोक, भ्रान्ति, व्यसन, देशत्यागादि फल की संभावना होती है।

भद्रिका-मंगलाः समाज में सम्मान, धन-सम्पति, भू-सम्पति, व्यापार में लाभ, पुत्र से सुख और पितृवंश की वृद्धि होती है।

भद्रिका-पिंगलाः पित्तजन्य रोग से पीड़ा, कृषि, वाणिज्य एवं भूमि का लाभ तथा वृद्धों के आश्रय में अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

भद्रिका-धान्याः मित्र, भार्या एवं सन्तान से सुख, उत्सव और आमोद-प्रमोद।

भद्रिका-भ्रामरीः रक्त विकार, अग्नि, यम एवं बिजली से भय, भू-सम्पति का नाश और बान्धुवों से सुख की प्राप्ति होती है।

उल्का की महादशाः

उल्का-उल्काः शत्रुओं के कारण धनहानि, अत्यन्त व्यथा और राज्य नष्ट होने का भय।

उल्का-सिद्धाः सिद्धा अपने फल त्यागकर उल्का के ही फल देगी। विदेश गमन और सन्ताप, दुःखादि अशुभ फल।

उल्का-संकटाः मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट, भार्या, मित्र, पुत्र, सेवक सहित कुल नाश का भय।

उल्का-मंगलाः मोह उत्पन्न होता है, धन, मित्र एवं विवेक की प्राप्ति और स्त्री से सुख प्राप्त होता है।

उल्का-पिंगलाः कुष्ठ, कण्ठ एवं शिररोग से पीड़ा और उपचार के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है।

उल्का-धान्याः लाभ या सुख न मिले, किंचित वात-व्याधि, कफादि रोग एवं स्वजनों से कलह।

उल्का-भ्रामरीः मन में उद्वेग हो, मोह, भ्रम, शत्रुओं से भय और अनेक प्रकार के क्लेश हों।

उल्का-भद्रिकाः कल्याण देने वाली दशा। यद्यपि आभूषण-वस्त्रादि की हानि हो लेकिन मित्रों एवं स्वजनों से सुख की प्राप्ति होती है।

सिद्धा की महादशाः

सिद्धा-सिद्धाः सब कार्यों में सिद्धि, धनलाभ, ऐश्वर्य की वृद्धि, स्वजनों एंव सन्तान से सुख।

सिद्धा-संकटाः बन्धन, राजभय, चोर भय, घर भय, धन हानि और विदेश गमन संभव होता है।

सिद्धा-मंगलाः धन-सम्पति, भोग-विलास, स्वजनों से सुख, शासक से धन लाभ और अनेक प्रकार से कार्यों की सिर्द्धि।

सिद्धा-पिंगलाः मानवृद्धि, क्रोध, अग्निदाह, स्वजनों से वैर और अवैध आय।

सिद्धा-धान्याः पूर्व-पुण्यों का उदय होता है और मन में उत्पन्न संकल्प पूरे होते हैं।

सिद्धा-भ्रामरीः अपने स्थान का त्याग, व्यसन वृद्धि, शासन से भय।

सिद्धा-भद्रिकाः मंगलकारी उत्सव, विविध भोग, विद्या एवं गुणों की प्राप्ति से सौख्य लाभ हो। यह दशा सदैव ही कल्याण एवं सिद्धि देने वाली होती है।

सिद्धा-उल्काः धन-धान्य का नाश, क्लेश, शोक, व्यसनवृद्धि, गुह्य रोग और मोह उत्पन्न होता है।

संकटा की महादशाः

संकटा-संकटाः मृत्यु, शासन से दण्ड, देशत्याग अथवा धननाश संभावित होता है।

संकटा-मंगलाः भार्या को शिरोरोग, विविध रोग, व्याधि एवं व्यसनों की प्राप्तिं होती है।

संकटा-पिंगलाः अकस्मात् हानि, पुत्रशोक, शत्रु से भय और स्वजनों से वियोग होता है।

संकटा-धान्याः गुल्म, उदर रोग जन्य पीड़ा, पुत्र से अत्यन्त सुख तथा स्वदेश एवं समाज में कीर्ति होती है।

संकटा-भ्रामरीः पृथ्वी पर पर्याप्त भ्रमण, देश-गांव-घर नष्ट हो जाय और शत्रु भय उत्पन्न होता हैं।

संकटा-भद्रिका: विविध विद्या, अलंकार एवं वस्त्रादि की प्राप्ति, महान यश प्राप्त होता है लेकिन पराये व्यक्तियों अथवा शत्रुओं से झगड़ा होता है।

संकटा-उल्का: धन-सम्पति का नाश, मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट, स्वजनों को पीड़ा हो।

संकटा-सिद्धा: विविध कार्यों के करने से उत्साह, अपने शरीर की पुष्टि के कारण सुखादि की प्राप्ति और मन प्रसन्न रहे।

उदाहरण: जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के अक्टूबर-दिसंबर, 1999 के संस्करण से उद्धृत।

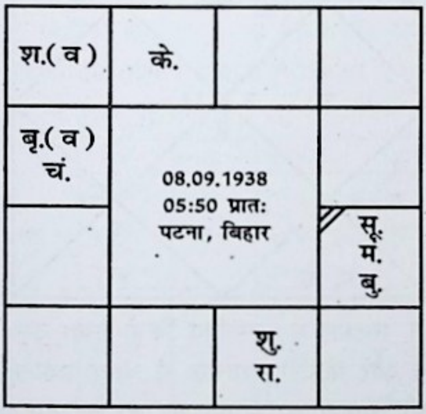

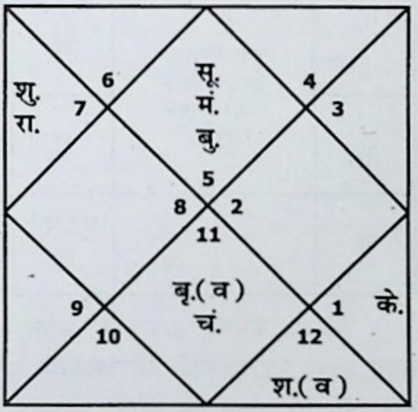

इस जातक को जन्म के समय, 10 माह एवं 17 दिनों की पिंगला की महादशा मिली जो 25.07.1939 को समाप्त हुई। इसके बाद क्रमशः अन्य दशायें आई। सन् 1995 में इस जातक ने अपने जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त की। उस समय इसकी सिद्धा की महादशा में संकटा की अन्तर्दशा चल रही थी।

सिद्धा की महादशा में सभी इच्छाओं की पूर्ति, व्यवसाय में उन्नति, अच्छी विद्या, प्रसिद्धि, धन-सम्पति, प्रतिष्ठा, शासन से सम्मान आदि शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। सिद्धा का स्वामी शुक्र, अपनी मूलत्रिकोण राशि का होकर तृतीय भाव में स्थित है और पदप्राप्ति के भाव सप्तम में बैठे पंचमेश बृहस्पति से दृष्ट है। शुक्र, कुण्डली का दशमेश भी है। बृहस्पति स्वयं भी गजकेसरी योग में संलिप्त है और पंचमेश होकर सप्तम भाव से दशमेश को दृष्ट करके बली राजयोग बना रहा है।

विंशोत्तरी दशाः उस समय जातक की बुध/बुध/सूर्य की दशा चल रही थी। बुध, द्वितीयेश एवं एकादशेश है और लग्नेश सूर्य एवं योगकारक मंगल के साथ लग्न में ही स्थित है तथा गजकेसरी में संलिप्त बृहस्पति से दृष्ट है। बृहस्पति और शनि में राशि परिवर्तन भी है।

यह दशा जातक के लिए अत्यन्त वृद्धक सिद्ध हुई।

अन्तर्दशा के परिणामः उदाहरण - लता मंगेशकर

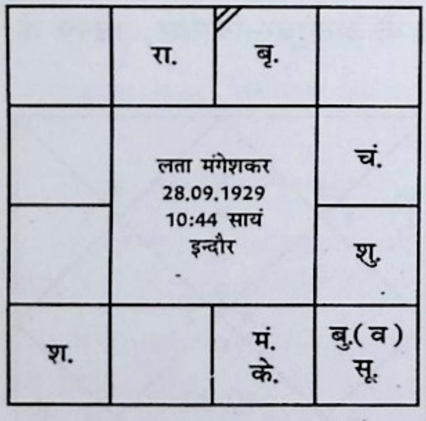

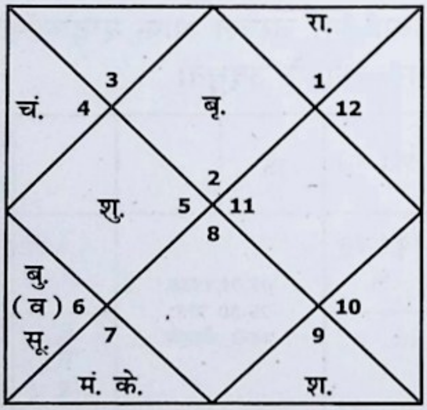

इन्हें 26 जनवरी, 2001 को भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उस समय इनकी राहु/बृहस्पति की विंशोत्तरी दशा और योगिनी दशाचक्र में धान्या/संकटा चल रही थी। धान्या का स्वामी बृहस्पति और संकटा का स्वामी राहु है। बृहस्पति, चन्द्रमा से एकादश भाव में और राहु दशम भाव में है।

अध्याय 18

नक्षत्र

हमारा भचक्र एक अण्डाकार रुप में है जिसके कुल 360 अंशों के विस्तार में 27 नक्षत्र स्थित हैं। प्रत्येक नक्षत्र का अपना विस्तार 13 अंश 20 मिनट का है। प्रत्येक नक्षत्र को 4 भागों में बांटा गया है जिसे चरण, पद अथवा एक नवांश भी कहा जाता है क्योंकि एक चरण का विस्तार 3 अंश 20 मिनट का होता है। चरणबद्ध रुप से नक्षत्रों के विभिन्न राशियों में विस्तार एवं उनके स्वामी ग्रहों सहित, आगे तालिका बद्ध करके दिखाया गया है।

राशि	नक्षत्र	राशि	नक्षत्र	राशि	नक्षत्र	चरण	विस्तार	स्वामी
मेष	अश्विनी	सिंह	मघा	धनु	मूला	4	00°00'-13°20'	केतु
	भरणी		पूर्वाफाल्गुनी		पूर्वाषाढ़ा	4	13°20'-26°40'	शुक्र
	कृत्तिका		उत्तराफाल्गुनी		उत्तराषाढ़ा	1	26°40'-30°00'	सूर्य
वृषभ	कृत्तिका	कन्या	उत्तराफाल्गुनी	मकर	उत्तराषाढ़ा	3	00°00'-10°00'	सूर्य
	रोहिणी		हस्ता		श्रवण	4	10°00'-23°20'	चन्द्रमा
	मृगशिरा		चित्रा		धनिष्ठा	2	23°20'-30°00'	मंगल
मिथुन	मृगशिरा	तुला	चित्रा	कुंभ	धनिष्ठा	2	00°00'-06°40'	मंगल
	आर्द्रा		स्वाति		शतभिषा	4	06°40'-20°00'	राहु
	पुनर्वसु		विशाखा		पूर्वाभाद्रपद	3	20°00'-30°00'	बृहस्पति
कर्क	पुनर्वसु	वृश्चिक	विशाखा	मीन	पूर्वाभाद्रपद	1	00°00'-03°20'	बृहस्पति
	पुष्य		अनुराधा		उत्तराभाद्रपद	4	03°20'-16°40'	शनि
	आश्लेषा		ज्येष्ठा		रेवती	4	16°40'-30°00'	बुध

यह सदैव याद रखना चाहिए कि यदि हम नौ-नौ नक्षत्रों के तीन आवृति बनाते हैं तो प्रत्येक नौ नक्षत्रों के बाद इनके स्वामियों की पुनरावृति होती है। उदाहरणतः 1ले, 10वें और 19वें नक्षत्र का स्वामी केतु होता है। इसी प्रकार 2रे, 11वें एवं 20वें नक्षत्र का स्वामी शुक्र होता है, 3रे, 12वें एवं 21वें नक्षत्र का सूर्य, 4थे, 13वें एवं 22वें का चन्द्रमा, 5वें, 14वें एवं 23वें का मंगल, 6वें, 15वें एवं 24वें का राहु, 7वें,

16वें एवं 25वें का बृहस्पति, 8वें, 17वें एवं 26वें का शनि और 9वें, 18वें एवं 27वें नक्षत्र का स्वामी बुध होता है।

अग्नि तत्व राशियों अर्थात मेष, सिंह एवं धनु में केतु एवं शुक्र के नक्षत्रों के 4रों चरण और सूर्य के नक्षत्रों का प्रथम एक चरण होता है।

पृथ्वी तत्व राशियों अर्थात वृषभ, कन्या एवं मकर में सूर्य के नक्षत्रों के अन्तिम तीन चरण, चन्द्रमा के नक्षत्रों के चारों चरण और मंगल के नक्षत्रों के प्रथम दो चरण होते हैं।

वायु तत्व राशियों अर्थात मिथुन, तुला एवं कुंभ में मंगल के नक्षत्रों के अन्तिम दो चरण, राहु के नक्षत्रों के चारों चरण और बृहस्पति के नक्षत्रों के प्रथम तीन चरण होते हैं।

जल तत्व राशियों अर्थात कर्क, वृश्चिक एवं मीन में बृहस्पति के नक्षत्रों का अन्तिम एक चरण और शनि एवं बुध के नक्षत्रों के चारों चरण होते हैं।

नक्षत्र, कुण्डली का एक महत्वपूर्ण अंग है और इनके महत्व को इस बात से ही जाना जा सकता है कि पराशरी दशाचक्र, जन्म के समय चन्द्रमा द्वारा गृहीत नक्षत्र पर ही आधारित है। नक्षत्रों के विषय में वेद, पुराण और महाभारत में उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त ज्योतिषशास्त्र के शास्त्रीय ग्रन्थो में, विशेषकर वरामिहिर के वृहद् जातक में कहीं-कहीं इनका उल्लेख मिलता है। नक्षत्र, शोध का एक ऐसा विषय है जो अपने आप में ज्योतिष सम्बन्धित कई गहन रहस्यों का छुपाये हुए है। मुहूर्त चयन के लिए भी नक्षत्रों का ज्ञान होना आवश्यक है।

अभिजित नक्षत्रः

कभी-कभी हम 28 नक्षत्रों का प्रयोग करते हैं। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के अन्तिम पद और श्रवण नक्षत्र की प्रथम 4 घटी (श्रवण नक्षत्र का 1/15वां भाग) अभिजित नक्षत्र कहलाता है। इस प्रकार मकर राशि में 6अंश 40 कला से 10 अंश 53 कला 20 विकला (मकर 6°40' से मकर 10°53'20")तक अभिजित नक्षत्र का मान होता है।

जन्म नक्षत्रः

जैसा कि नाम से स्पष्ट हो जाता है कि किसी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में स्थित होता है वह नक्षत्र उस जातक का जन्म नक्षत्र कहलाता है।

जातक को अपने जीवन में मिलने वाली दशाओं-अन्तर्दशाओं के अतिरिक्त कई अन्य शुभाशुभ परिणामों का उत्तरदायित्व भी जन्म नक्षत्र के उपर होता है।

मतान्तर से कुछ ज्योतिषाचार्यों का यह मानना है कि सर्वप्रथम यह ज्ञात करना चाहिए कि चन्द्रमा एवं लग्न में कौन अधिक बली है। इनमें से जो अधिक बली है वह जिस नक्षत्र में स्थित हो वही नक्षत्र, जन्म नक्षत्र कहलाने का सही उत्तराधिकारी है और वह नक्षत्र ही जन्म नक्षत्र होता है। कुछ अन्य, चन्द्रमा और लग्नेश के बल का आंकलन करके, अधिक बली के नक्षत्र को जन्म नक्षत्र मानते हैं।

फलित में नक्षत्रों की अत्याधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी भावेश की जन्म नक्षत्र से 3रे, 5वें और 7वें नक्षत्र में स्थिति अशुभ मानी जाती है। यद्यपि कभी-कभी भावेश की इन नक्षत्रों की स्थिति को अत्याधिक महत्व दिया जाता है लेकिन इनके विषय में अपने वर्तमान ज्ञान के अनुसार इनसे सम्बन्धित फल, फिर भी सावधानी पूर्वक ही कहने चाहिए। किसी भी कुण्डली का पूर्णरुप से आंकलन करना अतिआवश्यक है और किसी नक्षत्र विशेष में जन्म होने मात्र से ही उसे अमंगलकारी कहना उचित नहीं है।

गण्डमूल नक्षत्र:

आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती और अश्विनी नक्षत्रों को गण्डमूल नक्षत्र भी कहते हैं। यदि राशि चक्र को ध्यान से देखें तो यह स्पष्ट होता है कि अग्नि तत्व राशि से प्रारम्भ करने पर प्रत्येक 120 अंश के पश्चात पुन: अग्नि तत्व राशि आती है और 9 नक्षत्रों का एक चक्र भी पूर्ण हो जाता है। यदि नक्षत्रों के स्वामित्व के अनुसार देखें तो 9 नक्षत्रों का एक चक्र केतु से प्रारम्भ होकर बुध तक चलता है और पुन: 10वें नक्षत्र का स्वामी केतु होता है। इस प्रकार तीन आवृतियों में पूरे 27 नक्षत्र पूर्णत: समा जाते हैं। इन तीन आवृतियों का अन्तिम एवं प्रथम नक्षत्र ही गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं।

गण्ड का अर्थ गांठ अथवा सन्धि से है। इस सन्धि में जल तत्व राशि का अन्तिम नक्षत्र और अग्नि तत्व राशि का प्रथम नक्षत्र आता है जो दो भिन्न प्रकार की उर्जाओं को दर्शाते हैं। यह सन्धि दो नक्षत्रों की सन्धि नहीं है अपितु दो राशियों की भी सन्धि होती है। चूंकि किसी भी प्रकार सन्धिकाल या संक्रमण काल अशुभ माना जाता है, अत: इन नक्षत्रों को भी अशुभ माना जाता है।

यदि इनको सूक्ष्मता से देखें तो बुध के नक्षत्रों अर्थात आश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती का अन्तिम चरण और केतु के नक्षत्रों अर्थात मघा, मूला एवं अश्विनी का प्रथम चरण इस सन्धि में अधिक पीड़ित होता है, अतः अधिक अशुभ माना जाता है। इन चरणों में स्थित ग्रहों को भी निर्बली माना जाता है चाहे वह वहां उच्च के ही क्यों न हो रहे हों। यदि इन चरणों में स्थित ग्रहों हेतु उचित उपचार न किया जाये तो ये ग्रह जीवन में कई प्रकार की समस्यायें उत्पन्न कर सकते हैं।

शास्त्रानुसार गण्डमूल चरणानुसार जन्मफल इस प्रकार से है:

क्र.	नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
1	आश्लेषा	धन हानि, लेकिन शान्ति से शुभ	धननाश	मातृ-नाश	पितृ-नाश
2	मघा	माता को नेष्ट	पिता को भय	सुख-सम्पति	धन, विद्या लाभ
3	ज्येष्ठा	ज्येष्ठ भ्राता को नेष्ट	अनुज भ्राता को नेष्ट	मातृ-नाश	स्व हानि
4	मूल	पितृ-नाश	मातृ-नाश	धन नाश	धन हानि, लेकिन शान्ति से शुभ
5	रेवती	राज्य-सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख की प्राप्ति	अनेक कष्ट
6	अश्विनी	पिता को भय	सुख ऐश्वर्य	मन्त्री पद	राज्य सम्मान

कुछ भ्रान्तियां:

प्राचीन समय से पारंपरिक ज्योतिषाचार्य कुछ भ्रान्तियां का अनुसरण करते आये हैं। जिनके मतानुसार कुछ विशेष नक्षत्रों में लड़के का और कुछ विशेष नक्षत्रों में लड़कियां का जन्म लेना अशुभ होता है।

यह माना जाता है कि यदि लड़कियों का जन्म आर्द्रा, आश्लेषा, शतभिषा, पुष्य, मूल, चित्रा, ज्येष्ठा और कृत्तिका में से किसी भी नक्षत्र में हो तो विवाह के उपरान्त मृत्यु, दरिद्रता और सन्ताप देने वाला होता है चाहे कुण्डलियों का मिलान कितना ही शुभ क्यों न हो। इसी प्रकार यह भी माना जाता है कि यदि लड़के का जन्म पिता के नक्षत्र में होता है तो वह माता के लिए मृत्यु कारक होता है और यदि माता के नक्षत्र में होता है तो पिता के लिए मृत्यु कारक होता है।

यद्यपि अनुभव में यह देखा गया है कि यदि सम्बन्धित जातक की कुण्डली में अन्य योग विद्यमान न हो तो यह फल प्राप्त नहीं होता है। इसी प्रकार यदि

सम्बन्धित माता या पिता की कुण्डली में आयु के लिए कोई अरिष्ट हो तो ही इस योग के फलीभूत होने की संभावनायें होंगी। अतः किसी एक योग मात्र से ही परिणाम कह देना उचित नहीं होता है।

नक्षत्रों का स्वरुप और उनका जातकों पर प्रभाव

1. अश्विनी (मेष राशि 00°00' - 13°20'), स्वामी ग्रह - केतुः

अश्विनी नक्षत्र में तारो की संख्या 3 है और इसकी आकृति घोड़े के मुंह के समान है। इसका पूज्य देवता अश्विनी कुमार हैं जिन्हें देवताओं का वैद्य भी कहा गया है तथा जिन्होंने औषधियों के क्षेत्र में कई चमत्कार किये हैं। घोड़े से समरुपता होने के कारण जिस जातक का जन्म इस नक्षत्र में होता है वह एक घुड़सवार अथवा सैनिक हो सकता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक लोकप्रिय, अतिव्ययी और गति का प्रेमी होता है। वाहन के क्षमता निर्धारण का पैमाना **अश्व**, इसी से निकला है, अतः परिवहन सम्बन्धित सभी वाहनों का अधिपत्य इसके पास है। पुराणों के अनुसार अश्विनी कुमार, जुड़वाँ भाई थे अतः इस नक्षत्र से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध, दो समरुप फल देता है। उदाहरणतः यदि तृतीय भाव में स्थित मंगल इस नक्षत्र में स्थित हो तो दो जुड़वाँ भाइयों का जन्म हो सकता है। इसी प्रकार यदि बृहस्पति पंचमेश होकर अश्विनी नक्षत्र में स्थित हो तो जुड़वाँ सन्तान होने की संभावनायें होती हैं।

वराहमिहिर के अनुसार अश्विनी नक्षत्र में जन्मा जातक सजावट एवं सुन्दर परिधानों का शौकीन, आकर्षक, लोकप्रिय, कार्यदक्ष और बुद्धिमान होता है तथा उसके अपने मित्रों एवं स्वजनों के साथ मधुर सम्बन्ध होते हैं।

शरीर के अंग - दोनों घुटने।

व्यवसाय - यह देखा गया है कि बहुत बड़ी संख्या में चिकित्सक, रसायनशास्त्री और सेनाओं, पुलिस में कार्यरत एवं खिलाडी आदि ऐसे जातक, जिनके जीवन में दौड-भाग का अधिक महत्व होता है, इस नक्षत्र में जन्मे होते हैं। लौह इस्पात, तांबा आदि से जुड़े व्यवसाय।

मेदिनी ज्योतिष में अश्विनी नक्षत्र का चावल, उन, लौह, इस्पात, तांबा, खनन उद्योग, कारखाना कर्मचारी और रेलवे पर अधिपत्य होता है।

2. भरणी (मेष राशि 13°20'-26°40'), स्वामी ग्रह - शुक्रः

भरणी नक्षत्र में तारों की संख्या 3 है और इसकी आकृति योनि के समान है। इसका पूज्य देवता यम है जो न केवल मृत्यु का देवता है अपितु न्याय, सत्य, निष्ठा एवं सत्य का निर्णय करके पुरस्कार अथवा दण्ड देने वाला होने के कारण धर्म का भी देवता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक दृढ़निश्चय, सत्यवादी, निरोगी, दक्ष एवं सुखी, विचारक, नैतिक और कभी-कभी ईर्ष्यालु भी होता है तथा आमोद-प्रमोद में प्रसन्न रहता है। भरणी का शाब्दिक अर्थ होता है, वह जिसको संचित किया जाये।

शरीर के अंग - सिर या मस्तिष्क।

व्यवसाय - कला, मनोरंजन, सिनेमा, कानून, जज, मंत्री, खाद्य उद्योग, होटल आदि।

मेदिनी ज्योतिष में भरणी नक्षत्र का गेहूं, चावल, मिर्ची, खाद्य तेलों, औषधियों, इमली और चायपत्ती पर अधिपत्य है।

3. कृत्तिका (मेष राशि 26°40'-30°00' और वृषभ राशि 00°00'- 10°00'), स्वामी ग्रह - सूर्यः

कृत्तिका नक्षत्र में तारों की संख्या 6 है और इसकी आकृति चाकू के समान है। इसका पूज्य देवता अग्नि है जो सृष्टि की रचना का आधार होने के साथ-साथ, सबसे शक्तिशाली शोधक, उपभोक्ता और रोशनी एवं उष्मा देने वाली होती है। कृत्तिका के प्रथम चरण, जिसका राशीश मंगल है, के पास अत्याधिक उष्मा है जो जलाती है। शेष तीन चरणों के पास रोशनी है क्योंकि इनका राशीश शुक्र है जो कोमल एवं मधुर है और कला, संगीत, नृत्य, नाट्य, काव्य एवं कल्पनाशक्ति का कारक है। यह विद्या की सभी शाखाओं की व्याख्या करने वाला है।

वराहमिहिर के अनुसार कृत्तिका नक्षत्र में जन्मा जातक बहुभोजी, अन्य स्त्रियों की ओर आकर्षित, आकर्षक और प्रसिद्ध होता है।

शरीर के अंग - कूल्हे, कमर।

व्यवसाय - अविष्कारक, खोजकर्ता, खोदनेवाला, सेना, पुलिस, अग्नि से सम्बन्धित व्यवसाय, चिकित्सा, रक्षा विभाग, पंडिताई, ज्योतिष आदि।

मेदनी ज्योतिष में चावल, तिलहन, मेवा आदि, हीरा, बहुमूल्य रत्न, धातु, इस्पात, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, सशस्त्र सेना, ऋण, ऋण की पुनः प्राप्ति।

4. रोहिणी (वृषभ राशि 10°00'- 23°20'), स्वामी ग्रह - चन्द्रमाः

रोहिणी शब्द की उत्पति रोहन शब्द से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ है उदय होना अथवा अपनी उपस्थिति दर्शाना है। रोहिणी नक्षत्र में तारों की संख्या 5 है और इसकी आकृति बैलगाड़ी या शकट के समान है। इसका पूज्य देवता ब्रह्मा है जो सृष्टि के रचनाकार हैं। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भी इसी नक्षत्र में हुआ था जो स्वयं ही सम्मोहित कर देने वाले व्यक्तित्व के स्वामी थे। शुक्र का राशीश होना, इस नक्षत्र में जन्में जातकों की सुन्दरता में सम्मोहित करने वाला आकर्षण भर देता है।

रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक अतिसुन्दर, कला एवं संगीत में सिद्धहस्त, मधुरभाषी, सत्यवादी, वाक्पटु, धार्मिक एवं नैतिक आचार-विचार वाला, अचल चित्त और आकर्षक होता है।

शरीर के अंग - दोनों पांव।

व्यवसाय - कला के क्षेत्र, कृषि, भोजनालय, होटल, अल्पाहारगृह, फैशन एवं मॉडलिंग आदि।

मेदिनी ज्योतिष में सभी खाद्य पदार्थों, अनाजों, कपास, चांदी, कच्चे तेल, पैट्रोल, सुगन्धियों, वाहनों, समुद्री व्यापार, शासन एवं राजनीतिज्ञों पर इसका अधिपत्य होता है।

5. मृगशिरा (वृषभ राशि 23°20'- 30°00' और मिथुन राशि 00°00'-06°40'), स्वामी ग्रह - मंगलः

मृगशिर या मृगशिरा का शाब्दिक अर्थ, हिरण का सिर है। मृग जो जंगल, उद्यान, जंगलों में घूमना आदि को इंगित करता है। मृगशिरा नक्षत्र में तारों की संख्या 3 है और आकृति हिरण के मुंह के समान होती है। इसका पूज्य देवता चन्द्रमा है। जिन जातकों का जन्म मृगशिरा नक्षत्र में होता है वे चपल, कार्यदक्ष, डरपोक, अच्छे वक्ता, आशावान, धनवान, आनन्द भोगने वाले, शंकालु और घूमने के शौकीन होते हैं। ये जातक काव्य में भी रुचि रखते हैं और विचारक भी होते हैं।

शरीर का अंग - दोनों आंखें।

व्यवसाय - कपड़ा उद्योग, वस्त्रों की सिलाई, रत्न, पशु चिकित्सक, पशु पालन, वाहन चालक, ध्वनि तकनीशियन आदि।

मेदिनी ज्योतिष में कम्प्यूटर, रेडियो, कर विभाग, सिनेमा और आभूषण पर इसका अधिपत्य होता है।

6. आर्द्रा (मिथुन राशि 06°40'- 20°00'), स्वामी ग्रह - राहुः

आर्द्रा नक्षत्र में तारों की संख्या 1 है और इसकी आकृति मणि या बूंद के समान होती है। इसका अधिदेवता रुद्र है जो शिव का ही एक अन्य नाम है और जो निस्तब्धता एवं विनाश अर्थात शान्ति एवं सबसे अधिक भयानकता को इंगित करता है। किसी भी ग्रह का इस नक्षत्र में स्थित होना उसके नैसर्गिक कारकत्वों, स्वामित्व आदि में विघ्न उत्पन्न कर सकता है। रुद्र उन सभी को इस सृष्टि से समाप्त करता है जिनकी उपयोगिता समाप्त हो गई है और बूंद नये जन्म को इंगित करता है।

आर्द्रा नक्षत्र में जन्मा जातक स्वहित का ही विचार करने वाला, घमण्डी, कृतघ्न, क्रूर, पापकर्म करने वाला और गहरी भावनायें रखने वाला तथा धन-धान्य से हीन होता है।

शरीर के अंग - बाल। पुरुष जातकों में गुरदे और स्त्री जातकों में गर्भाशय सम्बन्धित रोग देता है।

व्यवसाय - राजनीति, अनुसंधानकर्ता, अविष्कारकर्ता, दवा विक्रेता, रसायनों के प्रयोग से उपचार करना आदि।

मेदिनी ज्योतिष में कच्चे तेल, घी, चन्दन की लकड़ी, सुगन्धी, श्रृगांर के समान, संचार, परिवहन, डाक एवं तार, हवाई अड्डा और वायुसेना पर इसका अधिपत्य होता है।

7. पुनर्वसु (मिथुन राशि 20°00'- 30°00' और कर्क राशि 00°00'-03°20'), स्वामी ग्रह - बृहस्पतिः

पुनर्वसु का शाब्दिक अर्थ पुनः प्राप्ति अथवा पुनः नवीनीकरण है। पुनर्वसु नक्षत्र में तारों की संख्या 4 है और इसकी आकृति घर अथवा तरकस के समान होती है जो उर्जा एवं इसके साधन, भ्रमण एवं घर वापसी, खोई चीज की पुनर्प्राप्ति और लक्ष्य भेदन को इंगित करती है। इसके अधिदेवता अदिति (12 वसुओं की माता) देवी है जो योग, धर्म, दार्शनिकता और सज्जनता को इंगित करती है।

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा जातक बुद्धिमान, श्रेष्ठ स्मरणशक्तिवाला, निर्णायक क्षमता वाला, सत्यभाषी, आकर्षक, संतोषी और लोकप्रिय होता है।

शरीर के अंग - अंगुलियां।

व्यवसाय - दार्शनिक, खोजकर्ता, सलाहकार, भवन निर्माणकर्ता, वैज्ञानिक, भवन का नक्शा बनाने वाला, सिविल इंजीनियर आदि।

मेदनी ज्योतिष में कपास, सोना, चांदी, अनाज, सिले-सिलाये परिधान, वित्तीय संस्थानों एवं जीवन बीमा ऐजन्टों, शासक और राजनीतिज्ञों पर इसका अधिपत्य होता है।

8. पुष्य (कर्क राशि 03°20'-16°40'), स्वामी ग्रह - शनिः

पुष्य का शाब्दिक अर्थ है पालन-पोषण, संचय, रक्षा और बली करना है और इसका निशान गाय दोहने जैसा है। यह फलने-फूलने और भाग्यवान होने को इंगित करता है। पुष्य नक्षत्र में 3 तारे होते हैं और इसकी आकृति तीर के समान होती है। इसका अधिदेवता बृहस्पति है जो भावनाओं के उपर नियत्रंण, विद्या, धन और करुणा को इंगित करता है। इस सृष्टि में जो भी सर्वाधिक शुभ चीज है वह इसके अधिपत्य में है। बृहस्पति अधिकता, उन्नति, धन-सम्पति, प्रसिद्धि, लोकप्रियता और दया की भावना से उसी तरह सम्बन्धित है जिस प्रकार एक गाय अपने बछडे को पालती है। बृहस्पति वाणी, धर्म, बुद्धिमता, भाग्य, निष्ठा, प्रार्थना, शुद्धता, इमानदारी, सत्य, धर्म सम्मत व्यवहार और दार्शनिकता का प्रतिपादन करता है तथा यह तो सभी जानते हैं कि बृहस्पति सबसे बड़ा धर्मज्ञाता है तथा सारे ज्ञान का उद्‌गम स्थल एवं सभी उत्सवों का प्रमुख है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक धार्मिक, सत्यवादी, मधुरभाषी, भगवान की कृपा प्राप्त, धन एवं पुत्रादि से युक्त विद्वान, शान्तात्मा, सुन्दर और सुखी होता है।

शरीर के अंग - मुंह।

व्यवसाय - उत्खनन, निर्माण कार्य, कृषि, जेलर, न्यायाधीश, भूमिगत कार्य और जलीय पदार्थों से सम्बन्धित व्यवसाय।

मेदनी ज्योतिष में चावल, घी, नमक, सोना, उत्खनन, पेट्रोलीय उत्पादन, कच्चे तेल, दूध के उत्पादक, कृषि, शासको और मंत्रियों पर इसका अधिपत्य है।

9. आश्लेषा (कर्क राशि 16°40'-30°00'), स्वामी ग्रह - बुधः

आश्लेषा नक्षत्र में तारों की संख्या 5 है और इसकी आकृति पहिये अथवा चक्र के समान होती है। इसका अधिदेवता सर्प है। इसको सांप की कुण्डली से दर्शाया जाता है अतः यह उन सभी चीजों से सम्बन्धित होता है जो सर्प जैसा अपने आप को छुपाने, गुप्त रखने, कपट, गुथा हुआ, एक निश्चित दायरे में होता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक सर्वभक्षी (खाद्य-अखाद्य को खाने वाला), काल के समान विकराल, दुष्ट और किये कार्यों को पुनः करने वाला होता है, लेकिन साथ ही साथ विद्वत्ता, एकाग्र होने की शक्ति और आत्मदृष्टि वाला भी होता है। कुण्डली के नवमेश अथवा दशमेश को इस नक्षत्र में होना शुभ नहीं माना जाता है क्योंकि इसका अर्थ भय, रुकावटें और जीवन का आधारहीन होना होता है। जिस जातक का लग्न इस नक्षत्र में होता है वह कपटी प्रवृति का होता है। ऐसे लोग गुप्त तरीके से कार्य करना पसन्द करते हैं।

शरीर के अंग - नाखुन।

व्यवसाय - रसायन इंजीनियर, दवा निर्माता, स्याही एवं रंग का निर्माता, अपना भला करने वाला राजनीतिज्ञ, व्यापार आदि।

मेदनी ज्योतिष में पन्ना, चांदी, चिकित्सक, नर्स, विषाक्त पदार्थों और अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार पर इसका अधिपत्य है।

10. मघा (सिंह राशि 00°00'-13°20'), स्वामी ग्रह - केतुः

मघा नक्षत्र में तारों की संख्या 5 है और इसकी आकृति घर के समान होती है जिसमें राजा का मुकुट रहता है। इसका अधिदेवता पितृ अथवा पूर्वज है। राजमुकुट का घर अर्थात कूटनीति, राजसी, राजकीय और विशिष्टता का घर। राजसिक ग्रह सूर्य एवं चन्द्रमा यहां स्थित होने पर उन्नत हो जाते हैं। पूर्वज बिना किसी इच्छा के अत्याधिक उपहार देते हैं।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक अधिक भृत्यों वाला, धनी, भोगी, पितृभक्त, अत्यन्त उद्यमशील, सेना नायक और राजसेवा में लगा रहने वाला होता है लेकिन स्त्रियां उसकी कमजोरी होती हैं।

शरीर के अंग - नाक।

व्यवसाय - राज्याध्यक्ष, बड़ा व्यापार, वकालत, न्यायाधीश, इतिहासकार, पुरातत्व विभाग आदि।

मेदनी ज्योतिष में कच्चे तेल, घी, अलसी, इलेक्ट्रोनिक्स सामान एवं बिजली के उपकरण, रसायन उद्योग और प्लास्टिक उद्योग पर इसका अधिपत्य है।

11. पूर्वाफाल्गुनी (सिंह राशि 13°20'-26°40'), स्वामी ग्रह - शुक्रः

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में तारों की संख्या 2 है और इसकी आकृति मंच के समान होती है। इसका अधिदेवता भग (सूर्य का एक नाम) है जिस पर वैवाहिक सुख और धन-सम्पति का उत्तरदायित्व होता है। इसका दूसरा अधिदेवता शिवलिंग होता है जो सृष्टि की रचना का आधार है। एक ओर जहां यह रचना का आनन्द है वहीं दूसरी ओर यह दूसरों की संसारिक विषयों में आसक्ति और आत्मत्याग को दर्शाता है। प्रसिद्धि और यश-कीर्ति इस नक्षत्र की विशेष पहचान है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक विद्या एवं पशुधन से सम्पन्न, गम्भीर, स्त्रियों से प्रेम करने वाला, रतिसुख से पूर्ण, सुखी, मधुरभाषी, उदार, आकर्षक, यात्राओं का शौकीन और विद्वानों से सम्मानित होता है।

शरीर के अंग - गुप्तांग।

व्यवसाय - संगीत, कला, अभिनय, मनोरंजन आदि।

12. उत्तराफाल्गुनी (सिंह राशि 26°40'-30°00' और कन्या राशि 00°00'-10°20'), स्वामी ग्रह - सूर्यः

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में तारों की संख्या 2 है और इसकी आकृति चारपाई के समान होती है। इसका अधिदेवता अर्यमा (सूर्य का एक नाम) है जो संरक्षकता देने वाला शासक है। पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र एक जोड़ा है, अन्तर कंवल दूसरों की सहायता करने में उदारता, कृपाशीलता, संरक्षकता और अतिइच्छा होने का है। भग और अर्यमा, दोनों को एक साथ ही पूजा जाता है क्योंकि ये एक-दूसरे के पूरक हैं। यह अनैतिक शारीरिक सम्बन्धों से अपमान अथवा उससे बचकर निकलना अथवा लाभ भी इंगित करता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक लोकप्रिय, शूरवीर, मीठा बोलने वाला, धनुर्विद्या का ज्ञाता, अत्यन्त योद्धा और स्वनिर्मित भू-सम्पति का स्वामी होता है।

शरीर के अंग - गुप्तांग।

व्यवसाय - समाज सेवा, मुद्रण, प्रकाशन, जन-सम्पर्क, संदेशवाहक, अस्पताल से सम्बन्धित नौकरी, दवा विक्रेता आदि।

13. हस्त (कन्या राशि 10°20'-23°40'), स्वामी ग्रह - चन्द्रमाः

हस्त नक्षत्र में तारों की संख्या 5 है और इसकी आकृति हाथ के समान होती है जो दृढ़ निश्चत शक्ति एवं मुठ्ठी में जकड़ी हुई चित्त की दृढ़ता को इंगित करता है। इसका अधिदेवता सूर्य है जो आध्यात्मिकता का उत्तरदायित्व रखता है। सूर्य से ही जीवन प्रारम्भ होता है और यह नक्षत्र सूर्य के सभी गुणों को अपने अन्दर समाये हुए होता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक बुद्धिमान लेकिन असत्य बोलने वाला, धृष्ट, बेशर्म, मद्यप्रिय, बांधव-रहित, चोर एवं पर नारी से प्रीति रखने वाला होता है। यदि कुण्डली का पंचमेश हस्त नक्षत्र में हो तो यह सन्तानहीनता का कारण हो सकता है।

शरीर के अंग - दोनों हाथ।

व्यवसाय - सलाहकार, मंत्री, लेखक, पुजारी, चोर, ज्योतिष, राजनयिक, राजदूत, वकालत, वस्त्र एवं सूत उद्योग आदि।

14. चित्रा (कन्या राशि 23°20'- 30°00' और तुला राशि 00°00'- 06°40'), स्वामी ग्रह - मंगलः

चित्रा नक्षत्र में तारों की संख्या 1 है और इसकी आकृति मोती के समान होती है। इसका अधिदेवता विश्वकर्मा (देवताओं का शिल्पकार) है जो क्रियात्मक कला का देवता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक अतिआकर्षक, सुन्दर परिधान पहनने वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी, पुत्र, स्त्री, धन-धान्य से सम्पन्न एवं सन्तुष्ट तथा देवताओं-ब्राह्मणों का भक्त होता है। ऐसे जातकों के पास विवरण कहने की कला होती है तथा ये अक्लान्त एवं अपराजित होते हैं। यदि चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में हो तो जातक पुस्तकों का रसिया और गम्भीर एवं गहन विषयक विद्यार्थी होता है।

शरीर के अंग - माथा।

व्यवसाय - कलात्मक विज्ञापन, सजावट विशेषज्ञ, कला, संगीत, असामान्य जडी-बूटी, आभूषण, इंजीनियरिंग, अविष्कार का कार्य और व्यापार आदि।

15. स्वाति (तुला राशि 06°40'-20°00'), स्वामी ग्रह - राहुः

स्वाति नक्षत्र में तारों की संख्या 1 है और इसकी आकृति मूंगा के समान होती है जो कोमल एवं प्राकृतिक होता है और जो अपनी उत्कण्ठा को नियंत्रण में रखता है। इसका अधिदेवता वायु है जो जातक के अशिथिलता और अधिक समय तक एक स्थान पर न टिकने को इंगित करता है तथा अपने उपर विश्वास और दृढ़ता बनाये रखता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक विदग्ध, व्यापारी, क्रय-विक्रय में दक्ष, दयालु, मधुरभाषी, उर्जावान, धार्मिक, कृपण, प्रिय का प्यारा, सुशील और देवभक्त होता है तथा देवी सरस्वती से विशेष प्रीति रखता है। ऐसे जातकों के पास सम्पति आसानी से आती है और चली भी जाती है।

शरीर के अंग - अंगुलियां।

व्यवसाय - व्यापार, वाहन, यातायात, पर्यटन, दुग्ध उद्योग, छायाचित्र, अभिनय, कला, नृतक, उद्घोषक, प्लास्टिक एवं कांच का निर्माण एवं व्यापार आदि।

16. विशाखा (तुला राशि 20°00'-30°00' और वृश्चिक राशि 00°00'-03°20'), स्वामी ग्रह- बृहस्पतिः

विशाखा नक्षत्र में तारों की संख्या 4 है और इसकी आकृति तोरण के समान होती है। इसका अधिदेवता इन्द्र और अग्नि हैं जो सफलता, विजय, तानाशाह बनने का रुझान तथा अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु दुर्जय साहस एवं अत्यन्त प्रयास को इंगित करते हैं।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक सुन्दर, वाकपटु, धनवान लेकिन अत्यन्त लोभी, अत्यन्त मानी, निष्ठुर, कलह प्रिय तथा वेश्याओं में रति रखने वाला होता है। ऐसा जातक मित्र बनाता है और अपने स्वार्थ के लिए उनका प्रयोग करता है। इनके लिए अपने उद्देश्य की प्राप्ति एवं सफलता के अतिरिक्त अन्य किसी का कोई महत्व नहीं होता है। ये अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में भयहीन और निसन्देह हो सकते हैं। ये कई कार्य करते हैं लेकिन किसी भी कार्य में मुश्किल से ही एक चित्त होकर काम करते हैं। इनको शत्रुओं से हानि और भय होता है।

शरीर के अंग - दोनों बाजु।

व्यवसाय - साहित्य, राजनीति, वित्तीय व्यवसाय, जल एवं वायुयात्रा, अध्यापन आदि।

17. अनुराधा (वृश्चिक राशि 03°20'-16°40'), स्वामी ग्रह - शनिः

अनुराधा नक्षत्र में तारों की संख्या 4 है और इसकी आकृति पिण्ड के समान होती है। इसका अधिदेवता मित्र (सूर्य का एक नाम) है। अनुराधा नक्षत्र का फल भी विशाखा के समान होता है केवल अन्तर यह होता है कि विशाखा नक्षत्र में जन्मा जातक सफल होने के बाद अपने भूतकाल के सभी हितैषियों को भूल जाता है जबकि अनुराधा नक्षत्र में जन्मा जातक अपने स्वजनों के प्रति श्रेष्ठ भावनायें रखता है और सफल होने के उपरान्त भी अपने मित्रों को भूलता नहीं है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक अपने पुरुषार्थ से परदेश में रहने वाला, यात्राओं का शौकीन, दूसरे के प्रति अच्छी भावना रखने वाला, बांधवों के कार्य बनाने में सदैव प्रयत्नशील, अधिक मित्रवाला तथा धृष्ट होता है।

शरीर के अंग - हृदय।

व्यवसाय - ऐसा कार्य जहां शारीरिक बल की आवश्यकता होती है, जनप्रिय नेता, हड्डियों एवं उनी वस्त्रों का व्यापार, जलक्षय विभाग, खाद्य तेल निर्माता एवं विक्रेता, गुप्त विधाओं से आय आदि।

18. ज्येष्ठा (वृश्चिक राशि 16°40'-30°00'), स्वामी ग्रह - बुधः

ज्येष्ठा का शाब्दिक अर्थ सबसे बड़ा होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र में तारों की संख्या 3 है और इसकी आकृति कुण्डल के समान होती है। इसका अधिदेवता इन्द्र है जो देवताओं का राजा है और बहादुर योद्धा, बहुत बड़ा आदर्श एवं शक्तिशाली व्यक्तित्व रखता है। यदि यह नक्षत्र अशुभ ग्रहों से प्रभावित हो तो दरिद्रता और सन्ताप का कारण होता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक मित्रों में प्रधान, कम मित्र वाला, स्पर्धा करने वाला, दम्भी, गोपनीय, कवि, चिड़चिड़ा, पण्डित, धर्म में लगा रहने वाला तथा शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

शरीर के अंग - जीभ।

व्यवसाय - प्रकाशन, मुद्रण, जेल विभाग, डाक-तार विभाग, उत्खनन सम्बन्धित कार्य, रासायनिक इन्जीनियर आदि।

19. मूल (धनु राशि 00°00'-13°20'), स्वामी ग्रह - केतुः

मूल का शाब्दिक अर्थ जड़ भी है जो प्रत्येक चीज का आधार होता है। मूल नक्षत्र में तारों की संख्या 11 है और इसकी आकृति मंच के समान होती है। इसका अधिदेवता राक्षस (नैऋत्य) है जो दुर्भाग्य का देवता है। इसका अर्थ विरुद्ध या पीछे भी है, अतः इसको शुभ नक्षत्र नहीं माना जाता है। इसका अर्थ यह भी है कि किसी भी चीज के जड़ में जाना तथा विज्ञान एवं दार्शनिकता इसके अधिकार क्षेत्र में आते हैं। इसका हिलना-डुलना सीमित होता है और यह अपनी सीमा से बाहर नहीं जाता है। यह गिरवी रखने और भू-सम्पति को गिरवी रखने का कारक है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक सुखी, सम्पन्न, धन-वाहन युक्त, हिंसक, बलवान, स्थिर कर्मों को करने वाला, घमण्डी, शत्रुओं को हराने में प्रतापी तथा श्रेष्ठ जनों से प्रसन्न रहने वाला होता है।

शरीर के अंग - दोनों पांव के पंजे।

व्यवसाय - वेदज्ञ, ज्योतिषी, सलाहकार, मंत्री, दवा के क्षेत्र से सम्बन्धित, वकालत आदि।

20. पूर्वाषाढ़ा (धनु राशि 13°20'-26°40'), स्वामी ग्रह - शुक्रः

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में तारों की संख्या 2 है और इसकी आकृति हाथी दान्त के समान होती है। इसका अधिदेवता जल है अतः जातक पानी के समान सभी के साथ घुल-मिल जाने वाला और दूसरों का उपकार करने वाला होता है। इस नक्षत्र का दूसरा नाम अपराजिता है अर्थात जो कभी पराजित नहीं हो सकता है इसलिए प्रत्येक प्रतियोगिता में विजयी होता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक देखने मात्र से उपकार करने वाला, क्षमावान, माता का प्रिय, अच्छी भार्या वाला, भाग्यवान, जनप्रिय, यात्राप्रिय, स्त्रियों का प्रिय, धनी मित्रों वाला तथा सभी अर्थों में पारंगत होता है।

शरीर के अंग - दोनों जांघे।

व्यवसाय - समुद्र से जुड़ा व्यापार, दुग्ध व्यापार, नौ-सेना, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आदि।

21. उत्तराषाढ़ा (धनु राशि 26°40'-30°00' और मकर राशि 00°00'-10°20'), स्वामी ग्रह - सूर्यः

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में तारों की संख्या 2 है और इसकी आकृति मंच के समान होती है। इसका अधिदेवता विश्वदेव है जो भगवान धर्म और देवी विश्व का पुत्र है। पूर्वाषाढ़ा की प्रवृति जहां विस्तार करने की होती है वहीं उत्तराषाढ़ा की प्रवृति स्वइच्छाओं की पूर्ति होती है। आत्मनियत्रंण, सहिष्णुता और दृढ़ चरित्र इस नक्षत्र की अन्य विशेषतायें हैं।

इसकी आकृति हाथी की सूंड के समान भी मानी जाती है, जिसका सम्बन्ध भगवान गणेश से जुड़ा है अतः सभी प्रकार के विघ्नों का हरण होता है। यह नक्षत्र नये उद्योग प्रारम्भ करने और उनका पूर्ण करने की, हाथी की सूंड के समान तीक्ष्ण एवं सूक्ष्म प्रवीणता देता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक बहुत मित्रों वाला, महाकाय, बलवान, सामाजिक, समाज द्वारा प्रशंसा प्राप्त, विनीत, सुखी, शूरवीर, सुन्दर परिधान पहनने वाला, सम्मोहित व्यक्तित्व का स्वामी और सफल होता है।

शरीर के अंग - दोनों जांघे।

व्यवसाय - योद्धा, पहलवान, सैनिक, चिकित्सक, शल्य चिकित्सक, चित्रकार, कलाकार, जादूगर आदि।

22. श्रवण (मकर राशि 10°20'-23°40'), स्वामी ग्रह - चन्द्रमाः

श्रवण का शाब्दिक अर्थ सुनना है अतः वेद के सुनने-सुनाने और ज्ञान के प्रचार-प्रसार को इंगित करता है। श्रवण नक्षत्र में तारों की संख्या 3 है और इसकी आकृति वामन अर्थात त्रिचरण के समान होती है। इसका अधिदेवता विष्णु है।

यह देवी सरस्वती का जन्म नक्षत्र भी है, अतः यह ज्ञान एवं विद्या, दयालुता और मानवता को इंगित करता है तथा शिक्षा, पाण्डित्य एवं पारम्परिक मूल्यों के प्रति सम्मान इसके विशेष विशेषण हैं। यह शिक्षा एवं ज्ञान के क्षेत्र में श्रेष्ठ व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक कृतज्ञ, विद्वान, सुन्दर, दानशील, सभी गुणों से सम्पन्न, श्रीमान, यात्रा का शौकीन और बहुत सन्तान वाला होता है।

शरीर के अंग - दोनों कान।

व्यवसाय - धार्मिक शिक्षक, धर्म का छात्र, धर्म प्रचारक, प्राध्यापक, कथा वाचक, दूर-संचार विभाग, डाक-तार विभाग, वाहन चालक आदि।

स्वामी विवेकानन्द की कुण्डली में दशमेश श्रवण नक्षत्र में स्थित था।

23. धनिष्ठा (मकर राशि 23°20'-30°00' और कुंभ राशि 00°00'-06°40'), स्वामी ग्रह - मंगलः

धनिष्ठा नक्षत्र में तारों की संख्या 4 है और इसकी आकृति मृदंग के समान होती है। इसका अधिदेवता वसु है जो धन-सम्पति, बहुमूल्य रत्न-आभूषण देने वाला, अच्छा और परोपकारी होता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक गीत-संगीत प्रेमी, साहसी, सज्जन, बांधवों में सम्मानित, स्वर्ण-रत्नादि से विभूषित, धन-सम्पति का स्वामी तथा सैकड़ों मनुष्यों का स्वामी होता है। इन जातकों में रतिसुख के लिए अधिक शक्ति नहीं होती है और इनमें अविवाहित रहने की प्रवृति होती है। यदि शनि सप्तमेश होकर श्रवण नक्षत्र में स्थित हो तो वह जातक को नपुंसक भी बना सकता है। यदि अशुभ ग्रह होकर सप्तमेश इस नक्षत्र में स्थित हो तो यह भी जातक को अविवाहित रख सकता है अथवा वैवाहिक सुख में कमी दे सकता है।

शरीर के अंग - पीठ।

व्यवसाय - औषधी, धार्मिक संस्थान, संगीत, काव्य-साहित्यादि, भू-सम्पति, अनुसंधान, अन्वेषण, कृषि आदि।

24. शतभिषा (कुंभ राशि 06°40'-20°00'), स्वामी ग्रह - राहुः

शतभिषा नक्षत्र में तारों की संख्या 100 है और इसकी आकृति वृत के समान होती है। इसका अधिदेवता वरुण है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक कृपण, कठोरभाषी, शिक्षित, धनवान, परनारी सेवी, सरकार में लोकप्रिय तथा विदेश में कार्य करने वाला होता है।

शरीर के अंग - दोनों ओर की ठोडी।

व्यवसाय - नौ सेना, समुद्र से जुड़ा व्यापार, ज्योतिष, खगोलशास्त्री, विज्ञान, भौतिकी, अणुविद्युत, अनुवादक आदि।

मेदनी ज्योतिष में नदियों, समुद्रों, झीलो, तालाबों आदि पर इसका अधिपत्य होता है।

25. पूर्वाभाद्रपद (कुंभ राशि 20°00'-30°00' और मीन राशि 00°00'-03°20'), स्वामी ग्रह - बृहस्पतिः

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में तारों की संख्या 2 है और इसकी आकृति मंच के समान होती है। इसका अधिदेवता अजचरण (रुद्र का एक नाम) है जो विनाश, अग्नि और गर्मी को दर्शाते हैं।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक वक्ता, सुखी, सन्तानवान, अधिक निद्रावाला, अधार्मिक, कटु वचन बोलने वाला, ईर्ष्यालु, स्त्रियों को समर्पित तथा निकम्मा होता है।

शरीर के अंग - पसलियों सहित दोनों ओर से शरीर।

व्यवसाय - मृत्यु से जुड़े कार्य, रुग्णालय, अकाल राहत, बीमा, औषधियों से सम्बन्धित कार्य, चोरी एवं आंतकवाद से जुड़े कार्य, विस्फोटक सामग्री से सम्बन्धित कार्य आदि।

26. उत्तराभाद्रपद (मीन राशि 03°20'-16°40'), स्वामी ग्रह - शनिः

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में तारों की संख्या 2 है और इसकी आकृति जुड़वाँ के समान होती है। इसका अधिदेवता अहिर्बुधन्य (रुद्र का एक नाम) है। यह सर्प से जुड़ा है इसलिए गोपनीय तरीके से कार्य करना, एकान्तवास, कुण्डलनी शक्ति, सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, प्रबोधन और अपने लिए सजग रहना इन नक्षत्र की विशेषतायें हैं।

इस नक्षत्र के कुछ गुण आर्द्रा और कुछ गुण पूर्वाभाद्रपद से भी मिलते-जुलते हैं। यह ज्ञान, शिक्षा और अच्छी सलाह के साथ-साथ सदूर क्षेत्रों की यात्रा, संसारिक विषयों का त्याग और फकीर की भान्ति इधर-उधर भटकने को भी इंगित करता है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक गौर वर्ण का, श्रेष्ठ बल वाला, साहसी, धर्मज्ञ, शत्रु को मारने वाला, देवताओं के समान श्रेष्ठ, सक्षम वक्ता, धर्मपरायण, परोपकारी, दयालु, वाचाल और छली एवं सुखी होता है। ऐसा जातक भगवान को समर्पित, त्यागी, भ्रमण करने वाला, आत्मज्ञानी और तन्त्र-मंत्र का ज्ञाता भी होता है।

शरीर के अंग - पसलियों सहित दोनों ओर से शरीर।

व्यवसाय - धार्मिक संस्थान, पागलखाना, गृह विभाग, अविष्कारक, अन्वेषक, नौकायन, गुप्तचर विभाग आदि।

27. रेवती (मीन राशि 16°40'-30°00'), स्वामी ग्रह - बुधः

रेवती नक्षत्र में तारों की संख्या 32 है और इसकी आकृति मृदंग के समान होती है। इसका अधिदेवता पूषा (सूर्य का एक नाम) है जो गायों एवं भगवान का रखवाला है।

इस नक्षत्र में जन्मा जातक सभी अंगों से पूर्ण, पवित्र, सब कार्यों में कुशल, लोकप्रिय, प्रेरक, गहन विद्या वाला, साधु स्वभाव का, शूरवीर, पण्डित तथा धन-धान्य से सदा सम्पन्न रहता है। ऐसा जातक दूसरों का पालन एवं संरक्षण करने वाला, प्रतिपोषक पिता, अच्छा आतिथेय, भरोसेमन्द मित्र, सामाजिक व्यक्ति और सभी भौतिक सुखों से युक्त होता है।

यदि चतुर्थ भाव में मीन राशि हो और चन्द्रमा रेवती नक्षत्र में स्थित हो तो यह जातक की दो माताओं का होना इंगित करता है, विशेषकर यदि यह शनि से पीड़ित हो तो संभावनायें अधिक होती हैं।

शरीर के अंग - दोनों कांख।

व्यवसाय - पशु-पालन से सम्बन्धित कार्य, सड़क निर्माण से जुड़ा कार्य, अनाथालय, धर्मशाला, होटल, पर्यटन आदि।

नक्षत्रों का लिंग

नक्षत्रों के लिंग से मुख्यतः सन्तान का लिंग ज्ञात किया जाता है। इसके लिए दशा/अन्तर्दशा नाथ के नक्षत्र के साथ-साथ प्रथम सन्तान के लिए पंचमेश एवं पंचम भाव को दृष्ट करने वाले ग्रह के नक्षत्र, द्वितीय सन्तान के लिए सप्तमेश एवं सप्तम भाव को दृष्ट करने वाले ग्रह के नक्षत्र और तृतीय सन्तान के लिए नवमेश एवं नवम भाव को दृष्ट करने वाले ग्रह के नक्षत्र को देखकर होने वाली सन्तान के लिंग का अनुमान लगाया जाता है।

कभी-कभी जातक के चरित्र का भी अनुमान इन नक्षत्रों से लगाया जाता है। पुरुष संज्ञक नक्षत्रों में जन्में जातकों में पौरुषता की अधिकता होती है और ऐसे व्यक्ति अच्छे लेखक, योद्धा, प्रखर वक्ता एवं पुरुषत्व के कार्य करने वाले होते हैं। जिन स्त्रियों का जन्म पुरुष संज्ञक नक्षत्रों में होता है उनके कार्यों में पुरुषत्व की अधिकता होती है और उनमें उग्रता एवं अहंकार की भावना होती है।

स्त्री संज्ञक नक्षत्रों में जन्में जातकों में स्त्रीयोचित्त गुण पाये जाते हैं। ऐसे जातक स्वतन्त्र निर्णय लेने में सक्षम नहीं होते हैं और दूसरों के अधीन रहकर जीवन यापन करने में अधिक सन्तुष्ट होते हैं। लेकिन ऐसे जातक अच्छे शोधकर्ता और शास्त्र ज्ञाता भी होते हैं। जिन स्त्रियों का जन्म स्त्री संज्ञक नक्षत्रों में होता है उनके कार्यों में ममता, सहष्णुता और परोपकार की भावना होती है और ये अपने कार्य क्षेत्रों के साथ-साथ जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफल होती हैं।

जिन जातकों का जन्म नपुसंक नक्षत्रों में होता है वे अच्छे यौद्धा, सैनिक और चिकित्सक सिद्ध होते हैं। इन जातकों का स्वतन्त्र स्वभाव होता है, शुरुआत करने में अग्रसर होते हैं और व्यवहार में पुरुषों की भान्ति ही होते हैं तथा स्वतन्त्र जीवनवृत्ति का अनुशरण करने वाले होते हैं। इन नक्षत्रों में जन्मी जातिकायें मिश्रित स्वभाव की होती हैं। पुरुष अथवा स्त्री संज्ञक नक्षत्रों में जन्में जातकों को नपुसंक संज्ञक नक्षत्रों में जन्में जातकों से ताल-मेल करने में कठिनाई होती हैं, अतः विवाह के समय नक्षत्र के लिंग के आधार पर भी मिलान करके परिणाम कहना चाहिए।

पुरुष संज्ञक नक्षत्र	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद
स्त्री संज्ञक नक्षत्र	भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, रेवती
नपुसंक नक्षत्र	मृगशिरा, मूल, शतभिषा

नक्षत्रों का वर्गीकरण

अभिजित नक्षत्र को मिलाकर सभी 28 नक्षत्रों को सात वर्गों में विभाजित किया गया है। इन वर्गों को और जिन विभिन्न कार्यों के लिए ये वर्ग अनुकूल होते हैं, उनको नीचे दिया गया है।

1. **क्षिप्र-लघुः**

   हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित, ये क्षिप्र एवं लघु नक्षत्र हैं जो यात्रा करने, दुकान के निर्माण एवं प्रारम्भ करने, विक्रय करने, शिक्षा का प्रारम्भ करने, गहने-जवाहरात बनाने एवं पहनने, मैत्री या साझेदारी करने, कला सीखने एवं दिखाने, नए कार्य को सीखने आदि के लिए अनुकूल होते हैं।

2. **उग्र-क्रूरः**

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा, ये आक्रामक स्वभाव के नक्षत्र हैं जो शल्य चिकित्सा, हथियारों का क्रय-विक्रय अथवा प्रयोग, हत्या, विश्वासघात, अग्नि से सम्बन्धित अशुभ कार्य, चोरी, विष देना, विष सम्बन्धित दवाइयों पर खोज आदि क्रूर प्रकृति के सभी कार्यों के लिए अनुकूल होते हैं।

3. **मिश्र-साधारणः**

विशाखा एवं कृतिका, मिश्र एवं साधारण स्वभाव के नक्षत्र हैं जो अग्नि सम्बन्धित कार्यों, धातुओं को गरम करके अथवा गलाकर ढालने, गैस सम्बन्धित कार्यों, सजाने-सवांरने, दवा निर्माण आदि के लिए अच्छे होते हैं।

4. **ध्रुव-स्थिरः**

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी, ये ध्रव-स्थिर नक्षत्र हैं जो स्थिर स्वभाव के सभी कार्यों जैसे कि मकान की नींव रखना, कुआं खोदना, मकान का निर्माण, उपनयन, कृषि सम्बन्धित कार्य, नौकरी प्रारम्भ करना आदि के लिए शुभ होते हैं।

5. **मृदु-मैत्रः**

मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा, ये मृदु एवं मैत्र नक्षत्र हैं जो गायन, संगीत सीखने, वस्त्र सिलवाने एवं पहनने, क्रीड़ा, खेल की सूक्ष्मताओं को सीखने, मित्र बनाने, गहने-जवहरात बनाने एवं पहनने आदि शुभ कार्यों के लिए शुभ होते हैं।

6. **चर-चलः**

स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज, ये चर-चल नक्षत्र हैं जो ऐसे सभी कार्य जिनमें गति की आवश्यकता होती है जैसे कि वाहन की सवारी करना, घुड़सवारी या हाथी की सवारी करना, यात्रा करना आदि के लिए शुभ होते हैं।

7. **तीक्ष्ण-दारूणः**

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा एवं आश्लेषा, ये चार नक्षत्र तीक्ष्ण-दारूण नक्षत्र कहलाते हैं जो तान्त्रिक क्रियाओं (दूर से दूसरे को हानि पहुंचाने का कार्य), हत्या, काला जादू, आक्रमक एवं मृत्यु तुल्य कृत्यों, जानवरों को प्रशिक्षण देने एवं अपने वश में करने, साधना जैसे कि हठ योग आदि कार्यों के लिए अच्छे होते हैं।

उपरोक्त वर्गीकरण के अतिरिक्त नक्षत्रों को उनकी दृष्टि के अनुसार ऊर्ध्वमुखी, अधोमुखी एवं तिर्यङ् मुखी इन तीन वर्गों में भी बांटा गया है जो अपने नामानुसार इंगित कार्यों के लिए अनुकूल होते हैं।

1. **ऊर्ध्वमुखी नक्षत्रः**

आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी को ऊधर्वमुखी नक्षत्र कहते हैं। ये नक्षत्र बहुमंजिले भवन, घर, मन्दिर निर्माण एवं उद्यान सम्बन्धित कार्यों के साथ-साथ ऐसे सभी कार्यों के लिए अनुकूल होते हैं जिनमें उपर की ओर देखना पड़ता है।

2. **अधोमुखी नक्षत्रः**

मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा नक्षत्रों को अधोमुखी नक्षत्र कहते हैं। भूमि से जुड़े कार्य जैसे कि कुएं, तालाब के लिए भूमि खोदने, नींव रखने के लिए भूमि खोदने, भूमि के नीचे निर्माण कार्य के लिए, खदान के लिए, भूमि के अन्दर गन्दे पानी की निकासी के कार्य की खुदाई आदि इन सभी कार्यों के लिए ये नक्षत्र अनुकूल होते हैं जिनमें नीचे की ओर देखना पड़ता है।

3. **तिर्यङ् मुखी नक्षत्रः**

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, स्वाति, पुनर्वसु, अश्विनी और ज्येष्ठा नक्षत्र का मुख सीधा होता है अर्थात इनकी दृष्टि सामने की ओर है तथा ये नक्षत्र यात्रा एवं यात्रा सम्बन्धित कार्य जैसे कि वाहन चलाना, वाहन में चढ़ना, सड़क निमार्ण आदि एसे सभी कार्यों के लिए अनुकूल होते हैं जिनमें सामने देखने की आवश्यकता होती है।

वराहमिहिर ने अपने अनमोल ग्रन्थ वृहत् संहिता में मेदिनी ज्योतिष के अन्तर्गत भारत के विभिन्न भागों को विभिन्न नक्षत्रों में आगे दी गई तालिका के अनुसार आबंटित किया है।

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र का नाम	आबंटित क्षेत्र
27, 1, 2	रेवती, अश्विनी, भरणी	हिमाचल प्रदेश, गंगा-यमुना डेल्टा
3, 4, 5	कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा	अभिभाजित पंजाब जिसमें पाकिस्तान और हरियाणा भी शामिल था
6, 7, 8	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य	दक्षिणी बिहार और बंगाल एवं असम को मिलाकर भारत का पूर्वी भाग
9, 10, 11	आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी	उड़ीसा का क्षेत्र
12, 13, 14	उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा	दक्षिणी राज्य, श्रीलंका
15, 16, 17	स्वाति, विशाखा, अनुराधा	कोंकण क्षेत्र
18, 19, 20	ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा	महाराष्ट्र और सिंध
21, 22, 23	उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा	गुजरात, राजस्थान, उज्जैन
24, 25, 26	शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद	नेपाल, भूटान, कश्मीर, लद्दाक

अध्याय 19

वर्ग-कुण्डलियां

भचक्र के 360 अंशों के कुल विस्तार को 30-30 अंशों की 12 राशियों में बांटा गया है और प्रत्येक राशि को एक निश्चित नियमानुसार आगे कई भागों में बांटा गया है। ये भाग ही वर्ग कुण्डलियां कहलाते हैं।

वैदिक ज्योशिशास्त्र में वर्ग कुण्डलियां वे आधार भूत यंत्र हैं जो फलित कथन में अति सहायक सिद्ध होती हैं। वैदिक ज्योतिषाचार्य इन्हीं के आधार पर फलकथन कहते आये हैं। इनके आधार पर कहे गये सटीक परिणामों के कारण ही हिन्दू ज्योतिषशास्त्र, पूरे विश्व में अपनी श्रेष्ठता एवं उच्चता बनाये हुए है। मुख्य रुप से वर्ग कुण्डलियों का प्रयोग ग्रह के बल के आंकलन के लिए किया जाता है। ज्योतिषशास्त्र का यह सर्वमान्य नियम है कि केवल बली ग्रह ही अपने कारकत्व के अनुसार अच्छे परिणाम देने में सक्षम होता है। निर्बली ग्रह अपने कारकत्व के अनुसार न केवल अच्छे परिणाम देने में अक्षम होता है अपितु जिस भाव में स्थित होता है अथवा जिस भाव में गोचर करता है उसके परिणामों में भी अशुभ लाता है। उदाहरण के लिए जन्म कुण्डली का पंचमेश, अन्य चीजों के साथ-साथ शिक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। यदि यह विभिन्न वर्गों में अपनी राशि, मित्र की राशि अथवा उच्च राशि में स्थित होता है तो सम्बन्धित जातक की शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्तियां निश्चित रुप से उच्च स्तर की होंगीं।

श्री के. एन. राव इस सदी के प्रथम ज्योतिषाचार्य है जिन्होंने सटीक परिणाम देने के लिए वर्गों का हतप्रद कर देने वाला प्रयोग किया है। इनके द्वारा सन्तान के जन्म हेतु सप्तांश वर्ग का प्रयोग इनकी पुस्तक ***"प्लेनट्स एण्ड चिल्ड्रन"*** में प्रकाशमय है।

महर्षि पराशर ने एक राशि को 16 भागों में बांटकर निम्नलिखित 16 वर्गों को कहा है:

1.	राशि	डी-1	9.	षोडशांश	डी-16
2.	होरा	डी-2	10.	विंशांश	डी-20
3.	द्रेष्कोण	डी-3	11.	चतुर्विंशांश	डी-24
4.	चतुर्थांश	डी-4	12.	सप्तविंशांश	डी-27
5.	सप्तांश	डी-7	13.	त्रिशांश	डी-30
6.	नवांश	डी-9	14.	खवेदांश	डी-40
7.	दशमांश	डी-10	15.	अक्षवेदांश	डी-45
8.	द्वादशांश	डी-12	16.	षश्ट्यंश	डी-60

इनमें से सामान्यतः उपयोग किये जाने वाले वर्गों के तीन समूह इस प्रकार से हैं:

1. षडवर्ग अर्थात 6 वर्गों का समूह

1.	राशि	डी-1	4.	नवांश	डी-9
2.	होरा	डी-2	5.	द्वादशांश	डी-12
3.	द्रेष्कोण	डी-3	6.	त्रिशांश	डी-30

2. सप्तवर्ग अर्थात 7 वर्गों का समूह

1.	राशि	डी-1	5.	द्वादशांश	डी-12
2.	होरा	डी-2	6.	त्रिशांश	डी-30
3.	द्रेष्कोण	डी-3	7.	सप्तांश	डी-7
4.	नवांश	डी-9			

3. दशवर्ग अर्थात 10 वर्गों का समूह

1.	राशि	डी-1	6.	त्रिशांश	डी-30
2.	होरा	डी-2	7.	सप्तांश	डी-7
3.	द्रेष्कोण	डी-3	8.	दशमांश	डी-10
4.	नवांश	डी-9	9.	षोडशांश	डी-16
5.	द्वादशांश	डी-12	10.	षश्ट्यंश	डी-60

वर्गों का महत्व

1. हिन्दू ज्योतिष के स्वर्णिम युग में वर्गों को एक विशिष्ट स्थान एवं महत्व था। सम्बन्धित वर्ग कुण्डली का विचार किये बिना कोई भी फल कथन नहीं किया जाता था। लेकिन आज के भौतिकवाद के युग में जब धन की लोलुपता अधिक है और समय की कमी है, आधुनिक तथा कथित ज्योतिषाचार्य, वर्गों का प्रयोग मुश्किल से ही करते हैं और यदि कोई करता भी है तो केवल नवांश का ही प्रयोग करता है। यही कारण है कि अधिकतर ज्योतिषाचार्य सामान्यत: सटीक परिणाम कहने में असमर्थ होते हैं। श्री के. एन. राव के द्वारा आरम्भ की गई ज्योतिष की नई वैज्ञानिक पद्धति में विशिष्ट प्रभाव के साथ वर्गों के प्रयोग को पुनर्जीवित किया गया है।

2. मूल रुप से वर्गों का प्रयोग ग्रहों के बल के आंकलन के लिए किया जाता है। एक बली ग्रह जो दशवर्ग में सुस्थित होता है अत्याधिक शुभ परिणाम देता है। नवांश वर्ग में जो ग्रह अपनी राशि कुण्डली की स्थिति की पुनरावृति करता है, वह वर्गोत्तम कहलाता है और वर्गोत्तम ग्रह, एक उच्च ग्रह की भान्ति ही अच्छे परिणाम देता है। दशवर्ग के समूह में दो या दो से अधिक वर्गों में अपनी स्थिति की पुनरावृत्ति करने वाले, अर्थात जिस राशि में राशिकुण्डली में है दूसरे वर्गों में भी उसी राशि में स्थित होने वाले ग्रहों को अलग-अलग विशेषणों से पहचाना जाता है। ग्रहों के यह विशेषण इस प्रकार से हैं:

    1. यदि एक ग्रह दो वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **परिजात** संज्ञा होती है।

    2. यदि एक ग्रह तीन वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **उत्तम** संज्ञा होती है।

    3. यदि एक ग्रह चार वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **गोपुर** संज्ञा होती है।

    4. यदि एक ग्रह पांच वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **सिंहासन** संज्ञा होती है।

    5. यदि एक ग्रह छ: वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **पारावत** संज्ञा होती है।

6. यदि एक ग्रह सात वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **देवलोक** संज्ञा होती है।

7. यदि एक ग्रह आठ वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **ब्रह्मलोक** संज्ञा होती है।

8. यदि एक ग्रह नौ वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **शक्रवाहन** या **ऐरावत** संज्ञा होती है।

9. यदि एक ग्रह दश वर्गों में पुनरावृति करता है तो इसकी **श्रीधाम** संज्ञा होती है।

उत्तम संज्ञक पंचमेश जातक का उच्च शिक्षित बनाता है, गोपुर संज्ञक विद्वान बनाता है और यश-कीर्ति देता है जबकि सिंहासन संज्ञक पंचमेश जातक को मंत्री अथवा राजा का सलाहकार बनाता है।

3. वर्ग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र जैसे धन-सम्पति, विवाह, सन्तान, व्यवसाय आदि का अध्ययन करने में अतिसहायक होते हैं।

4. जो ग्रह अधिकतर वर्गों में अशुभ प्रभाव से मुक्त होता है वह अपनी दशा/अन्तर्दशा में अच्छे परिणाम देता है।

5. यदि कोई उच्च का ग्रह षडवर्गों में नीच अथवा शत्रु राशि में होता है तो वह अच्छे परिणाम नहीं देता है।

6. इसके विपरीत यदि नीच का ग्रह, षडवर्गों में उच्च का हो जाता है अथवा स्वराशि या मित्र राशि में स्थित होता है तो उसकी स्थिति में सुधार हो जाता है। वर्गोत्तम नीच का ग्रह भी अच्छे परिणाम देता है।

7. वर्गोत्तम लग्न और दो या तीन वर्गोत्तम ग्रह, धन-दौलत और समृद्धि देते हैं।

8. फलित कथन में नवांश कुण्डली का लग्नेश भी अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अन्य ग्रहों से इसका दृष्टि या युति का सम्बन्ध शुभ परिणाम देने के लिए मंगलकारी हो जाता है।

9. यदि राशि एवं नवांश, दोनों कुण्डलियों के लग्नेश बली हो और शुभ युतियों में हों तो जातक का जीवन आनन्दमय और समृद्धिशाली होता है।

10. इसी प्रकार राशि एवं द्रेष्कोण, दोनों कुण्डलियों के लग्नेश सुस्थित हो तो जीवनवृत्ति में सफलता देते हैं। जातक चारों दिशाओं में अपनी अच्छी छवि बनाता है और खुशियां बिखेरता है।

11. फलदीपिका के अनुसार यदि शुभ ग्रह, षडवर्ग में बल प्राप्त करते हैं तो जातक का जीवन सुख एवं समृद्धि की ओर अग्रसर होता है तथा वह धनवान एवं दीर्घायु होता है।

12. फलदीपिका के अनुसार ही यदि षडवर्ग में लग्नेश अशुभ राशियों में स्थित होता है तो जातक अल्पायु, दरिद्र और दुष्ट प्रवृति का होता है, लेकिन यदि लग्नेश का राशीश बलवान हो तो इन अशुभ परिणामों में कुछ सीमा तक कमी आ जाएगी और जातक उच्च पद प्राप्त करेगा।

13. होरा रत्नम् के अनुसार सप्तवर्ग में विभिन्न अशुभ वर्गों में स्थित ग्रह जातक को क्रूर बनाते हैं जबकि शुभवर्गों में स्थित ग्रह जातक को कृपा करने वाला और दयालु बनाते हैं।

14. वर्गोत्तम ग्रह, उच्च ग्रह के समान ही व्यवहार करते हैं और श्रेष्ठ परिणाम देते हैं।

15. नीच का ग्रह अथवा वर्गों में शत्रु राशि में स्थित ग्रह अपनी दशा में संकट उत्पन्न करता है।

16. यदि राशि कुण्डली में अपनी नीच राशि में स्थित ग्रह, नवांश कुण्डली में उच्च का हो जाता है अथवा मित्र राशि में स्थित होता है तो वह अशुभ परिणाम नहीं देता है।

17. यदि राशि कुण्डली में अपनी उच्च राशि में स्थित ग्रह नवांश कुण्डली में नीच का हो जाता है तो यह अच्छे परिणाम नहीं देता है। यदि षडवर्ग में अधिकतर ग्रह अपने नवांशेश से दृष्ट हों अथवा नवांशेश की राशि में हों तो उनकी दशा खुशियां लाने वाली होती है और शुभ परिणाम देती है।

18. यदि षडवर्ग के अधिकतर वर्गों में लग्न एवं लग्नेश शुभ योग में स्थित हो तो जातक का जीवन सुखमय होता है, अन्यथा विपरीत परिणाम होते हैं।

19. यदि लग्न एवं नवांश, दोनों कुण्डलियों का लग्नेश शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का जीवन सफल और विशिष्ट होता है।

20. यदि राशि कुण्डली के अशुभ ग्रह नवांश कुण्डली में सुस्थित हों तो अपने परिणामों में सुधार लाते हैं।

इन सिद्धान्तों के अन्तर्गत, आइये विभिन्न वर्ग कुण्डलियों की चर्चा करते हैं।

1. राशि कुण्डली (डी-1):

यह मुख्य आधार भूत कुण्डली होने के कारण सबसे अधिक महत्वपूर्ण कुण्डली होती है जो लग्न कुण्डली के नाम से भी जानी जाती है। हिन्दू ज्योतिष में चन्द्र कुण्डली, अर्थात जन्म के समय चन्द्रमा द्वारा गृहीत राशि को लग्न मानकर बनाई कुण्डली का प्रयोग राशि कुण्डली के नाम से भी होता है लेकिन वर्गों में जिस राशि कुण्डली का विचार किया जाता है वह लग्न कुण्डली ही होती है। इस कुण्डली के आधार भूत महत्व को स्पष्ट समझ-लेना अतिआवश्यक है। जिस भी शुभाशुभ घटना की संभावनायें यह कुण्डली नहीं दर्शाती है उनकी प्राप्ति अन्य वर्ग कुण्डलियों के आधार पर नहीं होती है। उदाहरण के लिए यदि लग्न कुण्डली में सन्तानहीनता के योग हैं और दशा चक्र भी संभावनायें नहीं दिखा रहा है तो सन्तान का जन्म नहीं हो सकता है। इसी प्रकार जीवन के अन्य क्षेत्रों का भी विचार किया जाता है।

सभी वर्गों को उदाहरण से समझने के लिए आगे महात्मा गान्धी की जन्म कुण्डली का विवरण दिया गया है जिसे उदाहरण के रुप में लेकर हम सभी वर्ग कुण्डलियों को बनायेंगे और समझेंगें।

लग्न कुण्डली

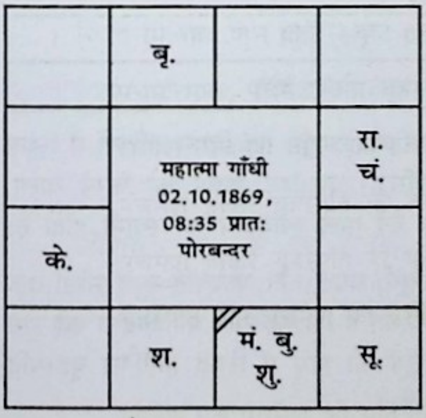

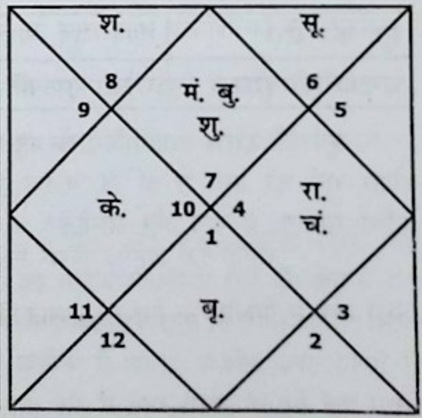

लग्न 11°56'	सूर्य 16°55'	चन्द्रमा 28°15'	मंगल 26°23'
बुध 11°45'	बृहस्पति 28°08'	शुक्र 24°26'	शनि 20°20'
राहु 12°08'	केतु 12°08'		

2. होरा (डी-2):

होरा से धन-सम्पति, समृद्धि और द्वितीय भाव के अन्य कारकत्वों का विचार किया जाता है।

इस वर्ग में प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 15-15 अंश के दो भागों में विभाजित किया जाता है। विषम राशियों के प्रथम 15 अंश सूर्य की होरा में और दूसरे 15 अंश चन्द्रमा की होरा में होते हैं जबकि सम राशियों में इसके विपरीत प्रथम 15 अंश चन्द्रमा की होरा में और दूसरे 15 अंश सूर्य की होरा में होते हैं।

उदाहरण कुण्डली में लग्न विषम राशि का होकर प्रथम 15 अंशों में है अत: सूर्य की होरा में है। सूर्य सम राशि का होकर 15 अंश से अधिक है अत: सूर्य की होरा में स्थित है। चन्द्रमा सम राशि में स्थित होकर 15 अंश से अधिक है अत: सूर्य की होरा में है, मंगल विषम राशि में स्थित होकर 15 अंश से अधिक है अत: चन्द्रमा की होरा में है। इसी प्रकार से विभाजन करने पर बुध, सूर्य की होरा में, बृहस्पति एवं शुक्र चन्द्रमा की होरा में, शनि, सूर्य की होरा में और राहु-केतु, चन्द्रमा की होरा में होंगे। इस प्रकार से इस कुण्डली का जो होरा वर्ग बनेगा वह आगे दिया जा रहा है।

होरा कुण्डली

सूर्य की होरा	लग्न, सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शनि
चन्द्रमा की होरा	मंगल, बृहस्पति, शुक्र, राहु, केतु

सूर्य की होरा: वराहमिहिर के अनुसार यदि अशुभ ग्रह विषम राशियों में स्थित होकर सूर्य की होरा में हों तो जातक प्रसिद्ध, बड़े-बड़े कार्यों को करने वाला, शक्ति-सम्पन्न, धनवान और सम्मोहित कर देने वाले व्यक्तित्व का स्वामी होता है।

सूर्य की होरा में स्थिति अशुभ ग्रह, सूर्य, मंगल और बृहस्पति कुछ सीमा तक अच्छे परिणाम देते हैं। कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि बृहस्पति का चन्द्रमा की होरा में स्थित होना अधिक अच्छा है क्योंकि सूर्य की होरा में स्थित होने पर बृहस्पति जिगर एवं पेट के उपरी भाग में रोग देता है।

1. यदि सूर्य एवं मंगल विषम राशियों में स्थित होकर सूर्य की होरा में स्थित हों तो जातक को अत्याधिक साहस और बल प्रदान करते हैं। यह राजनीति और उच्च पदों पर सफलता देते हैं तथा किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने की प्रवृति एवं क्षमता देते हैं।

2. सूर्य की होरा में स्थित आत्मकारक (सबसे अधिक अंशों में स्थित ग्रह) आध्यात्मिक उन्नति देता है।

3. अधिकतर ग्रहों का सूर्य की होरा में और लग्न का चन्द्रमा की होरा में स्थित होना आर्थिक समृद्धि देता है।

4. सम राशियों और सूर्य की होरा में स्थित ग्रह भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति और आत्मविश्वास देते हैं लेकिन मानसिक शान्ति में विघ्न डालते हैं।

5. सूर्य की होरा में स्थित ग्रहों की प्रवृति सही अथवा गलत, किसी भी प्रकार से धन देने की होती है।

6. यदि कुण्डली में अन्य योग भी हों तो सूर्य की होरा में स्थित बुध, शिक्षा में बाधा उत्पन्न करता है।

7. इसी प्रकार सूर्य की होरा में स्थित चन्द्रमा दिमागी शान्ति में खलल डालता है और भावुकता से भरी परेशानियां देता है। यहां यह फल कथन कहने से पूर्व, चन्द्रमा पर पड़ने वाले दृष्टि प्रभाव का विचार करना भी आवश्यक है।

8. यदि कुण्डली में अन्य योग भी स्थित हों तो सूर्य की होरा में स्थित शुक्र, शारीरिक सम्बन्ध बनाने की क्षमता में कमी देता है और वैवाहिक जीवन में विघ्न डालता है।

9. विषम राशि और सूर्य की होरा में स्थित पंचमेश, पुत्र सन्तान देता है।

10. विपरीत स्वभाव के ग्रह की होरा में स्थित होने पर ग्रह के नैसर्गिक कारकत्वों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

विशेष: *यह देखा गया है कि आध्यात्मिक क्षेत्र में विशिष्टता रखने वाले जातकों की कुण्डलियों में सूर्य, चन्द्रमा की होरा में और चन्द्रमा, सूर्य की होरा में होता है। इस परिणाम के अभिप्राय की अलग अध्याय में विस्तार से चर्चा की गई है।*

चन्द्रमा की होराः वराहमिहिर के अनुसार यदि सम राशियों के होकर शुभ ग्रह, चन्द्रमा की होरा में हों तो जातक आकर्षक, संवेदनशील, सुखी, लोकप्रिय, बुद्धिमान और मधुरभाषी होता है।

1. शुभ और स्त्री संज्ञक ग्रह, चन्द्रमा की होरा में स्थित होने पर श्रेष्ठ परिणाम देते हैं। यह जातक को रुपवान बनाते हैं, व्यक्तित्व में आकर्षण देते हैं और स्त्रियों के मध्य लोकप्रिय बनाते हैं।
2. चन्द्रमा की होरा में स्थित शुभ ग्रह का लग्न, जातक को भाग्यवान, विद्वान, बुद्धिमान और हंसी-मजाक पसन्द करने वाला व्यक्ति बनाता है।
3. चन्द्रमा की होरा में स्थित सम राशि का लग्न, जातक को कम परिश्रम और प्रयास से ही अत्याधिक धन-सम्पति देता है।
4. चन्द्रमा की होरा में स्थित शुक्र जातक को मधुर व्यवहार, आकर्षक व्यक्तित्व और उच्च वर्ग की स्त्रियों की संगति देता है। इस संदर्भ में अन्य योगों को भी देखना चाहिए।
5. चन्द्रमा की होरा में स्थित बुध, जातक को उच्च बौधिक क्षमता और उच्च शैक्षिक विद्या देता है।
6. सम राशि और चन्द्रमा की होरा में स्थित बृहस्पति जातक को उच्च पद और कभी-कभी आर्थिक क्षेत्र में नौकरी देता है।
7. सम राशि और चन्द्रमा की होरा में स्थित पंचमेश कन्या सन्तान देता है।
8. विषम राशियों के प्रथम 15 अंशों में स्थित सूर्य, मंगल और बृहस्पति अधिक बलवान होते हैं जबकि सम राशियों के द्वितीय भाग के 15 अंशों में स्थित चन्द्रमा, शुक्र और शनि श्रेष्ठ परिणाम देते हैं।

3. नवांश (डी-9):

यह एक अन्य महत्वपूर्ण वर्ग है। हिन्दू ज्योतिषाचार्यों के सटीक फलकथन का अधिकतर श्रेय इस वर्ग कुण्डली को ही जाता है। जन्म कुण्डली के किसी भी ग्रह के बलाबल को यह वर्ग स्पष्ट रुप से दर्शाता है। यद्यपि नवांश कुण्डली को मुख्य

रुप से विवाह के समय निर्धारण, वैवाहिक जीवन, उसकी प्रकृति, जीवनसाथी के चरित्र, विवाह से प्राप्त होने वाली खुशियों और परेशानियों आदि के लिए देखा जाता है लेकिन साथ ही साथ यह जीवन के अन्य क्षेत्रों के विषय में भी महत्वपूर्ण सूत्र देती है। अतः इसको लग्न कुण्डली और चन्द्र कुण्डली की भान्ति ही महत्व देने की आवश्यकता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र के विषय में और विशेषकर विवाह के विषय में इस कुण्डली की विवेचना किए बिना कोई भी फल कथन नहीं करना चाहिए।

भचक्र की 30 अंशों की प्रत्येक राशि को, 3 अंश 20 मिनट के नौ बराबर भागों में विभाजित किया जाता है। इसका यह मान नक्षत्र के 3 अंश 20 मिनट के एक चरण से भी सम्बन्धित होता है। नवांश कुण्डली को कई तरीकों से बनाया जा सकता है लेकिन यहां हम सबसे आसान तरीके का वर्णन कर रहे हैं जिससे इसे आसानी से याद रखा जा सके।

चूंकि प्रत्येक नवांश 3°20' का होता है और एक राशि में नौ नवांश होते हैं, अतः सर्वप्रथम लग्न अथवा ग्रह के भोगांशों को देखकर उसकी नवांश संख्या सुनिश्चित कर लें। 0° से 3°20' तक प्रथम नवांश, 3°20' से 6°40' तक द्वितीय नवांश, 6°40' से 10° तक तृतीय नवांश, 10° से 13°20' तक चतुर्थ नवांश, 13°20' से 16°40' तक पंचम नवांश, 16°40' से 20° तक षष्टम नवांश, 20° से 23°20' तक सप्तम नवांश, 23°20' से 26°40' तक अष्टम नवांश और 26°40' से 30° तक नवम नवांश होता है। उदाहरणतः यदि किसी ग्रह का भोगांश 22°40' है तो यह स्पष्ट है कि वह सप्तम नवांश में है।

नवांश संख्या ज्ञात करने के पश्चात् ग्रह द्वारा गृहीत राशि के आधार पर निम्नलिखित तरीके से गणना होगी।

1. यदि ग्रह चर राशियों (1, 4, 7 एवं 10 अर्थात मेष, कर्क, तुला एवं मकर) में स्थित है तो गणना उसी राशि से प्रारम्भ होगी जिस राशि में ग्रह स्थित है।
2. यदि ग्रह स्थिर राशियों (2, 5, 8 एवं 11 अर्थात वृषभ, सिंह, वृश्चिक एवं कुंभ) में स्थित है तो गणना ग्रह द्वारा गृहीत राशि से नवम भाव से प्रारम्भ होगी।
3. यदि ग्रह द्विस्वभाव राशियों (3, 6, 9 एवं 12 अर्थात मिथुन, कन्या, धनु एवं मीन) में स्थित है तो गणना ग्रह द्वारा गृहीत राशि से पंचम भाव से प्रारम्भ होगी।

उदाहरण: महात्मा गान्धी की कुण्डली

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न, 11:56 का है अतः चतुर्थ नवांश में है। यह चर राशि का है अतः गणना इसी राशि से प्रारम्भ होगी। तुला राशि से गिनने पर चतुर्थ राशि मकर राशि आती है अतः नवांश कुण्डली का लग्न मकर होगा। सूर्य, द्विस्वभाव राशि कन्या में स्थित होकर 6वें नवांश में है अतः गिनती कन्या से पंचम, मकर राशि से प्रारम्भ होगी। मकर से 6वीं राशि मिथुन है अतः नवांश कुण्डली में सूर्य, मिथुन राशि में होगा। चन्द्रमा, चर राशि कर्क में 28°15' का होकर 9वें नवांश में है अतः गिनती कर्क से ही प्रारम्भ होगी। कर्क से नवम राशि, मीन है अतः चन्द्रमा, मीन नवांश में होगा। मंगल, चर राशि तुला में 26°23' का होकर 8वें नवांश में है अतः गणना तुला से प्रारम्भ होगी। तुला राशि से 8वीं राशि वृषभ है अतः मंगल वृषभ नवांश में होगा। इसी प्रकार से अन्य ग्रहों की नवांश की स्थिति को ज्ञात किया जा सकता है।

इस प्रकार से नवांश ज्ञात करने के बाद निम्नलिखित नवांश कुण्डली बनेगी। चन्द्रमा

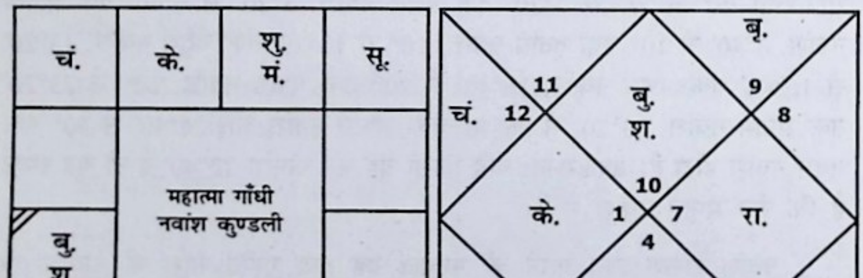

नवांश बनाने की एक अन्य विधि:

सर्वप्रथम ग्रह की नवांश की संख्या ज्ञात कर लें। ग्रह की नवांश की संख्या में ग्रह द्वारा गृहीत राशि में आगे दी गई सारिणी के अनुसार, राशि को प्रदत संख्या जोड़ दें। प्राप्त संख्या उस राशि को इंगित करेगा जिस राशि में ग्रह नवांश कुण्डली में होना चाहिए।

सारिणी

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
संख्या	0	9	6	3	0	9	6	3	0	9	6	3

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न, तुला राशि के 4थे नवांश में है। उपरोक्त सारिणी में तुला राशि के लिए संख्या 6 को दर्शाया गया है, अतः 4 में 6 का योग करने पर 10 प्राप्त होता है जो मकर राशि के लग्न को इंगित करता है। इसी प्रकार सूर्य, कन्या राशि में 6वें नवांश में है। कन्या राशि के लिए 9 को दर्शाया गया है। 6 में 9 का योग करने पर 15 आता है। चूंकि भचक्र में 12 राशियां ही हैं अतः 15 में से 12 घटाने पर 3 आता है जो मिथुन राशि को इंगित करता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के लिए गणना करके नवांश कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है।

विशेष: *चर राशि में प्रथम नवांश, स्थिर राशि में पंचम नवांश और द्विस्वभाव राशि में नवम नवांश में स्थित ग्रह वर्गोत्तम होता है। इसका अर्थ है कि ग्रह नवांश में भी उसी राशि में होगा जिस राशि में लग्न कुण्डली में है।*

फलदीपिका के अनुसार यदि लग्नेश, नवांश में बली हो तो जातक को सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं।

होरा रत्नम् के अनुसार खोई वस्तु की स्थिति का अनुमान नवांश से जानना चाहिए।

वर्गोत्तम नवांश:

वर्गोत्तम का अर्थ पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है। चर राशि में प्रथम नवांश, स्थिर राशि में पंचम नवांश और द्विस्वभाव राशि में नवम नवांश में स्थित ग्रह वर्गोत्तम होता है। होरा रत्नम् के अनुसार वर्गोत्तम लग्न में जन्मा जातक अपनी जाति में प्रमुख, प्रतिष्ठित और समृद्ध व्यक्ति होगा।

एक ग्रह निम्नलिखित छः स्थितियों में से किसी भी एक स्थिति का होकर वर्गोत्तम हो सकता है।

1. उच्च राशि का होकर।
2. मूलत्रिकोण राशि का होकर।
3. स्वराशि का होकर।

4. मित्र राशि का होकर।
5. शत्रु राशि का होकर।
6. नीच राशि का होकर।

ग्रह की अपनी स्थिति के अनुरुप उपरोक्त क्रमानुसार ही उसके परिणाम देने की क्षमता में भी न्यूनता आती है। एक नीच राशि का वर्गोत्तम ग्रह किस प्रकार के परिणाम देगा इस विषय में ज्योतिषाचार्य अलग-अलग मत रखते हैं। हम उन ज्योतिषाचार्यों के मत से अधिक सहमत हैं जिनका यह मानना है कि नीच राशि का वर्गोत्तम ग्रह अत्याधिक अशुभ परिणाम देगा।

1. शास्त्रीय ग्रन्थों में षडवर्ग में विभिन्न वर्गों को उनके महत्व के अनुसार निम्नलिखित अंक प्रदान किये गए हैं:

राशि	होरा	द्रेष्कोण	नवांश	द्वादशांश	त्रिशांश
6	2	4	5	2	1

इस तालिका से भी स्पष्ट हो जाता है कि नवांश का महत्व भी लगभग लग्न कुण्डली के समान ही है। अतः नवांश कुण्डली का अध्ययन किए बिना कोई भी फल नहीं कहना चाहिए। दक्षिण भारत के सभी ज्योतिषाचार्य इस वर्ग को लग्न कुण्डली के समान ही महत्व देते हैं।

2. यह वर्ग ग्रह के बलाबल को दर्शाता है। लग्न कुण्डली का नीचस्थ ग्रह, इसमें उच्च का हो सकता है और अपनी स्थिति में सुधार कर सकता है। इसी प्रकार उच्च का ग्रह, नीच का होकर अपनी स्थिति में न्यूनता ला सकता है। प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार यदि नीच का ग्रह, नवांश में उच्च का हो जाता है तो यह उच्च ग्रह के समान ही परिणाम देता है। यद्यपि इसको इस प्रकार से कहना अधिक उचित होगा कि चूंकि ग्रह की स्थिति में सुधार होता है अतः वह उतने अशुभ परिणाम नहीं देता है जितने की उसको देने चाहिए।

3. कुण्डली के बल को देखने के लिए लग्न कुण्डली के राजयोगों को गिनें। इनकी संख्या की नवांश के राजयोगों से तुलना करें। यदि नवांश में राजयोगों की संख्या कम नहीं होती है तो जन्मकुण्डली का बल स्थिर होता है। लेकिन यदि नवांश में राजयोगों की संख्या में कमी होती है तो लग्न कुण्डली उतनी बली नहीं होती है जितना कि उसे इन योगों के कारण होना चाहिए।

4. यदि लग्न कुण्डली का लग्नेश, नवांश में बली होता है तो एक निधि के समान होता है और जातक प्रभाव एवं समृद्धता बढ़ती है। जातक पारिजात के मतानुसार किसी भी जातक के व्यक्तित्व का अनुमान, लग्नकुण्डली के लग्नेश की नवांश में स्थिति अथवा लग्न कुण्डली के लग्न में स्थित बली ग्रह से लगाया जा सकता है।

5. सामान्यत: जन्मकुण्डली में लग्न, चन्द्रमा एवं सूर्य में से जो सर्वाधिक बली होता है उसके दशमेश के द्वारा आजीविका का निर्णय किया जाता है। लेकिन यह मात्र 50 प्रतिशत मामलों में ही सही सिद्ध होता है। इससे भी अधिक सटीक परिणाम दशमेश के नवांशेश के द्वारा प्राप्त हो सकते हैं।

6. **64वां नवांश:** चिकित्सा ज्योतिष में 64वें नवांश के स्वामी को अशुभ माना जाता है और यह अपनी दशा/अन्तर्दशा में रोगों से पीड़ा देता है। जैसा कि हम जानते हैं कि प्रत्येक राशि में नौ नवांश होते हैं। यदि लग्न भाव से गणना करें तो सप्तम भाव तक 63 नवांश समाप्त हो जाते हैं और 64वां नवांश अष्टम भाव का प्रथम नवांश होता है। अत: अष्टम भाव से सम्बन्धित होने के कारण इसका सम्बन्ध मृत्यु से है जिसके परिणाम स्वरुप इसे अशुभ माना जाता है।

   गणना: जन्मकुण्डली में चन्द्रमा के भोगांशों को, चन्द्रमा से अष्टम भाव की राशि में रखकर पूर्व में वर्णित नियमानुसार उससे नवांश का निर्धारण करें। यहां से नवांश की गणना करने पर जिस भाव में चन्द्रमा के भोगांश आते हैं उस भाव में 64वां नवांश होगा और इस राशि का स्वामी 64वें नवांश का स्वामी कहलायेगा।

   सामान्य नवांश कुण्डली में चन्द्रमा जिस राशि में आता है, उस राशि से चतुर्थ भाव की राशि में ही 64वां नवांश होता है। अत: दोनों प्रकार से 64वें नवांश और इसके स्वामी को ज्ञात किया जा सकता है।

उदाहरण: महात्मा गान्धी के कुण्डली

महात्मा गान्धी की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा कर्क राशि में 28°15' का होकर नवम नवांश में है। कर्क से अष्टम भाव में कुंभ राशि आती है जो स्थिर राशि है। कुंभ राशि में चन्द्रमा के भोगांश रखकर नवांश निकालने के लिए हमें स्थिर राशि होने के कारण कुंभ से नवम भाव अर्थात तुला राशि से नवांश की गणना

प्रारम्भ करनी होगी। इस प्रकार, तुला से नौ नवांश गिनने पर मिथुन राशि में 64वां नवांश आता है। मिथुन राशि का स्वामी बुध, 64वे नवांश का स्वामी कहलायेगा।

दूसरी विधि से देखें तो महात्मा गान्धी की कुण्डली का नवांश वर्ग, जो हमने पहले बनाया है उसमें चन्द्रमा मीन राशि में आता है। मीन राशि से चतुर्थ भाव में मिथुन राशि आती है, अतः मिथुन राशि में ही 64वां नवांश होगा।

7. **नवांश और विवाहः** विवाह के समय निर्धारण, वैवाहिक जीवन, जीवनसाथी के स्वभाव एवं व्यवहार, चरित्र, शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं, कुण्डली मिलान, वियोग एवं विरह आदि के लिए नवांश वर्ग का प्रयोग किया जाता है।

(क) सुखी वैवाहिक जीवन के लिए नवांश का लग्न और जन्मकुण्डली का सप्तमेश, महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि ये दोनों बली हों, सुस्थित हों और शुभ ग्रहों से सम्बन्धित हों तो वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। अधिक सूक्ष्मता से देखने के लिए नवांश वर्ग के सप्तम भाव एवं सप्तमेश के बल की भी विवेचना करनी चाहिए।

सूर्य-चन्द्रमा का नवांश वर्ग में सम-सप्तम होना वैवाहिक जीवन में लगातार क्लेश इंगित करता है। आत्मत्याग के स्वामी शनि की द्वादश भाव में स्थिति, शयन कक्ष के सुख अर्थात रति सुख के न होने को इंगित करती है।

(ख) लग्न कुण्डली के लग्नेश की स्थिति का नवांश कुण्डली में विश्लेषण करें। यदि यह

1. चन्द्रमा के साथ होता है तो भार्या अतिसुन्दर और प्रफुल्लता वाली होती है।

2. शुक्र के साथ होता है तो भार्या अतिसुन्दर और कलात्मक सोच वाली होती है।

3. बृहस्पति के साथ होता है तो भार्या धार्मिक और पवित्र विचारों वाली होती है।

सूर्य अहंकारी, शनि अधम, मंगल आक्रमक एवं क्रोधी, राहु-केतु अविश्वसनीय, धूर्त एवं निम्न सोच वाला जीवनसाथी देता है।

(ग) कुण्डली मिलान करते समय नवांश कुण्डली के लग्न अथवा चन्द्रमा की राशि का भार्या के नवांश के लग्न अथवा चन्द्रमा द्वारा गृहीत राशि से करके, उनके आपसी सम्बन्ध का निर्णय किया जाता है।

नवांश कुण्डली का लग्न यदि पाप ग्रहों से सम्बन्धित होकर पीड़ित हो और जन्म कुण्डली का सप्तमेश भी नवांश कुण्डली में पाप ग्रहों से पीड़ित होकर निर्बली हो तो जातक आजीवन अविवाहित रह सकता है।

8. **नवांश में चन्द्रमा की स्थितिः** फलित ज्योतिष में चन्द्रमा की नवांश में स्थिति को अति महत्व दिया गया है। नवांश कुण्डली में चन्द्रमा की विभिन्न राशियों की स्थिति के फल इस प्रकार से हैं:

1. मेष नवांश - सेनाध्यक्ष और धनवान।
2. वृषभ नवांश - स्थूलकाय शरीर।
3. मिथुन नवांश - विद्वान, लेखक और सुन्दर देह वाला।
4. कर्क नवांश - गहरे रंग का शरीर।
5. सिंह नवांश - धनी और बलिष्ठ।
6. कन्या नवांश - पतला शरीर और कोमल वाणी।
7. तुला नवांश - विपरीत लिंग के जातकों में लोकप्रिय, सुन्दर आंखें, सत्ता सम्पन्न जातकों से अनुग्रहित।
8. वृश्चिक नवांश - विकृत अंग, घुमक्कड़ प्रवृति।
9. धनु नवांश - कृश शरीर, उदार, धार्मिक और धन-सम्पतिवान।
10. मकर नवांश - गहरे रंग वाला, लोभी।
11. कुंभ नवांश - भार्या द्वारा शासित अर्थात स्त्री के वश में रहने वाला और कपटी।
12. मीन नवांश - कोमल वाणी वाला, धार्मिक और पुत्रवान।

वराहमिहिर के पुत्र पृथ्युशस ने अपने ग्रन्थ होरासार में विभिन्न राशियों के नवांशों में जन्म होने के फल कहे हैं जो इस प्रकार से हैं:

1. **मेष नवांशः** यदि किसी जातक का जन्म मेष नवांश में होता है तो वह दुष्ट, चोर और व्याकुल प्रवृति का होगा।
2. **वृषभ नवांशः** जातक विद्वान, सुखी और स्थूलकाय शरीर वाला होगा और उसकी कन्या सन्तान अधिक होंगी।
3. **मिथुन नवांशः** जातक दिखने में सुन्दर, कई प्रकार की विद्याओं में सुशिक्षित और बुद्धिमान होगा।
4. **कर्क नवांशः** जातक चिड़चिड़ा, झुके शरीर वाला, धनवान और विदेश यात्राओं में आसक्त होगा।
5. **सिंह नवांशः** जातक एकान्तवासी, घमण्डी, पतली कमर और निर्बल दान्तों वाला होगा।
6. **कन्या नवांशः** जातक उदार, विदेशी भूमि में वास करने वाला, उपहार देने में उदारचित्त, दूसरों की सहायता करने वाला और जीवन के पूर्व भाग में सुखी होगा।
7. **तुला नवांशः** जातक कृश देह, अधिक धनवान नहीं, कम पुत्रों वाला और सम्बन्धियों से घृणा करने वाला होगा।
8. **वृश्चिक नवांशः** जातक बुद्धिमान, क्षीण दृष्टि, क्रूर और पाप कर्मों में लिप्त होगा।
9. **धनु नवांशः** जातक धन-सम्पति वाला, शुभ गुणों से युक्त लेकिन आलसी और सरलता से सन्तुष्ट होने वाला होगा।
10. **मकर नवांशः** जातक अस्थिर बुद्धि वाला, क्रूर और रतिसुख की अधिक इच्छा रखने वाला होगा।
11. **कुंभ नवांशः** जातक दयाहीन, धूर्त, घुमक्कड़, अतिव्ययी और समस्याओं से युक्त होगा।
12. **मीन नवांशः** दूसरी स्त्रियों की इच्छा करने वाला, एक से अधिक भार्यावाला, धनवान और जलीय वस्तुओं से लाभ कमाने वाला होगा।

9. यदि नवांश कुण्डली के षष्टेश और अष्टमेश, दोनों ही पीड़ित हों तो जातक, पीठ के दर्द से पीड़ित रहता है।

4. द्रेष्कोण (डी-3):

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 10-10 अंश के तीन भागों में विभाजित किया जाता है। 0 से 10 अंश तक प्रथम द्रेष्कोण, 10 से 20 अंश तक द्वितीय द्रेष्कोण और 20 से 30 अंश तक तृतीय द्रेष्कोण होता है। यदि लग्न अथवा ग्रह प्रथम द्रेष्कोण में होते हैं तो उसी राशि में रहते हैं, द्वितीय द्रेष्कोण में स्थित ग्रह अपने से पंचम भाव की राशि में और तृतीय द्रेष्कोण में स्थित ग्रह अपने से नवम भाव की राशि में चले जाते हैं।

प्रथम द्रेषकोण, नारद द्रेष्कोण, द्वितीय द्रेष्कोण, अगस्म्य द्रेष्कोण और तृतीय द्रेष्कोण, दुर्वासा द्रेष्कोण भी कहलाता है।

उदाहरण: महात्मा गान्धी की कुण्डली

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न, तुला राशि में 11°56' का होकर द्वितीय द्रेष्कोण में है, इसलिए द्रेष्कोण का लग्न इससे पंचम भाव की राशि का होगा। तुला से पंचम राशि कुंभ है अत: द्रेष्कोण का लग्न, कुंभ राशि का होगा। सूर्य, कन्या राशि में 16°55' का होकर द्वितीय द्रेष्कोण में है, इसलिए द्रेष्कोण में यह कन्या से पंचम अर्थात मकर राशि का होगा। चन्द्रमा, कर्क राशि में 28°15' का होकर तृतीय द्रेष्कोण में है इसलिए द्रेष्कोण वर्ग में यह कर्क से नवम भाव की राशि अर्थात मीन राशि का होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों को भी स्थापित करने के पश्चात जो द्रेष्कोण वर्ग कुण्डली बनेगी वह इस प्रकार से होगी:

चं.		के.	शु. मं.
बु.	महात्मा गाँधी द्रेष्कोण कुण्डली		श.
सू.			
बृ.	रा.		

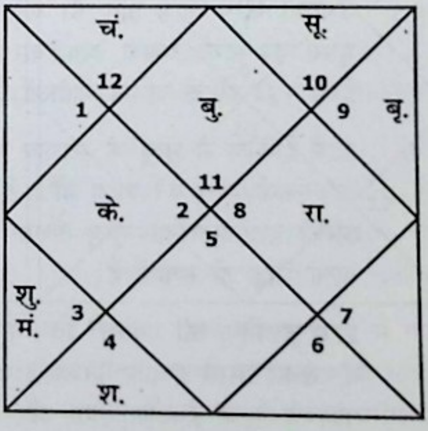

फलदीपिका के अनुसार यदि द्रेष्कोण का लग्न बली हो तो जातक सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति करेगा और वह राजा होगा। यदि द्रेष्कोण का लग्नेश, द्रेष्कोण वर्ग में स्वराशि, उच्च राशि अथवा मित्र राशि का हो तथा होरा, त्रिशांश एवं द्वादशांश वर्ग के लग्नेश भी अपने-अपने वर्गों में इसी स्थिति में हो तो जातक अनेकानेक गुणों से युक्त होता है। वह चतुर, दीर्घायु, दयावान, पवित्र, यशस्वी, राजाओं के सदृश भोग भोगने वाला, पुत्र सुख पाने वाला और धनवान होता है।

1. इस वर्ग को मुख्यतः भाई-बहनों और उनसे प्राप्त होने वाले सुखों के लिए देखा जाता है। यह जातक के भाई-बहनों की संख्या को भी इंगित करता है।

2. वराहमिहिर के अनुसार यदि द्रेष्कोण में चन्द्रमा स्वगृही अथवा मित्र गृही हो तो जातक आकर्षक और सचरित्र होता है। यदि चन्द्रमा किसी अन्य ग्रह के द्रेष्कोण में होता है तो उस ग्रह के स्वभावानुसार ही जातक का स्वभाव होगा।

3. **आयुध द्रेष्कोणः** मेष का प्रथम एवं तृतीय, मिथुन का द्वितीय एवं तृतीय, सिंह का तृतीय, कन्या का द्वितीय, तुला का तृतीय और धनु का प्रथम एवं तृतीय द्रेष्कोण आयुध द्रेष्कोण कहलाते हैं।

   सर्प द्रेष्कोणः कर्क का तृतीय, वृश्चिक का प्रथम और मीन का तृतीय द्रेष्कोण सर्प द्रेष्कोण कहलाते है।

   पक्षी द्रेष्कोणः वृषभ का तृतीय द्रेष्कोण पक्षी द्रेष्कोण कहलाता है।

   यदि चन्द्रमा सर्प द्रेष्कोण में हो तो जातक बदला लेने वाला और दूसरों को उत्तेजित करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा आयुध द्रेष्कोण में हो तो जातक दूसरों को मारने अथवा हत्या करने का उत्सुक होता है। यदि चन्द्रमा पक्षी द्रेष्कोण में हों तो जातक यात्राओं का शौकीन होता है।

4. 22वें द्रेष्कोण से मृत्यु के स्वभाव का अनुमान किया जाता है। 22वें द्रेष्कोण का स्वामी मृत्यु देने वाला होता है। यदि कुण्डली में अन्य योग भी हों तो इसकी दशा/अन्तर्दशा, मृत्यु अथवा गंभीर शारीरिक परेशानियां एवं कष्ट देने वाली सिद्ध हो सकती है।

   22वें द्रेष्कोण की गणनाः लग्न कुण्डली में लग्न के भोगांश को अष्टम भाव में रखकर उससे द्रेष्कोण निकालें। यहां से जिस राशि में द्रेष्कोण आता है उस राशि में 22वां द्रेष्कोण होगा और उसका स्वामी, 22वें द्रेष्कोण का स्वामी कहलाता है।

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न, तुला राशि में 11°56' का होकर द्वितीय द्रेष्कोण में है। लग्न के भोंगाश को अष्टम भाव में रखें, जिसमें वृषभ राशि है। चूंकि यह द्वितीय द्रेष्कोण में है इसलिए वृषभ से पंचम भाव की राशि, कन्या में 22वां द्रेष्कोण आयेगा। यदि हम महात्मा गान्धी की द्रेष्कोण कुण्डली को देखते हैं तो हम पाते हैं कि लग्न से अष्टम भाव में कन्या राशि है। चूंकि इसका सम्बन्ध भी अष्टम भाव से आता है इसलिए इसे भी अशुभ माना जाता है।

जिन-जिन व्यक्तियों की हिंसात्मक मृत्यु हुई है उन सभी मामलों में शनि, मंगल, राहु अथवा केतु का सम्बन्ध 22वें द्रेष्कोण से होगा अथवा द्रेष्कोण का लग्न इन ग्रहों से पीड़ित होगा। महात्मा गान्धी की कुण्डली में शनि एवं मंगल की अष्टम भाव पर दृष्टि है अर्थात 22वें द्रेष्कोण से दृष्टि सम्बन्ध है।

5. **द्रेष्कोण के लग्न और त्रिकोण में स्थित अशुभ ग्रहः** यदि शनि लग्न में हो और त्रिकोण में अन्य अशुभ ग्रह हों तो यह एक रोगग्रस्त शरीर को इंगित करते हैं। लग्न में स्थित मंगल, मृत्यु को दर्शाता है जबकि लगनस्थ सूर्य, रोग, विकृतता अथवा मृत्यु को इंगित करता है। सारावली के अनुसार द्रेष्कोण के द्वारा रोग से ग्रस्त अंग को भी ज्ञात किया जाता है।

6. **बालारिष्टः** यदि द्रेष्कोण कुण्डली के लग्न में अशुभ द्रेष्कोण उदय हो रहा हो और अशुभ ग्रहों की युति एवं दृष्टि से पीड़ित भी हो, तो यह जातक की बचपन में ही मृत्यु होने को इंगित करता है। सर्प एवं पाश द्रेष्कोण, अशुभ द्रेष्कोण कहलाते हैं।

7. **अनुज का लिंगः** यदि द्रेष्कोण कुण्डली के तृतीय भाव में पुरुष राशि हो और पुरुष ग्रहों द्वारा गृहीत हो अथवा दृष्ट हो तथा मंगल भी बली हो तो जातक का छोटा भाई होगा।

8. **भाइयों से सम्बन्धः** द्रेष्कोण कुण्डली के तृतीय भाव का अध्ययन करें। इस भाव में अशुभ ग्रहों की स्थिति भाइयों से अच्छे सम्बन्धों के लिए शुभ नहीं है। साथ ही साथ भाइयों से अच्छे सम्बन्धों के द्रेष्कोण कुण्डली के तृतीयेश को लग्नेश का मित्र होना भी आवश्यक है।

9. **यात्रा प्रारम्भ करने का शुभ समयः** आयुध द्रेष्कोण में यात्रा प्रारम्भ नहीं करनी चाहिए क्योंकि इसका परिणाम पराजय, विवाद और हानि होता है। इस

नियम का प्रयोग विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए खिलाडियों की यात्रा के समय निर्धारण में भी किया जा सकता है।

10. **चोरी और चोर की पहचान:** वराहमिहिर और इनके पुत्र पृथ्युशस ने चोरी हुई वस्तुओं की पुनः प्राप्ति, चोर के विवरण और इनकी दिशा को ज्ञात करने में द्रेष्कोण कुण्डली का प्रयोग बताया है।

11. जातक पारिजात के अनुसार यदि शुभ द्रेष्कोण, शुभ ग्रहों की युति अथवा दृष्टि से प्रभावित हों तो जातक को विशेष सफल, अच्छी, सुखी और विख्यात सन्तान देते हैं।

12. **श्लोंकों का व्यापक व्याख्यान:** वराहमिहिर ने धनु राशि के प्रथम द्रेष्कोण के रुप को घोड़े के शरीर, मानव के मुख और हाथों में धनुष-बाण लिए हुए वर्णित किया है। इसका यह अभिप्राय भी हो सकता है कि जातक अत्याधिक उर्जावान होगा जो अपनी योजनाओं को पूर्ण करने में उद्यत रहेगा। अनुभव में यह देखा गया है कि जिन जातकों का जन्म धनु के प्रथम द्रेष्कोण में हुआ हो उनमें ये सब गुण विद्यमान होते हैं।

14. **व्यवसाय:** वृहत्जातकम् के अनुसार यदि द्रेष्कोण कुण्डली के लग्न से केन्द्र में स्थित होकर शनि, बुध को देखता हो तो जातक एक कलाकार होता है।

15. **चिकित्सा ज्योतिष:** यदि लग्न में द्वितीय द्रेष्कोण उदय हो रहा हो और शनि षष्टम भाव में हो तो जातक को पीठ का दर्द रहता है।

5. चतुर्थांश (डी-4):

यह वर्ग सौभाग्य, चलाचल सम्पति और वाहन के लिए विशेष विचारणीय होता है। अपना घर बनाने अथवा स्वामित्व प्राप्त करने के लिए इस वर्ग का अच्छा प्रयोग होता है। इस विषय में जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी के जुलाई, 1999 के संस्करण में छपे मेरे लेख को देखें।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 7°30' के चार भागों में विभाजित किया जाता है। किसी भी राशि के 0° से 7°30' के प्रथम भाग में स्थित ग्रह उसी राशि में रहता है, 7°30' से 15° के द्वितीय भाग में स्थित ग्रह अपने से चतुर्थ राशि में चला जाता है, 15°से 22°30' के तृतीय भाग में स्थित ग्रह अपने से सप्तम राशि में और 22°30' से 30° में स्थित ग्रह अपने से दशम भाव की राशि में चला जाता है।

उदाहरणः महात्मा गान्धी की कुण्डली

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न, तुला राशि में 11°56' का होकर द्वितीय भाग में स्थित है इसलिए तुला से चतुर्थ राशि अर्थात मकर राशि में चला जाएगा। अतः चतुर्थांश का मकर लग्न होगा। सूर्य, कन्या राशि में 16°55' का होकर तृतीय भाग में है इसलिए कन्या से सप्तम राशि, मीन में चला जाएगा। चन्द्रमा, कर्क राशि में 28°15' का होकर चतुर्थ भाग में है, इसलिए कर्क से दशम भाव की राशि मेष में चला जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों को भी स्थापित करने के बाद नीचे दर्शायी गई चतुर्थांश कुण्डली प्राप्त होगी।

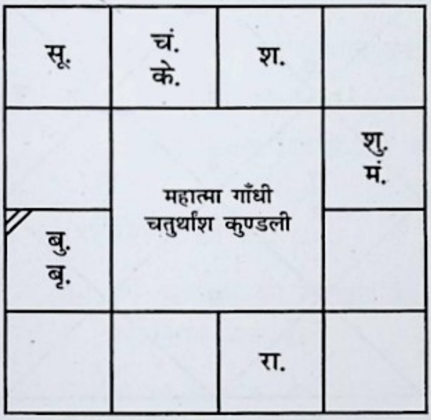

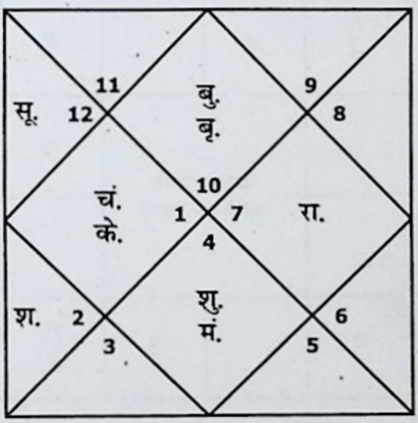

6. सप्तांश (डी-7):

इस वर्ग को सन्तान, सन्तान से प्राप्त होने वाले सुख, सन्तान के लिंग और सन्तान से सम्बन्धित अन्य क्षेत्रों के लिए देखा जाता है। इस वर्ग के प्रभावशाली प्रयोग को देखने के लिए श्री के. एन. राव की पुस्तक 'प्लेनट्स एण्ड चिल्ड्रन' को देखें।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 4°17' के सात भागों में विभाजित किया जाता है। यदि ग्रह विषम राशि में हो तो सप्तांशों की गणना उसी राशि से प्रारम्भ की जाती है और यदि सम राशि में हो तो गणना ग्रह से सप्तम भाव की राशि से प्रारम्भ की जाती है।

उदाहरणः महात्मा गान्धी की कुण्डली

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न विषम राशि तुला में 11°56' का होकर 3रे सप्तांश में है, इसलिए गणना यहीं से प्रारम्भ होगी और तुला से 3री राशि धनु

होती है। अतः सप्तांश का लग्न धनु होगा। सूर्य, सम राशि कन्या में 16°55' का होकर 4थे सप्तांश में है, इसलिए गणना कन्या से सप्तम, मीन राशि से प्रारम्भ होगी। मीन राशि से 4थी राशि, मिथुन है, अतः सप्तांश वर्ग में सूर्य मिथुन राशि में होगा। इसी प्रकार चन्द्रमा सम राशि कर्क में 28°15' का होकर 7वें सप्तांश में है। सम राशि में होने के कारण चन्द्रमा के सप्तांश की गणना मकर राशि से प्रारम्भ होगी। मकर राशि से सप्तम राशि कर्क है अतः सप्तांश वर्ग में चन्द्रमा कर्क राशि में होगा। इसी प्रकार सभी ग्रहों को स्थापित करने के पश्चात् जो सप्तांश कुण्डली बनेगी वह इस प्रकार से होगी:

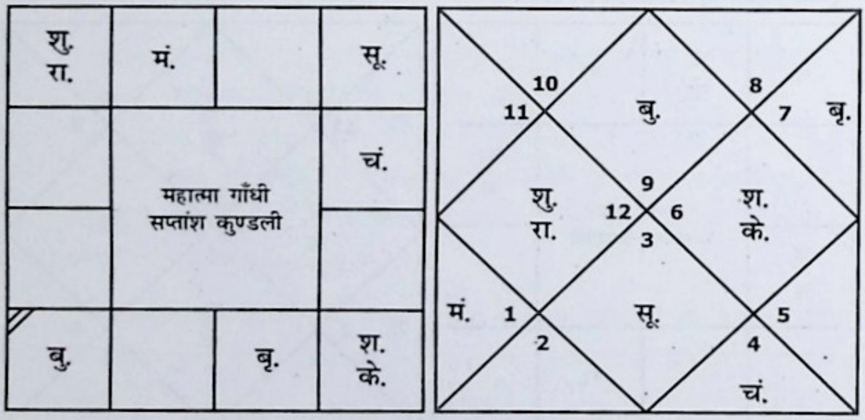

सप्तांश कुण्डली में जन्म कुण्डली के लग्नेश और पंचमेश की स्थिति की जांच करें। यदि यह सुस्थित हों और शुभ ग्रहों के प्रभाव में हों तो सन्तान सभी प्रकार के सुखों को प्रदान करने वाली होगी और प्रसिद्धि एवं सफलता प्राप्त करके जातक का नाम रोशन करेगी।

1. यदि सप्तांश के लग्न में विषम राशि हो और यह शुभ ग्रहों के युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो जातक को अपने पुत्रों से अत्याधिक सुख और आनन्द प्राप्त होता है। यदि अशुभ ग्रहों का प्रभाव लग्न पर हो तो विपरीत परिणाम होता है।

2. यदि लग्न में सम राशि हो और यह शुभ ग्रहों के युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो जातक की पुत्रियां अत्याधिक सुख और आनन्द का स्त्रोत होती हैं। यदि अशुभ ग्रहों का प्रभाव लग्न पर हो तो विपरीत परिणाम होता है।

3. मानसागरी के अनुसार यदि सप्तांश कुण्डली के लग्न में चन्द्रमा हो अथवा अन्य कोई शुभ ग्रह हो तो जातक पराक्रमी, प्रतापी, सहयोगी और एक साहसी

व्यक्ति होगा। वह मित्रवत व्यवहार करने वाला और अपने चारों ओर खुशियां फैलाने वाला व्यक्ति होगा।

4. यदि कोई ग्रह अन्तिम सप्तांश में होकर स्वराशि या उच्च का हो तो जातक घुड़सवारी का शौकीन होगा और कई खतरनाक कार्य करेगा। ऐसे जातक अपने मित्रों एवं भाइयों से दूर वास करते हैं।

5. सप्तांश कुण्डली में उच्च के शुभ ग्रहों की दशा जातक के लिए सौभाग्यशाली सिद्ध होती है और जातक को शासन से मान्यता दिलाती है।

6. यदि सप्तांश के तृतीय भाव में सूर्य, मंगल या बृहस्पति हो तो जातक नैतिकता के मार्ग पर चल कर धनवान बनता है।

7. सप्तांश के उच्च और बली ग्रहों की दशा जातक को धन और सुख देती है जबकि नीच अथवा निर्बली ग्रहों की दशा में प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

7. त्रिशांश (डी-30):

इस वर्ग कुण्डली का अध्ययन दुःख एवं सुख, अरिष्ट और चरित्र को ज्ञात करने के लिए किया जाता है।

त्रिशांश का शाब्दिक अर्थ है 30वां भाग अर्थात प्रत्येक राशि के 30 अंशों का 1-1 अंश के 30 भाग। लेकिन इसके नाम के विपरीत सम-विषम संज्ञानुसार प्रत्येक राशि को 5 भागों में विभाजित किया जाता है तथा इसमें विशेष बात यह है कि इन पांचों भागों के अंश भी समान नहीं होते हैं। इसके विषय में पण्डित रामयत्न ओझा ने अपनी पुस्तक 'फलितविकास' में लिखा है कि, "त्रिशांश की बात विलक्षण है। नाम तो त्रिशांश है परन्तु भाग पांच ही हैं।"

गणनाः विषम राशि के प्रथम पांच अंश का स्वामी मंगल; 5° से 10° का स्वामी शनि, 10° से 18° तक का स्वामी बृहस्पति, 18° से 25° का स्वामी बुध और 25° से 30° का स्वामी शुक्र होता है। सम राशियों में 0°-5° का स्वामी शुक्र, 5°-12° का स्वामी बुध, 12°-18° का स्वामी बृहस्पति, 18°-25° का शनि तथा 25°-30° का स्वामी मंगल होता है। इसको आगे सारिणीबद्ध करके दर्शाया गया है।

विषम राशि		सम राशि	
अंश	स्वामी	अंश	स्वामी
0°-5°	मंगल	0°-5°	शुक्र
5°-10°	शनि	5°-12°	बुध
10°-18°	बृहस्पति	12°-18°	बृहस्पति
18°-25°	बुध	18°-25°	शनि
25°-30°	शुक्र	25°-30°	मंगल

जन्म कुण्डली में जो ग्रह विषम राशि में होगा वह त्रिशांश में भी विषम राशि में और जो सम राशि में होगा वह त्रिशांश में भी सम राशि में ही रहेगा लेकिन अपने भोगांश के अनुसार उपरोक्त तालिका में दर्शाये गये ग्रह की सम या विषम राशि में चला जाएगा। उदाहरणतः यदि कोई ग्रह विषम राशि में 23 अंश का है तो वह उपरोक्त तालिका के अनुसार बुध की विषम राशि में चला जाएगा। **इसमें विशेष बात यह भी है कि त्रिशांश कुण्डली में कर्क और सिंह राशि के भाव में कोई भी ग्रह नहीं होगा तथा राहु-केतु एक ही राशि में होंगे।**

उदाहरणः महात्मा गान्धी की कुण्डली

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न विषम राशि का 11°56' का है अतः यह बृहस्पति के त्रिशांश में होगा। बृहस्पति की विषम राशि धनु होती है अतः त्रिशांश कुण्डली का लग्न धनु होगा। सूर्य, सम राशि में 16°55' का है अतः यह बृहस्पति के त्रिशांश में होगा और बृहस्पति की सम राशि मीन है, इसलिए त्रिशांश में सूर्य मीन राशि में होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों को भी स्थापित करने के उपरान्त हमारे पास जो त्रिशांश कुण्डली बनेगी वह इस प्रकार से होगी।

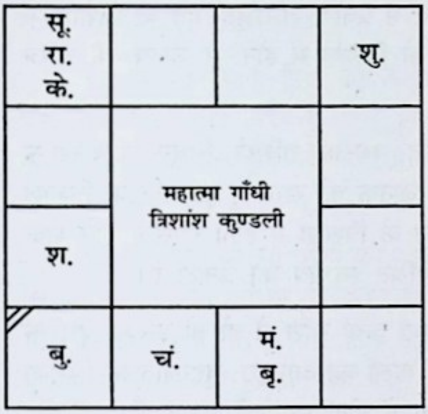

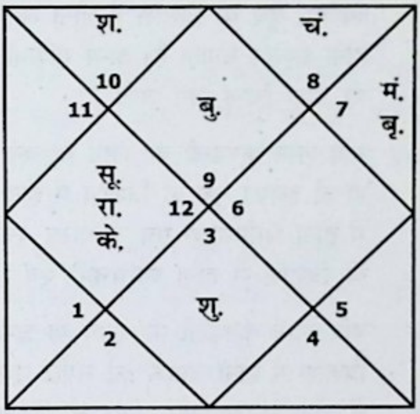

वराहमिहिर के मतानुसार

अपने त्रिशांश में स्थित मंगल बल, समृद्धि, व्यक्तित्व में आकर्षण और उद्यम देता है।

अपने त्रिशांश में स्थित शनि रोग, भार्या की हानि, चरित्रहानि और घर एवं नौकरों के साथ-साथ अस्वच्छता भी देता है।

अपने त्रिशांश में स्थित बृहस्पति धन-सम्पति, सुख, शिक्षा, सम्मान और आनन्द देता है।

अपने त्रिशांश में स्थित बुध बुद्धिमता, शिक्षा, काव्यगुण, वक्तृत्वशक्ति, कला और चपलता देता है।

अपने त्रिशांश में स्थित शुक्र आकर्षक व्यक्तित्व, धन-सम्पति, सन्तान, स्वास्थ्य और रतिसुख देता है।

मंगल के त्रिशांश में स्थित सूर्य और चन्द्रमा जातक को क्रूर और आक्रमक बनाते हैं।

1. यदि लग्न कुण्डली का लग्न या चन्द्रमा, मंगल की राशियों, मेष या वृश्चिक में हो तो इसका बृहस्पति के त्रिशांश में होना शुभ माना जाता है और यह जातक को सचरित्र एवं धर्मपरायण बनाता है।

2. यदि लग्न कुण्डली का लग्न या चन्द्रमा, शुक्र की राशियों, वृषभ या तुला में हो तो इसका शुक्र के त्रिशांश में होना जातक को एक अच्छा और शिक्षित

व्यक्ति, बुध के त्रिशांश में होना संगीत में प्रवीण और बृहस्पति के त्रिशांश में होना सज्जन बनाता है। अन्य राशियों के त्रिशांश में होने पर जातक के चरित्र पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है।

3. यदि लग्न कुण्डली का लग्न या चन्द्रमा, बुध की राशियों, मिथुन या कन्या में हो तो इसका बुध के त्रिशांश में होना जातक को सज्जन, बृहस्पति के त्रिशांश में होना धर्मपरायण एवं सच्चरित्र, शनि के त्रिशांश में होना नपुंसक और शुक्र के त्रिशांश में होना व्यभिचारी एवं मिश्रित स्वभाव का बनाता है।

4. यदि लग्न कुण्डली का लग्न या चन्द्रमा कर्क राशि में हो तो इसका बुध के त्रिशांश में होना जातक को संगीत एवं कला का आसक्त, बृहस्पति के त्रिशांश में होना सज्जन और मंगल के त्रिशांश में होना मनमौजी बनाता है।

5. यदि लग्न कुण्डली का लग्न या चन्द्रमा, सिंह राशि में हो तो इसका बुध के त्रिशांश में होना जातक को गठीले बदन वाला और बृहस्पति के त्रिशांश में होना सज्जन व्यक्ति बनाता है।

6. यदि लग्न कुण्डली का लग्न या चन्द्रमा, बृहस्पति की राशियों, धनु या मीन में हो तो इसका बुध के त्रिशांश में होना जातक को संगीत एवं कला का आसक्त, बृहस्पति के त्रिशांश में होना सज्जन और शुक्र के त्रिशांश में होना अनैतिक बनाता है।

7. यदि लग्न कुण्डली का लग्न या चन्द्रमा, शनि की राशियों, मकर या कुंभ में हो तो इसका बृहस्पति के त्रिशांश में होना जातक को सज्जन और शुक्र के त्रिशांश में होना अनैतिक बनाता है।

8. वराहमिहिर के अनुसार यदि किसी जातिका का लग्न अथवा चन्द्रमा, मंगल की राशियों में हो और मंगल, शनि, बुध या शुक्र के त्रिशांश में हो तो वह जातिका क्रमशः चरित्रहीन, नाचने वाली, अस्थिर सोच वाली और पापिनी होगी।

9. यदि किसी जातिका का लग्न अथवा चन्द्रमा, शुक्र की राशियों में हो तो इसका मंगल के त्रिशांश में होना जातिका को चरित्रहीन और शनि के त्रिशांश में होना **पुनर्भू** बनाता है। पूनर्भू उस स्त्री को कहते हैं जो प्रथम पति के जीवित होने पर भी दूसरा विवाह करती है।

8. द्वादशांश (डी-12):

इस वर्ग को माता-पिता की आयु, उनके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर, उनसे प्राप्त होने वाले सुख आदि के लिए किया जाता है। साथ ही साथ यह वर्ग जातक के उच्च चेतना की प्रवृति को भी दर्शाता है और भूत एवं भविष्य के जीवन के मध्य की कडी होता है।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 2°30' के 12 भागों में विभाजित किया गया है। ग्रह के भोगांशों के आधार पर द्वादशांश की संख्या को प्राप्त करके ग्रह द्वारा गृहीत राशि से ही गणना प्रारम्भ की जाती है और ग्रह को द्वादशांश की संख्या के समान दूर राशि में स्थापित किया जाता है।

उदाहरण: महात्मा गान्धी की कुण्डली

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न तुला राशि में 11°56' का होकर 5वें भाग में है। तुला राशि से 5वीं राशि कुंभ है इसलिए द्वादशांश कुण्डली का लग्न कुंभ हो जाएगा। सूर्य, कन्या राशि में 16°55' का होकर 7वें भाग में है। कन्या राशि से 7वीं राशि मीन है इसलिए सूर्य द्वादशांश में मीन राशि में होगा। चन्द्रमा, कर्क राशि में 28°15' का होकर 12वें भाग में है इसलिए यह कर्क से 12वीं राशि मिथुन में होगा। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों को स्थापित करने के पश्चात् जो द्वादशांश कुण्डली बनेगी वह इस प्रकार से होगी।

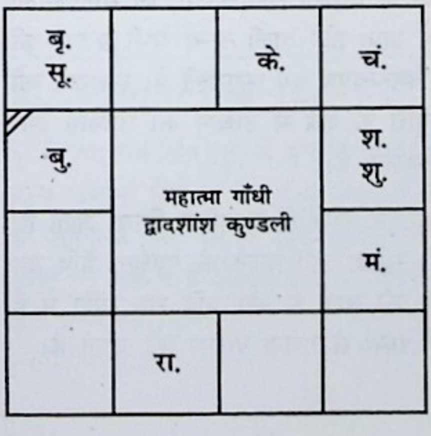

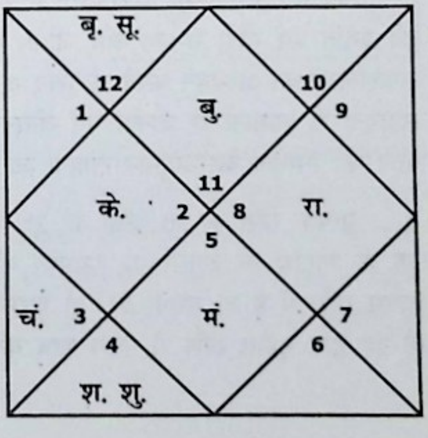

द्वादशांश वर्ग कुण्डली में लग्न कुण्डली के लग्न, लग्नेश, चतुर्थ भाव-चतुर्थेश और नवम भाव-नवमेश की स्थिति को देखें। यदि यह सुस्थित होकर शुभ ग्रहों के प्रभाव में हों तो जातक को अपने माता-पिता से सभी प्रकार के सुख-साधन प्राप्त होते हैं और उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भी श्रेष्ठ होती है।

1. यदि लग्न कुण्डली एवं द्वादशांश कुण्डली का लग्न एक ही है तो यह जातक के माता-पिता के अच्छे स्वास्थ्य, धन-सम्पति और सभी प्रकार की समृद्धियों के लिए शुभ होता है।
2. यदि द्वादशांश कुण्डली का लग्नेश लग्न कुण्डली में षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो तो जातक को अपने पिता से किसी भी प्रकार का लाभ नहीं होता है। यदि यह नीच का, अस्त अथवा अशुभ ग्रहों के साथ हो तो भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त होते हैं।
3. यदि द्वादशांश कुण्डली का लग्नेश लग्न कुण्डली में उच्च या स्वगृही हो, शुभ ग्रहों से सम्बन्धित हो तो यह माता-पिता एवं जातक, दोनों के लिए सौभाग्यशाली होता है और जातक को अपने माता-पिता से सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

9. दशमांश (डी-10):

यह वर्ग अजीविका, जीवनवृत्ति में प्राप्त होने वाली सफलताओं, इन सफलताओं की प्रवृति एवं स्तर, सम्मान और जीवन में प्राप्त होने वाली अन्य सभी प्रकार की सफलताओं का अध्ययन करने के लिए अतिमहत्वपूर्ण वर्ग कुण्डली है। इस वर्ग की सहायता से आसानी से जातक की जीवनवृत्ति के क्षेत्र में उत्थान की उच्चता और पतन की निम्नता का अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 3° के दस भागों में विभाजित किया जाता है। ग्रह के भोगांश के आधार पर दशमांश की संख्या ज्ञात करने के पश्चात् यदि ग्रह विषम राशि में है तो गणना वहीं से प्रारम्भ की जाती है और यदि सम राशि में है तो ग्रह द्वारा गृहीत राशि से नवम भाव की राशि से गणना प्रारम्भ की जाती है।

उदाहरण: महात्मा गान्धी की कुण्डली

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न विषम राशि तुला में 11°56' का होकर 4थे भाग में है। इसलिए गणना तुला राशि से ही प्रारम्भ होगी। तुला राशि से 4थी राशि मकर है इसलिए दशमांश कुण्डली का लग्न मकर राशि का होगा। सूर्य, सम राशि कन्या में 16°55' का होकर 6वें भाग में है। कन्या राशि से 9वीं राशि वृषभ है इसलिए गणना वृषभ से प्रारम्भ होगी और सूर्य, दशमांश में वृषभ से 6वीं राशि, तुला में होगा। चन्द्रमा, सम राशि कर्क में 28°15' का होकर 10वें भाग में है इसलिए गणना कर्क से 9वीं राशि मीन से प्रारम्भ होगी और चन्द्रमा इस वर्ग में मीन से 10वीं राशि धनु में होगा। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों को स्थापित करने के पश्चात् जो दशमांश कुण्डली बनेगी वह इस प्रकार से होगी।

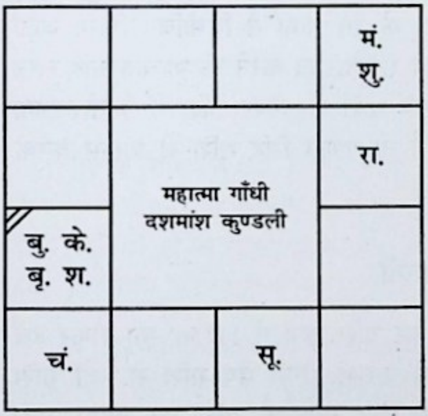

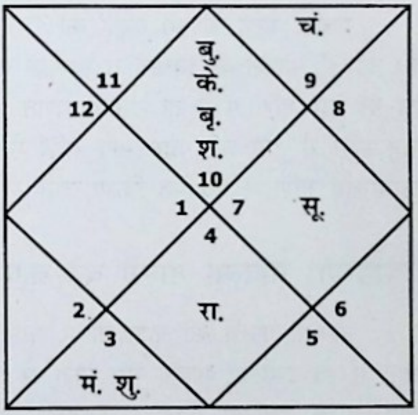

10. षोडशांश (डी-16):

यह वर्ग कालांश के रुप में भी जाना जाता है और इसका अध्ययन वाहन एवं अन्य सामान्य सुख के विषय में ज्ञात करने के लिए किया जाता है। कुछ ज्योतिषाचार्यो के मतानुसार इस वर्ग के द्वारा जातक की बहिनों की स्थिति के विषय में भी ज्ञात किया जा सकता है लेकिन इसका उदाहरण नहीं मिलता है। श्री के.एन. राव ने वाहन और इनसे होने वाली दुर्घटना के विषय में अध्ययन करने में इस वर्ग का विस्तार से प्रयोग किया है।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 1°52'30" के 16 भागों में विभाजित किया जाता है। महर्षि पराशर के मतानुसार ग्रह के भोगांश के आधार पर षोडशांश की संख्या ज्ञात करने के पश्चात् यदि लग्न या ग्रह चर राशि में है तो उसकी गणना मेष राशि से, स्थिर राशि में है तो गणना सिंह राशि से और यदि द्विस्वभाव राशि में है तो गणना धनु राशि से प्रारम्भ करके सम्बन्धित राशि में स्थापित किया जाता है।

11. विंशांश (डी-20):

यह वर्ग प्रार्थना, पूजा-उपासना और जातक को इनसे प्राप्त होने वाली प्रभु कृपा के लिए देखा जाता है। यह वर्ग ध्यान, आध्यात्मिक रुझान और धार्मिक क्रिया-कलापों के विषय में प्रचुर मात्रा में जानकारी देता है।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 1°30' के 20 भागों में विभाजित किया जाता है। ग्रह के भोगांश के आधार पर विंशांश की संख्या ज्ञात करने के पश्चात् यदि लग्न या ग्रह चर राशि में है तो उसकी गणना मेष राशि से, स्थिर राशि में है तो गणना धनु राशि से और यदि द्विस्वभाव राशि में है तो गणना सिंह राशि से प्रारम्भ करके सम्बन्धित राशि में स्थापित किया जाता है।

उदाहरण: महात्मा गान्धी की कुण्डली

महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न चर राशि तुला में 11°56' का होकर 8वें भाग में है। इसलिए गणना मेष राशि से ही प्रारम्भ होगी। मेष राशि से 8वीं राशि वृश्चिक है इसलिए विंशांश कुण्डली का लग्न वृश्चिक राशि का होगा। सूर्य, द्विस्वभाव राशि कन्या में 16°55' का होकर 12वें भाग में है। द्विस्वभाव राशि में स्थित होने के कारण गणना सिंह राशि से प्रारम्भ होगी और सूर्य, विशांश कुण्डली में सिंह से 12वीं राशि, कर्क में होगा। चन्द्रमा, चर राशि कर्क में 28°15' का होकर 19वें भाग में है इसलिए गणना मेष से प्रारम्भ होगी और मेष से 19वीं या 7वीं राशि तुला है इसलिए इस वर्ग में चन्द्रमा, तुला में होगा। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों को स्थापित करने के पश्चात् जो विंशांश कुण्डली बनेगी वह इस प्रकार से होगी।

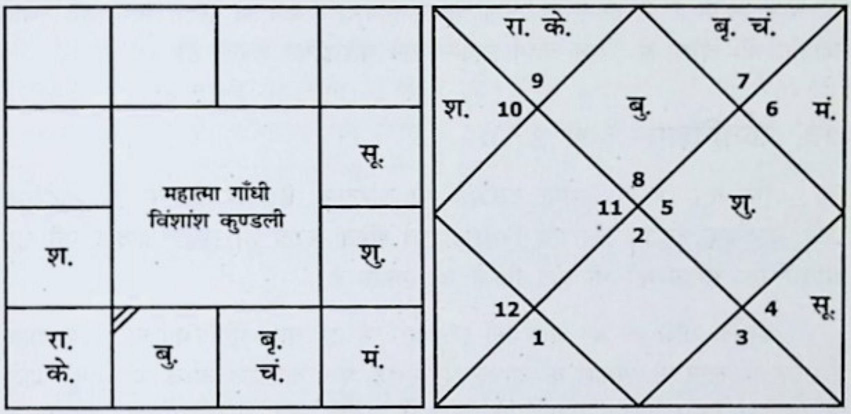

12. चतुर्विंशांश (डी-24):

इस वर्ग कुण्डली को शिक्षा-दीक्षा, विद्या और शैक्षिक प्राप्तियों के लिए देखा जाता है। इसें सिद्धांश भी कहते हैं।

प्रत्यके राशि के 30 अंशों को 1°15' के 24 भागों में विभाजित किया जाता है। ग्रह के भोगांश के आधार पर विंशाश की संख्या ज्ञात करने के पश्चात् यदि ग्रह विषम राशि में हो तो गणना सिंह राशि से और यदि सम राशि में हो तो गणना कर्क राशि से प्रारम्भ की जाती है।

उदाहरणतः महात्मा गान्धी की कुण्डली में लग्न विषम राशि तुला में 11°56' का होकर 10वें भाग में है। विषम राशि का लग्न होने के कारण गणना सिंह से प्रारम्भ होगी और सिंह से दशम राशि, वृषभ का लग्न होगा। सूर्य सम राशि कन्या में 16°55' का होकर 14वें भाग में है। सम राशि में होने के कारण सूर्य के लिए गणना कर्क राशि से प्रारम्भ होगी और कर्क राशि से 14वीं या 2री राशि सिंह है इसलिए चतुर्विंशांश वर्ग कुण्डली में सूर्य, सिंह राशि में होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों को भी स्थापित करके चतुर्विंशांश वर्ग कुण्डली का निर्माण किया जाता है।

शिक्षा के लिए जन्म कुण्डली के चतुर्थ भाव-चतुर्थेश और पंचम भाव-पंचमेश की स्थिति का लग्न कुण्डली के साथ इस वर्ग कुण्डली में अध्ययन किया जाता है। यदि इनकी स्थिति इस वर्ग कुण्डली में भी अच्छी होती है तो जातक उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करता है। इसके साथ ही साथ शिक्षा प्राप्त करने की आयु के समय जातक की जो दशा/अन्तर्दशा चलती हैं उनके स्वामियों की स्थिति की भी विवेचना इस वर्ग कुण्डली में की जाती है। यह शिक्षा की प्रगति के विषय में अच्छी जानकारी

उपलब्ध करता है। दशानाथों की इस वर्ग में षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव की स्थिति जातक की शिक्षा में विघ्न-बाधा उत्पन्न होने को इंगित करती है।

13. सप्तविंशांश (डी-27):

यह वर्ग भाम्शा अथवा नक्षत्रांश भी कहलाता है। यह जातक के शारीरिक और मानसिक दृढ़ता, बल एवं निर्बलता को इंगित करता है। इससे जातक की रोग प्रतिरोधिक क्षमता को भी ज्ञात किया जा सकता है।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 1°6'40" के 27 भागों में विभाजित किया जाता है। ग्रह या लग्न के भोगांश के आधार पर उसके भाग को ज्ञात करके यह देखा जाता है कि वह किस तत्व की राशि में स्थित है। अग्नि तत्व राशियों में होने पर गणना मेष राशि से, पृथ्वी तत्व राशियों में होने पर गणना कर्क राशि से, वायु तत्व राशियों में होने पर गणना तुला से और जल तत्व राशियों में होने पर गणना मकर राशि से प्रारम्भ की जाती है।

14. खवेदांश (डी-40):

यह वर्ग चत्वार्यांश भी कहलाता है और सामान्य शुभाशुभ परिणामों की विवेचना के लिए प्रयोग किया जाता है।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 0°45' के 40 समान भागों में विभाजित किया जाता है। भोगांश के आधार पर खवेदांश की संख्या ज्ञात करने के पश्चात् यदि ग्रह विषम राशि में है तो गणना मेष राशि से और यदि सम राशि में है तो गणना तुला राशि से प्रारम्भ की जाती है। उदाहरणत: यदि कोई ग्रह मकर राशि में 3°25' का है तो इसका अर्थ हुआ कि वह ग्रह 5वें खवेदांश में है। चूकि मकर राशि सम राशि है इसलिए गणना तुला से प्रारम्भ होगी और वह ग्रह खवेदांश कुण्डली में तुला से 5वीं राशि कुंभ में होगा।

15. अक्षवेदांश (डी-45):

यह वर्ग जातक के चरित्र एवं व्यवहार और सामान्य शुभाशुभ प्रभावों के अध्ययन के लिए देखा जाता है।

प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 0°40' के 45 समान भागों में विभाजित किया जाता है। भोगांश के आधार पर अक्षवेदांश की संख्या ज्ञात करने के पश्चात् यदि ग्रह चर राशि में है तो गणना मेष राशि से, स्थिर राशि में है तो सिंह राशि से और यदि द्विस्वभाव राशि में है तो गणना धनु राशि से प्रारम्भ की जाती है। उदाहरणत: यदि कोई ग्रह कर्क राशि में 11°50' का है तो इसका अर्थ हुआ कि वह ग्रह 18वें अक्षवेदांश में है। चूकि कर्क राशि चर राशि है इसलिए गणना मेष से प्रारम्भ होगी और वह ग्रह अक्षवेदांश कुण्डली में मेष से 18वीं अथवा 6वीं राशि कन्या में होगा।

16. षष्टियांश (डी-60):

इस वर्ग को सामान्य शुभाशुभ फलों के रुझान के लिए देखा जाता है। प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 0°30' के 60 समान भागों में विभाजित किया जाता है। राशि को छोड़कर ग्रह के अंश एवं मिनटो के भोगांश को 2 से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल में भी मिनटों को छोड़कर पूरे-पूरे अंशों को ही 12 से भाग करें। यह करने पर जो शेष आता है उसमें 1 का योग करें। इस प्रकार जो संख्या आएगी उस संख्या के आधार ग्रह की लग्नकुण्डली में स्थिति से आगे के भावों की राशियों को गिनें और जिस भाव पर वह संख्या पूर्ण हो जाएगी षष्टियांश कुण्डली में ग्रह उसी राशि में होगा।

उदाहरणत: यदि शनि मेष राशि में 13°10' का है तो इसको 2 से गुणा करने पर हमारे पास 26°20' आता है। मिनटों को छोडने पर पर 26 बचता है। इसे 12 से भाग देने पर शेषफल 2 आता है जिसमें 1 का योग करने पर हमें 3 प्राप्त होता है। मेष से 3 राशि आगे गिनने पर मिथुन राशि आती है, अत: षष्टियांश वर्ग में शनि मिथुन राशि में होगा। शुभ षष्टियांश में स्थित ग्रह शुभ तथा अशुभ षष्टियांश में स्थित ग्रह अशुभ फल देता है।

महर्षि पराशर ने प्रत्येक षष्टियांश को उसके अधिदेव का नाम दिया है जिन्हें विषम राशियों में सीधे क्रम में (घोर, राक्षस आदि) और सम राशियों में उल्टे क्रम से (इन्दु, भ्रमण आदि) से पढ़ना चाहिए। अर्थात जो विषम राशि में प्रथम षष्टियांश का अधिदेव होगा वह सम राशि में अन्तिम षष्टियांश का अधिदेव होगा। विषम राशियों में प्रत्येक षष्टियांश के अधिदेव और उसके नामानुसार शुभाशुभ होने को आगे तालिका में दर्शाया गया है।

षष्टियांश सं.	भोगांश	अधिदेव	अर्थ	शुभाशुभ
1	0-30	घोर	भयंकर	अशुभ
2	1-00	राक्षस	दुष्ट	अशुभ
3	1-30	देव	देवता	शुभ
4	2-00	कुबेर	धन का देवता	शुभ
5	2-30	यक्ष	देवताओं का गायक	शुभ
6	3-00	किन्नर	विकृत मनुष्य	अशुभ
7	3-30	भ्रष्ट	अनैतिक	अशुभ
8	4-00	कुलघ्न	वंश का नाश करने वाला	अशुभ
9	4-30	गरल	विश	अशुभ
10	5-00	अग्नि	आग	अशुभ
11	5-30	माया	भ्रम	अशुभ
12	6-00	पुरीश	अस्वच्छ	अशुभ
13	6-30	अपांपति	वर्षा का देवता	शुभ
14	7-00	मरुत्वान	वायु का देवता	शुभ
15	7-30	काल	समय, मृत्यु का देवता	अशुभ
16	8-00	अहि	सांप	अशुभ
17	8-30	अमृत	अमर करने वाला पेय	शुभ
18	9-00	चन्द्र	चन्द्रमा	शुभ
19	9-30	मृदु	सौम्य	शुभ
20	10-00	कोमल	कोमल	शुभ
21	10-30	हेरम्ब	भगवान गणेश	शुभ
22	11-00	ब्रह्म	अविनाशी सत्य	शुभ
23	11-30	विष्णु	भगवान विष्णु	शुभ
24	12-00	महेश्वर	भगवान शिव	शुभ
25	12-30	देव	देवता	शुभ

26	13-00	आर्द्र	भीगा हुआ या नम	शुभ
27	13-30	कलिनाश	सन्ताप का हरण करने वाला	शुभ
28	14-00	क्षितीश्वर	पृथ्वी का स्वामी	शुभ
29	14-30	कमलाकर	भगवान विष्णु	शुभ
30	15-00	गुलिक	शनि पुत्र	अशुभ
31	15-30	मृत्युकर	मृत्यु देने वाला	अशुभ
32	16-00	काल	समय या यम	अशुभ
33	16-30	दावाग्नि	गुप्त अग्नि	अशुभ
34	17-00	घोर	भ्रम	अशुभ
35	17-30	यम	मृत्यु का देवता	अशुभ
36	18-00	कण्टक	कांटा	अशुभ
37	18-30	सुधा	पुष्पासव, अपूर्व पदार्थ	शुभ
38	19-00	अमृत	अमर करने वाला पेय	शुभ
39	19-30	पूर्णचन्द्र	पूर्णिमा	शुभ
40	20-00	विषदग्ध	जहरीला, विष से जला	अशुभ
41	20-30	कुलनाश	कुल का समाप्त होना	अशुभ
42	21-00	वंशक्षय	वंश का पतन होना	अशुभ
43	21-30	उत्पात	दुर्भाग्य	अशुभ
44	22-00	काल	समय या यम	अशुभ
45	22-30	सौम्य	शान्त	शुभ
46	23-00	कोमल	कोमल	शुभ
47	23-30	शीतल	ठण्डा	शुभ
48	24-00	दंष्ट्राकराल	डरावने दान्तों वाला	अशुभ
49	24-30	इन्दुमुख	चन्द्रमा का मुख	शुभ
50	25-00	प्रवीण	दक्ष	शुभ
51	25-30	कालाग्नि	विनाशकारी आग	अशुभ
52	26-00	दण्डायुध	डण्डे का अस्त्र	अशुभ

53	26-30	निर्मल	पवित्र	शुभ
54	27-00	सौम्य	शान्त	शुभ
55	27-30	क्रूर	अत्यचारी	अशुभ
56	28-00	अतिशीतल	अत्याधिक शान्त	अशुभ
57	28-30	सुधा	पुष्पासव, अपूर्व पदार्थ	शुभ
58	29-00	पयोधीश	समुद्र का स्वामी	शुभ
59	29-30	भ्रमण	घूमना	अशुभ
60	30-00	इन्दुरेखा	चन्द्रमा का मुख	शुभ

षष्टियांश का उपरोक्त विभाजन फलकथन में सहायक होता है। उदाहरणत: यदि द्वितीयेश एवं एकादशेश बृहस्पति है और कुबेर के षष्टियांश में है तो जातक अत्याधिक धनवान होगा। यदि सप्तमेश शुभ ग्रह होकर निर्मल षष्टियांश में है तो जातक की भार्या पवित्र स्त्री होगी। इसी प्रकार यदि सप्तमेश शुक्र होकर चन्द्रमुखी के षष्टियांश में हो तो जातक की भार्या अत्याधिक सुन्दर होगी। इसी प्रकार यदि किसी भाव का स्वामी अशुभ षष्टियांश में होगा तो उस भाव के कारकत्व पीड़ित हो जायेंगे।

अध्याय 20

योग

ज्योतिषशास्त्र में योग का अर्थ ग्रहों का आपसी सम्बन्ध होता है जो ग्रहों के बलाबल, प्रकृति और स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल प्रदान करता है।

राजयोगः

राजयोग ग्रहों का वह पारस्परिक सम्बन्ध है जो राज्यपद, मंत्रीपद, उच्च पद और श्रेष्ठ सामाजिक स्थिति देता है। इस योग में पंचम भाव, पंचमेश, दशम भाव, दशमेश और दशम से दशम होने के कारण सप्तम भाव एवं सप्तमेश शामिल होते हैं। सर्वार्थ चिन्तामणी के मतानुसार राजयोग के प्रतिपादन करने के लिए इसमें दशम भाव से पंचम भाव होने के कारण, द्वितीय भाव को भी इसमें शामिल करना चाहिए। यदि ये सभी भाव और भावेश बली हों तो जातक शासन, मंत्री, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति बनता है।

बृहत्पाराशर होराशास्त्र में राजयोगाध्याय के 4 श्लोक में पराशर कहते हैं:

आत्मकारकपुत्राभ्यां योगमेकं प्रकल्पयेत्।
तनुपञ्चमनाथाभ्यां तथैव द्विजसत्तम॥

एक आत्मकारक* एवं पुत्रकारक* से और दूसरा लग्नेश एवं पंचमेश से राजयोग समझना चाहिए।

पुत्रकारक और पंचमेश का सम्बन्ध भी जातक को बुद्धिमान और धन-सम्पति से युक्त बनाता है।

---

* *सूर्य नैसर्गिक आत्मकारक ग्रह है जबकि यहां आत्मकारक का अभिप्रयाय ज्योतिष की जैमिनी पद्धति में प्रयोग होने वाले आत्मकारक ग्रह से है। जैमिनी पद्धति में सबसे अधिक भोगांश वाले ग्रह को आत्मकारक ग्रह कहते हैं। अधिकतम भोगांश का निर्णय करते समय इसमें राशि को सम्मलित नहीं किया जाता है। भोगांशों के घटते हुए क्रम में पांचवां ग्रह* ***पुत्रकारक*** *कहलाता है।*

लग्न, चन्द्रमा अथवा चन्द्रेश से केन्द्र या त्रिकोण में स्थित आत्मकारक जातक को लोकप्रिय, समृद्धशाली और धन-सम्पतिवान बनाता है।

यदि लग्नेश बली होकर लग्न को दृष्ट करता है तो यह एक मुख्य राजयोग है। यहां तक की यदि लग्नेश नीच राशिगत होकर भी लग्न को देखे तो भी यह राजयोग देता है।

बृहत्पाराशर होराशास्त्र में राजयोगाध्याय के 12वें श्लोक में पराशर कहते हैं:

जन्माङ्गे कालहोराङ्गे कलाङ्गेयेन केनचित्।
एकग्रहेण सन्दृष्टे त्रितये राजभाग् जनः ॥12॥

अर्थात जन्मलग्न, होरालग्न और घटीलग्न पर किसी एक ग्रह की दृष्टि हो तो जातक राजभागी होता है।

षडवर्ग का महत्वः षडवर्ग के महत्व को कहते हुए पराशर कहते हैं कि

लग्नषड्वर्गके चैवमेकखेटयुतेक्षिते।
राजयोगो भवत्येव निर्विशङ्कं द्विजोत्तम ॥13॥
पूर्णदृष्टे पूर्णयोगमर्धदृष्टेऽर्धमेव च।
पापदृष्टे पादयोगमिति ज्ञेयं क्रमात् फलम् ॥14॥

इसका अर्थ है कि लग्न के षडवर्ग (राशि, होरा, नवांश द्रेष्कोण, त्रिशांश और द्वादशांश) यदि किसी एक ही ग्रह से युक्त या दृष्ट हों तो भी राजयोग होता है। योग दृष्टि के अनुसार ही पूर्ण, आधा, या उससे भी कम समझना चाहिए।

श्री के.एन. राव के अनुसार लगभग 25 राजयोग उच्च कोटि के राजयोग होते हैं। यदि कुण्डली में इनमें से अधिकतर योग उपस्थित हों तो जातक अपने जीवन में उत्थान की अविश्वसनीय उच्चाई तक उठता है। यदि इनमें से कुछ योग भी कुण्डली में उपस्थित हों तो उसका उत्थान मध्यम स्तर का होता है और यदि इनमें से बहुत ही कम योग हों तो उसका उत्थान सामान्य स्तर का ही होता है। योगों का बल और उनके उपयुक्त दशा भी महत्वपूर्ण होते हैं।

दशाः दशम भाव एवं दशमेश अथवा सप्तम भाव एवं सप्तमेश से सम्बन्धित किसी भी ग्रह की दशा जातक को सम्मान और उच्च पद दिलाती है लेकिन उस ग्रह का सुस्थित होना भी आवश्यक है।

मुख्य राजयोगः

1. द्वितीयेश और पंचमेश, द्वितीय या पंचम या नवम या दशम भाव में।
2. द्वितीयेश और एकादशेश, दशम भाव में।
3. चतुर्थ, पंचम, दशम या एकादश भाव में स्थित राहु अपनी दशा में।
4. तृतीय भाव में स्थित शुक्र एवं चन्द्रमा।
5. नवमेश होकर बृहस्पति अष्टम भाव में।
6. अष्टमेश एवं नवमेश का युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध हो तो अष्टमेश की दशा में।
7. नीचभंग राजयोग।

केन्द्र-त्रिकोण का सम्बन्ध

कुण्डली के केन्द्र भावों (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव) को विष्णु स्थान और त्रिकोण भावों (प्रथम, पंचम एवं नवम) को लक्ष्मी स्थान भी कहा जाता है। पराशर के अनुसार यदि केन्द्राधिपति, त्रिकोणेश के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है तो यह उच्च श्रेणी का राजयोग बनता है।

देवी लक्ष्मी, भगवान विष्णु की भार्या हैं और भगवान विष्णु देवों में श्रेष्ठ हैं। इसलिए केन्द्राधिपति और त्रिकोणेश के सम्बन्ध पर इन दोनों का आशीर्वाद होता है तथा यह सम्बन्ध अति मंगलकारी होता है जो जातक को जीवनभर मांगल्य प्रदान करता है।

किसी भी कुण्डली में केन्द्र और त्रिकोण के मध्य निम्नलिखित तीन प्रकार से सम्बन्ध स्थापित हो सकता है:

1. दोनों के अधिपतियों मे राशि परिवर्तन हो अर्थात दोनों के स्वामी एक-दूसरे की राशियों में स्थित हों,
2. दोनों के अधिपति एक-दूसरे को दृष्ट करते हों और
3. दोनों के अधिपतियों की युति हो।

इसके अतिरिक्त, यदि दोनों के अधिपति स्वराशियों में हों तो भी यह राजयोग है, यद्यपि यह सबसे कम स्तर का राजयोग है।

इन सम्बन्धों को नवांश कुण्डली में भी जांचना चाहिए और यह देखना चाहिए कि लग्न कुण्डली का यह सम्बन्ध नवांश में बल प्राप्त करके बली हो रहा है अथवा निर्बली हो रहा है।

राजयोग बनाने वाले केन्द्र एवं त्रिकोण के इस सम्बन्ध में भी नवमेश और दशमेश का आपसी सम्बन्ध सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि दशम भाव सबसे अधिक बली केन्द्र और नवम भाव सबसे अधिक बली त्रिकोण भाव होता है। नवमेश और दशमेश का सम्बन्ध ***धर्माधिपति-कर्माधिपति राजयोग*** कहलाता है। उत्तरकालामृत में इस योग की बहुत प्रशंसा की गई है। केन्द्र-त्रिकोण का यह सम्बन्ध इतना महत्वपूर्ण है कि यह इनके अधिपतियों के तृतीयेश, षष्टेश या अष्टमेश होने के दुष्प्रभाव को भी दूर कर देता है।

कुण्डली के चतुर्थेश और पंचमेश का सम्बन्ध जातक को किसी संस्थान का मंत्री अथवा सलाहकार बनाता है और समृद्धि भी देता है।

उत्तरकालामृत द्वारा अनुमोदित मुख्य राजयोग:

- लग्न के दशम भाव से नवमेश और दशमेश का सम्बन्ध। अर्थात लग्न से षष्टेश और सप्तमेश का सम्बन्ध।
- लग्न के नवम भाव से नवमेश और दशमेश का सम्बन्ध। अर्थात लग्न से पंचमेश और षष्टेश का सम्बन्ध।
- सूर्य से नवमेश और दशमेश का सम्बन्ध।
- लग्न कुण्डली के चन्द्रेश (चन्द्रमा द्वारा गृहीत राशि का स्वामी) और नवांश कुण्डली के चन्द्रेश का सम्बन्ध।

1. पराशर के अनुसार आत्मकारक ग्रह और लग्न का सम्बन्ध सर्वश्रेष्ठ राजयोगों में से एक राजयोग है। यदि यह एक ही राशि में हो तो जातक को अत्याधिक भाग्यशाली बनाते हैं।
2. डा. बी.आर. रमण के मतानुसार नवांश लग्न और आत्मकारक का एक ही राशि में होना एक शक्तिशाली राजयोग है।
3. तीन उच्च के ग्रह जातक को एक विद्वान व्यक्ति बनाते हैं, तीन स्वगृही ग्रह जातक को मंत्री और तीन नीच के ग्रह एक मूर्ख व्यक्ति बनाते हैं।

राशि कुण्डली के तीन उच्च के ग्रह, अशुभ नवांश में स्थित होने पर जातक को दुःखी और अधर्मी व्यक्ति बनाते हैं -चन्द्रकला नाड़ी।

4. यदि आत्मकारक शुभ राशि अथवा शुभ नवांश में हो तो जातक धनवान होता है तथा कारकांश* लग्न से केन्द्र में शुभ ग्रह हों तो जातक राजा होता है - पराशर।

5. लग्न का पद (आरुढ़ लग्न) और सप्तम भाव का पद (दारापद) एक-दूसरे से केन्द्र में या त्रिकोण में या एक-दूसरे से 5/9 के अक्ष में स्थित हो तो जातक निश्चिय ही राजा और सुखी होता है- पराशर।

6. यदि भाव लग्न, होरा लग्न और घटी लग्न, तीनों को उच्चगत ग्रह देखे तो जातक निश्चिय ही राजा होता है, यदि इनमें से दो लग्नों को भी देखे तब भी राजयोग होता है- पराशर।

7. तीनों लग्नों की राशि, द्रेष्कोण, नवांश अथवा राशि एवं नवांश अथवा राशि एवं द्रेष्कोण को एक ग्रह देखे तो राजयोग होता है- पराशर।

8. लग्न पद (आरुढ़ लग्न) में चन्द्रमा हो और दूसरे स्थान में बृहस्पति हो तो भी राजयोग होता है।

9. यदि दुष्ट स्थान (6, 8, 12) का स्वामी भी नीच का होकर लग्न को देखता हो तो राजयोग होता है।

10. यदि चतुर्थेश, दशमेश, द्वितीयेश या एकादशेश लग्न को देखता हो, लग्न पद से सप्तम भाव पर शुक्र की दृष्टि हो और लग्न पद, शुभ ग्रह द्वारा गृहीत हो तो भी राजयोग होता है।

11. सारावली के अनुसार यदि लग्नेश उच्च का होकर चन्द्रमा को दृष्ट करे तो भी राजयोग होता है।

नीचभंग राजयोगः

भंग का अर्थ है समाप्त होना और नीचभंग राजयोग का अर्थ है ग्रह का नीचत्व समाप्त करने वाला योग। चूंकि इन योगों के कारण न केवल ग्रह का नीचत्व समाप्त

* *नवांश कुण्डली में आत्मकारक ग्रह जिस राशि में होता है वह राशि लग्न कुण्डली में कारकांश लग्न कहलाती है।*

होता है अपितु इन ग्रहों से शुभ परिणाम भी प्राप्त होते हैं इसलिए इन्हें नीचभंग राजयोग कहा जाता है। इस स्थिति के विषय में फलदीपिका कहती है कि:

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती॥

अर्थात जन्मकुण्डली में किसी भी ग्रह का नीच होना अशुभ योग माना जाता है लेकिन, कभी-कभी नीच राशि में स्थित होने पर भी ग्रह अतिश्रेष्ठ प्रभाव दिखाते हैं अर्थात उनका नीच होने का दोष समाप्त हो जाता है और वह शुभ परिणाम देते हैं।

किसी भी कुण्डली में निम्नलिखित स्थितियां होने पर नीचभंग राजयोग का उदय होता है:

1. ग्रह जिस राशि में नीच का है यदि उस राशि का स्वामी कुण्डली में उच्च का हो तो यह नीचभंग राजयोग को उदय करता है।

2. यदि नीच ग्रह, उच्च के ग्रह के साथ युति करता है तो नीचभंग हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि कुण्डली में शुक्र नीच का है अर्थात यदि शुक्र कन्या राशि में स्थित है लेकिन बुध से युति करता हो जो कन्या में उच्च का होता है तो शुक्र का नीच भंग हो जाएगा। इसी प्रकार यदि मेष राशि में नीच के शनि के साथ सूर्य स्थित हो अथवा नीच के सूर्य के साथ तुला राशि में शनि की युति हो तो कुण्डली में नीचभंग राजयोग उदय होता है।

   तमिल में रचित ज्योतिषशास्त्र के लोकप्रिय ग्रन्थ 'कुमार स्वंयम्' के अनुसार ग्रह का नीचभंग तभी मानना चाहिए जब वह ग्रह चन्द्रमा से केन्द्र में हो।

3. यदि नीच ग्रह का राशीश स्वगृही हो तो भी नीचभंग राजयोग का उदय होता है।

4. फलदीपिका के अनुसार नीच ग्रह का राशीश उस ग्रह को पूर्ण दृष्टि से दृष्ट करता है तो नीचभंग राजयोग होता है। यदि यह नीच ग्रह अशुभ स्थान में हो तो अधिक अच्छा राजयोग नहीं होगा लेकिन यदि सुस्थानों में हो तो यह बहुत ही उत्तम नीचभंग राजयोग होता है।

परिणामः नीचभंग राजयोग में संलिप्त ग्रह, उच्च के ग्रहों के समान ही अच्छा परिणाम देते हैं लेकिन इन शुभ परिणामों में कुछ प्रारम्भिक परेशानियां अथवा अपवाद भी जुड़े होते हैं।

विपरीत राजयोगः

यदि कुण्डली में षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश एक-दूसरे के भाव में स्थित होकर सम्बन्ध बनाते हैं तो विपरीत राजयोग बनता है। विपरीत राजयोग तीन प्रकार के होते हैं:

1. **हर्ष योगः** फलदीपिका के अनुसार यदि षष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो अथवा षष्टम भाव अशुभ ग्रह से दृष्ट हो और षष्टेश अशुभ स्थान (षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव) में स्थित हो तो हर्ष नाम का योग होता है। इस योग में जन्मा जातक सुखी, भोगी, भाग्यवान एवं दृढ़ शरीर का स्वामी होता है और शत्रुओं को पराजित करेगा तथा पाप भीरु* होगा। वह प्रसिद्ध एवं प्रमुख व्यक्तियों का प्रिय होगा, उसे धन-दौलत, पुत्रों एवं मित्रों का सुख प्राप्त होगा, यशस्वी होगा और उसका चेहरा कान्तिमान होगा।

2. **सरल योगः** यदि अष्टमेश अशुभ स्थान (षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव) में स्थित हो तो सरल योग होता है। सरल योग में जन्मा जातक दीर्घायु, दृढ़मति, निर्भय, विद्यावान, पुत्र एवं धन से युत, अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करने वाला, पवित्र और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला प्रसिद्ध व्यक्ति होगा।

3. **विमल योगः** यदि द्वादशेश अशुभ स्थान (षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव) में स्थित हो और अशुभ ग्रहों के युति अथवा दृष्टि प्रभाव में हो तो विमल योग होता है। ऐसा जातक मितव्ययी और धन संचय करने वाला, अपने सद्गुणों के कारण लोकप्रिय, सुखी, स्वतन्त्र, उत्तम कार्य करने वाला और दूसरों के अनुकूल आचरण करने वाला होता है।

   श्री के.एन. राव के मतानुसार यदि तृतीयेश, षष्टेश, अष्टमेश अथवा द्वादशेश नीच का हो तो यह राजयोग दायक होता है।

अन्य राजयोगः

1. बृहस्पति लग्न में, बुध केन्द्र में होकर लग्नेश से दृष्ट।
2. बृहस्पति पंचम, सप्तम अथवा नवम भाव में स्थित होकर लग्नेश से दृष्ट हो तो जातक राजा के समान भाग्यशाली होता है।

---

* *जो व्यक्ति पाप कर्म करने से डरता है और पुण्य कर्म ही करता है उसे पापभीरु कहते हैं।*

3. शनि उच्च का हो अथवा किसी भी त्रिकोण में स्थित होकर दशमेश से दृष्ट हो।

राशि परिवर्तन राजयोग:

यह एक अन्य प्रभावशाली राजयोग है। जब दो ग्रह परस्पर एक-दूसरे की राशियों में स्थित होते हैं तो राशि परिवर्तन राजयोग बनता है। इसमें राशि परिवर्तन करने वाले ग्रहों का एक-दूसरे को देखना आवश्यक नहीं होता है अर्थात ग्रह एक-दूसरे को देखते हैं अथवा नहीं इससे इस योग में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह राशि परिवर्तन शुभ भावों के स्वामियों के मध्य हो तो इसके श्रेष्ठ परिणाम होते हैं। तृतीय, षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भावों के स्वामियों के मध्य राशि परिवर्तन भी अच्छा परिणाम देता है लेकिन शुभ भावों और अशुभ स्थानों के स्वामियों के मध्य का राशि परिवर्तन पीड़ा दायक हो सकता है।

उदाहरण: श्रीमति इन्दिरा गान्धी की कुण्डली

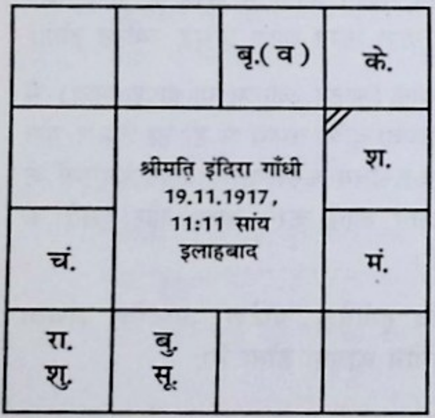

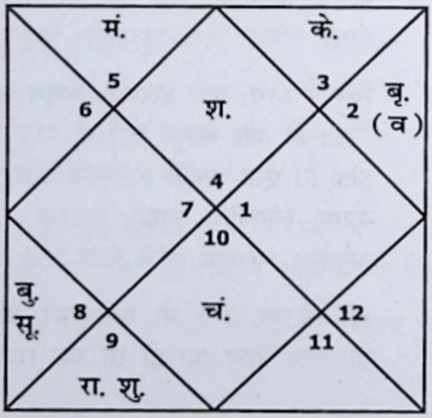

इस कुण्डली में तीन राशि परिवर्तन योग उपस्थित हैं। लग्नेश चन्द्रमा, सप्तमेश शनि के साथ, बृहस्पति, शुक्र के साथ और मंगल, सूर्य के साथ राशि परिवर्तन कर रहा है। ये तीनों राशि परिवर्तन योग वे मुख्य राजयोग हैं जिन्होंने श्रीमति इन्दिरा गान्धी को इतनी उंचाइयों तक पहुंचाया।

दो ग्रहों के मध्य नक्षत्र परिवर्तन होना भी एक मुख्य राजयोग है जो सामान्यत: नोबेल पुरस्कार से सुशोभित होने वाले जातकों की कुण्डलियों में होता है।

महाभाग्य योगः

जैसे कि इसके नाम से ज्ञात हो जाता है कि यह अच्छा भाग्य देने वाला एक महत्वपूर्ण राजयोग है। यह धन-सम्पति, समुद्धि, अच्छा स्वास्थ्य, शासन की शक्ति और समाज में महत्वपूर्ण स्थिति देता है। स्त्री और पुरुष, दोनों की कुण्डलियों में यह योग अलग-अलग स्थितियों में बनता है।

स्त्री की कुण्डली में यदि रात्रि का जन्म हो और लग्न, चन्द्रमा एवं सूर्य सम राशियों में हो तो महाभाग्य योग बनता है। उदाहरण के लिए श्रीमति इन्दिरा गान्धी की जन्म कुण्डली का अवलोकन करें। इनका जन्म रात्रि में हुआ था और लग्न, चन्द्रमा एवं सूर्य सम राशियों में हैं।

पुरुष की कुण्डली में यदि दिन में जन्म हो और लग्न, चन्द्रमा एवं सूर्य विषम राशियों में हो तो यह योग बनता है। उदाहरण के लिए आगे दी गई श्री मोरारजी देसाई की कुण्डली को देखें।

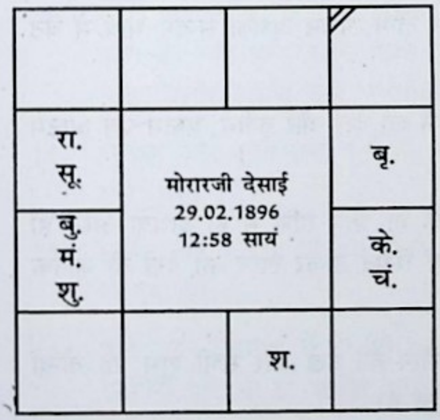

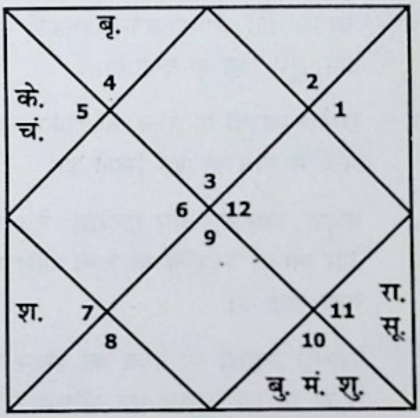

महाराज योग - पराशरः

यदि लग्नेश और पंचमेश में राशि परिवर्तन हो अथवा आत्मकारक एवं पुत्रकारक दोनों ही लग्न में हों अथवा पंचम भाव में अपनी उच्च राशि या नवांश में हों और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो यह महाराज नाम का राजयोग होता है जिसके परिणाम स्वरुप जातक प्रसिद्ध और सुखी होता है। लग्नेश और पंचमेश के मध्य राशि परिवर्तन, अति प्रभावशाली राजयोग देता है।

उदाहरण: श्रीमति इन्दिरा गान्धी की कुण्डली देखें। इनकी कुण्डली में शनि आत्मकारक है और बुध पुत्रकारक है। शनि लग्न में है जबकि बुध पंचम भाव में है।

आत्मकारक शनि अपने नवांश में है और बुध कारकांश लग्न से दशम भाव में है। इस प्रकार इस कुण्डली में महाराज योग बन रहा है।

पराशर द्वारा बताये गये अन्य राजयोगः

1. लग्न अथवा आत्मकारक से द्वितीय, चतुर्थ एवं पंचम में शुभ ग्रह जातक को राजा बनाते हैं। तृतीय और षष्टम भाव में स्थित अशुभ ग्रह भी इसी प्रकार कर परिणाम देते हैं।

2. लग्न, द्वितीय एवं चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों द्वारा गृहीत हो जबकि तृतीय भाव में अशुभ ग्रह हो तो जातक राजा के समान होता है।

3. कारकांश या उससे पंचम भाव में अथवा लग्न या आरुढ़ लग्न में स्थित शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्रमा से दृष्ट हो या युक्त हो तो जातक राजा के परिवार से सम्बन्धित होता है।

4. नवमेश और आत्मकारक, कुण्डली के लग्न, पंचम अथवा सप्तम भाव में बैठे और शुभ ग्रहों से दृष्ट हों।

5. लग्नेश स्वगृही या उच्च का होकर लग्न को देखें और तृतीय, षष्टम एवं अष्टम भाव में नीच के ग्रह स्थित हों।

6. षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश नीच के हों, शत्रु राशि में हों अथवा अस्त हों और लग्नेश स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न को देखे तो जातक राजा होता है।

7. दशमेश स्वगृही या उच्च का होकर लग्न को देखे और सभी शुभ ग्रह केन्द्रों में हों तो इसी प्रकार का परिणाम होता है।

8. पंचमेश और नवमेश मंत्री के समान हैं। यदि ये दोनों परस्पर एक-दूसरे को दृष्ट करें अथवा युति करें तो कुण्डली में राजयोग का उदय होता है।

9. चतुर्थेश दशम में हो और दशमेश चतुर्थ भाव में हो और इन पर पंचमेश या नवमेश की दृष्टि हो तो जातक राजा होता है। चतुर्थेश या दशमेश, यदि पंचमेश या नवमेश से युक्त हो तो भी जातक राजा होता है।

10. पंचमेश, दशमेश, चतुर्थेश और लग्नेश में से किसी भी एक के साथ नवमेश की युति, राजयोग बनाती है।

11. चतुर्थेश या दशमेश, पंचमेश या नवमेश से युति करें।

12. स्वगृही या उच्च का होकर बृहस्पति नवम भाव में लग्नेश या शुक्र के साथ स्थित हो।

13. ठीक मध्याह्न अथवा मध्यरात्रि के बाद दो घटी 30 पल अर्थात 60 मिनट तक का समय शुभ होता है और इस समय जन्म लेने वाला जातक राजा होता है। मध्याह्न और मध्यरात्रि की गणना सूर्योदय और सूर्यास्त के अनुसार करनी चाहिए।

    इस विषय में उत्तरकालामृत में कोटेश्वर और लक्ष अधिकारी नाम के दो योग कहे गये हैं। पराशर द्वारा दिये गये 60 मिनट के स्थान पर इसमें 48 मिनट अर्थात दो घटी कही गई है। इसके अनुसार यदि इस समय ऐसे राजा का जन्म होता है जो शत्रुओं को पराजित करने वाला और धार्मिक परम्पराओं को निभाने वाला एक विद्वान व्यक्ति होता है। इसके अतिरिक्त यदि द्वितीय भाव में एक उच्च का ग्रह हो जो दूसरे उच्च ग्रह से दृष्ट हो तो एक ***कोटेश्वर*** का जन्म होता है। यदि दृष्ट करने वाला ग्रह उच्च का न हो लेकिन स्वगृही हो तो ***लक्षाधिवीर*** अर्थात कम शक्तिशाली व्यक्ति जन्म लेता है।

14. चन्द्रमा और शुक्र एक-दूसरे वे 3-11 के अक्ष में हो अथवा एक-दूसरे को दृष्ट करते हों।

15. पूर्णिमा का चन्द्रमा वर्गोत्तम होकर स्थित हो और चार या चार से अधिक ग्रहों से दृष्ट हो।

16. यदि लग्न उत्तमांश में हो और चन्द्रमा को छोड़कर अन्य 4 या 4 से अधिक ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक भूपति होता है।

17. सभी शुभ ग्रह केन्द्रों में हों जबकि अशुभ ग्रह तृतीय, षष्टम एवं एकादश भावों में हों।

उच्च पद देने वाले प्रमुख जैमिनी योग

1. लग्न से दशमेश, अमात्यकारक अथवा अमात्यकारक के राशीश से युति करे अथवा दृष्ट हो।

2. दशम एवं एकादश भाव अपने-अपने स्वामियों से दृष्ट हों और पाप दृष्ट में न हों।

3. अमात्यकारक और इसका राशीश युति में हों - जातक में उच्च श्रेणी का आत्मबोध शक्ति होती है।

4. अमात्यकारक बली हो, स्वगृही हो अथवा उच्च का हो - जातक निश्चित रुप से राजा का मंत्री बनता है।

5. अमात्यकारक, लग्न से पंचम, नवम, लग्न अथवा केन्द्र में हो।

6. यदि लग्न, आरुढ़ लग्न अथवा आत्मकारक से तृतीय और षष्टम भाव में अशुभ ग्रह हों तो जातक सेना प्रमुख बनता है।

7. आत्मकारक, केन्द्र या त्रिकोण में स्वगृही या उच्च का होकर नवमेश से दृष्ट हो।

8. चन्द्रमा का राशीश, आत्मकारक होकर किसी शुभ ग्रह के साथ लग्न में स्थित हो तो जातक वृद्धावस्था में मंत्री बनता है।

9. आत्मकारक, पंचम, नवम, सप्तम या दशम भाव में एक शुभ ग्रह के साथ स्थित हो तो शासन की संरक्षता से धन-सम्पति प्राप्त होती है।

10. आत्मकारक नवम भाव में हो अथवा नवम भाव का आरुढ़, लग्न में हो।

11. आत्मकारक एक शुभ ग्रह के साथ हो और एकादशेश, एकादश भाव में हो।

12. लग्न और दशम के मध्य परिवर्तन योग हो।

13. कारकांश लग्न से चतुर्थ में शुक्र और चन्द्रमा हों।

14. लग्नेश या आत्मकारक, पंचमेश के साथ केन्द्र या त्रिकोण में हो।

पंच महापुरुष योगः

फलदीपिका और जातक पारिजात में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र एवं शनि द्वारा स्थितिवश बनाये जाने वाले पांच प्रकार के योग कहे गयें हैं जिन्हें पंचमहापुरुष योग कहा जाता है। जब ये ग्रह लग्न अथवा चन्द्रमा से केन्द्र में अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि में स्थित होते हैं तो इन योगों का निर्माण करते हैं। इसमें चन्द्रमा और सूर्य को शामिल नहीं किया गया है क्योंकि ये दोनों ग्रह, लग्न के समान ही महत्वपूर्ण माने गये हैं और फलकथन में इनके बल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। छायाग्रह होने के कारण राहु-केतु को इसमें शामिल नहीं किया गया है। इन योगों में ग्रहों का केन्द्रस्थ होना महत्वपूर्ण माना गया है जहां वे अतिबली हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यदि ये

उच्च या स्वगृही भी होते हैं तो उनमें शुभ फल देने की अतिरिक्त शक्ति आ जाती है। ये पांचों योग इस प्रकार से हैं:

1. **रुचक योग:** यदि मंगल, उच्च राशि या स्वराशि का होकर लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो रुचक योग बनाता है।

   रुचक योग में जन्मा जातक स्वस्थ, दीर्घ चेहरे वाला, सुदृढ़ शरीरवाला, दीर्घायु, धनवान, भाग्यवान, विज्ञान की कई शाखाओं में प्रवीण, सेनापति, प्रसिद्ध, मंत्र शक्ति के रहस्य को जानने वाला, अपने उद्यम में सफल, आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी, उर्जावान, परम्पराओं में विश्वास रखने वाला एवं उनसे जुड़ा हुआ और दयालु लेकिन अभिमानी प्रकृति का व्यक्ति होता है।

   आगे दी गई भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. राधाकृष्ण की कुण्डली देखें। इसमें मंगल स्वराशि का होकर चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित है।

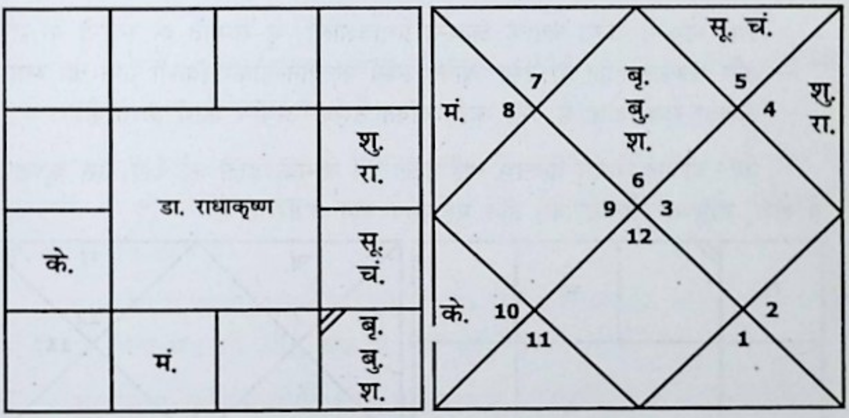

2. **भद्र योग:** यदि बुध, उच्च राशि या स्वराशि का होकर लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो भद्र योग बनाता है।

   भद्र योग में जन्मा जातक कुशाग्र बुद्धि, भाषण देने में चतुर, वाक्पटु, वैभवशाली, उच्च पदाधिकारी, आकर्षक, अच्छे कर्मों में लिप्त, शुद्ध, सुन्दर परिधान धारण करने वाला और व्यवहार में शुद्धता रखने वाला होता है। अपने अच्छे कार्यों के कारण ऐसा जातक विद्वानों से भी प्रशंसा प्राप्त करता है।

3. **हंस योग:** यदि बृहस्पति, उच्च राशि या स्वराशि का होकर लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो हंस योग बनाता है।

हंस योग में जन्मा जातक सुन्दर एवं सौम्य शरीर वाला, राजा के समान हाथ-पांवों में शंख, कमलादि शुभ चिन्हों वाला, उत्तम भोजन करने वाला, नैतिक मूल्यों वाला, श्रेष्ठ कार्य करने वाला और सज्जनों के द्वारा प्रशंसनीय व्यक्ति होता है।

4. **मालव्य योगः** यदि शुक्र, उच्च राशि या स्वराशि का होकर लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो मालव्य योग बनाता है।

   मालव्य योग में जन्मा जातक धैर्यवान, उत्तम भोजन खाने वाला, पुष्ट अंगों वाला, प्रसन्नमुख, शान्तचित्त, पुत्र एवं स्त्रियों के सुख से युत, अच्छे वाहनों का सुख भोगने वाला, वृद्धि की ओर अग्रसर और कलात्मक रुचि वाला होता है।

5. **शश योगः** यदि शनि, उच्च राशि या स्वराशि का होकर लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो शश योग बनाता है।

   शश योग में जन्मा जातक अत्यन्त प्रभावशाली, भू-सम्पति के स्वामी या राजा और धनवान होता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं बलवान होकर किसी ग्राम का स्वामी अथवा राजा होता है और कई व्यक्ति उसके अधीन कार्य करते हैं।

आगे दी गई सरदार बल्लभ भाई पटेल की जन्मकुण्डली को देखें। इस कुण्डली में शश, मालव्य और रुचक, तीन महापुरुष योग उपस्थित हैं।

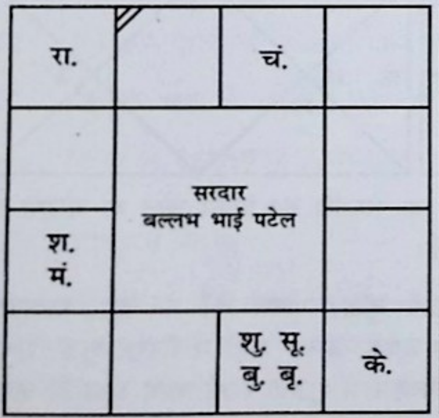

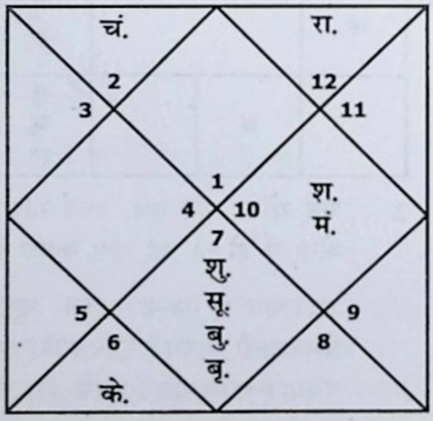

मानसागरी के मतानुसार पंचमहापुरुष योग में लिप्त ग्रह यदि सूर्य अथवा चन्द्रमा के साथ हो तो उस महापुरुष योग के प्रभाव से जातक राजा के समान नहीं होता है, अर्थात योग का प्रभाव कम हो जाता है। लेकिन उस ग्रह की दशा/अन्तर्दशा में केवल शुभ फल ही प्राप्त होते हैं।

जीव योगः यह गज केसरी योग का ही एक रुप है लेकिन इसमें चन्द्रमा और बृहस्पति एक-दूसरे से सम-सप्तम होते हैं।

भास्कर योगः यदि सूर्य से द्वितीय भाव में बुध हो, बुध से एकादश भाव में चन्द्रमा हो और चन्द्रमा से पांचवें अथवा नवम भाव में बृहस्पति हो तो भास्कर योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक शूरवीर, उच्च श्रेणी का विद्वान, शास्त्रज्ञ, कलाओं में दक्ष, मधुर वाणी वाला, दिखने में सुन्दर, समर्थ और समाज का महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है।

इन्द्र योगः यदि चन्द्रमा से तृतीय मंगल हो, मंगल से सप्तम शनि हो, शनि से सप्तम शुक्र हो और शुक्र से सप्तम बृहस्पति हो तो इन्द्र योग होता है। यदि इसको संक्षेप में कहें तो चन्द्रमा से तृतीय भाव में मंगल एवं शुक्र हो और नवम भाव में बृहस्पति एवं शनि हो तो इन्द्र योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक प्रसिद्ध शीलवान, धनवान, रुपवान, प्रतापी, यशस्वी राजा अथवा राजा के समान होता है।

मरुत् योगः यदि शुक्र से त्रिकोण भाव में अर्थात पंचम या नवम भाव में बृहस्पति हो, बृहस्पति से पंचम भाव में चन्द्रमा हो और चन्द्रमा से केन्द्र में सूर्य हो तो मरुत् योग होता है।

इस योग में जन्मा व्यक्ति शास्त्रज्ञ, विद्वान, प्रसिद्ध वक्ता, स्थूलोदर, क्रय-विक्रय में निपुण, धनी व्यापारी और राजा या राजा के समान होता है।

बुध योगः यदि बृहस्पति लग्न में स्थित हो, बृहस्पति से केन्द्र में चन्द्रमा हो, चन्द्रमा से द्वितीय भाव में राहु और तृतीय भाव में सूर्य एवं मंगल हों तो बुध योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक राजश्री से युक्त, अत्यन्त बलवान, प्रख्यात नाम वाला, शास्त्रज्ञ, बुद्धिमान और शत्रुरहित होता है।

लग्नाधियोग और चन्द्राधियोगः वराहमिहिर के अनुसार यदि चन्द्रमा से षष्टम, सप्तम और अष्टम भाव शुभ ग्रहों द्वारा गृहीत हों तो यह अधि योग कहलाता है। इस योग में जन्मा जातक सेना प्रमुख, मंत्री या राजा बनेगा और सभी भोगों का आनन्द उठायेगा। वह दीर्घायु, रोग एवं भय से मुक्त, धनवान और शत्रु विजेता होगा।

बृहत्पाराशर होराशास्त्र के अनुसार लग्न से षष्टम, सप्तम एवं अष्टम भाव में शुभ ग्रह होने चाहिए और इनको अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि से भी मुक्त होना चाहिए। लग्नाधियोग में जन्मा जातक विद्वान, शास्त्रज्ञ, सुखी और एक अच्छा व्यक्ति होता है। यह ग्रन्थ यह भी कंहता है कि चन्द्रमा से षष्टम, सप्तम और अष्टम भाव में शुभ ग्रह हों तो भी यह योग बनता है।

ये शुभ ग्रह, बुध, बृहस्पति एवं शुक्र एक साथ, षष्टम, सप्तम और अष्टम भाव में से किसी एक भाव में भी हो सकते हैं और अलग-अलग भावों में भी हो सकते हैं।

वैद्यनाथ के मतानुसार लग्नाधियोग में षष्टम, सप्तम एवं अष्टम भाव पर किसी भी अशुभ ग्रह की युति या दृष्टि नहीं होनी चाहिए और सुखभाव होने के कारण चतुर्थ भाव में भी कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं होना चाहिए।

यहां इस बात की ओर ध्यान दे कि जो भाव लग्न से षष्टम, सप्तम और अष्टम भाव, वे भाव दशम भाव से क्रमशः नवम, दशम और एकादश भाव हैं, जो जातक के कर्मों के परिणाम स्वरुप प्राप्त होने वाली धन-सम्पति, भाग्य और सम्मान को इंगित करते हैं। अतः लग्नाधि योग जातक की श्रेष्ठ स्थिति को सुनिश्चित करते हैं।

अधियोग, शासन की शक्ति और धन-सम्पति देने वाला राजयोग की श्रेणी का ही एक योग है। इसके अधिकतम प्रभावशाली परिणामों के लिए कुण्डली में शुभ ग्रहों का बली होना और सुस्थित होना अतिआवश्यक है। इन्हें अस्त, ग्रहण से पीड़ित, नीच और अशुभ ग्रहों से सम्बन्धित नहीं होना चाहिए। साथ ही साथ लग्न और चन्द्रमा का भी बली होना आवश्यक है। बली षष्टम एवं अष्टम भाव चिकित्सा के क्षेत्र में सफलता देते हैं। चन्द्राधियोग में इसका सम्बन्ध जातक की मानसिक दृढ़ता से है और यह सभी मानसिक दुष्प्रभावों को दूर करने वाला होता है।

वसुमती योगः यदि कुण्डली में सभी शुभ ग्रह तृतीय, षष्टम, दशम और एकादश भावों में होते हैं तो वसुमती योग होता है। फलदीपिका में इसे वसुमान् योग कहा है। इस योग में जन्मा जातक सदैव ही अपने घर में रहेगा और उसके पास अतुल्य द्रव्य होगा। यहां इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि पूर्व काल में घर से बाहर परदेश में जाना अच्छा नहीं माना जाता था।

पारिजात योगः यदि कुण्डली में लग्नेश का राशीश भी बली* हो तो पारिजात योग होता है। सामान्यतः यदि कोई ग्रह बली हो तो वह अच्छे परिणाम देता है लेकिन इसके साथ-साथ वह जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी भी बली हो तो ग्रह को अतिरिक्त बल प्राप्त हो जाता है।

पारिजात योग में जन्मा जातक अपने जीवन के मध्य और अन्त में सुख पाता है। ऐसा जातक शासन द्वारा सम्मानित, युद्ध प्रिय, हाथी-घोड़ों को रखने वाला अर्थात धनवान, दयालु और अपने धर्म-कर्म में रत व्यक्ति होता है। यह राजनैतिक ताकत देने की अपेक्षा धन-सम्पति और मान-मर्यादा देना वाला योग है।

विशेषः यदि पारिजात योग का सम्बन्ध सन्यास योग से होता है तो जातक अति-सम्मानित एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है और लाखों-करोड़ों व्यक्तियों की आध्यात्मिक शक्ति का केन्द्र बिन्दु होता है।

पर्वत योगः यदि सप्तम और अष्टम भाव में कोई ग्रह नहीं हो अथवा शुभ ग्रह हों तथा शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो पर्वत योग होता है।

फलदीपिका के अनुसार लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या स्वगृही होना चाहिए। ऐसा जातक आडम्बरहीन, धार्मिक, प्रसिद्ध और राजा या राजा के समान होता है।

जातक पारिजात में पर्वत योग दो प्रकार से कहा गया है। यद्यपि दोनों का ही नाम पर्वत योग रखा है लेकिन दोनों में निम्नलिखित भिन्न-भिन्न ग्रह स्थिति कही गई है:

1. यदि शुभ ग्रह केन्द्रों में हों, अष्टम तथा द्वादश में कोई ग्रह न हो अथवा शुभ ग्रह हो तो पर्वत योग होता है।
2. यदि लग्नेश और द्वादशेश एक-दूसरे से केन्द्र में हों और मित्र ग्रह या ग्रहों से दृष्ट हों तो पर्वतयोग होता है।

पाराशर होराशास्त्र के तमिल संस्करण में भी इस योग को दो प्रकार से कहा गया है। प्रथम यह कि केन्द्रों और षष्टम में शुभ ग्रह होने चाहिए और दूसरा यह कि केन्द्रों और नवम भाव में शुभ ग्रह होने चाहिए।

---

* *यदि कुण्डली में कोई ग्रह उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो और शुभ ग्रहों की युति एवं दृष्टि के प्रभाव में हो तथा अशुभ ग्रहों की युति/दृष्टि के प्रभाव से मुक्त हो तो बली कहलाता है। साथ ही साथ नवांश में भी उसे सुस्थित होकर उच्च अथवा स्वगृही होना चाहिए।*

फलदीपिका में इसको एक अन्य तरीके से कहा गया है। इसके अनुसार यदि लग्नेश जिस राशि में है उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो पर्वत योग होता है।

जातक देशमार्ग के अनुसार यदि लग्न, सप्तम या दशम भाव शुभ ग्रहों से गृहीत हों और अष्टम एवं द्वादश भाव रिक्त हों तो पर्वत योग होता है। यहां ग्रहों के शुभाशुभ होने के विषय में नहीं कहा गया है। होरासार में भी इसे इसी प्रकार से कहा गया है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि केन्द्रों में स्थित शुभ ग्रह अपनी दशा/अन्तर्दशा में अधिक प्रभावयुक्त परिणाम देते हैं।

चन्द्र योग

बृहत्पाराशरहोराशास्त्र के अनुसार चन्द्रमा से बनने वाले शुभाशुभ योग, अन्य योगों के फलों का नाश करके अपना फल देते हैं, इसलिए सटीक फलकथन करने के लिए सर्वप्रथम इनका विचार करना चाहिए। चन्द्रमा से बनने वाले मुख्य योग इस प्रकार से हैं:

1. सुनफा
2. अनफा
3. दुरधरा
4. चन्द्र मंगल
5. चन्द्राधियोग
6. अमला योग
7. केमद्रुम योग
8. शकट योग
9. गज केसरी योग

1. **सुनफा योगः** यदि चन्द्रमा से द्वितीय भाव में सूर्य के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह हो तो सुनफा योग होता है। इस योग में जन्मा जातक राजा या राजा के तुल्य, बुद्धिमान, धनवान, प्रसिद्ध और अपने परिश्रम से धनवान होता है।

होरासार में पृथ्युशस कहता है कि यह योग जातक को स्वअर्जित धन-सम्पति देता है और ऐसे जातक शास्त्रों के ज्ञान से भी परिपूर्ण होता है। जातम भरणम् के अनुसार यह योग यश-कीर्ति, धन-सम्पति एवं सुख देता है और जातक को राजा का मंत्री बनाता है।

मंगल द्वारा निर्मित सुनफा योग का फलः जातक धन-सम्पति वाला लेकिन अहंकारी, शीघ्र उत्तेजित होने वाला और साहसी।

बुध द्वारा निर्मित सुनफा योग का फलः जातक कलात्मक रुचि वाला, बुद्धिमान, रसिक, मधुर भाषी, धनवान और नैतिक।

बृहस्पति द्वारा निर्मित सुनफा योग का फलः धनवान, विद्वान, शासन का प्रिय और मित्रों एवं सम्बन्धियों के लिए अच्छा।

शुक्र द्वारा निर्मित सुनफा योग का फलः अधिक सुख-साधन वाला, भू-सम्पति युक्त और आडम्बर के साथ जीवन व्यतीत करने वाला।

शनि द्वारा निर्मित सुनफा योग का फलः धनवान, ग्राम का मुखिया और प्रखर व्यापारी। वृहत् जातक के अनुसार दूसरों की धन-सम्पति की अभिलाषा रखने वाला और किसी सदन का अध्यक्ष।

2. **अनफा योगः** यदि चन्द्रमा से द्वादश भाव में सूर्य के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रह हो तो अनफा योग होता है।

मंगल द्वारा निर्मित अनफा योग का फलः हठी, चिड़चिड़े स्वभाव का, चोरों का मुखिया और कुटिल बुद्धि।

बुध द्वारा निर्मित अनफा योग का फलः संगीतज्ञ, कलाकार, व्याख्याकार, आकर्षक, सुप्रसिद्ध और राजा से सम्मानित।

बृहस्पति द्वारा निर्मित अनफा योग का फलः धार्मिक, नैतिक, धनवान, तीक्ष्ण बुद्धिवाला और विशिष्ट।

शुक्र द्वारा निर्मित अनफा योग का फलः अति धनवान, स्त्रियों को आकर्षित करने वाला, बुद्धिमान, वाहन युक्त और सुखी।

शनि द्वारा निर्मित अनफा योग का फलः लम्बी भुजाओं वाला व्यक्ति, नेतृत्व करने वाला व्यक्तित्व, वेश्याओं के पीछे जाने वाला, चिन्ता युक्त, उत्सुकता युक्त और मानसिक शान्ति की कमी।

बृहत्पाराशरहोराशास्त्र के अनुसार यह योग जातक को राजा, रोगों से मुक्त, धर्मपरायण और सुन्दर बनाता है। जातक भरणम् इस योग की प्रशंसा करते हुए कहता है कि यह योग जातक को व्यवहार कुशल, राजा के समान बनाता है।

विशेषः नीच ग्रहों से बनने वाला सुनफा-अनफा योग, अनैतिक व्यवहार, अस्वस्थता आदि अशुभ परिणाम देता है।

3. **दुरधरा योगः** यदि चन्द्रमा से द्वितीय और द्वादश, दोनों भावों में सूर्य के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रह हों तो दुरधरा योग होता है। इस योग में स्थित होने पर चन्द्रमा अत्याधिक बल प्राप्त करता है और शुभ परिणाम देता है। पराशर के अनुसार ऐसा जातक अपने साधनों में सुख का अनुभव करता है।

इस योग में जन्मा जातक धन-वाहन से युक्त, भाग्यवान, सेवकों वाला, महलनुमा घर में रहने वाला, दानी और स्त्रियों के साथ सुखी होता है।

विभिन्न ग्रहों द्वारा निर्मित दुरधरा योग के परिणाम इस प्रकार से हैं:

मंगल-बुधः प्रशंसा के योग्य लेकिन असत्यवादी, अतिलोभी और दुराचारी।

मंगल-बृहस्पतिः धनवान, नाम वाला, अपने कर्म से वैभव युक्त, यशस्वी लेकिन शत्रुओं से पीड़ित और नैतिक मानसिकता युक्त।

मंगल-शुक्रः आकर्षक, प्रसन्नचित्त, व्यायाम का शौकीन और क्रूर।

मंगल-शनिः धनवान, विश्वासघाती, कुरुप या निम्न जाति की स्त्रियों में रत, चुगलखोर, शत्रुओं से घिरे होने पर भी व्याकुल न होने वाला और शत्रुहन्ता।

बुध-बृहस्पतिः धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ, अच्छा वक्ता, कवि, बुद्धिमान, सज्जनों के गोष्ठी वाला और यशस्वी।

बुध-शुक्रः संगीत, कला, नृत्य, मीठी भाषा, बुद्धिमान और सज्जन।

बुध-शनिः मध्यम स्तर की शिक्षा, कई देशों की यात्रा करने वाला, धनवान और निकट सम्बन्धियों से घृणा करने वाला।

बृहस्पति-शुक्रः पवित्र, प्रसिद्ध, धनवान, सुसंस्कृत, शिष्ट।

बृहस्पति-शनिः कुलीन, आडम्बरहीन, ज्ञानी, विद्वान, आकर्षक और सुखी।

शुक्र-शनिः नेता, धनवान और राजा का कृपापात्र।

4. **चन्द्र मंगल योगः** यदि चन्द्रमा और मंगल की युति या दृष्टि से प्रभावित हो तो चन्द्र-मंगल योग होता है। इस योग में जन्मा जातक धनवान और शूरवीर होता है। मद्य के क्रय-विक्रय, असंवैधानिक कार्यों, वस्तुओं को चोरी-छुपे अधिक मूल्य में बेचने अथवा स्त्रियों के क्रय-विक्रय से धन का आगमन होता है। यदि इन पर बृहस्पति अथवा शुक्र की दृष्टि हो तो नकारात्मक फल कथन नहीं करना चाहिए।

5. **चन्द्राधियोगः** इसे लग्नाधियोग के साथ पहले ही कहा जा चुका है।

6. **अमला योगः** यह योग तब बनता है जब कुण्डली में लग्न अथवा चन्द्रमा से दशम भाव में कोई शुभ ग्रह हो। इस शुभ ग्रह को अशुभ ग्रहों की दृष्टि से भी मुक्त होना आवश्यक है। ऐसा जातक यशस्वी होता है। एक शुद्ध अमला योग जातक को वर्षों तक न समाप्त होने वाली लोकप्रियता प्रदान करता है।

   शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार इस योग में जन्मा जातक राजा के द्वारा सम्मानित होता है, वह शक्ति-सम्पन्न होता है और वह पवित्र, दयालु, धर्मपरायण एवं दूसरों की सहायता करने वाला व्यक्ति होता है।

7. **केमद्रुम योगः** यदि सूर्य को छोड़कर चन्द्रमा से द्वितीय और द्वादश भाव में कोई ग्रह नहीं हो तो केमद्रुम योग होता है। यह एक दुर्योग है जो जातक को दरिद्र, दुष्ट, कठोर और सन्ताप युक्त बनाता है।

   होरासार में पृथ्युशस कहता है कि इस योग में जन्मा जातक कोई राजा ही क्यों न हो, वह भिखारी हो जाता है।

   जातक भरणम् के अनुसार इस योग में जन्मा जातक निर्धन, परिवार या घर से हीन और दूर परदेश में निवास करेगा।

   केमद्रुम योग का भंग होनाः इस योग के अशुभ फल समाप्त हो जाते हैं यदि

   1. यदि चन्द्रमा अथवा लग्न से केन्द्र में ग्रह हों,
   2. चन्द्रमा किसी ग्रह की युति में हो। मानसागरी के अनुसार चन्द्रमा को शुभ राशि में बुध, शुक्र या बृहस्पति के साथ होना चाहिए।
   3. यदि चन्द्रमा, लग्न से केन्द्र में हो तो यह योग प्रभावहीन हो जाता है।

8. **शकट योगः** शकट, बैलगाड़ी को भी कहा जाता है। यदि चन्द्रमा से द्वादश, षष्टम या अष्टम भाव में बृहस्पति हो तो शकट योग होता है। शकट योग को भी अच्छा नहीं माना जाता है क्योंकि इसके कारण जीवनवृत्ति बैलगाड़ी के समान धीरे-धीरे हिचकोले खाती हुई चलती है। जातक की जीवनवृत्ति उतार-चढ़ाव से भरी होती है अर्थात कभी भाग्य की हानि होती है और कभी पुनः प्राप्ति होती है। जातक का जीवन समस्याओं, दरिद्रता और परेशानियों से ग्रस्त होता है।

चन्द्रमा से षष्टम भाव में बृहस्पति होने पर शकट योग होता है लेकिन यदि इनमें से कोई एक अथवा दोनों ही उच्च अथवा स्वगृही हों तो शकट योग भंग हो जाता है और ***मुक्ता योग*** होता है जो जातक को उन्नति की उंचाइयों पर पहुंचाने वाला है।

लग्न से अष्टम भाव में स्थिति बृहस्पति पैतृक धन देता है और आयु की वृद्धि करता है। (चन्द्रमा से सप्तम भाव में स्थित बुध यश के लिए तो अच्छा होता है लेकिन मानसिक शान्ति के लिए शुभ नहीं होता है। षष्टम भाव में स्थित शुक्र सुख देता है और विशेषकर शयनकक्ष का सुख देता है, सप्तम भाव में कलात्मक रुझान और अष्टम में पैतृक धन एवं दीर्घायु देता है।)

अनुभव में यह देखा गया है कि यदि कुण्डली में अन्य शुभ योग होते हैं तो इस योग के अशुभ परिणामों में न्यूनता आती है। गोचर में चन्द्रमा का बृहस्पति से अशुभ भावों के गोचर के समय का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यह सुखद समय नहीं होता है।

9. **गज केसरी योगः** फलदीपिका के अनुसार यदि चन्द्रमा, बृहस्पति से केन्द्र में स्थित हो तो इसको केसरी योग कहते हैं। बहुत से ज्योतिष के ग्रन्थों में इसे ही गज केसरी योग भी कहा गया है। इस योग में जन्मा जातक शेर की भान्ति अपने शत्रुओं का नाश करता है। ऐसे व्यक्ति का अपनी वाणी पर पूर्ण नियंत्रण होता है और वह किसी भी विषय पर गम्भीरतापूर्वक अधिकारपूर्ण व्याख्यान देने वाला, राजाओं के समान ऐश्वर्यवान, स्वाभाविक तेज वाला, दीर्घायु, तीव्र बुद्धि वाला और यशस्वी होता है।

इस योग को अपने ग्रन्थ बृहत्पाराशरहोराशास्त्र में महर्षि पराशर ने कुछ अलग ढंग से कहा है।

केन्द्रे देवगुरौ लग्नाच्चन्द्राद्वा शुभदृग्युते।
नीचास्तारिगृहैर्हीने योगोऽयं गजकेसरी॥

इसका अर्थ है कि लग्न अथवा चन्द्रमा से यदि बृहस्पति केन्द्र में हो और केवल शुभ ग्रहों से ही दृष्ट हो तथा यदि अस्त, नीच या शत्रु राशि में नहीं हो तो गजकेसरी नामक योग होता है। इस योग में जन्मा जातक तेजस्वी, धनवान, मेधावी, गुणसम्पन्न और राजा का प्रिय व्यक्ति होता है।

मतान्तर से इस योग के लिए चन्द्रमा को शुक्लपक्ष का और बृहस्पति को चन्द्रमा से चतुर्थ या दशम भाव में स्थित होना चाहिए तथा यह केवल वृषभ, मीन, कुंभ और धनु राशियों में ही बनता है। इस योग के शुभ परिणाम चन्द्रमा और चन्द्रमा से सम्बन्धित ग्रहों की दशा में प्राप्त होते हैं।

एक अन्य मत के अनुसार केसरी योग में जन्मा जातक शुक्र की दशा में धनवान होता है।

सूर्य योग

1. **शुभ वेशि योगः** यदि सूर्य से द्वितीय भाव में चन्द्रमा को छोड़कर अन्य कोई शुभ ग्रह (बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र) हो तो शुभ वेशि योग होता है। इसके परिणाम स्वरुप जातक सुशील, सुन्दर, धनवान, निर्भय और धार्मिक होता है।

2. **पाप वेशि योगः** यदि सूर्य से द्वितीय भाव में अशुभ ग्रह शनि और मंगल हो तो पाप वेशि योग होता है। यदि शनि यह योग बनाता है तो जातक दिखने मे वृद्ध, रुक्ष शरीर वाला, दूसरों की स्त्री का हरण करने वाला और दुर्जन होता है लेकिन सारावली के अनुसार ऐसा जातक धनवान होता है। यदि मंगल यह योग बनाता है तो जातक नीच स्वभाव का लेकिन दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

3. **शुभ वोशि योगः** यदि सूर्य से द्वादश भाव में चन्द्रमा को छोड़कर अन्य कोई शुभ ग्रह (बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र) हो तो शुभ वोशि योग होता है। यदि बृहस्पति यह योग बनाता है तो जातक धार्मिक एवं प्रसिद्ध होता है, यदि शुक्र यह योग बनाता है तो जातक सच्चरित्र एवं सम्मानित और यदि बुध यह योग बनाता है तो जातक आकर्षक, मधुरभाषी एवं आज्ञाकारी होता है।

4. **पाप वोशि योगः** यदि सूर्य से द्वादश भाव में में अशुभ ग्रह शनि और मंगल हो तो पाप वोशि योग होता है। यदि शनि यह योग बनाता है तो जातक रुक्ष शरीर वाला, दूसरों की स्त्री का हरण करने वाला और दुर्जन होता है। यदि मंगल यह योग बनाता है तो जातक व्यापारी, योद्धा, प्रसिद्ध और स्वअर्जित धन-सम्पतिवाला होता है।

5. **उभयचारी योगः** यदि चन्द्रमा एवं राहु-केतु को छोड़कर सूर्य से द्वितीय और द्वादश भाव में ग्रह हों तो उभयचारी योग होता है। यदि सूर्य से द्वितीय और द्वादश भाव शुभ ग्रह हों तो जातक राजा या राजा के तुल्य और धन, सुख, शील, दया आदि गुणों में विशिष्ट होता है। सारावली के अनुसार ऐसा जातक भाग्यवान, विद्वान और सुखी होता है। यदि सूर्य से द्वितीय और द्वादश भाव में अशुभ ग्रह हों तो जातक रोगी, पाप कर्म करने वाला, दूसरों का सेवक और दरिद्र होता है।

6. **बुधादित्य योगः** यदि कुण्डली में बुध एवं सूर्य की युति हो तो बुधादित्य योग होता है जिसके परिणाम स्वरुप जातक अति बुद्धिमान, कार्य करने में दक्ष और अच्छी प्रतिष्ठा वाला होता है।

   सामान्यतः कोई भी ग्रह यदि सूर्य के पास होता है तो अस्त हो जाता है, जिसके कारण शुभ परिणाम देने की क्षमता खो देता है, लेकिन बुध एक अपवाद है। यद्यपि बुध को भी इस योग का शुभ परिणाम देने के लिए सूर्य के अत्याधिक निकट नहीं होना चाहिए। बहुत से विशिष्ट लोगों, गणितज्ञों और इंजीनियरों की कुण्डली में बुध अस्त होता है। इस योग का केन्द्र, त्रिकोण अथवा एकादश भाव में होना गणितज्ञ और ज्योतिषाचार्य होने का एक शास्त्रीय योग है।

अन्य प्रमुख शुभ योगः

1. **लक्ष्मी योगः** जैसा कि इस योग के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि धन की देवी के नाम का यह योग अतुल्य धन-सम्पति उत्पन्न करने वाला होता है। इस योग में लग्नेश और नवमेश शामिल होते हैं। यदि कुण्डली के ये दोनों ग्रह बलवान होकर केन्द्र एवं त्रिकोण में अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि में स्थित हों तो लक्ष्मी योग होता है। इस योग के बनने के सम्बन्ध में निम्नलिखित तीन अन्य विचार हैं:

(1) लग्नेश और नवमेश में राशि परिवर्तन अथवा दोनों की युति होनी चाहिए।

(2) लग्नेश बली होकर स्थित होना चाहिए और नवमेश केन्द्र में होना चाहिए।

(3) शुक्र और नवमेश को बली होना चाहिए तथा केन्द्र-त्रिकोण में स्वराशि या उच्च राशि का होना चाहिए।

इस योग में जन्मा जातक गुणवान, धनवान, आकर्षक, भाग्यवान, यशस्वी और धर्मात्मा होता है।

2. **पुष्कल योगः** यदि चन्द्रमा का राशीश केन्द्र में स्थित होकर लग्न को दृष्ट करे और एक बली केन्द्र में हो तो पुष्कल योग होता है। इस योग के लिए लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा और चन्द्रेश को बली होना चाहिए।

फलदीपिका के अनुसार यदि लग्नेश और चन्द्रेश किसी अधिमित्र की राशि में होकर केन्द्र में हों और कोई बलवान् ग्रह लग्न को देखे तो पुष्कल योग होता है।

पुष्कल योग में जन्मा जातक राजाओं के द्वारा सम्मानित, धनवान, मीठी वाणी बोलने वाला और प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

3. **कलानिधि योगः** यदि जन्म लग्न से द्वितीय या पंचम भाव में बुध एवं शुक्र से युत या दृष्ट, बृहस्पति हो अथवा बुध या शुक्र की राशियों में बृहस्पति हो तो कलानिधि योग होता है। इसके फलस्वरुप जातक गुणवान, राजमान्य, नीरोगी, सुखी, धनवान और विद्यावान होता है।

4. **कुसुम योगः** यदि स्थिर राशि का लग्न हो, शुक्र केन्द्र में हो, चन्द्रमा त्रिकोण में शुभ ग्रह की युति में स्थित हो और शनि दशम में हो तो कुसुम योग होता है। इस योग में जन्मा जातक राजा या राजा के समान, दानी, कुल का मुखिया, गुणवान और विद्वान व्यक्ति होता है।

5. **शंख योगः** शंख योग निम्नलिखित दो प्रकार से होता है:

(1) यदि लग्नेश बली हो और पंचमेश एवं षष्टेश एक-दूसरे से केन्द्र में हो तो शंख योग होता है अथवा,

(2) यदि नवमेश बली हो और लग्नेश एवं दशमेश दोनों चर राशियों में हो तो शंख योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक धन, स्त्री एवं पुत्र से युक्त, दयालु, पुण्यों से युक्त, सुकर्म करने वाला, बुद्धिमान और दीर्घायु होता है।

6. **भेरी योग:** भेरी योग भी निम्नलिखित दो प्रकार से होता है:

(1) नवमेश बलवान हो और सभी ग्रह प्रथम, द्वितीय, सप्तम एवं द्वादश भाव में हों अथवा

(2) नवमेश बलवान हो और शुक्र, बृहस्पति एवं लग्नेश केन्द्र में हों।

इस योग में जन्मा जातक धन, स्त्री एवं पुत्र से युक्त, नरेन्द्र, निर्भय, नीरोगी, राजा, आचारवान और सुखी व्यक्ति होता है।

7. **सरस्वती योग:** यदि बुध, बृहस्पति एवं शुक्र, केन्द्र, त्रिकोण या द्वितीय भाव में एक साथ अथवा अलग-अलग हों तो सरस्वती योग होता है। फलदीपिका के अनुसार इस योग में बृहस्पति को मित्र राशि या उच्च राशि में स्थित होकर बलवान होना चाहिए।

इस योग में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, काव्य, गणित, साहित्य एवं शास्त्रों में पारंगत, धनवान और महान व्याख्याकार होता है। उसकी कीर्ति तीनो लोकों में फैलती है।

8. **मृदंग योग:** यदि लग्नेश बली हो और अन्य ग्रह अपनी उच्च या स्वराशि के होकर केन्द्र-त्रिकोण में हों तो मृदंग योग होता है। इस योग में जन्मा जातक राजा या राजा के समान और सुखी होता है।

9. **श्रीनाथ योग:** पराशर के अनुसार यदि सप्तमेश दशम भाव में उच्च का हो और दशमेश, नवमेश के साथ युति में हो श्रीनाथ योग होता है। जातक पारिजातक के अनुसार उपरोक्त स्थिति के अतिरिक्त यदि सप्तमेश दशम में हो और दशमेश उच्च का होकर नवमेश से युति करे तो भी श्रीनाथ योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक इन्द्र के समान राजा होगा। अर्थात जातक को देवताओं के राजा इन्द्र के समान सभी ऐश्वर्यों की प्राप्ति होगी।

10. **शारदा योग:** यह योग भी दो प्रकार से बनता है। (1) यदि दशमेश पंचम भाव में हो, बुध केन्द्र में हो और सूर्य सिंह राशि में हो अथवा (2) चन्द्रमा

से त्रिकोण में बुध या बृहस्पति हो और मंगल एकादश भाव में हो तो शारदा योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक धन, स्त्री एवं पुत्रादि से युक्त, तपस्वी, धर्मात्मा, विद्वान और सुखी व्यक्ति होता है।

11. **मत्स्य योगः** पराशर के मतानुसार यदि लग्न एवं नवम में शुभ ग्रह हों, पंचम में शुभाशुभ दोनों ही हों और चतुर्थ एवं अष्टम में पाप ग्रह हों तो मत्स्य योग होता है।

जातक पारिजातक के अनुसार यदि लग्न से नवम भाव में पाप ग्रह हो, दो ग्रह-एक शुभ व एक अशुभ, पंचम में हो और एक अशुभ ग्रह चतुर्थ या अष्टम में हो तो मत्स्य योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक कालज्ञ अर्थात ज्योतिषी, करुणा युक्त, गुण-बुद्धि, यश-विद्या और तपस्या से युक्त होता है।

12. **कूर्म योगः** यदि शुभ ग्रह पंचम, षष्टम एवं सप्तम भाव में और पापग्रह तृतीय, एकादश एवं लग्न में अपनी-अपनी उच्च राशि में हों तो कूर्मयोग होता है।

इस योग में जन्मा जातक राजा, धैर्यवान, धर्मात्मा, गुणवान, यशस्वी, उपकार करने वाला सुखी और जन समूह का नेतृत्व करने वाला होता है।

13. **खड्ग योगः** यदि नवमेश और द्वितीयेश में राशि परिवर्तन हो और लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो खड्ग योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक धन एवं भाग्य सुख से युक्त, शास्त्रज्ञ, बुद्धिमान, सुखी, कतृज्ञ और चतुर होता है।

14. **मालिका योगः** मालिका, माला को कहते हैं। जैसे माला में एक दाने के बाद दूसरा दाना होता है उसी प्रकार यदि किसी भी भाव से क्रमशः प्रत्येक भाव में सूर्यादि सातों ग्रह एक-एक करके स्थित होते हैं तो मालिका योग होता है। कहीं-कहीं इसे एकावली योग भी कहा गया है। इसमें भी राहु-केतु को शामिल नहीं किया जाता है। एक कुण्डली में प्रत्येक भाव से मालिका योग बन सकता है इसलिए कुल 12 मालिका योग होते हैं जिनको अलग-अलग नामों से जाना जाता है और प्रत्येक योग का अलग-अलग फल होता है। ये योग इस प्रकार से हैं:

लग्न मालिका: सभी सातों ग्रह लग्न से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो लग्न मालिका योग बनता है। ऐसा जातक राजा, धनवान और प्रमुख व्यक्ति होता है।

धन मालिका: सभी सातों ग्रह द्वितीय भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो धन मालिका योग बनता है। ऐसा जातक अति धनवान, स्वामीभक्त, विशेष धैर्य युक्त और गुणवान होता है।

विक्रम मालिका: सभी सातों ग्रह तृतीय भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो विक्रम मालिका योग बनता है। ऐसा जातक शासक, शूरवीर, धनवान लेकिन रोगी होता है।

सुख मालिका: सभी सातों ग्रह चतुर्थ भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो सुख मालिका योग बनता है। ऐसा जातक भाग्यवान, धनवान, दानवीर, भोगी ओर दयालु होता है।

पुत्र मालिका: सभी सातों ग्रह पंचम भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो पुत्र मालिका योग बनता है। ऐसा जातक राजा, यज्ञ करने वाला, धार्मिक और कीर्तिवान होता है।

शत्रु मालिका: सभी सातों ग्रह षष्टम भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो शत्रु मालिका योग बनता है। ऐसा जातक लालची और कभी धनवान कभी दरिद्र होता है।

कलत्र मालिका: सभी सातों ग्रह सप्तम भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो कलत्र मालिका योग बनता है। इसे कामादि मालिका भी कहा गया है। ऐसा जातक अनेक स्त्रियों का प्यारा और प्रभावशाली व्यक्ति होता है।

रन्ध्र मालिका: सभी सातों ग्रह अष्टम भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो रन्ध्र मालिका योग बनता है। ऐसा जातक दीर्घायु लेकिन निर्धन और मनुष्यों में श्रेष्ठ और स्त्री या स्त्रियों के दबाब में रहने वाला होता है।

भाग्य मालिका: सभी सातों ग्रह नवम भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो भाग्य मालिका योग बनता है। ऐसा जातक धार्मिक, यज्ञ करने वाला, धनवान और सामर्थ्यवान होता है।

कर्म मालिका: सभी सातों ग्रह दशम भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो कर्म मालिका योग बनता है। ऐसा जातक धर्म-कर्म में रत और सज्जनों से सम्पूजित, आदरणीय व्यक्ति होता है।

लाभ मालिका: सभी सातों ग्रह एकादश भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो लाभ मालिका योग बनता है। ऐसा जातक सभी कार्यों में निपुण और सुन्दर स्त्रियों का स्वामी होता है।

व्यय मालिका: सभी सातों ग्रह द्वादश भाव से क्रमशः सात भावों में स्थित हों तो व्यय मालिका योग बनता है। ऐसा जातक अतिव्ययी, उदार और सर्वत्र पूज्य होता है।

15. **चामर योग:** बृहत्पाराशरहोराशास्त्र के अनुसार यदि लग्नेश उच्च का होकर केन्द्र में स्थित हो और उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो अथवा दो शुभ ग्रह लग्न, नवम, दशम या सप्तम भाव में हों तो चामर योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक राजा या राजमान्य, पण्डित, वक्ता, धनवान, कीर्तिवान और दीर्घायु होता है।

16. **काहल योग:** इसे चार प्रकार से कहा गया है:

(1) लग्नेश बलवान हो और चतुर्थेश एवं बृहस्पति एक-दूसरे से केन्द्र में स्थित हो।

(2) सुखेश और दशमेश युति में हों तथा इनमें से कोई भी अपनी उच्च या स्वराशि में हो।

(3) लग्नेश बली हो और चतुर्थेश बृहस्पति त्रिकोण में हो।

(4) चतुर्थेश स्वराशी या उच्च का होकर दशमेश से युति में हो।

(1) और (2) में दी गई स्थितियों में बनने वाले काहल योग को पराशर ने कहा है। शेष दो स्थितियों की अनुशंसा अन्य ग्रन्थों में की गई है।

इस योग में जन्मा जातक बलवान, साहसी, धूर्त, चतुर, एक गांव का स्वामी और कुछ सैनिकों का स्वामी भी होता है।

फलदीपिका में इसे अन्य तरीके से कहा गया है। फलदीपिका के अनुसार लग्नेश का राशीश यदि अपनी उच्च या स्वराशी का होकर केन्द्र या त्रिकोण

में हो तो काहल योग होता है। ऐसा जातक अच्छी बुद्धिवाला, वृद्धि को प्राप्त करने वाला अर्थात वृद्धिष्णु (वृद्धि की प्राप्ति), श्रेष्ठ, प्रसन्न, दूसरों का कल्याण करने वाला और लोगों द्वारा मान्य होता है।

17. **असत्यवादी योगः** यदि द्वितीयेश मंगल की राशि में और शनि एवं अन्य पापी ग्रह केन्द्र में हों तो असत्यवादी योग होता है। यदि द्वितीयेश का नवांशेश मंगल हो या शनि हो या इनकी राशि में स्थित हो तो भी असत्यवादी योग होता है।

    इस योग में जन्मा जातक असत्य वचन बोलने वाला होता है।

18. **जड़ योगः** यदि द्वितीयेश पापी ग्रहों से युति करके दशम भाव में स्थित हो तो जड़ योग होता है। इस योग में जन्मा जातक लोगों के सामने असहज हो जाता है और अपनी बात नहीं कह पाता है लेकिन, जातक भाग्यवान और प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

19. **कालसर्प योगः** यदि किसी कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य स्थित हों तो कालसर्प योग होता है। यह ऐसा अशुभ योग माना जाता है जो कुण्डली के सभी शुभ योगों को समाप्त कर देता है। इस योग की विस्तृत चर्चा श्री के.एन. राव ने अपनी पुस्तक "कालसर्प योग" में की है। ज्योतिष को अपनी आजीविका बनाने वाले ज्योतिषाचार्यों के लिए यह योग भयंकर फल कथन कहने के लिए तलवार की भान्ति सिद्ध हो रहा है।

    हमारा भी यह अनुभव है कि इस योग को अनावश्यक महत्व नहीं देना चाहिए और किसी एक योग के स्थान पर पूरी कुण्डली के सामूहिक प्रभाव को विचारना चाहिए।

इस योग से अनुमानित परिणामः

यदि यह योग किसी देश की वार्षिक मेदिनी कुण्डली में होता है तो देश विनाश को प्राप्त होगा। यह ऐसां युद्ध और प्रलयकारी विनाश लाएगा तो पूर्व के इतिहास में कभी देखा या सुना न गया हो। देश को हार का मुंह देखना पड़ेगा और देशवासियों को कष्टकारी समय भोगना होगा। युद्ध, भुखमरी, बिमारियां और भंयकर छूत के रोग होंगे।

किसी जातक की कुण्डली में यदि यह योग होगा तो यह उस जातक के परिवार का नाश कर देगा। जातक को अत्याधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

उसकी भूमि और धन-सम्पति का लोप हो जाएगा तथा जीवनवृत्ति का अन्त हो जाएगा। उसके सम्बन्धी और मित्र उसके सन्ताप के कारण हो सकते हैं और वे जातक को छोड़ देगें।

यहां यह कहना अतिआवश्यक है कि ज्योतिषशास्त्र के किसी भी शास्त्रीय ग्रन्थ में इस योग की चर्चा नहीं की गई है। कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि इस योग का महत्व प्रश्न शास्त्र में है।

यदि कुण्डली अन्य शुभ योगों के कारण बलिष्ठ हो, लग्नेश और नवमेश बली हों, शुभ ग्रह केन्द्र-त्रिकोण में एवं पापी ग्रह तृतीय, षष्टम एवं एकादश भाव में हों तथा कुण्डली में उचित राजयोग उपस्थित हों एवं शुभ दशायें चल रही हों तो इस योग का कोई भी अशुभ प्रभाव नहीं पड़ता है।

डा. रमण के मतानुसार यह योग निष्कर्य हो जाता है यदि

1. एक भी ग्रह राहु-केतु के साथ हो अथवा उनकी परिधि से बाहर हो।
2. लग्न, राहु-केतु के अक्ष में हो। यद्यपि इस योग को मानने वालों का मत है कि यदि लग्न भी राहु-केतु के मध्य हो तो इस योग का दुष्प्रभाव अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

चोरी होने के योगः चोरी के योग में निम्नलिखित 6 भाव और भावेश शामिल होते हैं:

1. धन का भाव - द्वितीय भाव
2. लाभ का भाव - एकादश भाव
3. चोरी का भाव - षष्टम भाव
4. हानि का भाव - द्वादश भाव
5. पापी ग्रह, शनि, मंगल और राहु-केतु
6. षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेश।

जब द्वितीयेश या एकादशेश, षष्टम भाव में हो और मंगल या शनि से सम्बन्धित हो तो चोरी होती है।

जब द्वितीयेश और षष्टेश पापी ग्रह मंगल या शनि से दृष्ट हो तो चोरी होती है।

नाभस योग

नाभस योगों का उल्लेख बृहत्पाराशरहोराशास्त्र सहित ज्योतिषशास्त्र के लगभग सभी शास्त्रीय ग्रन्थों में किया गया है। इस योग में भी राहु-केतु को शामिल नहीं किया जाता है। पराशर के अनुसार इन योगों का प्रभाव जीवन पर्यन्त बना रहता है और सभी ग्रहों की दशाओं में इनका परिणाम मिलता है।

पराशर के अनुसार नाभस योगों के 32 मुख्य भेद और 1800 प्रभेद हैं। मुख्य 32 भेदों में 3 आश्रय योग, 2 दलयोग, 20 आकृतियोग और 7 संख्यायोग हैं।

आश्रय योगः

आश्रय का अर्थ है जिस स्थान पर वास हो। चर आदि राशियों के आश्रय वश बनने के कारण यह योग आश्रय योग कहलाते हैं। आश्रय योगों की संख्या तीन हैं और वे इस प्रकार से हैं:

1. रज्जु, 2. मुसल और 3. नल।

1. **रज्जु योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह चर राशियों में स्थित हों तो रज्जु योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक भ्रमणशील, सुन्दर, विदेश जाने से सुखी, क्रूर, दुष्ट स्वभाव का होता है। इस योग मे जन्मा जातक अचल सम्पति बनाने में असमर्थ होता है और उसके विचार बदलते रहते हैं।

2. **मुसल योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह स्थिर राशियों में हों तो मुसल योग होता है। इस योग में जन्मा जातक प्रसिद्ध, धनवान, विद्वान और कई पुत्रों का पिता होता है। ऐसे जातक के पास उद्देश्य प्राप्ति में स्थिरता, लम्बे समय तक एक स्थान पर रहने का रुझान और अपने उद्देश्य पर कार्य करने की क्षमता होती है। पराशर के अनुसार ऐसे जातक के पास सम्मान, ज्ञान और धन होता है।

3. **नल योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हों तो नल योग होता है। इस योग में जन्मा जातक कम या अधिक अंगवाला, असंतुलित धन-सम्पति वाला, दिखने में सुन्दर, अतिचतुर और बन्धुओं का प्रिय होता है।

दल योगः

दल योग, शुभ और अशुभ, ग्रहों के अपने स्वभावानुसार दो प्रकार के समूहों में होकर केन्द्रों में स्थित होने से बनता है। इस योग में लग्न को त्रिकोण माना जाता है। दल योग इस प्रकार से हैं, 1. माला योग और 2. सर्प योग।

माला योगः यदि सभी शुभ ग्रह तीन केन्द्रों में हों तो माला योग होता है। इसका अर्थ है कि इस योग के बनने के लिए सभी शुभ ग्रह चतुर्थ, सप्तम और दशम में होने चाहिए पापी ग्रह केन्द्रों से बाहर होने चाहिए। इस योग मे जन्मा जातक वाहन, वस्त्र, भोग आदि से सुखी, सुन्दर और बहुत स्त्रियों वाला होता है।

सर्पयोगः यदि सभी पापी ग्रह तीन केन्द्रों, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम में हों तो माला योग होता है। इस योग में शुभ ग्रहों का केन्द्र से बाहर होना आवश्यक है। इस योग में जन्मा जातक कुटिल, क्रूर, निर्धन, दुःखी और खाने-पीने के लिए दूसरों पर निर्भर, अर्थात भिखारी होता है।

आकृति योगः

उत्तर भारतीय कुण्डली में ग्रहों की विभिन्न स्थितियां विभिन्न प्रकार की आकृतियां बनाती हैं इसलिए इन्हें आकृति योग कहा जाता है और आकृति के अनुसार ही इनका नाम होता है। आकृति योग 20 प्रकार के होते हैं।

1. **गदा योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह निकट के दो केन्द्रों में स्थित हों तो गदा योग होता है। कुण्डली में चार केन्द्र होते हैं अतः गदा योग चार प्रकार से बन सकता है।

यदि सभी ग्रह प्रथम और चतुर्थ भाव में हों	-	गदा योग।
यदि सभी ग्रह चतुर्थ और सप्तम भाव में हों	-	समखा योग।
यदि सभी ग्रह सप्तम और दशम भाव में हों	-	बवरुक योग।
यदि सभी ग्रह दशम और प्रथम भाव में हों	-	ध्वजा योग।

इस योग में जन्मा जातक सदा धनोद्योगी, यज्ञ करने वाला, शास्त्र एवं संगीत में निपुण और धनवान होता है।

2. **शकट योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह प्रथम और सप्तम भाव में स्थित हों तो शकट योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक रोगी, कृश काया वाला, दरिद्र, बुरे चरित्र या स्वभाव की स्त्री का पति और गाडी चलाकर आजीविका अर्जित करने वाला होता है।

3. **पक्षी या विहग योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह चतुर्थ और दशम भाव में स्थित हों तो पक्षी या विहग योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक भ्रमणशील, दूत, ढीठ, बेशर्म और झगड़ालू होता है। यदि दशा अनुकूल हो तो यह योग आजीविका के लिए अच्छा हो सकता है यद्यपि इसमें बहुत सारे स्थानान्तरण शामिल होंगे।

4. **वज्र योगः** यदि कुण्डली में सभी शुभ ग्रह प्रथम एवं सप्तम भाव में और सभी पापी ग्रह चतुर्थ एवं दशम भाव में स्थित हों तो वज्र योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक आकर्षक, शूरवीर और जीवन के प्रथम एवं अन्तिम भाग में सुखी होता है।

5. **यव योगः** यदि कुण्डली में सभी पापी ग्रह प्रथम एवं सप्तम भाव में और सभी शुभ ग्रह चतुर्थ एवं दशम भाव में स्थित हों तो यव योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक व्रत-नियम-सुकर्म में तत्पर, आयु की मध्यावस्था में सुखी, धनवान, पुत्रवान, दानी और स्थिर बुद्धि वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार जातक जीवन के अन्तिम भाग में सुखी होता है।

6. **कमल योगः** सभी शुभाशुभ ग्रह चारों केन्द्रों में हों तो कमल योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक आकर्षक, प्रसिद्ध, धनवान, गुणवान, दीर्घायु, यशस्वी, अत्याधिक सुकर्म करने वाला, सुखी और राजा या राजा के समान होता है।

7. **वापी योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह केन्द्रों के अतिरिक्त अन्य भावों में हों तो वापी योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक धन संचय में लिप्त, कृपण, थोड़े सुख वाला, दीर्घायु और मधुर भाषी होता है। पराशर के मतानुसार ऐसा जातक धन संग्रह में चतुर, स्थिर धन व सुख वाला, पुत्रवान और नृत्यादि से सुखी राजा होता है।

8. **श्रृंगाटकः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह प्रथम, पंचम और नवम भाव में स्थित हों तो श्रृंगाटक योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक लम्बे समय तक सुख का भोग करने वाला, कलहकारक, योद्धा, धनवान, सुन्दर भार्या वाला और स्त्री का द्वेषी होता है।

9. **हल योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह लग्न को छोड़कर अन्य भावों से त्रिकोण में स्थित हों तो हल योग होता है। हल योग तीन प्रकार से बन सकता है।

   1. सभी ग्रह अर्थ त्रिकोण में हों अर्थात द्वितीय, षष्टम एवं दशम भाव में हों।
   2. सभी ग्रह काम त्रिकोण में हों अर्थात तृतीय, सप्तम एवं एकादश भाव में हों।
   3. सभी ग्रह मोक्ष त्रिकोण में हों अर्थात चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश भाव में हों।

   इस योग में जन्मा जातक बहुभक्षी, निर्धन, कृषक, दुःखी, उद्वेग युक्त, भाई-बहनों वाला और सज्जनों का प्रिय होता है।

10. **यूप योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह लग्न से चतुर्थ भाव तक स्थित हों तो यूप योग होता है।

    इस योग में जन्मा जातक आत्मज्ञानी, यज्ञ करने वाला, व्रत-नियम का पालन करने वाला, बलवान, धनवान, सुखी और विशिष्ट व्यक्ति होता है।

11. **शर योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह चतुर्थ भाव से सप्तम भाव तक हों तो शर योग होता है।

    इस योग में जन्मा जातक शस्त्र बनाने वाला, जेलर, शिकारी, जंगलों में भटकने वाला, हिंसक, कुत्सित कर्म करने वाला और मांसभक्षी होता है।

12. **शक्ति योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह सप्तम भाव से दशम भाव तक हों तो शक्ति योग होता है।

    इस योग में जन्मा जातक निर्धन, आलसी, दीर्घायु, दुःखी, असफलताओं से कुण्ठित और युद्ध में निपुण होता है।

13. **दण्ड योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह दशम भाव से लग्न तक हों तो दण्ड योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक निर्धन, नीच व्यक्तियों का सेवक, क्रूर, सुखहीन, व्यर्थ भटकने वाला और अपने परिजनों द्वारा त्याज्यित व्यक्ति होता है।

14. **नौका योग:** यदि कुण्डली में सभी ग्रह प्रथम भाव से सप्तम भाव तक हों तो नौका योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक जल से उत्पन्न वस्तुओं और जलमार्ग से आजीविका कमाने वाला, विदेश से समुद्री व्यापार करने वाला, प्रसिद्ध, बहुत प्रकार से लाभान्वित होने वाला और बलवान होगा।

पराशर के अनुसार ऐसा जातक जल के उत्पादनों से आजीविका कमाने वाला, अतिअभिलाषी, दुष्ट, कृपण, मलिन और लोभी होता है।

वराहमिहिर के मतानुसार ऐसे जातक के सुख में कभी भी स्थिर नहीं होते हैं क्योंकि नौका कभी स्थिर नहीं होती है।

जातक भरणम् के अनुसार जातक कंजूस, अस्थिर बुद्धिवाला, चोरी की सम्पति पर जीने वाला और सदैव दु:खी होगा।

15. **कूट योग:** यदि कुण्डली में सभी ग्रह चतुर्थ भाव से दशम भाव तक हों तो कूट योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक झूठा, कपटी, जेलर, निर्धन, धूर्त, क्रूर और पहाड़ों एवं जंगलों में वास करने वाला होता है।

जातक पारिजातक के अनुसार जातक क्रूर कर्म करने वाला और पर्वत एवं जंगल में रहने वाला होता है। जातक भरणम् के अनुसार ऐसा जातक धनहीन अथवा ज्ञानहीन और धोखेबाज होगा।

मानसागरी का भी यही विचार है क्योंकि इस योग में कुण्डली का आधा दृश्य और आधा अदृश्य भाग शामिल होता है। इसके अतिरिक्त इस योग में दो प्रतिकूल भाव षष्टम एवं अष्टम भाव भी शामिल होते हैं। इसका अर्थ संघर्ष और अनैतिक तरीके अपनाना है जो आधुनिक युग में दूसरों पर आक्रमण करना भी हो सकता है।

16. **छत्र योग:** यदि कुण्डली में सभी ग्रह सप्तम भाव से लग्न भाव तक हों तो छत्र योग होता है।

चूंकि इस योग में कुण्डली के सभी दृश्य भाव शामिल होते हैं इसलिए जातक के सभी कार्य दूसरों को ज्ञात होंगें, वह एक खुला सामाजिक जीवन यापन करेगा और राजा से मान्यता प्राप्त करेगा।

पराशर के मतानुसार ऐसा जातक अपने कुटुम्ब का पोषक, दयावान, दीर्घायु, कई राजाओं से मान्यता प्राप्त और जीवन के अन्तिम समय में सुखी होगा। जातक पारिजातक के अनुसार ऐसा जातक जीवन के आदि और अन्त में सुखी, अत्यन्त धनी और बलवान होगा।

वराहमिहिर के अनुसार जातक जीवन के अन्त में सुखी होगा। होरा रत्नम् के अनुसार जातक दीर्घायु होगा।

होरामार्कण्ड के अनुसार जातक छोटे शरीर वाला होगा, विद्वान होगा, जीवन के प्रारम्भ में सुखी होगा और राजसी जीवन यापन करेगा।

17. **धनुष या चाप योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह दशम भाव से चतुर्थ भाव तक हों तो धनुष या चाप योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक शूरवीर, सैनिक, घमण्डी, चोर, व्यर्थ भटकने वाला और जीवन के मध्य भाग में सुखी होता है।

पराशर के अनुसार जातक मिथ्यावादी, जेलर, चोर, धूर्त, वनविहार प्रिय, भाग्यहीन और जीवन के मध्य भाग में सुखी होगा।

18. **चक्र योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह लग्न से आरम्भ कर एकान्तर से 6 विषम भावों (1, 3, 5, 7, 9, 11) में स्थित हों तो चक्र योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक आकर्षक, धनवान, यशस्वी और राजा के समान होता है। पराशर के अनुसार ऐसा जातक ऐसा चक्रवर्ती राजा होता है जिसके चरणों की वन्दना कई राजा करते हैं।

19. **समुद्र योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह द्वितीय भाव से आरम्भ कर एकान्तर से 6 सम भावों (2, 4, 6, 8, 10, 12) में स्थित हों तो समुद्र योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक धनवान, सुखी, सबका प्रिय और धर्मपरायण व्यक्ति होता है। पराशर के अनुसार ऐसा जातक रत्नादि धन से पूर्ण, स्थिर धनवाला, भोगी, लोकप्रिय, सत्पुत्रवाला और सुशील होता है।

20. **अर्धचन्द्र योग:** यदि केन्द्रों के अतिरिक्त अन्य भावों से प्रारम्भ करके सभी ग्रह लगातार सात भावों में हों तो अर्धचन्द्र योग होता है। यह योग आठ प्रकार से बन सकता है।

1. सभी सात ग्रह द्वितीय भाव से अष्टम भाव तक,
2. सभी सात ग्रह तृतीय भाव से नवम भाव तक,
3. सभी सात ग्रह पंचम भाव से एकादश भाव तक,
4. सभी सात ग्रह षष्टम भाव से द्वादश भाव तक,
5. सभी सात ग्रह अष्टम भाव से द्वितीय भाव तक,
6. सभी सात ग्रह नवम भाव से तृतीय भाव तक,
7. सभी सात ग्रह एकादश भाव से पंचम भाव तक,
8. सभी सात ग्रह द्वादश भाव से षष्टम भाव तक।

इन सबमें द्वितीय भाव से बनने वाला अर्धचन्द्र योग सबसे अधिक प्रभावशाली होता है। इस योग में जन्मा जातक सुन्दर शरीर का स्वामी, सेनापति, राजमान्य, बलवान, विविध प्रकार के धन से युक्त और राजा से सम्मानित व्यक्ति होता है।

संख्या योग:

चूंकि नाभस योगों में सात ग्रहों को ही शामिल किया गया है इसलिए संख्या योग भी सात ही होते हैं। जैसा कि योग के नाम से ही स्पष्ट है यह ग्रहों की संख्या के आधार बनने वाले योग हैं। पराशर के अनुसार यदि कुण्डली में अन्य नाभस योग उपस्थित हों तो यह योग प्रभावशाली नहीं होते हैं।

1. **गोल योग:** यदि कुण्डली में सभी ग्रह एक भाव में ही स्थित हों तो गोल योग होता है।

   इस योग में उत्पन्न जातक दरिद्र, शिक्षा-दीक्षा से हीन, मित्रों या परिवार से हीन, अस्वच्छ और सदैव दुःखी होता है। पराशर के अनुसार जातक बलवान, धनहीन, विद्या एवं ज्ञान से शून्य, मलिन और दुःखी होता है।

2. **युग योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह दो भावों में स्थित हों तो युग योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक निर्धन, शिक्षाविहीन, लोगों द्वारा त्याज्य और पुत्र, सम्मान एवं भाग्य से हीन होता है। पराशर के अनुसार जातक पाखण्डी, समाज से बाहर और माता, पुत्र एवं धर्म से हीन होता है।

3. **शूल योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह तीन भावों में स्थित हों तो शूल योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक आलसी, क्रूर, कठोर, बेशर्म, युद्ध में विजयी और पराक्रमी होता है। पराशर के अनुसार जातक तीक्ष्ण स्वभाव, आलसी, निर्धन, हिसक, समाज से बाहर, शूर और युद्ध में विजयी होता है।

   शूल का अर्थ कांटा भी होता है इसलिए इसका अभिप्राय लापरवाह, तीखे, उग्रता युक्त व्याकुलता, बुद्धिमानी, कठोर नियमों वाला, कठोर आदि भी हो सकता है। साथ ही साथ प्रेरक, तानाशाह या दृढ़ता से अपनी बात कहने वाला, यहां तक कि क्रूर और जीवन में अचानक उतार-चढ़ाव देखने वाला हो सकता है। इसका एक उदाहरण राजीव गान्धी की कुण्डली भी है। उनके जीवन में भी अचानक उत्थान और नाटकीय ढंग से पतन आया। वह क्रूर भी थे जैसे कि वरिष्ठ नेताओं के प्रति उनके व्यवहार का अनुमान करना कठिन था।

4. **केदार योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह चार भावों में स्थित हों तो केदार योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक संतुलित, कृषक, सत्यवक्ता, धनवान, सुखी, चंचल, दूसरों पर उपकार करने वाला और अस्थिर बुद्धिवाला होता है।

5. **पाश योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह पांच भावों में स्थित हों तो पाश योग होता है।

   इस योग में जन्मा जातक बन्धनभागी अर्थात जेलयात्रा करने वाला, कार्यदक्ष, वाचाल, अपने कार्य जुड़ा रहने वाला, संसार की भौतिकता पर आसक्त, कई सेवकों वाला लेकिन अधिक गुणवान नहीं, अशिष्ट और धन अर्जन में दक्ष होता है।

6. **दाम या दामिनी योगः** यदि कुण्डली में सभी ग्रह छः भावों में स्थित हों तो दाम योग या दामिनी योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक धनवान, निर्भय, विद्वान और रत्नादि एवं कई पुत्रों से युक्त होता है। पराशर के अनुसार ऐसा जातक परोपकारी, नीति से धनोपार्जन करने वाला, ऐश्वर्यवान, प्रसिद्ध और ज्ञानी व्यक्ति होता है।

7. **वीणा योग:** यदि कुण्डली में सभी ग्रह सात भावों में स्थित हों तो वीणा योग होता है। इस स्थिति में ग्रहों द्वारा उत्सर्जित उर्जा अधिकतम भावों में बंटी होती है जो कुण्डली का सबसे बलिष्ठ गुण होता है।

   इस योग में जन्मा जातक सुखी, धनवान, प्रसिद्ध, कई सेवकों एवं मित्रों वाला, विद्वान, वाक्पटु और संगीत एवं गायन का रसिया होता है। पराशर के अनुसार जातक गीत, नृत्य एवं संगीत से प्रेम करने वाला, सुखी, धनवान और नेता होता है।

कारावास के योग:

1. जब लग्न से पंचम, सप्तम या नवम भाव में दो पापी ग्रह हों और इन भावों के स्वामी भी पापी ग्रह हों।
2. यदि द्वादश, द्वितीय, पंचम या नवम भाव में पापी ग्रह हों तो यदि कुण्डली में इनके प्रभाव को निरस्त करने के योग नहीं हैं तो कारावास संभावित होता है।
3. यदि लग्न सर्प या निगड़ या गृध्रास्य द्रेष्कोण में हो और बली अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का कारावास जाना संभावित होता है। कारावास जाने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:
   - यदि द्वादश भाव में पाप ग्रह हो तो लम्बे समय तक चलने वाले ऋण के कारण।
   - यदि द्वितीय भाव में पाप ग्रह हो तो गबन या दुरुपयोग के कारण।
   - यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो पुत्र के कारण।
   - यदि नवम भाव में पाप ग्रह हो तो राजद्रोह या राजनैतिक कारणों से।
   - यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो बलात्कार, स्त्रियों के शोषण करने आदि से।
4. यदि लग्न, शनि के अथवा सर्प द्रेष्कोण में हो और चन्द्रमा एवं शनि से दृष्ट हो तो कारावास संभावित होता है।

योग का बल:

1. यदि बली ग्रह किसी योग का निर्माण करते हैं तो वह योग भी स्वतः ही बली हो जाता है। यदि ग्रह उच्च या स्वराशि, केन्द्र-त्रिकोण का स्वामी होकर अस्त-ग्रस्त न हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो बली होता है।
2. योग में शामिल ग्रह शुभ भावों के स्वामी हों तो योग बली होता है।
3. यदि शुभ योग शुभ भाव में बनता है तो योग को नैसर्गिक बल प्राप्त होता है।
4. यदि योग पापी ग्रहों के प्रभाव में न हों तो बली होता है।

कारक

पराशरी पद्धति में कारक ग्रह निश्चित होते हैं। ये इस प्रकार से हैं:

ग्रह	कारक
सूर्य	पिता
चन्द्रमा	माता
मंगल	भाई
बुध	मामा, आजीविका, बुद्धिमता
बृहस्पति	सन्तान, धन, ज्ञान
शुक्र	विवाह, जीवन-साथी, शुक, वाहन
शनि	सेवक, आयु,
राहु	नाना
केतु	दादा

- सूर्य और शुक्र में से जो बली होता है वह पिता को इंगित करता है।
- चन्द्रमा और शुक्र में से जो बली होता है वह माता को इंगित करता है।

जैमिनी कारक

जैमिनी पद्धति में भोगांशों के घटते क्रम के अनुसार कारक निश्चित किये जाते हैं। कुण्डली के ग्रहों के भोगांशों के आधार पर निश्चित किये जाने के कारण प्रत्येक कुण्डली के कारक ग्रहों में परिवर्तन होता है। इसमें एक अन्य मुख्य बात यह भी है

कि जैमिनी में कारक मात्र सात ही होते हैं। छाया ग्रह होने के कारण इनमें राहु-केतु को शामिल नहीं किया जाता है। भोगांशों को देखते समय राशि को इसमें शामिल नहीं किया जाता है। जैमिनी कारक इस प्रकार से हैं:

1. **आत्मकारकः** कुण्डली का सबसे अधिक भोगांश वाला ग्रह आत्मकारक होता है। यह कुण्डली का मुख्य और प्रमुख ग्रह होता है। कुण्डली का बल आत्मकारक के बल के उपर ही निर्भर होता है।

2. **अमात्यकारकः** कुण्डली का दूसरा सबसे अधिक भोगांश वाला ग्रह अमात्यकारक होता है। यह आत्मकारक का मंत्री या साथी की तरह ही होता है और कुण्डली में आत्मकारक से दूसरे क्रम का महत्वपूर्ण ग्रह होता है।

3. **भ्रातृकारकः** यह भोगांशों के घटते क्रम में तीसरा ग्रह होता है जो भाई का कारक होता है लेकिन विशेष परिस्थितियों में पिता के कारक के रुप में भी विचारा जाता है। यह तृतीयेश की तरह ही कार्य करता है।

4. **मातृकारकः** यह भोगांशों के घटते क्रम में चतुर्थ ग्रह होता है जो माता का कारक होता है लेकिन कभी-कभी चतुर्थेश के रुप में भी विचारा जाता है।

5. **पुत्रकारकः** यह भोगांशों के घटते क्रम में पंचम ग्रह होता है जो पुत्र का कारक होता है लेकिन कभी-कभी पंचमेश के रुप में भी विचारा जाता है।

6. **ज्ञातिकारकः** यह भोगांशों के घटते क्रम में षष्टम ग्रह होता है जो रुकावटों का कारक होता है और षष्टेश की तरह कार्य करता है।

7. **दाराकारकः** यह भोगांशों के घटते क्रम में सबसे कम भोगांश वाला ग्रह होता है जो जीवनसाथी का कारक होता है और सप्तमेश की तरह कार्य करता है।

कुण्डली के जैमिनी कारक सुनिश्चित करने की विधिः

भोगांशों के घटते क्रमानुसार सभी ग्रहों को लिख लें। सदैव याद रखें कि क्रम को निश्चित करते समय राशियों की संख्या को इसमें शामिल नहीं करना है और भोगांशों के केवल अंशों, मिनटों और सैकिण्डों को ही लेना है। सबसे अधिक भोगांश वाला ग्रह आत्मकारक होगा, दूसरे क्रम का ग्रह अमात्यकारक और इसी प्रकार क्रमशः सभी कारक निश्चित होगें। राहु-केतु भी इसमें शामिल नहीं होते हैं।

उदाहरण: वलादिगार पुतिन की कुण्डली

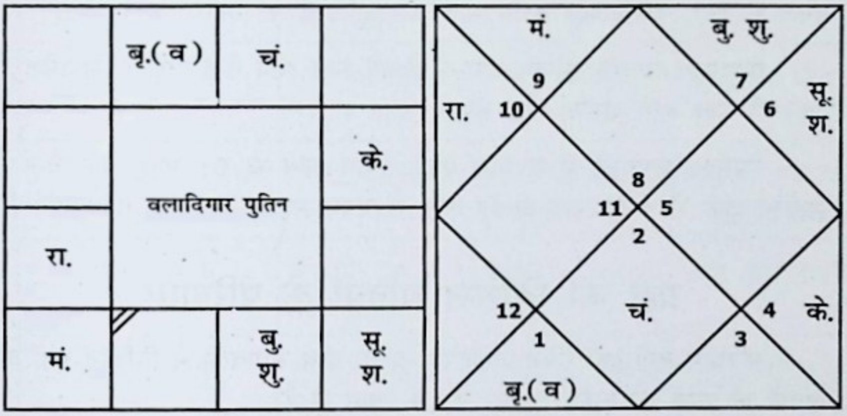

लग्न 24°38' सूर्य 20°45' चन्द्रमा 09°59' मंगल 03°20'
बुध 00°01' बृहस्पति(व) 26°32' शुक्र 18°33' शनि 24°15'
राहु 25°25'

उपरोक्त कुण्डली में जैमिनी कारक इस प्रकार से हैं:

1. आत्मकारक: सर्वाधिक भोगांश 26°32' होने के कारण बृहस्पति आत्मकारक है।
2. अमात्यकारक: दूसरे क्रम पर 24°15' के साथ शनि अमात्यकारक है।
3. भ्रातृकारक: भोगांशों के घटते क्रम में 20°45' के साथ सूर्य भ्रातृकारक है।
4. मातृकारक: भोगांशों के घटते क्रम में 18°33' के साथ शुक्र मातृकारक है।
5. पुत्रकारक: चन्द्रमा 09°59' के भोगांश के साथ पुत्रकारक है।
6. ज्ञातीकारक: मंगल 03°20' भोगांश के साथ ज्ञाती कारक है।
7. दाराकारक: सबसे कम भोगांश 00°01' होने के कारण बुध दाराकारक है।

कारकांश लग्न: नवांश कुण्डली में आत्मकारक जिस राशि में बैठता है वह राशि लग्न कुण्डली में कारकांश लग्न कहलाती है।

आरुढ़ लग्न: लग्नेश लग्न से जितने भाव आगे होता है लग्नेश से उतने ही भाव आगे आरुढ़ लग्न होता है।

उपरोक्त कुण्डली में मंगल लग्नेश है और यह लग्न से दूसरे भाव में बैठा है। मंगल से दूसरे भाव अर्थात तृतीय भाव, इस कुण्डली का आरुढ़ लग्न होगा।

दारापद: सप्तमेश सप्तम भाव से जितने भाव आगे बैठा होता है सप्तमेश से उतने ही भाव आगे दारापद होता है।

उपरोक्त कुण्डली में सप्तमेश शुक्र सप्तम भाव से छः भाव आगे बैठा है इसलिए शुक्र से षष्टम भाव अर्थात लग्न से पंचम भाव, मीन राशि में दारापद है।

ग्रहों की विभिन्न युतियों के परिणाम

कल्याण वर्मा द्वारा रचित ज्योतिषशास्त्र के ग्रन्थ सारावली में विभिन्न ग्रहों की युतियों के फलों को कहा गया है। ये इस प्रकार से है:

दो ग्रहों की युति

1. **सूर्य-चन्द्रमा:** भार्या द्वारा शासित, मशीनों, विष, जहरीले रसायनों से सम्बन्धित कार्य, दृष्टिदोष।

प्रथम भाव में	माता-पिता के कारण दुःखी, सम्मान, धन-सम्पति एवं पुत्रों से हीन, अभागा।
चतुर्थ भाव में	सम्बन्धियों, पुत्रों एवं सुख से वंचित, मूर्ख या जड़मति और निर्धन।
सप्तम भाव में	स्त्रियों से अपमानित, मित्र एवं पुत्र से हीन।

2. **सूर्य-मंगल:** साहसी, ओजस्वी, पुलिस में नौकर, मारने में विश्वास रखने वाला, झूठा, पाप बुद्धिवाला और मूर्ख।

प्रथम भाव में	शूरवीर, क्रूर, कठोर, चिड़चिड़ा और घायल देह वाला।
चतुर्थ भाव में	उत्तेजक, धन-सम्पति एवं सुख से हीन, सम्बन्धियों द्वारा त्याज्य।
सप्तम भाव में	भार्या से वियोग, स्त्रियों के द्वारा अपमानित, विदेश यात्रा का आसक्त।

दशम भाव में	सरकारी नौकरी, कार्य हाथ में लेने में असफलता, भावुक और दुखी।
नवम भाव में	राजा का प्रिय एवं निपुण, ओजस्वी, साहसी और जीवन में कई परेशानियां।

3. **सूर्य-बुधः** सेवाभाव वाला, अस्थिर धन वाला, प्रिय वचन बोलने वाल, यश को ही धन मानने वाला, सज्जन, राजा का प्रिय और बल, रुप, धन एवं विद्यावान।

प्रथम भाव में	बुद्धिमान, बलवान, विद्यावान, साहसिक कार्य करने वाला और दीर्घायु।
चतुर्थ भाव में	कुबेर के समान धनी, प्रसिद्ध, स्थूलकाय शरीर और टेढ़ी नाक।
सप्तम भाव में	कृपण, चोर, रतिसुख का वियोगी, हत्या या कारावास के कारण मृत्यु, अपने वचनों को भंग करने वाला
दशम भाव में	राजा, विश्वविख्यात और अतिधनवान।
नवम भाव में	निपुण, दुःखित, कई शत्रुओं और रोगों वाला।

4. **सूर्य-बृहस्पतिः** अतिधार्मिक प्रवृति वाला, राजा का मंत्री, सुबुद्धिवाला, मित्रों की सहायता से लाभ कमाने वाला और आचार्य।

प्रथम भाव में	धर्मपरायण, साधु, मंत्री या सेना प्रमुख, विद्वान, धनवान, आमोद-प्रमोद और यशस्वी।
चतुर्थ भाव में	वेदों की इच्छावाला, न्याय एवं काव्य, धनी, विलक्षण, धार्मिक।
सप्तम भाव में	धनी एवं स्वस्थ, स्त्रियों का सहायक और पिता से घृणा करने वाला।
दशम भाव में	बहुत सारे मकान, धनवान, यशस्वी और यद्यपि निम्न परिवार में भी जन्मा हो तो भी राजा।
नवम भाव में	गुणवान व्यक्ति, अत्याधिक पैतृक धन-सम्पति और दीर्घायु।

5. **सूर्य-शुक्रः** शस्त्र से प्रहार करने, विद्या एवं बल से युक्त, दुर्बल नैत्रवाला, रंगमंच कुशल और स्त्री के धन से धन-सम्पति प्राप्त करने वाला। यदि शुक्र, सूर्य से आगे हो तो धन-सम्पति अधिक होती है।

प्रथम भाव में	अधम, दुःखयुक्त, धन-सम्पति एवं स्त्री विहीन, बुरे स्वभाव वाला और झगड़ालू।
चतुर्थ भाव में	निर्धन, दुःखयुक्त और दूसरों के प्रति घृणा रखने वाला।
सप्तम भाव में	स्त्रियों द्वारा अपमानित, धन-सम्पति विहीन, स्थूलकाय शरीर और पहाड़ों एवं जंगलों में भटकने वाला।
दशम भाव में	कई वाहनों वाला, कला में निपुण, व्यापारी या मंत्री।
नवम भाव में	अधिक धन-सम्पति, सुगन्धी, वस्त्र, आभूषण, सजावट के समान लेकिन रोगों के प्रति कम प्ररिरोधक क्षमता।

6. **सूर्य-शनिः** धातु शोधन की कला जानने वाला, धर्मपरायण, अपने कर्म में रत, स्त्री एवं पुत्र से कष्ट, अपने कुल में गुणवान और सिद्ध व्यक्ति।

जातक भरणम् के मतानुसार खनिज बेचने वाला, धर्मपरायण, अच्छे गुणों वाला, धनवान और सुखी परिवार वाला।

प्रथम भाव में	पाप कर्म, गन्दा रहने वाला और अनैतिक आचरण।
चतुर्थ भाव में	निर्धन और सम्बन्धियों के द्वारा अपमानित।
सप्तम भाव में	मूर्ख, मंदबुद्धि, झूठा, ईर्ष्यालु और दूसरों के धन के पीछे भागने वाला।
दशम भाव में	शूरवीर एवं अत्याधिक धनवान, हाथी-घोड़े वाला।
नवम भाव में	अल्पायु, झगड़ालू, रोगयुक्त लेकिन धनी।

7. **चन्द्रमा-मंगलः** योद्धा, युद्ध में प्रसिद्ध, पहलवान, रक्त से सम्बन्धित रोग, मिट्टी या चमड़े का शिल्पकार, क्रूर, माता का शत्रु, मामा-नाना से कटु सम्बन्ध वाला और रोगी।

प्रथम भाव में	राजा, कठोर, खून एवं पाचन शक्ति में दोष।

चतुर्थ भाव में	विकृत अंगों वाला, सन्तति में परेशानियां, धन-सम्पति एवं सुख विहीन।
सप्तम भाव में	असत्यवादी, ईर्ष्यालु और दूसरों के धन के पीछे भागने वाला।
दशम भाव में	शूरवीर, धन-सम्पति, सेना में नौकरी।
नवम भाव में	धन-सम्पतिवान, अल्पायु में माता की मृत्यु, अल्सर और असन्तुलित देह।

8. **चन्द्रमा-बुधः** काव्य-कथा में अतिनिपुण, धनसहित, स्त्री का प्यारा, सुन्दर रुपवाला, मधुर मुस्कानवाला, धर्म में रुचि रखने वाला और विशिष्ट गुणों वाला।

प्रथम भाव में	सुखी, निपुण, वाचाल और धनी।
चतुर्थ भाव में	सौभाग्यशाली, सम्बन्धियों से सुखी, मित्रवान और सन्तानवान।
सप्तम भाव में	राजा, शूरवीर, कवि, कोमल प्रवृति।
दशम भाव में	धनी, प्रसिद्ध, मंत्री।
नवम भाव में	विद्वान, शास्त्रों का ज्ञाता, प्रसिद्ध, वाचाल, श्रेष्ठ व्यक्ति, विकृत अंग।

9. **चन्द्रमा-बृहस्पतिः** दृढ़ मित्रता वाला, विनीत, बन्धुओं का सम्मान करने वाला, धनवान, सचरित्र, देवता और ब्राह्मणों का हितैषी। गजकेसरी योग बनता है इसलिए धनवान, धर्मपरायण, विद्वान और बुद्धिमान।

प्रथम भाव में	उंची छाती, बलवान देह, कई मित्र एवं पुत्र और धन।
चतुर्थ भाव में	सुखमय, मंत्री और धन, मित्र एवं सन्तान से युक्त।
सप्तम भाव में	विद्वान, राजा, कलाओं में प्रवीण, कई शास्त्रों में दक्षता।
दशम भाव में	उच्च सामाजिक स्थिति, कन्या सन्तान, कर्मनिष्ठ, सहायता करने वाला, लम्बी भुजाओं वाला और प्रसिद्ध।
नवम भाव में	विशिष्ट, धनवान, सुखी एवं साहसी।

10. **चन्द्रमा-शुक्रः** परिधान, सुगन्ध, अम्बर युक्त, कार्य करने की कला का ज्ञाता, अपने कुल में प्रिय, आलसी और क्रय-विक्रय में कुशल।

प्रथम भाव में	धनी, माला, सुगन्ध और वेश्याओं की संगत।
चतुर्थ भाव में	जल के द्वारा सम्पति, लोकप्रिय और धनी।
सप्तम भाव में	उच्च मानसिक स्थिति वाला, बुद्धिमान, यशस्वी एवं कीर्तिवान, बहुत स्त्रियों वाला, कम धन या पुत्रवाला।
दशम भाव में	प्रसिद्ध, मंत्री, धनी और लोकप्रिय।
नवम भाव में	बुरे चरित्र वाली भार्या, रोगी और धनी। यदि सुस्थित हो तो सौतेली माता वाला।

11. **चन्द्रमा-शनिः** बड़ी आयु की स्त्री से रति करने वाला, हाथी-घोड़े पालने वाला, चरित्रहीन, दूसरे के वश में रहने वाला, निर्धन और पराजित। स्त्रियों की कुण्डली में विधवा योग।

प्रथम भाव में	कृपण, आलसी, सेवक, क्रोधी और पापी।
चतुर्थ भाव में	जल के द्वारा आय, मोती, नाव, लोकप्रिय, श्रेष्ठ।
सप्तम भाव में	भार्याहीन, सजातीय व्यक्तियों में श्रेष्ठ और राजा से सम्मानित।
दशम भाव में	नेता, प्रसिद्ध, प्रमुख। शुभ ग्रहों के साथ चन्द्रमा शुभ परिणाम देता है। मंगल और शनि के साथ शुभ नहीं होता है लेकिन यदि दशम भाव में हो तो सेना का प्रमुख बनाता है। चन्द्रमा, शनि और मंगल का योग महात्माओं के लिए है।
नवम भाव में	अनैतिक, पापी, दुष्ट माता।

12. **मंगल-बुधः** दुर्भाग्या भार्या वाला, अल्पवित्त, सोने एवं लोहे का अच्छा कारीगर, शिल्पकार, दुष्ट स्त्रियों या विधवाओं के प्रति आकर्षण रखने वाला ओर दवा बनाने में कुशल।

प्रथम भाव में	क्रूर, दगाबाज, हत्यारा, आग से सम्बन्धित कार्यों में दक्ष, धातुशोधन विशेषज्ञ, खनन विशेषज्ञ, कल-कारखानों का

	स्वामी और छुपाकर रखी गुप्त सम्पतियों का आनन्द लेने वाला।
चतुर्थ भाव में	खान-पान, धन-सम्पति, मित्रों, आनन्द एवं वाहनों से युक्त लेकिन स्वजनों का त्याज्य।
सप्तम भाव में	प्रथम भार्या से वियोग, देश-विदेश में उद्देश्यहीन भटकना, निम्न प्रवृति के लोगों का सेवक, कृषि के कार्यों में निपुण।
दशम भाव में	शूरवीर, सेना प्रमुख, क्रूर, धूर्त, राजा का प्रिय और साहसी।
नवम भाव में	सौभाग्यशाली, शास्त्रों में दक्ष, प्रमुख, आमोद-प्रमोद का आनन्द लेने वाला।

13. **मंगल-बृहस्पतिः** शिल्पकला में कुशल, वेदशास्त्रों का ज्ञाता, बुद्धिमान, वाणी कुशल, विचारशील, हथियारों से प्रेम करने वाला, सेना प्रमुख और जागीरदार।

प्रथम भाव में	स्वजनों एवं मित्रों वाला, राजा का प्रिय, धनवान और सुखी।
चतुर्थ भाव में	भार्याहीन, जंगलों, झरनों एवे पहाड़ों में भटकने वाला, शूरवीर और अच्छे स्वजनों वाला।
सप्तम भाव में	प्रसिद्ध, उत्साही, मंत्री, दयालु और उर्जावान।
दशम भाव में	यशस्वी, राजा, अत्याधिक धन-सम्पति वाला, कार्यो में अतिनिपुण।
नवम भाव में	शरीर में घाव, बिमारी, धनी और सम्माननीय।

14. **मंगल-शुक्रः** पूज्यनीय, मुखिया, गणितज्ञ, दूसरी युवतियों में रत, धूर्तजुआरी, असत्यवादी, छल-कपट में रत, स्त्रियों से चुगलखोरी करने वाला, अच्छे परिधान वाला, लोकप्रिय, अच्छे व्यवहार वाला, लड़ाकू।

प्रथम भाव में	अनैतिक, वेश्याओं का शौकीन, अल्पायु, स्त्रियों के कारण धनहानि।
चतुर्थ भाव में	मानसिक सन्ताप, परेशान, मित्र एवं स्वजनों से विहीन।

सप्तम भाव में	स्त्रियों के पीछे भागने वाला, दुष्ट आचरण, मानसिक सन्ताप से दुःखी, सुख-मित्र-सन्तति से हीन और समस्याओं से युक्त।
दशम भाव में	बुद्धिमान, विद्वान, धनवान, प्रसिद्ध और राजा का मंत्री।
नवम भाव में	बनावटीपन, तर्क करने वाला, कृतघ्न, क्रूर, स्त्रियों से घृणा करने वाला, झगड़ालू और विदेश में वास करने वाला।

15. **मंगल-शनिः** धातु एवं इन्द्रजाल में कुशल, प्रपंच करने वाला, चोरी में निपुण, विधर्मी, शस्त्र या विष से घायल और झगड़ालू।

प्रथम भाव में	युद्ध में सफल, माता से घृणा करने वाला, अल्पायु और अधोगत भाग्य।
चतुर्थ भाव में	पापी, मित्र एवं स्वजनों का त्याज्य, निर्धन, दुःखी, भोजनहीन।
सप्तम भाव में	रोगी, पाप करने वाला, कहानी या संदेश कहने वाला, रतिसुख एवं सन्तति से हीन और अपमानित।
दशम भाव में	राजा के द्वारा धन-सम्पति लेकिन एक बड़े जुर्म के लिए दण्डित, झूठा।
नवम भाव में	पापी, अशुद्ध आचरण, दूसरों की स्त्रियों में आसक्त और धन, स्वजनों एवं सुख से विहीन।

16. **बुध-बृहस्पतिः** नृत्य की विधि का ज्ञाता, गायक, प्राज्ञावान, विद्वान, संगीत वाद्यों का ज्ञाता, विचारशील सुख के साथ, साहसी, स्वतन्त्र और सुगन्धियों का शौकीन।

प्रथम भाव में	पवित्र, मनमोहक व्यक्तित्व, भलाई के कार्य करने वाला, विद्वान, राजा से सम्मानित, अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाला, देश या सूबे का प्रमुख, सुखमय, आनन्द और धन-सम्पति।
चतुर्थ भाव में	मित्रवान, स्वजन युक्त, सुखमय, धन-सम्पति, वाहन, स्त्रियां, राजसी सम्मान और निपुण।

सप्तम भाव में	धर्मपरायण भार्या, शत्रुओं का नाश करने वाला, प्रसिद्ध, अधिक मित्रों वाला और धनी।
दशम भाव में	मंत्री, प्रसिद्ध, वेदों का विद्वान, सज्जन और सम्माननीय।
नवम भाव में	विद्वान, धनवान, ज्ञानी, मधुरभाषी, श्रेष्ठ व्यक्ति।

17. **बुध-शुक्र:** अत्याधिक धनवान, नीतिवान, बहुत शिल्प कलाओं वाला, वेदवेत्ता, मीठा बोलने वाला, गीतों का ज्ञाता, हास्यप्रिय, सुन्दर दिखने का शौकीन।

प्रथम भाव में	दिखने में सुन्दर, सदैव भाग्यशाली, राजा से सम्मानित, शुद्ध, धनवान और प्रसिद्ध।
चतुर्थ भाव में	सुखी, मंत्री, पवित्र, मित्रों एवं सम्बन्धियों से युक्त, भाग्यशाली।
सप्तम भाव में	सुखी, राजा का प्रिय और बहुत स्त्रियों, धन एवं आनन्द वाला।
दशम भाव में	राजा, नीति विषयक या राजनीति विज्ञान का ज्ञाता, सम्माननीय, सच्चरित्र, धनवान, निपुण और सफल।
नवम भाव में	कार्यदक्ष, धनी, सम्बन्धियों से युक्त, रोगी, ईर्ष्यालु और बकवास करने वाला।

18. **बुध-शनि:** ऋणी, दम्भी, प्रपंच रचने वाला, अच्छा कवि, निपुण और सुन्दर वचन बोलने वाला।

प्रथम भाव में	अल्पायु, अधोगती भाग्य, कुरुप, पापी और विद्या, धन-सम्पति एवं वाहन विहीन।
चतुर्थ भाव में	मित्रों, सुखों एवं स्वजनों से विहीन, पापी एवं बेवकूफ।
सप्तम भाव में	सेवक, अस्वच्छ, मूर्खतापूर्ण पाप और दूसरों की हानि। असत्यवादी और अधार्मिक।
दशम भाव में	देवताओं एवं ब्राह्मणों का सम्मान करने वाला, शत्रु विजेता और धन, मित्र, स्वजन एवं वाहनों से युक्त।
नवम भाव में	धनी, बकवास करने वाला, निपुण, ईर्ष्यालु, रोगी।

19. **बृहस्पति-शुक्रः** विद्या देकर जीवन व्यतीत करने वाला, धर्म का निष्ठा से पालन करने वाला, बुद्धिमान, विशिष्ट भार्या वाला। जातक भरणम् के अनुसार विद्वान, तर्कशील और मित्र, पुत्र एवं धन से युक्त।

प्रथम भाव में	नृप अथवा राजा के तुल्य।
चतुर्थ भाव में	धन, मित्र एवं सम्बन्धियों वाला और भगवान एवं ब्राह्मणों का सम्मान करने वाला।
सप्तम भाव में	धर्मपरायण भार्या और सभी प्रकार की धन-सम्पति वाला। सभी प्रकार के भोगों का आनन्द लेने वाला, कन्या सन्तान वाला, प्रसिद्ध और बहुत से वाहनों वाला।
दशम भाव में	राजा, बहुत से सेवकों वाला, धनी, धार्मिक, सम्माननीय और प्रसिद्ध।

20. **बृहस्पति-शनिः** शूर, धन से समृद्ध, नगरपति और यशस्वी और बड़ी सभा, ग्राम या समुदाय का प्रधान।

प्रथम भाव में	कठोर प्रमुख, अच्छे वंश का, धनी, विद्वान लेकिन सीमित सन्तति वाला। धूर्त एवं सीमित सुख वाला।
चतुर्थ भाव में	सुखी, प्रभावित करने वाला, बहुत मित्रों एवं सम्बन्धियों वाला और स्वस्थ।
सप्तम भाव में	स्त्रियों से शत्रुता के कारण धन की हानि, दुष्टात्मा, धूर्त, मूर्ख, पैतृक भू-सम्पति का अतिलोभी, दिखने में असुन्दर लेकिन साहसी।
दशम भाव में	वाहन एवं पशुधन वाला, राजा के तुल्य, सीमित सन्तति।
नवम भाव में	धनी, सम्पतिवान, सम्माननीय, रोगी और कम सम्बन्धियों वाला।

21. **शुक्र-शनिः** लकड़ी काटने में निपुण अर्थात काष्ठ कला निपुण, विशिष्ट धातुओं पर चित्रकारी करने वाला, पहलवान, यात्रा करने वाला और पशुधन युक्त। यदि यह योग पीड़ित हो तो नाई आदि निम्न व्यवसाय।

प्रथम भाव में	तेजस्वी शरीर, कई स्त्रियों से रति करने वाला, सुख, आनन्द और धन-सम्पति। कई नौकर लेकिन सबके द्वारा त्यागा हुआ।
चतुर्थ भाव में	सम्बन्धियों से सम्मानित, राजा के निकट रहने वाला, मित्रों से लाभ।
सप्तम भाव में	यश, धन-सम्पति और रतिसुख।
दशम भाव में	निर्विघ्न सुख एवं धन-सम्पति, प्रशंसनीय कार्य, प्रसिद्ध मंत्री।
नवम भाव में	कई पुत्र, राजा का प्रिय, प्रसिद्ध, धार्मिक लेकिन रोग युक्त।

तीन ग्रहों की युति

1. सूर्य-चन्द्रमा-मंगलः	निर्लज्ज, पापी, इंजीनियर, साहसी, शत्रुओं को हराने वाला, शूरवीर, सभी कार्यों में कुशल।
2. सूर्य-चन्द्रमा-बुधः	तेजस्वी, निपुण बुद्धिवाला, शास्त्र एवं कला गोष्ठी में रत, राजा का कार्य करनेवाला और धैर्यवान।
3. सूर्य-चन्द्रमा-बृहस्पतिः	पवित्र, क्रोधी, माया के कार्यों में निपुण, सेवा में कुशल, विदेश गमन में रत, मेधावी, चंचल बुद्धि वाला।
4. सूर्य-चन्द्रमा-शुक्रः	यदि शनि से पीड़ित न हो तो अतिसुन्दर शरीर वाला, अनैतिक, दुष्टात्मा, धन हरने में चतुर, दूसरे की स्त्रियों में रत, शास्त्रों में निपुण, माता से अच्छे सम्बन्ध और विवाह में विलम्ब।
5. सूर्य-चन्द्रमा-शनिः	कामवासना से युक्त, विवाद में कुशल, मूर्ख, दूसरों के अधीन रहने वाला, असफल, और दरिद्र।
6. सूर्य-मंगल-बुधः	प्रसिद्ध पहलवान, साहसी, निष्ठुर, लज्जाहीन और धन, पुत्र एवं स्त्री से रहित।

7. सूर्य-मंगल-बृहस्पतिः	बोलने में निपुण, अत्याधिक धन वाला, राजा का मंत्री या राजा, सत्यवक्ता और प्रचण्ड। दशम भाव में हो तो संसद सदस्य, राजनीतिज्ञ, न्यायाधीश, सेना प्रमुख। यदि दशम भाव में तुला, कर्क या मकर राशियों में हो तो उच्च पद लेकिन यदि पीड़ित हो तो पतन।
8. सूर्य-मंगल-शुक्रः	आंखों में विकार वाला, अन्धा भी हो सकता है, भाग्यशाली, कुलीन, लोकप्रिय, बोलने में कठोर या दोषयुक्त वाणी वाला और वैभवयुक्त। अधिक नहीं बोलने वाला लेकिन कटु एवं समर्थ। उच्च श्रेणी का बुद्धिमान, सिनेमा, संगीत, छायाचित्र आदि सम्बन्धित व्यवसायों में विशिष्ट।
9. सूर्य-मंगल-शनिः	अंगहीन अथवा विकृत अंग वाला, धनहीन, सदैव रोगी रहने वाला, स्वजनों से वियुक्त और अतिमूर्ख।
10. सूर्य-बुध-बृहस्पतिः	आंखों का रोगी, अति धनवान, शास्त्रों, कथा, काव्य की गोष्ठी में रत, शिल्पयुक्त, लेखक या लिपिक। तृतीय भाव में यह योग लेखकों, प्रकाशकों आदि के लिए अच्छा है।
11. सूर्य-बुध-शुक्रः	स्त्रियों के विषय में अतृप्त, वाचाल, भ्रमण की इच्छा वाला, गुरुओं के द्वारा दूर भेजा हुआ और स्त्री के कारण सन्ताप में तपने वाला।
12. सूर्य-बुध-शनिः	नपुंसकों की भान्ति आचरण करने वाला, सबसे द्वेष करने वाला, सब से पराजित और बन्धुओं के द्वारा त्यक्त।
13. सूर्य-बृहस्पति-शुक्रः	निर्बल दृष्टि वाला, बहादुर, विद्वान, धनहीन, राजा का सचिव और सदैव दूसरों का काम करने वाला होता है। मतान्तर से राजा, धनवान, जुऐ में हारने वाला, बुद्धिमान और निर्भय।

14. सूर्य-बृहस्पति-शनि:	विकृत शरीर, पूजनीय, स्वजनों की ईर्ष्या का पात्र, अच्छी स्त्री, पुत्र एवं मित्र वाला, राजा का प्रिय और निर्भय।
15. सूर्य-शुक्र-शनि:	शत्रुओं के भय से उद्विग्न, सम्मान, कला एवं काव्य से रहित, कुचरित्र वाला और कोढ़ जैसे चर्म रोगों से पीड़ित।
16. चन्द्रमा-मंगल-बुध:	पापी, नीच आचरण करने वाला, मित्रों एवं स्वजनों से हीन है और यह प्रभाव जीवनभर रहता है।
17. चन्द्रमा-मंगल-बृहस्पति:	झुके अंगों वाला, स्त्रियों के प्रति आकर्षित, चोर प्रवृति, सुन्दर एवं स्त्रियों में लोकप्रिय और क्रोधी।
18. चन्द्रमा-मंगल-शुक्र:	माता के लिए अशुभ, बुरी स्त्री का पति, बुरे पुत्र का पिता, उद्देश्यहीन घूमने वाला और ठण्ड से भयभीत।
19. चन्द्रमा-मंगल-शनि:	बचपन में ही माता की मृत्यु, निम्न स्तर का जीवन जीने वाला, हठी, देर से समझने वाला और सबका शत्रु।
20. चन्द्रमा-बुध-बृहस्पति:	धनवान, स्वस्थ, बोलने में चतुर, तेजस्वी, प्रसिद्ध, कीर्तिवान और कई भाइयों एवं पुत्रों वाला। मतान्तर से सरलता से प्रभावित होने वाला और कार्यदक्ष।
21. चन्द्रमा-बुध-शुक्र:	विद्या के कारण संस्कारयुक्त विचारों वाला फिर भी आचरणहीन, ईर्ष्यालु और धन का लोभी।
22. चन्द्रमा-बुध-शनि:	सदैव दूसरों के अधीन रहने वाला, परेशान, विद्वान, बोलने में कुशल और राजा द्वारा सम्मानित। मतान्तर से नगर या ग्रामपति, प्रसिद्ध, कई कलाओं का ज्ञाता, पीड़ित होने पर हृदय रोग, अस्थमा आदि।

23. चन्द्रमा-बृहस्पति-शुक्रः	साध्वी का पुत्र, विद्वान, कलाओं का ज्ञाता, कई विषयों को सुनने वाला, सज्जन और लोकप्रिय। द्वितीय, दशम एवं एकादश भाव में होने पर साहित्य में सफलता।
24. चन्द्रमा-बृहस्पति-शनिः	शास्त्रों के तत्व को अपनी बुद्धि से जानने वाला, वृद्ध स्त्रियों में रत, क्रोधहीन और गांवों का मुखिया।
25. चन्द्रमा-शुक्र-शनिः	लिपिकर्ता, पुस्तक वाचक या पुरोहित या ज्योतिषी या धार्मिक। भार्या की हानि और चरित्रहीन।
26. मंगल-बुध-बृहस्पतिः	अच्छा कवि, पृथ्वीपति, समुदाय का नेता, अच्छी भार्या वाला, दूसरों की सहायता में तत्पर और गीत-संगीत में कुशल।
27. मंगल-बुध-शुक्रः	अच्छे कुल में जन्म न लेने वाला अर्थात अकुलीन, विकलांग, चपल, दुष्ट, बहुत बोलने वाला और सदैव उत्साही।
28. मंगल-बुध-शनिः	सेवक, सांवली आंखों वाला, घर से बाहर वास करने वाला, मुंह का रोगी और हास्य-परिहास वाले लोगों के मध्य प्रसन्न रहने वाला।
29. मंगल-बृहस्पति-शुक्रः	राजा का प्रिय, सुपुत्र वाला, स्त्रियों के द्वारा विलास पाने वाला और सबको आनन्द देने वाला।
30. मंगल-बृहस्पति-शनिः	राजा का विश्वासपात्र, अंगों पर चोट वाला, नीच आचरण वाला, मित्रों से निन्दित और निर्दय।
31. मंगल-शुक्र-शनिः	चरित्रहीन स्त्री का पुत्र, शिथिल चरित्र वाली भार्या वाला और सदैव बाहर रहने वाला।
32. बुध-बृहस्पति-शुक्रः	सुन्दर शरीर वाला, शत्रुहीन राजा, अच्छी कीर्तिवाला, बहुत यशस्वी और सत्यवक्ता।
33. बुध-बृहस्पति-शनिः	मान, धन एवं ऐश्वर्य से युक्त, विद्वान, कई प्रकार के भोग करने वाला, अपनी भार्या में रत, धैर्य एवं सुख से युक्त और लोकप्रिय ।

34. बुध-शुक्र-शनिः	अधिक बोलने वाला, धूर्त, झूठा, दूसरे की स्त्रियों में रत, जटिल स्वभाव वाला, कलाओं का ज्ञाता और अपने देश से प्रेम करने वाला।
35. बृहस्पति-शुक्र-शनिः	निम्न कुल में उत्पन्न होकर भी जातक राजा होकर अत्याधिक यश-कीर्ति अर्जित करने वाला और सच्चरित्र। यदि चन्द्रमा अशुभ प्रभाव में हो तो प्रायः माता को कष्ट होता है और अधिक पीड़ित होने पर उसकी मृत्यु भी हो सकती है तथा यदि सूर्य अशुभ प्रभाव में हो तो पिता को कष्ट होता है। मिश्रित प्रभाव में होने पर मध्यम परिणाम और शुभ प्रभाव में होने पर माता-पिता को शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं।

चतुर्ग्रही योग

1. सूर्य-चन्द्रमा-मंगल-बुधः	जातक लेखक या लिपिक, चोरवृत्ति, अधिक बोलने वाला, रोगी और माया एवं प्रपंच में कुशल।
2. सूर्य-चन्द्रमा-मंगल-बृहस्पतिः	धनवान, स्त्री द्वारा प्रशंसित, तेजस्वी, नीतिमान, शोकहीन, कार्य करने में समर्थ और निपुण।
3. सूर्य-चन्द्रमा-मंगल-शुक्रः	आचार्यों के समान बोलने से जीविका अर्जित करने वाला, सुखी, निपुण, धन संचय करने वाला और विद्या, पुत्र एवं स्त्री के सुख से युक्त।
4. सूर्य-चन्द्रमा-मंगल-शनिः	विषम बनावट वाला या विकृत शरीर, छोटा कद, धनहीन, विद्याहीन, भिखारी, मूर्ख और डरपोक।
5. सूर्य-चन्द्रमा-बुध-बृहस्पतिः	स्वर्ण का काम करने वाला, विशाल नेत्र वाला, शिल्पी, धनवान, धैर्यवान, निर्भय और सुन्दर शरीर।

6. सूर्य-चन्द्रमा-बुध-शुक्रः	भाग्यवान, विकलांग, लोकप्रिय, वाचाल, नाटा, राजमान्य।
7. सूर्य-चन्द्रमा-बुध-शनिः	माता-पिता से वियुक्त, धन एवं सुख से वर्जित, भ्रमण करने वाला, भिक्षा मांगने वाला और असत्यवक्ता।
8. सूर्य-चन्द्रमा-बृहस्पति-शुक्रः	जल, पशु या व्रतों का स्वामी, सुखी, राजा द्वारा सम्मानित और निपुण।
9. सूर्य-चन्द्रमा-बृहस्पति-शनिः	गुस्से से तनी आंखों वाला, बहुत पुत्र एवं वित्त वाला, प्रिय भार्या वाला और भाग्यवान।
10. सूर्य-चन्द्रमा-शुक्र-शनिः	स्त्री की भान्ति दिखने एवं आचरण करने वाला, आगे जाने वाला, दुर्बल शरीर और डरपोक।
11. सूर्य-मंगल-बुध-बृहस्पतिः	शूरवीर, यज्ञकर्ता, दानी, चक्रधारी अर्थात वाहन चलाने वाला, स्त्री एवं धन से विहीन, दुःखों का सागर और घूमने वाला।
12. सूर्य-मंगल-बुध-शुक्रः	दूसरे की स्त्री में रत, चोर, विषम अंगवाला, दुर्जन और सत्वहीन।
13. सूर्य-मंगल-बुध-शनिः	योद्धा, विद्वान, तेज स्वभाव एवं नीच आचरण करने वाला, कवियों में प्रधान और मंत्री या राजा।
14. सूर्य-मंगल-बृहस्पति-शुक्रः	लोकप्रिय, लोक में पूजनीय, धनवान, भाग्यवान, राजमान्य, प्रसिद्ध और नीतिवान।
15. सूर्य-मंगल-बृहस्पति-शनिः	तीव्र आवेश वाला, गणमान्य, धन को सिद्ध करने वाला, बन्धुओं एवं मित्रों से युक्त और राजा का विश्वासपात्र।
16. सूर्य-मंगल-शुक्र-शनिः	बेहाल, नीच आचरण, दृष्टि दोष, बन्धुओं का ईर्ष्या पात्र, अपमानित और सर्वत्र पराजित होने वाला।

17. सूर्य-बुध-बृहस्पति-शुक्रः	धनवान, सुखप्रधान, अर्थ का सिद्ध करने वाला, बन्धुओं से युक्त और श्रेष्ठ व्यक्ति।
18. सूर्य-बुध-बृहस्पति-शनिः	नपुंसकों के समान, घमण्डी, कलह प्रिय, भाई से युक्त और निरुत्साही।
19. सूर्य-बुध-शुक्र-शनिः	वाचाल, लोकप्रिय, विद्वान, अच्छे सुख वाला, सत्व एवं तन-मन की शुद्धता वाला, धैर्यवान और मित्रों की सहायता करने वाला।
20. सूर्य-बृहस्पति-शुक्र-शनिः	लोभी, कवि, प्रधान, कलाकारों एवं नीच जनों का मुखिया और राजा का प्रिय।
21. चन्द्रमा-मंगल-बुध-बृहस्पतिः	शास्त्रों में कुशल, राजा, सलाहकारों वाला और बुद्धिमान।
22. चन्द्रमा-मंगल-बुध-शुक्रः	कलहप्रिय, सोने में रुचि रखने वाला, नीच व बुरी भार्या वाला, लोकप्रिय, बन्धुओं के द्वेष करने वाला और कम सुखी।
23. चन्द्रमा-मंगल-बुध-शनिः	शूरवीर, माता-पिता से हीन, दुष्ट कुल में जन्मा, अधिक स्त्रियों, मित्रों व पुत्रों वाला और अच्छे कर्म करने वाला।
24. चन्द्रमा-मंगल-बृहस्पति-शुक्रः	विकलांग, अच्छी भार्या वाला, सहनशील व स्वाभिमान से युक्त, विद्वान और अनेक मित्रों के सुख वाला।
25. चन्द्रमा-मंगल-बृहस्पति-शनिः	बहरा, धनवान, बहादुर, निर्भय, उन्माद युक्त, बोलने में चतुर, स्थिर स्वभाव का, बुद्धिमान और उदार चित्त वाला।
26. चन्द्रमा-मंगल-शुक्र-शनिः	चरित्रहीन स्त्री का पति, ढीठ, चंचल नेत्रों वाला, भावुक और सदैव बैचेन रहने वाला।
27. चन्द्रमा-बुध-बृहस्पति-शुक्रः	विद्वान, माता-पिता हीन, सुन्दर, धनयुक्त एवं अधिक लोकप्रिय और शत्रुरहित।

28. चन्द्रमा-बुध-बृहस्पति-शनिः	धार्मिक कर्म करने में अग्रणीय, तेजस्वी, बन्धुओं का प्रिय, बुद्धिमान, राजा का सचित और प्रखर कवि।
29. चन्द्रमा-बुध-शुक्र-शनिः	दूसरे की स्त्री से सम्बन्ध रखने वाला, शीलहीन भार्या वाला, दुःखी भाइयों वाला, विद्वान, लोक का विरोध लेने वाला।
30. चन्द्रमा-बृहस्पति-शुक्र-शनिः	माता से हीन, लोकप्रिय, चर्म विकार, दुःखी, भ्रमणशील, बहुत भाषायें जानने वाला अथवा बहुत बोलने वाला और सत्य में रत।
31. मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्रः	स्त्री से कलह करने वाला, धनवान, लोक में पूज्य, बुद्धिमान, सत्यवक्ता और शीलवान।
32. मंगल-बुध-बृहस्पति-शनिः	बहादुर, विद्वान, वाचाल, धनहीन, सत्य एवं तन-मन की शुद्धता वाला, विवाद में कुशल, बुद्धिमान और विरोध की भावनाओं में नियत्रंण वाला।
33. मंगल-बुध-शुक्र-शनिः	पहलवान के समान पुष्ट अंगों वाला, बलवान, दूसरों द्वारा पालित, युद्ध में न दबने वाला, प्रसिद्ध और कुत्तों से प्यार करने वाला।
34. मंगल-बृहस्पति-शुक्र-शनिः	तेजस्वी, धनयुक्त, स्त्रियों के विषय में चंचल, साहस प्रिय, अस्थिर बुद्धि और धोखेबाज।
35. बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनिः	मेधावी, शास्त्रों में रत, स्त्री पर मोहित होने वाला और आज्ञाकारी सेवकों वाला। अंशात्मक युति में यह फल अधिक तीव्र होता है।

टिप्पणीः सटीक फल कथन में सामर्थ्यवान होने के लिए वर्गों में ग्रहों की स्थितियों को भी जांचना चाहिए।

उपरोक्त परिणामों को बृहत्पाराशरहोराशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरुप स्वामित्व के अनुसार संशोधित करना चाहिए। उदाहरण के लिए तुला और वृषभ लग्न के लिए शनि तथा सिंह और कर्क लग्न के लिए मंगल केन्द्र एवं त्रिकाण का स्वामी होने के कारण योगकारक होता है इसलिए अत्याधिक शुभ परिणाम देने की क्षमता रखता है। इस बात को भी हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि लग्न और त्रिकोण के स्वामी सदैव ही शुभ होते हैं।

भाग "ब"
मेदिनी ज्योतिष

अध्याय 1

मेदिनी ज्योतिष में ग्रहों के कारकत्व

मेदिनी ज्योतिष, ज्योतिषशास्त्र की वह शाखा है जो विश्व में घटने वाली विभिन्न घटनाओं, जैसे कि युद्ध एवं शान्ति, भूकम्प, बाढ़, भुखमरी, सूखा, प्लेग आदि महामारी, साम्प्रदायिक झगड़े एवं तनाव, देशों के उत्थान एवं पतन, सरकारों की कार्य-अवधि, राष्ट्राध्यक्षों की मृत्यु एवं त्याग, देश की आर्थिक व्यवस्था, सामान्य समृद्धि एवं आर्थिक अवरोध और देश एवं देश के सामान्य नागरिकों के जीवन को प्रभावित करने वाले मुख्य राजनैतिक घटनाओं से सम्बन्धित है।

मेदिनी ज्योतिष का महत्व:

वराहमिहिर ने अपने सस्मरणीय ग्रन्थ वाराही बृहत् संहिता में कहा है कि,

अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः।
तथाऽसांवत्सरो राजा भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥

न तत्सहस्रं करिणां वाजिनां वा चतुर्गुणम्।
करोति देशकालज्ञो यदेको दैवचिन्तकः॥

इसका भावार्थ है कि जिस प्रकार दीपक न होने से रात्रि और सूर्य न होने से आकाश सम्पूर्ण रुप से अन्धकारमय हो जाते हैं और शोभायमान नहीं होते उसी प्रकार दैवज्ञहीन राजा भी शोभायमान नहीं होता अपितु अन्धे व्यक्ति के समान ही कुपन्थ अर्थात अन्धेरे में घूमा करता है।

एक देश-काल को जानने वाला दैवचिन्तक अर्थात भाग्य की विधि को पढ़ने में समर्थ एक अच्छा ज्योतिषाचार्य, जो काम करने का सामर्थ्य रखता है, उस कार्य को हजार हाथी अथवा चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते हैं।

मेदिनी ज्योतिष में ग्रहों का अभिप्राय (कारकत्व)

वैदिक ज्योतिष में नौ ग्रहों का प्रयोग है। इन नौ ग्रहों की विशेषतायें और इनका मेदिनी ज्योतिष में अभिप्राय इस प्रकार से है:

1. **सूर्यः** यह सभी ग्रहों का राजा है और इसकी अनुपस्थिति में पृथ्वी पर जीवन का होना असंभव है। भारत में इसे रवि, भास्कर आदि अन्य कई नामों से भी जाना जाता है। सही अर्थों में सूर्य ग्रह नहीं है अपितु एक तारा है। भचक्र की पांचवी राशि सिंह पर इसका अधिपत्य है जो सभी प्रकार की सफलताओं और प्राप्तियों में इसके महत्व को दर्शाता है। यह मेष राशि में उच्च का और तुला राशि में नीच का होता है। सिंह और मेष के साथ-साथ यह अन्य अग्नि तत्व राशि धनु में भी शुभ परिणाम देता है। कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा सूर्य के नक्षत्र हैं। यह अपने नक्षत्रों के अतिरिक्त मंगल और बृहस्पति के नक्षत्रों में भी मंगलकारी परिणाम देता है। इसके उपर किसी भी प्रकार का दुष्प्रभाव, सरकार के लिए परेशानियां देने वाला होगा और जिसका परिणाम अपमान, पिछडना एवं पराजय होगा।

   मेदिनी ज्योतिष में सूर्य निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है:

   1. सत्तासीन व्यक्ति, राजाओं, प्रधानमंत्री, सरकार, राष्ट्र के प्रमुख, बड़ी व्यापारिक संस्थानों और नई औद्योगिक इकाइयों का।
   2. मंत्रीमण्डल, मंत्री और उच्च राजनैतिक शक्ति सम्पन्न व्यक्तियों का।
   3. न्यायाधीश, न्यायव्यवस्था, न्यायाध्यक्ष (मैजिस्ट्रैट) और अधिकार सम्पन्न पदाधिकारियों का।
   4. प्रभावशाली व्यवसायियों के साथ-साथ समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों का।
   5. सम्मान, प्रसिद्धि, लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा, देश के हित में प्रभाव, नेतृत्व और अन्य शक्तियों का मार्गदर्शन।
   6. यह उच्च प्रशासनिक अधिकारियों, राजनैतिक एवं धार्मिक नेताओं और प्रमुखों का।
   7. नियुक्त करने वाले व्यक्ति या अधिकारी, सामाजिक इकाई, देश के स्वास्थ्य एवं जीवनशक्ति, देश की यश, कीर्ति, स्वाभिमान और नेतृत्व के गुणों का।

8. वराहमिहिर के अनुसार जब सूर्य पर धब्बे दिखाई देते हैं तो उस समय पानी, दूषित होकर कीचडनुमा हो जाता है, रेतीले तूफान आते हैं और युद्ध होता है।

9. धातुओं में सोने का।

10. अनाजों में गेंहू और रंग एवं स्वादानुसार कुछ सीमा तक लाल मिर्ची का यद्यपि लाल मिर्ची का प्रतिनिधित्व मंगल करता है।

11. मन्दिरों, पूजा-अराधना के धार्मिक स्थलों और मुख्य धार्मिक प्रमुखों का।

यदि सूर्य पीड़ित होता है तो देश अहंकारी, आत्मकेन्द्रित और नैतिक रुप से आधारहीन होता जाता है तथा अपनी प्रतिष्ठा को खो देता है। यह अन्य देशों की भावनाओं को नकारते हुए असभ्य, स्वेच्छाचारी और अत्याचारी हो जाता है।

किसी वर्ष विशेष जब सूर्य पीड़ित होता है तो यह देश के लिए अशुभ शकुन होता है जो आने वाले अशुभ परिणामों की ओर इशारा करता है। देश के उच्च पदों पर आसीन और महत्वपूर्ण व्यक्ति की सज्जनता भी पीड़ित हो सकती है।

सूर्य और शनि एक-दूसरे के अतिशत्रु हैं। यदि किसी वर्ष कुण्डली में ये दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने होते हैं अथवा एक साथ कर्क या मकर (कर्क जल तत्व राशि है और मकर भारतवर्ष की पारम्परिक राशि है। कर्क राशि दलदल वाले स्थानों का भी प्रतिनिधित्व करती है) राशि में होते हैं तो वर्ष विशेष में जल से सम्बन्धित विवाद होता है। शनि, खाद एवं फसलों के उत्पादन को बढ़ाने में प्रयोग किये जाने वाले उत्पादकों का भी प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए सूर्य-शनि का सम्बन्ध सरकार (सूर्य) द्वारा खाद के मूल्यों को प्रभावित करने के प्रयास को भी इंगित करता है। यह सम्बन्ध दबे-कुचले अर्थात देश के निचले वर्ग से सरकार को होने वाली परेशानियों की ओर भी इशारा करता है।

यह अतिआवश्यक है कि एक राजनीतिज्ञ और शासक की कुण्डली में सूर्य पीड़ित नहीं होना चाहिए क्योंकि यह जीवन के संघर्ष और अत्याधिक दु:ख को दर्शाता है। इन व्यक्तियों के द्वारा लिए गये निर्णय बुद्धिमतापूर्ण और अच्छे नहीं होंगे।

2. **चन्द्रमा:** यह एक अन्य तारा है जो लग्न के समान ही महत्वपूर्ण है। इस पर किसी भी प्रकार का दुष्प्रभाव अवांछनीय परिणाम देता है। भचक्र में यह 4थी

राशि कर्क का स्वामी है तथा वृषभ राशि में उच्च का और वृश्चिक राशि में नीच का होता है। रोहिणी, हस्त और श्रवण नक्षत्र का स्वामित्व इसके पास है। चन्द्रमा निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है:

1. साधारण नागरिक विशेषकर स्त्रियों को और सामूहिक रुप से एक साथ पूरे देश की भलाई।
2. जनतन्त्र, जनता से सम्बन्धित मामले और जनता के विचार।
3. सामूहिक रुप से सारा व्यापार, कृषि, तरल पदार्थ, दूध, किराना।
4. मछली उद्योग एवं समुद्री जहाजों से सम्बन्धित विद्या, मोती, समुद्री परिवहन, उपचार का कार्य अर्थात नर्सिंग व्यवसाय, वायुयान परिचालिका, दुकानदार, कपड़ा व्यापार, पर्यटन सम्बन्धित संस्थान और विक्रय करने वाले प्रतिनिधियों का।
5. होटल एवं सराय, जलपान गृह, खाना खाने और आराम करने के स्थान।
6. सभी प्रकार के जल परिवहन, समुद्री जहाज में यात्रा, नाव में यात्रा आदि।
7. समुद्री तट, जहाज, समुद्र, नदियां और उनके निकट स्थित स्थान।
8. कृषि, पेड़-पौधों से सम्बन्धित जीवन और दुग्ध उत्पादक इकाइयों का।
9. सामाजिक कार्यकर्ता और ऐसे व्यक्तियों को जो देश के हित में कार्य करने में लिप्त रहते हैं।
10. चावल और दूध।

यदि कुण्डली में चन्द्रमा अत्याधिक पीड़ित हो तो यह इंगित करता है कि ऐसे महत्वपूर्ण परिवर्तन होने वाले हैं जो देश के लिए और देशहित में अतिअशुभ परिणाम दे सकते हैं। मुख्य प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकंप और युद्ध के समय चन्द्रमा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि यह होने वाली अशुभ घटना के लिए आग लगाने का कार्य करता है।

वैदिक ज्योतिष में चन्द्रमा से अत्याधिक महत्त्व को जोड़ा गया है। चन्द्रमा को प्रभावित करने वाला ग्रह शुभाशुभ परिणाम का निर्णय करता है। चन्द्रमा पर एक साथ कई अशुभ प्रभाव देश के सामान्य हित के लिए हानिकारक होते हैं।

3. **मंगलः** ग्रीक में मंगल को युद्ध का देवता कहा जाता है। अपने लाल रंग के कारण यह लाल ग्रह के नाम से भी जाना जाता है। वर्ष के तीसरे मास का नाम "मार्च" मंगल के नाम से ही रखा गया है। यह हिंसा, विनाश और युद्ध का ग्रह है। पारसी में इसे जलद ये फलक कहा जाता है जिसका अर्थ है स्वर्ग का जल्लाद।

भचक्र में प्रथम एवं अष्टम राशि, मेष एवं वृश्चिक का स्वामित्व मंगल के पास है। यह मकर राशि में उच्च और कर्क राशि में नीच का होता है। मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा नक्षत्रों का स्वामित्व भी इसके पास है। मंगल निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है:

1. सशस्त्र बलों, सेनाओं, नौसेना और वायुसेना।
2. पुलिस, इंजीनियरों और अग्नि शमन करने वालों का।
3. युद्ध करने की सामाग्री - यह युद्ध अथवा कलह का ग्रह है और आग, विस्फोट एवं हथियारों के युद्ध सहित प्रत्येक प्रकार की हिंसा का प्रतिनिधित्व करता है।
4. शल्य चिकित्सक, दन्त चिकित्सक, कसाई, छिपकर की गई हत्या, निर्दयतापूर्ण की गई हत्या, सामूहिक हत्याओं, अप्राकृतिक मृत्यु, सामूहिक दुर्घटनाओं और अपराधियों को। इसकी प्रतिक्रिया आकस्मिक और विनाशकारी होती है।
5. दुर्घटनाओं, हत्याओं, अपहरण, बलात्कार और सभी प्रकार का सैनिक शासन।
6. डकैती, छीना-झपटी। यह दूसरों के लिए किये जाने वाली लड़ाई, सभी प्रकार के आंतकवाद, दूसरे देश की सीमाओं में अतिक्रमण और गुप्त शत्रुओं का प्रतिनिधित्व भी करता है।
7. यदि मंगल सुस्थित हो तो उत्पादक और औद्योगिक इकाइयों का।
8. धातुओं में इस्पात और स्टील का।
9. राजनैतिक अस्थिरता, राजद्रोह, विद्रोह, आग, दुर्घटनाओं (रेल, हवाई, सड़क, खादान आदि), बलपूर्वक स्त्रियों के शारीरिक शोषण सम्बन्धित अपराध, चोरी की वस्तुओं का।

10. चक्रवात, समुद्र में उठने वाले भंयकर तूफान, आंधी, ज्वालामुखी और लावा का।

11. तोर की दाल और लाल मिर्ची।

यदि मंगल, शनि अथवा राहु की युति में हो तो यह युद्ध, सैन्य विद्रोह, भूकंप, महामारी, जनता का विद्रोह और आंतकवाद जैसे अत्याधिक अशुभ परिणाम देता है।

यह माना जाता है कि जब-जब मंगल, पृथ्वी के निकट आता है तब-तब हमेशा ही युद्ध होता है। 20वीं सदी में 20.11.1990 को यह पृथ्वी के निकट आया था और संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद ने 29.11.1990 को इराक के कुवैत पर आक्रमण करने के कारण, उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने का अनुमोदन किया था।

27 अगस्त, 2002 को यह पिछले 73000 वर्षों की पृथ्वी से सबसे निकटतम 55.8 मिलियन किलोमीटर की दूरी पर आया था। इससे पहले यह पृथ्वी के इतने निकट 75,538 बी.सी. में आया था। पुन: 28 अगस्त, 2287 में यह इससे भी 70000 किलोमीटर कम दूरी पर आयेगा।

अगस्त, 2002 में पूरा यूरोप ऐसी भयंकर गर्मी की चपेट में था जैसी कभी इतिहास में नहीं देखी गई। अगस्त के प्रारम्भ में ही स्पेन, पुर्तगाल और इटली के विभिन्न भागों के जंगलों में आग लगी। लाइबेरिया में ग्रह युद्ध की स्थिति बनी जिसमें लगभग तीन लाख लोग मरे। यहां सत्ता पूर्ण रुप से तहस-नहस हो गई थी। चारों ओर बिमारियां और भुखमरी फैल गई थी।

4. **बुधः** यह भचक्र में 3री और 6वीं राशि, मिथुन एवं कन्या का स्वामी है। यह कन्या में उच्च का और मीन राशि में नीच का होता है। आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र का स्वामित्व भी इसके पास है। यह देखा गया है कि विश्व में सबसे अधिक दु:खद घटनायें इन्हीं नक्षत्रों में होती हैं। मेदिनी ज्योतिष में बुध देश के बौधिक स्तर के साथ-साथ निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है:

1. गति और संचार व्यवस्था।

2. प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता और समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के संपादक।

3. परिवहन के वाहनों, रेल, मंनोरंजन के साधन, मीडिया, टेलीविजन, व्यापार, वाणिज्य।

4. साहित्यिक संसार, वैज्ञानिक संस्थान, संचार एवं परिवहन के साधनों का।
5. सामान्य उद्योग, व्यापार, वाणिज्य।
6. अभिलेख एवं हस्तलिखित लेख, कम्प्यूटर प्रोग्रामर।
7. समाचार मीडिया, लिखे और बोले शब्द।
8. रेडियो-टेलीविजन के उद्घोषक।
9. मौसम। जब बुध राशि परिवर्तन करता है तो मौसम में भी परिवर्तन होता है।

5. **बृहस्पतिः** बृहस्पति वृद्धि का ग्रह है। भचक्र में यह नवम एवं द्वादश राशियों, धनु और मीन का स्वामी है तथा कर्क में उच्च का और मकर में नीच का होता है। पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों पर इसका अधिपत्य है। मेदिनी ज्योतिष में बृहस्पति निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है:

1. वित्तीय संस्थान, खजाना, वित्त एवं देश की आय। यह सौभाग्य, समृद्धि, अतिव्ययी, किसी भी चीज का अधिक मात्रा में होने, ऋण, लाटरी और धन-सम्पति का ग्रह है।
2. जमा धन और सामान्य व्यापार।
3. वकील, न्यायविद् और न्याय व्यवस्था।
4. मस्जिद, चर्च, मठ, धर्म।
5. खेलों से सम्बन्धित व्यक्तियों और खिलाडियों का।
6. शेयर बाजार में धन लगाना, पानी के जहाजों से व्यापार और विदेशों से सम्बन्धित मामले।
7. अभिलेख, विदेशी व्यापार।
8. शिक्षा, उपदेश देना, पंचायत से झगड़ों का निपटारा।
9. दया एवं धर्म से चलने वाले संस्थान।
10. जन्मदर और सामान्य रुप में बच्चे।
11. शैक्षिक और धार्मिक संस्थान।

12. विदेश मंत्रालय, विदेशों में प्रतिनियुक्ति, विदेशी व्यापार, राजदूत, लम्बी यात्रायें।

13. हल्दी, चीनी।

14. मौसम की प्रवृति के निर्धारण में सूर्य और बृहस्पति की बहुत बड़ी भूमिका होती है। बृहस्पति के मकर राशि में प्रवेश करने के कारण वातावरण में मुख्य अवरोध पैदा होते हैं।

यह पाया गया है कि इंग्लैण्ड में राजा के शासन के समय जब-जब बृहस्पति धनु या मकर राशियों में था तब-तब इंग्लैण्ड युद्धों में विजयी रहा था।

यह भी देखा गया है कि अमेरिका का जो राष्ट्रपति बृहस्पति एवं शनि की युति के समय (जो सामान्यतः प्रत्येक 20 वर्षों के बाद होती है) चुना गया उसने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया। इसकी चर्चा अलग अध्याय में की गई है।

अपने नक्षत्र में स्थित बृहस्पति नई सोच और मार्गदर्शन की रेखाओं को तथा बाहरी दिखावे के बदलाव को प्रारम्भ कर सकता है।

पीड़ित बृहस्पति का अभिप्राय है अवसरवादिता, अतिशयोक्ति और अतिव्यय।

6. **शुक्रः** यह प्रेम, सुन्दरता, शान्ति और कला की देवी का प्रतीक है। भचक्र में यह 2री और 7वीं राशि, वृषभ एवं तुला का स्वामी होता है तथा मीन राशि में उच्च और कन्या राशि में नीच का होता है। भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों का स्वामित्व इसके पास है। यह निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है:

1, स्त्रियां, प्रेम, प्रेम सम्बन्ध, रति और विवाह।

2. सिनेमा, नृत्य, नाटक, अभिनेता, कला, संगीत, अभिनय, नृत्यशाला, नृत्य दिखाने के कक्ष, नाच की शैली।

3. मनोरंजन।

4. तांबा, धन और आभूषण। रति सुख के लिए शयन कक्ष और आनन्द।

5. प्रसाधन सामाग्री, परिधान बनाने वाले, फैशन और सामाजिक त्यौहार।

6. जुआं और ग्लैमर अर्थात चकाचौंध करने वाला वातावरण।

7. होटल, आभूषण।

8. विज्ञापन, छायाचित्र, खेल और शौक।
9. संवैधानिक कार्य। यह न्यायधीशों, न्याय पंचायत और न्यायलयों पर भी नियंत्रण रखता है।
10. कपड़ा, सिल्क, अजायबघर अर्थात म्यूजियम।
11. देश का सामाजिक और मनोरंजक रुप।
12. समृद्धि।
13. प्रचलन में प्रयोग होने वाले धन का मूल्य।
14. सभी का आपस में प्यार-प्रेम और जब पीड़ित होता है तो लोगों का कलह दर्शाता है। सप्तम या दशम भाव में स्थित शुक्र पर मंगल की दृष्टि युद्ध को इंगित करती है। युद्ध के समय यह भी विजय का ग्रह होता है और शत्रुता में अवरोध एवं शान्ति समझोते पर हस्ताक्षर को इंगित करता है।
15. इसका वित्तीय संस्थानों, बैंक, शेयर बाजार, अनाजों, पशु बाजार, वित्तीय मामलों और आय पर नियंत्रण होता है।
16. मैथुन सम्बन्धित बिमारियां, शीतप्रधान संक्रामक ज्वर, प्लेग और गुर्दे से सम्बन्धित रोग।
17. शनि से पीड़ित होने का अभिप्राय है कि न्यायालयों में भ्रष्टाचार और लोगों में गरीबी।
18. सुगन्धी।

7. **शनि:** भचक्र में शनि दशम और एकादश राशियों, मकर एवं कुंभ का स्वामी है। यह तुला राशि में उच्च का और मेष राशि में नीच का होता है तथा इसके अधिपत्य में पुष्य, अनुराधा और उत्तर भाद्रपद नक्षत्र आते हैं। मेदिनी ज्योतिष में शनि निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है:

    1. कृषि, भूमि, मकान एवं मकान की भूमि।
    2. तेल, लोहा, अयस्क, कोयला, भूमिगत खनिज एवं खदानें।
    3. वृद्ध लोग, वृद्धावस्था के रोग, जोड़ों का दर्द, पीठ का दर्द आदि।
    4. राजद्रोह।

5. आम लोग, जनतंत्र।
6. प्रजातन्त्र और सभी प्रकार के प्रजातान्त्रिक संस्थान, महानगर परिषद के चुनाव।
7. यह सिकुड़न, ऐंठन और मानसिक अवसाद का ग्रह है। यदि यह पीड़ित हो तो बाजार की स्थिति में गिरावट आयेगी और देश की प्रगति रुक जाएगी एवं आर्थिक व्यवस्था में गिरावट आयेगी।
8. सामूहिक रुप में मजदूर वर्ग और उनसे सम्बन्धित विषय।
9. हड़ताल, असन्तोष और क्रान्ति। किसान और खेती की भूमि।
10. भुखमरी और सूखा।
11. आपातकाल और राष्ट्रीयकरण।
12. राष्ट्र पर प्राकृतिक आपदायें और दुर्घटनायें जैसे भूकंप, बाढ़ आदि।
13. विदेशी व्यापार में गिरावट, विदेशों से वस्तुओं के आयात-निर्यात में परेशानियां, सरकारी धन का दुरुपयोग।
14. अधिक कर और भोजन सामग्री का नियमितिकरण करना।
15. जानवरों की खालें, चमड़ा और फर।
16. मुख्य नेताओं की मृत्यु और देश का शोक में डूबना।
17. युद्ध, वृद्धों की मृत्यु, राजद्रोह और शासक को सत्ताच्युत होना।
18. शनि सभी प्रकार की भूमि, खनिजों, भूमिगत खजानों, खादानों और तेल पर शासन करता है।
19. चूंकि यह भूमि पर शासन करता है अत: यह युद्ध में देश के अधिकार में होने वाली भूमि के लाभ या हानि को भी इंगित करता है। यदि यह षष्टम या एकादश भाव का स्वामी हो और अशुभ प्रभाव से मुक्त हो तो देश युद्ध में भूमि के अधिकार क्षेत्र का लाभ कमा सकता है।
20. नाइयों, गहरे रंग के जातकों और धोखेबाजों, झूठे दिखावे तथा गुप्त शत्रुओं का।
21. न्यायाधीशों, न्याय व्यवस्था, नक्शानवीज और सिविल इंजीनियरों का।

22. सन्यास, दिवालियापन, प्रशासनिक सेवाओं, आम लोगों, कैदियों और देशभक्तों का।

कालिदास ने शनि को दुःखकारक के नाम से नवाजा है। जब शनि मंगल, राहु, केतु के पास से निकलता है तो उस समय भूकंप, युद्ध और प्राकृतिक आपदायें घटती हैं। यदि शनि इनसे पीड़ित होता है तो स्थिति अतिभयंकर हो जाती है। यदि शनि वक्री हो तो अधिक हानि होती है। इसकी बृहस्पति से 2/12, 6/8 या 3/11 की स्थिति भी अच्छी नहीं होती है। इसका कारण यह है कि ऐसी स्थिति में बृहस्पति अपने पूर्ण शुभ प्रभाव को देने में असमर्थ होता है। षडाष्टक की स्थिति में यह राजभंग योग बनाता है।

8. **राहु:** यह एक छाया ग्रह है। वैदिक ज्योतिष में इसे सर्प कहा गया है और इसके परिणाम सामान्यत: अशुभ ही होते हैं। यह आर्द्रा, स्वाति और शतभिषज नक्षत्रों का स्वामी है। मेदिनी ज्योतिष में राहु निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है:

1. अपराध, युद्ध, हिंसा और अत्याधिक हानिकारक विनाश। जब यह शनि या मंगल से युति करता है तो अत्यन्त प्रभावशाली विनाशक हो जाता है। अशुभ भावों षष्टम, अष्टम या द्वादश में इसका प्रभाव विशेष अशुभ होता है।
2. यह आक्रमकता का ग्रह है और विद्रोह एवं देशद्रोह के लिए प्रभावशाली होता है।
3. यह हवाई जहाज की विद्या, इलैक्ट्रोनिक्स और रेडियो पर शासन करता है। वैदिक ज्योतिष में इसे शनि के समान ही माना गया है।
4. यह दंगों, राजनैतिक षडयंत्रों और कारावास को बताता है।
5. दासता और दम घुटने से मृत्यु।
6. यह अधार्मिक, असामाजिक, धोखेबाज है और बनावटीपन, ईर्ष्या एवं चोरी पर विश्वास करता है।
7. हड़ताल, संगठित समूह, सामूहिक दंगा।
8. आकस्मिक दुर्घटनायें, विषाक्त और विषाक्त गैस।
9. विदेशी, मुस्लिम, विदेशों में बसना।

10. प्लेग, महामारी, कैंसर, चर्मरोग आदि रोगों को फैलाने में इसकी मुख्य भूमिका होती है।
11. मूंगफली, कपास के बीजों, सिगरेट, तम्बाकू।
12. यह एक विषैला सांप है और प्रत्येक चीज को विषैला बना देता है। अत्याधिक मात्रा में शत्रुओं को पैदा करता है।

9. **केतुः** राहु के समान ही यह भी छाया ग्रह है जो वृश्चिक में उच्च का माना जाता है। अश्विनी, मघा और मूला नक्षत्रों पर इसका अधिपत्य है।

1. केतु, मंगल की भान्ति ही माना गया है और विनाश, युद्ध, गुप्त षडयत्रों, क्लेश, स्वबलिदान और आत्महत्या का कारक है।
2. यह डकैती, विश्वासघात, युद्ध के मैदान में मृत्यु, आकस्मिक सफलता एवं हानि को इंगित करता है।
3. सूती कपड़ा, सिले-सिलाये परिधानों, घडियों और रेडियो।
4. टेलीविजन, कम्प्यूटर और विदेशी भाषाओं।
5. हिन्दू न होना, शराब, नशीले द्रव्य, षडयंत्र, हत्यायें, गुप्तचरों को नियुक्त करना।
6. यह आध्यात्मिक मुक्ति और मोक्ष का कारक है।
7. यह सिखों का प्रतिनिधित्व भी करता है। भारत की कुण्डली में केतु की दशा के समय ही सिखों के द्वारा पंजाब में राजद्रोह किया गया था।
8. यह प्रचण्ड महामारियों जैसे कोढ़, केन्सर, प्लेग, चर्मरोग आदि का कारक है।

हमारे सौरमण्डल में पृथ्वी से सम्बन्धित तीन अन्य ग्रह, जिनको वैदिक ज्योतिष में नहीं लिया गया है, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो हैं। नई अवधारणा के अनुसार ज्योतिष में इनका प्रयोग निम्नलिखित तरीके से होता है।

1. **यूरेनसः** कुंभ राशि पर इसका अधिकार है और इसे वृश्चिक में उच्च का एवं तुला में नीच का माना जाता है। इसका व्यास 29,200 मील के बराबर है और इसे नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता है। यह एक राशि में 84 वर्ष तक रहता है। सर विलियम्स हर्षल ने इसे 1781 में खोजा था और वे इसका नाम किंग जार्ज द्वितीय के नाम पर रखना चाहते थे।

इसके अक्ष मुड़े हुए हैं और मुड़े हुए अक्षों के कारण यह ऐसा दिखता है मानो कोई लट्टू अपने किनारों पर घूम रहा हो। यह माना जाता है कि यह ग्रह आकस्मिक और आशारहित घटनाओं जैसे कि भूकंप आदि का कारण होता है। यह मानव के क्रान्तिकारी और दिखने वाले स्वरुप का प्रतिनिधित्व करता है। यह लोगों को विलक्षण, खोज करने वाला और प्रगतिशील बनाता है।

यूरेनस आकस्मिक परिवर्तन लाता है। विनाश में यह शनि और मंगल के गुणों को अपने अन्दर समाये हुए है और बड़े विश्व युद्धों, विद्रोहों, क्रान्तियों एवं आजादी के युद्धों को प्रारम्भ करने में सक्षम है। आधुनिक समय में यह धर्मान्माद, अत्यन्त मूलाधार सम्बन्धित उन्माद और सबसे बुरे स्तर के आंतकवाद की आग को सुलगा सकता है। यह बुरी तरह कुचली पराजय, रक्त रंजित क्रान्ति और युद्ध के कष्ट को देने में समर्थ है।

यह ज्योतिषाचार्यों, आविष्कार करने वालों, विलक्षण व्यक्तियों, आत्मतत्वज्ञान, दूरस्थित एक मन का दूसरे पर प्रभाव (टेलीपेथी), अलौकिक विषयों, युरेनियम और रेडियम का प्रभाव डालने वाली धातुओं को दर्शाता है। कुछ इसे बुध का उपरी भाग भी कहते हैं और ऐसी स्थिति में यह दिमाग की नसों और आत्मिक उर्जा पर अधिपत्य रखता है तथा दर्शनशास्त्र, विज्ञान और कला पर भी शासन कर सकता है। जो व्यक्ति मानसिक रुप से उच्च स्तर तक विकसित होते हैं वे ही यूरेनस के सूक्ष्म कंपन पर प्रतिवादन कर सकते हैं। यह अविष्कारक, आलौकिक और अपूर्व कल्पनाशक्ति वाली बुद्धि के जातकों को प्रोत्साहित करता है।

2. **नेप्च्यून:** इसकी खोज जर्मनी के खगोलशास्त्री जॉन गॉटफ्राइड ने 1846 में की थी। यह एक राशि में 164 वर्षों तक रहता है। इसका नाम समुद्र के रोमन देवता के नाम पर रखा गया है और यह मीन राशि से सम्बन्धित है। यह माना जाता है कि यह मीन राशि का शासक है और सिंह राशि में उच्च एवं कुंभ राशि में नीच का होता है।

यह समुद्र के धार्मिक, गोपनीय और भौतिक परिवर्तनशील स्वभाव के गुणधर्म का प्रतिनिधित्व करता है, समाजवाद, षडयंत्र, विद्रोह, जालसाजी, ठगी, विचारणीय नवीन कार्य, झूठी कम्पनियों, अधर्म एवं बुरे विचारों, नशीले पदार्थों और विषाक्त होने का प्रतिनिधित्व करता है तथा नवीन विचारों और नए देशों

के जन्म होने की हलचल लाता है।

शनि से युति करने पर इसके परिणाम अधिक विनाशकारी हो सकते हैं। यह गहरे समुद्रों, समुद्री झीलों, नशीले दवाइयों, रसायनों, जालसाजी, ठगी और उलटफेर पर शासन करता है।

यदि शुभ दृष्ट हो तो अपने सबसे अधिक शुभ स्थिति में होकर कलात्मक अभिरुचि, आध्यात्मिकवाद, खोज और शोध में सहायता करके बृहस्पति के समान शुभ परिणाम दे सकता है। यदि यह दशम भाव में हो तो यह माना जाता है कि इसके शुभ परिणाम होंगें।

3. **प्लूटोः** इसका नाम कानून के डर से छुपकर असंवैधानिक काम करने वालों के रोमन देवता के नाम पर रखा गया है। परसीवल लोवेल ने इसका फलकथन कहा है। क्लाइड टॉम्बलाफ ने 1930 में इसे खोजा था। यह माना जाता है कि यह वृश्चिक राशि का शासक होता है तथा कर्क में उच्च और मकर में नीच का होता है। प्लूटो एक राशि में 13 वर्षों तक रहता है और यह शनि के समान शुभाशुभ दोनों ही प्रकार के परिणाम दे सकता है। जिस जातक अथवा राजनैतिक पार्टी के दशम भाव में प्लूटो होता है वह लम्बे समय तक सत्ता में बना रहता है।

इसका अति गोपनीय चीजों, मृत्यु, कृपणता, कानून के डर से छुपकर असंवैधानिक काम करने वालों अथवा भूमि के नीचे की वस्तुयें प्राप्त करने, बम्ब बनाने में प्रयोग होने वाले बहुमूल्य धातुओं, सामूहिक रुप से नर संहार करने की तकनीक, एटम बम्ब, हाइड्रोजन बम्ब और परमाणु संयत्र पर विशेष शासन होता है।

दशम ग्रहः 31 जुलाई, 2005 को यह समाचार आया कि दशम ग्रह खोजा गया है जिसका नाम कुछ समय के लिए 2003ई एल 61 रखा गया है। सर्वप्रथम इसको 2003 में जोइस लुइस ऑर्टिज ने स्पेन में पहचाना था। इन्होने अपनी इस खोज के विषय में सुनिश्चित होने के बाद दुनिया को 22 जुलाई, 2005 में इससे अवगत कराया। यह ग्रह लगभग 32 प्रतिशत प्लूटो के समान पिण्ड है।

लगभग 6000 वर्षों पूर्व सुमेनियन लोगों के मध्य दशवें ग्रह निब्रू के विषय में चर्चा हुई थी। वैज्ञानिक "एक्स" नाम से दसवें ग्रह के विषय में नेप्चून और प्लूटो के परिक्रमा पथ में होने वाली हलचल से अनुमान लगा रहे हैं।

अध्याय 2

मेदिनी ज्योतिष में भावों के कारकत्व

यद्यपि मेदिनी ज्योतिष में भी प्रत्येक कार्य के विषय में ज्ञात करने के लिए सामान्य विधि से ही कुण्डली बनाई जाती है लेकिन इसमें कुण्डली के विभिन्न भावों के कारकत्वों में अन्तर आ जाता है। मेदिनी ज्योतिष में कुण्डली के विभिन्न भावों के कारकत्व अर्थात भावों के विषय इस प्रकार से हैं:

प्रथम भाव (गृह मंत्रालय):

1. प्रथम भाव अतिमहत्वपूर्ण भाव होता है क्योंकि यह जन साधारण और देश की सामान्य स्थितियों को दर्शाता है।
2. लोगों के स्वास्थ्य, पूरे देश को एक रुप में, लोगों का आकस्मिक स्थितियों में व्यवहार, राष्ट्रीय विनाशकारी घटनाओं और इनसे लड़ने एवं उभरने की क्षमता।
3. देशवासियों का सामान्य चरित्र।
4. देश की आन्तरिक विचार और देश का विभिन्न क्षेत्रों में लक्ष्य।
5. मंत्रिपरिषद की स्थिति। यहां पापी ग्रह मंत्रिपरिषद के विचारों में मतभेद दिखाता है और इसका अर्थ मंत्रिपरिषद का पुनर्गठन तथा मंत्रियों के विभागों का नये सिरे से बंटवारा भी दर्शाता है।
6. प्रथम भाव में स्थित शुभ ग्रह अच्छा स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि देते हैं जबकि पापी ग्रह परेशानियों एवं विनाश का कारण होते हैं। जब लग्न को पापी ग्रह दृष्ट करते हैं तो देश में प्रभावशाली दु:खद घटनायें होती हैं और देश में चारों ओर अराजकता का वातावरण होता है।

द्वितीय भाव (वित्त मंत्रालय):

1. देश की आर्थिक स्थिति, देश की मुद्रास्फिर्ति, राष्ट्रीय राजकोष एवं देश की सम्पति और देश की क्रय करने की क्षमता।
2. देश की अर्थ व्यवस्था, स्टाक एवं बॉण्डों में निवेश की क्षमता, देश का ऋण और धन।
3. सामान्य लाभ या हानि, आर्थिक लेन-देन।
4. वित्तीय संस्थान और देश का खजाना।
5. देश के आर्थिक स्रोत्र। आकस्मिक स्थितियों में देश की धन एकत्रित करने और हथियारों के क्रय करने की क्षमता।
6. राष्ट्रीय व्यापार या वाणिज्य, आयात-निर्यात।
7. देशवासियों की क्रय क्षमता और समृद्धि।
8. देश का कुल उत्पादन।
9. कर और कर से प्राप्त होने वाली देश की आमदनी।
10. ब्याज और ब्याजदर। परिवर्तित मूल्य में निवेश और उतार-चढ़ाव। शेयर बाजार।
11. राष्ट्रीय धरोहर आदि। इस भाव में पीड़ित शनि का अभिप्राय है कि देश आपतकालीन स्थितियों के कारण अपने राष्ट्रीय स्रोत्रों का अत्याधिक व्यय करने जा रहा है।
12. द्वितीय भाव में स्थित शुभ ग्रह देश की आर्थिक स्थिति के लिए अच्छे हैं।

तृतीय भाव (संचार मंत्रालय):

1. यह डाक-तार, टेलीग्राम, दूरभाष, रेडियो, टेलीविजन, उपग्रह संचार, विज्ञापन, समाचारपत्र और प्रकाशन आदि को दर्शाता है। यह प्रैस, समाचार और प्रसारण में भूमिका निभाता है।
2. यातायात, यात्रा, रेलवे, हवाईजहाज, वाहन आदि।
3. पुस्तकें, समय अन्तराल से निकलने वाले प्रकाशन एवं पत्रिकायें और साहित्य।

4. पड़ोसी देश, सीमा के झगड़े, पड़ोसी देशों से सम्बन्ध।
5. सशस्त्र सेना (प्रश्नमार्ग के मतानुसार सेना प्रमुख)।
6. देशवासियों का मानसिक स्तर और लोगों के विचार।
7. देश की लिखित सन्धियां और हस्ताक्षर किये गए कागजात।
8. युद्ध होने की स्थिति में भूमि का लाभ-हानि।
9. देश में होने वाला व्यापार।
10. दुर्घटनायें।

चतुर्थ भाव (मानव संसाधन मंत्रालय):

1. कृषि योग्य भूमि और फसलें अर्थात कृषि उद्योग।
2. खदानें और खनिज।
3. भूमि से सम्बन्धित लाभ या ब्याज और भूमि का क्रय-विक्रय।
4. मैले-कुचले क्षेत्र।
5. होटल उद्योग।
6. मौसम की स्थितियां, भूस्खलन, जंगल, जंगलों में लगने वाली आग, ज्वालामुखियों की स्थितियां और खदानों में होने वाली दुर्घटनायें।
7. भूकंप और बाढ़।
8. विद्यालय, विश्वविद्यालय और शैक्षिक संस्थान।
9. पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार सामान्य देशवासी।
10. अपने देश के प्रति स्वाभिमान और देशभक्ति।
11. विरोधी दल।
12. राजा का सिंहासन या राजमुकुट।
13. पाश्चात्य ज्योतिष के मतानुसार पूरा मंत्रिमण्डल लेकिन वैदिक ज्योतिष के अनुसार मंत्रिमण्डल को प्रथम भाव दर्शाता है।

14. देश में जनतान्त्रिक गतिविधियां।
15. क्षेत्रीय और स्थानीय राजनीति।
16. सामान्य सुख।
17. व्यापार और कृषि।

पंचम भाव (शिक्षा मंत्रालय):

1. बच्चे, जन्मदर।
2. कला के क्षेत्र में शिक्षा की सुविधायें।
3. देश का सभी प्रकार का आनन्द, आमोद-प्रमोद, मंनोरंजन, थियेटर, सिनेमाघर, सामुदायिक बाग, अभिनेता-अभिनेत्रियां आदि।
4. देश की कला के क्षेत्र में गतिविधियां।
5. खेल, जनता के मनोरंजन के पार्क।
6. शेयर बाजार, बाजार में धन के निवेश सम्बन्धित सोच-विचार।
7. नैतिकता, अनैतिकता, बदनामी, व्यभिचार से सम्बन्धित अपराध।
8. उच्च सामाजिक वर्ग और उत्सव।
9. संसद का उच्च सदन अर्थात राज्यसभा,।
10. विद्यालय और शिक्षा के स्थान।
11. विदेशों के राजदूत और राजनायिक।
12. दशम भाव से अष्टम होने के कारण राजा को भय।
13. डा. रमण के मतानुसार अपराध।
14. राजा की मानसिक स्थिति।

षष्टम भाव (रक्षा मंत्रालय):

1. सशस्त्र सेनायें।

2. देश पर आक्रमण अर्थात युद्ध।
3. श्रमिक वर्ग, श्रमिक संगठन, हड़ताल और श्रमिकों से टकराव।
4. राष्ट्रीय ऋण।
5. चिकित्सा और इससे सम्बन्धित सेवायें, चिकित्सक, नर्सिस आदि।
6. सामान्य बिमारियां।
7. राष्ट्रीय खाद्य वितरण।
8. अभिलेखागार, पुस्तकालय, पुस्तकालयाध्यक्ष, कम्प्यूटर आदि।
9. जानवरों के बाड़े।
10. सेवा करने वाला वर्ग, नौकर, अपेक्षाकृत कम विशेषाधिकार।

सप्तम भावः

1. युद्ध, लड़ाई, प्रत्यक्ष संग्राम।
2. शत्रु, डकैत, चोर-डाकू और जेबकतरे और विदेशी गुप्तचर।
3. अन्तर्राष्ट्रीय मामले, आपसी सम्बन्धों में विवाद, अन्य देशों से सम्बन्ध, विदेशी मामले।
4. गुप्त शत्रु की मृत्यु।
5. समझौता, एकजुटता, सन्धि के मसौदे। सन्धि के मसौदे को एकादश भाव से भी देखा जाता है।
6. विदेशों से व्यापार और व्यापारिक सम्बन्ध।
7. विवाह और तलाक।
8. सेना प्रमुख की कुण्डली में सप्तम भाव से सफलता या पराजय को देखते हैं।
9. उन लोगों को जो भूमि अधिनियम का उल्लंघन करते हैं जैसे असामाजिक तत्व अथवा उन लोगों को जो सरकार से सहयोग करते हैं।
10. देश में अनैतिकता, बच्चों में अनैतिकता की दर।

अष्टम भाव:

1. देश के शासक, राष्ट्राध्यक्ष, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री जैसे प्रमुख व्यक्ति की मृत्यु।
2. सरकार का अन्त, देश या राज्य का विनाश।
3. मंत्रिमण्डल को प्राप्त होने वाला आघात जैसे महत्वपूर्ण मंत्री की मृत्यु आदि। मंत्रिपरिषद की स्थिति को प्रथम भाव से देखा जाता है जबकि पूरे मंत्रिपरिषद को सामूहिक रुप से दशम भाव से देखा जाता है।
4. सूखा, महामारी आदि प्राकृतिक आपदाओं से परेशानियां।
5. मृत्युदर।
6. वैज्ञानिक संस्थान, उत्तरदान।
7. मूलधन पर आय, टैक्स और मृत्युकर।
8. पेंशन अर्थात सेवा निवृत कर्मचारियों को भत्ता।
9. छुपी हुई वस्तुयें।
10. वैज्ञानिक निवेश और खोज।

नवम भाव:

1. सर्वोच्च न्यायालय, न्यायाधीश, न्यायपालिका, अन्तर्राष्ट्रीय कानून, न्याय व्यवस्था और मुकद्मेबाजी।
2. संयुक्त राष्ट्रसंघ, विश्व के संस्थान।
3. विदेशी कूटनीति से सम्बन्धित मंत्रालय, विदेशों से सम्बन्ध।
4. सन्धि और समझोते।
5. विदेशी व्यापार, वाणिज्य और समुद्री व्यापार।
6. नौसेना और इससे सम्बन्धित विषय।
7. पर्यटन, अन्तर्राज्य हवाई अड्डे।
8. विज्ञान, उच्च शिक्षा के संस्थान, विश्वविद्यालय, उच्च विचार और वैज्ञानिक समूह।

9. समुद्री यात्रा, लम्बी यात्रायें, विदेशों में वास।
10. प्रकाशन एवं विज्ञापन उद्योग, लोगों से सम्बन्ध।
11. धर्म, मस्जिद, मन्दिर, चर्चादि। धार्मिक और पवित्र ग्रन्थ जैसे वेद, कुरान, बाइबल आदि।
12. युद्ध से सम्बन्धित कुण्डली में शत्रुओं को रोकने के लिए देश का प्रयास।
13. लम्बी दूरी की संचार व्यवस्था, तार, रेडियो, टेलीविजन आदि।
14. परिवहन के साधन जैसे हवाई जहाज, समुद्री जहाज, मोटर-गाडियां आदि।
15. विमान चालक, विमान परिचालक-परिचालिकायें और यात्रा ऐजन्ट।

दशम भाव:

1. राजा, राजतत्व, नैतिकता।
2. शासक, प्रधानमंत्री, राज्याध्यक्ष।
3. सत्तासीन दल।
4. राष्ट्रपति और राज्यपाल।
5. राज्य एवं देश के मुख्य अधिकारी।
6. देश का सम्मान, विश्व में स्थिति, मान-प्रतिष्ठा।
7. वैदिक ज्योतिष के अनुसार संसद।
8. राजनीति और राजनीतिज्ञ।
9. राष्ट्रीय प्रमुख व्यक्ति।
10. राष्ट्रीय लक्ष्य और लाभ।
11. अप्रसन्नता और शासक की मृत्यु।
12. विदेशी व्यापार।
13. निर्यात।
14. शोषण, पुनर्मूल्यांकन और कानूनी अव्यवस्था।

युद्ध के समय की कुण्डलियों में बृहस्पति और शनि का दशम भाव में गोचर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जहां शनि पराजय देता है वहीं बृहस्पति विजय दिलाता है।

एकादश भावः

1. पाश्चात्य ज्योतिष के मतानुसार संसद, प्रतिनिधियों का सदन। वैदिक ज्योतिष के अनुसार संसद को दशम भाव से देखा जाता है। हमें दोनों भावों की विवेचना करनी चाहिए।
2. विदेशी सरकारों के साथ लिपिबद्ध संविदा और समझोते, अन्य देशों के साथ दल बनाना आदि।
3. राष्ट्रीय मुद्रा छापने का कारखान और खजाना।
4. विदेशों में भेजे गए राजनायिक और राजदूत।
5. उपराष्ट्रपति।
6. राष्ट्र के लक्ष्य और योजनायें।
7. मित्र देश और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।
8. दूसरों देशों से लाभ।
9. विदेशी व्यापार से लाभ।
10. सहयोगी संस्थान और संगठन।
11. कानून निर्माण।

द्वादश भावः

1. युद्ध एवं हानियां, मानसिक एकाग्रता शिविर।
2. यातनाग्रह, गुप्त योजनायें।
3. सैनिक अस्पताल, सैनिकों के आक्रमण करने के गुप्त ठिकाने, हत्यायें।
4. घरों में आग लगाना, लूट, बलात्कार आदि।

5. राजद्रोह, विद्रोह, शत्रु, विदेशी जासूसी, शत्रुओं के द्वारा यातना, फूट डालने वाले, अपहरणकर्ता और षडयन्त्रकर्ता।

6. गुप्त समझौते।

7. सोचे-समझे अपराध, अपराधी, जुंआ खेलना, वेश्यावृत्ति, धमकाकर धन लेना, धूर्तता, जालसाजी।

8. गुप्त सेवायें, जासूस, पुलिस, कानून को लागू करने वाली अधिकार सम्पन्न इकाई।

9. कारागाह, श्रमिक।

10. अस्पताल, आश्रयस्थल।

11. कारावास, दासता।

12. देशनिकाला, समाज से बहिष्कार।

13. दुर्भाग्य, दयनीयता, दरिद्रता, चरित्रहनन के विवाद।

14. महामारियां, कीटनाशक।

15. विदेशों में सम्पति।

16. समुद्र, चोर-बाजारी, हानि, व्यय।

17. विदेशी भूमि में जीवन, विदेश में समृद्धि।

18. दोषपूर्ण सेवामुक्ति, नियुक्ति और सेवानिवृति।

19. जासूसी, आंतकवादी, विदेशी गुप्तचर।

20. युद्ध से होने वाली हानियां।

21. विदेशी निवेश।

द्वादशेश का लग्न में होने का अभिप्राय है कि देश में विदेशी गुप्तचर सक्रिय है और विदेशी ताकतें देश की नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हैं। यह विदेशी षडयंत्रों, जासूसी और गुप्त योजनाओं का कारक है। देश के अस्पताल और कारावास भरे हो सकते हैं।

अध्याय 3

विभिन्न देशों की राशियां

प्टोलेमी, जिन्हें पाश्चात्य ज्योतिष का पितामह माना जाता है, ने पूरे विश्व को विभिन्न राशियों में बांटा था। उनके बाद के ज्योतिषाचार्यों ने उनके द्वारा बनाई देशों की उस सूची में मात्र संशोधन ही किये हैं। यद्यपि यह सूची अधिक विश्वसनीय नहीं है लेकिन अनुभव में यह देखा गया है कि मौटेतौर पर यह सही परिणाम देती है। प्टोलेमी द्वारा द्वितीय सदी में किया गया देशों का यह वितरण उस समय के एक या डेढ़ आयनामांश के निरायण पर आधारित था।

वराहमिहिर ने दो अध्यायों को भारत के विभिन्न क्षेत्रों और आस-पास के देशों को विभिन्न नक्षत्रों में बांटने हेतु समर्पित किये हैं। उनके द्वारा वर्गीकृत यह सूची समय-समय पर किये गये परीक्षणों पर सही सिद्ध हुई है। जिस सिद्धान्त पर इन्हें आंबटित किया गया है उसे **कूर्म चक्र** कहते हैं जिसे इस पुस्तक के अलग अध्याय में दिया गया है।

भारत की शासकीय राशिः

1. वराहमिहिर के समय में भारत मकर राशि के अन्तर्गत आता था और इस बात में भी कोई शक नहीं है कि भारत के उत्तरी भाग के कुछ क्षेत्र मकर राशि द्वारा शासित हैं। डा. बी.वी. रमण कन्या राशि को भारत की राशि मानते हैं क्योंकि कन्या राशि भारत के दक्षिण में स्थित अन्तिम स्थान कन्याकुमारी को इंगित करती है।

2. भारत की राजधानी दिल्ली, वृश्चिक राशि द्वारा शासित है।

3. आधुनिक भारत को आजादी 14 अगस्त, 1947 की अर्धरात्रि में मिली थी। उस समय पूर्वी क्षितिज में वृषभ राशि उदय हो रही थी। भारत की आजादी की कुण्डली अलग से दी गई है। आजादी के इस समय चयन के पीछे की कहानी

श्री के.एन. राव ने अपने लेख "हाउ हिन्दू एस्ट्रोलाजर्स सेव्ड द नेशन" में दी है जो जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के जुलाई-सितम्बर, 1997 के संस्करण में छपा था।

4. 26 जनवरी, 1950 को भरणी नक्षत्र में भारत लोकतांत्रिक गणराज्य बना था। उस समय पूर्वी क्षितिज में मीन राशि उदय हो रही थी। यह कुण्डली भी आगे दी गई है।

अमेरिकाः

यद्यपि ज्योतिषाचार्यों का अमेरिका की राशि के विषय में अलग-अलग मत हैं लेकिन अधिकतर मिथुन राशि को ही इसकी स्वतन्त्रता के दिन 4 जुलाई, 1776 की राशि मानते हैं। फिलदीलफिया में हुए स्वतन्त्रता समारोह के समय के विषय में अनिश्चता है। श्री के.एन. राव के मतानुसार अमेरिका की शासित राशि सिंह है क्योंकि यह राशि अधिक सटीक परिणाम देती है। इस विषय में उन्होंने विस्तृत चर्चा अपने एक लेख में की है जो जरनल आफ एस्ट्रोलॉजी के जनवरी-मार्च, 2002 के संस्करण में छपा था।

यद्यपि किसी भी सम्पूर्ण देश की शासक राशि एक हो सकती है लेकिन देश के विभिन्न भागों में विभिन्न राशियों का शासन होता है। इस बिन्दु को ध्यान में रखते हुए विभिन्न राशियों के द्वारा शासित देशों की सूची इस प्रकार से हैः

1. **मेषः** इंग्लैण्ड, फ्रान्स, स्विजरलैण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, सीरिया, पोलैण्ड के कुछ भाग।

   शहरः बर्मिंग्टन, मार्शीलर, फ्लोरेन्स, वरोना और नेप्लस।

2. **वृषभः** हॉलैण्ड, इरान, आयरलैण्ड, रशिया का कुछ भाग।

   शहरः डब्लिन, लेपिजिग और सेन्ट लाउस।

3. **मिथुनः** अमेरिका, दक्षिणी-पश्चिमी इंग्लैण्ड, बेल्जियम, इटली का कुछ भाग।

   शहरः लन्दन, वर्सेलिस, मेलबॉर्न, प्लाइमाउथ और सेन फ्रान्सिको।

4. **कर्कः** स्काटलैण्ड, न्यूज़ीलैण्ड, पेरगुआय।

   शहरः न्यूयार्क, ट्रिपोली, अलजियर, टुनिस, वेनिस, मेनचेस्टर, जिनोआ और एमस्टरडम।

5. **सिंहः** इटली, फ्रान्स के कुछ भाग, सिसली, बोइमिया।
   शहरः मुम्बई, शिकागो, डेमास्कस, ब्रिस्टल और फिलदीलफिया।
6. **कन्याः** भारत, टर्की, ब्राजील, वेस्ट इंडीज, ग्रीस।
   शहरः पेरिस, लाउन्स, जेरुशलम और लॉस एन्जिलस।
7. **तुलाः** जापान, तिब्बत, अल्सका, भारत के कुछ भाग, पुर्तगाल।
   शहरः फ्रैन्कफर्ट, शेफिल्ड, लिसबन, अन्टर्व्प, चार्लिसटन, वियेना, जोहेनसबर्ग।
8. **वृश्चिकः** नारवे, मोरक्को, बावेरियन, इज़राइल।
   शहरः वासिंग्टन, डोवर, लीवरपूल और बल्टीमोर।
9. **धनुः** स्पेन, सउदी अरब, हंगरी, मडाग्सर।
   शहरः कोलोगन, टोलेडो, रोडेन्बर्ग।
10. **मकरः** भारत का कुछ भाग, अफगानिस्तान, मैक्सिको, ग्रीस और मेसेडोनिया।
    शहरः आक्सफोर्ड, ब्रूसल, ब्रान्डनवर्ग।
11. **कुंभः** रशिया, स्वीडन, अरब का कुछ भाग, सूडान का निचला भाग।
    शहरः ब्रिघटन, हेमबर्ग और ब्रेमेन।
12. **मीनः** पुर्तगाल, इजिप्ट, नौरवे।
    शहरः अलक्जैन्डरिया, रेतिस्बान और लेनचेस्टर।

कुछ प्रमुख देशों के जन्म का समय, स्थानादि इस प्रकार से हैं:

रशियाः आधुनिक रशिया का जन्म 12.06.1990 को 13:45 घण्टे पर कन्या लग्न के साथ मास्को में हुआ था।

चीनः कम्युनिस्ट चीन का जन्म 01.10.1949 में 15:15 घण्टे पर मकर लग्न में हुआ था।

सउदी अरबः 21.09.1932, स्थानीय समय 12 बजे, रियाद, लग्न वृश्चिक।

इज़राइलः 14.05.1948, तल अवीव 15:50 घण्टे, कन्या लग्न।

अमेरिकाः श्री के.एन. राव के मतानुसार, 04.07.1776, 10:21 फिलीदालफिया, सिंह लग्न।

कनाडाः 01.07.1867, अर्धरात्रि, मीन लग्न।

पाकिस्तानः 14.08.1947, 00:00 घण्टे कराची, मेष लग्न।

सीरियाः 13.11.1970, 05:50, डेमकस, तुला लग्न।

इरानः 01.04.1979, 15:00, तेहरान, कर्क लग्न।

टर्कीः 29.10.1923, 20:30 अंकारा, मिथुन लग्न, कुछ के मतानुसार जन्म समय 19:30 घण्टे है।

अध्याय 4

कूर्म चक्र

कूर्म का अर्थ कछुआ होता है। वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ वाराही बृहत् संहिता में इस चक्र की सहायता से पूरे भारत वर्ष के भूभाग को 27 नक्षत्रों की विभिन्न दिशाओं के अनुसार आंबटित किया है। इन नक्षत्रों के बिन्दुओं को जोड़ें तो एक कछुए का आकार सा बनता है इसलिए इसको कूर्म चक्र कहा जाता है। इसमें तीन-तीन नक्षत्रों की एक इकाई होती है और इस प्रकार कुल नौ इकाइयां बनती हैं। प्रत्येक इकाई एक दिशा विशेष में स्थित भूभाग को इंगित करती है। इसका प्रारम्भ भारत के मध्य भाग से होता है और क्रमानुसार यह पूर्व से चलता है और घड़ी के समान सभी दिशाओं में घूमता हुआ उत्तर-पूर्व में समाप्त होता है। विभिन्न दिशाओं के अनुसार इनमें आने वाले नक्षत्र और मुख्य प्रदेश इस प्रकार से हैं।

1. **मध्य भाग:** कृतिका, रोहिणी, मृगशिर।

   मध्यप्रदेश, राजस्थान, मथुरा सहित पश्चिमी उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र का पूर्वी भाग।

2. **पूर्वी भारत:** आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य।

   बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, बंग्लादेश, मेघालय, असम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा।

3. **दक्षिण-पूर्व:** आश्लेषा, मघा और पूर्वाफाल्गुनी।

   बंगाल, कलिंग, विदर्भ, त्रिपुरी (जबलपुर के पास), किष्कन्धा, आन्ध्रा।

4. **दक्षिण:** उत्तरफाल्गुनी, हस्त और चित्रा।

   श्रीलंका, मलय, कोंकण, केरल, कर्नाटक का कुछ भाग, नासिक, चोल, कांची, तमिलनाडु।

5. **दक्षिण-पश्चिम:** स्वाति, विशाखा और अनुराधा।

गोवा, कर्नाटक, महाराष्ट्र का कुछ दक्षिण-पश्चिमी भाग।

6. **पश्चिमः** ज्येष्ठा, मूल और पूर्वाषाढ़ा।

पश्चिमी महाराष्ट्र, गुजरात, ब्लूचिस्तान, राजस्थान का कुछ भाग।

7. **उत्तर-पश्चिमः** उत्तराषाढ़ा, श्रवण और धनिष्ठा।

कश्मीर का उत्तरी भाग, पाकिस्तान का उत्तरी भाग और अफगानिस्तान।

8. **उत्तरः** शतभिषज, पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद।

कैलाश, क्रौंच एवं तिब्बत, मध्य एशिया, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश।

9. **उत्तर-पूर्वः** रेवती, अश्विनी और भरणी।

नेपाल का कुछ भाग, सिक्किम, भूटान, अरुणाचल प्रदेश और तिब्बत।

नक्षत्रों के साथ-साथ ग्रह भी दिशाओं को इंगित करते हैं।

सूर्य - पूर्व,	चन्द्रमा - उत्तर-पश्चिम,	मंगल - दक्षिण,
बुध - उत्तर,	बृहस्पति-उत्तर-पूर्व,	शुक्र - दक्षिण-पूर्व,
शनि - पश्चिम,	राहु - दक्षिण-पश्चिम।	

कूर्मचक्र

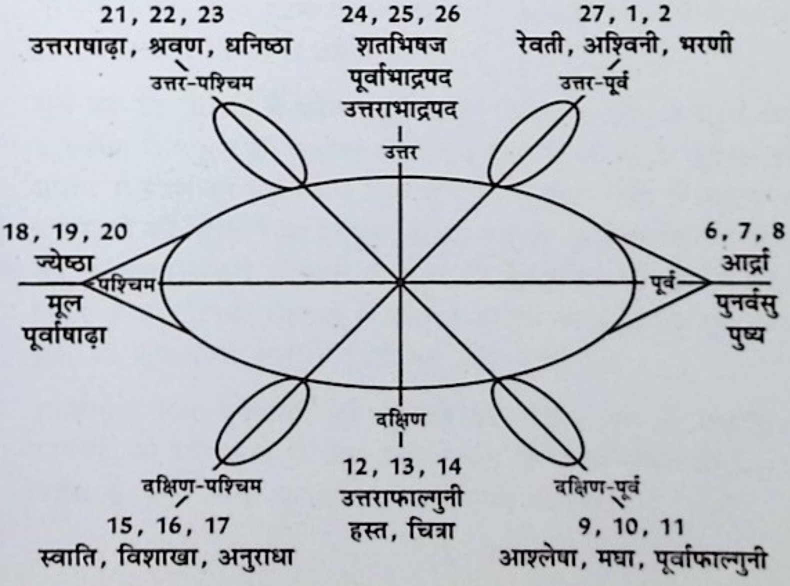

विभिन्न ग्रहों द्वारा शासित देशः

सूर्यः	नर्मदा का पूर्वी भाग, उड़ीसा, बंगाल, बिहार, कम्बोज, पूर्वी तमिलनाडु, कौसाम्बी।
चन्द्रमाः	कोसट, बरुच।
मंगलः	नर्मदा, सिन्धु, महानन्द, भीमरथ, शिप्रा नदी, मलय, चोल, द्रविड़, आन्ध्र, कोंकण, विन्ध्याचल।
बुधः	गंगा, सरयु, हिमालय की तराई में स्थित राज्य, सौराष्ट्र।
बृहस्पतिः	पूर्वी पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश।
शुक्रः	तक्षशिला, गान्धार, मालवा, वित्सता, एरावती।
शनिः	सौराष्ट्र, विदेशा, राजस्थान।
राहुः	सुलेका, किन्नर।
केतुः	इरान, हुण, अफगानिस्तान, चीन, चोल।

अध्याय 5

महत्वपूर्ण कुण्डलियां और सिद्धान्त

मेदिनी ज्योतिष के अन्तर्गत किसी भी घटना, दुर्घटना, देश आदि का विचार करते समय निम्नलिखित बातों का विचार करना चाहिए।

1. **सम्बन्धित देश की जन्मकुण्डली:** उदाहरणत: भारत के लिए 14/15 अगस्त, 1947 मध्यरात्रि, नई दिल्ली की वृषभ लग्न कुण्डली विचारणीय होगी।

2. **गणतन्त्र दिवस की कुण्डली:** उदाहरणत: भारत वर्ष की किसी भी संविधान से सम्बन्धित घटना को 26.01.1950 की मीन लग्न की कुण्डली से देखा जा सकता है।

3. **हिन्दू नववर्ष की कुण्डली:** प्रति वर्ष चैत्र मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से हिन्दुओं का नया वर्ष प्रारम्भ होता है। यह एक महत्वपूर्ण कुण्डली होती है जो पूरे वर्ष में घटने वाली घटनाओं को स्पष्ट दर्शाती है। इस दिन का निर्णय पंचाग द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

4. **सूर्य का चर राशियों में प्रवेश:** सूर्य का चर राशियों में प्रवेश महत्वपूर्ण होता है क्योंकि कालपुरुष की कुण्डली में ये चारों केन्द्र की राशियां हैं। सूर्य का इन राशियों में प्रवेश का सही समय गणना द्वारा अथवा पंचाग आदि से ज्ञात करके उस समय की कुण्डली का अध्ययन करके, परिणाम सुनिश्चित करने चाहिए। सूर्य का अन्य राशियों में प्रवेश के समय की कुण्डलियों को भी बनाया जा सकता है और उनकी सहायता से परिणाम निकाले जा सकते हैं। इस प्रकार कुल 12 कुण्डलियां बनती हैं जिन्हें सूर्य वीथि कहते हैं।

5. **अमावस्या और पूर्णमासी की कुण्डलियां:** प्रत्येक माह के तत्कालिक परिणामों को ज्ञात करने के लिए इनका प्रयोग किया जा सकता है। ये देश विशेष के संदर्भ में भी प्रत्येक पक्ष का परिणाम देती हैं।

उदाहरण के लिए यदि चन्द्रोदय मकर राशि से प्रारम्भ हुआ जहां शनि और राहु स्थित हैं, तो जिन देशों का प्रतिनिधित्व मकर राशि करती है उन देशों में पीड़ा होगी। उन देशों के नागरिकों में असन्तोष उत्पन्न होगा, उस मास मंत्रिपरिषद में अस्थिरता होगी और सामूहिक रुप से पूरा देश कष्टपूर्ण समय देखेगा। यह चन्द्रोदय किसी देश की कुण्डली के दशम भाव में भी हो सकता है। जिन देशों के दशम भाव में यह चन्द्रोदय होगा उन देशों के राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री आदि किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। उन देशों में कानून की स्थिति बिगड जाएगी और राजद्रोह या विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यदि यह किसी देश के पंचम भाव में होती है तो उस देश की शिक्षा की पद्धति, उच्च शिक्षण संस्थानों आदि में हानि हो सकती है। यदि यह तृतीय भाव में होता है तो मंनोरंजन उद्योग, संचार व्यवस्था, परिवहन आदि में समस्यायें उत्पन्न होंगी। इसी प्रकार यदि द्वितीय भाव में होता है तो आर्थिक मन्दी, निर्यात में गिरावट आदि हो सकती है। इस प्रकार पूरे विश्व में कुछ न कुछ अनिष्ट प्रभाव किसी न किसी रुप में अवश्य होगें।

6. **ग्रहों का मंत्रीपरिषदः** प्रत्येक वर्ष सातों ग्रह अपने पदों में परिवर्तन करते हैं। ये पद, राजा, प्रधानमंत्री, सेनापति, वनस्पतियों का स्वामी, खनिजों का स्वामी, रसों का स्वामी, पशुओं का स्वामी आदि होते हैं। जो ग्रह एक वर्ष के लिए राजा होता है वह अगले वर्ष प्रधानमंत्री या कोई अन्य पदाधिकारी हो सकता है जिसके परिणामस्वरुप प्रत्येक वर्ष प्रत्येक वस्तु के उत्पादन, मूल्य आदि में परिवर्तन आता है। इनकी विस्तृत जानकारी प्रत्येक वर्ष के पंचाग से सरलता से ज्ञात की जा सकती है।

7. **सूर्य, चन्द्रमा और मंगल की भूमिकाः**

सूर्य और चन्द्रमा सामान्यतः राजसिक ग्रह हैं और यदि किसी वर्ष इनमें से कोई राजा नहीं बनता है तो राजसिक कष्ट होता है। इसी प्रकार मंगल स्थाई सेनाध्यक्ष है और यदि किसी वर्ष यह सेनाध्यक्ष नहीं बनता है तो उस वर्ष सेनाओं को कष्ट होता है। इन बातों का भी विचार आवश्यक रुप से करना चाहिए। राजसिक ग्रहों का पीड़ित होना ऐसी घटनाओं को सुनिश्चित करता है जिसमें सरकार या शासन को प्रत्येक वर्ष अशुभ रुप से प्रभावित होना पड़ता है।

8. ग्रहण की भूमिका:

मेदिनी ज्योतिष में किसी भी देश के सम्बन्ध में ग्रहण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रहण से छः माह पूर्व और छः माह बाद तक इसके दुष्प्रभाव देखे जा सकते हैं। ग्रहण का प्रभाव उन देशों में अधिक होता है जहां यह दृष्ट होता है। ग्रहण, राहु-केतु अक्ष पर ही होता है और देश के नेताओं और देशों को प्रभावित करता है। यदि दो ग्रहण, एक सूर्य और दूसरा चन्द्र ग्रहण 14 दिनों के अन्दर दृष्ट होते हैं तो देशों के विनाश जैसे कि युद्ध, हत्यायें आदि होगीं।

मार्च 1914 में 14 दिनों के अन्दर दो ग्रहण हुए थे और सूर्यनारायण राव ने प्रथम विश्व युद्ध की भविष्यवाणी की थी।

9. पुच्छल तारा:

पुच्छल तारों का दिखना और उनके दिखने की दिशा का भी विचार करना चाहिए। ये जिस राशि में दिखते हैं उस राशि द्वारा जिन देशों का प्रतिनिधित्व किया जाता है सामान्यत: उन देशों में पीड़ा होती है। वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ वाराही बृहत् संहिता में इसकी विस्तृत चर्चा की है।

इतिहास के पन्नों में भी यह दर्ज है कि जब कभी भी पुच्छल तारे दृष्टिगोचर हुए हैं तभी भूकंप, सूखा, युद्ध जैसी बड़ी दुर्भाग्य पूर्ण घटनायें हुई हैं।

सन् 1903 में एक पुच्छल तारा कुंभ राशि में खोजा गया था जो युद्ध को और सन् 1905 में एक महत्वपूर्ण घटना को इंगित करता है जो रुश-जापान के युद्ध के रुप में घटी, जिसमें जापानियों ने रुशियों को पराजित किया। यह एक अतिमहत्वपूर्ण घटना इसलिए भी थी कि पहली बार किसी एशिया महाद्वीप के देश ने यूरोपियन देश को युद्ध में पराजित किया था। यह अधिकतर एशियन देशों और अफ्रीकी देशों में राष्ट्रभावना उत्पन्न होंने के लिए शकुन था।

हेली पुच्छल तारे के 1910 में दिखने से पूर्व पूरे विश्व में भूकंप, अकाल जैसे कई परिवर्तन आये और दिखने के बाद 1911 में चीन में विद्रोह हुआ।

यह कहा जाता है कि यदि पुच्छल तारा पूर्व में दिखे तो भगवान का अवतार अर्थात नये पैगम्बर का जन्म होता है, पश्चिम में प्रधान राशि में अर्थात तुला राशि में दिखे तो परेशानियां क्योंकि यह युद्ध और आक्रमण को इंगित करता है। यदि यह किसी राशि विशेष में दृष्ट होता है तो उस राशि द्वारा शासित देश विशेष में समस्यायें उत्पन्न होती है।

10. भूकंपः

यह अध्ययन और शोध के लिए बहुत बड़ा विषय है। इसके संदर्भ में निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आवश्यक रुप से ध्यान देना चाहिए।

1. स्थिर राशियों वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुंभ तथा विशेषकर वृषभ एवं वृश्चिक राशियों में ग्रहण के परिणाम। इस संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि कुछ ग्रह जैसे कि शनि, ग्रहण के बिन्दु पर दृष्टि डालता है।
2. यदि किसी देश की कुण्डली के चतुर्थ भाव में अधिक ग्रहों की युति होती है तो यह परिणाम प्राप्त होता है।
3. वृषभ या वृश्चिक राशियों में बृहस्पति, बुध के साथ अशुभ दृष्टि बना रहा हो।
4. यदि चारों प्रमुख राशियों मेष, कर्क, तुला एवं मकर में अधिक ग्रह हों तो भूकंप आता है।
5. चन्द्रोदय का समय भी महत्वपूर्ण होता है।

अध्याय 6

भारत की कुण्डलियां

(स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस)

(जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी के जुलाई-सितम्बर,
1997 में छपे श्री के.एन. राव के लेख पर आधारित)

1. भारत की स्वतन्त्रता दिवस 14/15 अगस्त, 1947, 12:01 रात्रि, दिल्ली की कुण्डली

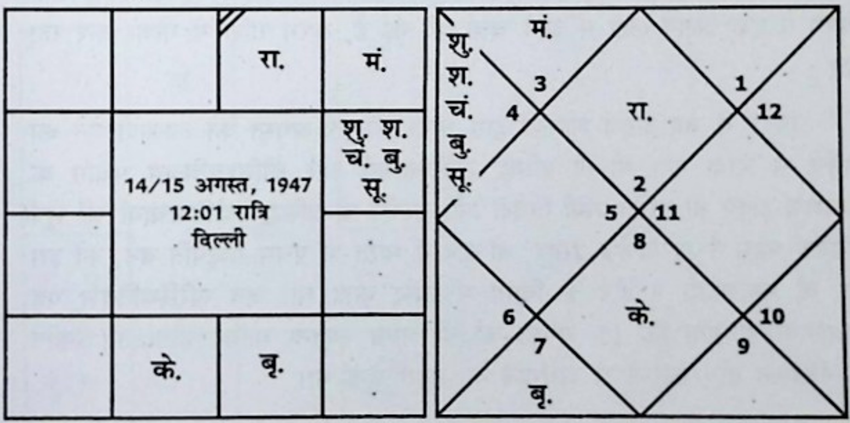

लग्न 07°29' सूर्य 27°59' चन्द्रमा 03°59' मंगल 07°27'
बुध 13°41' बृहस्पति 25°52' शुक्र 22°34' शनि 20°28'
राहु 05°44'

गर्भ दशाः योग कारक शनि की 18 वर्ष 27 दिन की दशा शेष थी।

नवांश कुण्डली

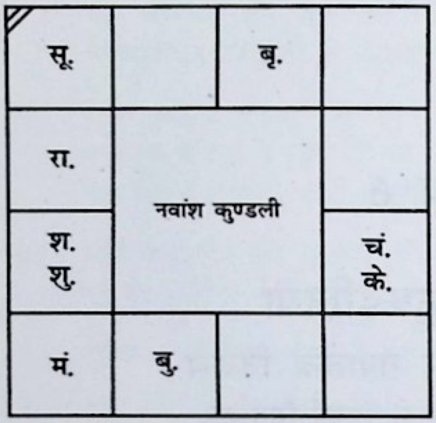

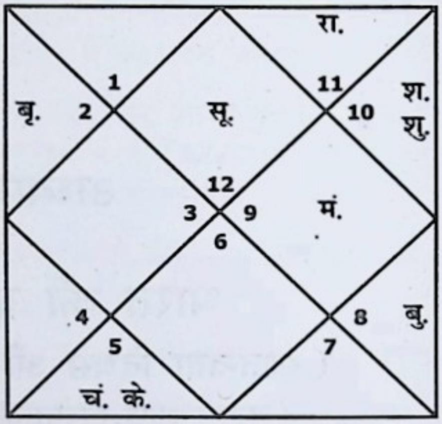

उपरोक्त कुण्डली स्वतन्त्र भारत की लग्न कुण्डली और नवांश कुण्डली है जो देश में होने वाली किसी भी प्रकार की घटना को देखने के लिए प्रयोग में आती है।

स्वतन्त्रता के लिए चुना गया दिन 15 अगस्त, 1947, कोई बहुत मंगलकारी दिन नहीं था। उस दिन सूर्य और शनि के साथ पांच ग्रहों की कर्क राशि में युति थी। चन्द्रमा निर्बली था और राहु, जो युद्धों और रक्तपात का उद्गम स्थल है जिसके विषय में एक अलग लेख में आगे चर्चा की गई है, वृषभ राशि में गोचर कर रहा था।

1947 में जब अंग्रेज शासकों द्वारा भारत को 15 अगस्त को आजादी देने का निर्णय ले लिया गया था तो प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य और श्रीविश्वविजय पचांग के प्रकाशक श्रदेय् श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी और उज्जैन के प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्या श्री सूर्य नारायण व्यास ने डा. राजेन्द्र प्रसाद, जो बाद में भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने, को इस दिन के मंगलकारी न होने के विषय में स्पष्ट कहा था। जब परिस्थितिवश यह आवश्यक हो गया कि 15 अगस्त को ही भारत स्वतन्त्र घोषित होगा तो उन्होने निम्नलिखित तीन कारणों से अर्धरात्रि का मुहूर्त चुना था।

1. चन्द्रमा एक श्रेष्ठतम नक्षत्र पुष्य में प्रवेश कर चुका होगा जो मुहूर्त के लिए सबसे अनुकूल नक्षत्र है।
2. इस समय अभिजित मुहूर्त होना चाहिए जिसकी निम्नलिखिति विधि से गणना की गई

15 अगस्त का सूर्योदय 05:33:31

14 अगस्त का सूर्यास्त 18:57:31

14 अगस्त के सूर्यास्त के और 15 अगस्त के सूर्योदय में कुल 10 घण्टे 36 मिनट का अन्तर था जिसका आधा 14 अगस्त के सूर्यास्त में योग करने पर अर्धरात्रि के 12:15 का समय आता है। इससे एक घटी अर्थात 24 मिनट पूर्व से 24 मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त चलेगा।

3. उस समय पूर्वी क्षितिज पर वृषभ लग्न उदय हो रहा होगा जो एक स्थिर राशि है और किसी भी स्थिर प्रकृति के कार्य के लिए श्रेष्ठ है।

सर वुडराउ व्याटस ने मई, 1988 में टाइम्स, लंदन के मुख्य पन्नें पर छपे एक लेख में इन ज्योतिषाचार्यों का नाम उद्धृत करते हुए लिखा है कि "इस विधि से भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने राष्ट्र की रक्षा की।" (पाकिस्तान ज्योतिषशास्त्र में विश्वास नहीं रखता था और उन्होंने जो समय चुना था उस समय चर लग्न उदय हो रहा था जिसके परिणाम स्वरुप वह दो भागों में विभाजित हो चुका है)।

2. गणतन्त्र भारत - 26 जनवरी, 1950, 10:25 (लगभग) प्रातः, दिल्ली।

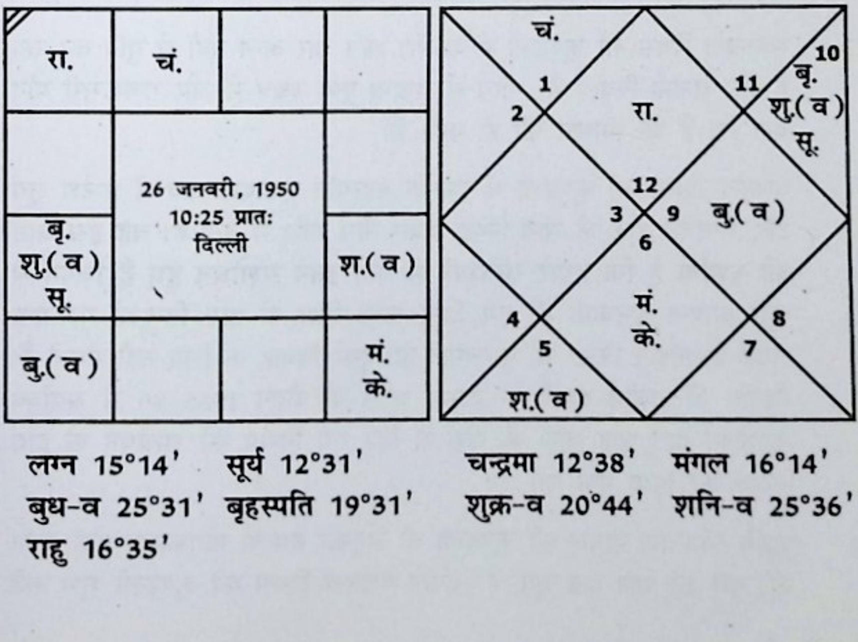

लग्न 15°14' सूर्य 12°31' चन्द्रमा 12°38' मंगल 16°14'
बुध-व 25°31' बृहस्पति 19°31' शुक्र-व 20°44' शनि-व 25°36'
राहु 16°35'

नवांश कुण्डली

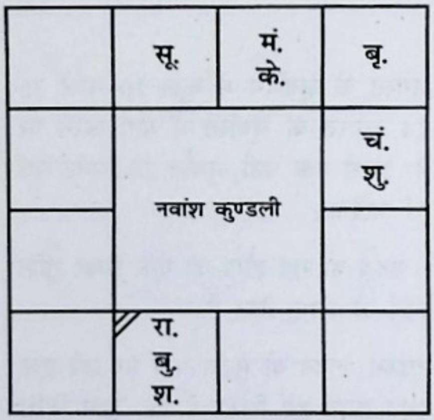

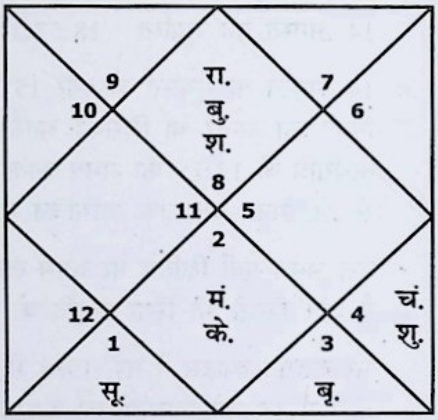

दोनों कुण्डलियों की विशेषतायें:

1. दोनों की कुण्डलियों में राहु लग्न में है इसी कारण से भारत ने हमेशा ही धर्मनिरपेक्षता की नीति अपनाई है।

2. गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में मंगल और केतु, दोनों ही 16 अंशों में स्थित होकर 15 अंश में स्थित लग्न को दृष्ट करते हैं।

3. स्वतन्त्रता दिवस की कुण्डली में दशमेश शनि चार अन्य ग्रहों से युति कर रहा है और चन्द्रमा निर्बली है। भाग्य से चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में और गजकेसरी योग बना रहा है जो भगवान की ही कृपा है।

   गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में दशमेश बृहस्पति एकादश भाव में षष्टेश सूर्य और अष्टमेश शुक्र के साथ स्थित होकर नीच राशि में बैठा है। **यह इस बात को दर्शाता है कि हमारे संविधान में क्यों इतने संशोधन हुए हैं** जिनमें से कुछ अत्यन्त दुष्टकारी हैं। हम हिन्दु कोड बिल के द्वारा हिन्दुओं पर रोक लगाते हैं लेकिन किसी भी मुसलमान को दूसरे विवाह के लिए नहीं रोकते हैं। स्वर्गीय श्री राजीव गान्धी के शासन काल के दौरान 1985-86 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शाह बानो के केस में दिए गये निर्णय को संशोधन के द्वारा निरस्त कर दिया गया था।

4. यद्यपि स्वतन्त्रता दिवस की कुण्डली के अनुसार हम दो योगकारक ग्रहों, शनि और बुध की दशा देख चुके हैं लेकिन गणतन्त्र दिवस की कुण्डली शुभ नहीं

है। इसमें केतु की भोग्य दशा मिली जिसके बाद सबसे अशुभ अष्टमेश शुक्र और षष्टेश सूर्य की दशा मिली।

5. गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में तीन ग्रह वक्री हैं।

उपरोक्त कुण्डलियों के अतिरिक्त वार्षिक मेदिनी फलकथन के लिए हिन्दु नववर्ष की कुण्डली का प्रयोग भी किया जाता है। हिन्दु नववर्ष प्रति वर्ष चैत्र मास में शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है। जिस दिन प्रतिपदा होती है उस दिन स्वामी ही वर्ष का स्वामी बनता है।

अध्याय 7

शुक्र का गोचर और भारत की घटनायें

(श्री के.एन. राव के मार्गदर्शन में लेखक का जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी के जुलाई-सितम्बर, 1997 के संस्करण में छपे लेख पर आधारित)

भारत की स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली में शुक्र लग्नेश है। यह देखा गया है कि जब कभी भी शुक्र गोचर में पीड़ित होता है तो पूरा देश पीड़ा का अनुभव करता है। उदाहरण के लिए महात्मा गान्धी की मृत्यु के समय शुक्र, मंगल की दृष्टि से पीड़ित हो रहा था और अष्टमेश बृहस्पति से केन्द्र में था। शुक्र को केतु भी पंचम दृष्टि से देख रहा था। नीचे दी गई उस दिन की कुण्डली का अवलोकन करें।

महात्मा गान्धी की मृत्युः 30 जनवरी, 1948

	रा.		
बु. शु.	महात्मा गान्धी की मृत्यु 30 जनवरी, 1948		श.
सू.			मं.
	बृ.	के.	चं.

इसी प्रकार 2 अक्टूबर, 1962 को जब भारत और चीन का युद्ध हुआ उस समय भी षष्टम भाव में स्थित शुक्र, मंगल और शनि से पीड़ित हो रहा था।

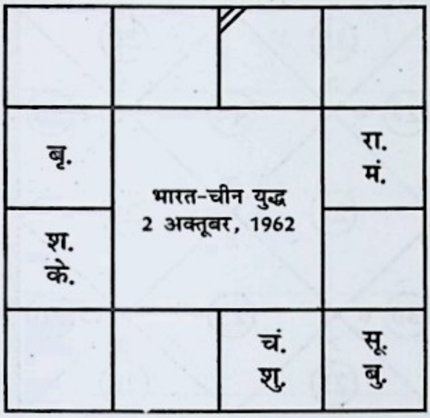

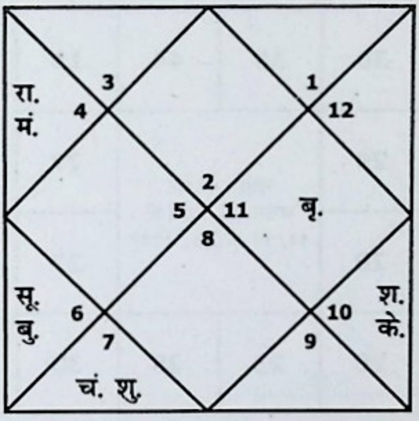

5 जून, 1984 को अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में आपरेशन ब्लू स्टार के समय भी शुक्र, राहु-केतु अक्ष पर स्थित होकर मंगल से दृष्ट था।

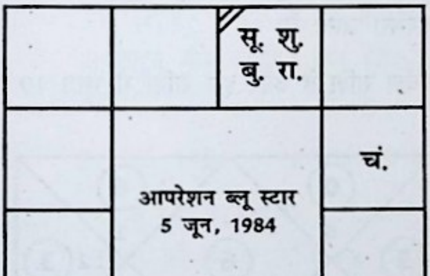

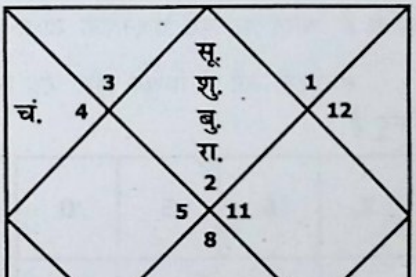

शुक्र का मिथुन राशि में गोचर भी अशुभ माना जाता है। इसका कारण यह है कि भारत की कुण्डली के सर्वाष्टक वर्ग में मिथुन राशि एक निर्बल राशि है और इस राशि में मात्र 19 बिन्दु हैं।

30	30	44	19
29	सर्वाष्टक वर्ग भारत की कुण्डली 14/15 अगस्त, 1947		27
20			27
28	23	25	30

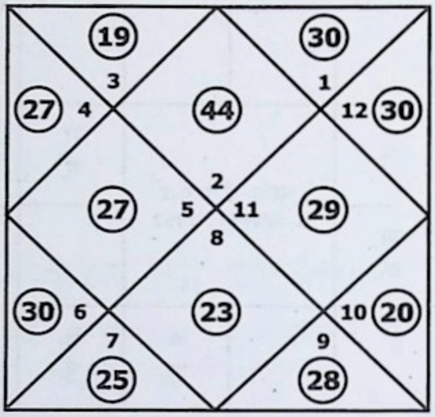

चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में मिथुन राशि में शून्य बिन्दु हैं। चन्द्रमा मन का एवं मानसिक शान्ति का कारक है और जब कभी लग्नेश बिन्दुहीन राशि मिथुन में गोचर करता है, भारत का पूरा राजनैतिक ढांचा चरमरा जाता है।

सर्वाष्टक वर्ग में मिथुन राशि एक निर्बल राशि है और इस राशि में मात्र 19 बिन्दु हैं।

3	6	6	0
4	चन्द्रमा का भिन्नाष्टक वर्ग भारत की कुण्डली 14/15 अगस्त, 1947		5
5			6
3	4	5	6

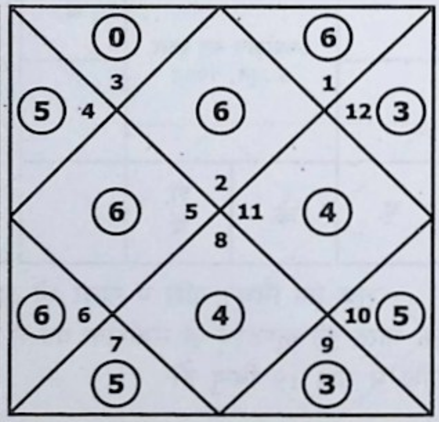

आगे दी गई स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहरु की मृत्यु के समय की कुण्डली का अवलोकन करें।

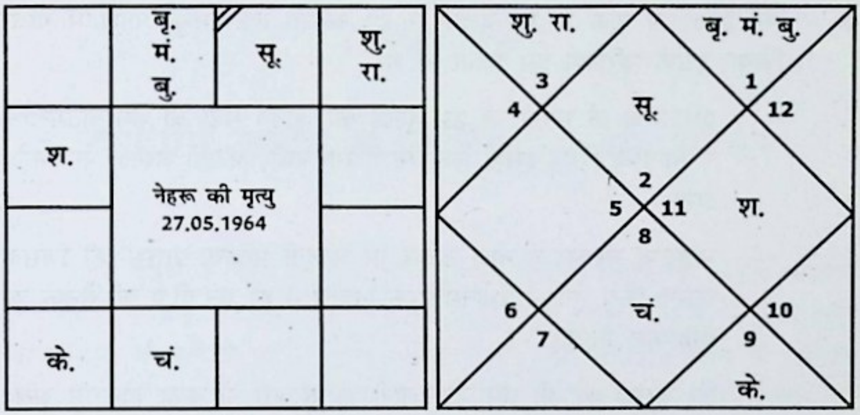

जब-जब शुक्र ने मिथुन राशि में गोचर किया भारत के इतिहास में निम्नलिखित घटनायें घटीं।

1. 30 जुलाई, 1953 से 24 अगस्त, 1953 तक - कश्मीर में समस्या, शेख अब्दुल्ला को बर्खास्त कर दिया गया। इसने नेहरु की नीतियों पर दुष्प्रभाव डाला।

2. 27 मई, 1964 - नेहरु की मृत्यु।

3. 18 जुलाई, 1966 से 9 अगस्त, 1966 तक - श्रीमति इन्दिरा गान्धी की सरकार के विरुध अविश्वास प्रस्ताव।

4. 30 जुलाईं, 1969 से 24 अगस्त, 1969 तक - अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विभाजन। बाबू जगजीवन राम कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

5. 2 मई, 1972 से 22 जून, 1972 तक और पुनः 27 जुलाई से सितम्बर तक - राष्ट्रपति के चुनाव के लिए श्री वी. वी. गिरी और श्री संजीव रेड्डी के मध्य चुनाव, श्री मोरारजी देसाई और इन्दिरा गान्धी में मतभेद।

6. 4 मई, 1988 से 22 मई, 1988 और 22 जुलाई से 31 जुलाई 1988 तक - सी.ए.जी. के द्वारा पनडुब्बी खरीद पर टिप्पणी जिसके परिणाम स्वरुप विवाद का जन्म। अमृतसर में आंतकवादियों के विरुद्ध आपरेशन ब्लेक थण्डर। उत्तर भारत में भूकंप।

7. 14 जून से 17 जुलाई, 1992 तक - शेयर बाजार में संकट। हर्षद मेहता द्वारा 45,000 करोड़ का घपला। शुक्र मिथुन राशि में प्रवेश करने ही वाला था।

8. सन् 2001 में शुक्र ने 27 जुलाई से 22 अगस्त तक मिथुन राशि में गोचर किया। इसके परिणाम इस प्रकार से थे:

- प्रधानमंत्री के मांगने पर 23 जुलाई को कानून मंत्री श्री राम जेठमलानी ने त्यागपत्र दिया। इसके लिए सोली सोराबजी, अटार्नी जरनल पर आरोप लगा।
- महाराष्ट्र सरकार ने बाल ठाकरे पर कानूनी प्रक्रिया प्रारम्भ की जिसके कारण शिव सेना ने प्रधानमंत्री के निवास में हुई एन.डी.ए की बैठक का बहिष्कार किया।
- 27 जुलाई को श्री राम जेठमलानी के सरकार से बाहर होने पर संसद में शोर मचा।
- 31 जुलाई को कन्नड सिनेमा जगत के लोकप्रिय अभिनेता श्री राजकुमार का अन्य तीन व्यक्तियों के साथ अपहरण हुआ। सभी राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने इसे प्रमुखता दी।
- लोकसभा ने बिल पास किया जिसके द्वारा मध्यप्रदेश को विभाजित करके नये राज्य छत्तीसगढ़ का गठन किया।
- बादल फटने से हिमाचल प्रदेश में 100 से अधिक लोगों की जान गई।
- रुपये का मूल्य निम्नतर स्तर पर पहुंचा।
- विदेशी हमलावरों ने 32 अमरनाथ यात्रियों के साथ सुरक्षा गार्डों की हत्या की। आंतकवादियों ने कश्मीर में 100 व्यक्तियों की जान ली।
- विश्व हिन्दू परिषद द्वारा भारत बन्द किया गया।
    - बिहार और आन्ध्रप्रदेश में वर्षा से संकट उत्पन्न हुआ।
    - 10 अगस्त, 2001 को नये राज्य उत्तरांचल का गठन हुआ।
    - 15 अगस्त को गोवा कांग्रेस में विभाजन हुआ।
- 22 अगस्त को उमा भारती ने संसद और पार्टी से त्यागपत्र दिया।

अध्याय 8

रोहिणी नक्षत्र में शनि/राहु का गोचर

पद्म पुराण के उत्तरखण्ड में इस संदर्भ में विवरण मिलता है जिसमें भगवान शिव देवऋषि नारद को मेदिनी के साथ-साथ किसी भी जातक की कुण्डली में शनि की भूमिका के बारे में वर्णन देते हुए कहते हैं कि शनि कृतिका नक्षत्र के अन्तिम बिन्दु में पहुंच चुका है और रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करने वाला है। राजा दशरथ को चेतावनी देते हुए बता दिया गया है कि इसका परिणाम भंयकर अकाल और युद्ध होगा।

यह ज्ञात होने पर राजा दशरथ शनि लोक में जाते हैं। वहां पंहुचने पर उनका स्वागत होता है और उन्हें बताया जाता है कि अपने स्वभावानुसार शनि विनाशकारी परिणाम देगा। राजा दशरथ नीलस्त्रोतों को गाकर शनि का स्तुतिगान करते हैं और उनको प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं।

रोहिणी नक्षत्र में शनि:

रोहिणी नक्षत्र में शनि के गोचर के कारण ***"रोहिणी शकट भेदन योग"*** का निर्माण होता है जिसके फलस्वरुप युद्ध, अकाल और साम्प्रदायिक दंगे जैसी घटनायें होती हैं।

श्री के.एन. राव के 1984 के शोधों ***'प्रिज्म ऑफ प्रिडिक्शन'*** में और **'जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी'** के अप्रैल-जून, 1997 के संस्करण में शनि के रोहिणी नक्षत्र में गोचर का अर्थ युद्ध कहा है।

1. **नवम्बर, 1913 से मई, 1914 (प्रथम विश्व युद्ध):** ऐसी घटनायें हुईं जिन्होंने विश्व को युद्ध के लिए प्रेरित किया। महात्मा गान्धी ने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह प्रारम्भ किया।
2. **जून, 1942 से मई, 1943:** युद्ध और बंगाल में अकाल। भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ।

3. जुलाई, 1971 से नवम्बर, 1971: भारत-पाकिस्तान का युद्ध। पूर्वी बंगाल में विद्रोह जिसके परिणाम स्वरुप भारत-पाकिस्तान का युद्ध हुआ और बंगला देश का गठन हुआ।

वृषभ राशि और रोहिणी नक्षत्र में राहु:

1. **1898-1900:** सूखा और अकाल। 1,89,000 वर्ग मील भूमि और 28 लाख लोग प्रभावित हुए। गृह युद्ध जैसी स्थितियां उत्पन्न हुईं। चारों ओर भूख, मौत, दरिद्रता, प्लेग जैसी महामारी फैल गयीं।
2. **जलियांवाला बाग त्रासदी (13 अप्रैल, 1919):** एक हजार से अधिक मासूम लोग मारे गए। कोई चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध नहीं कराई गई और कर्फ्यू लगा दिया गया। पंजाब में चारों ओर विद्रोह की आंधी फैल गई तथा रक्तपात होने लगा और पंजाब एक जेल बन गया।

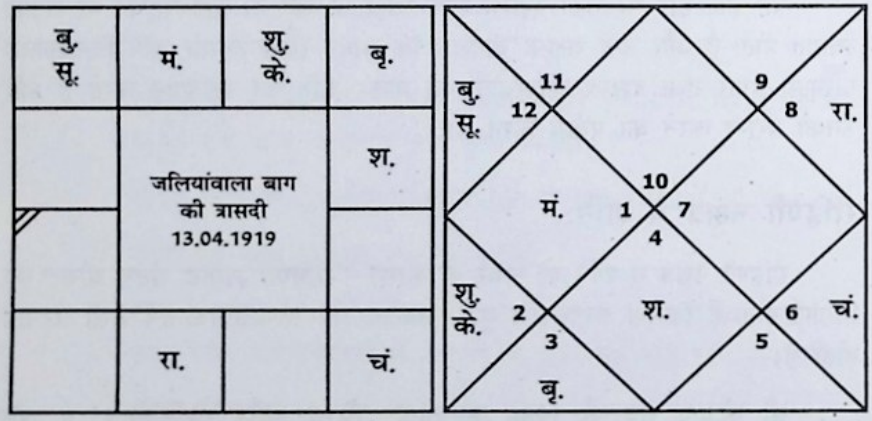

3. **1928:** साइमन कमीशन, औद्योगिक हड़ताल, लाला लाजपत राय पर लाठी चार्ज, भगत सिंह ने एएसपी सान्डर्स की हत्या करके लाठी चार्ज का बदला लिया, और बाद में असैम्बली में बम्ब धमाका किया।

साम्प्रदायिक दंगे और स्वतंत्रता:

9 सितम्बर, 1946 को राहु ने रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश किया था। उस समय सारे भारत वर्ष में साम्प्रदायिक दंगे चल रहे थे। जिनका आधार राहु के वृषभ राशि में प्रवेश करते ही तैयार हो गया था। दिसम्बर, 1947 तक राहु ने वृषभ राशि में गोचर किया।

1965 में राहु के वृषभ राशि में गोचर के समय भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ, ताशकन्द समझोता हुआ, केरल एवं पश्चिम बंगाल में अनाज के लिए दंगे हुए।

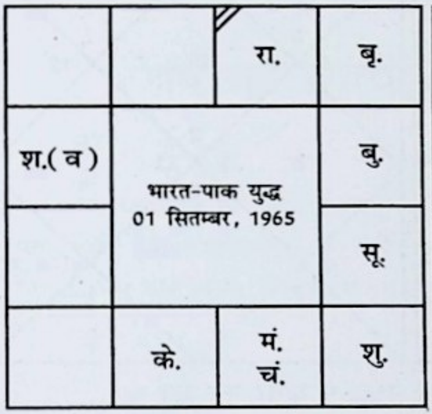

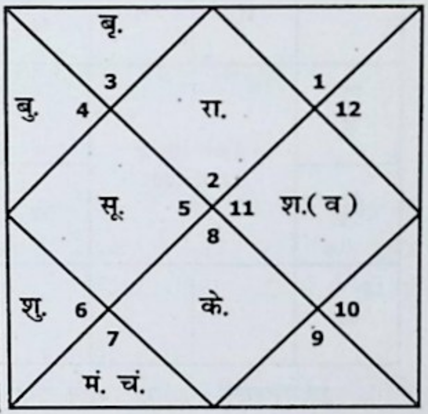

अगस्त, 1974 से अप्रैल, 1975 तक रोहिणी नक्षत्र पर राहु-केतु अक्ष था। पूरे देश में आर्थिक मंदी। जून, 1975 में जयप्रकाश नारायण के द्वारा सरकार के विरुद्ध बहुत बड़ा आन्दोलन चला जिसने सरकार बदलने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

5 जून, 1984 ***'आपरेशन ब्लू स्टार'*** हुआ और 31 अक्टूबर, 1984 को इन्दिरा गान्धी की हत्या हुई जिसके कारण सारे देश में दंगे फैल गये और अराजकता की स्थिति उत्पन्न हुई।

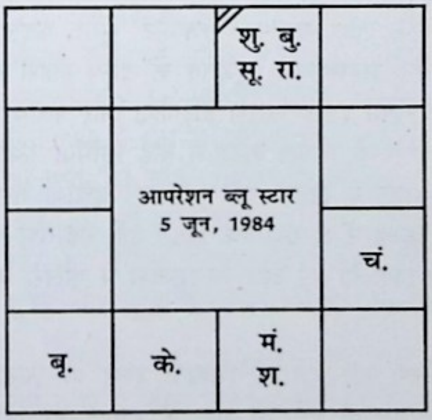

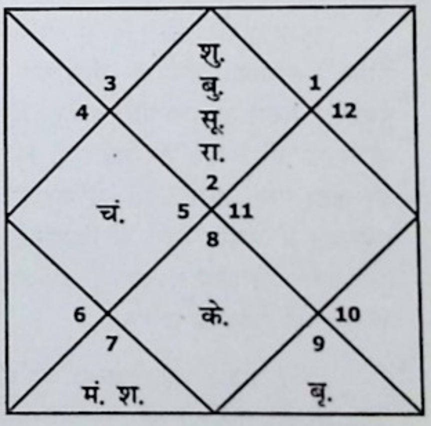

गोधरा काण्डः

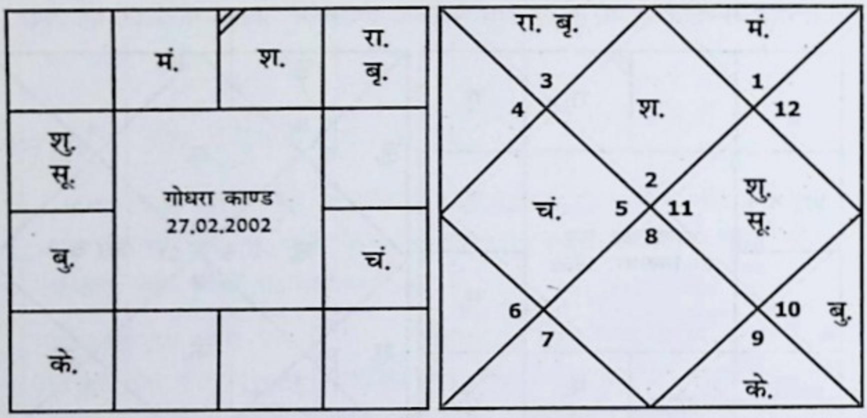

27 फरवरी, 2002: शनि रोहिणी नक्षत्र में गोचर कर रहा था।

अहमदाबाद जाने वाली साबरमती एक्सप्रैस रेलगाडी के चार डब्बों को गुजरात के गोधरा रेलवे स्टेशन में मुसलमानों के समूह ने आग के हवाले कर दिया, जिसमें लगभग 57 व्यक्तियों की जान गई जिनमें अधिकतर कार-सेवक थे। सभी कार-सेवक अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण हेतु किये जा रहे पूर्ण आहुति यज्ञ में शामिल होकर आ रहे थे। हमलावर लगभग 2000 की संख्या में थे। इसके बाद पूरे गुजरात में साम्प्रदायिक दंगे फैल गये।

28.02.2002 को 150 से भी अधिक लोग मारे गये। राजकोट, सूरत, बड़ोदरा सहित अहमदाबाद तक दंगे फैल गये और अहमदाबाद, गुजरात के अन्य शहरों के मुकाबले सबसे अधिक पीड़ित शहर बन गया। इसके कारण हरियाणा और पंजाब में भी तनाव की स्थिति बन गई तथा हरियाणा के कैथल शहर में कई धार्मिक स्थलों को तोडा गया। उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर में वाहनों को नुकसान पहुंचाया गया। राजस्थान में अजमेर जिले के किशनगढ़ कस्बे में साम्प्रदायिक झडपें हुई, महाराष्ट्र के मुराद एवं थाने क्षेत्रों में दुकानों को आग लगा दी गई और आन्ध्रप्रदेश में पुलिस की गाड़ियों को जला दिया गया।

17.03.2002 को गोहत्या के कारण हरियाणा के भिवानी शहर के लोहारु कस्बे में तीन मस्जिदों और उसके आस-पास के घरों को आग के हवाले कर दिया गया।

अध्याय 9

वर्ष का स्वामी और मंत्रिपरिषद

प्रत्येक वर्ष की वार्षिक घटनाओं के पूर्वकथन के लिए उस वर्ष विशेष का स्वामी और उसके मंत्रिपरिषद का चयन आवश्यक होता है। इनका चयन किस प्रकार होता है और इस विषय में क्या-क्या मतान्तर हैं, इस अध्याय में उनकी चर्चा की गई है।

वर्ष का स्वामी:

वर्ष पति के चयन के विषय में कई मतान्तर है और इसके लिए अलग-अलग हिन्दु पंचाग अलग-अलग तरीके अपनाते हैं। इनमें से सबसे अधिक स्वीकार्य सिद्धान्त यह है कि जिस दिन हिन्दु नववर्ष प्रारम्भ होता है उस दिन के वार का स्वामी, उस वर्ष का स्वामी भी होना चाहिए। यह पहले ही बता दिया गया है कि हिन्दु नववर्ष चैत्रमास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है।

उदाहरणत: 2003 में, हिन्दु नववर्ष 1 अप्रैल की रात 12 बजकर 24 मिनट से प्रारम्भ हुआ जो अंग्रेजी गणना के अनुसार 2 अप्रैल आता है। यहां यह याद रखना आवश्यक है कि भारतीय पद्धति के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक एक दिन होता है जबकि अंग्रेजी के अनुसार मध्यरात्रि 12 बजे के बाद दूसरा दिन प्रारम्भ हो जाता है। चूंकि प्रतिपदा ने सूर्योदय 2 अप्रैल को देखा और इस दिन बुधवार था अत: इस वर्ष का स्वामी बुध था। इसी प्रकार सन् 2008 में सोमवार 7 मार्च को चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा थी इसलिए सन् 2008 में हिन्दु नववर्ष 7 मार्च से प्रारम्भ हुआ और चूंकि इस दिन सोमवार था अत: इस वर्ष का स्वामी चन्द्रमा है।

यद्यपि एक प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थ 'कालपरीक्षा' के अनुसार जिस वार को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है उस वार का स्वामी ही उस वर्ष का स्वामी होना चाहिए। उदाहरणत: सन् 2003 में सूर्य ने सोमवार 14 अप्रैल को 11 बजकर 47 मिनट पर मेष राशि में प्रवेश किया इसलिए सोमवार का स्वामी अर्थात चन्द्रमा, उस वर्ष का

वर्षेश होना चाहिए था। लेकिन इस प्रकार से वर्ष के स्वामी की चयन प्रक्रिया को ज्योतिषशास्त्र के अन्य चिन्तक उचित नहीं मानते हैं इसलिए यह अधिक प्रचलित नहीं है।

मंत्री या प्रधानमंत्री:

किसी भी वर्ष विशेष का प्रधानमंत्री उस वार का स्वामी होता है जिस वार को उस वर्ष विशेष में सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है। उदाहरण के लिए सन् 2003 में सूर्य ने सोमवार 14 अप्रैल को 11 बजकर 47 मिनट पर मेष राशि में प्रवेश किया इसलिए सोमवार का स्वामी अर्थात चन्द्रमा, उस वर्ष का प्रधानमंत्री था।

सन् 2008 में सूर्य ने रविवार 13 अप्रैल को 18 बजकर 29 मिनट पर सूर्य ने मेष राशि में प्रवेश किया इसलिए सन् 2008 में रविवार का स्वामी सूर्य, वर्ष का प्रधानमंत्री है।

मेघेश (मेघ का स्वामी):

किसी भी वर्ष विशेष का मेघेश उस वार का स्वामी होता है जिस वार को उस वर्ष विशेष में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है। उदाहरण के लिए सन् 2003 में सूर्य ने रविवार 22 जून, 2003 को 14 बजकर 58 मिनट में आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश किया था। अतः सन् 2003 में मेघेश सूर्य था।

सन् 2008 में सूर्य ने मंगलवार 24 जून को 21 बजकर 43 मिनट पर आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश किया इसलिए इस वर्ष का मेघेश मंगल है।

सस्येश (वर्षा ऋतु की फसलों का स्वामी):

किसी भी वर्ष विशेष का सस्येश उस वार का स्वामी होता है जिस वार को उस वर्ष विशेष में सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है। उदाहरण के लिए सन् 2003 में सूर्य ने बुधवार 16 जुलाई, 2003 को मध्यरात्रि के पश्चात 2 बजकर 13 मिनट में कर्क राशि में प्रवेश किया। अंग्रेजी गणना के अनुसार यह संक्रान्ति वीरवार 17 जुलाई को हुई लेकिन भारतीय पद्धति में एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक एक दिन माना जाता है अतः यह बुधवार ही कहलायेगा। अतः सन् 2003 में सस्येश बुध था।

सन् 2008 में कर्क संक्रान्ति बुधवार 16 जुलाई को 8 बजकर 57 मिनट पर हुई, इसलिए इस वर्ष का सस्येश भी बुध है।

धान्येश (शरद् ऋतु की फसलों का स्वामी):

किसी भी वर्ष विशेष का धान्येश उस वार का स्वामी होता है जिस वार को उस वर्ष विशेष में सूर्य, धनु राशि में प्रवेश करता है। उदाहरण के लिए सन् 2003 में सूर्य ने 16 दिसम्बर, 2003 को 12 बजकर 59 मिनट में धनु राशि में प्रवेश किया और इस दिन मंगलवार था। अत: सन् 2003 में धान्येश मंगल था।

सन् 2008 में धनु संक्रान्ति सोमवार 15 दिसम्बर को 19 बजकर 45 मिनट पर होगी इसलिए इस वर्ष का धान्येश चन्द्रमा है।

फलेश (फलों का स्वामी):

किसी भी वर्ष विशेष का फलेश उस वार का स्वामी होता है जिस वार को उस वर्ष विशेष में सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करता है। उदाहरण के लिए सन् 2003 में सूर्य ने रविवार 15 जून, 2003 को 15 बजकर 19 मिनट में मिथुन राशि में प्रवेश किया था। अत: सन् 2003 में फलेश सूर्य था।

सन् 2008 में मिथुन संक्रान्ति शनिवार 14 जून, 2008 को 22 बजकर 02 मिनट पर हुई इसलिए, इस वर्ष का फलेश शनि है।

रस्येश (रस पदार्थ का स्वामी):

किसी भी वर्ष विशेष का सस्येश उस वार का स्वामी होता है जिस वार को उस वर्ष विशेष में सूर्य तुला राशि में प्रवेश करता है। उदाहरण के लिए सन् 2003 में सूर्य ने शुक्रवार 17 अक्टूबर, 2003 को 22 बजकर 32 मिनट में तुला राशि में प्रवेश किया था। अत: सन् 2003 में रस्येश शुक्र था।

सन् 2008 में तुला संक्रान्ति वीरवार 16 अक्टूबर, 2008 को 29 बजकर 20 मिनट पर हुई इसलिए, इस वर्ष का रस्येश बृहस्पति है।

धनेश (धन एवं कोष का स्वामी):

किसी भी वर्ष विशेष का धनेश उस वार का स्वामी होता है जिस वार को उस वर्ष विशेष में सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। उदाहरण के लिए सन् 2003 में सूर्य ने 14 जनवरी, 2004 को 23 बजकर 43 मिनट में मकर राशि में प्रवेश किया और इस दिन बुधवार था। अत: सन् 2003 में धनेश बुध था।

सन् 2008 में मकर संक्रान्ति 13 जनवरी, 2009 को होगी और उस दिन मंगलवार होगा इसलिए इस वर्ष का धनेश मंगल है।

अध्याय 10

वर्ष कुण्डली के आधार पर फलकथन -भारत 2002

भारत अथवा किसी भी देश से सम्बन्धित किसी भी विषय के लिए वार्षिक फलकथन कहने के लिए जिन-जिन कुण्डलियों की आवश्यकता होती है और उनसे कैसे फलकथन किया जाता है, आइये उसको हम भारत के लिए सन् 2002 का उदाहरण लेकर समझते हैं।

1. **स्वतन्त्र भारत की कुण्डली:** 15 अगस्त, 1947 के मध्यरात्रि की कुण्डली के साथ नवांश कुण्डली और दशाचक्र को लिया जाएगा।

2. **सर्वाष्टकवर्ग कुण्डली।**

3. **हिन्दु नववर्ष की कुण्डली:** 2001 और 2002 के चैत्र मास की शुक्लप्रतिपदा की कुण्डलियां। जनवरी 2002 सें अप्रैल 2002 तक के फलकथन के लिए हमें सन् 2001 के चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा की कुण्डली की आवश्यकता भी पड़ेगी जबकि अप्रैल, 2002 के बाद होने वाली घटनाओं के फलकथन 2002 के चैत्र मास की शुक्लप्रतिपदा की कुण्डली से होगी। सन् 2001 की कुण्डली 25 मार्च, 2001 के 06:51 प्रात: की होगी और 2002 की कुण्डली 13 अप्रैल, 2002, 00:51 प्रात: की होगी।

4. **सूर्य संक्रान्ति की कुण्डली:** सभी बारह राशियों में जब सूर्य संक्रान्ति हुई उस समय की कुल 12 कुण्डलियां बनानी पड़ेगी।

5. **चन्द्रोदय और पूर्णमासी की कुण्डलियां:** वर्षभर प्रतिदिन और प्रत्येक 15 दिनों के पक्ष के फलकथन हेतु इन कुण्डलियों की आवश्यकता होती है।

6. **वर्षकुण्डली:** जिस प्रकार किसी भी जातक के जन्मदिन के अनुसार उसकी वर्षकुण्डली बनाकर वर्षभर के लिए फलकथन किया जाता है उसी प्रकार

भारत की वर्ष कुण्डली भी बनेगी। 2002 के फलकथन के लिए जन्मकुण्डली के आधार पर 2001 और 2002 की कुण्डलियां भी बनेगी।

7. **राशि संघटा चक्र और कूर्म चक्र।**

8. **शुक्र की मिथुन राशि में प्रवेश की कुण्डली:** इसके प्रभाव को एक अलग अध्याय, "शुक्र का मिथुन राशि में प्रवेश और इसका केन्द्र सरकार पर प्रभाव", में बताया गया है।

   सन् 2002 में शुक्र ने 15 मई को मिथुन राशि में प्रवेश करके 15 जून तक गोचर किया था। यह देखें कि क्या इस समयावधि में यह किसी भी प्रकार से पीड़ित हुआ। सन् 2002 में प्रमुख घटनायें इस प्रकार से हुई थी।

   1. पहली मई को शुक्र मिथुन में प्रवेश करने वाला ही था– गुजरात में हुए दंगों पर लोकसभा में विपक्षी दल के द्वारा सरकार की भर्त्सना की गई थी।
   2. 10 मई को पटना जाने वाली श्रमजीवी एक्सप्रेस को जौनपुर के निकट रोककर कई सवारियों को मारा और घायल किया गया।
   3. जम्मू में आंतकवादियों ने हमला किया और 23 सेना के जवानों और उनके परिवारजनों को जान से मार दिया गया तथा अहमदाबाद में हिंसा हुई।
   4. 17 मई को भारत–पाक सीमा पर दोनों देशों की सेनाओं के मध्य गोलीबारी हुई। भारतीय सेना ने 10 पाकिस्तानी सैनिक मार गिराये और उनके कई बंकरों को नष्ट किया।
   5. प्रधानमंत्री वाजपेयी ने सेना के जवानों को निर्णायक युद्ध के लिए तैयार होने का आवाहन किया।
   6. यू.टी.आई. के इतिहास में पहली बार यू.टी.आई. के द्वारा अपने ग्राहकों को डिवीडन्ड नहीं दिया गया।

9. **ग्रहों के वक्री, मार्गी और राशि परिवर्तन के समय की कुण्डलियां:**

   सन् 2002 में 5 जुलाई को बृहस्पति ने कर्क राशि में प्रवेश किया और 23 जुलाई को शनि ने मिथुन राशि में प्रवेश किया। राहु ने 28 फरवरी, 2003 को वृषभ राशि में प्रवेश किया और शनि ने वक्री होकर पुनः वृषभ राशि में 8

जनवरी, 2003 को प्रवेश किया तथा वृषभ राशि में राहु-शनि की युति 8 अप्रैल, 2003 तक रही। इस युति के प्रभाव को अलग अध्याय, "राहु-शनि का वृषभ राशि में प्रवेश और इसके प्रभाव" में वर्णित किया गया है। यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है और श्री के.एन. राव, जिनका मेदिनी के पूर्व फलकथन में महत्वपूर्ण योगदान है, के मौलिक शोध युक्त है।

10. सूर्य और चन्द्र ग्रहण और उनका प्रभाव:

1. यदि किसी वर्ष सूर्य और चन्द्र ग्रहण एक पक्ष के अन्दर ही होते हैं तो युद्ध की संभावनायें प्रबल हो जाती हैं बशर्ते कि अन्य योग भी इसमें सहायक हों।

2. सन् 2002 में 10-11 जून को सूर्य ग्रहण था जो आंशिक रुप से भारत के पूर्वोत्तर के क्षेत्रों में दृष्ट था और 4 दिसम्बर, 2002 को 10:21 से 15:42 तक भी सूर्य ग्रहण था जो भारत में दृष्ट नहीं था लेकिन अफ्रीका के उत्तरोतर भाग को छोड़कर अन्य भागों में, आस्ट्रेलिया, इन्डोनेशिया, हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर के कुछ भागों में दिखाई दिया था। ग्रहण के समय का 0 अंश के भोगांश की कुण्डली इस प्रकार से है:

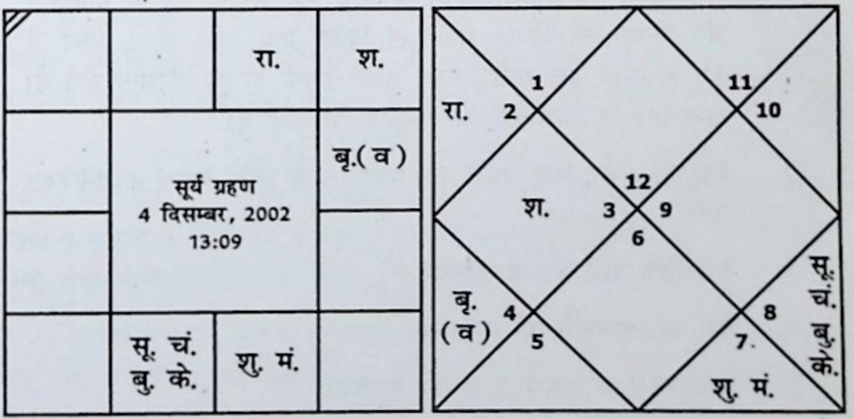

निष्कर्ष: तृतीय और नवम भाव पीड़ित थे। फिलस्तीन, इजराइल, भारत और पाकिस्तान (इन सभी देशों में पड़ोसी देशों के साथ युद्ध जैसी स्थितियां उत्पन्न हुयीं।

26 मई को 15:43 पर, 24 जून और 20 नवम्बर को चन्द्र ग्रहण हुआ जो भारत में भी देखा गया।

11. ग्रहों का गोचर और इनकी युति आदि का प्रभावः

सन् 2002 में 28 फरवरी को राहु ने वृषभ राशि में प्रवेश किया और शनि ने 23 जुलाई, 2002 तक और पुनः वक्री होकर 8 जनवरी, 2003 से 8 अप्रैल तक वृषभ राशि में गोचर किया। इसका पूरे विश्व में बहुत ही अशुभ प्रभाव पड़ा और भारत में इसके परिणाम स्वरुप धार्मिक दंगे, युद्ध जैसी स्थितियां, सूखा और अशान्ति की स्थितियां उत्पन्न हुई।

15 मई, 2002 को बृहस्पति और केतु को छोड़कर सभी ग्रह वृषभ राशि में गोचर कर रहे थे जो एक अशुभ युति थी। उस समय सीमाओं पर सेनाओं को बड़ा जमावड़ा था और अत्याधिक गोलाबारी हो रही थी। सेनाओं ने अर्ध-सैनिक बलों से अधिकार अपने हाथों में ले लिया था। सभी व्यापारिक समुद्री जहाजों को सावधान रहने की सूचना दे दी गई थी और प्रधानमंत्री वाजपेयी ने सेना के जवानों से निर्णायक युद्ध के लिए तैयार रहने को कह दिया था।

1. **मंगल का एक राशि में 6 मास से अधिक का गोचरः** सामान्यतः मंगल एक राशि में लगभग 45 दिनों तक गोचर करता है लेकिन कभी-कभी यह अवधि बढ़ भी जाती है। श्री के.एन. राव के मतानुसार यदि किसी वर्ष विशेष में मंगल किसी एक राशि में 6 मास से अधिक समय तक गोचर करता है तो इसके अशुभ परिणाम होते हैं। सामान्यतः यह तीन वर्षों के अन्तराल पर होता है।
2. ग्रहों के वार्षिक मंत्रीमण्डल का निर्णय करके इसके प्रभाव को निश्चित करें।
3. राजनैतिक दलों की कुण्डलियां।
4. देश के प्रधानमंत्री की कुण्डली।
5. मंत्रीमण्डल के शपथ ग्रहण की कुण्डली।

12. स्वतन्त्र भारत की कुण्डली का दशा चक्रः

स्वतन्त्रता के समय योगकारक शनि की 18 वर्ष 27 दिनों की दशा शेष थी।

शनि - 15.08.1947 से 03.09.1965 तक

बुध - 03.09.1965 से 03.09.1982 तक

केतु - 03.09.1982 से 03.09.1989 तक

शुक्र - 03.09.1989 से 03.09.2009 तक।

04.11.1999 से 05.07.2002 तक शुक्र में बृहस्पति की अन्तर्दशा थी और इसके बाद शनि की अन्तर्दशा आई जो 03.09.2005 तक चली।

शुक्र की महादशा का परिणामः

स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में शुक्र लग्नेश होकर तृतीय भाव में योगकारक शनि, धनेश एवं पंचमेश बुध, तृतीयेश चन्द्रमा और चतुर्थेश सूर्य के साथ स्थित है। द्वितीयेश और पंचमेश बुध के साथ युति करने के कारण शुक्र की दशा में भारत ने दूरसंचार और सूचना के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं और अत्याधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करके उसका भण्डारन किया है। दूर संचार के क्षेत्र में भारत विश्व का सबसे अधिक आधुनिक देश बन गया है।

शुक्र कला का नैसर्गिक कारक है, अतः शुक्र की दशा में भारत को मंनोरंजन सिनेमा के क्षेत्र में भी उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं और भारत में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल चलचित्र बनाये गये हैं। आज भारत का सिनेमा जगत, अमेरिका के सिनेमा जगत के समकक्ष खडा है। इस दशा में भारत की कन्याओं ने अपनी सुन्दरता की पहचान भी बनाई है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कई प्रतिस्पर्धायें जीती हैं तथा साथ ही साथ भारत आभूषण और परिधान में भी अपनी पहचान बनाने में सफल रहा है।

चूंकि दशानाथ शुक्र की शनि के साथ युति है तो भारत में पारंम्परिक मूल्य समाप्त होने लगे और भारत में खुलापन और लैंगिक स्वतन्त्रता का प्रारम्भ हुआ। भारतीय महिलाओं ने अपने पारंम्पारिक बन्धनों और अवरोधों को तोड़ दिया है और सभी क्षेत्रों में बराबर ही भागेदार हो गई हैं।

लग्नेश होने के कारण शुक्र की दशा में भारत सबसे अधिक प्रगतिशील देश बन गया है लेकिन यह शुक्र अस्त भी है। साथ ही साथ शनि के साथ इसकी निकटता ने एडस जैसी खतरनाक बिमारी, नशाखोरी आदि के दोष भी उत्पन्न किये हैं।

शुक्र कुण्डली का लग्नेश होने के साथ-साथ षष्टेश होकर युद्ध और रोग कारक भी है। कुण्डली के तृतीय भाव में शुक्र के साथ अधिक ग्रह स्थित होकर

11. ग्रहों का गोचर और इनकी युति आदि का प्रभावः

सन् 2002 में 28 फरवरी को राहु ने वृषभ राशि में प्रवेश किया और शनि ने 23 जुलाई, 2002 तक और पुनः वक्री होकर 8 जनवरी, 2003 से 8 अप्रैल तक वृषभ राशि में गोचर किया। इसका पूरे विश्व में बहुत ही अशुभ प्रभाव पड़ा और भारत में इसके परिणाम स्वरुप धार्मिक दंगे, युद्ध जैसी स्थितियां, सूखा और अशान्ति की स्थितियां उत्पन्न हुई।

15 मई, 2002 को बृहस्पति और केतु को छोड़कर सभी ग्रह वृषभ राशि में गोचर कर रहे थे जो एक अशुभ युति थी। उस समय सीमाओं पर सेनाओं को बड़ा जमावड़ा था और अत्याधिक गोलाबारी हो रही थी। सेनाओं ने अर्ध-सैनिक बलों से अधिकार अपने हाथों में ले लिया था। सभी व्यापारिक समुद्री जहाजों को सावधान रहने की सूचना दे दी गई थी और प्रधानमंत्री वाजपेयी ने सेना के जवानों से निर्णायक युद्ध के लिए तैयार रहने को कह दिया था।

1. **मंगल का एक राशि में 6 मास से अधिक का गोचरः** सामान्यतः मंगल एक राशि में लगभग 45 दिनों तक गोचर करता है लेकिन कभी-कभी यह अवधि बढ़ भी जाती है। श्री के.एन. राव के मतानुसार यदि किसी वर्ष विशेष में मंगल किसी एक राशि में 6 मास से अधिक समय तक गोचर करता है तो इसके अशुभ परिणाम होते हैं। सामान्यतः यह तीन वर्षों के अन्तराल पर होता है।
2. ग्रहों के वार्षिक मंत्रीमण्डल का निर्णय करके इसके प्रभाव को निश्चित करें।
3. राजनैतिक दलों की कुण्डलियां।
4. देश के प्रधानमंत्री की कुण्डली।
5. मंत्रीमण्डल के शपथ ग्रहण की कुण्डली।

12. स्वतन्त्र भारत की कुण्डली का दशा चक्रः

स्वतन्त्रता के समय योगकारक शनि की 18 वर्ष 27 दिनों की दशा शेष थी।

शनि - 15.08.1947 से 03.09.1965 तक

बुध - 03.09.1965 से 03.09.1982 तक

केतु - 03.09.1982 से 03.09.1989 तक

शुक्र - 03.09.1989 से 03.09.2009 तक।

04.11.1999 से 05.07.2002 तक शुक्र में बृहस्पति की अन्तर्दशा थी और इसके बाद शनि की अन्तर्दशा आई जो 03.09.2005 तक चली।

शुक्र की महादशा का परिणामः

स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में शुक्र लग्नेश होकर तृतीय भाव में योगकारक शनि, धनेश एवं पंचमेश बुध, तृतीयेश चन्द्रमा और चतुर्थेश सूर्य के साथ स्थित है। द्वितीयेश और पंचमेश बुध के साथ युति करने के कारण शुक्र की दशा में भारत ने दूरसंचार और सूचना के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं और अत्याधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करके उसका भण्डारन किया है। दूर संचार के क्षेत्र में भारत विश्व का सबसे अधिक आधुनिक देश बन गया है।

शुक्र कला का नैसर्गिक कारक है, अतः शुक्र की दशा में भारत को मंनोरंजन सिनेमा के क्षेत्र में भी उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं और भारत में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल चलचित्र बनाये गये हैं। आज भारत का सिनेमा जगत, अमेरिका के सिनेमा जगत के समकक्ष खडा है। इस दशा में भारत की कन्याओं ने अपनी सुन्दरता की पहचान भी बनाई है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कई प्रतिस्पर्धायें जीती हैं तथा साथ ही साथ भारत आभूषण और परिधान में भी अपनी पहचान बनाने में सफल रहा है।

चूंकि दशानाथ शुक्र की शनि के साथ युति है तो भारत में पारंम्परिक मूल्य समाप्त होने लगे और भारत में खुलापन और लैंगिक स्वतन्त्रता का प्रारम्भ हुआ। भारतीय महिलाओं ने अपने पारंम्पारिक बन्धनों और अवरोधों को तोड़ दिया है और सभी क्षेत्रों में बराबर ही भागेदार हो गई हैं।

लग्नेश होने के कारण शुक्र की दशा में भारत सबसे अधिक प्रगतिशील देश बन गया है लेकिन यह शुक्र अस्त भी है। साथ ही साथ शनि के साथ इसकी निकटता ने एडस जैसी खतरनाक बिमारी, नशाखोरी आदि के दोष भी उत्पन्न किये हैं।

शुक्र कुण्डली का लग्नेश होने के साथ-साथ षष्टेश होकर युद्ध और रोग कारक भी है। कुण्डली के तृतीय भाव में शुक्र के साथ अधिक ग्रह स्थित होकर

तृतीय भाव को अत्याधिक प्रभावित कर रहे हैं जिसके परिणाम स्वरुप पड़ोसी के साथ सीमाओं पर युद्ध या युद्ध जैसी स्थितियां उत्पन्न होना इस दशा की एक स्थिर विशेषता बन गई है। इस दशा में भारत में विभिन्न रोगों से मरने वालों की संख्या में भी बढ़ोतरी हो रही है और एडस जैसा जान लेवा रोग यहां अपने पांव खतरे के निशान तक पसार चुका है।

शनि, जन समुदाय और समाज के दबे-कुचले लोगों अर्थात दलितों का प्रतिनिधित्व करता है। शनि की शुक्र के साथ युति इन लोगों का भारत की राजनैतिक संरचना पर प्रभाव पड़ने को दिखाती है। देश की राजनीति में जाति का विचार अधिक प्रबल हो गया है। चूंकि शनि कुण्डली का योगकारक ग्रह है, अतः चुनी हुई सरकार के बनने में दलित, अनुसूचित जाति-जनजाति, आदिवासी आदि पिछड़े वर्गों का विशेष योगदान होगा। उच्च वर्ग और उंची जातियों के लोगों को द्वितीय दर्जा प्राप्त होगा।

अन्तर्दशानाथ बृहस्पति कुण्डली का अष्टमेश और एकादशेश है इसलिए कुण्डली का अशुभ ग्रह है। यह शत्रु राशि में भी स्थित है जो इसे सिद्धान्तहीन और आत्मश्लाघी बना रहा है। शुक्र की राशि का होकर षष्टम भाव की स्थिति, इसे सिद्धान्तहीन होकर लैंगिक सुख और उच्च स्तर की जीवन शैली के प्रति आसक्त बना रही है। यद्यपि साथ ही साथ संगीत और कला के क्षेत्र में भी अत्याधिक रुचि दे रही है। यहां पर भी यह ध्यान देने वाली बात यह है कि संगीत और कला भी पारम्परिक नहीं होंगी अपितु आधुनिक जैसे कि पश्चिमी धुनों पर आधारित गायन, चित्रांकन, नृत्य आदि होगा। यह मंगल को भी दृष्ट कर रहा है और अष्टमेश होकर षष्टम भाव में स्थित होने के कारण विपरीत राजयोग भी बना रहा है। इसके परिणाम स्वरुप यद्यपि विदेश से सम्बन्धित सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी लेकिन धार्मिक सहिष्णुता बनाये रखने के लिए अधिक प्रयास नहीं होंगे।

बृहस्पति उपचय भाव में स्थित होकर दशम भाव, द्वादश भाव और धन के भाव द्वितीय को दृष्ट कर रहा है। चूंकि उपचय भाव बढ़ोतरी का भाव है अतः इसमें स्थित होने के कारण यह बढ़ोतरी के अच्छे परिणाम दे रहा है। धन का नैसर्गिक कारक होकर यह दशम और द्वितीय भाव को दृष्ट कर रहा है जो देश की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति के लिए शुभ है लेकिन एकादशेश होकर षष्टम भाव की स्थिति आर्थिक लाभ के लिए शुभ नहीं है।

सन् 2002 का हिन्दू नववर्षः

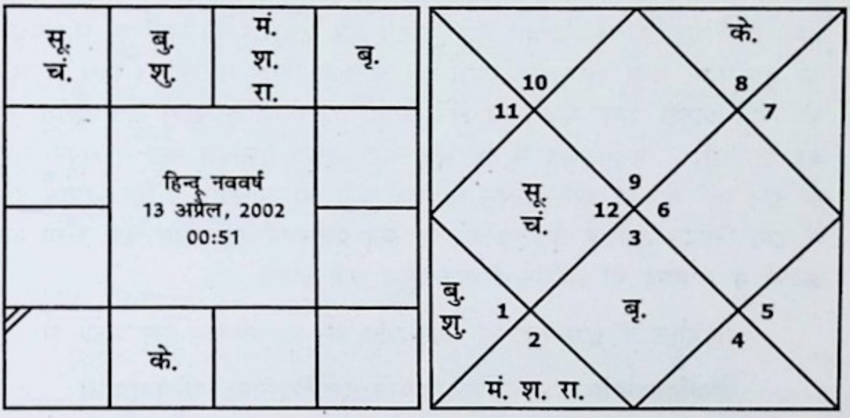

लग्न 19°59' सूर्य 28°49' चन्द्रमा 28°49' मंगल 05°28'
बुध 04°48' बृहस्पति 14°28' शुक्र 20°17' शनि 17°38'
राहु 25°25'

नवांश कुण्डली

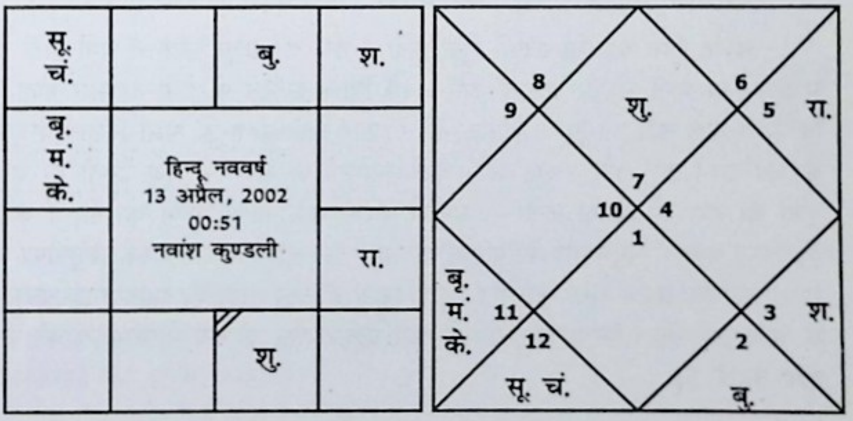

12 अप्रैल, 2002 की मध्य रात्रि में नववर्ष का प्रारम्भ हुआ और इस दिन शुक्रवार था। यद्यपि आधुनिक समय के अनुसार मध्यरात्रि के बाद अगली तिथि और अगला वार प्रारम्भ हो जाता है लेकिन हिन्दू पद्धति के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक एक ही वार होता है। अतः इस वर्ष का स्वामी शुक्र होगा न कि शनि

जैसा कि कुछ पंचागों में दिया गया है। विभिन्न ग्रहों के विभिन्न वस्तुओं के स्वामी होने के परिणाम अलग अध्याय में दिये गये हैं। इस वर्ष, शुक्र राजा था लेकिन वर्ष कुण्डली में शुक्र के पास अशुभ भावों षष्टम और एकादश का स्वामित्व था। यद्यपि यह शुभ कोण भाव, पंचम में दशमेश बुध के साथ स्थित था लेकिन साथ ही साथ यह **'पाप कर्तरी योग'** में भी था और इसकी एक राशि वृषभ में तीन अशुभ ग्रहों की युति थी। पंचम भाव से यह आय भाव अर्थात एकादश भाव में अपनी राशि को दृष्ट कर रहा था और दशमेश के साथ युति का अभिप्राय है कि विपक्षी दलों के द्वारा निन्दित होने के उपरान्त भी देश का प्रधानमंत्री लोकप्रिय बना रहेगा और झटकों के उपरान्त भी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी।

वराहमिहिर के द्वारा शुक्र के वर्षाधिपति होने के परिणाम इस प्रकार से हैं,

शालीक्षुमत्यपि धरा धरणीधराभधाराधरोज्झितपयः परिपूर्णवप्रा।
श्रीमत्सरोरुह तताम्बुतडागकीर्णा योषेव भात्यभिनवाभरणोज्ज्वलाङ्गी॥

क्षत्रं क्षितौ क्षपितभूरिबलारिपक्षमुद्‌घृष्टनैकजयशब्दविराविताशम्।
संहृष्टशिष्टजनदुष्टविनष्टवर्गां गां पालयन्त्यवनिपा नगराकराढ़याम्॥

पेपियते मधु मधौ सह कामिनीभिर्जेगीयते श्रवणहारि सवेणुवीणम्।
बोभुज्यतेऽतिथिसुहृत्स्वजनैः सहान्नमब्दे सितस्य मदनस्य जयावघोषः॥

अर्थात जिस वर्ष का स्वामी शुक्र होता है उस वर्ष प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है, सभी तालाब पानी से भर जाते हैं और उनमें खिले कमलों से ऐसा आभास होता है कि मानो कोई नारी आभूषणों से सजी हो। फसलें लहलहाती हैं, चारों दिशायें शत्रुओं के क्षय करने वाले और पोषण करने वाले जयघोष के शब्दों से गूंज उठती हैं। राजा दुष्टों का नाश और शिष्ट जनों को सन्तोष करके ऋद्धिशाली पृथ्वी का पालन करते हैं, वसन्त ऋतु में मनुष्यगण कामिनियों के साथ बार-बार मधुपान करके वेणुवीणा के साथ बार-बार श्रवण सुख का गान किया करते हैं और अतिथि, सुहृद भाई-बन्धुओं के साथ अन्नभोजन किया करते हैं और इस प्रकार शुक्र के वर्ष में कामदेव की जय हुआ करती है।

इसे संक्षेप में कहें तो जिस वर्ष का स्वामी शुक्र होता है उस वर्ष प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है जिसके परिणाम स्वरुप अन्न की अच्छी पैदावर होती है, राजा विजयी होते हैं और शत्रुओं का नाश करते है। देश में चारों ओर सुख-समृद्धि बरसती है और देश की उन्नति होती है। आइये अब वर्ष कुण्डली के भावों की विवेचना करते हैं।

प्रथम भावः

लग्न अपने स्वामी से दृष्ट है जो देश को स्वास्थ्य और बल प्रदान कर रहा था। लग्न पर बृहस्पति की भी दृष्टि थी जो विस्तार और उत्तमता के सिद्धान्त वाला ग्रह है। चूंकि यह सप्तम भाव से दृष्ट कर रहा था अतः इसने समृद्ध देशों (अमेरिका) से अच्छे सम्बन्ध दिये। षष्टम भाव जो युद्ध का भाव भी है, यहां से पीड़ित मंगल भी लग्न को दृष्ट कर रहा था जिसके परिणाम स्वरुप शत्रुओं ने कठिनाइयां उत्पन्न की लेकिन लग्न के बली होने के कारण देश ने उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करी।

द्वितीय भावः

द्वितीय भाव का स्वामी शनि है जो षष्टम भाव में मंगल और राहु के साथ स्थित था। धनेश की यह स्थिति अधिक शुभ नहीं थी। मंगल के साथ युति होने का अभिप्राय है कि हथियारों पर अधिक व्यय होना। चूंकि यह राहु से भी युति कर रहा था अतः युद्ध जैसी स्थितियों के कारण रक्षा सम्बन्धित कार्यों पर अधिक खर्च हुआ। यद्यपि धनेश की यह स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं थी लेकिन पंचमेश और द्वादशेश से युति विदेशों से प्राप्त होने वाले धन को इंगित कर रहा था।

तृतीय भावः

तृतीयेश का षष्टम भाव में होने का अभिप्राय सीमाओं पर विवाद होना है। तृतीयेश मंगल, शनि और राहु की युति में भी है जिसके कारण सीमाओं पर अत्याधिक कलह हुआ और युद्ध जैसी स्थितियां उत्पन्न हुयीं। मंगल के तृतीयेश होने के कारण रेल दुर्घटनायें, अग्निकाण्ड, प्रदर्शन आदि हुए।

मंगल विपरीत राजयोग भी बना रहा था जिसके परिणाम स्वरुप भारत ने दूरसंचार, उपग्रह छोडने, रेडियो और टेलीविजन, स्टील और रक्षा उपकरणों के क्षेत्र में लम्बी छलांग लगाई। राहु, रेडियो और संचार को और मंगल स्टील और रक्षा उपकरणों को इंगित करता है।

चतुर्थ भावः

नवमेश सूर्य और अष्टमेश चन्द्रमा युति करके चतुर्थ भाव में बैठे हैं जिसके परिणाम स्वरुप राम जन्मभूमि विवाद पुनः जाग्रत हुआ। सूर्य की इस स्थिति के कारण सरकार की निन्दा हुई लेकिन चतुर्थेश बृहस्पति पद प्राप्ति के भाव सप्तम में बैठा था

इसलिए निन्दा हुई और सरकार चारों ओर से घिरी रही। नई खादानों और खनिजों का पता चला। चूंकि यहां अष्टमेश भी बैठा था इसलिए धार्मिक विषयों जैसे कि राम जन्मभूमि के मामले में गुप्त रुप से कार्यवाही होने अथवा इसके टूटने की संभावनाओं में बढ़ोतरी हुई।

पंचम भाव:

कुण्डली का पंचम भाव सन्तान, जन्मदर, शिक्षा, देश की सभी प्रकार की खुशियों और मंनोरंजन, थियेटर, सिनेमा, खेल, सट्टा और शेयर बाजार आदि को इंगित करता है। साथ ही साथ यह नैतिकता, अनैतिकता, षडयन्त्र, बदनामी, अनैतिकता से जुड़े अपराधों, उच्चवर्ग एवं उसके क्रिया-कलापों, संसद के उच्च सदन अर्थात राज्यसभा, न्यायाधीशों की सभा, शैक्षिक संस्थानों के क्षेत्रों, विदेशी राजदूतों और राजनायिकों तथा दशम से अष्टम भाव होने के कारण देश के प्रमुख को होने वाले खतरे को इंगित करता है।

कुण्डली में पंचमेश और षष्टेश के मध्य राशि परिवर्तन था और मुख्य बात यह है कि यह परिवर्तन शुक्र और मंगल का था। इसका अभिप्राय यह था कि मनोरंजन के क्षेत्र में बेहूदापन, नंगापन और लैंगिक सम्बन्धों का स्वार्थ के लिए अधिक प्रयोग होगा जो सिनेमा, पत्रिकाओं, साहित्य आदि में देखने को मिला।

इस कुण्डली के पंचम भाव में दो शुभ ग्रह थे। दशमेश और सप्तमेश बुध, पंचम में बैठ कर राजयोग बना रहा था जबकि षष्टेश शुक्र, पंचमेश के साथ राशि परिवर्तन करके पंचम में बैठा था और षष्टम भाव में उच्च का राहु बैठा था। इसके परिणाम स्वरुप मंनोरजंन के क्षेत्र की उन्नति होना सुनिश्चित था, राहु के कारण सूचना तकनीक के क्षेत्र में भी लाभ की आशा थी लेकिन चूंकि पंचमेश षष्टम भाव में पापी ग्रहों की युति में था यह लाभ उम्मीद से कम प्राप्त होना था।

दशम से अष्टम भाव होने के कारण यह भाव सरकार की आयु को भी दर्शाता है और चूंकि यहां दो शुभ ग्रह स्थित थे सरकार का बना रहना भी सुनिश्चित था। लेकिन पंचमेश का षष्टम में जाने के कारण इसके बने रहने और गिरने की स्थितियां लगातार उत्पन्न होती रहीं और मंत्रियों के मध्य सहष्णुता का अभाव बना रहा। पंचमेश का षष्टम में जाने का अभिप्राय बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में गिरावट भी था। चूंकि पंचम भाव शेयर बाजार को भी इंगित करता है अत: यहां दो शुभ ग्रहों का होना शेयर बाजार के लिए भी शुभ था यद्यपि षष्टेश से परिवर्तन के कारण इसका स्वास्थ्य अधिक अच्छा नहीं रहा।

षष्टम भावः

कुण्डली का षष्टम भाव सशस्त्र सेनाओं, राज्यों के आपसी झगड़ों और युद्ध को भी दर्शाता है। साथ ही साथ यह मजदूर वर्ग, कर्मिक यूनियनों की हड़ताल, राज्यों के ऋण और देनदारी, चिकित्सा और अन्य सेवाओं तथा सामान्य रुप से होने वाले रोगों को इंगित करता है।

षष्टम भाव में तीन अशुभ ग्रहों की स्थिति ने युद्ध जैसी स्थितियां उत्पन्न की जिसके परिणाम स्वरुप भारत और पाकिस्तान ने मई-जून में सीमा क्षेत्रों पर सेनाओं की गतिविधियां बढ़ा दी और युद्ध के लिए तैयार हो गये। प्रधानमंत्री वाजपेयी ने जवानों को निर्णायक युद्ध के लिए तैयार रहने की घोषणा तक कर दी। चूंकि षष्टेश का पंचमेश के साथ राशि परिवर्तन था इसलिए अमेरिका के भारी दबाव के कारण अन्तिम क्षणों में युद्ध का फैसला टाल दिया गया। इस युद्ध में परमाणु हथियारों के प्रयोग की संभावनायें भी बढ़ गई थी क्योंकि पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने खुलकर इसकी बात कही थी जिसमें पूरे एशिया महाद्वीप की अनकही दुर्गति शामिल थी।

तीन अशुभ ग्रहों की षष्टम भाव में युति युद्ध होने की स्थिति में विजय को दिखा रही थी। पंचमेश और तृतीयेश की षष्टम भाव की यह युति विपरीत राजयोग बना रही थी जो विदेशियों के सहयोग से सेनाओं के आधुनिकरण में होने वाले खर्चे को इंगित कर रही थी। सशस्त्र सेनाओं से सम्बन्धित षष्टेश, पंचम में शुभ ग्रह बुध के साथ सुस्थित था और यह सेनाओं का विशेषकर वायु एवं नौसेना का अतिआधुनिक हथियारों को प्राप्त करना इंगित कर रही थी।

षष्टेश शुक्र, दशमेश बुध के साथ पंचम में युति कर रहा था। शुक्र स्त्रियों को और बुध युवा वर्ग को इंगित करता है। इसका अभिप्राय यह था कि इस वर्ष सरकार, शिक्षा, खेल और साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं का विशेष योगदान होगा। यह वर्ष महिला वर्ष के रुप में भी मनाया गया था।

सप्तम भावः

लग्नेश होकर बृहस्पति का सप्तम भाव में स्थित होना अत्याधिक शुभ था विशेषकर उस स्थिति में जब सप्तमेश बुध पंचम भाव में बैठा था। चूंकि बृहस्पति पूंजीवाद का प्रतिनिधित्व करता है, विदेशों से और विशेषकर अमेरिका के साथ सम्बन्धों में सुधार हुआ। कई सन्धियों और समझोतों पर हस्ताक्षर हुए तथा देश का मान-सम्मान भी बढ़ा। महिलायें अधिक प्रसन्न हुयीं और उनका सम्मान किया गया।

चूंकि बृहस्पति धर्म और आध्यात्मिकता का भी कारक है अतः लग्न पर इसकी दृष्टि के कारण देश के लोगों में आध्यात्मिक रुझान बढ़ा और लोगों ने कई धर्म क्षेत्रों की यात्रायें भी करीं।

अष्टम भावः

इस कुण्डली के अष्टम भाव में कोई ग्रह नहीं है जो एक शुभ स्थिति है लेकिन अष्टम भाव शनि से दृष्ट है जो कुण्डली का द्वितीयेश और तृतीयेश है। इसके कारण कई रेल और वायु दुर्घटनायें हुयीं जिसके कारण सरकारी धन और लोगों की सम्पति की अत्याधिक हानि हुई।

सामान्य रुप से मंत्रिमण्डल, राष्ट्र प्रमुख अथवा महत्वपूर्ण व्यक्तियों को स्वास्थ्य अच्छा रहा लेकिन किसी-किसी को कुछ शारीरिक कष्ट झेलना पड़ा। अष्टमेश चन्द्रमा कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित है जिसके कारण विपक्षी दल सरकार के चरित्रहनन और उसके विरुद्ध उलट-पुलट का कार्य करते रहे।

नवम भावः

नवमेश सूर्य कुण्डली के चतुर्थ भाव में अष्टमेश चन्द्रमा के साथ बैठा है और पंचमेश मंगल से दृष्ट है जो देश में चलने वाली शिक्षा और शोध कार्यो की उन्नति-प्रगति के लिए शुभ है। चन्द्रमा रसायन शास्त्र, औषधी, चिकित्सा, तरल पदार्थ आदि का प्रतिनिधित्व करता है अतः इन क्षेत्रों में प्रगति हुई।

दशम भावः

कुण्डली के दशम भाव में कोई ग्रह नहीं है और यह भाव नवमेश सूर्य और अष्टमेश चन्द्रमा से दृष्ट है जो कुल मिलाकर देखने पर मंत्रीमण्डल के चलने के लिए शुभ था यद्यपि अष्टमेश चन्द्रमा इसमें कुछ विघ्न-बाधा उत्पन्न कर रहा था। दशमेश बुध सुस्थित होकर पंचम में बैठा है जो पुनः सरकार और मत्रिमण्डल के सुचारु रुप से कार्य करने के लिए शुभ था।

एकादश भावः

एकादशेश शुक्र, संचार और व्यापार के कारक ग्रह बुध के साथ युति करक पंचम भाव में बैठा है और एकादश भाव को अपनी दृष्टि से बली बना रहा है। इसक

परिणाम स्वरुप देश ने व्यापार, संचार और सूचना संचार के क्षेत्र में लाभ अर्जित किया। अन्य देशों के साथ कई समझोतों पर हस्ताक्षर हुए, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सुधार आया और अन्य देशों के मध्य भारत का नाम रोशन हुआ।

द्वादश भावः

कुण्डली के द्वादश भाव में केतु बैठा है जिसे मंगल और शनि दृष्ट करते हैं। इसके परिणाम स्वरुप देश में विदेशी गुप्तचर सक्रिय रहे और देश के विरुद्ध रची जाने वाली कई सांठ-गांठों का भण्डाफोड हुआ। देश ने अत्याधिक खर्चा किया और देश के धन का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग हुआ तथा अपव्यय हुआ। देश में संगठित अपराधों में वृद्धि हुई।

द्वादशेश मंगल बुरी तरह से पीड़ित होकर षष्टम भाव में स्थित है। यद्यपि यहां से दृष्ट करके वह द्वादश भाव के बल में वृद्धि कर रहा था लेकिन साथ ही साथ कई आर्थिक षडयत्रों का सार्वजनिक होना भी सुनिश्चित कर रहा था।

अध्याय 11

राशि संघटा चक्र और नक्षत्र संघटा चक्र

(श्री के.एन राव के लेख "प्रिज्म ऑफ ए प्रिडिक्शन" पर आधारित)

मेदिनी में चक्रों का प्रयोगः

पद्म पुराण में राजा दशरथ की कहानी का संदर्भ मिलता है जिसमें शनि के रोहिणी नक्षत्र में गोचर के विनाशकारी परिणामों से अवगत कराया गया है। भारत दोनों विश्व युद्धों 1914-18 और 1939-45 में शामिल था जब शनि रोहिणी नक्षत्र में गोचर कर रहा था। इसी प्रकार 1971 में भारत-पाकिस्तान का युद्ध हुआ था।

यह भी देखा गया है कि जब-जब अन्य पापी ग्रह जैसे कि राहु, केतु (रोहिणी नक्षत्र में गोचर करते हैं तो युद्ध अथवा युद्ध जैसी स्थितियां बन जाती हैं। सन् 1984 के मई और जून माह में राहु, रोहिणी नक्षत्र में स्थित होकर मंगल से दृष्ट था। इसने पंजाब के इतिहास में रक्त रंजित अध्याय जोड़ दिया। पंजाब के संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि शनि की उपस्थिति के बिना कोई भी युद्ध अथवा युद्ध जैसी स्थितियां बनना संभव नहीं होती हैं। मंगल और राहु जब युति करते हैं तो विनाश की योजना बनाकर ही बाहर आते हैं।

भगवान शिव के द्वारा अनुमोदित एक महत्वपूर्ण चक्र, संघटा चक्र है। एक महात्मा ने इससे श्री के.एन. राव जी का परिचय कराया गया। यह दो प्रकार का है, एक राशि के लिए और दूसरा नक्षत्रों के लिए।

बहुत प्राचीन काल में जब शायद पराशर के दृष्टिकोण का उदय नहीं हुआ था तब ये चक्र प्रकाशमान थे। उदाहरणतः 30 मई 1984 को जो ग्रहण हुआ था उस दिन ऐसा स्पष्ट होता है कि राहु और शनि की एक-दूसरे पर दृष्टि नहीं थी, लेकिन अब उसे संघटा चक्र में देखें।

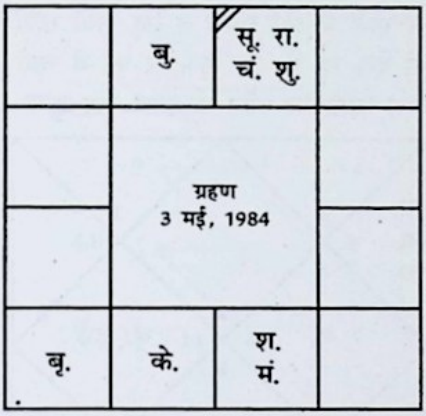

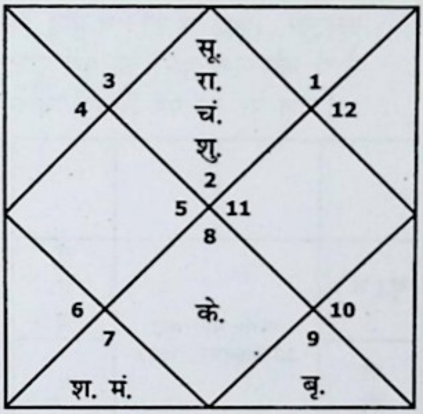

राशि संघटा चक्र

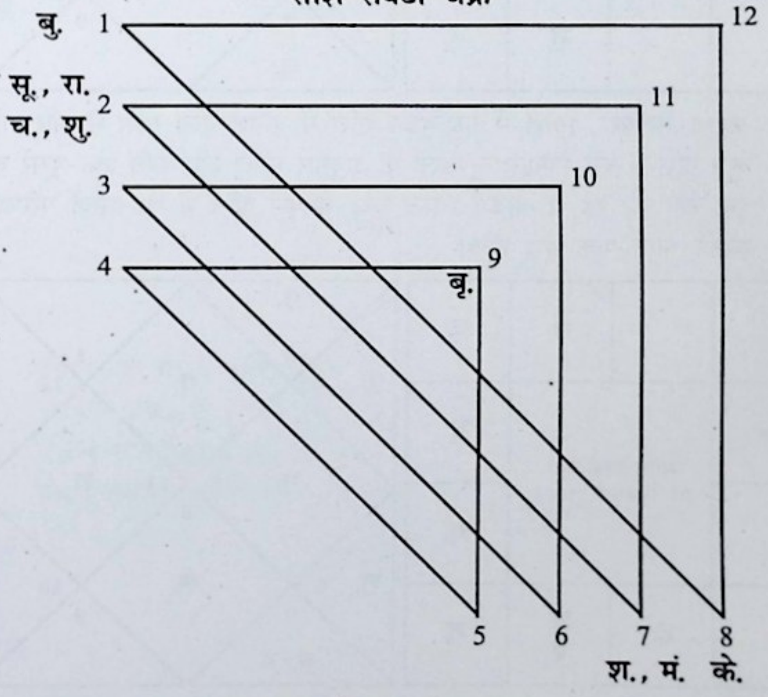

टिप्पणी: युद्ध अथवा युद्ध जैसी स्थितियां उत्पन्न होने के लिए शनि और मंगल का सम्बन्ध होना आवश्यक है। यदि इन दोनों का सम्बन्ध पराशरी दृष्टि के अनुसार भी हो रहा हो तो भी फ़लादेश की शुद्धता के लिए इनका परीक्षण पुनः चक्रों में करना चाहिए। उदाहरण के लिए निम्नलिखित घटना को देखें।

1. अक्टूबर, 1962 में शनि व केतु, मकर राशि में और मंगल व राहु कर्क राशि में थे और एक-दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देख रहे थे। 20 अक्टूबर को ये चारों 11 अंश पर आ गये जिसके फलस्वरुप भारत का चीन के साथ युद्ध हुआ।

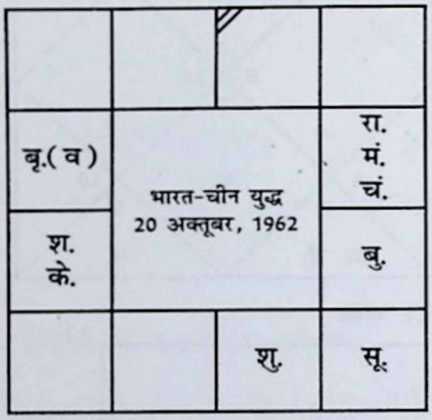

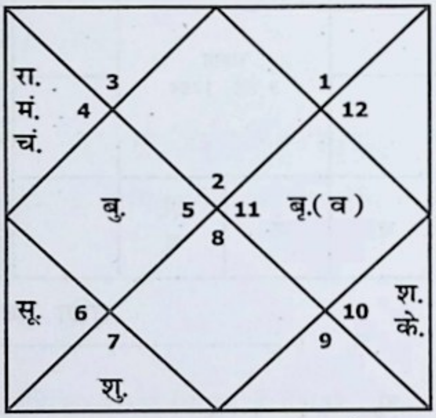

2. अगस्त-सितम्बर, 1965 में राहु वृषभ राशि में, मंगल तुला राशि में और शनि कुंभ राशि में था। सामान्य कुण्डली के अनुसार मंगल और शनि एक-दूसरे को दृष्ट नहीं कर रहे थे लेकिन संघटा चक्र में पूर्ण दृष्टि में थे। इसके परिणाम स्वरुप भारत-पाक युद्ध हुआ।

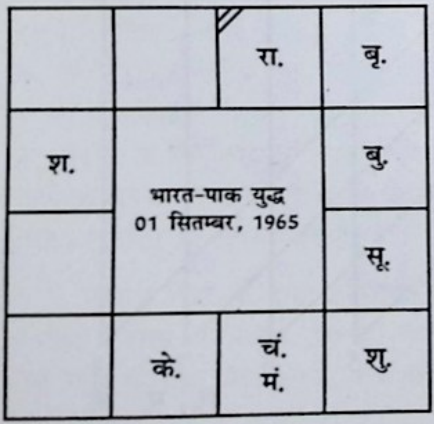

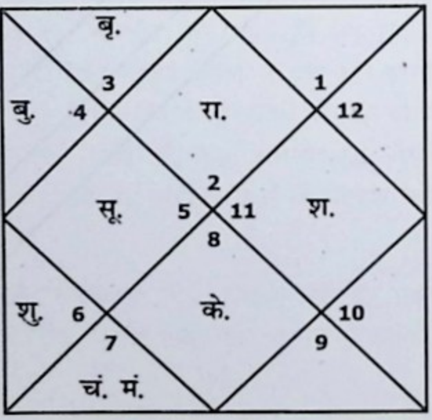

राशि संघटा चक्र

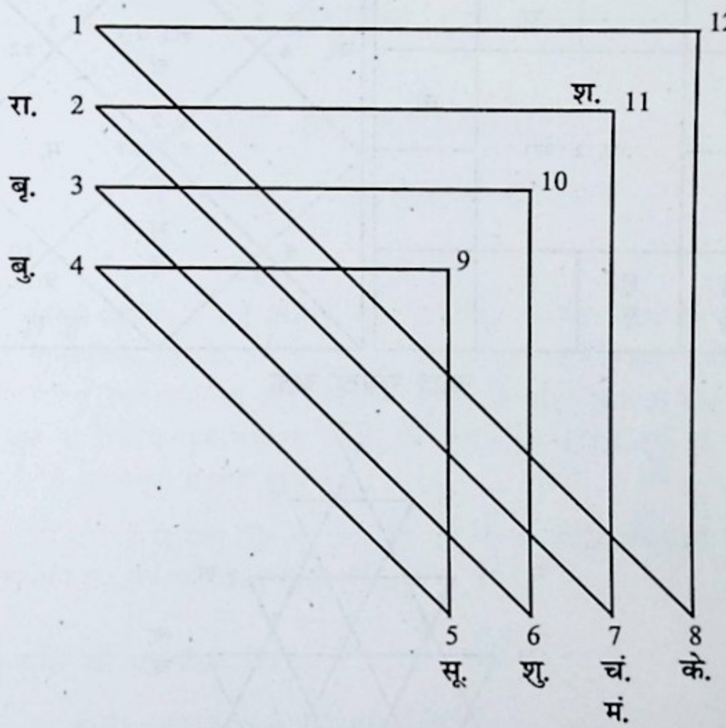

3. **1971 का भारत-पाक युद्धः** सन् 1971 के नवम्बर-दिसम्बर में शनि रोहिणी नक्षत्र में वक्री था और पद्म पुराण में वर्णित सिद्धान्त के अनुसार युद्ध के रुप में तब सत्य सिद्ध हुआ जब कुंभ राशि से मंगल ने इसे दृष्ट किया। यह योग संघटा नक्षत्र चक्र में अधिक स्पष्ट होता है।

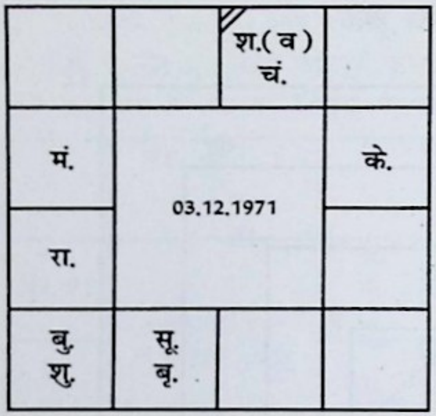

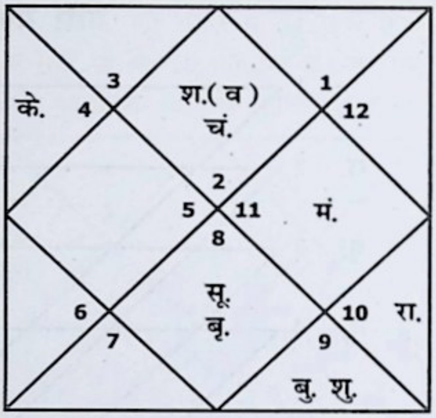

नक्षत्र संघटा चक्र

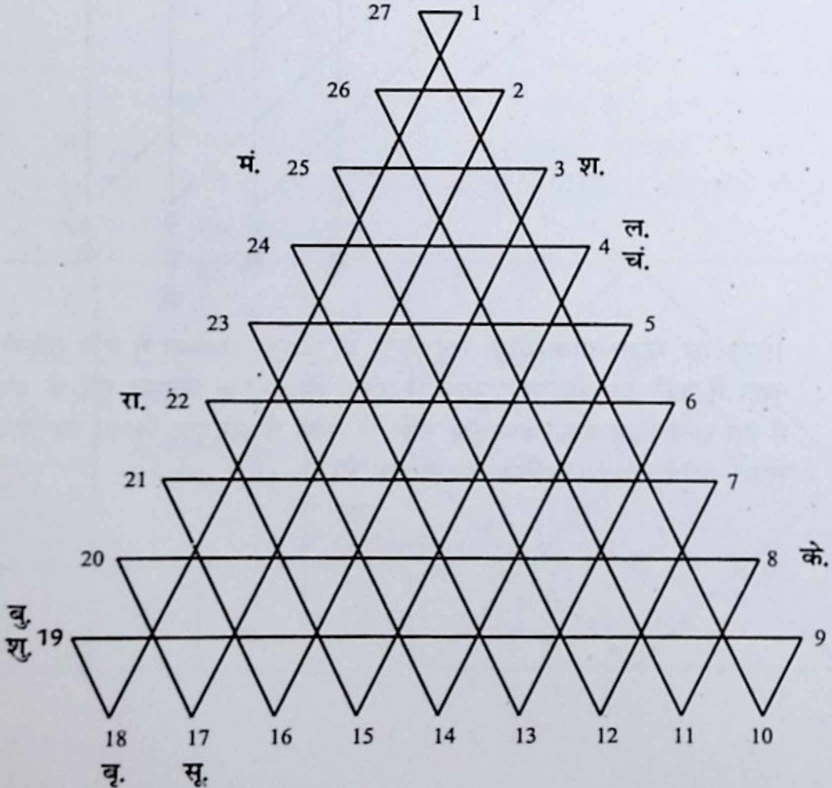

इसमें शनि और मंगल एक-दूसरे को दृष्ट कर रहे हैं जिसका अर्थ युद्ध हो सकता है।

अध्याय 12

ग्रहों की युति-दृष्टि

(श्री के.एन. राव के लेख पर आधारित)

मेदिनी ज्योतिष में बड़े ग्रहों की युति अत्याधिक महत्वपूर्ण होती है। यह युति प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं तथा देश के इतिहास में आने वाले परिवर्तनों और मोड़ों को दर्शाती है। जब कभी भी शनि, बृहस्पति, मंगल और राहु-केतु में से कोई दो बड़े ग्रह युति करते हैं या एक-दूसरे से सम-सप्तम होते हैं अथवा एक-दूसरे से केन्द्र में होते हैं तो महत्वपूर्ण घटनायें होती हैं।

इन ग्रहों में से शनि और बृहस्पति की युति सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है जो लगभग 20 वर्ष के अन्तराल पर होती है।

इस युति के परिणामः

डा. बी.वी. रमण ने अपने अनुभव में यह पाया कि इस युति के समय अथवा इस युति के होने के आस-पास चुने गये अमेरिका के राष्ट्रपतियों का देहान्त उनके कार्यकाल के दौरान ही हो गया था। उदाहरण के लिए राष्ट्रपति गारफील्ड, अब्राहम लिंकन, रुज़वेल्ट और कैनेडी।

आधुनिक इतिहास में 8 अगस्त, 1940 को मेष राशि में शनि और बृहस्पति की युति हुई थी। दोनों ग्रहों के वक्री होने पर पुनः 10 अक्टूबर, 1940 को इनकी युति हुई। इसके परिणाम स्वरुप निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुएः

1. भारत की आजादी के संग्राम में असहयोग आन्दोलन प्रबल हुआ जिसने अन्त में भारत को स्वतन्त्रता की ओर अग्रसर किया।
2. हिटलर के द्वारा रशिया पर आक्रमण हुआ।
3. जापान ने पर्ल हार्बर पर आक्रमण किया।

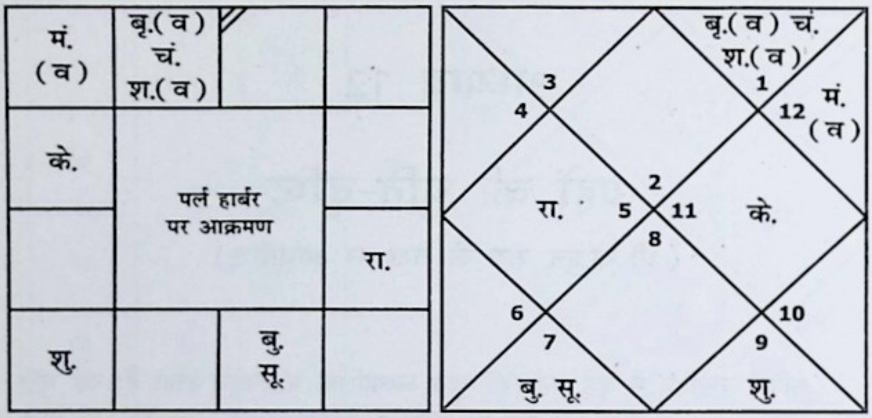

पुनः इनकी युति 1961 में हुई थी जिसके पूरे विश्व में दूरगामी परिणाम प्राप्त हुए थे। भारत को प्राप्त होने वाले परिणाम में चीन ने भारत सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ प्रारम्भ कर दी जिसकी बाद में भारत-चीन युद्ध के रुप में परिणीति हुई और इस युद्ध में अक्टूबर, 1962 को भारत को शर्मनाक पराजय का सामना करना पड़ा।

अमेरिका में **'बे ऑफ पिग्स'** की बहुत विशिष्ट असफलता थी, क्यूबा में मिसाइल संकट के कारण अमेरिका और रशिया एक-दूसरे के आमने-सामने आ गये थे तथा दोनों देश परमाणु युद्ध के कगार पर पहुंच गये थे।

अमेरिका में उन काले अमेरिकियों के लिए समान अधिकार का बहुत बड़ा आन्दोलन जन्म ले चुका था जो दास प्रथा के युग से ही वहां सूअरों की भान्ति जीवन जी रहे थे।

विश्व के अन्य भागों नें उपनिवेश युग का अन्त देखा। नए देश उपनिवेशिता से स्वतन्त्रता प्राप्त कर रहे थे। अमेरिका को वियेतनाम में शर्मनाक पराजय का सामना करना पड़ा। श्री के.एन. राव के अनुसार यह याद रखना आवश्यक है कि इस युति अथवा इनके आमने-सामने होने के तुरन्त पश्चात ही नाटकीय परिवर्तन नहीं होते हैं अपितु जब मंगल इस युति में शामिल होता है अथवा इस युति को दृष्ट करता है तो परिवर्तन की नाटकीय प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, हिंसा होती है और प्रमुख ऐतिहासिक घटना जन्म लेती है।

सितम्बर-नवम्बर, 1989:

धनु राशि में स्थित होकर शनि और मिथुन राशि में स्थित होकर वक्री बृहस्पति सितम्बर-नवम्बर, 1989 में एक-दूसरे के आमने-सामने आये थे। इनकी इस स्थिति

के कारण विश्व भर में होने वाले ऐतिहासिक परिवर्तनों ने अचानक गति पकड दी थी। बर्लिन की दीवाल गिर गई और सोवियत संघ टूट गया। सोवियत संघ के सेक्रेटरी मिखेल गोर्वाचोप के द्वारा प्रारम्भ की गई सुधार प्रक्रिया के परिणाम स्वरुप रशिया में परिसट्रोइका और ग्लासनोस्ट का जन्म हुआ।

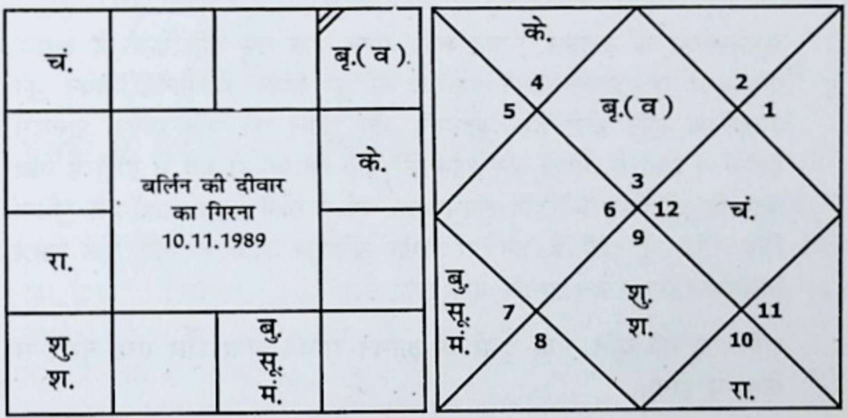

भारत में कांग्रेस शासित सरकार का अन्त हुआ। जनता दल की सरकार में प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह के द्वारा मण्डल कमीशन की रिपोर्ट को लागू किया गया जिसके कारण भारत में दूरगामी परिणाम देने वाली जातिगत राजनीति का एक नया दौर प्रारम्भ हुआ।

1. सन् 1991, सबसे अधिक दुर्भाग्याशाली वर्ष था। इस वर्ष जनवरी, 1991 में अमेरिका के द्वारा इराक पर आक्रमण करने से गल्फ युद्ध प्रारम्भ हो गया। इस समय भी शनि और बृहस्पति एक-दूसरे के आमने-सामने थे तथा सूर्य, शनि, चन्द्रमा और राहु एक अंश के अन्दर थे। 21 जनवरी, 1991 को मकर राशि

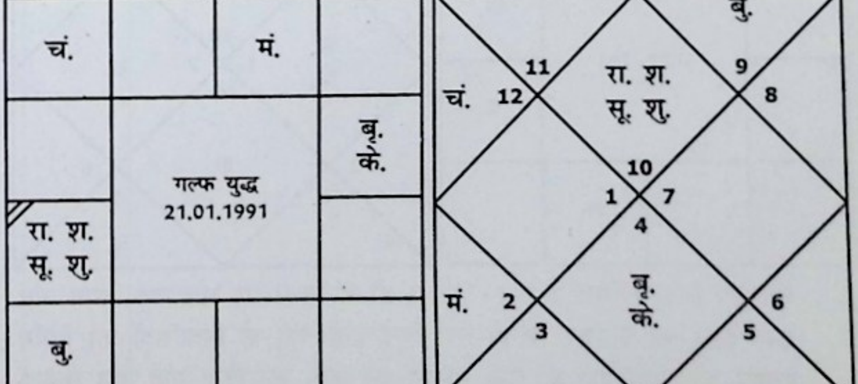

में राहु-शनि की पूर्ण युति हुई थी और इस दिन अमेरिका की वायुसेना ने इराक पर वायु आक्रमण प्रारम्भ कर दिया।

भारत में 21 मई, 1991 को राजीव गान्धी की हत्या कर दी गई। उस दिन शनि से सप्तम भाव में बृहस्पति और मंगल की युति थी।

2. कुमारस्वयम् के अनुसार, "यदि शनि, मंगल और राहु युति करते हैं अथवा एक-दूसरे के आमने-सामने होते हैं तो पूरे विश्व में मानव जीवन की अत्याधिक हानि होती है।" बृहस्पति और मंगल की युति प्रत्येक सत्ताइस महीनों में होती है, मंगल और शनि की युति लगभग दो वर्ष में होती है तथा बृहस्पति और शनि की युति लगभग 20 वर्ष में होती है। इन ग्रहों की युतियां जिस राशि में होती है उन पर गंभीर प्रतिघात होता है और एक लम्बे विचारणीय समय तक प्रभाव बना रहता है।

3. **शनि-राहु की युति, एक-दूसरे के आमने-सामने होना और एक-दूसरे से केन्द्र में होना:**

शनि और राहु की युति एक दुष्ट युति है। यह युति दो विनाशकारी उर्जाओं की युति होती है जो पूरे विश्व में अत्याधिक परेशानियां लाती है। राहु को मुस्लिम और एक विदेशी भी माना जाता है। भारत का इतिहास उन घटनाओं से भरा हुआ है जो इस युति के कारण घटित हुईं और हिन्दुओं के लिए अद्वितीय स्तर के कष्ट और दुर्भाग्य लेकर आयीं।

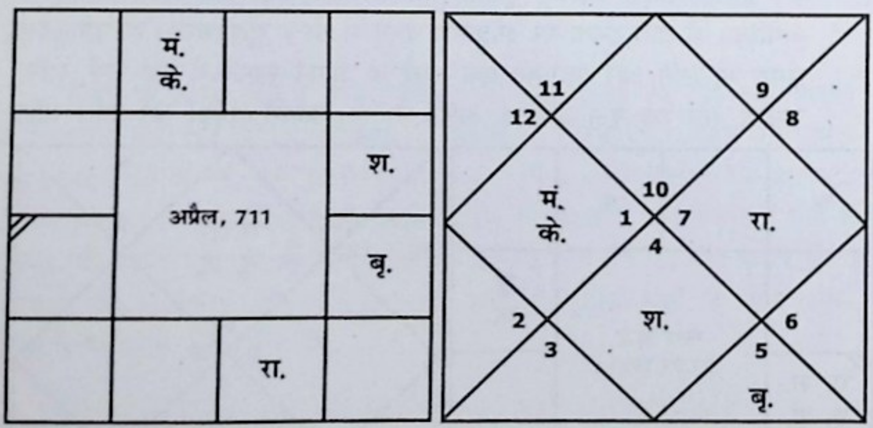

मोहम्मद बिन-कासिम ने 711-712 ए डी में सिन्ध पर आक्रमण किया और राजा दहार को पराजित किया। तीन दिनों तक यहां के निवासियों की निर्मम हत्यायें की गयीं। यहां के सभी मन्दिरों को ध्वंस कर दिया गया तथा सैकडों

सुन्दर स्त्रियों और हजारों पुरुषों को दास बनाया गया। सेना अपने साथ करोड़ों रुपयों का लूट का समान ले गई।

मकर राशि पर शनि की दृष्टि और इसकी मंगल एवं राहु से केन्द्र स्थिति तथा मंगल एवं केतु की युति पर ध्यान दें।

भारत के लिए काला वर्ष 1018-1019 ए.डी.

गजनी के महमूद का भारत पर चढ़ाइः

गजनी के महमूद ने बलात्कार, लूट, सामूहिक नरसंहार और जोर-जबर्दस्ती से लोगों को मुस्लिम धर्म में शामिल करने का अपना अभियान इसी वर्ष प्रारम्भ किया था। उसने 2 दिसम्बर, 1018 को यमुना नदी को पार किया और वहां के क्षेत्रीय शासकों को पराजित किया। हिन्दु स्त्रियों ने अपने सम्मान की रक्षा हेतु यमुना नदी में कूदकर जान दीं लेकिन, पवित्र मथुरा शहर में सबसे अधिक क्रूरता हुई। यह शहर अत्याधिक सुन्दर मन्दिरों से सजा हुआ था और एक अतिविशिष्ट एवं पवित्र महत्व रखता था। मुस्लिम इतिहासकारों का अनुमान है कि मन्दिरों का मूल्य उस समय के सैकड़ों और करोड़ों रुपयों का था। यह भी अनुमान लगाया जाता है कि इनका निर्माण करने में कारीगरों को कम से कम 200 वर्ष अवश्य लगे होगें। इन मन्दिरों में स्थापित सैकड़ों मूर्तियों में से पांच मूर्तियां शुद्ध स्वर्ण से निर्मित थी और उनमें से एक मूर्ति की आंखों में दो अति मूल्यवान माणिक्य लगे थे जिनका मूल्य एक करोड़ दीनार था तथा दूसरी मूर्ति में बहुत भारी नीलम जडा हुआ था। इन पांचों स्वर्ण मूर्तियों का भार 98,300 मिस्कल था। 200 मूर्तियां चांदी से निर्मित थीं। सारा शहर धूल में मिला दिया गया और मन्दिरों को ध्वंस कर दिया गया था तथा स्वर्ण एवं चांदी की सभी मूर्तियों

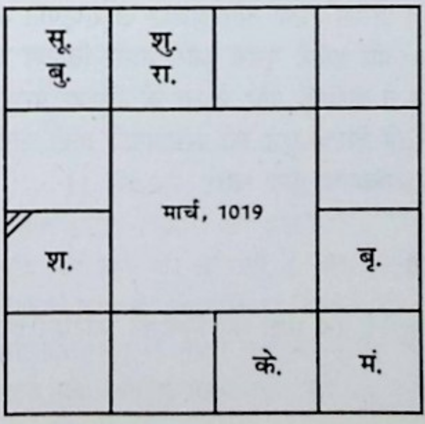

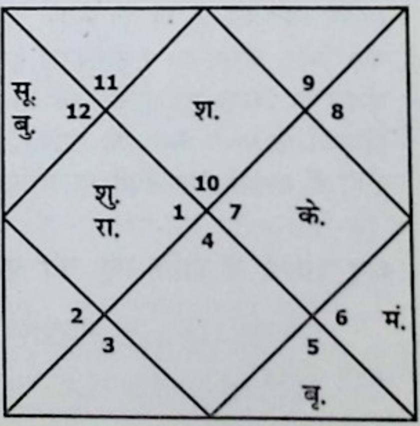

को लूट दिया गया था। अपनी-अपनी पसन्द की स्त्रियों का बलात्कार किया गया और उन्हें दास बनाने के लिए साथ ले जाया गया। 20 दिनों तक पूरे शहर में लूट-खसूट चलती रही।

उस समय शनि मकर राशि में था और राहु-केतु केन्द्र में स्थित थे तथा केतु से मंगल की युति होने ही वाली थी। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि वराहमिहिर ने मकर राशि को ही भारत के लग्न के रुप में प्रयोग किया है।

1192 ए.डी.: मोहम्मद गौरी ने पृथ्वी राज चौहान को पराजित किया। इस समय मिथुन-धनु राशि के अक्ष पर शनि और राहु की युति थी।

1398 ए.डी.: तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को लूटा। इसमें इतिहास का अद्वितीय नरसंहार हुआ। इस समय वृश्चिम-वृषभ अक्ष में राहु और शनि की युति थी। मंगल, मेष राशि में था और बृहस्पति, कर्क में स्थित होकर मंगल से केन्द्र में था तथा शनि को दृष्ट कर रहा था।

20वीं सदी में 7 जून, 1945 को मिथुन राशि में शनि और राहु की युति हुई थी। इसके परिणाम इस प्रकार थे:

1. राजतन्त्र का अन्त और परमाणु युग का प्रारम्भ। 26 जुलाई, 1945 को हिरोशिमा में परमाणु बम गिराया गया।
2. 6 अगस्त, 1945 को जापान के शहर नागासाकी में दूसरा परमाणु बम गिराया गया।

वृश्चिक राशि में 17 अक्टूबर, 1956 को शनि-राहु की युति हुई थी। इसके परिणाम स्वरुप फ्रान्स को भारत-चीन से खदेड दिया गया। कर्नल नाजीर ने अरब राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के नये युग प्रारम्भ किया प्रारम्भ किया और इजिप्ट के राष्ट्रपति बन गए। स्विज कैनल का राष्ट्रीयकरण हुआ और इसके दूसरी ओर फ्रान्स-ब्रिटिश का इजिप्ट के विरुद्ध युद्ध हुआ। जब रशिया ने इंग्लैण्ड और फ्रान्स के विरुद्ध परमाणु हथियारों के प्रयोग करने की धमकी दी तो विश्व-युद्ध की संभावनायें बनने लगीं। हंगरी में राजद्रोह और हंगरी पर रशियन आक्रमण हुआ था।

सन् 1979 में शनि-राहु की युतिः

1 फरवरी, 1979 को आयतुल्ला खुमैनी.14 साल का निर्वासन काटकर इरान वापस आया।

1 अप्रैल, 1979 को इरान ने अपने को इस्लामिक गणतन्त्र घोषित किया।

4 अप्रैल, 1979 को पाकिस्तान में जुल्फीकार भुट्टो का फांसी पर लटका दिया गया।

11 जुलाई, 1979 को स्काइलैब आस्ट्रेलिया के पश्चिमी समुद्र में गिर गया।

सन् 1990-91 में शनि-राहु की युतिः

2 जून, 1990 को इरान में बहुत बड़ा भूकम्प आया जिसमें 2140000 व्यक्ति मारे गये।

इराक ने इरान के साथ-साथ कुवैत पर आक्रमण किया।

अगस्त, 1990 में एक रात के आक्रमण के पश्चात इराक ने कुवैत पर अधिकार कर लिया। कुवैत का अमीर, देश छोड़कर भाग गया। इराक ने कुवैत को अपने देश में शामिल कर दिया।

11 सितम्बर, 2001 में अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर आक्रमणः

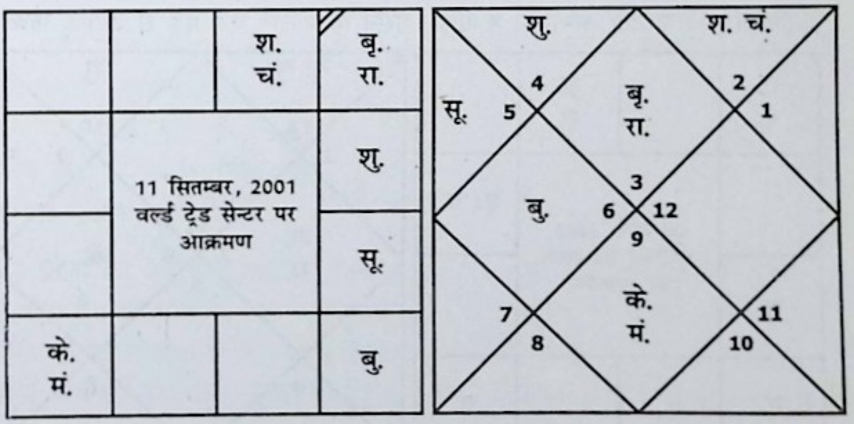

11 सितम्बर, 2001 की उपरोक्त कुण्डली का अवलोकन करें। उस दिन अग्नि संज्ञक मंगल 7°40'' का होकर 9°13'' के केतु के साथ युद्ध संज्ञक राशि धनु में युति कर रहा था। ये दोनों ही ग्रह केतु के अग्नि तत्व नक्षत्र मूल में स्थित होकर मिथुन राशिस्थ बृहस्पति के सामने थे। मिथुन राशि अमेरिका की राशि है और बृहस्पति, राहु के नक्षत्र में स्थित होकर राहु से युति कर रहा था। चन्द्रमा, एक अन्य पापी ग्रह शनि के साथ युति कर रहा था जो रोहिणी नक्षत्र में स्थित था।

5 जून, 2002 से 23 जुलाई, 2002:

राहु ने 28 फरवरी, 2002 को वृषभ नक्षत्र में प्रवेश किया था और वर्ष के अधिकर समय उसने इसी राशि में गोचर किया था। शनि ने 23 जुलाई, 2002 तक वृषभ राशि में गोचर किया और पुन: वक्री होकर 8 जनवरी, 2003 को वृषभ राशि में प्रवेश किया जिसके कारण शनि और राहु की युति हुई। यह समय कठिनाइयों, धार्मिक दंगों, आंतकवादी हमलों, उपद्रवों और युद्ध होने के भय का समय था।

27 फरवरी को गोदरा में साबरमती एक्सप्रैस में सवार हिन्दु कार सेवकों को जला दिया गया था, इस घटना के कारण गुजरात में धार्मिक हत्यायें हुई। इस हत्याकाण्ड का बदला लेने के लिए पूरे गुजरात के अतिरिक्त भारत के अन्य भागों में भी दंगे-फसाद और मारकाट हुई। इसके विषय को विस्तार से अलग अध्याय, राहु का वृषभ राशि में गोचर, में बताया गया है।

अमेरिका का इराक पर आक्रमण:

20 मार्च, 2003 को प्रात: 05:35 पर अमेरिका ने इराक के बगदाद शहर पर राकेटों और मिसाइलों से तीव्र आक्रमण किया। इसने पूरे इराक पर आक्रमण का प्रतिनिधित्व किया और अमेरिका ने सद्दाम हुसैन के शासन को जड़ से उखाड़ फेंका।

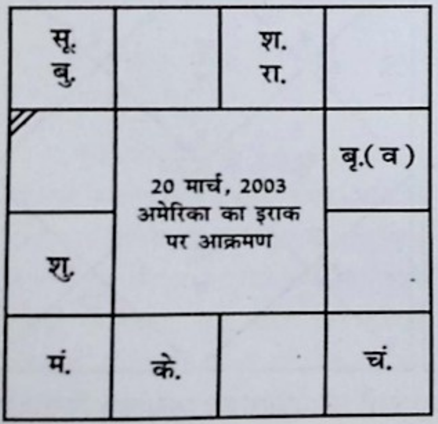

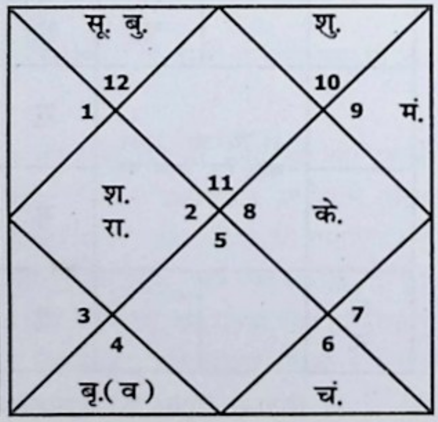

अध्याय 13

सूर्य और चन्द्र ग्रहण

ग्रहण सौरमण्डल में होने वाली एक एसी महत्वपूर्ण घटना है जो ज्योतिषशास्त्र का भी एक अन्य महत्वपूर्ण घटक है और फलकथन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रहण दो प्रकार के होते हैं, सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण। सूर्य ग्रहण में चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी के मध्य एक सीधी रेखा में आ जाता है जिसके कारण चन्द्रमा अपनी छाया से सूर्य को ढ़क लेता है जबकि चन्द्र ग्रहण में पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा के मध्य आ जाती है और पृथ्वी की छाया से चन्द्रमा ढ़क जाता है। मेदिनी ज्योतिष में ग्रहण का अपना विशेष महत्व होता है क्योंकि ग्रहण, उर्जा निष्कासित होने की उस चरम सीमा को इंगित करता है जिसका प्रभाव पृथ्वी पर एक विचारणीय काल तक बना रहता है।

चन्द्र ग्रहण से पड़ने वाले दुष्प्रभाव शीघ्र ही अपना प्रभाव दिखाते हैं जबकि सूर्य ग्रहण के बड़े दुष्प्रभावों को घटित होने में कई महीनों का समय भी लग सकता है। जितने घण्टों तक चन्द्र ग्रहण सक्रिय रहता है उतने ही महीनों तक इसके दुष्प्रभाव भी सक्रिय रहते हैं जबकि जितने घण्टों तक सूर्य ग्रहण रहता है उतने वर्षो तक इसके दुष्प्रभाव सक्रिय रहते हैं।

ग्रहण का अशुभ प्रभाव उन देशों में अधिक सक्रिय होता है जिन देशों में यह दृष्ट होता है। यह भी देखा गया है कि यदि ग्रहण चर राशियों अर्थात मेष, कर्क, तुला या मकर राशि में होता है तो इसका प्रभाव शीघ्र ही समाप्त हो जाता है जबकि स्थिर राशियों अर्थात वृषभ, सिंह, वृश्चिक या कुभं राशि में ग्रहण होने पर इसका दुष्प्रभाव लम्बे समय तक रहता है। द्विस्वभाव राशियों में होने वाले ग्रहण अपना दुष्प्रभाव रुक-रुककर दिखाता है।

वराहमिहिर ने वाराहीसंहिता में ग्रहणों के होने के प्रभावों को भी विस्तृत रुप से कहा है। उनमें से कुछ प्रमुख प्रभाव इस प्रकार से हैं:

1. वराहमिहिर के अनुसार यदि सूर्य या चन्द्रमा पापग्रह से दृष्ट होते हुए ग्रस्त अवस्था में उदय या अस्त हों तो शरद ऋतु के धान्यों और राजा का नाश होता है और ऐसे ही पापी ग्रहों से दृष्ट होते हुए पूर्णग्रहण होता है तो देश में अकाल और महामारी होती है।

2. यदि एक मास के अन्दर सूर्य और चन्द्र ग्रहण दोनों ही हों तो सेना के विद्रोह के कारण राजा का नाश होता है और देश में हथियारों से रक्त-रंजित युद्ध होता है।

3. जिस पक्ष में चन्द्र ग्रहण हो उसी पक्ष के अन्त में सूर्य ग्रहण भी हो तो प्रजा में दुर्नय होता है और स्त्रीपुरुषों में परस्पर वैरभाव होता है, अर्थात देशवासियों का व्यवहार अनैतिक और अन्यायपूर्ण हो जाता है।

4. यदि सूर्यग्रहण से एक पक्ष बाद चन्द्र ग्रहण हो तो ब्राह्मणगण अनेक यज्ञ करते है और उनके फल भी प्राप्त करते हैं तथा प्रजा हर्षित होती है।

5. यदि ग्रहण स्थिर प्रकृति की वायु तत्व राशि अर्थात कुभं राशि में होता है तो देश में चक्रवात आते हैं और राज्यों में सीमा विवाद होता है। वायु तत्व राशि होने के कारण यह वायुमार्ग में रुकावटें देते हुए वायुयान दुर्घटना आदि दे सकता है।

6. यदि ग्रहण मानव राशियों में होता है तो इसका मनुष्यों और जानवरों पर अत्याधिक दुष्प्रभाव पड़ता है।

विभिन्न राशियों में होने वाले ग्रहण के प्रभाव

1. अग्नि तत्व राशियों में ग्रहणः

मेष राशि में सूर्य या चन्द्र ग्रहण होने से पांचाल, कलिंग, शूरसेन, काम्बोज (आधुनिक उड़ीसा), आदिवासियों, शिकारियों, शस्त्रधारियों अर्थात योद्धाओं और अग्नि से आजीविका अर्जित करने वालों को कष्ट होता है।

सिंह राशि में सूर्य या चन्द्र ग्रहण होने से शिकारियों, आदिवासियों, जनजातियों, मेकल पर्वत के मूल निवासियों, प्रसिद्ध व्यक्तियों, राजा अथवा राजा के समान व्यक्तियों का नाश होता है।

धनु राशि में ग्रहण होने से मंत्रियों, अश्वों, विदेह और पांचाल के निवासियों, पहलवानों, वैद्यों, व्यापारियों और विषम अस्त्रों के जानने वाले पुरुषों का नाश होता है। धनु राशि युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न करने वाली राशि है इसलिए इसमें घटित होने वाले ग्रहण के कारण राजा अथवा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के लिए समस्यायें उत्पन्न होती हैं और उसकी मृत्यु या हत्या भी हो सकती है। इसके कारण सेना की गतिविधियां, युद्ध और लोगों के मध्य असन्तोष भी हो सकता है। यदि इसे संक्षिप्त में कहें तो देश में अग्निकाण्ड, बिमारियां, अन्न की कमी आदि घटित होता है।

2. वायु तत्व राशियों में ग्रहण:

वृषभ राशि में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो भेड़-बकरियों, गायों, बड़े गोशाला के स्वामियों और अतिगुणी व्यक्तियों को पीड़ा होती है।

कन्या राशि में ग्रहण होने से कवियों, लेखकों, गायकों, संगीतकारों आदि का और धान्य का नाश होता है तथा अश्मक, त्रिपुर व शालि, इन प्रधान देशों का ध्वंस होता है। कालपुरुष की कुण्डली में कन्या राशि षष्टम भाव की राशि है इसलिए इसमें घटित होने वाले ग्रहण के कारण बिमारियां, हैजा, आम जनता के स्वास्थ्य से जुड़े मामलों और श्रमिक मामलों में विवाद होता है।

मकर राशि में ग्रहण होने से मत्स्य, मंत्री एवं उनके परिवारों, निम्न जातीय व्यक्तियों, जड़ी-बूटियों के ज्ञाताओं और वृद्ध अस्त्रधारी पुरुषों का नाश होता है। संक्षिप्त में कहें तो देश में सूखा, अकाल, भूकम्प और खदानों की दुर्घटनायें होंगी।

3. वायु तत्व राशियों में ग्रहण:

मिथुन राशि में ग्रहण होने से उच्च वर्गीय महिलायें, राजा एवं प्रभावशाली मंत्री, नाचने-गाने एवं बजाने वाले, यमुना के तट पर निवास करने वाले लोग, बाह्लीक देश, मत्स्य देश और सुह्य देश के लोग पीड़ित होते हैं।

तुला राशि में ग्रहण होने से अवन्ती देश, पश्चिम समुद्र के निकट का देश, दशार्ण देश के निवासियों, साधु पुरुष, व्यापारियों और मच्छकच्छ देश के राजा का नाश होता है।

कुंभ राशि में ग्रहण होने से पहाड़ों एवं पश्चिम में रहने वालों, बोझा ढ़ोने वालों, चोरों, तस्करों, अहीर और दरद आर्य तथा सिंहनगर एवं बर्बर देश के लोगों का नाश होता है। तेज आंन्धियां चलती हैं, अकाल, बिमारियां और पालतु पशुओं का नाश होता है।

4. जल तत्व राशियों में ग्रहणः

कर्क राशि में ग्रहण होने से आभीर, शबर जाति के पुरुषों, पह्लव, मल्ल, मत्स्य, कुरु, शक, पांचाल और विकल देश पीड़ित होता है तथा अन्नों का नाश होता है।

वृश्चिक राशि में ग्रहण होने से उदुम्बर, मद्र और चौल देश के निवासियों, वृक्ष श्रेष्ठ योद्धा और विष देने वालों का नाश होता है।

मीन राशि में ग्रहण होने से समुद्री तट और समुद्र के जल से उत्पन्न हुए द्रव्य, समुद्र से आजीविका कमाने वाले लोगों, मान्यपुरुषों और ज्ञानवान व्यक्तियों को पीड़ा होती है। सामान्य जनों की मृत्यु अधिक होती है, समुद्र और समुद्र से उत्पन्न होने वाला भोजन दूषित होता है और समुद्र के आस-पास रहने वाले लोगों को कष्ट उठाना पड़ता है।

ऐसा माना जाता है कि शतभिषज नक्षत्र में ग्रहण होने पर यह मंत्रियों, वैज्ञानिकों एवं उनकी प्रयोगशालाओं, शेयर बाजार, व्यापारियों एवं उनके कारखानों और हवाई यात्रा पर अपना दुष्प्रभाव डालता है।

ग्रहण का शासक और शासन पर प्रभावः

यह सर्वमान्य है कि सामान्य जन की अपेक्षा ग्रहण राजाओं को अधिक प्रभावित करता है। सूर्य ग्रहण से चार माह के अन्दर और चन्द्र ग्रहण से एक सप्ताह के अन्दर तथा ग्रहण से पूर्व भी घटनायें घटित हो सकती हैं।

जन्म लग्न, जन्म सूर्य और जन्म चन्द्रमा की राशि अथवा इनसे सप्तम भाव की राशि में घटित होने वाला ग्रहण शुभ फलदायक होता है इसलिए मंगलकारी माना जाता है। इसके लिए ड्यूक ऑफ योर्क का उदाहरण दिया जाता है जिनके जन्म सूर्य की राशि में 13 दिसम्बर, 1936 को ग्रहण हुआ था और यह अपने भाई राजा इडवर्ड अष्टम के राजपद त्यागने के कारण जार्ज षष्टम के रुप में इंग्लैण्ड के राजा बने।

अगस्त, 1932 के एक सूर्य ग्रहण फ्रैंक रुसवेल्ट के जन्म लग्न की राशि में हुआ था और उसी वर्ष 8 नवम्बर को इनका चयन राष्ट्रपति के रुप में हुआ।

9 मई, 1948 को एक सूर्य ग्रहण हैरी ट्रोमेन के जन्म सूर्य की राशि में हुआ था और उसी वर्ष 2 नवम्बर को इनका चयन राष्ट्रपति के रुप में हुआ।

यद्यपि कुछ मामलों में यह विपरीत परिणाम भी देता है जैसा कि मोरारजी देसाई के साथ जनवरी 1979 में हुआ था जब उन्हें प्रधानमंत्री का पद त्यागना पड़ा था। उस वर्ष अगस्त 1979 में उनके चन्द्र राशि में ग्रहण हुआ था।

यदि ग्रहण मंगल और शनि से पीड़ित हो तो यह हत्या के कारण मृत्यु होने का अशुभ शकुन होता है।

उदाहरणः

1. 12 नवम्बर, 1947 को महात्मा गान्धी के जन्म मंगल की राशि में सूर्य ग्रहण हुआ था। इसके बाद 30 जनवरी, 1948 को उनकी हत्या हुई थी।

महात्मा गान्धी की कुण्डली

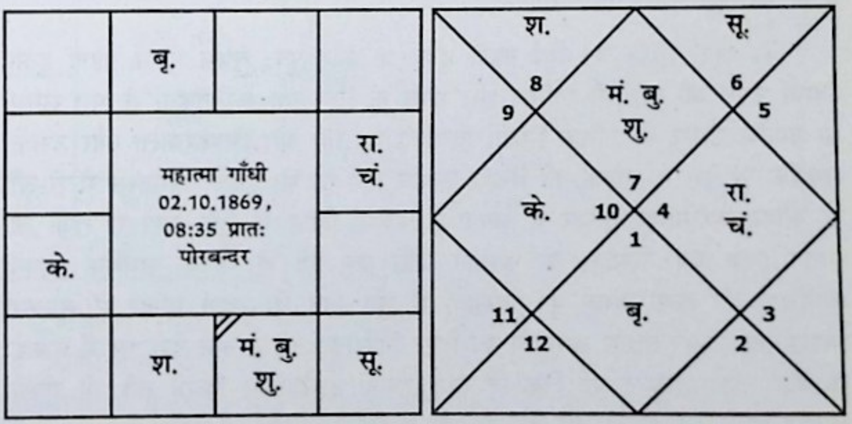

2. 25 मई, 1984 को श्रीमति इन्दिरा गान्धी के जन्म सूर्य की राशि के सप्तम भाव की राशि वृषभ में सूर्य ग्रहण हुआ था। उसी वर्ष 31 अक्टूबर, 1984 को उनकी हत्या हो गई थी। ग्रहण का यह बिन्दु वक्री मंगल से दृष्ट था और मंगल, वक्री शनि की युति में तुला राशि में था। ग्रहण का यह बिन्दु वृषभ

राशि के रोहिणी नक्षत्र में मंगल से दृष्ट था जो भारत की लग्न की राशि भी है और अशुभ घटनाओं के लिए चिरपरिचित है।

3. 14 अप्रैल, 1865 को अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन की गोली मारकर हत्या हुई थी। इससे पूर्व 11 अप्रैल, 1865 को उनके जन्म मंगल की राशि में चन्द्र ग्रहण हुआ था और बाद में 19 अक्टूबर, 1965 को सूर्य ग्रहण भी हुआ था।

4. अमेरिका के ही एक अन्य राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी की कुण्डली के 4/10 अक्ष पर सूर्य ग्रहण हुआ था। ग्रहण का बिन्दु विस्फोटक मंगल से दृष्ट था। ग्रहण के चार मास बाद राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी की हत्या हो गई थी।

एक विशेष बात याद रखनी चाहिए कि प्रत्येक 19 वर्षों के उपरान्त सूर्य और चन्द्र ग्रहण एक ही राशि में होता है। 19 वर्ष पहले इसी प्रकार के ग्रहण के प्रभाव के कारण जॉन एफ. कैनेडी की रीढ़ की हड्डी टूटी थी।

ग्रहण और राष्ट्रः

ज्योतिष के शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार यदि एक ही पक्ष में दो ग्रहण घटित होते हैं तो यह युद्ध को इंगित करता है।

11 जून, 1983 को सूर्य ग्रहण हुआ था और पुनः वृषभ में में ग्रहण हुआ जिसमें मंगल की युति भी शामिल थी। भारत के लिए यह कठिनाइयों से भरा समय था क्योंकि पंजाब में धार्मिक स्थिति बिगडती जा रही थी। भिण्डरवाला और उसके समर्थक पूरे देश में आंतक की स्थिति उत्पन्न कर रहे थे। इन्होंने अमृतसर में सिखों के पवित्र स्वर्णमन्दिर गुरुद्वारे में अपना डेरा जमा लिया था और वहां से राजा के समान हत्या एवं नरसंहार के फरमान जारी कर रहे थे। इनके समर्थक अपने विरोधियों की हत्या करके पुनः गुरुद्वारों में छुप जाते थे। स्वर्ण मन्दिर में छुपकर भिण्डरवाला अपने हत्यारे समर्थकों को दिशा निर्देशन देता था और देश भर में उसके समर्थक मोटरसाइकिल पर निकलते तथा अपनी इच्छानुसार किसी की भी गोली मारकर हत्या कर देते थे। पूरे देश में और विशेषकर पंजाब में कानून व्यवस्था बुरी तरह से चरमरा गई थी। बम्ब फूटना, लूटपाट करना, हत्या करना तो रोज की ही त्रात

हो गई थी। यहां तक कि अकालियों ने भी अपना आन्दोलन तेज कर दिया था और शेष भारत को गेंहू और पानी न देनें की धमकी भी दे डाली थी। असम और कश्मीर में भी हिंसा और लूटपाट होने से स्थितियां अत्याधिक विषम हो चुकीं थीं।

श्री के.एन. राव के अनुसार 16 जनवरी, 1980 का ग्रहण भारत के लिए सबसे अधिक अशुभ ग्रहण था। भारतीय ज्योतिषाचार्यों और विशेषकर दक्षिण भारत के ज्योतिषाचार्यों ने इस ग्रहण से 'राज परिवार' को अशुभ परिणाम प्राप्त होने की संभावनायें व्यक्त करीं थी। यह ग्रहण संजय गान्धी के लग्न से द्वितीय भाव और जन्म चन्द्रमा से सप्तम भाव में घटित हुआ था। दोनों ही भाव मृत्यु के भाव हैं। सिंह राशि में स्थित संजय गान्धी का जन्म चन्द्रमा, राहु से ग्रसित और मंगल एवं बृहस्पति की युति में था। उस समय उनकी सप्तमेश चन्द्रमा की दशा चल रही थी जो कुण्डली में अष्टम भाव में स्थित है तथा षष्टेश एवं नवमेश बुध अत्यन्त पीड़ित था।

संजय गान्धी की कुण्डली

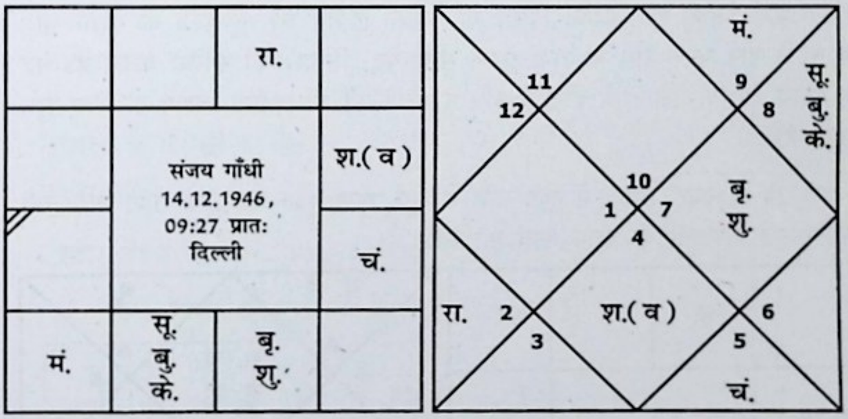

23 जुलाई, 1980 तक शनि वक्री होकर पुनः सिंह राशि में आ गया जिसके कारण उसकी मंगल से युति हुई। शनि सिंह राशि में उस वर्ष के अन्त तक रहा। कुछ ज्योतिषाचार्यों के मतानुसार सिंह राशि के शनि ने दिल्ली का दुर्ग भंग किया था।

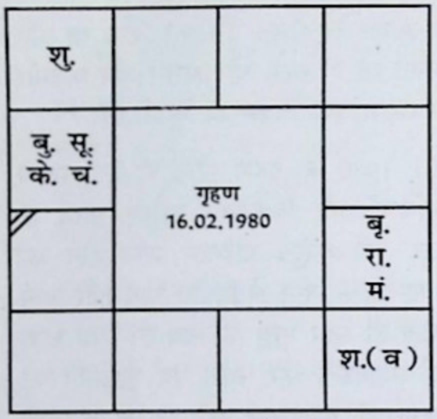

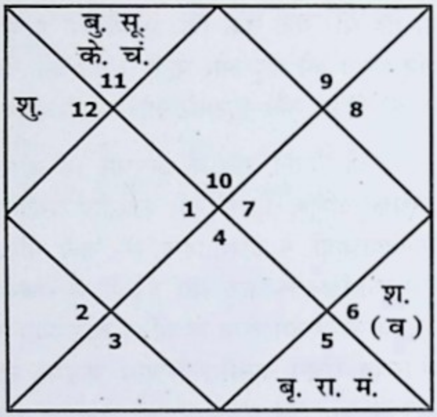

23 जून, 1980 को संजय गान्धी की एक वायु दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

दशम भाव में ग्रहण:

चाहे किसी देश अथवा किसी भी व्यक्ति विशेष की कुण्डली के दशम भाव में घटित होने वाला सूर्य या चन्द्र ग्रहण सामान्यत: विनाश को सूचित करता है। यह न किसी देश के लिए शुभ होता है और न ही किसी भी व्यक्ति विशेष के लिए शुभ होता है।

24 अक्टूबर, 1995 में तुला राशि में सूर्य ग्रहण हुआ था। तुला राशि भारत की परम्परागत कुण्डली के दशम भाव की राशि है।

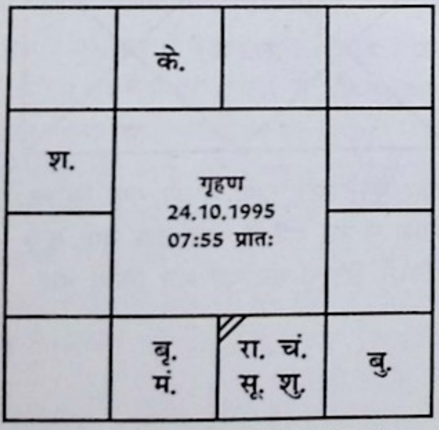

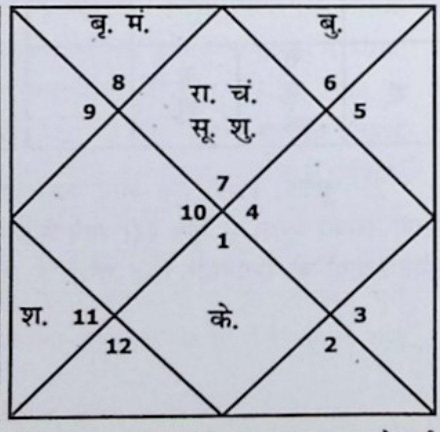

इस वर्ष मानसून में देरी हुई थी जिसके कारण खरीफ की फसल खराब हो गई और इसके परिणाम स्वरुप 180.4 लाख टन अनाज की कमी हो गई। विशेषकर गेहूं

के वितरण में 3 लाख टन की कमी हो गई। कमी को दूर करने के लिए सरकार को अपने संचित भण्डार से गेहूं बांटना पड़ा और इसके उपरान्त भी जब कमी दूरी नहीं हुई तो 2 लाख टन गेंहूं का आयात करना पड़ा।

भारत में राजनीति के क्षेत्र में विप्लव पैदा हो गया था। 1996 के आम चुनाव में किसी भी राजनैतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला और कोई भी दल इस स्थिति में नहीं था कि सरकार का गठन कर सके। बहिष्कार होने के बाद कांग्रेस पीछे हो चुकी थी और प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार बहुमत सिद्ध करने के लिए आवश्यक वोट एकत्रित करने में सफल नहीं हो पाई तथा श्री वाजपेयी ने बहुमत सिद्ध करने से पहले ही त्यागपत्र दे दिया। इसके परिणाम स्वरुप पांच दलों के संयुक्त मोर्चे के प्रमुख श्री एच. डी. देवगौडा ने 1 जून, 1996 में सरकार का गठन किया जिसे कांग्रेस ने बांहर से समर्थन दिया था। 11 अप्रैल, 1997 को कांग्रेस के द्वारा समर्थन वापस लेने के कारण देवगौडा को पद छोड़ना पड़ा।

20 अप्रैल, 1997 को कांग्रेस के समर्थन से संयुक्त मोर्चे के श्री आइ. के. गुजराल को प्रधानमंत्री चुना गया जिन्होंने फरवरी, 1998 तक शासन किया। पुनः कांग्रेस द्वारा समर्थन वापस लेने के बाद आम चुनाव की घोषणा कर दी गई।

नेपाल में दुःखान्त घटना – राजा और उसके परिवार का निर्दयतापूर्ण नरसंहारः

(स्टार टेलर के जून, 2006 में प्रकाशित श्री के.एन. राव के लेख से उद्धृत)

नीचे नेपाल के राजा श्री बिरेन्द्र शाह के राजतिलक की कुण्डली दी गई है।

बृ. शु.		के.	श.
सू.	श्री विरेन्द्र शाह का राजतिलक 24.02.1975 08:23 प्रातः काठमाण्डू		चं.
बु. मं.			
	रा.		

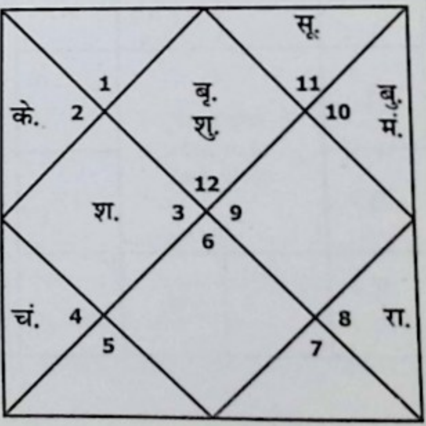

1 जून, 2001 को नेपाल के राजा श्री बिरेन्द्र शाह और उनके परिवार के सभी सदस्यों की उनके ही पुत्र दिपेन्द्र के द्वारा निर्दयता पूर्वक हत्या कर दी गई थी। इस नरसंहार के समय ग्रहों की स्थिति इस प्रकार से थी:

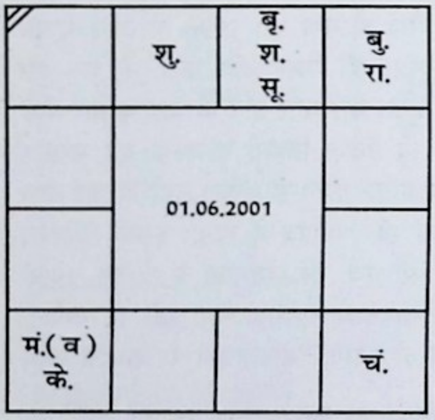

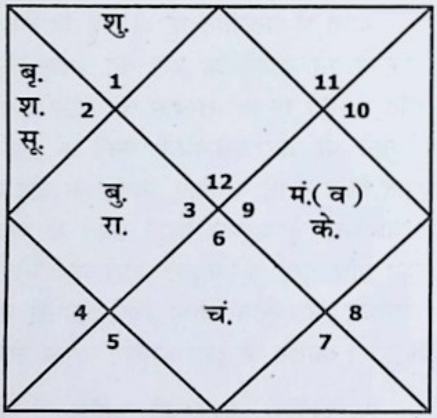

10 जून, 2001 को 00:12 प्रात: जो चन्द्र ग्रहण हुआ था वह श्री बिरेन्द्र शाह के 24 फरवरी, 1975 को हुए राजतिलक की कुण्डली के चतुर्थ/दशम भाव के अक्ष में घटित हुआ था। ग्रहण के समय ग्रहों की स्थिति को नीचे एक अन्य कुण्डली में दर्शाया गया है। राजतिलक की कुण्डली का दशमेश बृहस्पति वक्री होकर वक्री शनि के साथ युति करके नवम भाव में स्थित था और तुला राशिगत मंगल से दृष्ट था जो रक्त-रंजित क्रूर कृत्य को इंगित करता है। यहां वक्री पापी ग्रहों और क्रूर ग्रहों का सम्बन्ध से होने वाली रक्त-रंजित घटनायें विशेष ध्यान देने योग्य हैं।

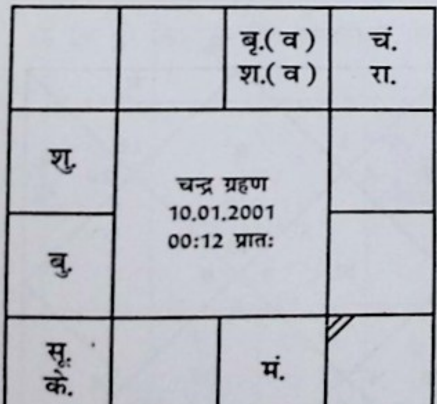

अध्याय 14

ज्योतिषशास्त्र में मौसम विज्ञान के सिद्धान्त

(श्री के.एन. राव की पुस्तक "अप्लाइड एस्ट्रोलॉजी, इनडिविजुअल मानसून फोरकॉस्टिंग और न्यू रिसर्चस" पर आधारित)

भारत में वर्षा का महत्वः

भारत एक कृषि प्रधान देश था और आज भी कृषि प्रधान देश ही है। इसकी सारी अर्थव्यवस्था समयानुसार होने वाली वर्षा पर आधारित है जिसे फसलों का उत्पादन अच्छा होता है। वराहमिहिर, वाराही बृहत् संहिता में कहते हैं,

अन्नं जगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्य चान्नमायत्तम् ।
यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृटकालः प्रयत्नेन ॥

अर्थात अन्न ही जगत के प्राण हैं और यह वर्षा काल के वश में है, इसलिए वर्षा काल की परीक्षा करने का प्रयास करना चाहिए।

भोजन न केवल जीवित रहने के लिए आवश्यक है अपितु आध्यात्मिक विकास के लिए भी इसकी आवश्यकता है। वेदों सहित हमारे सभी पवित्र ग्रन्थों में भोजन की **अन्न देवता** के रुप में अनुशंसा की गई है। कालिदास के मतानुसार स्वस्थ शरीर के अनुपस्थिति में आध्यात्मिकता के उच्च शिखर का अनुभव नहीं किया जा सकता है और स्वस्थ शरीर, भरण-पोषण के लिए सात्विक भोजन पर ही निर्भर होता है। ऐसा भोजन तभी उपलब्ध हो सकता है जब समुचित वर्षा हो, ऐसा **भगवत् गीता** में भी कहा गया है। वर्षा के महत्व को समझते हुए ही वर्षा के विषय में सटीक पूर्वानुमान करने के लिए इससे सम्बन्धित विज्ञान को भी विशेष महत्व दिया गया है। इन्ही कारणों से ही प्राचीन काल में गर्ग, पराशर, कश्यप और सिद्धासेन जैसे महर्षियों ने इस विज्ञान का उच्च स्तर तक विकास किया था। महर्षि वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ वृहत् संहिता में कई अध्याय इस विषय को ही समर्पित किये हैं और वर्षा के विषय

में सटीक पूर्वानुमान करने के लिए हमें कई स्वीकृत तत्व एवं बहुमूल्य सिद्धान्त दिये हैं।

भारत में वर्षाकाल:

प्रत्येक वर्ष 22 जून के आस-पास जब सूर्य मिथुन राशि के 6°40' पर, आर्द्रा नक्षत्र में पहुंचता है तो उत्तर भारत में मानसून का आगमन होता है और 26 सितम्बर के आस-पास जब कन्या राशि में 10° पर पहुंचता है तो मानसून का पलायन प्रारम्भ हो जाता है। यह दक्षिणी-पश्चिमी मानसून होता है जो भारत में साधारणतः मानसून के नाम से जाना जाता है। इस काल में चन्द्रमा जब किसी नक्षत्र विशेष में अन्य ग्रहों से युति करता है अथवा दृष्ट होता है तो यह वर्षा होने अथवा न होने का कारण हो सकता है।

भारत में वर्षा का पूर्वानुमान निम्नलिखित तरीकों से किया जाता है:

1. **लम्बी दूरी का पूर्वानुमानः** सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय की कुण्डली बनाकर उसके आधार पर इसे किया जाता है जो प्रत्येक वर्ष 22 जून के आसपास होता है। आर्द्रा नक्षत्र के साथ-साथ सूर्यादि अन्य ग्रहों के विभिन्न नक्षत्रों में प्रवेश के सही समय और तिथि को एफिमेरिज अथवा पंचांग से आसानी से ज्ञात किया जा सकता है। सूर्य के इस आर्द्रा सकंमण काल की कुण्डली बनाने के लिए सामान्यतः राजधानी होने के कारण दिल्ली को, स्थान चुना जाता है लेकिन कुछ ज्योतिषाचार्य वाराणासी को भी स्थान चुनते हैं। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली का अध्ययन कैसे किया जाता है इसके विषय में अलग से बताया गया है।

2. **मध्यम दूरी का पूर्वानुमानः** यह पूर्वानुमान 195 दिन पहले लगाया जाता है। जून से सितम्बर के मध्य होने वाली वर्षा के लिए, बादलों का बनना, हवा की दिशा, बिजली कडकना और अन्य सभी सम्बन्धित विषयों का प्रत्येक वर्ष नवम्बर-दिसम्बर में अध्ययन किया जाता है। जब वर्षा के बादलों का बनना और उनमें पानी होने का मन्तव्य प्रकट होता है अर्थात बादलों में पानी एकत्रित होना प्रारम्भ होता है जिसे **इम्प्रेग्नेशन आफ क्लाउडस** कहा जाता है, उस समय विशेष में चन्द्रमा किस नक्षत्र विशेष में प्रवेश कर रहा है इसे देखा जाता है। सामान्यतः मृगशिरा मास में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन से, जब चन्द्रमा तीन

तारों वाले पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में गोचर करता है, उस समय बादलों के यह लक्षण प्रकट होते हैं। ज्योतिषशास्त्र में इसे **बादलों का गर्भाधान** कहा जाता है। मेघों की इस गर्भाधान प्रक्रिया का अतिसूक्ष्मता से परीक्षण करना चाहिए। वराहमिहिर के अनुसार जो ज्योतिषाचार्य मेघों के गर्भाधान की इस प्रक्रिया का दिन-रात सूक्ष्मता से निरीक्षण करेगा, उसका पूर्वानुमान कभी भी असत्य नहीं होगा।

अपने गर्भ के जल को ये मेघ 195 दिनों के बाद उस समय बरसायेंगें जब अगले वर्ष जून माह के पश्चात, चन्द्रमा पुनः उसी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। मेघों द्वारा जल के रुप में जिस गर्भ को शुक्लपक्ष में धारण किया जाता है वह कृष्ण पक्ष में बरसता है और जो कृष्णपक्ष में धारण किया जात है वह शुक्लपक्ष में बरसता है। इसी प्रकार जो दिन में धारण होता है वह रात्रिकाल को और जो रात्रिकाल को धारण होता है वह दिन में बरसेगा। जो संध्याकाल में धारण होता है वह प्रातःकाल में और जो प्रातःकाल में धारण होता है वह संध्या काल में बरसेगा। जो पूर्व में धारण होता है वह पश्चिम में और जो पश्चिम में धारण होता है वह पूर्व में बरसेगा तथा जो उत्तर में धारण होता है वह दक्षिण में और जो दक्षिण में धारण होता है वह उत्तर में बरसेगा।

मेघों के स्वस्थ गर्भाधारण के लक्षणः

मेघों के द्वारा धारण किया जाने वाला गर्भ स्वस्थ होगा यदिः

1. वहां उत्तर, उत्तरपूर्व अथवा पूर्व से आनन्द देने वाली और ठण्डी हवायें हों।
2. आसमान साफ हो और सूर्य एवं चन्द्रमा का प्रभामण्डल चमकदार गोले के समान हो।
3. आसमान में बड़े भारी, सुई की नोक के समान नुकीले अथवा लाल, नीले या हरे तेज धार वाले हल्के बादल हों।
4. चन्द्रमा और तारे तेज चमक के साथ चमकें।
5. सुबह और सांयकाल में मंगलकारी बिजली कडके और साथ-साथ इन्द्रधनुष भी बने।
6. बादलों का अच्छी गड़गड़ाहट के साथ गरजना, बिजली चमकना और सूर्य का बादलों में छुपना।

7. चिड़ियाओं के समूहों का उत्तर, पूर्व अथवा उत्तरपूर्व में मुख करके प्रसन्नता से चीखना लेकिन सूर्य की ओर मुख न करना।

8. ग्रहों का चमकदार होकर नक्षत्रों के उत्तर की ओर अग्रसर होना।

9. वृक्षों की नई कोपलें व्याधि से हीन हों।

10. मनुष्य और जानवर हर्षित दृष्ट हों।

उपरोक्त लक्षणों के अतिरिक्त भी कुछ विशेष मौसमी लक्षण हैं जो इस प्रकार से हैं:

1. मृगशिरा और पौष मास (नवम्बर-दिसम्बर और दिसम्बर-जनवरी) के लिए सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय क्षितिज पर लाल रंग की आभा का चमकना, बादलों का प्रभामण्डल के साथ होना और मृगशिरा मास में अधिक ठण्ड एवं पौष मास में अधिक मोटा पाला न होना, शुभ लक्षण हैं।

2. माघ मास (जनवरी-फरवरी) में तेज हवा का होना, सूर्य एवं चन्द्रमा का कुहरे के कारण धुंधला होना, कडकडाती ठण्ड और सूर्य का बादलों के साथ उदय एवं अस्त होना।

3. फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) में रुखी एवं खतरनाक आंधी का चलना, बादलों के किनारों पर बहती हुई चमक का होना और सूर्य अथवा चन्द्रमा के चारों ओर प्रभामण्डल का एक अपूर्ण गोले में होना।

4. चैत्र मास (मार्च-अप्रैल) में हवा के साथ गर्भ का बहना, मेघ, वर्षा और प्रभामण्डल, शुभ शकुन होते हैं।

5. वैशाख मास (अप्रैल-मई) में बादलों का उमडना, हवा, वर्षा, बिजली कडकना और बादलों का कडकना अच्छे शकुन हैं।

6. जो बादल मोती और कुमदिनी के समान हल्के आसमानी रंग के दिखते हैं तथा जलीय जन्तुओं के आकार के होते हैं, उनके गर्भ में अत्याधिक जल होता है अर्थात ऐसे मेघ पानी से लबालब भरे होते हैं।

7. किसी भी मौसम में मेघों का वह गर्भाभाधान जो चन्द्रमा के पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी नक्षत्र में से किसी भी नक्षत्र में गोचर करते समय होगा, अत्याधिक वर्षा देगा। इसलिए इन नक्षत्रों को वर्षा देने वाले

नक्षत्र कहा जाता है। इनके अतिरिक्त अन्य नक्षत्रों में शतभिषज, आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाति और मघा को भी जल भरने और बरसाने के लिए शुभ माना जाता है।

8. यदि सूर्य तन जलाने वाली गर्मी के साथ चमकता है, रात को आसमान साफ रहता है और आसमान में चमकते तारे झील में खिली कुमुदनी के समान दिखाई देते हैं तो यह अच्छी वर्षा के संकेत हैं।

9. यदि आसमान तीन, दो या एक दिन के लिए सुन्दर दिखने वाले बादलों से ढ़का रहे तो भूमि पर अत्याधिक जल बरसता है और फसलों का उत्पादन भी अच्छा होता है।

10. यदि बादल पूर्व अथवा उत्तर दिशा में उदय हो रहें हों तो अच्छी वर्षा होगी। यदि बादल या हवायें उत्तरपूर्वी दिशा में उदय हो रहें हों तो आंधी चलेगी और छितराई हुई वर्षा होगी।

मेघों के गर्भपात होने अर्थात जल से रिक्त होने के निम्नलिखित लक्षण हैं:

1. उल्काओं का गिरना।
2. बिजली गिरना और चमकना।
3. धूलभरी आंधियों का चलना।
4. आकाश में आग दिखना।
5. भूकंप।
6. आसमान में शहर जैसी आकृति का बनना।
7. केतु।
8. ग्रह-युद्ध।
9. वर्षा में अप्राकृतिक घटनाओं का होना जैसे कि खून जैसा दिखना, बादलों का एक-दूसरे को पार करना आदि।
10. सूर्यास्त अथवा सूर्योदय के समय का इन्द्रधनुष।

11. ग्रहण।

12. गर्भाधान के समय अत्याधिक वर्षा होने का परिणाम गर्भ का विनाश होगा।

लघु अवधि के पूर्वानुमान के लिए रोहिणी योग और सप्तनाड़ी चक्र का प्रयोग किया जाता है। रोहिणी योग का अर्थ है आषाढ़ कृष्णपक्ष में चन्द्रमा का रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश। यदि रोहिणी योग वाले दिन आसमान साफ हो और सूर्य गर्म हो तो वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है।

इस दिन हवाओं की दिशा को भी देखा जाता है। यदि इस दिन हवा पूर्व से दक्षिण की ओर बहती है और इसी तरह घड़ी की दिशा में चलती है तो यह अच्छी वर्षा और फसलों की अधिक उत्पादन में सहायक होती है।

सप्तनाड़ी चक्रः यद्यपि ज्योतिष में 27 नक्षत्रों का प्रयोग किया जाता है लेकिन मौसम सम्बन्धित फलकथन के लिए ज्योतिषशास्त्र में 28 नक्षत्रों का प्रयोग होता है। 28वां नक्षत्र अभिजित नक्षत्र है जिसको 21वें नक्षत्र उत्तरषाढ़ा के पश्चात स्थान दिया गया है। इन 28 नक्षत्रों को सात नाड़ियों में बांटा गया है। प्रत्येक नाड़ी का अपने गुणधर्म के अनुसार एक विशेष नाम भी है।

सप्तनाड़ी चक्र

नाड़ी स्वामी	प्रचण्ड शनि	पवन सूर्य	दहन मंगल	सौम्य बृहस्पति	नीर शुक्र	जल बुध	अमृत चन्द्रमा
नक्षत्र (संख्या)	कृतिका (3)	रोहिणी (4)	मृगशिरा (5)	आर्द्रा (6)	पुनर्वसु (7)	पुष्य (8)	आश्लेषा (9)
नक्षत्र (संख्या)	विशाखा (16)	स्वाति (15)	चित्रा (14)	हस्त (13)	उत्तरा फाल्गुनी (12)	पूर्वा फाल्गुनी (11)	मघा (10)
नक्षत्र (संख्या)	अनुराधा (17)	ज्येष्ठा (18)	मूल (19)	पूर्वाषाढ़ा (20)	उत्तराषाढ़ा (21)	अभिजित (22)	श्रवण (23)
नक्षत्र (संख्या)	भरणी (2)	अश्विनी (1)	रेवती (28)	उत्तर भाद्रपद (27)	पूर्वा भाद्रपद (26)	शत भिषज (25)	धनिष्ठा (24)
नाड़ी की प्रकृति	भयंकर तीव्र	वायुपूर्ण	गर्म	मौसम में परिवर्तन	अच्छी वर्षा	उत्तम वर्षा	श्रेष्ठ वर्षा

यह सर्वविदित है कि सूर्य का विभिन्न राशियों और नक्षत्रों में प्रवेश, मौसम का संचालन करता है। शुक्र और बुध सदैव सूर्य के निकट रहते हैं तथा चन्द्रमा किसी भी राशि में एक चन्द्रमास के बाद पुनः प्रवेश करता है।

सप्तनाड़ियों के गुण-धर्मः

1. **प्रचण्ड नाड़ीः** इस नाड़ी का स्वामी शनि है और इसका अर्थ ग्रीष्म ऋतु की भंयकर गर्मी है।
2. **पवन नाड़ीः** इस नाड़ी का स्वामी सूर्य है और इसका अर्थ ग्रीष्म ऋतु की गर्म हवा है।
3. **दहन नाड़ीः** इस नाड़ी का स्वामी मंगल है और जो आग जैसी गर्मी को दर्शाती है।
4. **सौम्य नाड़ीः** इस नाड़ी का स्वामी बृहस्पति है जो अत्याधिक गर्मी और आने वाले मानसून से पूर्व के ठण्डी बौछारों के मध्य संतुलन बनाती है। यह मध्य नाड़ी भी कहलाती है।
5. **नीर नाड़ीः** इस नाड़ी का स्वामी शुक्र है ज़ो एक जलीय ग्रह है और मानसून के पहली बौछारों को इंगित करता है। नीर का अर्थ जल होता है।
6. **जल नाड़ीः** इस नाड़ी का स्वामी बुध है जो मानसून की अधिक वर्षा को दर्शाती है।
7. **अमृत नाड़ीः** इस नाड़ी का स्वामी चन्द्रमा है जो एक जलीय ग्रह है और वर्षा की प्रचुरता को दर्शाती है।

   नीर, जल और अमृत नाड़ियों को उत्तरी अथवा सजला नाड़ी भी कहा जाता है।

सप्तनाड़ियों के तीन वर्गीकरणः

सप्तनाड़ियों को तीन वर्गों में बांटा गया है।

1. **यमः** पहली तीन नाडियां, प्रचण्ड, पवन एवं दहन, यम नाड़ी कहलाती हैं। इन्हें दक्षिण नाड़ी भी कहा जाता है। ये नाडियां गर्मी, गर्म हवाओं एवं उच्च तापमान को दर्शाती हैं लेकिन किसी भी प्रकार की वर्षा की संभावनायें इंगित नहीं करती हैं।

2. **सौम्यः** अगली तीन नाडियां, सौम्य, नीर एवं जल, सौम्य नाड़ी कहलाती हैं जो तापमान में गिरावट और वर्षा के प्रारम्भ होने को दर्शाती हैं।

3. **शीतलः** शीतल का अर्थ ठण्डा होता है। अमृत नाड़ी, इस वर्ग की नाड़ी है जो अत्याधिक वर्षा को दर्शाती है।

सप्तनाड़ी चक्र अध्ययन करने की विधिः

सिद्धान्त संख्या 1:

1. ग्रहों का प्रचण्ड नाड़ी (कृतिका, विशाखा, अनुराधा एवं भरणी) में गोचर भंयकर आंधी-तूफान और चक्रवात लायेगा। यदि एक से अधिक ग्रह इस नाड़ी में गोचर कर रहे हों तो यह परिणाम विशेषतः प्राप्त होता है।

2. ग्रहों का नीर, जल और अमृत नाड़ियों में होना अधिक वर्षा लाता है।

3. मंगल जिस नाड़ी में होता है उसे अतिशीघ्र चालू करके प्रभावशाली बना देता है।

4. यदि दो या दो से अधिक ग्रह एक नाड़ी में हो तो जैसे ही चन्द्रमा उस नाड़ी में आता है, वर्षा होती है।

5. बृहस्पति, मंगल और चन्द्रमा का एक नाड़ी में होना अत्याधिक वर्षा होने का कारण होता है।

6. नीर, जल एवं अमृत नाड़ी में अधिक ग्रहों का चन्द्रमा के साथ स्थित होने का अर्थ है कि अगले दो दिन तक लगातार वर्षा होगी।

7. पापी ग्रह मेघों के बनने को प्रेरित अवश्य करते हैं लेकिन उन मेघों में अधिक जल नहीं होता है।

8. बुध, शुक्र, बृहस्पति और चन्द्रमा अत्याधिक वर्षा देते हैं।

9. पापी ग्रह सूर्य, शनि और मंगल, बादल के होने का कारण तो होते हैं लेकिन वर्षा नहीं देते हैं।

10. यदि अधिकतम पांच ग्रह नीर नाड़ी में हों और चन्द्रमा उनमें शामिल हो जाये तो अगले 6 दिनों तक वर्षा होगी। यदि यह स्थिति जल नाड़ी में बने तो 12 दिनों तक और अमृत नाड़ी में बने तो 24 दिनों तक वर्षा होगी।

11. जिस नाड़ी में पहले से ही कोई ग्रह स्थित है उस नाड़ी में चन्द्रमा का प्रवेश मौसम में उतार-चढ़ाव लाता है।

12. वर्षा ऋतु में बुध जब राशि परिवर्तन करता है अथवा वक्री होता है या सीधा होता है, तो अकेला ही वर्षा देने में सक्षम होता है।

सिद्धान्त संख्या 2:

जब अधिक ग्रह एक राशि में हों, विशेषकर मंगल एवं सूर्य के साथ एक ही नक्षत्र में हों और मंगल राहु के साथ हो तो वर्षा ऋतु न होने के उपरान्त भी भयानक रुप से पानी गिरेगा। निम्नलिखित दो घटनाओं को देखिये।

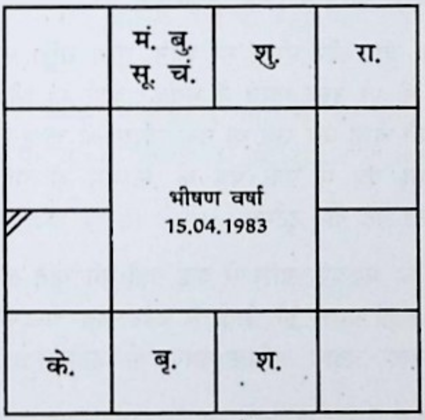

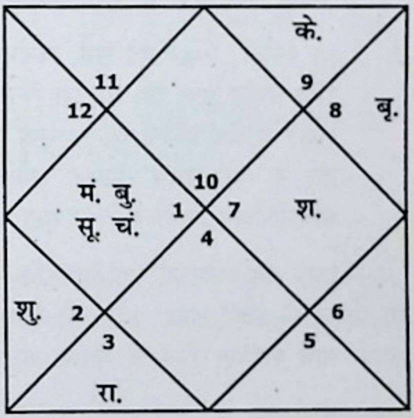

पूरे उत्तर भारत में 26 अगस्त, 1987 को अत्याधिक वर्षा हुई

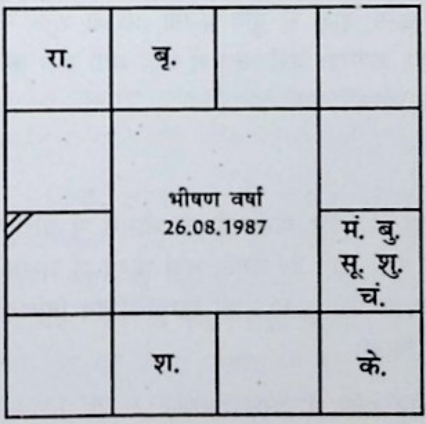

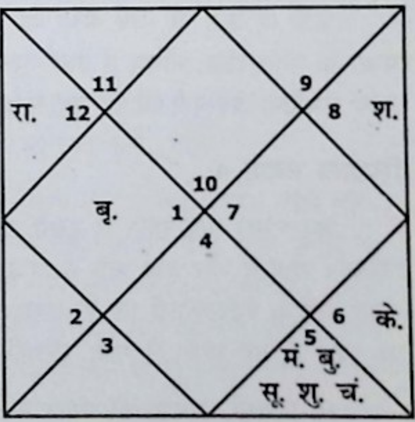

इन दोनों घटनाओं में अधिकतर ग्रह एक ही राशि में थे और जब चन्द्रमा भी उस राशि में आया, तब अत्याधिक वर्षा हुई।

अन्य उदाहरण:

1. 8 जनवरी, 1989 को जब धनु राशि में स्थित सूर्य, शनि और शुक्र के साथ चन्द्रमा शामिल हुआ तो दिल्ली सहित पूरे उत्तर भारत में सर्दी की भंयकर वर्षा हुई। सामान्य मौसम में इस प्रकार के परिवर्तन के लिए पांच अशुभ ग्रहों, सूर्य, मंगल, शनि, राहु एवं केतु में से कम से कम दो ग्रहों की दो जलीय ग्रहों चन्द्रमा और शुक्र से युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध होना आवश्यक है।
2. 15 अप्रैल, 1983 को सूर्य, चन्द्रमा, बुध और मंगल पर शनि, तुला राशि से दृष्टि प्रभाव डाल रहा था उस दिन भी पूरे उत्तर भारत में भयंकर वर्षा हुई थी। 1987 में जब प्रत्येक व्यक्ति सूखे की चर्चा कर रहा था उस समय श्री के.एन. राव ने **'स्टेटसमेन'** नामक समाचार पत्र में एक पत्र के माध्यम से यह भविष्यकथन किया था कि सूखे का यह दौर टूटेगा।

इससे यह स्पष्ट हो गया होगा कि जब भी एक राशि में कई ग्रहों की युति हो तो मौसम में उतार-चढ़ाव होने की संभावनायें प्रबल हो जाती हैं और जब चन्द्रमा उनके साथ शामिल होगा तो मौसम का उतार-चढ़ाव अधिक स्पष्ट हो जायेगा।

सिद्धान्त संख्या 3:

कोई भी ऋतु हो, जब कभी भी चन्द्रमा, शुक्र से युति करेगा अथवा शुक्र से पंचम या नवम होगा, मौसम में उतार-चढ़ाव आयेगा। वर्षा ऋतु में यदि वर्षा होने की अन्य स्थितियां बन रही हो तो यह स्थिति अच्छी वर्षा देती है।

सिद्धान्त संख्या 4:

जब मंगल एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है तो मौसम में प्रत्यक्ष परिवर्तन होता है और वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है। मंगल वर्षा करने में सक्षम, सबसे अधिक शक्तिशाली ग्रह है। उदाहरण के लिए 2002 की निम्नलिखित तिथियों पर ध्यान दें जब मंगल ने राशि परिवर्तन किया।

- 10 जनवरी, 2002 को मंगल ने मीन राशि में प्रवेश किया,
- 21 फरवरी को मेष राशि में प्रवेश किया,

- 5 अप्रैल को वृषभ राशि में प्रवेश किया,
- 19 मई को मिथुन राशि में प्रवेश किया,
- 4 जुलाई को कर्क राशि में प्रवेश किया,
- 20 अगस्त को सिंह राशि में प्रवेश किया।
- 6 अक्टूबर को कन्या राशि में प्रवेश किया,
- 22 नवम्बर को तुला राशि में प्रवेश किया।

वर्षा ऋतु में वर्षा के साथ-साथ इन दिनों में मौसम के परिवर्तन को भी देखा गया।

मेदिनी ज्योतिष में मंगल का यह गोचर प्रमुख दुःखद घटनाओं और अग्निकाण्डों से भी जोड़ा जाता है जो ग्रह की अन्य युतियों पर निर्भर होता है।

सिद्धान्त संख्या 5:

इसी प्रकार जब कोई बड़ा मुख्य ग्रह राशि परिवर्तन करता है तो महत्वपूर्ण घटनाओं का कारण बनता है। मौसम के विषय में यह किसी दृष्टि होने वाले मौसमीय परिवर्तन का कारण बनता है।

सन् 2002 में यह देखा गया कि जब 28 फरवरी को राहु ने वृषभ राशि में प्रवेश किया तो भयानक तूफान आया और गुजरात एवं देश के अन्य भागों में जातीय दंगे हुए।

5 जुलाई, 2002 को बृहस्पति ने कर्क राशि में प्रवेश किया जो देश में अत्याधिक गर्मी पड़ी और पाकिस्तान से युद्ध की बात होने लगी।

5 मई, 2008 को राहु ने राशि परिवर्तन किया और उसका जलीय राशि मकर में प्रवेश हुआ। इस समय पूरे विश्व के मौसम में उतार-चढ़ाव देखा गया। संसार के विभिन्न भागों में चक्रवात और तूफान आये। बंग्लादेश और म्यान्मार को इसके अत्याधिक दुष्प्रभाव देखने पड़े। म्यान्मार में 'नरगिस' नाम का चक्रवात आया जिसने इसके एक बड़े शहर येनगांव को बुरी तरह से बरबाद कर दिया। इसने लाखों-करोड़ों लोगों को घर से विहीन कर दिया और बिजली एवं पानी को लुप्त कर दिया। एक लाख बीस हजार से भी अधिक लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और म्यान्मार के सैनिक शासन के इतिहास में पहली बार, पीड़ितों तक राहत पहुंचाने एवं

उनकी पुर्नस्थापना करने के लिए शासन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहायता के लिए विदेशियों के आगे हाथ फैलाना पड़ा।

बुध और अन्य बड़े ग्रहों का राशि परिवर्तन सामान्यत: आंधी-तूफान, वर्षा, बिजली कडकने, गर्मी, बादलों की गर्जन के साथ-साथ राजनैतिक अस्थिरता की पूर्वसूचना देता है।

सिद्धान्त संख्या 6:

जब कभी कोई वक्री ग्रह अपनी गति में परिवर्तन करके सीधी गति में आता है तो तापमान, आर्द्रता आदि में परिवर्तन आता है और वह सब होता है जिसे मौसमविज्ञानी **डिस्ट्रबेन्स** कहते हैं। लेकिन सभी ग्रहों में से बुध को अकेले ही इस पूर्वानुमान के लिए और मौसम के दृष्टिगोचर होने वाले परिवर्तन के अनुभव के लिए चुना जा सकता है।

शुक्र: अन्य ग्रहों में शुक्र एक ऐसा ग्रह है जिसके गति परिवर्तन करने से मौसम में कोई परिवर्तन नहीं आता है बशर्ते कि अन्य स्थितियां भी परिवर्तन न होने के अनुकूल हों। मौसम सम्बन्धित ज्योतिषशास्त्र में शुक्र का सदैव ही एक विशेष अर्थ रहा है और यहां तक कि शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव के लिए इसका गहन अध्ययन किया जा सकता है। शुक्र, देवता भी है, मनुष्य भी और रासक्ष भी तथा इसका अस्त और उदय होना विशेष विचारणीय होता है।

कुछ अन्य सिद्धान्त:

1. यदि चन्द्रमा बली होकर किसी राशि में स्थित हो और अपने राशीश से दृष्ट हो तो वर्षा होती है।
2. दक्षिण नाड़ी (प्रचण्ड, पवन एवं दहन) में अधिक ग्रहों का स्थित होना वर्षा का कारण होगा।
3. यदि उत्तर नाड़ी (नीर, जल एवं अमृत) में अधिक ग्रह हों तो वर्षा नहीं होगी।
4. यदि बुध एवं शुक्र, बुध एवं बृहस्पति और शुक्र एवं बृहस्पति, एक साथ किसी भी राशि में हों तो बादल बनते हैं। यदि यह युति अनुकूल राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो वर्षा देती है। यदि प्रतिकूल राशि में होती है और अशुभ ग्रहों से दृष्ट होती है तो तेज हवायें चलती हैं एवं मामूली वर्षा होती है।

5. यदि शुक्र किसी धीमी गति के ग्रह के पीछे होता है तो हवाओं का कारण बनता है। पवन नाड़ी में अधिक ग्रहों के होने के कारण भंयकर और विनाशकारी हवायें चलती हैं।

6. 'यदि आकाश के ढ़के होने के कारण चन्द्रमा एवं रोहिणी नक्षत्र की युति दृष्टिगोचर नहीं होती है तो बहुत सी बिमारियों का भय होता है लेकिन पृथ्वी पर मेघ आर्शीवाद के रुप में अत्याधिक जल बरसाते हैं और फसलों का उत्पादन भी खूब होता है'- वराहमिहिर।

7. शकुन शास्त्रानुसार यदि सांयकाल में पशुओं के चारागाह से घर लौटते समय जानवरों के समूह में बैल या साण्ड या काले रंग का जानवर, जैसे कि बकरी, गाय आदि आगे हो तो उस वर्ष प्रचुर मात्रा में वर्षा होगी, और यदि सफेद रंग का जानवर हो तो वर्षा नहीं होगी।

8. शनि से पंचम, सप्तम और नवम स्थान में चन्द्रमा का होना वर्षा का कारण होता है।

9. चन्द्रमा का कर्क, मकर और मीन राशि में स्थित होना वर्षा के लिए अच्छा है।

10. बृहस्पति का सूर्य और शुक्र से आगे होना अत्याधिक ठण्ड का कारण होता है।

एक विशेष दिन एक अभिमंत्रित मिट्टी के पवित्र बर्तन में बीज बोया जाता है। उन बीजों के जमने के समय और कोपलों के रंग, कद एवं कम्पन से उस बीज एवं क्षेत्र विशेष में होने वाली फसलों की गुणवता एवं मात्रा का अनुमान लगाया जाता है।

वर्षा में अवरोध पैदा करने वाली स्थितियां:

वर्षा में अवरोध उत्पन्न करने वाले लगभग 31 ज्योतिषीय स्थितियां हैं। इनमें पांच अतिमहत्वपूर्ण स्थितियां हैं जिनका उल्लेख आगे किया गया है।

1. जब बुध और शुक्र के मध्य सूर्य होता है तो वर्षा में अवरोध पैदा होता है अर्थात वर्षा ऋतु में कई दिनों तक वर्षा नहीं होती है। जब यह स्थिति 1988 के अगस्त माह के अन्तिम और सितम्बर के प्रारम्भिक दिनों में बनी थी तो भारत मौसम विज्ञान विभाग ने अतिशीघ्रता से यह निर्णय कर दिया कि मानसून काल समाप्त हो गया है। मौसम विज्ञान विभाग के इस निर्णय पर बांध नियत्रंण निगम सहित सभी सम्बन्धित विभागों को एक निश्चित सीमा तक बांधों में

पानी भरने का आदेश जारी कर दिया गया। यह एक भारी गलती थी। इसके कुछ दिनों बाद ही अत्याधिक वर्षा हुई जिससे भाखड़ा नांगल बांध खतरे में पड़ गया था और निगम को अतिरिक्त जल छोड़ना पड़ा जिसने पंजाब एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में विनाश कर दिया। साथ ही पंजाब के आंतकवादियों को मेजर जरनल कुमार, निदेशक, भाखड़ा बांध निगम को गोली मारने का एक कारण मिल गया।

यदि भारत मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक बुध एवं शुक्र के मध्य सूर्य के होने की इस सौरमण्डलीय घटना के कारण वर्षा में पड़ने वाले अवरोध से परिचित होते तो शायद इस विनाश को रोका जा सकता था।

2. यदि बृहस्पति और मंगल, एक-दूसरे से 30 अंशों के मध्य हों तो यह वर्षा में अवरोध उत्पन्न करते हैं।

3. सबसे अशुभ स्थिति तब उत्पन्न होती है जब वर्षा ऋतु में मंगल, सूर्य से आगे होता है। यह स्थिति सन् 2002 में उत्पन्न हुई थी जिसके कारण वर्षा में देरी हुई। इस घटना को सन् 2002 के आर्द्रा प्रवेश चक्र में वर्णित किया गया है।

4. मंगल का स्वाति, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, आर्द्रा, रोहिणी और उत्तरफाल्गुनी नक्षत्रों में स्थित होना वर्षा के लिए सहायक नहीं होता है।

5. मंगल, बुध और शनि का शुक्र से आगे होने के कारण हवायें तो चलती हैं लेकिन वर्षा नहीं होती है।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित स्थितियां भी वर्षा न होने का इशारा करती हैं:

1. यदि बादल दक्षिण-पूर्व दिशा में उमड़ें तो अचानक अग्निकाण्ड होंगे, दक्षिण में उमड़ें तो फसलों में गिरावट और दक्षिणी-पश्चिम में उमड़ें तो फसलों का उत्पादन अत्याधिक कम होगा।

2. यदि बादल रुखे एवं छोटे हों और हवा से इधर-उधर होकर फैल रहे हों, ऊंट, काग, प्रेत, वानरों अथवा अन्य निन्दित आकार वाले शब्दरहित मेघ उदय हों तो शुभ नहीं होता है तथा न वर्षा होती है और न समृद्धि होती है।

3. यदि रोहिणी योग के दिन उल्का गिरे, बिजली, वज्रपात, दिग्दाह, निर्घात, भूकंप आदि असामान्य प्राकृतिक घटनायें हों तो यह वर्षाकाल में वर्षा न होने के शकुन हैं।यदि मेघ बनने के समय कई पापी ग्रहों का अशुभ प्रभाव होगा तो ओलावृष्टि और बिजली गिरने जैसी घटनायें होंगी।

ऐसी स्थितियां जिनके कारण तुरन्त वर्षा होती है:

1. यदि वर्षा ऋतु में उदय होता हुआ सूर्य भी चमकदार न दिखे अथवा पिघले हुए सोने के समान दृष्ट हो अथवा यह दिन के शिराबिन्दु पर अत्याधिक गर्मी के कारण जलाये तो उस दिन वर्षा होएगी।

2. स्वादहीन पानी, सफेद एवं नीला आसमान, नमक का नम होना, आनन्ददायक हवायें, मछलियों का एकाएक किनारे पर गिरना या टक्कर मारना और मेंढ़कों का बार-बार टरटराना शीघ्र वर्षा होने को इंगित करते हैं।

वर्षा का पूर्वानुमान:

1. इस सिद्धान्त में ज्योतिषीय गणना द्वारा नवम्बर-दिसम्बर मास में जिस दिन मेघों का गर्भाधान हुआ हो, जिसकी चर्चा पहले की है, उसे ज्ञात करने के बाद उसमें 195 दिन का योग करके, मानसून की बौछार होने के प्रथम दिन को प्राप्त किया जाता है। यद्यपि इस गणना द्वारा सही दिन ज्ञात किया जा सकता है लेकिन उसमें दो दिन आगे-पीछे हो सकते हैं।

2. यह ज्ञात करने के लिए कि ग्रह किस प्रकार से हवायें, आर्द्रता, नमी और बादलों के बनना वर्षा को प्रभावित करेंगे, चार ज्योतिषीय कुण्डलियां बनायी जाती हैं।

3. स्थानीय अथवा क्षेत्रीय वर्षा के लिए मई-जून में स्थानीय हवाओं एवं बादलों का निरुपण किया जाता है।

जानवरों का व्यवहार:

1. वर्षा ऋतु में यदि आसमान बादलों से घिरा हो और आपका पालतू कुत्ता बाहर जाने के लिए मना कर दे तो यह वर्षा होने का इशारा है।

2. यदि कीट-पंतगें लगभग 400 फुट की उंचाई पर उड़ रहीं हों तो यह वर्षा अथवा आंधी को इंगित करते हैं।

3. यदि मकड़ी घर के बाहर जाल बुनना शुरु कर दे तो यह वर्षाकाल समाप्त होने की सूचना है।

4. मेंढ़कों का टरटराना वर्षा होने की निशानी है।

5. मोर का प्रमुदित्त होकर चिल्लाना बादलों के बनने को सूचित करता है।
6. बादलों की जोरदार गड़गड़ाहट के बाद मोर, चातक पक्षी और मेंढ़कों के चिल्लाने की आवाजें आयें तथा बादल भूमि के निकट आकर बहें तो अत्याधिक वर्षा होगी।

मानसून का अध्ययनः

इसको चरणबद्ध रुप में निम्नलिखित ढंग से करना चाहिएः

1. दक्षिणायन (17 जुलाई से 13 जनवरी के मध्य का समय) के अन्त में मेघों के गर्भाधान (इम्प्रेग्नेशन आफ क्लाउड्स) के उस दिन विशेष की, जब चन्द्रमा एक नक्षत्र विशेष में प्रवेश करता है सूक्ष्मता से अध्ययन करने की आवश्यकता है। यह भारतीय मानसून के पूर्वानुमान के लिए करना चाहिए।
2. इसी प्रकार सर्दियों की वर्षा के लिए उत्तरायण (14 जनवरी से 16 जुलाई के मध्य का समय) में हुए गर्भाधान का निरीक्षण-परीक्षण करना चाहिए।
3. ज्योतिषीय शोध का अगला चरण चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा तिथि है जो प्रत्येक वर्ष 13 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य आती है।
4. उसके बाद आषाढ़ मास (जून-जुलाई) का रोहिणी योग है। इस माह में प्रत्येक दिन, वायु परीक्षण करना और हवा के बहाव का उचित प्रकार से लेख प्रमाण बनाना आवश्यक है। पूरे देश में मानसून की स्थिति का अनुमान लगाने के लिए ये परीक्षण देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग होने चाहिए। दिनमान को लगभग तीन घण्टों के चार भागों में विभक्त करना चाहिए। इस प्रकार से प्राप्त दिनमान का प्रत्येक भाग एक **प्रहर** कहलाता है। प्रथम प्रहर में किये गए परीक्षण सावन मास का परिणाम देगा। दूसरे प्रहर का परीक्षण भाद्रपद मास का, तृतीय प्रहर का परीक्षण अश्विन मास का और चतुर्थ प्रहर का परीक्षण, कार्तिक मास का परिणाम देगा। जिस प्रहर में पक्षी एवं जानवर सूर्य की ओर पीठ करके प्रमुदित्त होकर चिल्लायें, आसमान साफ रहे और हवायें दूषित न हों, उस प्रहर द्वारा इंगित मास में अच्छी वर्षा होगी।
5. अन्तिम चरण में वर्षा के पूर्वानुमान का निर्णय करने के लिए आर्द्रा प्रवेश की कुण्डली बनाकर इसमें उपस्थित अवरोधों को दिमाग में रखना चाहिए।

सन् 1987 में आर्द्राप्रवेश कुण्डली में चन्द्रमा निर्जला राशि में था। ग्रहों की स्थिति के आधार पर किया गया पूर्वानुमान इस प्रकार था:

1. सभी केन्द्र अशुभ ग्रहों के द्वारा गृहीत हैं इसलिए समयानुसार वर्षा नहीं होगी।
2. मंगल, पापी ग्रहों के द्वारा दृष्ट है इसलिए वर्षा विहीन समयावधियां होंगीं।
3. 24 अगस्त (भाद्रपद अमावस्या) तक सूर्य, मंगल के पीछे रहेगा जो अच्छी वर्षा में सहायक नहीं है लेकिन सूखा अवश्य दिखाता है।

"सावन में आगे चले रविरथ से कुजरे, भादों कृष्णा पंखलो वर्षा स्वल्प दिखाए।" "आगे मंगल पीछे भान, वर्षा होवे ओस समान।" ये पंक्तियां 24 अगस्त तक मंगल के सूर्य से आगे होने का दर्शाती हैं।

वर्षा की तारीखों के पूर्वानुमान के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों का अनुसरण करना चाहिए:

1. मई के अन्त में जब सूर्य मृगशिरां नक्षत्र में प्रवेश करता है तो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून केरल के समुद्र तट पर दस्तक देना प्रारम्भ कर देता है। जब सूर्य प्रत्येक वर्ष आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है (23-23 जून के आसपास) तो मानसून उत्तर भारत की ओर आगे बढ़ना प्रारम्भ कर देता है।
2. सितम्बर के मध्य में जब सूर्य कंन्या राशि में प्रवेश करता है तो मानसून उत्तर भारत से पलायन करना प्रारम्भ कर देता है।
3. जब संूर्य हस्त नक्षत्र में प्रवेश करता है तो इसके कारण बिहार में वर्षा होती है जिसे बिहार में **हथिया वर्षा** कहा जाता है लेकिन इस समय तक मानसून पूरे उत्तर भारत से पलायन कर चुका होता है।
4. जब सूर्य चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, तो इसके कारण कभी-कभी ही वर्षा होती है अन्यथा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून पूर्ण रुप से उत्तर भारत से पलायन कर चुका होता है। भारतीय परम्परा में यह चातक नाम के पक्षी से सम्बन्धित है जिसके विषय में यह माना जाता है कि वह स्वाति नक्षत्र में होने वाली वर्षा की बूंदों की प्रतीक्षा करता है।

5. सूर्य की शनि से युति के कारण उत्तर भारत में शीत लहर चलती।

सूर्य के धब्बों की मौसम में भूमिका:

विज्ञान की नवीन शोधों ने अत्याधिक गर्म मौसम और सूर्य के धब्बों के मध्य सम्बन्ध सिद्ध किया है। अब यह सिद्ध हो गया है कि सूर्य के धब्बों का सीधा सम्बन्ध पृथ्वी पर होने वाली अत्याधिक गर्मी से है। सूर्य के धब्बों में से कुछ धब्बे व्यास में लगभग 50000 मील तक बड़े हैं जो सूर्य की सतह पर इधर-उधर घूमते हैं और अपनी इस अस्थिर स्थिति के कारण सिकुडते एवं फैलते रहते हैं।

13 अप्रैल, 2003 को समाचार पत्रों में यह समाचार छपा था कि अत्याधिक गर्म मौसम सूर्य और पृथ्वी के उस सम्बन्ध के कारण हुआ है जिसके विषय में पूर्व में अध्ययन नहीं किया गया है। इसका पृथ्वी के मौसम पर ग्रीनहाउस की गैसों से भी अधिक प्रभाव है। 18 मार्च से 23 मार्च के मध्य हुये मुख्य शोध में सूर्य के धब्बों और पृथ्वी के मध्य एक गहरा सम्बन्ध देखा गया जिसने बिना किसी संदेह के पृथ्वी पर होने वाले गर्म मौसम में इनकी भूमिका का स्थापित किया। ब्रिटेन के एक वैज्ञानिक ई डब्लू मॉउन्डर्स ने भी इससे पूर्व अपने शोध में सूर्य के धब्बों और पृथ्वी पर होने वाले गर्म मौसम के मध्य सम्बन्ध को स्थापित किया था। ग्रहों के मौसम पर पड़ने वाले प्रभाव को सिद्ध करने के लिए विज्ञान की एक नई शाखा सौर-भूंकम्प विज्ञान महत्वपूर्ण कदम उठा रही है।

स्वाति और आषाढ़ योग: जिस प्रकार चन्द्रमा के साथ रोहिणी योग का फल है वैसे ही स्वाति और आषाढ़ नक्षत्र के साथ चन्द्रमा के योग का फल है। स्वाति नक्षत्र में रात्रि के पहले अंश में वर्षा हो तो सभी प्रकार के धान्यों का उत्पादन बढ़ता है, दूसरे भाग में हो तो तिल, मूंग, उड़द और तीसरे भाग में हो तो गर्मियों के धान्य बढ़ते हैं लेकिन सर्दियों की खेती नहीं होती है।

यदि इस योग के पहले भाग में वर्षा हो तो अच्छी वर्षा होती है, दूसरे भाग में होने से सर्प एवं कीड़े होते हैं तथा मध्य एवं अन्तिम भाग में वर्षा हो तो अच्छी वर्षा होती है। यदि इस योग के दिन आठों प्रहर वर्षा हो तो वर्षाकाल में भी अति वर्षा होती है।

यदि इस योग में सूर्यास्त के समय दक्षिण-पूर्व से गर्म हवायें चलें अथवा तेज हवायें दक्षिण-पश्चिमं से चलें तो यह भयानक अकाल का संकेत हो सकता है।

मण्डल:

सूर्य का विभिन्न राशियों में प्रवेश करना संक्रान्ति कहलाता है। संक्रान्ति के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र विशेष में होता है वह इसके मण्डल को निश्चित करता है। यह मास विशेष में होने वाली वर्षा के स्तर को निश्चित करता है।

क्र.सं.	मण्डल	नक्षत्र
1	अग्नि	भरणी, कृतिका, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद,विशाखा
2	वायु	अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति
3	वरुण	आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रेवती
4	महेन्द्र	रोहिणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा

वरुण और महेन्द्र मण्डल, वर्षा को उत्साहित करने वाले होते हैं। अग्नि मण्डल वर्षा का निरुत्साहित करता है जबकि वायु मण्डल तेज हवाओं एवं आंधी को उत्साहित करता है।

आर्द्राप्रवेश चक्र:

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करते ही उत्तर भारत में वर्षाकाल प्रारम्भ हो जाता है। इस समय की कुण्डली मानसून के बल और दिशा को स्पष्ट दर्शाती है। सूर्य का आर्द्रा प्रवेश का समय सभी पंचागों और एफीमैरिज में स्पष्ट दिया होता है। सामान्यतः दिल्ली को जन्मस्थान मानकर यह कुण्डली बनाई जाती है यद्यपि कुछ ज्योतिषाचार्य वाराणासी को स्थान मानकर कुण्डली बनाते हैं।

वर्षा काल सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से लेकर स्वाति नक्षत्र में प्रवेश करने तक चलता है। कभी-कभी सूर्य के स्वाति नक्षत्र में होने पर वर्षा हो जाती है जो रवि, चने, सरसों आदि की फसलों के लिए अतिलाभदायक होती है।

आर्द्राप्रवेश चक्र को कैसे पढ़ें:

इस चक्र या कुण्डली की व्याख्या करने के लिए राशियों और ग्रहों की भूमिका समझना आवश्यक है। भचक्र की बारह राशियों को निम्नलिखित चार तत्वों में वर्गीकृत किया गया है:

1. **अग्नि तत्व राशियां** - मेष, सिंह और धनु।
2. **पृथ्वी तत्व राशियां** - वृषभ, कन्या और मकर।
3. **वायु तत्व राशियां** - मिथुन, तुला और कुंभ।
4. **जल तत्व राशियां** - कर्क, वृश्चिक और मीन।

प्रत्येक वर्ग की विभिन्न राशियों मे जल की मात्रा भी अलग-अलग होती है। अग्नि तत्व राशियों में से मेष में 25 प्रतिशत, सिंह में शून्य प्रतिशत और धनु में 50 प्रतिशत जल होता है।

पृथ्वी तत्व राशियों में वृषभ में 50 प्रतिशत, कन्या में शून्य प्रतिशत और मकर में 100 प्रतिशत जल होता है। वायु तत्व राशियों में मिथुन में शून्य, तुला में 25 प्रतिशत और कुंभ में 50 प्रतिशत जल होता है। जल तत्व राशियों में कर्क और मीन जल से पूर्ण होती हैं जबकि वृश्चिक में 25 प्रतिशत जल होता है।

वर्षा का पूर्वानुमान करते समय विभिन्न राशियों में कितना जल होता है इस बात को दिमाग में रखना आवश्यक है।

विभिन्न ग्रहों के तत्व और उनमें जल की मात्रा निम्नलिखित प्रकार से होती है:

ग्रह	तत्व	**जल की स्थिति**
सूर्य	अग्नि	शुष्क, जल से विहीन होता है।
चन्द्रमा	जल	जल से लबालब होता है।
मंगल	अग्नि	शुष्क, जल से विहीन होता है।
बुध	पृथ्वी	जल से लबालब होता है।
बृहस्पति	आकाश	जल से लबालब होता है।
शुक्र	जल	जल से लबालब होता है।
शनि	वायु	शुष्क और हवा युक्त होता है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शुभ ग्रह चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र वर्षा के लिए शुभ हैं। यद्यपि शनि, सूर्य और मंगल सूखा के कारक हैं लेकिन आत्मा के कारक होने के कारण सूर्य का वर्षा पर अधिक अशुभ प्रभाव नहीं होता है। सूर्य और मंगल का योग अथवा मंगल का सूर्य से आगे होना वर्षा के लिए अच्छा नहीं होता है। घाघ, जो एक कवि थे उनका कहना था कि **"मंगल रथ आगे चले, पीछे चले जो सूर, मन्द वृष्टि तब जानिये पड़से सकले शूर।"**

सूर्य और शनिः यदि किसी वर्ष गर्मियों में सूर्य और शनि एक ही राशि में युति करे तो उस वर्ष अत्याधिक गर्मी होती है तथा यदि सर्दियों में एक ही राशि में होते हैं तो उस वर्ष अत्याधिक सर्दी होती है। शनि हवाओं और शुष्कता का कारक है जो आंधी-तूफान आदि लाता है। यदि यह वायु नाड़ी में होता है तो बादलों को उड़ा कर ले जाता है। यदि शनि जलीय नाड़ी में होता है तो यह आंधी और वर्षा का कारण होता है विशेषकर यदि जलीय ग्रह के साथ युति करे अथवा जलीय ग्रहों से दृष्ट हो तो यह प्रभाव अधिक होता है। अत: वर्षा के विषय में पूर्वानुमान कहते समय राशियों और उनमें स्थिति ग्रहों के संयुक्त प्रभावों का भी विचार करना चाहिए।

कुण्डली में दिशायें:

कुण्डली के विभिन्न भावों से आठ दिशाओं का विचार किया जाता है। लग्न भाव पूर्व, दशम भाव दक्षिण, सप्तम भाव पश्चिम और चतुर्थ भाव उत्तर दिशा को इंगित करते हैं। इन चारों के मध्य उत्तर-पूर्व, उत्तर-दक्षिण आदि चार उप-दिशायें होती हैं। विभिन्न दिशाओं में स्थित विभिन्न क्षेत्र, प्रदेश आदि इस प्रकार से हैं।

1. पूर्व (प्रथम भाव)	बंगाल, बिहार, झारखण्ड और पूर्वी मध्यप्रदेश।
2. उत्तर-पूर्व (द्वितीय एवं तृतीय भाव)	भूटान, असम, मेघालय आदि।
3. उत्तर (चतुर्थ भाव)	दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, नेपाल, तिब्बत, जम्मू-कश्मीर का भाग आदि।
4. उत्तर-पश्चिम (पंचम व षष्टम भाव)	बलूचिस्तान, रावलपिण्डी, पेशावर, अफगानिस्तान आदि।
5. पश्चिम (सप्तम भाव)	गुजरात, राजस्थान, पश्चिमी मध्यप्रदेश, सिंध, पश्चिमी पंजाब, मुल्तान आदि।
6. दक्षिण-पश्चिम (अष्टम व नवम भाव)	केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पश्चिमी समुद्री तट।
7. दक्षिण (दशम भाव)	तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश का कुछ भाग।
8. दक्षिण-पूर्व (एकादश एवं द्वादश भाव)	उड़ीसा, बंगाल एवं आन्ध्रप्रदेश का कुछ भाग, पूर्वी तट।

यदि आर्द्रा प्रवेश कुण्डली के सभी केन्द्र पापी ग्रहों के द्वारा गृहीत हों तो अच्छी वर्षा नहीं होगी। इसके विपरीत यदि जल तत्व राशि का लग्न उदय होता है जिसमें चन्द्रमा स्थित हो और अन्य शुभ ग्रह बृहस्पति, शुक्र एवं बुध केन्द्रों में स्थिति हों तो अत्याधिक वर्षा होती है।

यदि मंगल अन्य पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो यह वर्षाकाल में कई दिनों तक वर्षा नहीं होने देगा। यदि सूर्य, मंगल के पीछे हो तो वर्षा नहीं होगी। यदि सूर्य, शुक्र एवं बुध, ये तीनों शनि एवं मंगल के मध्य हों तो विश्व के बाजार में त्राही-त्राही मच जाती है जैसा कि 8 अक्टूबर से 22 अक्टूबर, 1987 में हुआ था जब अमेरिका में वॉल स्ट्रीट में भारी गिरावट आई थी। भारत के पहाड़ी भू-भागों में बादल थे और बूंदा-बांदी हो रही थी। जब मंगल उदय हुआ तो इसके कारण उत्तर भारत में ओलावृष्टि और वर्षा हुई।

उदाहरण कुण्डली: 22 जून, 1982, 12:28 सांय

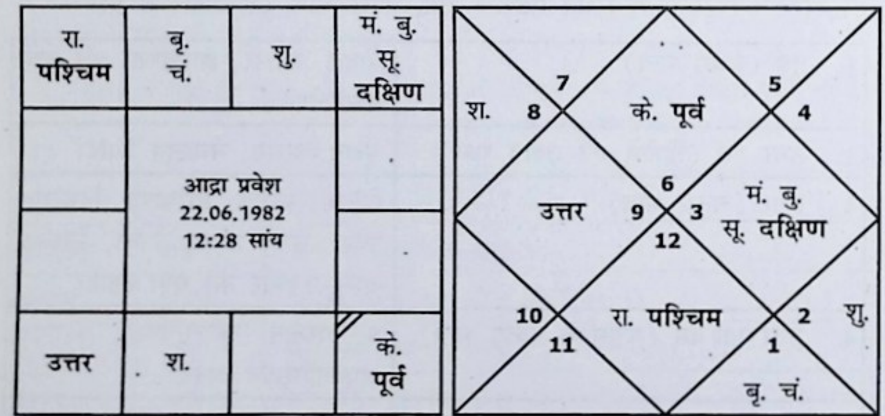

उपरोक्त कुण्डली में आर्द्रा प्रवेश के समय सूर्य और मंगल एक साथ युति करके स्थित थे इसलिए उस समय कोई वर्षा नहीं हुई। मंगल, सूर्य से आगे कर्क में 29 जून को गया था। आइये अन्य सिद्धान्तों को इस कुण्डली पर लगाते हैं।

पूर्वी दिशा-लग्न: लग्न में पूर्वी दिशा को इंगित करते हुए कन्या राशि उदय हो रही है। कन्या राशि जलहीन राशि है। नवांश कुण्डली में मेष राशि उदय हो रही है जो लग्नेश मंगल से दृष्ट है। यह पुनः गर्मी और शुष्क मौसम को दर्शाता है। आर्द्रा प्रवेश के समय बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश में गर्मी होगी। इन क्षेत्रों में कोई वर्षा नहीं होगी और गर्मियों का समय अत्याधिक गर्म होगा।

यहां वर्षा की कमी होगी और उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान में वर्षा देरी से होगी जिसके कारण सूखे का डर होगा।

उत्तरपूर्व दिशाः असम, भूटान और उत्तरी पूर्वी भागों में प्रचुर मात्रा में वर्षा होगी क्योंकि शनि इस दिशा में है और बृहस्पति, चन्द्रमा एवं शुक्र की दृष्टि भी उत्तरपूर्व दिशा में है। यहां तेज हवाओं के साथ अधिक वर्षा होगी। इस क्षेत्र में तुला और वृश्चिक राशियां हैं। तुला राशि 25 प्रतिशत जल के साथ वायु तत्व राशि है और वृश्चिक राशि भी 25 प्रतिशत जल के साथ जल तत्व राशि है।

उत्तरः आर्द्रा चक्र पूरे उत्तर भारत के लिए है। उत्तर दिशा में धनु राशि है जो अग्नि तत्व होने के साथ-साथ 50 प्रतिशत जल अपने अन्दर समाये हुए होती है। धनु राशि अपने स्वामी बृहस्पति से दृष्ट है जो जलीय ग्रह है और यह एक अन्य जलीय ग्रह चन्द्रमा से युति करके बैठा है। यद्यपि यह वर्षा के लिए अच्छा है लेकिन धनु राशि पर मिथुन राशि में बैठे सूर्य, बुध और मंगल की दृष्टि देरी से वर्षा देगी। मिथुन राशि भी जलहीन राशि है इसलिए वर्षा की कमी होगी।

उत्तरपश्चिमः इस दिशा में मकर एवं कुंभ राशियां हैं जो जलयुक्त राशियां हैं। मकर में 100 प्रतिशत जल होता है जबकि कुंभ राशि में 50 प्रतिशत जल होता है। इस दिशा में मंगल और शनि की दृष्टि है। यद्यपि शनि की दृष्टि के कारण यहां वर्षा तेज हवाओं के साथ होगी लेकिन मंगल की दृष्टि के कारण वर्षा में विलम्ब होगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और कश्मीर में देरी से लेकिन अच्छी वर्षा होगी जिसके परिणाम स्वरुप फसलों का उत्पादन भी अच्छा होगा। उत्तर प्रदेश के पूर्वी और मध्य के क्षेत्रों में वर्षा की कमी होगी और फसलों की हानि होगी।

पश्चिमः पश्चिम में मीन राशि है जो 100 प्रतिशत जल के साथ होती है और इसमें राहु स्थित है। इसलिए पश्चिम के क्षेत्रों में तेज हवाओं और आंधी के साथ अच्छी वर्षा होगी। राहु तेज हवाओं और आंधी-तूफान का प्रतिनिधित्व करता है।

दक्षिणीपश्चिमः इस दिशा में चन्द्रमा और बृहस्पति के साथ-साथ शुक्र भी स्वगृही होकर स्थित हैं। शुक्र पर शनि की दृष्टि है। इसके परिणाम स्वरुप महाराष्ट्र और गुजरात में आंधी-तूफान के साथ बहुत अधिक एवं अच्छी दक्षिणी-पश्चिमी वर्षा होगी।

दक्षिणः दक्षिण दिशा में मिथुन राशि है जिसमें सूर्य, मंगल और बुध स्थित हैं इसलिए यहां के क्षेत्रों में बहुत कम वर्षा होगी।

दक्षिणपूर्वः इस दिशा में शनि और बृहस्पति का दृष्टि प्रभाव है। इस दिशा में जल तत्व राशि कर्क है जो 100 प्रतिशत जल के साथ होती है और सिंह राशि है जो जलविहीन होती है। इस दिशा के क्षेत्रों, आन्ध्रा एवं उड़ीसा में भी आंधी-तूफान के साथ अच्छी वर्षा होगी है। यद्यपि अच्छी वर्षा होना शुभ संकेत है लेकिन आंधी-तूफान से जान-माल की भी हानि होगी।

उदाहरण कुण्डली: 22 जून, 2002, 08:50 प्रात:

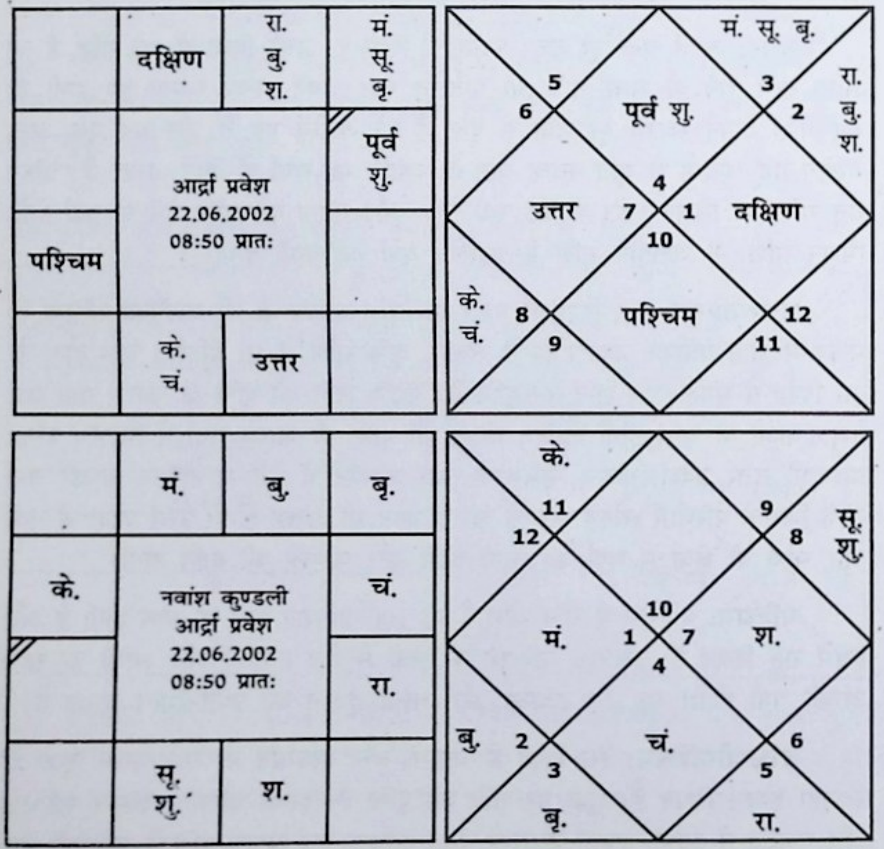

आर्द्रा प्रवेश 22.06.2002,सप्तनाड़ी चक्र

नाड़ी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
नाड़ी की प्रकृति	भयंकर तीव्र	वायुपूर्ण	गर्म	मौसम में परिवर्तन	अच्छी वर्षा	उत्तम वर्षा	श्रेष्ठ वर्षा
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	बृहस्पति	शुक्र	बुध	चन्द्रमा
नक्षत्र (संख्या)	कृतिका (3)	रोहिणी (4)	मृगशिरा (5)	आर्द्रा (6)	पुनर्वसु (7)	पुष्य (8)	आश्लेषा (9)
ग्रह		बुध	शनि, राहु सूर्य		मंगल, बृहस्पति	शुक्र	
नक्षत्र (संख्या)	विशाखा (16)	स्वाति (15)	चित्रा (14)	हस्त (13)	उत्तरा फाल्गुनी (12)	पूर्वा फाल्गुनी (11)	मघा (10)
ग्रह	चन्द्रमा						
नक्षत्र (संख्या)	अनुराधा (17)	ज्येष्ठा (18)	मूल (19)	पूर्वाषाढ़ा (20)	उत्तराषाढ़ा (21)	अभिजित (22)	श्रवण (23)
ग्रह		केतु					
नक्षत्र (संख्या)	भरणी (2)	अश्विनी (1)	रेवती (28)	उत्तरा भाद्रपद (27)	पूर्वा भाद्रपद (26)	शत भिषज (25)	धनिष्ठा (24)

सन् 2002 में वर्षा के लिए फलकथन:

1. : लग्न में कर्क राशि, जो 100 प्रतिशत जल को समाये हुए है, उदय हो रही है जिसमें एक जलीय ग्रह शुक्र, जल नाड़ी का होकर स्थित है। ये सारी स्थितियां अच्छी वर्षा के लिए श्रेष्ठ स्थितियां हैं। लग्नेश चन्द्रमा, 25 प्रतिशत जल वाली वृश्चिक राशि में केतु के साथ है और शनि एवं बुध से दृष्ट है जो अच्छी स्थिति नहीं दर्शाता है। यद्यपि नवांश में चन्द्रमा स्वराशि में है लेकिन एक गर्म एवं शुष्क ग्रह मंगल से दृष्ट है। सप्तनाड़ी चक्र में चन्द्रमा प्रचण्ड नाड़ी में है जिसका स्वामी शनि, दहन नाड़ी में है जो वर्षा के लिए शुभ नहीं है। अतः इस वर्ष यद्यपि वर्षा तो होगी लेकिन प्रचुर मात्रा में नहीं होगी।

2. इस कुण्डली में एक अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि मंगल, सूर्य से आगे है, जिसका अभिप्राय है कि जब तक सूर्य, मंगल से आगे नहीं जाता है तब तक वर्षा में देरी होगी। चूंकि सूर्य, अगस्त के प्रारम्भ में मंगल से आगे निकलेगा इसलिए उत्तर भारत में वर्षा होने में अगस्त के प्रारम्भ तक देरी होगी।

विशेष: *सन् 2002 में मौसम विज्ञान विभाग के पूर्वानुमान कि वर्षा समय पर होगी के विपरीत बिल्कुल ऐसा ही हुआ, जो वैदिक ज्योतिषशास्त्र की प्रमाणिकता को सिद्ध करता है।*

उदाहरण कुण्डली: 22 जून, 2003, 14:58

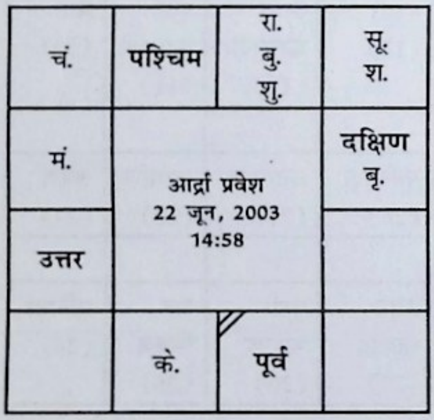

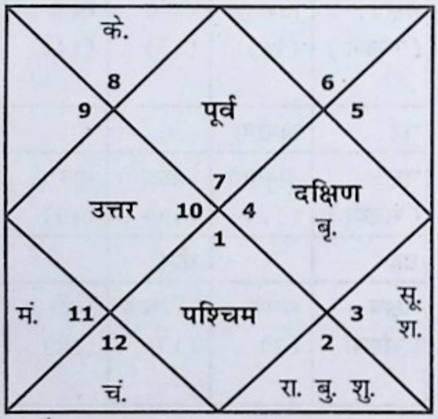

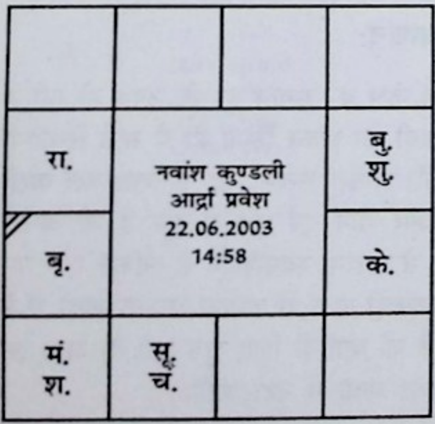

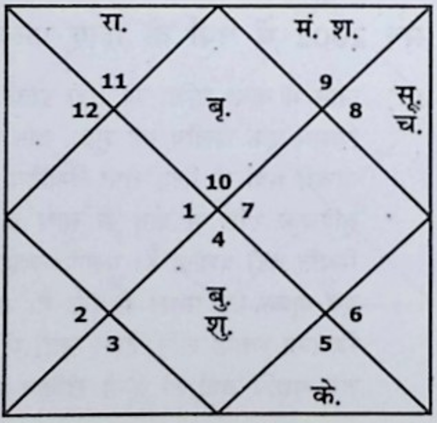

आर्द्रा प्रवेश 22.06.2002, सप्तनाड़ी चक्र

नाड़ी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
नाड़ी की प्रकृति	भयंकर तीव्र	वायुपूर्ण	गर्म	मौसम में परिवर्तन	अच्छी वर्षा	उत्तम वर्षा	श्रेष्ठ वर्षा
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	बृहस्पति	शुक्र	बुध	चन्द्रमा
नक्षत्र (संख्या)	कृतिका (3)	रोहिणी (4)	मृगशिरा (5)	आर्द्रा (6)	पुनर्वसु (7)	पुष्य (8)	आश्लेषा (9)
ग्रह	राहु	बुध, शुक्र		शनि, सूर्य			बृहस्पति
नक्षत्र (संख्या)	विशाखा (16)	स्वाति (15)	चित्रा (14)	हस्त (13)	उत्तरा फाल्गुनी (12)	पूर्वा फाल्गुनी (11)	मघा (10)
नक्षत्र (संख्या)	अनुराधा (17)	ज्येष्ठा (18)	मूल (19)	पूर्वाषाढ़ा (20)	उत्तराषाढ़ा (21)	अभिजित (22)	श्रवण (23)
ग्रह	केतु						
नक्षत्र (संख्या)	भरणी (2)	अश्विनी (1)	रेवती (28)	उत्तरा भाद्रपद (27)	पूर्वा भाद्रपद (26)	शत भिषज (25)	धनिष्ठा (24)
ग्रह				चन्द्रमा		मंगल	

कुण्डली की मुख्य विशेषतायें:

1. आर्द्रा प्रवेश की इस कुण्डली के लग्न में 25 प्रतिशत जल वाली वायु तत्व राशि तुला उदय हो रही है और लग्नेश शुक्र को मंगल दृष्ट करता है जो स्वयं जल नाड़ी में है। अत: यह दर्शाता है कि पूर्वी भारत में तेज हवाओं के साथ वर्षा होगी।

2. लग्नेश शुक्र, स्वगृही होकर एक अन्य शुभ ग्रह बुध और उच्च के राहु से युति करके वृषभ राशि में स्थित है। शुक्र, एक जलीय ग्रह है और वृषभ राशि में 50 प्रतिशत जल होता है अत: यह वर्षा के लिए अच्छा है।

3. सप्तनाड़ी चक्र में शुक्र नीर नाड़ी का स्वामी है जो अच्छी वर्षा को दर्शाता है।

4. उच्च का बृहस्पति एक जलीय राशि का होकर केन्द्र में स्थित है जो अच्छी वर्षा के एक शुभ स्थिति है।

5. चन्द्रमा 100 प्रतिशत जल वाली जलीय तत्व राशि में है जो पुनः वर्षा के लिए शुभ है।

6. लग्न में एक वायु तत्व राशि उदय हो रही है और आर्द्रा प्रवेश चक्र उत्तर भारत के वर्षाकाल को दर्शाता है अतः पूरे उत्तर भारत में तेज आंधी के साथ वर्षा होगी।

7. यद्यपि लग्नेश शुक्र और बुध, पवन नाड़ी में हैं जो हवा और आंधी-तूफान वाले मौसम को दर्शाती है लेकिन इसका स्वामी सूर्य सौम्य नाड़ी में है जो मौसम में परिवर्तन दर्शाती है।

8. पश्चिम में अग्नि तत्व राशि है जो यहां होने वाली वर्षा की कमी को दर्शाती है। मंगल 40 प्रतिशत जल वाली राशि कुंभ में स्थित होकर अष्टम भाव में स्थित लग्नेश को दृष्ट करता है जो पुनः तेज हवाओं के साथ होने वाली अच्छी वर्षा को दर्शाता है। चूंकि मंगल एक अग्नि तत्व ग्रह है इसलिए यह संभव है कि कुछ स्थानों में वर्षा की कमी हो और कुछ स्थानों में अत्याधिक वर्षा हो।

9. दक्षिण में जल तत्व राशि कर्क है जो जल से परिपूर्ण है और उसमें बृहस्पति बैठा है। अतः इस दिशा के सभी क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में वर्षा होगी।

10. उत्तर में मकर राशि है जो 100 प्रतिशत जल अपने अन्दर समाये होने के कारण वर्षा के लिए शुभ है लेकिन इसका स्वामी शनि वायु तत्व राशि में अग्नि तत्व ग्रह सूर्य के साथ स्थित है जिसके कारण उत्तर में धूल भरी आंधियों और तेज हवाओं के साथ वर्षा होगी।

11. सूर्य से द्वितीय भाव में बृहस्पति वर्षा के लिए अच्छा है लेकिन शनि का सूर्य के साथ स्थिति होना बहुत अधिक आंधी-तूफान, गर्मी और वर्षा की कमी की स्थितियां उत्पन्न करता है। लग्नेश का स्वगृही होना देश के कुछ भागों में अच्छी वर्षा की संभावनायें पैदा करता है।

अत्याधिक वर्षा का दिन: 08 जुलाई, 2003

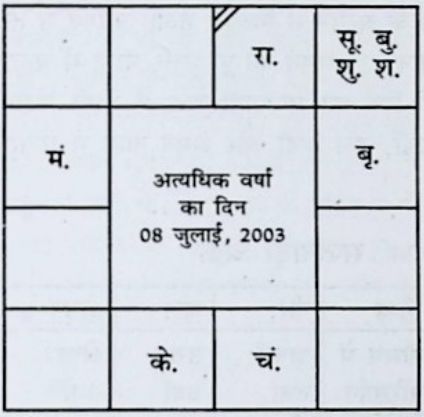

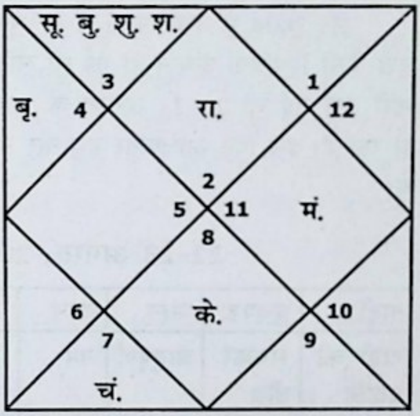

08 जुलाई, 2003 , सप्तनाड़ी चक्र

नाड़ी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
नाड़ी की प्रकृति	भयंकर तीव्र	वायुपूर्ण	गर्म	मौसम में परिवर्तन	अच्छी वर्षा	उत्तम वर्षा	श्रेष्ठ वर्षा
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	बृहस्पति	शुक्र	बुध	चन्द्रमा
नक्षत्र (संख्या)	कृतिका (3)	रोहिणी (4)	मृगशिरा (5)	आर्द्रा (6)	पुनर्वसु (7)	पुष्य (8)	आश्लेषा (9)
ग्रह	राहु			शनि, शुक्र	बुध, सूर्य		बृहस्पति
नक्षत्र (संख्या)	विशाखा (16)	स्वाति (15)	चित्रा (14)	हस्त (13)	उत्तरा फाल्गुनी (12)	पूर्वा फाल्गुनी (11)	मघा (10)
ग्रह			चन्द्रमा				
नक्षत्र (संख्या)	अनुराधा (17)	ज्येष्ठा (18)	मूल (19)	पूर्वाषाढ़ा (20)	उत्तराषाढ़ा (21)	अभिजित (22)	श्रवण (23)
ग्रह	केतु						
नक्षत्र (संख्या)	भरणी (2)	अश्विनी (1)	रेवती (28)	उत्तरा भाद्रपद (27)	पूर्वा भाद्रपद (26)	शत भिषज (25)	धनिष्ठा (24)
ग्रह						मंगल	

सन् 2004 में अत्याधिक वर्षा का दिन:

सन् 2004 में उत्तर भारत में मानसून के बरसने में विलम्ब हुआ। प्रारम्भ में तो सूखे जैसी स्थितियां उत्पन्न हो गई थी लेकिन 22 अगस्त को पूरे उत्तर भारत में बहुत भारी वर्षा हुई जो 22-23 अगस्त के आगे दिये गए सप्तनाड़ी चक्र में स्पष्ट गोचर हो रहा है। इस दिन अधिकतर ग्रह नीर नाड़ी, जल नाड़ी और अमृत नाड़ी में स्थित थे।

22-23 अगस्त, 2004, सप्तनाड़ी चक्र

नाड़ी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
नाड़ी की प्रकृति	भयंकर तीव्र	वायुपूर्ण	गर्म	मौसम में परिवर्तन	अच्छी वर्षा	उत्तम वर्षा	श्रेष्ठ वर्षा
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	बृहस्पति	शुक्र	बुध	चन्द्रमा
नक्षत्र (संख्या)	कृतिका (3)	रोहिणी (4)	मृगशिरा (5)	आर्द्रा (6)	पुनर्वसु (7)	पुष्य (8)	आश्लेषा (9)
ग्रह					शनि, शुक्र		
नक्षत्र (संख्या)	विशाखा (16)	स्वाति (15)	चित्रा (14)	हस्त (13)	उत्तरा फाल्गुनी (12)	पूर्वा फाल्गुनी (11)	मघा (10)
ग्रह	चन्द्रमा	केतु			बृहस्पति	मंगल	बुध, सूर्य
नक्षत्र (संख्या)	अनुराधा (17)	ज्येष्ठा (18)	मूल (19)	पूर्वाषाढ़ा (20)	उत्तराषाढ़ा (21)	अभिजित (22)	श्रवण (23)
नक्षत्र (संख्या)	भरणी (2)	अश्विनी (1)	रेवती (28)	उत्तरा भाद्रपद (27)	पूर्वा भाद्रपद (26)	शत भिषज (25)	धनिष्ठा (24)
ग्रह		राहु					

मुम्बई में भारी वर्षा का दिन: 26 जुलाई, 2005

26 जुलाई, 2005 को पूरे महाराष्ट्र में और विशेषकर मुम्बई में मूसलाधार वर्षा हुई। भारी वर्षा के कारण देश की आर्थिक राजधानी माना जाने वाला यह पूरा शहर वर्षा के पानी में बुरी तरह से डूब गया। सभी रेल और सड़क यातायात के मार्ग बन्द

हो गये और सभी सेवायें चरमरा गयीं तथा सही मायने में इस शहर का बाहरी दुनिया से संपर्क टूट गया। सभी रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डे बन्द कर देने पड़े, शहर की बिजली गुल हो गई और सैकड़ों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। सेना की 5000 टुकड़ियों को राहत और बचाव के कार्यों में लगाना पड़ा। उस दिन 94.4 सेन्टीमीटर वर्षा रिकार्ड की गई जिसने एक दिन में ही लाखों लोगों को निःसहाय कर दिया। यह भारत के किसी भी शहर में एक दिन में रिकार्ड होने वाली सबसे अधिक वर्षा थी। इस शहर के इतिहास में पहली बार लोगों के लिए खाने के बण्डल हवाई जहाजों के द्वारा गिराने पड़े। एक अनुमान के अनुसार इस शहर में उस दिन लगभग 1700 करोड़ रुपयों की हानि हुई।

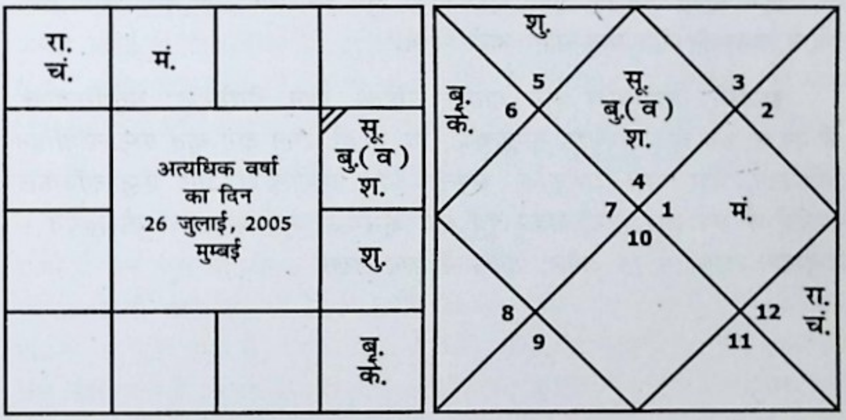

26 जुलाई, 2005, सप्तनाड़ी चक्र

नाड़ी	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
नाड़ी की प्रकृति	भयंकर तीव्र	वायुपूर्ण	गर्म	मौसम में परिवर्तन	अच्छी वर्षा	उत्तम वर्षा	श्रेष्ठ वर्षा
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	बृहस्पति	शुक्र	बुध	चन्द्रमा
नक्षत्र (संख्या)	कृतिका (3)	रोहिणी (4)	मृगशिरा (5)	आर्द्रा (6)	पुनर्वसु (7)	पुष्य (8)	आश्लेषा (9)
ग्रह						सूर्य, शनि	लग्न, बुध-व
नक्षत्र (संख्या)	विशाखा (16)	स्वाति (15)	चित्रा (14)	हस्त (13)	उत्तरा फाल्गुनी (12)	पूर्वा फाल्गुनी (11)	मघा (10)

ग्रह				बृहस्पति, केतु			शुक्र
नक्षत्र (संख्या)	अनुराधा (17)	ज्येष्ठा (18)	मूल (19)	पूर्वाषाढ़ा (20)	उत्तराषाढ़ा (21)	अभिजित (22)	श्रवण (23)
नक्षत्र (संख्या)	भरणी (2)	अश्विनी (1)	रेवती (28)	उत्तरा भाद्रपद (27)	पूर्वा भाद्रपद (26)	शत भिषज (25)	धनिष्ठा (24)
ग्रह	मंगल	राहु	चन्द्रमा				

लग्न सहित तीन ग्रह अमृत नाड़ी में थे, सूर्य और शनि जल नाड़ी में थे तथा चन्द्रमा, बृहस्पति और केतु सौम्य नाड़ी में थे।

सन्दर्भः *वराहमिहिर कृत वाराही संहिता, प्रश्न शिरोमणि, सत्यसिद्धान्त, श्री एन.के. राव कृत अप्लाइड एस्ट्रोलॉजी, डा. बी.वी. रमन द्वारा कृत एस्ट्रोलॉजी इन प्रिडिक्टिंग, वैदर एण्ड अर्थक्वेक, जनरल ऑफ एस्ट्रोलॉजी और एस्ट्रोलॉजिकल मैग्जीनों में छपे लेख, उमां शंकर दूबे कृत कूर्मचक्र, सूर्य के धब्बों के विषय में हिन्दुस्तान टाइम्स में 13 अप्रैल, 2003 में छपा लेख।*

अध्याय 15

भूकम्प

भूकम्प प्राकृतिक आपदाओं में सबसे अधिक विध्वंसक श्रेणी की आपदा है। सबसे भयंकर विनाशकारी रुप में भूंकप एक ही मिनट में पूरे के पूरे समुदाय को अपनी चपेट में ले सकता है। उपलब्ध दस्तावेजों के अनुसार ऐसा अनुमान है कि संसार में डेढ़ करोड़ से भी अधिक लोग भूकंप से अथवा भूकंप के बाद होने वाले प्रादुर्भावों जैसे भूमि स्खलन, आग या भंयकर समुद्री तूफान आदि से मर चुके हैं। इस अध्याय के अन्तर्गत पूरे विश्व में आये मुख्य भूकंपों की चर्चा की गई है।

पृथ्वी के आन्तरिक संरचना में जो बड़ी-बड़ी प्लेट्स हैं उनके नीचे के तरल द्रव्यों में जब कुछ अस्थिरता आती है या प्राकृतिक रुप से परिवर्तन होता है तो पृथ्वी के उस उपरी सतह पर, जो समुद्रों के किनारों एवं खाईयों पर होती है और सीधे उस प्रक्रिया से जुड़ी होती है, दबाब पड़ता है। यदि पृथ्वी की बाहरी परत इस दबाब को झेल नहीं पाती है तो यह फट जाती है और भंयकर झटकों के रुप में अत्याधिक उर्जा को छोडती है। प्रत्येक विध्वंसक भूकम्प का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्व है क्योंकि इसके प्रभावों और कारणों का अध्ययन करके हम भविष्य में कुछ सीमा तक सचेत एवं सतर्क हो सकते हैं। उदाहरण के लिए 1819 के कच्छ क्षेत्र के भूकम्प से पहली बार पता चला कि भूकम्प एवं भ्रंश, एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। इसी प्रकार 1964 जापान के निगाता शहर में जो भूकम्प आया था उसमें पृथ्वी के नीचे की मिट्टी और बालू तरल पदार्थ बन गये जिससे पूरे के पूरे मकान नीचे धंस गये अथवा टेढ़े होकर झुक गये।

भूकम्प के भौगोलिक वितरण के विषय में भूकम्पलेखियों के आविष्कार से पहले जो सूचना प्राप्त होती थी, वह केवल भूकम्प के प्रभावों पर ही आधारित होती थी। भूकम्पलेखियों के द्वारा यह स्पष्ट हो गया है कि यद्यपि छोटे भूकम्प प्रायः सभी स्थानों पर आते हैं लेकिन, विध्वंसक भूकम्प केवल कुछ ही क्षेत्रों में सीमित हैं। अमेरिका के द्वारा 1962-63 से विश्वभर में 118 संवेदनशील वेधशालायें खोले जाने

के पश्चात भूकम्प के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान संभव हो पाई है। ये क्षेत्र पट्टियों के रुप में एक कोने से दूसरे कोने तक फैले हुए हैं। इन पट्टियों के ज्ञात होने के पश्चात ही काफी हद तक भूकम्प की नाभीय गहराई भी ठीक-ठीक ज्ञात हो सकी है। भूकम्प की तीन प्रमुख पत्त्रियां जिनमें सबसे अधिक 8.7 परिमाण के भूकम्प आते हैं, इस प्रकार से हैं।

1. प्रशान्त महासागर के चारों ओर के महाद्वीपों की निकटवर्ती पट्टी।
2. मध्य एटलांटिक से लेकर पूर्वी अफ्रीका और ईस्टर द्वीप की पट्टी।
3. एशिया और यूरोप की पट्टी जिसमें हिमालय का क्षेत्र प्रमुख है।

प्रशान्त महासागर के चारों ओर के महाद्वीपों की निकटवर्ती पट्टी के एक वृत के समान के क्षेत्र, जिसको प्रशान्त पट्टी के नाम से जाना जाता है, सबसे अधिक प्रभावशाली भूंकप प्रक्रिया स्थल है। लगभग 75 प्रतिशत हल्के भूकम्प, 90 प्रतिशत मध्यम और लगभग सभी गहरे भूकम्प इसी पट्टी पर आते हैं। यह पट्टी दक्षिणी प्रशान्त महासागर से आरम्भ होकर चीन के पूर्वी भाग से जापान होती हुई बेरिंग सागर तक पहुंचती है। इसी की शाखा अमरीकी पर्वतश्रेणी से होकर दक्षिण अमरीका के दक्षिण-पश्चिम में जा मिलती है। इसमें महत्वपूर्ण यह है कि प्रशान्त महासागर के मध्य में भूकम्प नहीं के बराबर आते हैं।

जो शाखा सुमात्रा, अण्डमान, बर्मा, हिमालय, ईरान और तुर्की को पार करती हुई मध्य एटलांटिक महासागर में जा मिलती है उसे, एल्पाईड पट्टी कहते हैं।

तीसरी पट्टी साइबेरिया के उत्तरी तट से प्रारम्भ होकर आर्कटिक से होती हुई मध्य एटलांटिक महासागर तक जाती है और घूमकर हिन्द महासागर होती हुई पहली पट्टी से आस्ट्रेलिया के निकट मिल जाती है।

रिकार्ड की हुई भूकम्प की लहर की अधिकता या आकार से भूकम्पविशेषज्ञ, इसकी तीव्रता का निर्णय कर सकता है। भूकम्प का परिमाण पृथ्वी द्वारा एक केन्द्रित स्थान पर छोड़ी गई भूमि-उर्जा होती है जिसे रियेक्टर स्केल में मापते हैं। भूकम्प के मापक का नाम केलीफोर्निया में रहने वाले इसके अविष्कारक भूकम्पविज्ञानी चार्ल्स एफ. रियेक्टर के नाम पर रखा गया है। परिमाण का रियेक्टर स्केल लागअर्थमेटिक होता है जिसका अर्थ है कि 8 इमिटस की लहर के एक झटके का प्रभाव, 7 इमिटस के झटके से 100 गुणा अधिक और 6 इमिटस के झटके से 1000 गुणा अधिक होता है।

रियेक्टर स्केल से दर्ज अब तक सबसे अधिक परिमाप का भूकम्प 8.9 की तीव्रता का है लेकिन सौभाग्य से इस तीव्रता के भूकम्प बहुत अधिक नहीं आते हैं। पूरे संसार में कहीं न कहीं 8.5 से अधिक तीव्रता का एक भूकम्प प्रत्येक पांच से दस साल के अन्तराल पर आता है। मौटे तौर पर 2.2 से 2.9 तीव्रता के तीन लाख से भी अधिक भूकम्प प्रत्येक वर्ष आते हैं।

पूरे विश्व के वैज्ञानिकों के द्वारा भूकम्प आने के कारणों का अध्ययन हो रहा है। अमेरिका के भूतत्व विषय विषयक निरीक्षण (United State Geological Survey) ने अपने नवीनतम् शोध में यह पूर्वानुमान दिया है कि 2030 तक सेन फ्रान्सिको में बड़ा भूकम्प आयेगा जो अरबों डालर की हानि के साथ अनुमानित न किये जा सकने वाले विनाश का कारण होगा।

जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी में छपे श्री के.एन. राव के लेख पर आधारित विचारः

यद्यपि पृथ्वी की उपरी सतह पर पड़ने वाले दबाब के कई कारण होते हैं और सारे विश्व के वैज्ञानिक इस पर बहस करते हुए तरह-तरह के अपने विचार रखते रहेगें, भारतीय महर्षियों और ज्योतिषाचार्यों ने विस्तार से इस विषय पर कार्य किया है। यह सिद्ध हो चुका है कि वे ज्योतिषीय कारण ही होते हैं जो इस स्थिति को विध्वंसक बनाते हैं। भारत में 26 जनवरी, 2001 को गुजरात के भुज क्षेत्र में 8 रियेक्टर स्केल से अधिक तीव्रता का भूकम्प आया था जिसमें तीस हजार से भी अधिक लोगों की मृत्यु हुई। श्री के.एन. राव जी के द्वारा इस भूकम्प का पूर्वानुमान 14 जनवरी, 2001 में वीक नाम की पत्रिका में किया गया था।

वह महर्षि गर्ग थे जिन्होंने हमें भूकम्प के पूर्वानुमान की भविष्यवाणी कहने की विधियां दी हैं। अब रशियन वैज्ञानिकों ने भी यह सिद्ध किया है कि भूकम्प की प्रक्रिया में ग्रहण तथा चन्द्रोदय और पूर्णमासी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

भारतीय विद्या भवन में श्री के.एन. राव जी के मार्ग निर्देशन में भूकम्प के मुख्य कारणों का अध्ययन करने के लिए एक शोध दल का गठन किया गया है। इस दल के द्वारा खोजा गया प्रथम परिणाम जरनल ऑफ एस्ट्रोलॉजी के अप्रैल-जून, 2001 के संस्करण में छप चुका है। इस शोध दल ने अत्यन्त तीव्रता वाले 170 भूकम्पों का अध्ययन किया और निम्नलिखित निष्कर्ष निकालाः

1. 55.8 प्रतिशत भूकम्प पूर्णमासी अथवा अमावस्या और इनसे दो दिन पहले और दो दिन बाद अर्थात कुल पांच तिथियों के मध्य आये थे।
2. 33.5 प्रतिशत भूकम्प चतुर्दशी, पूर्णमासी या अमावस्या और प्रतिपदा को आये थे।
3. 17 प्रतिशत भूकम्प चन्द्रोदय अथवा पूर्णमासी को आये थे।

भूकम्प के लिए उत्तरदायी अन्य कारण:

ग्रहण की भूमिका:

1. सामान्यत: भूकम्प ग्रहणों के बाद आते हैं और विशेषकर उन देशों में आते हैं जिन देशों की कुण्डली के दशम या चतुर्थ भाव में ग्रहण होता है।
2. पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार यदि ग्रहण के समय स्थिर राशियों में ग्रह हों तो विश्व के उन भागों में भूकम्प आयेगा जिन भागों में ये ग्रह उदय या अस्त या परमोच्च के हो रहे होंगे। अत: यदि किसी ग्रहण के समय शनि ग्रह भूमध्य रेखा से 30 अंश की दूरी पर है तो ग्रीनविच रेखा से पूर्व या पश्चिम के उस क्षेत्र में भूकम्प आयेगा जो शनि की स्थिति के अनुसार उसी दूरी पर स्थित हैं।
3. भूकम्प के समय कई अशुभ ग्रहों की दृष्टि अथवा युतियां होगीं। ये अशुभ ग्रह पिछले ग्रहणों से दृष्टि सम्बन्ध बनायेगें। एक ग्रहण भूकम्प का अग्रवर्ती हो सकता है लेकिन ग्रहण के साथ अधिक दृष्टियां नहीं होगीं तो भूकम्प नहीं होगा।
4. वृषभ और वृश्चिक राशियां भूकम्प के लिए विख्यात हैं विशेषकर यदि शनि, राहु, मंगल और बृहस्पति इन राशियों में हों तो ये अधिक प्रभावशाली हो जाती हैं। वृषभ राशि में रोहिणी नक्षत्र विशेष है जिसकी फांस को अलग से बताया गया है।
5. वृषभ अथवा वृश्चिक राशि में बृहस्पति हो और बुध से दृष्ट या युत हो तो बार-बार आने वाले भूकम्पों का कारण होता है।
6. सूर्य की मेष, कर्क, तुला और मकर संक्रान्ति के समय तथा चन्द्रोदय के समय ग्रहों की स्थितियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस समय जिन देशों के चतुर्थ भाव, अशुभ ग्रहों द्वारा गृहीत हों अथवा दृष्ट हों, उनकों नोट करें। इन देशों में कुछ न कुछ भूकम्प सम्बन्धित अशान्ति होगी।

7. उन ग्रहों पर ध्यान केन्द्रित करें जो चर राशियों के प्रारम्भ में अर्थात मेष, कर्क, तुला और मकर के 1 अंश में हों।

8. विभिन्न राशियों द्वारा शासित विभिन्न देशों एवं शहरों के संदर्भ में और विशेषकर चार तिमाही सूर्य संक्रान्ति और उस रेखांश के संदर्भ में जिसमें ग्रहण हुआ है, उन देशों और क्षेत्रों का निर्णय किया जा सकता जिनमें भूकम्प आयेगें।

9. भूकम्प के आने के समय के विषय में यह देखा गया कि अधिकतर भूकम्प मध्यान से सूर्यास्त तथा मध्यरात्रि सें सूर्योदय के बीच में आये थे।

10. यह देखा गया कि भूकम्प आने के समय शनि, बृहस्पति या मंगल में से कोई एक बड़ा ग्रह वक्री था।

11. बड़े ग्रहों का एक-दूसरे से केन्द्र या त्रिकोण में होना भूकम्प आने में सहायक होता है।

12. चन्द्रमा और बुध का एक ही नक्षत्र में होना भी भूकम्प आने में सहायक होता है।

13. भूकम्प वाले दिन का वायु और पृथ्वी तत्व राशियों के साथ कुछ अतिरिक्त महत्व जुड़ा होता है।

14. कुछ मामलों में यह भी देखा गया कि भूकम्प के समय पृथ्वी, सूर्य से निकटतम दूरी पर थी।

15. भूकम्प के समय प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, दशम या द्वादश भाव पीड़ित पाये गये।

16. पाश्चात्य ज्योतिषाचार्यो ने भूकम्पों के कारणों में यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो की भूमिका पर अधिक बल दिया है। यहां तक कि एक विदेशी वैज्ञानिक इस बात को उजागर करने के लिए विवश था कि अधिकतर मामलों में जब भूकम्प आया तो यूरेनस ग्रह, भूकम्प के स्थान के लगभग सीधे उपर था। यूरेनस का वृषभ और वृश्चिक राशियों में होने का अर्थ भी अत्याधिक अशुभ है। यदि यूरेनस पर नेप्चून का गुरुत्वाकर्षण प्रभाव होता है तो इन दोनों के गुरुत्वाकर्षण बल के खिंचाव का पृथ्वी पर प्रभाव होगा। लेकिन यह विस्तृत अध्ययन एवं शोध का विषय है और इसके परिणाम हमारे आने वाले शोधलेखों के द्वारा सामने आयेगें।

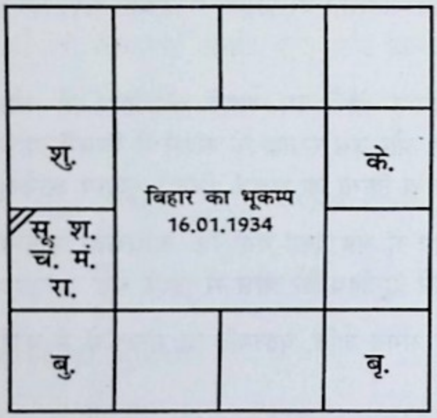

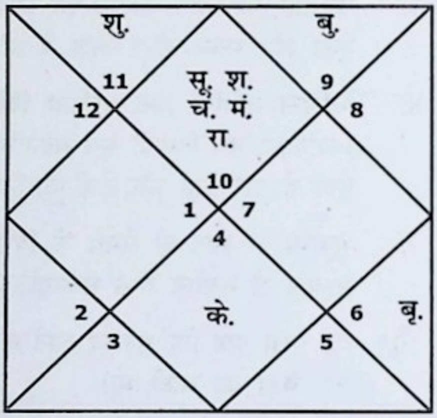

लग्न 13°50' सूर्य 02°27' चन्द्रमा 11°30' मंगल 22°03'
बुध 29°57' बृहस्पति 29°30' शुक्र 00°41' शनि 23°08'
राहु 26°27'

शनि, मंगल और चन्द्रमा, ये तीनों ही श्रवण नक्षत्र में थे, सूर्य और बुध उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में तथा बृहस्पति, मंगल के चित्रा नक्षत्र में और शुक्र भी मंगल के धनिष्ठा नक्षत्र में था।

21 अगस्त, 1933 को पंचम-एकादश भावों के अक्ष में सूर्य ग्रहण हुआ था। उस समय शनि और मंगल एक-दूसरे से केन्द्र में थे। नवांश में मंगल और शनि युति में थे और उनके सामने सूर्य एवं चन्द्रमा की युति थी। यह शुक्लपक्ष का प्रथम दिन भी था।

वराहमिहिर के द्वारा मकर लग्न को भारतवर्ष का पारम्परिक लग्न माना गया है और लग्न पूर्वी दिशा को इंगित करता है।

बृहस्पति और बुध में राशि परिवर्तन था। बृहस्पति राशि के अन्तिम अंशों में और शुक्र प्रारम्भिक अंशों में था। शनि और मंगल तथा बुध और बृहस्पति अंशों में एक-दूसरे के निकट भी थे।

सीरिया का भूकम्पः

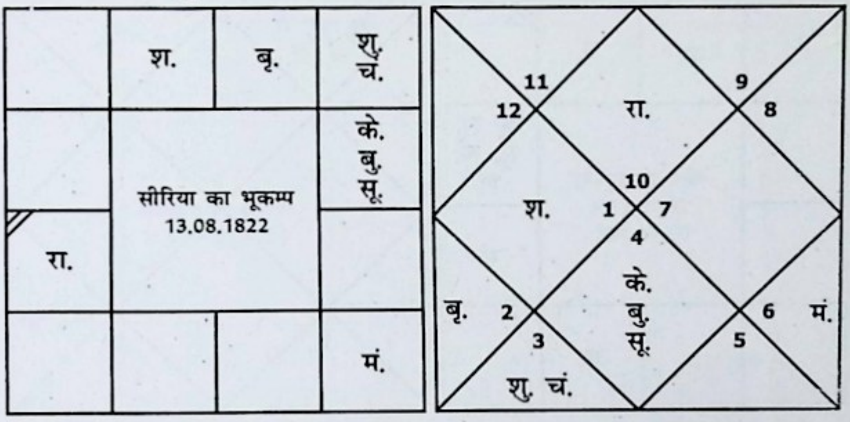

एक बहुत बड़े भूकम्प ने 13 अगस्त, 1822 को सीरिया का विनाश किया था। शनि मेष राशि में था जो उस वर्ष हुए ग्रहण के केन्द्र की राशि थी।

अमेरिका के साउथ करोलिना का भूकम्पः

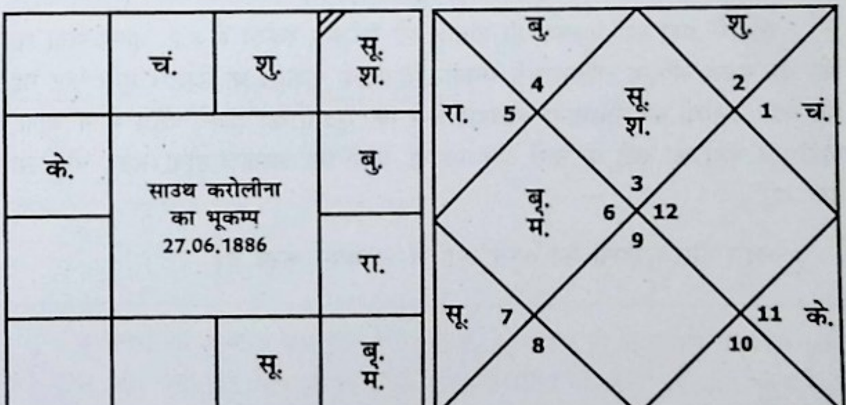

27 जून, 1866 को कन्या राशि में मंगल और बृहस्पति की युति थी जो अमेरिका के चतुर्थ भाव की राशि है।

चीन का भूकम्पः

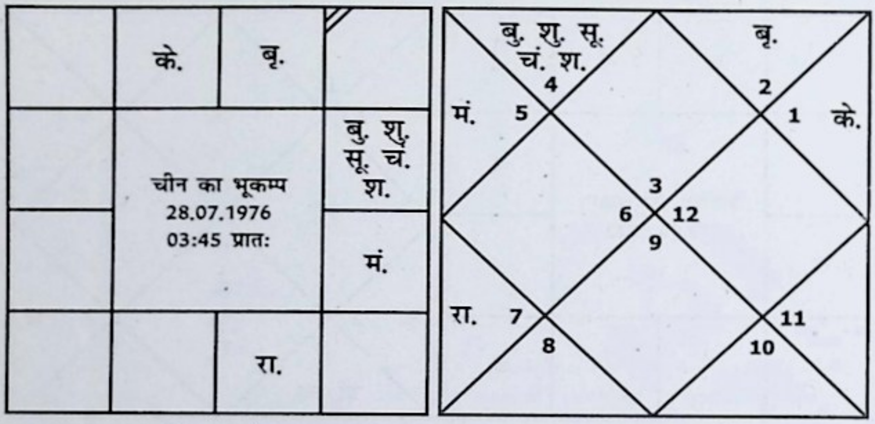

लग्न 15°46' सूर्य 14°16' चन्द्रमा 22°25' मंगल 19°16'
बुध 24°31' बृहस्पति 03°16' शुक्र 22°23' शनि 12°48'
राहु 14°46' केतु 14°46'

चन्द्रमा, बुध और शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में थे तथा केतु, भरणी नक्षत्र में था।

चीन में आये इस भूकम्प की तीव्रता को रियेक्टर स्केल में 8.2 आंका गया था और यह सबसे अधिक शक्तिशाली भंयकर विनाशक भूकम्प था जिसमें भूमि फट गई थी। वहां जानवरों का असमान्य व्यवहार जैसे कि सूअरों का अपने दड़बे में न जाना, घोड़ों एवं भेड़ों का बाड़े के चारों ओर भागना, बाघों का असहज होना आदि भी देखा गया था।

आइए इस कुण्डली का अन्य वर्गों में अध्ययन करते हैं।

नवांश

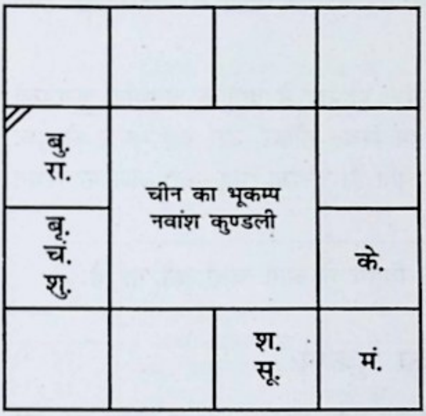

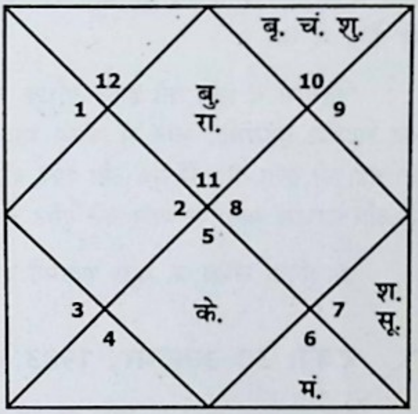

चतुर्थांश

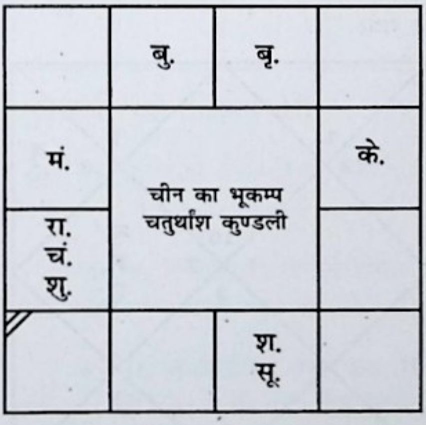

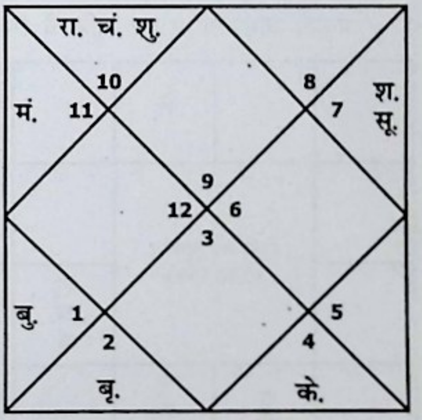

कुण्डली के अष्टम भाव पर, जो विनाश का भाव भी कहलाता है, पांच ग्रहों की दृष्टि थी। बृहस्पति और मंगल एक-दूसरे से केन्द्र में स्थित थे और शुक्र एवं चन्द्रमा भोगांशों में एक-दूसरे के अत्याधिक निकट थे। भूकम्प के दिन चन्द्रोदय होने के बाद चन्द्रमा आश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश कर चुका था और बुध के नक्षत्र में होने के कारण बुध एवं चन्द्रमा का सम्बन्ध, भूकम्प से बना रहा था।

नवांश में नीचस्थ सूर्य और उच्चस्थ शनि की युति थी, दशमेश मंगल, अष्टम भाव में था और शनि एवं बृहस्पति एक-दूसरे से केन्द्र में स्थित थे। चन्द्रमा भी शनि से केन्द्र में था।

चतुर्थांश में भूमि की हानि अधिक स्पष्ट हो रही है क्योंकि चतुर्थांश कुण्डली का चतुर्थेश बृहस्पति, लग्न से षष्टम भाव में स्थित होकर, उग्र ग्रह मंगल से दृष्ट है। यहां भी तुला राशि में सूर्य और शनि की युति है। चन्द्रमा, राहु-केतु अक्ष पर स्थित है और अष्टम भाव पर शनि की दृष्टि है।

आधुनिक समय के कुछ भूकम्पों के विषय में आगे चर्चा की गई है।

1. टर्की: 30 अक्टूबर, 1983 का भूकम्प:

यह इरुजुरुम शहर में आया था जो अपने साथ भंयकर विनाश लाया था। इस भूकम्प में 5000 से अधिक लोग घायल हुए और 35000 से भी अधिक मकान धाराशायी होकर भूमि में मिल गये।

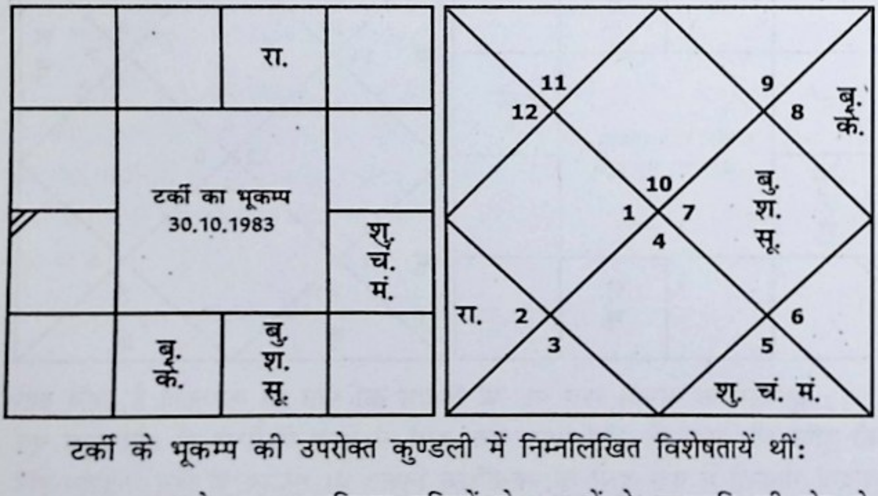

टर्की के भूकम्प की उपरोक्त कुण्डली में निम्नलिखित विशेषतायें थीं:

1. राहु-केतु, वृषभ-वृश्चिक राशियों के अक्ष में थे। बृहस्पति की केतु से युति थी।
2. मंगल, चन्द्रमा एवं शुक्र दोनों पर ही दुष्प्रभाव डाल रहा था और बृहस्पति एवं राहु से केन्द्र में था।
3. शनि, सूर्य एवं बुध दोनों पर ही दुष्प्रभाव डालकर पीड़ित कर रहा था।

2. उत्तरी पाकिस्तान और अफगानिस्तान में 01.02.1991 का भूकम्पः

यह भूकम्प रियेक्टर स्केल में 6.8 तीव्रता का था जिसमें 1200 से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हुई और सैकड़ों घायल हुए थे।

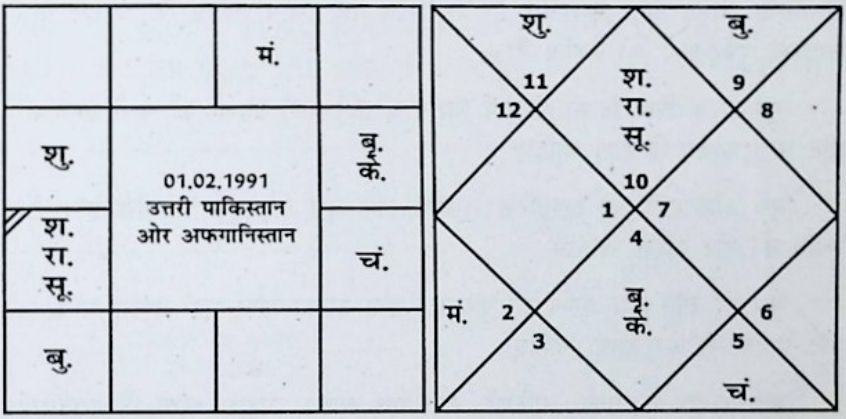

कुण्डली की विशेषतायें:

इस कुण्डली में सूर्य की शनि एवं राहु से युति है और बृहस्पति सामने स्थित है।

चन्द्रमा, मंगल द्वारा पीड़ित होकर पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान के पारंम्परिक लग्न मकर से अष्टम भाव में स्थित है।

15-16 जनवरी को यहां पूर्ण सूर्य ग्रहण था। ग्रहण की यह स्थिति बृहस्पति द्वारा दृष्ट थी और सूर्य, शनि की युति में था।

भूकम्प के क्षेत्र का निर्धारणः

यद्यपि प्रमुख ग्रहों की युति, सम-सप्तम स्थिति, ग्रहण आदि से भूकम्प के समय का निर्धारण करना सरल है लेकिन जिन क्षेत्रों में भूकम्प आ सकता है उन क्षेत्रों का निर्धारण करने की प्रक्रिया अधिक जटिल और समय लेने वाली है। इस प्रक्रिया में विभिन्न देशों की शासक राशियों से कुछ सहायता प्राप्त की जा सकती है। शासित राशि से चतुर्थ/अष्टम भाव के साथ-साथ लग्न भी पीड़ित होगा। चन्द्रोदय और पूर्णमासी के चन्द्रमा की स्थिति तथा ग्रहण की राशि भी आगे कुछ सहायता प्रदान

कर सकती है। साथ ही साथ ग्रहण की कुण्डलियां और केन्द्रों की राशियों में सूर्य की संक्रान्ति पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

मेष संक्रान्ति की कुण्डली अत्याधिक महत्वपूर्ण होती है। भूकम्प होने के लिए चतुर्थ और अष्टम भाव अत्याधिक महत्व रखते हैं। भूकम्प के लिए इनका अत्याधिक पीड़ित होना आवश्यक है। यह सदैव याद रखना चाहिए कि अष्टम भाव सामूहिक दुर्घटनाओं को दर्शाता है।

भूकम्प के लिए किसी भी वर्ष विशेष में होने वाले ग्रहणों को पापी ग्रहों की दृष्टि के दुष्प्रभाव में होना चाहिए।

बुध और शनि का आन्तरिक सम्बन्ध और बुध का सूर्य के पीछे होने की स्थिति को नोट करना चाहिए।

बुध पर शनि और मंगल का दुष्प्रभाव तथा उनका लग्न एवं अष्टम भाव पर दृष्टि प्रभाव भी नोट करना चाहिए।

यदि चन्द्रमा के नक्षत्र, रोहिणी, हस्त एवं श्रवण, अशुभ भावों के स्वामियों अथवा अशुभ ग्रहों के द्वारा गृहीत हों तो इसके कारण भूकम्प आ सकता है।

भूकम्प के समय शनि, बृहस्पति, राहु या केतु और मंगल में से सामान्यतः कम से कम एक ग्रह पृथ्वी तत्व राशि में स्थित होता है।

ग्रहण को सावधानीपूर्वक नोट करना चाहिए। इसके द्वारा पीड़ित होने वाले ग्रह आने वाले भूकम्प के बारे में इशारा देते हैं।

जिस समय कोई ग्रह वक्री होता है अथवा जिस समय वक्रता छोड़ता है उस समय का, इतिहास की प्रमुख घटना के समय निर्धारण पर विशेष प्रभाव होता है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर आइये कुछ अन्य प्रमुख विध्वंसक भूकम्पों का अध्ययन करते हैं।

गुजरात का भूकम्प, 26.01.2001, 08:46 प्रातः

गुजरात का यह भूकम्प सबसे अधिक शक्तिशाली भूकम्पों में से एक था जिसके कारण बहुत बड़ी मात्रा में जान-माल की हानि हुई और भारत की अर्थ

व्यवस्था की मजबूती को एक बहुत बड़ा झटका लगा था। यह जामनगर से 65 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित भुज शहर में आया था। यह भूकम्प इतना शक्तिशाली था कि यह पूरे उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के अतिरिक्त पाकिस्तान में भी महसूस किया गया था तथा इसकी गूंज नेपाल और बंगला देश तक सुनी गई थी। यह क्षेत्र इससे पहले भी सन् 1819 में विनाशकारी भूकम्प से विध्वंसता झेल चुका था। सरकारी आंकडो के अनुसार इस दुर्घटना में 18,602 से भी अधिक लोगों की मृत्यु हुई, 166,836 से भी अधिक लोग घायल हुए, तैतीस लाख से भी अधिक घर टूट गए और करोड़ों लोगों को बेघर होना पड़ा। इस भूकम्प में लगभग 1.3 बिलियन डालर की हानि हुई थी।

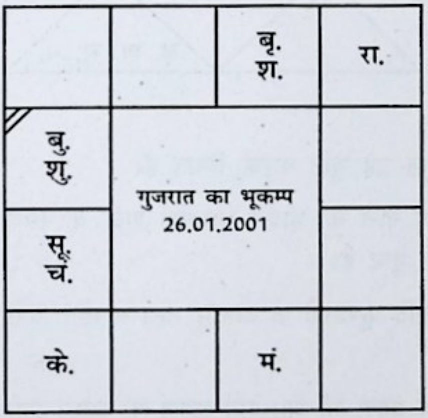

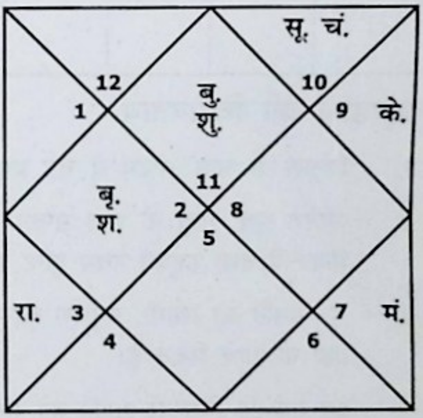

कुण्डली की विशेषतायें:

1. भूकम्प की कुण्डली के चतुर्थ भाव और भारत वर्ष की कुण्डली के लग्न भाव की राशि वृषभ में शनि एवं बृहस्पति की युति थी तथा यह युति मंगल से दृष्ट थी।

2. कुण्डली का अष्टमेश बुध, भू-सम्पति के स्वामी चतुर्थेश शुक्र के साथ युति करके लग्न में स्थित होकर राहु की नवम दृष्टि के प्रभाव में था।

आइये सूर्य की मेष सक्रान्ति के समय की कुण्डली का भी अध्ययन करते हैं। सन् 2000 में मेष सक्रान्ति 13.04.2000 को 17:25 पर हुई थी।

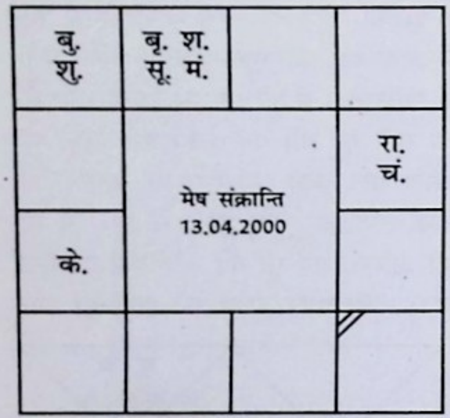

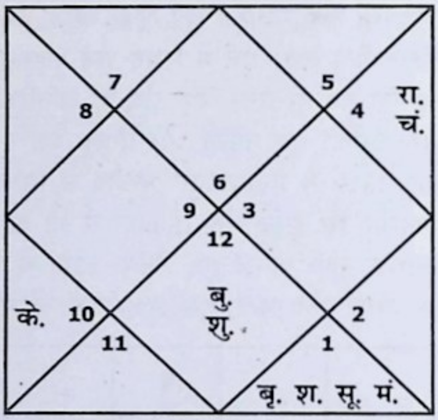

कुण्डली की विशेषतायें:

1. विनाश के भाव अष्टम में चार प्रमुख ग्रह युति करके स्थित हैं।
2. लग्नेश बुध, मृत्यु के भाव सप्तम में नीच का होकर मारकेश शुक्र के साथ स्थित है तथा राहुकी नवम दृष्टि से दृष्ट है।
3. भू-सम्पति का स्वामी, चतुर्थेश बृहस्पति कुण्डली के अष्टम भाव में तीन पापी ग्रहों के साथ स्थित है।

इस वर्ष 25 दिसम्बर 2000 को सूर्य ग्रहण भी था। सूर्य ग्रहण के समय ग्रहों की स्थिति को नीचे दिया गया है।

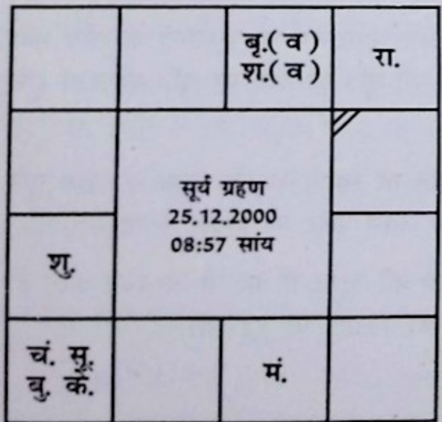

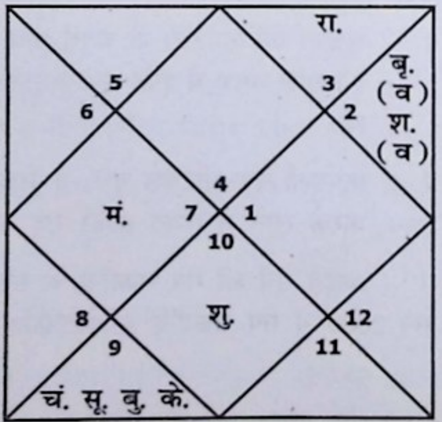

यदि हम भारत का लग्न वृषभ लेते हैं तो वक्री शनि और वक्री बृहस्पति की युति लग्न में ही थी, मंगल षष्टम भाव में था तथा ग्रहण कुण्डली के अष्टम भाव में हुआ था जो सामूहिक विध्वंस का भाव भी है। यह अशुभ परिणामों का शकुन था।

लेखक

इस पुस्तक के लेखक श्री एम.एस. मेहता भारतीय विदेश सेवा में विशिष्ट पद से अवकाश प्राप्त हैं। अपने कार्यकाल में इन्होंने अमरीका, ब्रिटेन तथा मध्य एशिया में कई महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है।

प्राचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति में विशिष्टता प्राप्त, यह दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातकोत्तर उपाधि युक्त हैं। यह ऐतिहासिक संघ के सचिव भी हैं। इन्हें कई विदेशी भाषाओं फ्रेंच, जर्मन, अरबी इत्यादि का भी ज्ञान है।

आध्यात्मिकता की ओर इनकी अभिरूचि न्यूयार्क में गुरूमा जे. सरस्वती के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप उद्वित हुई। ज्योतिष विशारद में विशिष्टता युक्त, श्री के.एन. राव के मार्गदर्शन में इन्होंने मेदिनी ज्योतिष पर अनेकों शोध पत्र लिखे। श्री मेहता वर्तमान में, भारतीय विद्या भवन, दिल्ली में ज्योतिषशास्त्र के वरिष्ठ प्राध्यापक हैं। यह ज्योतिष शास्त्र से सम्बंधित अन्य पुस्तकों "Planets and Travel Abroad", "अष्टकवर्गः फलित की आधुनिक विधियाँ तथा वर्ष–फल (ताजिक अथवा वर्ष कुण्डली)" के लेखक भी हैं। यह पुस्तकें अब द्वितीय संस्करण में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त श्री मेहता ज्योतिषशास्त्र से सम्बंधित महत्वपूर्ण पत्रिका "जर्नल ऑफ एस्ट्रोलोजी" के तकनीकी सम्पादक भी हैं।

श्री पवन बल्लभ थपलियाल न केवल ज्योतिषशास्त्र के एक प्रतिभाशाली छात्र हैं अपितु हिन्दी, अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत का भी ज्ञान रखते हैं। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करने, नये विषयों को लिखने, सम्बन्धित लेखों, सामग्री आदि को एकत्रित करने और त्रुटियों को दूर करने में उनकी प्रमुख भूमिका है।

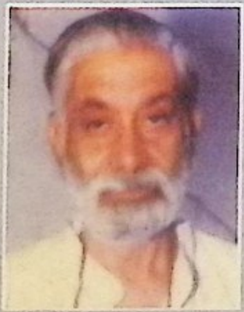

सम्पादक तथा मार्गदर्शकः
श्री के. एन. राव

सागर पब्लिकेशन्स

72, जनपथ, वेद मेन्शन, नई दिल्ली-110001
दूरभाषः 011 23320648, 23328245 मोबाइलः +91 9312237900 (व्हाट्सएप)
ई-मेलः s.sagarpublications@gmail.com वेबसाईटः www.sagarpublications.com

आई.एस.बी.एन.: 978-81-7082-124-3

मूल्यः 375.00